विज्ञप्ति ॥

इसमहीने अर्थात् जनवरी सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें वेचने के लिये तैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुवाहै परंतु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनके व्यौपार की इच्छाहो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	१ आदिपर्व्व	तथा जिल्दबंधी
महाभारत	२ सभापर्व्व	तथा मोटे अक्षरोंकी
१ पहिले हिस्सामें	३ बनपर्व्व	मयेतसवीर व क्षेपक
आदिपर्व्व, सभा पर्व्व	४ विराटपर्व्व	रामायणतुलसीकृत
बनपर्व्व	५ उद्योगपर्व्व	सातोकाण्ड
२ दूसरे हिस्सामें	६ भीष्मपर्व्व	१ बालकांड
विराटपर्व्व, उद्योगपर्व्व	७ द्रोणपर्व्व	२ अयोध्याकांड
भीष्मपर्व्व, द्रोणपर्व्व	८ कर्णपर्व्व	३ आरण्यकाण्ड
३ तीसरे हिस्सामें	९ शल्यपर्व्व व गदापर्व्व	४ किष्किन्धा कांड
कर्णपर्व्व, शल्यपर्व्व	सौप्तिकपर्व्व मय	५ सुन्दरकांड
गदापर्व्व, सौप्तिकपर्व्व	ऐशिक व विशोक	६ लंका कांड
ऐशिकपर्व्व, विशोकपर्व्व	व स्त्रीपर्व्व	७ उत्तर कांड
स्त्रीपर्व्व, शान्तिपर्व्वमें	१० शान्तिपर्व्व राजधर्म	रामायण शब्दार्थकोष
राजधर्म आपदधर्म,	व आपदधर्म व मोक्ष	रामायण का इतिहास
मोक्षधर्म	धर्म दान धर्म	रामायण मानसदीपिका
४ चौथे हिस्सामें	११ अश्वमेध, आश्रम	रामायण कबितावली
शान्तिपर्व्व, दानधर्म	वासिकपर्व्व व मौशल	रामायण गीतावली सटीक
अश्वमेध, आश्रमवासिक	पर्व्व,महाप्रस्थान स्वर्गारोहण	विनयपत्रिका बा० मे०
पर्व्व, व मौशलपर्व्व	१२ हरिबंशपर्व्व	बिनयपत्रिका बा० शि०
बाणप्रस्थान पर्व्व	रामायणरामबिलास	लिंगपुराण
स्वर्गारोहणपर्व्व	रामायण तुलसीकृत	विष्णुपुराण
हरिबंश पर्व्व	रामायण सटीक मय	गरुडपुराण प्रेतकल्प
म०भा० पर्व्वअलेहदाभीहैं	मानसदीपिका कोषआदि	ब्रह्मोत्तरखंड

मुनिभिःप्रयुक्ताश्चिकित्सकैर्येबहुशोऽनुभूताः । विधीयतेशार्ङ्गधरे णतेषांसुसंग्रहस्सज्जनरंजनाय २ हेत्वादिरूपाकृतिसात्म्यजाति भेदैस्समीक्ष्यातुरसर्वरोगान् । चिकित्सितंकर्षणबृंहणाख्यं कुर्वी तवैद्योविविधंत्वनेकैः ३ दिव्यौषधीनांबहवःप्रभेदाः वृन्दारका णामिवविस्फुरंति । ज्ञात्वेतिसन्देहमपास्यधीरैस्सम्भावनीया

क्योंकि प्रकृति की उपमा के गुण पुरुष में पाये गये पुरुषकी उपमा के गुण प्रकृति में पाये गये पुनरर्थः प्रथम कविलोग अपने इष्ट देवसे मंगलाचरण में याच्यमानहोइ ग्रंथको रचित करते हैं कि महादेवजी का तेजरूप्यापित्ताधिपति पार्वतीजी की चन्द्रका शीतलश्लेष्माधिपति और प्रसारण धर्म वा व्यालभूषण करिकै वायुआधिपति जैसे गौरीशंकरको शोभा रूपी गुण सहित सदूर हैं तैसे शार्ङ्गधर वैद्य वैद्यों की सेवा में औषध के देनेवाले होहिंगे कैसाहै शार्ङ्गधर जैसे हिमाद्रि महाऔषधीन करि कै उपचित कहे प्रकाशित होइ रहा है तैसे शार्ङ्गधर महौषधी युक्त है ॥ १ ॥ शार्ङ्गधर जू कहत हैं कि जैसे सज्जन मनुष्यन के मन रंजन के निमित्त सुश्रुत चरकादि ऋषि औ श्रेष्ठ प्राचीन वैद्यों के निश्चित किये प्रसिद्ध योग या शार्ङ्गधर में संग्रह करि ग्रन्थित करे हैं ॥ २ ॥ प्रथम वैद्य इन पंचप्रकारसे स्वतन्त्र होइ हेतु १ आदि रूप २ आकृति ३ सात्म्य ४ जातिभेद ५ तब पीड़ितरोगी की निदान पूर्वक कर्षण बृंहणादि चिकित्सा करै कर्षण कहैं घटावना बृंहण कहैं बढ़ावना वातादि दोषन को घटावै २ इत्यादि लक्ष- ना हेतु कहैं निदान आदिकारण जिससे रोगकी उत्पत्ति है १ आदिरूप कहैं प्रथम रोगी की देह टूटना जँभवाई आवना २ आकृति कहैं चेष्टा मलिन होना तृषा मूर्छा सम्भ्रम दाह निद्रा नाश ३ सात्म्य कहैं रोगी की अपेक्षा जिस वस्तु को मन चाहै यथा गर्मी लगै पवन प्यासे में पानी वा हितकारक जैसे जाड़ालगै वस्त्र हित करै ४ जाति कहें इन्द्री परिज्ञान अपने अंग में साव- धान वा विह्वलता ॥ ३ ॥ जैसे वृन्दारक कहें देवतन में बहुत श्रेष्ठ गुणबिस्फुरित कहें प्रकाशितहैं तैसेही दिव्य कहें उत्तम औषधिन में भी भासितहैं सो ज्ञात्वा कहें जानिकै धीर वैद्य सन्देह छोड़िकै

विविधप्रभावाः ४ स्वाभाविकागन्तुककायिकान्तरा रोगाभवेयुः किलकर्मदोषजाः । तच्छेदनार्थं दुरितापहारिणः श्रेयोमयान्यौषधराज्ञियोजयेत् ५ प्रयोगानागमात्सिद्धा न्प्रत्यक्षादनुमानतः । सर्व्वलोकहितार्थाय वक्ष्याम्यनतिविस्तरात् ६ प्रथमंपरिभाषा स्याद्भैषज्याख्यानकन्तथा । नाडीपरीक्षादिविधिस्ततोदीपनपाचनम् ७ ततःकलादिकाख्यानमाहारादिगतिस्तथा रोगाणांगणना चैवपूर्व्वखण्डोऽयमीरितः ८ स्वरसःक्वाथफांटौचहिमकल्कश्च चूर्णकं तथैवगुटिकालेहौ स्नेहसन्धानमेवच ९ ॥

ऐसी सम्भावना करैं कि जैसे विश्वम्भरजी अधिक गुण औरनसाय औषधिनकै हैं ॥४॥ और स्वाभाविक आगन्तुक कायिक अन्तरिक इन चारोंसे वा तीनों दोषनसे वा प्रारब्धकर्म से रोग होइ ताको नाश करिबे को दुरित कहैं पापकप्रहार करनवारे श्रेष्ठ योग वैद्य करै स्वाभावादि लक्षण स्वाभाविक विहाराहार विषमता यथा विनुक्षुधा गतक्षुधा खान या हीन विपरीत भोजन वा निर्भो-जन योग्यों तथा और जन्म ते मरण पर्यन्त अवस्था से विपरीत कर्म होना १ आगन्तुक शस्त्राघात पतन प्रहार विषवदंसर्प पशु पीड़ितादि २ कायिककव्यायाम कम मैथुनादि धातु न्यूनाधिकत्वते दोषत्व कुपित होना ३ अन्तर जनले बैर क्रोध चिन्ता शोक मूर्छा संन्यास श्वास निरोधादि ४॥५॥प्रत्यक्ष से औ अनुमान से शास्त्र से जे प्रसिद्धयोग सो लोकके हितार्थ संक्षेप करि कहता हूं ॥ ६ ॥ या शार्ङ्गधर के तीन खण्ड हैं ताके प्रथम खण्ड में पहिले परि-भाषा कहैं औषधिकी तोलकी फिरि भैषज्याख्यान कहा औषधि भक्षणविधि फिरि नाड़ीपरीक्षा स्वप्नशकुनविचार अरु दीपन अग्नि ज्वलित करना पाचन जो अन्नको भस्म करि पचावै॥७॥ताके पीछे औषधिभक्षणसमय फिर आहार अन्तरप्रवेश गति कही और रोगोंकी संख्या कही इतनी बातें प्रथमखण्डमें हैं ॥ ८ ॥ अथ मध्यखण्डे अनुक्रमणिका द्रव्यन का रस क्वाथ कही काढ़ा फाण्ट कही इन पदार्थ का अग्नि योग से काढ़ना राति को भिजोई औषधिका प्रात जल लेइ इसे हिम कहिये कल्क कहैं पीठी चूर्ण गोली अवलेह कही चटनी तैल ॥ ९ ॥

धातुशुद्धिरसाश्चैव खण्डोऽयंमध्यमःस्मृतः । स्नेहपानंस्वेदविधि र्व्वमनंचविरेचनं १० ततस्तुस्नेहवस्तिःस्यात्ततश्चापिनिरूहणं ततश्चाप्युत्तरोवस्तिस्ततोनस्यविधिस्मृतः ११ धूमपानविधिश्चै व गण्डूषादिविधिस्तथा । लेपादीनांविधिःस्यातस्तथाशोणित विश्रुतिः नेत्रकर्मप्रकारश्च खण्डस्योत्तरस्त्वयं १२ द्वात्रिंशत्प्र मिताध्यायैर्युक्तेयंसंहितास्मृता षड्विंशतिशतान्यत्र श्लोका नांगणितानिच १३

॥ परिभाषा ॥ नमानेनविनायुक्ति र्द्रव्याणांजायतेक्कचित् । अतःप्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यतेमया १४ जालांतरगतेभानौ यत्सूक्ष्मंदृश्यतेरजः । तस्यत्रिंशत्तमोभागःपरमाणुःसउच्यते १५ त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरमाणुभिः । त्रसरेणुस्तुपर्यायैर्नाम्नावं शीनिगद्यते १६ जलांतरगतैस्सूर्यकरैर्वंशींनिगद्यते षड्वंशी भिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिस्तुराजिका । तिसृभीराजिकाभि

धातु शुद्धिः रसक्रिया ये मध्यखण्डमें कही अथोत्तरखण्ड अनुक्रम णिका घृत तेल पीना स्वेदबिधि सेकना औ औषधियों से पसीना निकलना वमन कही उछार विरेचन कही दस्त ॥ १० ॥ स्नेहवस्ति कहैं गुदमार्गसे पिचकारी देना निरूहण कहैं काढ़ा दूधकी पिच कारी देना उत्तरवस्ति कहैं पिचकारी का विधान अनन्तर नास विधि ॥ ११ ॥ धुवां पीनेकी विधि गण्डूषविधि जिसे पवनकुल्ला कहते हैं लेपादि की विधि अरु शोणितविश्रुतिः कही रक्त निकालना नेत्रांजन ये सब उत्तरखण्ड में कहे हैं ॥ १२ ॥ यह बत्तिस अध्यायमें कहा इसमें दो सहस्र छस्सै श्लोक हैं ॥ १३ ॥

॥ परिभाषा ॥ बिन तुली औषधि अयोग्य है इसलिये प्रयोग के निमित्त मागध परिभाषा कहता हूं ॥१४॥ जो छिद्रमें सूर्य्य की आभासे रजकण उड़ते देख पड़ते हैं उसके तीसरे भागको परमाणु कहते हैं ॥१५॥ किसी२के मतसे जो छिद्र में सूर्य की किरणैं दिखाई परती हैं उस ३० परिमाण का एक त्रसरेणु होता है इसीको वंशी कहते हैं वा छह वंशीकी एक मरीची छःमरीचीकी एक राई तीन

श्चसर्षपःप्रोच्यतेबुधैः १७ यवोऽष्टसर्षपैःप्रोक्तोगुंजास्यात्तच्चतुष्टयं । षड्भिस्तुरक्तिकाभिःस्यान्माषकोहेमधान्यकौ ॥ माषैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्धरणःसनिगद्यते १८ टङ्कःसएवकथितःतद्द्वयंकोलउच्यते. । क्षुद्रःकोलवटश्चैव द्रङ्क्षणस्सनिगद्यते १९ कोलद्वयंचकर्षः स्यात्साप्रोक्तापाणिमाणिका । अक्षंपिचुःपाणितलं किञ्चित्पाणिश्चतिन्दुकम् २० बिडालपदकंचैवतथाषोड़शिकामता । करमध्योहंसपदंसुवर्णंकवलग्रहः २१ उदुंबरश्चपर्यायैःकर्षएवनिगद्यते । स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलंशुक्तिरष्टमिकातथा २२ शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयमुष्टिराम्रंचतुर्थिका । प्रकुञ्चःषोडशीबिल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते २३ पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतश्चनिगद्यते । प्रसृतिभ्यामंजलिः स्यात्कुडवोर्द्धसरावकः २४ अष्टमानंचसंज्ञेयःकुडवाभ्यांचमानिका । शरावोष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः २५ शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकं । भाजनंकांस्यपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत् २६ चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोर्म्मणः । उन्मानश्च

राईकी एक सरसौं ॥१६—१७॥ आठ सरसोंका एकजौ चारजौकी गुंजा अर्थात् एक रत्ती छः रत्ती का एक मासा सोई हेम औधानक कहा है चार मासे का एकशाण यही धरण ॥१८॥ औ टङ्क कहाता है दो टङ्क का एक कोल उसीको क्षुद्र कोलबट द्रंक्षण कहते हैं ॥ १९ ॥ दो कोल का कर्ष होता है उसे पाणिमाणिका अक्षपिचु: पाणितल किञ्चित्पाणि तिंदुक ॥२०॥ बिडालपदक षोडशीकर मध्य हंसपद सुवर्ण कवलग्रह ॥२१॥ औ उदंबर कहते हैं ये सब कर्षके पर्याय हैं दो कर्षको अर्द्धपल सुक्ति अष्टमिकाकहते हैं ॥२२॥ दो सुक्तिको एक पल औ मुष्टि आम्र चतुर्थिका प्रकुञ्च षोडशी बिल्व कहते हैं ये सब पलको पर्याय कहिये ॥२३॥ और दुइपलकी एकप्रसृति औप्रसतकहतेहैं दुइप्रसतको अञ्जुलि कुड़व अर्ध शराव कहतेहैं ॥२४॥ औ अष्टमान भी कहतेहैं दोकुडवको मानिका उसी को अष्टपल कहतेहैं जो सहैद्यहै ॥२५॥ दो सरावकी एक प्रस्थ संज्ञाहै २ प्रस्थ वा आठ सराव वा चौंसठ पल

घटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञितः २७ द्रोणाभ्यांसूर्पकुम्भौचचतुःषष्टिसरावकः । सूर्पाभ्यांचभवेद्द्रोणीवाहोगोणीचसास्मृता २८ द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः । चतुःसहस्रपलिकाषण्णवत्यधिकाचसा २९ पलानांद्विसहस्रंचभारएकःप्रकीर्तितः । तुलापलशतंज्ञेयंसर्वत्रैवैषनिश्चयः ३० माषटंकाक्षबिल्वानिकुडवःप्रस्थमाढकं । राशिर्गोणीखारिकेतियथोत्तरचतुर्गुणाः ३१ गुंजादिमानमारभ्ययावत्स्यात्कुडवस्थितिः । द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणांतावन्मानंसमंमतं ३२ प्रस्थादिमानमारभ्यद्विगुणंतद्द्रवार्द्रयोः । मानंतथातुलायास्तुद्विगुणंनक्वचित्स्मृतम् ३३ मृद्वृक्षवेणुलोहादेर्भाण्डंयच्चतुरंगुलं । विस्तीर्णंचतथोच्चंचतन्मानंकुडवंवदेत् ३४ यदौषधन्तुप्रथमं यस्ययोगस्यकथ्यते । तन्नाम्नैवसयोगोहि कथ्यतेऽत्रविनिश्चयः ३५ ॥ इतिमागधपरिभाषा ॥

की आढक संज्ञा है इसे भाजन औ कांस्यपात्रभी कहते हैं ॥ २६ ॥ आढक चारकी एक द्रोण इसकेसात नाम हैं कलशनल्वण उर्म्मण उन्मान घट राशि ॥ २७ ॥ दो द्रोणका एकसूर्पकुम्भ इसे चौसठि सरावभीकहते हैं द्वै सूर्पकी एकद्रोणी औवाह औगोणीभी कहते हैं ॥ २८ ॥ चारद्रोणी की एक खारी चारि सहस्र छयानवे पलकी खारी संज्ञा है ॥२९॥ द्वै सहस्र पलको भार कहिये सौपलको तुला कहियेसबठौर यहीनिश्चय जानौ ॥३०॥ मासेसेचौगुना टङ्क टङ्कते चौगुना अक्ष अक्षते ४ बिल्वबिल्वते ४ कुडवकुडवते चौगुना प्रस्थ प्रस्थते ४ आढकआढ़कते ४ राशिराशिते४ गोणीगोणीते ४खारी एकते एक चौगुनी जानौ ॥ ३१ ॥ गुञ्जाते कुडवलौं सजलवस्तु सम लेना ॥३२॥ कुडवते तुलालौ सजली दूनी लेना तुला ते ऊपर ओदी द्रव्य दूनीलेना ॥ ३३ ॥ चारि अंगुल चौड़ा वा ऊंचा समान बासन माटीवा लोहादि किसीका होय उसकी कुडव संज्ञाजानौ ॥३४॥ जिस रोग पर जो औषधि कहैंगे तिसमें जिस द्रव्यका प्रथम नाम आवै उसीकोरे योग निश्चित करते हैं जो रासनादिक्वाथ इसमें प्रथम नाम रासन है ॥ ३५ ॥ इति मागध परिभाषा ॥

स्थितिर्नास्त्येवमात्रायाः कालमग्निंवयोबलं । प्रकृतिंदोषदेशौच दृष्ट्वामात्रांप्रकल्पयेत् ३६ यतोमन्दाग्नयोह्रस्वा हीनसत्वानराःकलौ । अतस्तुमात्रातद्योग्या प्रोच्यतेसुज्ञसम्मता ३७ यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्यतेबुधैः । यवद्वयेनगुंजास्यात्त्रिगुंजोवल्लउच्यते ३८ माषोगुंजाभिरष्टाभिः सप्तभिर्वाभवेत्क्वचित् । स्याच्चतुर्माषकैशाणः सनिष्कष्टंकएवच ३९ गद्यानोमाषकैःषड्भिः कर्षःस्याद्दशमाषकः । चतुःकर्षैःपलंप्रोक्तं दशशाणमितंबुधैः चतुःपलैश्चकुडवः प्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः ४० कालिंगंमागधंचेति द्विविधंमानमुच्यते । कालिंगान्मागधंश्रेष्ठ मितिमानविदोविदुः ४१ नवान्येवहियोज्यानि द्रव्याण्यखिलकर्मसु विना विडङ्गकृष्णाभ्यां गुडधान्याज्यमाक्षिकैः ४२ गुडूचीकुटजोवासाकूष्माण्डश्चशतावरी । अश्वगन्धासहचरौ शतपुष्पाप्रसारणी । प्रयोक्तव्याःसदैवार्द्रा द्विगुणांनैवकारयेत् ४३ सुष्कन्नवीनंयद्द्रव्यंयो

अथ कलिंग परिभाषा ॥ मात्राका कुछ प्रमाण नहीं स्थित करा समय अवस्था अग्नि बल प्रकृति रोग देश देखि कहै वैद्य मात्राका प्रमाण करै ॥ ३६ ॥ क्योंकि कलियुग में मनुष्य मन्दअग्नि लघु शरीर बल हीन होंइगे इस्से सद्वैद्योंका मत है कि मात्रारोगीको यथायोग्य देना ॥ ३७ ॥ बारह गौर सरसों का एक जौ २ जौकी एक गुंजा तीन गुंजा का एक वल्ल ॥ ३८ ॥ आठ गुंजा तथा सात गुंजा का मासा चारि मासे का शाण उसीको निष्क औ टंक भी कहते हैं ॥ ३९ ॥ छह मासेका गद्यान दश मासेका कर्ष चारि कर्ष का पल उसे दश शाण भी कहते हैं चारिपल का कुडव और प्रस्थादिक की प्रथम कही रीति से जानो ॥ ४० ॥ कलिंग प्रमाण से मागध प्रमाण सद्वैद्य उत्तम मानते हैं ॥ ४१ ॥ सर्व कर्मन में सब औषधि नवीन लेना बिना पीपरि विडंग धनियां घी सहत के ॥ ४२ ॥ गुर्च करैया रूसा कुम्हड़ा सेत सतावरि असगन्ध पीतकाठ सरैया छालकाठसरैया सौंफ गंध प्रसारणी ये द्रव्य ओदी दूनी न लेना और सूखी द्रव्य सकल प्रयोग में नवीन देना और ओदी द्रव्य

ज्यंसकलकर्मसु । आर्द्रञ्चद्विगुणंयुज्यादेषस्सर्व्वत्रनिश्चयः ४४ कालेऽनुक्तेप्रभातंस्या दंगेऽनुक्तेजटाभवेत् । भागेऽनुक्तेचसाम्यंस्या त्पात्रेऽनुक्तेचमृण्मयं ॥ ४५ एकमप्यौषधंयोगेयस्मिन्यत्पुनरुच्यते । मानतोद्विगुणंप्रोक्तं तद्द्रव्यंतत्वदर्शिभिः ४६ चूर्णस्नेहासवालेहाः प्रायशश्चन्दनान्विताः । कषायलेपयोःप्रायोयुज्यते रक्तचन्दनम् ४७ गुणहीनंभवेद्वर्षा दूर्ध्वंतद्रूपमौषधं । मासद्वयात्तथाचूर्णं हीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ४८ हीनत्वंगुटिकालेहौ लभेतेवत्सरात्परं । हीनाःस्युर्घृततैलाद्या श्चतुर्मासाधिकास्तथा ४९ औषध्योलघुपाकाःस्यु र्निर्वीर्यावत्सरात्परं । पुराणाःस्युर्गुणैर्युक्ता आसवोधातवोरसाः ५० व्याधेरयुक्तंयद्द्रव्यंगुणोक्तमपितंत्यजेत् अनुक्तमपियुक्तंहियोजयेत्तत्रतद्बुधः ५१॥

सूखीसे दूनी देना यह सर्वत्र निश्चयहै ॥ ४३—४४॥ जिस औषधी के खान पान का काल नहीं कहा उसका प्रातः काल जानना और जिस औषधिके अंगका नाम नहीं लिखा तहां मूल लेना जहां कई औषधि हैं और भाग भेद नहीं है वहां समभाग लेना जहां औषधि बनाने के पात्र की जाति नहीं लिखी तहां माटीका पात्रही लेना जहां औषधि को गोली करना होय और रस वा पानी वा दूध सिरका वा मल कुछ नहीं लिखा तहां जल लेना॥ ४५ ॥ जिस प्रयोगमें ग्रंथकारने जहां एकही औषधि को दोइ बार लिखें तहां वही औषधि के दोइभाग लेना यह प्रकार तत्वदर्शी वैद्य कहते हैं ॥ ४६ ॥ और चूर्ण तेल घृत हिम अरक अवलेह आदिकन में केवल चन्दन लिखा होतहां श्वेत लेना काढ़े और लेपमें लाल चन्दन लेना ॥ ४७ ॥ वर्ष भर औषधि में गुण रहता है फिर कम होजाता है दो मास बीते चूर्ण क्षीणता को प्राप्त होताहै ॥ ४८ ॥ वर्ष बीते गोली अवलेह का गुण हीन होता है सोलह मास बीते घी तेल गुणरहित होतेहैं ॥ ४९ ॥ वर्ष बीते लघु पाक निर्गुण होते हैं जैसेमेथी मोदक और दारूधातु रस पुराने गुणप्रद होतेहैं॥५०॥ जो औषधि रोग को अवगुणप्रदहो तिसे ग्रंथकी लिखी भी त्याग देइ और जो रोगको हितकारै सो अनलिखी भी ग्रहण करै॥५१॥

आग्नेया विन्ध्यशैलाद्याः सौम्योहिमगिरिर्म्मतः । अतस्तदौषधानिस्यु रनुरूपाणिहेतुभिः ॥ अन्येष्वपियरोहन्ति वनेषूपवनेषुच ५२ गृह्णीयात्तानिसुमनाः शुचिःप्रातःसुवासरे । आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥ साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादुत्तराश्रितं ५३ वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोखरमार्ग्गजाः । जंतुवन्हिहिमाव्याप्तानौषध्यःकार्यसाधकाः ५४ शरद्यखिलकार्यार्थं ग्राह्यंसरसमौषधं । विरेकवमनार्थंच बसन्तांतेसमाहरेत् ५५ अतिस्थूलजटायास्तुतासांग्राह्यास्त्वचोबुधैः। गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ५६ न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्यासारस्याद्बीजकादितः । तालीसादेश्चपत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः धातक्यादेश्चपुष्पाणिस्नुह्यादेःक्षीरमाहरेत् ५७ ॥ इतिशार्ङ्गधरव्याख्यायांपरिभाषाध्यायःप्रथमः ॥

दक्षिण के विन्ध्याचलादि पर्वत उष्ण प्रकृति हैं उनपर उत्पन्न औषधि भी उष्णप्रकृती होती हैं उत्तर के हिमाचलादि पर्वत शीतल हैं उनपर की उत्पन्न औषधि भी ठंढी होती हैं और बन उपवनमें जो द्रव्य होतीहैं सो जैसा उस पृथ्वी का स्वभाव होता है वैसाही उसकी उत्पन्न द्रव्य का भी स्वभाव होताहै ५२ मनुष्य प्रातःकाल पवित्र हो शुभ दिन मौन होके हृदय में शिवका ध्यान करि सूर्य के सन्मुख हो औषधि लावै साधारण जगहकी द्रव्य उत्तर मुखही होके लेना ॥ ५३ ॥ और इतनी जगहकी द्रव्य न लेना सर्प की बांबी कुत्सितभूमि जहां रण भया हो मशान की ऊसर जहां रेह चूना निकलता होइ खरमार्ग्ग की जहां गदहे लोटते हैं और मार्ग्ग की दल दल कृमिस्थान की दग्धभूमि की पाला मारी जड़ी इत्यादि भूमि की द्रव्य कार्यसाधक नहीं हैं ॥ ५४ ॥ सर्वकार्य के अर्त्थ शरद ऋतुमें ओदी औषधि लावै और वमन विरेचनके अर्त्थ बसंतके अन्तमें ओदी वस्तु लावै ॥ ५५ ॥ और अति स्थूल वृक्ष के जड़की छाल सद्वैद्यलेते हैं और सब छोटे वृक्षन की जड़ ग्राह्यहै ॥ ५६ ॥ और बरगदादि वृक्षनकीछाल ग्राह्यहै विजय सारादि वृक्षका हीर लीजै तालीसादि वृक्ष की पाती लीजै त्रि

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः । कषायश्चविशेषेणतत्र भेदस्तुदर्शितः १ ज्ञेयःपंचविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणां । किंचित्सूर्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सायंतनेभोजनेचमुहुश्चापि तथानिशि २ प्रायःपित्तकफोद्रेकेविरेकवमनार्थयोः । लेखनार्थंच भैषज्यंप्रभातेतत्समाचरेत् ॥ एवंस्यात्प्रथमःकालोभैषज्यग्रहणे नृणाम् ३ भैषज्यंविगुणेपानेभोजनाग्रेप्रशस्यते । अरुचौचित्र भोज्यैश्चमिश्रंरुचिरमाहरेत् ४ समानवातेविगुणेमन्दाग्नावग्निदीपनं । दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ५ व्यानकोपे चभैषज्यंभोजनांतेसमाहरेत् । हिक्काक्षेपककंपेषुपूर्वमंतेचभोजनात् ॥ एवंद्वितीयःकालश्चप्रोक्तोभैषज्यकर्मणि ६ ॥

फलादिक का फल लीजै धव आदिकके पुष्प लीजै सेहुड़ादिकका दूध लीजै इस रीतिसे वही ग्रहण करै जहां केवलवृक्ष का नाम है अंग नहीं है ५७ ॥ इति शार्ङ्गधरव्याख्यायां परिभाषाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

वैद्यलोग औषधि सवेरे खवावैं और कषायादि विशेष प्रातः कालमें फांट हिम स्वरस कल्क आवश्यक देना और जो औषधि देने का समयहै सो आगे कहताहूं ॥१॥ औषधिखानेके पांचसमय हैं प्रथमकाल किञ्चित् सूर्योदय में दूसरा दिनके भोजनसमय में तीसरा संध्या को चौथा निशिमें भोजन के समय पांचवां रात्रिमें सोने के समय ॥ २ ॥ जिस मनुष्य का पित्त और कफ का वेग हो उसे रेचन वा वमन कही उक्कार वा लेखनक्रिया प्रातःकाल करै लेखन कहें चमड़ेकी पट्टी माथेपर बांधिकै औषधि भरै पित्त के अधिकार में वमन कफ के अधिकार मेंरेचन और लेखन यह औषधि करनेका प्रथम काल बांधा ॥ ३ ॥ अपानवायुके बिगरेमें भोजन के प्रथम औषधि देय अरुचि में विचित्र भोजनके संग रुचिकारक औषधिखवावै ॥ ४ ॥ सहैद्य समान वायु औरमंदाग्नि में अग्निजलित कारक द्रव्य भोजनके मध्यमें देय ॥ ५ ॥ व्यान वायु के कोप में भोजनके अन्तमें औषधि खवावै और हिचकी आक्षेपक कम्प वायु में भोजन के आदि अन्त में देय यह दूसरा काल है ॥ ६ ॥

उदानेकुपितेवातेस्वरभङ्गादिकारिणि । ग्रासेग्रासांतरेदेयं भैष-
ज्यंसांध्यभोजने ७ प्राणप्रदुष्टेसांध्यस्य भुक्तस्यांतेचदीयते । औ
षधंप्रायशोधीरैः कालोयंस्यात्तृतीयकः ८ मुहुर्मुहुश्चतृट्छर्दि हि
क्काश्वासगरेपुच । सान्नन्चभेषजंदद्यादितिकालश्चतुर्थकः ९ ऊर्ध्वं
जत्रुविकारेषु लेखनेबृंहणेतथा । पाचनंशमनंदेयमनन्नंभेषजंनि
शि ॥ इतिपञ्चमकाल स्स्यात्प्रोक्तोभैषज्यहेतवे १० द्रव्येरसोगु
णोवीर्य्यं विपाकःशक्तिरेवच । संबन्धेनक्रमादेताः पञ्चावस्थाःप्र
कीर्त्तिताः ११ मधुरोम्लःपटुश्चैव तिक्तःकटुकषायकः । इत्येते
षट्रसाख्यातानानाद्रव्यसमाश्रिताः १२ धरांवुक्ष्मानलजल
ज्वलनाकाशमारुतः । वाय्वग्निक्ष्मानिलै र्भूतद्वयैरसभवःक्रमात्
१३ गुरुस्निग्धश्चतीक्ष्णश्च रूक्षोलघुरितिक्रमात् धरांवुवन्हि
पवनव्योम्नां प्रायोगुणाःस्मृता । एष्वेवांतर्भवं त्यन्येगुणापृगुणा

गुण—भू गुरु जल चिक्कनअग्नि तेज स्वरभंग करनेवाली उदान
वायु के कोपमें सन्ध्या समय ग्रासग्रास के अन्त में औषधिदेइ॥ ७ ॥
प्राण वायु के कोप में सांझ को भोजन के अन्तमें देइयह
तृतीयकाल बांधा ॥ ८ ॥ और बार बार प्यास छर्द्द हिचकी श्वास
में औ बिष पीड़ित को अन्नके संग औषधि देइ यह चौथा काल
बांधा ॥ ९ ॥ गले के ऊपर कर्ण रोग नेत्र मुख नासिका के रोगन में
लेखनके निमित्त रातको बिना अन्न पाचन समय औषधि देइ यह
पञ्चम काल जानना ॥ १० ॥ औषधि के पांच अधिकार हैं रस १
गुण २ वीर्य्य ३ विपाक ४ शक्ति ५ ॥ ११ ॥ सब द्रव्यों में छह स्वाद
हैं मधुर १ खट्टा २ लवण ३ तीक्ष्ण ४ कडुवा ५ कषाय ६ ॥ १२ ॥
पृथ्वी औ जलसे मधुर रस होताहै १ पृथ्वी पवनसे खट्टा होताहै२
जल औ अग्निसे लवण होताहै ३ आकाश औ वायुसे तीक्ष्णहोता
है ४ वायु और अग्नि से कडुवा होता है ५ पृथ्वी और अग्नि से
कसैला होताहै ६ योंदो तत्त्व मिलकै एक रस होताहै ॥ इतिरसो
त्पत्तिः ॥ १३ ॥ अथगुण— पृथ्वी का गुण भारी है जल का चिकना
अग्निका तेज—वायुका रूखा—आकाशकागुणहलकाहै— येपांचों
तत्त्वके पांच गुणहैं औरजो गुणादि भी इनके मेलसे होते हैं सो

सन्त्यथाः १४ वीर्य्यमुष्णंतथाशीतं प्रायशोद्रव्यसन्त्वयं । यत्सर्व मग्निषोमीयं दृश्यतेभुवनत्रये अत्रैवांतर्भविष्यन्ति वीर्य्याण्यन्या नियान्यपि १५ मिष्टःपटुश्चमधुरमम्लोऽम्लंपच्यतेरसः। कषाय कटुतिक्तानांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः १६ मधुराज्जायतेश्लेष्मापि त्तमम्लाच्चजायते। कटुकाज्जायतेवायुःकर्माण्येतानिपाकतः १७ प्रभावस्तुयथाधात्री लकुचस्यरसादिभिः । समोपिकुरुतेदोष त्रितयस्यविनाशनं १८ कश्चित्तुकेवलंद्रव्यं कर्म्मकुर्यात्प्रभावतः। ज्वरंहन्तिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा १९ कश्चिद्रसोगुणोवीर्य्यं विपाकः शक्तिरेवच । कर्म्मस्वंस्वंप्रकुर्वंति द्रव्यमाश्रित्ययेस्थिताः २० चयकोपसमायस्मिन्दोषाणांसम्भवंतिहि ऋतुखट्

अनुमानसे जानना ॥ इति गुण ॥ १४ ॥ अथवीर्य्य—सब द्रव्यका स्वभाव गर्म या ठंढा होता है सो सूर्य्य या चन्द्रमा करिकै उत्पन्न है इन्हीं दोनोंसे ती मधुरादि स्वाद द्रव्यके अन्त उत्पन्न होताहै ॥ इतिवीर्य्य ॥ १५ ॥ अथविपाक—मीठे वुनखरेसे मधुर रस होताहै खट्टा विपाक परभी खट्टा रहताहै—कषाय कटुतिक्त ये तीनों बिपाक पर कडुये होतेहैं ॥ १६ ॥ मधुर रस से कफ होताहै अम्ल से पित्त होता है कडुये से वायु होता है रसों के पाक से तीनों दोष होतेहैं ॥ इतिविपाकः ॥ १७ ॥ अथ प्रभावगुण—आंवरेका रस गुण वीर्य्य विपाक अधिकार ते समान गुणहैं यद्यपि हलका है तौभी त्रिदोष नाशक है कहीं लकुचस्य ऐसा पाठ है आंवरे का गुण वीर्य्य विपाक त्रिदोषनाशक है औ बड़हलका गुण वीर्य्यविपाक त्रिदोष कारक है जो दोनों मिलाय कै देइ तो भी आंवरा अपने प्रभाव से त्रिदोष नाश कर्ता है यह राजनिघंटु का मतहै ॥ १८ ॥ कोई कोई द्रव्यके केवल प्रभाव से रोग दूरहोजाते हैं जैसे सहदेई की जड़ माथेपर बांधने से ज्वर छूट जाता है इति प्रभाव ॥ १९ ॥ किसी औषधिका रस किसीका गुण किसी का वीर्य्य किसी का विपाक किसीकी शक्ति ये सब द्रव्यके आधीनहैं अपनी अपनी प्रकृतिके अनुसार गुण करती हैं गुरचका रस कडुवा औ गर्म है तौभी पित्त नाश करता है ॥ इति रस उदाहरण—गुण उ० मूली

कंतदाख्यातंरवेराशिपुसंक्रमात् २१ ग्रीष्मोमेषवृषौप्रोक्तौ प्राविट् मिथुनकर्कयोः । सिंहकन्येस्मृतावर्षा तुलावृश्चिकयोःशरत् धनुर्ग्राहौचहेमन्तो बसन्तःकुम्भमीनयोः २२ ग्रीष्मेसञ्चीयतेवायुः प्रावृट्कालेप्रकुप्यति । वर्षासुचीयतेपित्तंशरत्कालेप्रकुप्यति २३ हेमन्तेचीयतेश्लेष्मावसन्तेचप्रकुप्यति । प्रायेणप्रशमंयातिस्वयमेवसमीरणः २४ शरत्कालेचहेमन्तेपित्तंप्रावृट्स्मृतौकफः । कार्त्तिकस्यदिनान्यष्टावष्टावाग्रहणस्यच । यमदंष्ट्रासमाख्याताअल्पाहारीसजीवति २५ चयकोपसमादोषा विहाराहारसेवनैः समा

कडुई है तौभी कफ करती है वीर्य्य उ० बड़े पंचमूलका क्वाथ कटु है तोभी बातशमन कर्त्ता है क्योंकि उष्ण वीर्य्य है विपाक—सोंठि तीक्ष्ण है तौभी बातशमन है क्योंकि मधुर विपाक है शक्ति उ० जैसे सुश्रुतमें कहा है कि खैर कुष्टको नाश करता है ॥ २० ॥ बात पित्त कफके बढ़ानेवाली औ कुपित करनेवाली सम करनेवाली ऋतुका प्रमाण संक्रांति से है ॥ २१ ॥ मेष की संक्रांति से वृष की संक्रांति ताईं ग्रीष्मऋतु है मिथुन ते कर्क ताईं प्राविट् है सिंह ते कन्या ताईं वर्षा है तुला ते वृश्चिक ताईं शरद है धनु ते मकर ताईं हेमन्त है कुम्भ ते मीन पर्य्यंत वसन्त है यौंयों दोदो मासकी एक एक ऋतु होती है ॥ २२ ॥ ग्रीष्ममें वायु संचित कहे इकट्ठी हो प्राविट्में कोप करती है बर्षामें पित्त बढ़के शरदमें कोप करता है ॥ २३ ॥ हेमन्त कहे शिशिर में कफ इकट्ठा हो वसन्त में कोप करता है और वायु इन महीनों के बीते आपसे आप पंचवें महीनेमें समान होजाती है ॥ २४ ॥ शरदऋतु औ हेमन्त ऋतुमें पित्तशम होजाता है और प्राविट् ऋतु पाइकै कफ समवर्त्ती होता है औ कार्त्तिक शुक्लपक्षकी अष्टमी से मार्ग्ग शुक्ल अष्टमी ताईं सोलह दिन पर्य्यंत इन दिनोंकी यमदंष्ट्रा संज्ञा है इस यमदंष्ट्रा भर सूक्ष्म आहार करने वाला मनुष्य सुखी रहता है क्योंकि इन दिनोंमें पित्तके कोपसे विशेष अग्नि दीप हो रुचि बढ़ाता है तो भोजन विशेष करता है विशेष भोजन अग्नि सन्तुष्ट कर देता है तिसकी आगेकी ऋतुमें कफ सञ्चय होता है उससे अग्नि मन्द होती है तब अन्न के परिपाक न होनेसे रोग उत्पन्न होते हैं और जो यमदंष्ट्रा के दिनों में

नैर्ऋत्यकालेपि विपरीतैर्विपर्य्ययं २६ लघुरुक्षमिताहारा इति शीताच्छ्रमात्तथा।प्रदोषेकामशोकाभ्यांभीचिन्तारात्रिजागरैः २७ अभिघातादपांगाहाज्जीर्णान्नेधातुसंक्षयात्। वायुःप्रकोपंयात्येभिः विपरीतैश्चशाम्यति २८ विदाहिकटुकाम्लोष्णा भोज्यैरत्युष्ण सेवनात्। मध्यान्हेक्षुत्तृषारोधाज्जीर्य्यत्यन्नेर्द्धरात्रकेः पित्तंप्रकोपं यात्येभिः विपरीतैश्चशाम्यति २९ मधुरस्निग्धशीतादि भोज्यै र्दिवसनिद्रया। मन्देग्नौतुप्रभातेच भुक्तमात्रेतथाश्रमात्।श्लेष्मा प्रकोपंयात्येभिः प्रत्यनीकैश्चशाम्यति ३० ॥ इतिश्रीदामोदर सूनु शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां सूत्रस्थानेभैषज्याख्यानक द्वितीयोध्यायः २ ॥

करस्यांगुष्ठमूलेया धमनीजीवसाक्षिणी। तच्चेष्टयासुखंदुःखं ज्ञेयंकायस्यपण्डितैः १ ॥

अग्नि सन्तुष्ट न हो तो वर्ष पर्यंत अग्नि दीप्त रहै॥ २५॥ जे मनुष्य आहार विहारके समय का संयम रखते हैं उनके दोष सम रहते हैं औ जो समय से विपरीत करते हैं उनके दोष घटते बढ़ते कोप करते सम होते रहते हैं॥ २६॥ और हलके रूखे थोड़े ठंढे आहार अरु श्रम सन्ध्या के समय मैथुन अरु शोक भय चिन्ता राति के जागने से ॥ २७ ॥ चोट से पैरने से बासी भोजन से धातु क्षयसे बात कोप करता है जो इनते बचै तो वायु सम है—इति वायुः॥ २८॥ औझा खाली वस्तु कटु खट्टी गरम अति गरम वस्तु सेवन दोपहरी को भूँख प्यास रोकना आधी रात्रिको भोजन इन से पित्त कुपित होता है इनसे सावधान रहै सम होता है—इति पित्त॥ २९॥ मीठा खटमिट्ठा ठंडा दिनमें निद्रा भूँखे रहना सबेरे खाना अनश्रम इनसे कफ कुपित होता है—इतिकफ ॥ ३०॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां सूत्रस्थाने भैष ज्याख्यानकद्वितीयोध्यायः २॥

अथ नाड़ीपरीक्षा॥ हाथके अँगूठेकी जड़में जोनाड़ी चलती है सो जीवकी साक्षीहै वैद्य उसकीचेष्टादेखिकै दुखसुखपहिंचानलेइ॥ १ ॥

नाड़ीधत्तेमरुत्कोपे जलौकासर्प्पयोर्ग्गतिं कुलिंगकाकमण्डूकगतिं पित्तस्यकोपतः हंसपारावतगत्तिं धत्तेश्लेष्मप्रकोपतः २ लावतित्तिरवर्त्तीर गमनंसन्निपाततः । कदाचिन्मन्दगमनाकदाचिद्वेगवाहिनी॥ द्विदोषकोपतोज्ञेयाहंतिचस्थानविच्युता ३ स्थित्वास्थित्वा चलतियासास्मृताप्राणनाशिनी। अतिक्षीणाचशीताचजीवितंहंत्यसंशयं ४ ज्वरकोपेनधमनीसोष्णावेगवतीमता । कामक्रोधाद्वेगवहाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ५ मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्च नाड़ीमन्दतराभवेत् । असृक्पूर्णाभवेत्कोष्णा गुर्वीसामागरीयसी ६ लघ्वीबहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीमता। सुखितस्यस्थिराज्ञेयातथा बलवतीस्मृता ॥ चपलाक्षुधितस्यस्यात्तृप्तस्यवहतिस्थिरा ७ अथ दूतलक्षणम्--दूताःस्वजातयोऽव्यंगाः पटवोनिर्म्मलांवराः । सुखिनोश्वदृषारूढ़ाःशुभ्रपुष्पफलैर्य्युताः ८ ॥

बायु प्रधान नाड़ी जोंक सर्प्पकी नाईं चलतीहै पित प्रधान नाड़ी गौरा औ मेढक की चाल चलती है कफ प्रधान नाड़ी हंस औ कबूतर की चाल चलतीहै ॥ २ ॥ सन्निपात की तीतर बटेर की चाल चलती है द्वन्द्वज दो दोष नाड़िका की नाड़ी कहीं धीरी कहीं जल्दी चलती है औ जो नाड़ी अपने स्थानको त्याग दे तो प्राण की हनने वाली है ॥ ३ ॥ जो नाड़ी दश पांच बेर चलके बन्दहोहो चलै वा अति धीरी चलै औ अति ठंडीहो तो रोगी न जियै ॥ ४ ॥ ज्वर की नाड़ी गरम है जल्द बहती है कामातुर औ क्रोधी की नाड़ी जल्दी चलतीहै चिन्ता औ भय की नाड़ी क्षीण होती है ॥ ५ ॥ मन्दाग्नि औ धातु क्षीण भये नाड़ीअति धीरी चलती है रक्त बिकारकी कुछगरम हो पत्थरसी भारी चलतीहै आंवसंयुक्त लदे महिष की गति होतीहै ॥ ६ ॥ जिसकी अग्निदीप्त है उसकी नाड़ी हलकी औ जल्दी चलती है आरोग्य की स्थिर बलवान् होतीहै भूँखेकीचपल अघानेकी स्थिरचलती है ॥ ७ ॥ इति नाड़ी परीक्षा ॥ अथदूतलक्षण—अच्छी जाति वा अपनी जाति अंगशुद्ध श्वेतांबर धारी चतुर सुखी घोड़ेपर सवार श्वेत फूल फल संयुक्त दूत हो सो श्रेष्ठ दूत जानिये ॥ ८ ॥

सुजातयस्सुचेष्टाश्च सजीवदिशिसंश्रिताः । भिषजंसमयेप्राप्ता रोगिणस्सुखहेतवः ९ ॥ इति दूतलक्षणम् ॥ वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतोरोगिणःकृते।नशुभंसौम्यशकुनं प्रदीप्तञ्चसुखावहं १० चिकित्सांरोगिणः कर्त्तुङ्गच्छतोभिषजःशुभं ।यात्रायांसौम्यशकुनं प्रोक्तंदीप्तंनशोभनं ११ नारीपुत्रवतीमार्गेकुमारीदीपमालिका। ज्वलतोग्नेश्शुभाश्शब्दामङ्गलंशङ्खनादिकं १२ मृदङ्गादिध्वनिःपूर्णा कलशोदधिमृत्तिका फलञ्चमदिरामांसंमत्स्यादिकुंकुमादिकं १३ गजाश्वरथताम्बूलंचामरंकनकादिकं।शुभंस्याद्गच्छतामार्गे वैद्यस्यालाभदायकम् १४ ॥ इतिशकुनं ॥ निजप्रकृतिवर्णाभ्यां युक्तस्सत्वेनसंयुतः । चिकित्स्योभिषजारोगी वैद्यभक्तोजितेन्द्रियः १५ ॥ इतिरोगीलक्षणम् ॥ कुचैलःकर्कशस्स्तब्धःकुग्रामी स्वयमागतः । पञ्चवैद्यानपूज्यन्ते धन्वन्तरिसमाअपि १६

अपनी जाति होयसुन्दरहो औ वैद्यकी चलत खासा कीओरबैठे वैद्यके पास शुभ समय आइ तो रोगीसुखीहोय ९ ॥ इतिदूतलक्षणं ॥ अब दूतको वैद्यके बुलाने जातेसमय राहमेंशुभशकुनते अशुभ अशुभते शुभजानो ॥ १० ॥ जब वैद्य रोगीके यहां यात्रा करै और उससमय यदि सौम्य शकुन होय तो शुभहै ॥ ११ ॥ जो मार्गमें पुत्रवती स्त्री मिलै तथादीपककी माला ग्रहण किये हुये कन्यामिलै—प्रज्वलित अग्नि शिखा शंख मृदंगादिकी ध्वनि होती सन्मुख दृष्टिपरै तथा कुम्भ दही मिट्टी फलमदिरामांस मछली आदिक केसर आदि सुगन्धि पदार्थ हाथी घोड़ा रथपान चामर सुवर्णादि पदार्थ यदि जातेहुये मार्ग में मिलें तो शुभहैं—१२—१३—१४इति शकुन बिचार: चिकित्सा योग्य जिसरोगीकी प्रकृति औ वर्ण जैसे का तैसा हो औ सत्व संयुक्त हो और रोगी कावैद्यसे भक्तिहोय अर्थात्वैद्य के वाक्य में निश्चय होय औ जितेंद्रिय अर्थात् कुपथी न होय इन्द्रिनके संयममें सावधान हो ऐसा रोगी चिकित्सा योग्य है ॥ १५ ॥ इति रोगी लक्षणं ॥ कुचैल कही जो मैले कुचैले कुत्सितवस्त्रधारणकरै और बिवादीकलहीजड़ कुग्रामबासीहोय

वैद्यः स्याद्गुरुसन्निधानकुशलः पीयूषपाणिः शुचिः दक्षः कालवयोबलौषधिगदज्ञानोदितः शास्त्रवित् धीरान्तःकरणः क्रियासुकुशलः कारुण्यपूर्णः स्पृहायुक्तोऽद्भुतनिर्मलमन्त्रचतुरो वाग्मी प्रगल्भः सुखी १७॥ इति वैद्य लक्षणम्—स्वप्ने पुनर्नग्नान्मुण्डांश्च रक्तकृष्णाम्बरावृतान् । व्यंगांश्च विकृतान्कृष्णान्सपाशान्सायुधानपि १८ बध्नतो निघ्नतश्चापि दक्षिणांदिशिमाश्रितान् । महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोर्यस्तु पश्यति स्वस्थोपि लभतेव्याधिं रोगीयात्येव पञ्चतां १९ अधो योनिपतत्युच्चाज्जलेग्नौ वा विलीयते श्वापदैर्हन्यते योपि मत्स्याद्यैर्गिलितो भवेत् २० यस्य नेत्रे विलीयेते दीपो निर्वाणतां व्रजेत् । तैलं सुरां पिबेद्वापि लोहं वा लभते तिलान् २१ पक्वान्नं लभते श्नाति विशेत्कूपं रसातलं । स्वस्थोपि लभते रोगं रोगीयात्येव पंचतां २२

और बिना बुलाये आपही आवैं वे पांच वैद्य यदि धन्वन्तरि के भी समान होय तौभी पूज्य नहीं हैं ॥ १६ ॥ जिस वैद्यने सद्गुरु से शास्त्राध्ययन किया होय और जिसकी औषधि से प्रायशः रोगी आरोग्य होते होयं अर्थात् जिसके हाथकी दीहुई औषधि अमृत सरीखा गुणकरै— जो दक्ष कही प्रवीण और पवित्र तथा काल पराक्रम बलानुसार रोगका यथार्थज्ञान करिके औषधि करै—और शास्त्रवेत्ता अत्यंत धीर क्रियामें कुशल कही प्रवीण और दयालु यंत्र मंत्रमें अतिही चतुर—अत्यन्त प्रगल्भ प्रसन्नचित्त धनी सम्पूर्ण सुख करके सहित सर्वदा मधुर संभाषण करै—ऐसे वैद्य की औषधि सर्वदा श्रेयष्कर होती है॥ १७ ॥ इति वैद्य लक्षणम् ॥ रोगी स्वप्न में नंगा शिरमुड़ा रक्त कृष्णवस्त्र पहिरे भयंकर अंगभंग काला फांसी और शस्त्र धरै ॥१८॥ बांधता मारता किसीको दक्षिण लिये जाता आवता देखै वा खर ऊंट भैंसे पर सवार नारी पुरुष कोई देखै तो आरोग्यको रोग होय और रोगी होतो मरिजाय॥ १९ ॥ और ऊंचेसे नीचे गिरा जलमें बूड़ा अग्निमें जलता बिपत्ति में पड़ा मित्र बांधव वा मकरादि के मुखमें लीलता हुआ देखै ॥ २० ॥ नेत्रते अन्धमय दीखै दीपक बुझता देखै तैल सुरा पियै स्वप्न में तिल वा लोहा पावै॥ २१ ॥ पक्वान्न खाले कुआं में गिरै वा रसातल

दुःस्वप्नान्येवमादीनि दृष्ट्वाब्रूयान्नकस्यचित् । स्नानंकुर्य्याद्द्विजेभ्यश्च दद्याद्धेमतिलानिच २३ पठेत्स्तोत्राणिदेवानां रात्रौदेवालयेवसेत् । कृत्वैवंत्रिदिनंमर्त्यो दुःस्वप्नात्परिमुच्यते २४ स्वप्नेषुयः सुरान्भूपा जीवतःसुहृदोद्विजान् । गोसमिद्धाग्नितीर्थानि पश्यत्सुखमवाप्नुयात् २५ तीर्त्वाकलुषनीराणि जित्वाशत्रुगणानपि आरुह्यसौधगोशैल करिवाहान्सुखीभवेत् २६ शुभ्रपुष्पाणिवासांसि मांसमत्स्यफलानिच । दृष्ट्वातुरःसुखीभूयात्स्वस्थोधनमवाप्नुयात् २७ अगम्यागमनंलेपो विष्टायारुदितंमृतं । आममांसाशनंस्वप्ने धनारोग्यायतेविदुः २८ जलौकाभ्रमरीसर्प्पा मक्षिकावापियंदशेत् । रोगीसभूयादारोग्यः स्वस्थोधनमवाप्नुयात् २९ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधर विरचितसंहितायांसूत्रस्थाने नाड़ीपरीक्षादि स्वप्नलक्षणदूतशकुनरोगीलक्षणवैद्य प्रशंसाख्यानन्नामाध्यायोऽयंतृतीयः ३ ॥

जाइ ऐसे स्वप्न देखने वाला अच्छा हो तो रोगी हो रोगी हो तो मरै ॥२२॥ ऐसे२ स्वप्न देखिकै किसूसे न कहै सबेरे न्हाके सोना तिल यव दान करै ॥२३॥ तीन दिन स्तोत्रादि का पाठ करै औ रात्रि को देवस्थानमें रहै तो दुःस्वप्न फल नाश होइ ॥ २४ ॥ अथ सुस्वप्न स्वप्नमें देवता औ राजा औ जीवत मित्र ब्राह्मण गऊ यज्ञ तीर्थादि ऐसा स्वप्न देखै तो सुख को प्राप्त होय ॥ २५ ॥ औ मलिन जल में पैरत शत्रुकी सैन जीतै अटारी वा पर्वत वा हाथी वा घोड़ा इन सबन पर चढ़ा देखै तो सुखहोय ॥२६॥ श्वेत फूल सूक्ष्म वस्त्र मांस मछरी वा फल रोगी स्वप्नमें देखै तो रोगसे निर्मुक्त होय जो आरोग्य होइ देखै तो धन प्राप्त होय ॥ २७ ॥ अगम्यागमन कहै जिन स्त्रीन से गमन अयोग्य है तिनका गमन करै मल लपटै रोता मरता कच्चा मांस खाता देखै वा बातैंकरै तो रोगी आरोग्यहोय अच्छे को द्रव्य मिलै ॥ २८ ॥ और जोंक भौंरी सर्प्प माखी इन्हें डसे देखै तो रोगी आरोग्य होय द्रव्य पावै ॥ २९ ॥ इतिदामोदर सूनुशार्ङ्गधर विरचितसंहितायां सूत्रस्थानेनाड़ीपरीक्षा स्वप्नलक्षण दूतशकुनरोगीलक्षणवैद्य प्रशंसाख्यानन्नामाध्यायोऽयंतृतीयः ३ ॥

पचेन्नामंवन्हिकृच्च दीपनंतद्यथामिषिस् । पचत्यामंनवन्हिंच कुर्याद्यत्तद्धिपाचनं नागकेसरवद्विद्या च्चित्रोदीपनपाचनः १ नशोधयतिनद्वेष्टि समान्दोषांस्तथोद्धतान् । शमीकरोतिविषमान्श्च मनंतद्यथास्मृता २ कृत्वापाकंमलानांयद्भित्वाबंधमधोनयेत् । तच्चानुलोमनंज्ञेयं यथाप्रोक्ताहरीतकी ३ पक्तव्यंयदपक्वैवश्लिष्टं कोष्ठेमलादिकं । नयत्यधःस्रंसनंतद्यथास्यात्कृतमालकः ४ मलादिकमबद्धंच बद्धंवापीडितंमलैः । भित्वाधःपातयतितद्भेदनंकटुकीयथा ५ विपक्वंयदपक्वंवा मलादिद्रवतांनयेत् । रेचयत्यपितंज्ञेयं रेचनंतत्त्रिवृतायथा ६ अपक्वंपित्तश्लेष्माणां बलादूर्द्ध्वंनयेत्तुयत् । वमनंतद्धिविज्ञेयं मदनस्यफलंयथा ७ स्थानाद्बहिर्नयेदूर्द्ध्वमधोवा मलसञ्चयं । देहसंशोधनंतत्स्या द्देवदालीफलंयथा ८ श्लिष्टान्कफादिकान्दोषा नुन्मूलयतियद्बलात् । छेदनंतद्यथाक्षार

अथदीपनपाचन—आंवको पचावै अग्नि प्रज्वलितकरै तिसे दीपन कहते हैं यथा सौंफ औ आंवको पचावै अग्नि न बढ़ावै उसे पाचन कहतेहैं यथा नागकेसर और चीता दीपनपाचन दोनोंहैं ॥१॥ जो द्रव्य कोठेको शुद्ध करै मल न बांधै औ बढ़े दोष को शमन करै उसे शमन कहते हैं यथागुर्च ॥२॥ औ जो द्रव्य मलको पचावै भेदन करै गिरावै तिसको अनुलोमन कहतेहैं यथा हर्र ॥ ३ ॥ जो वस्तु पकने योग्य अनपची होय कोठेमें लपटिकै रहि गईहो तिसे अधोमार्ग से गिरावै उसे स्रंसन कहते हैं यथा अमलतास ॥ ४ ॥ जो मल वातादिक दोष तें बँधा होय वा गोटे पड़ गयेहों उसे फोरिकै अधोमार्गसे गिरावै तिस द्रव्यको भेदन कहतेहैं यथा कुटकी ॥ ५ ॥ जो मल वातादि दोष ते विशेष पक गयाहो या अपक्क हो उसे पतला करि बहावै उसे रेचन कहते हैं यथा निशोथ ॥ ६ ॥ जो द्रव्य कच्चा पित्त कच्चा कफ ऊर्द्ध मार्गसे निकालै उसे वमन कहते हैं यथा मैनफल ॥ ७ ॥ जो द्रव्य दुष्टमल वा पित्त कफ स्थान छुटायकै ऊर्द्धमार्ग या अधोमार्गसे गिरावै उसे शरीरशोधन कहते हैं ऐसी शरीर शोधनी कौन द्रव्य है यथा देवदाली कहैं बनतोरई ॥ ८ ॥ जो बँधेहुये कफादिक दोषन को सुशक्ति करि निकारै उसे छेदन

मरिचानिशिलाजतु ९ धातून्मलान्वादेहस्य विशोष्योल्लेखयेञ्च यत् । लेखनंतद्यथाक्षौद्रं नीरमुष्णंवचायवाः १० दीपनंपाचनं यत्स्याटुष्णत्वाद्द्रवशोषकं । ग्राहीतञ्चयथाशुंठी जीरकंगजपिप्प ली ११ रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वा ल्लघुपाकाञ्चयद्भवेत् । वातकृत्स्तं भनंतस्याद्यथावत्सकटुंटकौ १२ रसायनञ्चतज्ज्ञेयंयज्जराव्याधि नाशनं । यथाऽमृतारुदन्तीचगुग्गुलश्चहरीतकी १३ यस्माद्द्रव्या द्भवेत्स्त्रीषु हर्षोवाजीकरञ्चतत् । यथानागवलाद्याः स्युर्बीजंचक पिकच्छजं १४ सद्यःशुक्रकरंयश्च तदृष्यंस्यात्यथापयः । देहस्थू लकरंयस्तु बृंहणंतद्यथामिषम्—यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिः स्याच्छुक्र लंचतदुच्यते । यथाश्वगन्धामुशली शर्कराचशतावरी १५ दुग्ध माषश्चभल्लात फलमज्जामलानिच । प्रवर्त्तकानिकथ्यंते जनकानि चरेतसः १६ प्रवर्तनंस्त्रीशुक्रस्य रेचनंबृहतीफलं । जातीफलंस्त

कहते हैं यथा यवाखारादि औ सोंठि मिरच पीपर शिलाजीत इति छेदन ॥ ९ ॥ रसादि धातु औ शरीर के मल तिन्हैं सुखा के देह को दुर्बल करै उसे लेखन कहते हैं यथा सहत उष्णजल बच यव ॥ १० ॥ जो दीपन औ पाचन करै औ गर्मी करि कै कफ धातु मल इनके रसको सुखावै तिसे ग्राही कहते हैं यथा सोंठि श्वेत जीरा गजपीपरि ॥ ११ ॥ जो द्रव्य रूक्ष हो औ ठण्ढा हो कषाय हो औ पाचनशक्ति नीचहो सो वातकृतद्रव्यको स्तंभन कहते हैं यथा कुरैया और सोहन पत्ती ॥ १२ ॥ जो द्रव्य जराव स्था के रोगन को दूरि करै उसे रसायन कहते हैं यथा गुर्च रुद्र वन्ती गुग्गुल ॥ १३ ॥ जिस द्रव्य से मैथुन में विशेष सुख हो तिसे बाजीकरण कहते हैं यथा बरियारा किमाच बीजी ॥ १४ ॥ जो शीघ्रही शुक्र कही वीर्य को बढ़ावै उसे वृष्य कहते हैं यथादूध— और जो देह को स्थूल कही हृष्ट पुष्ट मोटी करै उसे वृंहण कहते हैं यथा आमिष कही मांस—जो धातु को बढ़ावै उसे शुक्रल कह तेहैं यथाअसगन्ध मुशली शर्करा सतावरि ॥१५॥ और जोधातुकी वृद्धिकरैउसे रेतजन्य कहतेहैं यथा दूध उर्दभिलौंनी आंवरा ॥१६॥ शुक्रको प्रगट करनेवाली स्त्रीकी धातुको रेचन करने वाला बड़ी

भनञ्च शोपयीचहरीतकी १७ देहस्यसूक्ष्मछिद्रेषु विशेषतत्सूक्ष्म उच्यते। तद्यथासैंधवक्षौद्रं निंवतैलंरुवूद्भवं १८ पूर्वंव्याप्याखिलंकायं ततःपाकञ्चगच्छति। व्यवायितद्यथाभंगा फेनंचाहिसमुद्भवं १९ संधिवंधास्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत्। विश्लेष्योजश्चधातुभ्यो यथाक्रमुककोद्रवौ २० बुद्धिंलुंपतियद्द्रव्यं मदकारितदुच्यते । तमोगुणप्रधानञ्च यथामद्यंसुरादिकं २१ व्यवायीचविकाशिस्यात् सूक्ष्मंछेदिमदावहं आग्नेयंजीवितहरं योगवाहिस्मृतंविषं २२ निजवीर्येणयद्द्रव्यं श्रोतोभ्योदोषसञ्चयं निरस्यातिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा २३ पैछिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं रुध्वारसवहाःशिराः। धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यंदियथादधि २४

इति श्रीदामोदर सूनु शार्ङ्गधर विरचित संहितायां चतुर्थोऽध्यायः ॥

भटकटैया का फल है और वीर्यस्तंभी जायफल है औ वीर्यशोषक हड़ औ तर्वूज है ॥ १७ ॥ जो वस्तु रोम मार्ग से शरीर में पैठे उसे सूक्ष्म कहिये यथा सैंधव सहत औ नीम औ रेंडी का तेल ॥ १८ ॥ प्रथम शरीर व्यापित हो फिर पचै उसे व्यवाई कहिये यथा भांग अफीम ॥ १९ ॥ देह के बन्धन ढीले करै रसादिक धातु औ शुक्र को क्षीण करै तिसे विकासी कहते हैं यथा सुपारी औ कोदव ॥ २० ॥ जो वस्तु बुद्धि को संभ्रम करै औ मद करै उष्ण होइ सो तमोगुणी है यथा सुरादि नशा ॥ २१ ॥ व्यवायी औ विकाशी सूक्ष्मछेदन छातमदकृत अग्निवर्द्धन मृत्युकारक ये सब द्रव्य जिस औषधि का संग पावैं उसी का सा गुण करै ऐसा विष होता है ॥ २२ ॥ जो द्रव्य अपने पराक्रम से संचित दोषों को निकार डारै उसे प्रमाथी कहते हैं यथा मरिच औ वच ॥ २३ ॥ जो पदार्थ आप से स्निग्धता गुण करिकै रसवाहिनी शिरानि को निरोध करै और शरीर को जड़ करै उसे अभिष्यन्दी कहते हैं यथा दही ॥ २४ ॥ इति श्रीदामोदर सूनु शार्ङ्गधर विरचित संहितायां सूत्रस्थाने दीपनपाचन विधिश्चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ + + + + +

धात्वाशयान्तरस्थस्तु यःक्लेदस्त्वधितिष्ठति देहोष्मणाविपक्वो यःसाकलेत्यभिधीयते। कलास्सप्ताशयास्सप्तधातवस्सप्ततन्मलाः १ सप्तोपधातवस्सप्तत्वचस्सप्तप्रकीर्त्तिताः । त्रयोदोषानवशतं स्नायूनांसंधयस्तथा दशाऽधिकंचद्विशतमस्थ्नांचत्रिशतंमतं २ सप्तोत्तरंमर्मशतंशिरासप्तशतंतथा चतुर्विंशतिराख्याता धमन्यो रसवाहिकाः मांसपेश्यासमाख्यातान्दृणांपंचशतंबुधैः ३ स्त्रीणां चविंशत्यधिकाः कंडराश्चैवषोडश नृदेहेदशरंध्राणि नारीदेहेत्र योदश एतत्समासतःप्रोक्तं विस्तरेणाधुनोच्यते ४ मांसासृङ्मे दसांतिस्रो यकृतप्लीहोश्चतुर्थिकाः पंचमीचतथांत्राणां षष्ठी चाग्निधरामता रेतोधरासप्तमीस्या दितिसप्तकलाःस्मृताः ५ श्लेष्माशयःस्यादुरसितस्मादामाशयस्त्वधः । ऊर्ध्वमग्न्याशयो नाभेर्वामभागेव्यवस्थितः ६ तस्योपरितिलंज्ञेयं तदधःपवनाश

जो आर्द्रपदार्थ धातु और आमाशयके अंतरमें स्थित और देह की ऊष्मा से विपक्व है उसका कला नामहै अथ शारीरक शरीरमें कला ७ स्थान ७ धातु ७ धातुमल ७ ॥ १ ॥ उपधातु ७ त्वचा ७ दोष ३ सूक्ष्म नस ९०० जोड़ २१० हड्डी ३०० ॥ २ ॥ मर्मस्थान १०७ मध्यमनस ७०० स्थूलनाड़ी २४ पुरुषकेमांसग्रन्थी ५०० ॥ ३ ॥ स्त्रीके मांस की गांठि ५२० पुष्टनसें फैलने समिटने वाली १६ पुरुष केशरीर में छेद १० स्त्री के १३ यह संक्षेप कहा आगे विस्तार से कहैंगे ॥ ४ ॥ अब शरीर की सात कला पहिले कहते हैं मांस को धारण करने वाली मांसधरा पहली कला रक्त को धारण करनेवाली रक्तधरा दूजी कला २ मेद को धारै वह मेदधरा तीसरी ३ कफको धारण करनेवाली चौथी यकृतप्लीहा ४ अंत्र धारणे वाली पांचवीं पुरीषधरा ५ अग्निधारनी छठीकला पित्त धरा ६ शुक्रधारनी सतईं कला रेतधरा ७ ये सातौं कला हैं ॥ ५ ॥ छातीमें कफ स्थान है तिससे कुछ नीचे आमस्थान है नाभि के ऊपर बाईं ओर अग्नि स्थान है ॥ ६ ॥ तिस अग्निस्थानके ऊपर तिल है उसे लोम कहते हैं वही प्यास स्थान कहैं औ अग्नि स्थान के तरे पवनाशय है उसे वायु स्थान कहैं उसी के नीचे वाम भाग में मल

धः मलाशयस्त्वधस्तस्य वस्तिर्मूत्राशयस्त्वधः । जीवरक्ता शयमुरो ज्ञेयास्सप्ताशयास्त्वमी ७ पुरुषेभ्योधिकाश्चान्ये नारीणामाशयास्त्रयः । धरागर्भाशयःप्रोक्तः स्तनौस्तन्याशयौमतौ ८ रसासृग्मांसमेदोस्थि मज्जाशुक्राणिधातवः । जायंतेन्योन्यतः सर्वे पाचिताःपित्ततेजसा ९ जिव्हानेत्रकपोलानां जलंपित्तंच रंजकं । कर्णविड्रसनादन्त कक्षामेढ्रादिजंमलं १० नखनेत्रमलं वक्त्रे स्निग्धत्वंपिण्डिकास्तथा । जायंतेसप्तधातूनां मलान्येतान्यनुक्रमात् ११ कफःपित्तमलश्चैवप्रस्वेदोनखरोमच स्नेहाक्षित्वगवसाओजोधातूनांक्रमशोमलाः । रसाद्रक्तंततोमांसं मांसान्मेदः प्रजायते १२ मेदसोऽस्थितथामज्जा मज्जाच्छुक्रस्यसंभवः नेत्रेविट्चक्षुचस्नेहो धातूनांक्रमशोमलाः स्तन्यंरजश्चनारीणां काले

स्थानहै जिसे पक्वाशय कहतेहैं औ उसी पवनाशयके नीचे दक्षिण भाग में मूत्र की थैली रहती है और रक्त जो जीवतुल्य है उसका स्थान हृदयमें है इसप्रकार सात आशय जानना ॥ ७ ॥ पुरुषके सात आशयहैं स्त्री के तीन विशेष हैं एक गर्भाशय द्वैस्तन आशय ॥ ८ ॥ अथ सप्त धातु रस रक्त मांस मेद हाड़ मज्जा धातु ये सातों पित्त के तेज में खैंचि कै क्रम से एक २ से होते हैं उदाहरण रसते रक्त रक्त ते मांस मांस ते मेद मेद से अस्थि अस्थि से मज्जा मज्जा ते शुक्र ॥ ९ ॥ सात धातु के सात मल जीभ औ नेत्र औ कपोल इन में जो जल है सो रस धातु का मल है रञ्जक पित्त रक्त का मल है कानका मैल मांसका मलहै जीभ दांत बगल लिंगका मैल मेदका मल है ॥ १० ॥ नख केस रोम अस्थिका मल आंख की कीच—औ मुखकी चिकनई मज्जा का मल है औ मुख में खिड़की होती है जीभ दांत बगल लिंग का मैल मेद का मल है सो शुक्र कामल है ऐसा तो धातु के क्रम में सातों मल होते हैं ॥ ११ ॥ सातौधातुओं के मल क्रम से जानना कफ़ १ पित्त मल २ कर्णमल ३ स्वेद ४ नखरोम ५ स्नेह नेत्र त्वक् वसाका ओज इन धातु ओंका क्रम से मल है रससे लोहू लोहू से मांस मांस से मेदपैदा होताहै आंखि की की चर ६ शुक्र धातु में मल नहीं है ॥ १२ ॥ मेदसे हड्डी हड्डी

भवतिगच्छति शुक्रमांसभवःस्नेहो यःस्सासंकीर्त्यतेवसा १३ स्वेतोदन्तास्तथाकेशा स्तथैवोजश्चसप्तमम् ओजःसर्वशरीरस्थं शीतंस्निग्धंस्थिरंमतम् सोमात्मकंशरीरस्य बलपुष्टिकरंमतं इतिधातुभवाज्ञेया एतेसप्तोपधातवः १४ ज्ञेयावभासिनी पूर्वा सिध्मस्थानंचसामता । द्वितीयालोहिताज्ञेया तिलकालक जन्मभूः १५ श्वेतातृतीयासंख्याता स्थानञ्चर्म्मदलस्यसा । ताम्राचतुर्थीविज्ञेया किलासश्चित्रभूमिका १६ पंचमीवेदिनी ख्याता सर्वकुष्ठोद्भवश्चसा । विख्यातालोहितापष्ठी ग्रंथिगंडा पचीस्थितिः १७ स्थूलात्वक्सप्तमीख्याता विद्रध्यादेःस्थितिश्चसा । इतिसप्तत्वचःप्रोक्ताः स्थूलाव्रीहिद्विमात्रया १८ वायुपित्तंकफोदोषा धातवश्चमलास्तथा । तत्रापिपञ्चधाख्यातः प्रत्येकंदेहधारणात् १९ ॥

से मज्जा मज्जा से शुक्र कही वीर्य उत्पन्न होता है—अब उपधातु—रस धातु की उपधातु दूध रक्त धातु की उपधातु रज जो स्त्री के काल पाय होती है अरु कालही पायजाती रहती है शुक्र मांस की उपधातु वसा मेद की उपधातु पसीना अस्थि की उपधातुदांत मज्जाकी उपधातु बल पुरुषार्थ ऐसेही सातौ धातुनिसे सातों उपधातु होतीहैं ॥ १३—१४ ॥ अथ सप्त त्वग् यही अवभासिनी ऊपरकी खाल जिसमेंसे छये पहन काम रहै १ दूजी लोहिता तिसमें तिलकटक रोम होते हैं ॥ १५ ॥ तीजी सेती में दाह होती है ३ चौथी ताम्रा तिसमें क्षत श्वेत कुष्ट होता है ४ ॥ १६ ॥ पंचमी वेदिनी सर्व कुष्ट भूमि है ५ छठी लोहिता में गण्डमाला ग्रन्थि अपची ६ ॥ १७ ॥ सतईं स्थूला में जहरबात नासूर भगंदरादि होते हैं ये सातौं मिलकै दो जव समान मुटाई पाती है यह चरक कहते हैं जहां मांस विशेष मोटा होता है वहां इतनी मोटी होतीहै ॥ १८ ॥ अथ तीनौं दोषवात पित्त कफ येप्रत्येकदेह धारीकेप्रसिद्धहैं सो रसादिक धातुनको मलीन करतेहैं इससे इन का नाम मल भी है सो पांच पांच प्रकार के सुश्रुत में लिखे हैं संस्कृत तत्रप्रस्यन्दनोद्वहनपूरण विवेक धारण लक्षण वायुः ॥ १९ ॥

पवनस्तेषुबलवान्विभागाकरणान्मतः । रजोगुणमयःसूक्ष्मःशीतो रूक्षोलघुश्चलः शरीरदूषणाद्दोषा धातवोदेहधारणात् २० वात पित्तकफाज्ञेया मलिनीकरणान्मलाः । पित्तंपंगुःकफःपंगुःपंगवोम लधातवः । वायुनायत्रनीयंते तत्रगच्छंतिमेघवत् २१ मलाशये चरेत्कोष्ठे वन्हिस्थानेतथाहृदि । कंठेसर्व्वाङ्गदेशेषु वायुःपञ्चप्रकारतः अपानःस्यात्समानश्च प्राणोदानौतथैवच २२ व्यानश्चेति समीरस्य नामान्युक्तान्यनुक्रमात् । हृदिप्राणोगुदेऽपानः समानो नाभिसंस्थितः । उदानःकंठदेशस्थोव्यानस्सर्वशरीरगः २३ पित्त मुष्णाद्रवंपीतं नीलंसत्वगुणोत्तरं । कटुतिक्तरसंज्ञेयंविदग्धंचाम्ल तांव्रजेत् अग्न्याशयेभवेत्पित्तमग्निरूपंतिलोन्मितं २४ त्वचि कान्तिकरंज्ञेयं लेपाभ्यङ्गादिपाचकं दृश्यंयकृतियत्पित्तं तद्रसं शोणितांनयेत् । यत्पित्तंनेत्रयुगलेरूपदर्शनकारितत् २५ ॥

वायु सर्व वस्तुन को निज निज स्थान में पहुंचा देतीहै इस कारण तीनों दोष में वायुही प्रबल है और रजो गुणीसूक्ष्म ठंढी रूखी हलकी औचर है शरीर के दूषण और देह के धारने से धातुजन्य रोग होते हैं ॥ २० ॥ मलिनी करण से बात पित्त कफ मल हैं— पित्त कफ मलधातु ये सब पंगु हैं जिधर वायु ले जाती है उधर ही मेघकी नाईं जातेहैं ॥२१॥ पांचप्रकारकी वायुहैमलाशय नाभि हृदयकंठऔ सब शरीर में रहती है अपान १ समान २ प्राण ३ उदान४॥२२ ॥ व्यान ५ ये पांचौ वायु पांचौस्थानमें क्रमसे जानना यथामल स्थान में अपान इसप्रकार हृदय में प्राण गुद में अपान समान नाभिमें उदान कण्ठमें व्यान सब शरीरमें रहती है ॥ २३ ॥ अथ पित्त— पित्तउष्णहै औ पतला पीला नीला सतोगुणी रस उस काकटु तिक्तहै जलनेसे खट्टा होजाताहै आमाशय में रहताहै सो अग्नि रूपी तिलके समानहै कोई आचार्य कहते हैं कि नारीके शरीर में कुछ बड़ा है लघु शरीरन में तिल समान रहता है कीट पतंगादि शरीरमें रोमाग्र सम होताहै इति ॥२४॥ औत्वचा वासी पित्तलेप उबटनादि शोषक है यकृतिबासी रसको खैंचिकै रुधिर करता है और नेचन में रहनेवाला पित्तरूप दिखाता है ॥ २५ ॥

यत्पित्तंहृदयेतिष्टन्मेधाप्रज्ञाकरंचतत् पाचकःभ्राजकश्चैव रंजका लोचकेतथा । साधकंचैवपञ्चैवपित्तनामान्यनुक्रमात् २६ कफः स्निग्धोगुरुःश्वेतः पिच्छलःशीतलस्तथा । तमोगुणाधिकःस्वादु विदग्धोलवणोभवेत् २७ कफश्चामाशयेमूर्द्ध्नि कंठेहृदिचसंधिषु । तिष्टन्करोतिदेहस्यस्थैर्यंसर्वाङ्गपाटवं २८ क्लेदनःस्नेहन श्चैव रसनश्चाप्यलंबनः । श्लेष्मनश्चतिनामानि कफस्योक्तान्य नुक्रमात् २९ स्नायवोबंधनंप्रोक्तादेहेमांसास्थिमेदसां । संधय श्चांगसंधानाद्देहेप्रोक्ताकफान्विताः आधारश्चतथासारःकायेस्थी निबुधाविदुः ३० मर्माणिजीवाधाराणिप्रायेणमुनयोजगुः । संधि

हृदय निवासी पित्तबुद्धिऔर धारनाचैतन्यतारखताहैताकी पांच नामसे स्थिति जाननापाचक १ भ्राजक २ रंजक ३ आलोचक ४ साधक ५ यथा पांच अग्नि स्थानमें इसप्रकार ॥ २६ ॥ अथकफ़—कफ़ चिकना भारी लसलसाश्वेत ठंढा तमोगुणी विशेष है औ मधुर है दग्ध भये लुनखरा होजाता है अन्य मतवाले हलका कहते हैं कि पानी पर तिरता है सो कारण यह है किस्निग्धता करिके पानी में प्रवेश नहीं करता वास्तव गुरुही है ॥ २७ ॥ औ आमस्थान में माथे में कण्ठ में हृदय में संधिनमें ऐसे देहमें स्थितहो पुष्ट रखता है ॥ २८ ॥ तिसके नाम क्लेदन १ स्नेहन २ रसन ३ अवलंबन ४ श्लेष्मन ५ ये नाम स्थान क्रमसे जानना यथा आमस्थाने क्लेदन इह प्रकार से ॥ २९ ॥ नौसै संधिवाली नवेंमांस हाड़ चरबी कोलपटी रहती हैं औ देह में अंग २ प्रति संधि कहैं जो उसे कफ़ से लपटेहैं सो संधि दोप्रकारकी है चर औअचर चरतो ठोढ़ी कमर शाखा कण्ठ की हैं और अंगन की अचर कहते हैं जैसे तेल के संयोग से रथके पहिया अपने ठौर में फिरते हैं तैसे कफ़ के संयोग से हड्डी बिना श्रम फिरा करतीहैं औरबुधजन कहते हैं कि और अस्थिन के आधार देहहै ताते देह का सार है ॥ ३० ॥ औ मर्मस्थान मुनि जीवाधारकहतेहैं सो पंच प्रकारकाहै मांस मर्म ११ सिरामर्म ४१ स्नायु मर्म २७ अस्थिमर्म ८ संधिमर्म २० सबमर्म १०७ हैं संधिबंधनीसिरा दोष औ धातु बाहक हैं सो २४ हैं तिनमें दश नाभि

वंधनकारिण्योदोषधातुवहाशिराः ३१ धमन्योरसवाहिन्योधमंतिपवनंतनौ । मांसपेश्योवलायस्युरवष्टम्भायदेहिनां ३२ प्रसारणाकुंचनयोरङ्गाणांकंडरामताः । नासानयनकर्णानांद्वेद्वेरंध्रेप्रकीर्तिते ३३ मेहनापानवक्त्राणामेकैकंरंध्रमुच्यते । दशमंमस्तकेप्रोक्तंरंध्राणीतिनृणांविदुः ३४ स्त्रीणांत्रीण्यधिकानिस्युःस्तनयोर्गर्भवर्त्मनः।सूक्ष्मछिद्राणिचान्यानिमतानित्वचिजन्मिनाम्३५ तद्वामेफुफुसंप्लीहादक्षिणांगेयकृन्मतं । उदानवायोराधारःफुफुसंप्रोच्यतेबुधैः ३६ रक्तवाहिशिरामूलंप्लीहाख्यातोमहर्षिभिः। यकृ

स्थानमें हो नीचे जाती हैं वातमूत्रमल शुक्र अन्न पान रस कानीचे पहुंचाना उनका कर्म है औ दश ऊर्ध्वगत हैं सोशब्द रस गंधस्वास जमुहाई औ क्षुधा तृषा शक्ति डकार इन सबन को अपने २ स्थान में दीपन करती हैं औ चार जिन कीतिर्छी गति है सो अगणित शाखाहो सर्वांग मे जाले की नाई रोम २ प्रति पूरित हैं उन्हींके मुखों से स्वेद देह के बाहर रोमो में होके आता है और उसी मार्ग हो लेपन मर्दनादि पदार्थ प्रवेश करते हैं ३१ औ रस वाहिनी धमनी को नारी कहते हैं उन्हें वायु अपने वेग से शरीर में पहुँचाती है सो शिरा दो प्रकारकी हैं सूक्ष्म औ स्थूल तिनकी जड़ नाभि में है वहां होकेतले ऊपर दहिने बायें आगे पीछे सर्वत्र फैलती हैं ये चालिसहैं ४० बात बाहिनी १० पित्तबाहिनी १० कफ़बाहिनी १० रक्तबाहिनी १० सब ४० बात बाहिनी सिरा के समीप दूसरीवातनारी १७५ नसैं हैं ऐसे दश२ नारौंके पास उतनी २ हैं इसरह सातसै ७०० हैं औ देह में फैली हैं सो बलको औ रोकने केलिये हैं ॥ ३२ ॥ अंगके फैलने समेटने को कंडरा है औ दो छिद्र नाकमें दो नेत्रमें दो कानमें कहे हैं ॥ ३३ ॥ एक मुख एक गुदा एक लिंग एक मस्तक के ऊपर ये दश छिद्र हैं ॥ ३४ ॥ स्त्री के तीन छिद्र विशेषहैं द्वै पयोधरपर एक गर्भस्थान औ अति सूक्ष्मछिद्रत्वचामें अगणितहैं ॥३५ ॥ हृदयकेवामभागमें फुफुस औ प्लीहाहै दक्षिणभागमें यकृतहै फुफुसको उदान वायुके आश्रित वैद्य लोगकहतेहैं ॥ ३६ ॥ औ रुधिरवाही शिरानकी जड़को प्लीहा कहतेहैं औ यकृतकोसद्वैद्य रंजकपित्तका स्थानकहतेहैं औ रक्त

द्रंजकपित्तस्यस्थानरक्तस्यसंश्रयं ३७ जलवाहिशिरामूलंतृष्णा च्छादनकंतिलं । वृक्कौपुष्टिकरौप्रोक्तौ जठरस्थस्यमेदसः ३८ वीजवाहिशिराधारौवृषणौपौरुषावहौ । गर्भाधानकरंलिंगमयनं वीजमूत्रयोः ॥ त्रिविधंसोपिसंजातोरजसत्वतमोगुणै स्तस्मात्स त्वरजो युक्तादिंद्रियाणिदशाभवत् । हृदयंचेतनास्थानमोजसश्चा श्रयंमतं ३९ शिराधमन्योनाभिस्थास्सर्वंव्याप्यस्थितास्तनुं। पुष्णं तिचानिशंवायोस्संयोगात्सर्वधातुभिः ४० नाभिस्थःप्राणपवनः स्पृष्ट्वाहृत्कमलांतरं।कंठाद्बहिर्विनिर्यातिपातुंविष्णुपदामृतं ४१ पीत्वाचांवरपीयूषं पुनरायातिवेगतः। प्रीणयन्देहमखिलं जीवं चजठरानलं ४२ शरीरप्राणयोरेवंसंयोगादायुरुच्यते । कालेन तद्वियोगाच्च पंचत्वंकथ्यतेबुधैः ४३ नजन्तुःकश्चिदमरः पृथिव्यां जायतेक्वचित् । अतोमृत्युरवार्यःस्यात्किन्तुरोगान्निवारयेत् ४४॥

काआधार है ॥ ३७ ॥ शोणितकी कीटसे उत्पन्न हुआ दक्षिणभाग में यकृत के पासतिल है उसे क्लोम कहिये सो जलवाहि शिराकी जड़ में रहि के प्यास बढ़ाता है औ जठर में जो मेद औ रक्त है सो इक पुष्टि कारक गोलाकार दोनों वृक्क है ॥ ३८ ॥ वीजवाही शिराके आधारपुरुषार्थ करनेवाले वृषण हैं औ गर्भधारण करने वाला लिंगवीज औ मूत्र कामार्गहै सो लिंग हृदयगलेको ग्राहक चारिकसडराकारप्ररोह है औ चेतना का स्थान हृदय बलका आश्रयहै ॥ ३९ ॥ औ नाभिमें स्थित चौवीस शिरानाम धमनीसो सवशरीर में व्याप्त होके वायुके संयोग ते रसादि धातुनको खैंचि कै सदा शरीरको पुष्ट करतीहैं ॥४०॥ नाभिवासी प्राणवायु हृदय कमल को स्पर्शकरिकै विष्णुपदामृत पीने को कंठ ते बाहिर हो शिरपै आइकै ब्रह्माण्ड से गिरता हुआ अमृत पीके फिर उसी मार्गसे आयके सब शरीरको सन्तुष्ट करती हुई अग्निको पाचन शक्ति देती है ॥ ४१—४२ ॥ पूर्वभाषित शरीर औ प्राण के संयोग रहिनेको आयु कहतेहैं और शरीर प्राणके वियोग होने कोकाल कहते हैं ॥ ४३ ॥ पृथ्वी में कोई शरीरअमर नहींहै इसी से मरने की औषधि नहीं है रोग निवारणीय औषधिहैं ॥ ४४ ॥

याप्यत्वंयातिसाध्यश्च याप्योगच्छत्यसाध्यतां । जीवितंहन्त्य साध्यस्तुनरस्याप्रतिकारिणः ४५ अतोरुग्भ्यस्तनुंरक्षेन्नरःकर्म विपाकवित् । धर्मार्थकाममोक्षाणांशरीरंसाधनंचयत् ४६ धातव स्तन्मलादोषा नाशयंत्यसमास्तनुं । समासुखायविज्ञेयाः बलायो पचयायच ४७ ॥ (इतिकलादिकथनम्) (सृष्टिक्रमः) जगद्योनिर निच्छस्यचिदानन्दैकरूपिणः । पुंसोस्तिप्रकृतिर्नित्याप्रतिछायेव भास्वता ४८ अचेतनापिचैतन्यं योगेनपरमात्मनः । अकरोद्वि श्वमखिलंननित्यंनाटकाकृतिः ४९ प्रकृतिर्विश्वजननीपूर्वंबुद्धिम जीजनत्।इच्छामयींमहद्रूपामहंकारस्ततोभवत् ५० त्रिविधःसो पिसंजातोरजस्सत्वतमोगुणैः तस्मात्सत्वरजोयुक्ता इन्द्रियाणि दशाभवत् । मनश्चजातंतान्याहुःश्रोत्रत्वग्नयनंयथा ५१ जिव्हा घ्राणवचाहस्तपादोपस्थगुदानिच पंचबुद्धींद्रियाण्याहुः संप्रोक्ता- नीतराणिच कर्मेंद्रियाणिपंचैवकथ्यंतेसूक्ष्मबुद्धिभिः ५२ ॥

जो मनुष्य औषधि नहीं करते सो सुखसाध्य रोग को कष्टसाध्य करतेहैं कष्टसाध्य ते असाध्य होतेहैं असाध्य होकेप्राण देतेहैं ॥४५॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष इनके साधनहेतु शरीर है इससे शुभाशुभ ज्ञाता को शरीरकी रक्षा करना अवश्य है॥४६॥ घटे बढ़े रसादिक धातु वा धातुमलवा बात पित्त कफ देहके हंताहैं जब ये सम रहते हैं तबसुख देतेहैं औ पुष्टि करते हैं॥ ४७॥ इति कलादि कथनं॥ [सृष्टिक्रमः] जगत् योनि इच्छा रहित ज्ञान धर्मका एकही रूप है ऐसे विष्णु की नित्य प्रकृति सूर्यकी छाया की नाईं है॥ ४८ ॥ सो प्रकृति चेतन रहित चैतन्य इन्द्रजाल की नाईं परमात्मा के योग करिके अनित्य संसार रचती भई ॥४९॥ ऐसी विश्वजननी प्रकृतिमें पहिलेबुद्धिको उतपन्नकियासो इच्छामयी महद्रूपाकहें सूक्ष्मरूपा उसी बुद्धिसे अहंकार होताहै अहंकारसे रज सत तमोगुण रूपी तीनि विधि अहंकार हुये॥ ५० ॥ इनतीनों अहंकार सहित पूर्व अहंकारसेदशइन्द्री औ मनभयासो इन्द्रीदोप्रकारकी कहताहौं श्रवण त्वचानेत्र॥ ५१॥ जीभनाक५वाणी हाथपांयलिंग गुदा५पहि लेकही हुई ज्ञानइन्द्री जानौं पीछे कही पांच कर्मेन्द्री हैं ॥ ५२ ॥

तमःसत्वगुणोत्कृष्टा दहंकारादथाभवत् । तन्मात्रापंचकंतस्यनामान्युक्तानिसूरिभिः ५३ शब्दतन्मात्रकंस्पर्शं तन्मात्रंरूपमात्रकं। रसतन्मात्रकंगंधं तन्मात्रंचेतितद्विदुः ५४ तन्मात्रपंचकंतस्मात् संजातंभूतपंचकं व्योमानिलानलजलक्षोणीरूपंचतन्मतं ५५ शब्दस्पर्शश्चरूपश्च रसगन्धावनुक्रमात् । तन्मात्राणांविशेषास्स्युःस्थूलभावमुपागताः ५६ बुद्धींद्रियाणांपञ्चैव शब्दाद्याविषयामताः कर्मेन्द्रियाणांविषयाभाषादानबिहारिताः । आनन्दोत्सर्गिकौचैव कथितास्तत्वदर्शिभिः ५७ प्रधानंप्रकृतिःशक्तिर्नित्याचाविकृतिस्तथा । एतानितस्यनामानिशिवमाश्रित्ययास्थिता ५८ महानहंकृतिःपञ्च तन्मात्राणिपृथक्पृथक् । प्रकृतिर्विकृतिश्चैव सप्तैतानिबुधाजगुः ५९ दशेन्द्रियाणिचित्तञ्च महद्भूतानिपञ्चच । विकाराःषोड़शज्ञेया सर्वव्याप्यजगत्स्थिताः ६० एवंचतुर्विंशतिभिस्तत्वैःसिद्धेवपुर्गृहे । जीवात्मानियतोनित्यं वसतिस्वात्मदूतवान् ६१ ॥

सतओ तमसे उत्कृष्ट रजोगुणी अहंकार भया जिस में पंचतन्मात्रा भई उनका नाम पण्डित जनकहते हैं ॥ ५३ ॥ शब्दतन्मात्रा १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ ये पंच तन्मात्रा हैं सो पांचों ज्ञान इंद्रिनके लक्ष्यहैंलक्ष्य वहकि जिस्की जोतन्मात्राहै उसीका उस इन्द्रीको ज्ञान है ॥ ५४ ॥ तिनतन्मात्रासे पंचभूत भये आकाश १ वायु२ अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ ॥ ५५ ॥ इनको क्रम से जानना सो शब्दादिक क्रमसे स्थूल भावको प्राप्तहोकै ये पांचो विशेषहैं॥५६॥ ज्ञानेन्द्रिनके शब्दादिक पांच विषयहैं सोई कर्मेन्द्रिन के—बचन १ गहिलेना२चलना३सुखी४मलत्याग५ पण्डित कहै हैं ॥५७॥ प्रधान१ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या४अविकृत५ ये प्रकृतिकेनामहैं इसीरीतिसे जानना परब्रह्मका आश्रयकरि स्थितहैं॥५८॥महान् अहंकारऔर तन्मात्रा औ प्रकृति विकृति इन सातों को पण्डित प्रकृति कहते हैं॥५९॥और दश इन्द्री एकचित्त पञ्चमहाभूत ये सोरह विकार जानना ये सबजगत्में व्याप्तहो स्थितहैं ॥ ६० ॥ इनचौबिस तत्त्वन सहित देह में जीवात्मा स्थित है आपही अमन दूत है ॥ ६१ ॥

सदेहीकथ्यतेपाप पुण्यदुःखसुखादिभिः । व्याप्तोवद्धश्चमन साकृत्तिमैःकर्म्मबन्धनैः ६२ कामक्रोधोलोभमोहा वहंकारश्च पञ्चमः। दशेंद्रियाणिबुद्धिश्च तस्यबन्धायदेहिनः ६३ आप्नोति बन्धमज्ञाना दात्मज्ञानाच्चमुच्यते। तंदुःखयोगकृद्व्याधि रारोग्यं तत्सुखावहं ६४ ॥ इतिश्री शार्ङ्गधरे कलादिकाख्यानेपञ्चमो ऽध्यायः ५ ॥

यात्यामाशयमाहारः पूर्वंप्राणानिलेरितः। माधुर्यंफेनभावञ्च षड्रसोपिलभेतसः १ अथपाचकपित्तेन विदग्धश्चाम्लतांव्रजेत् ततःसमानमरुता ग्रहणीमभिनीयते २ ग्रहिण्यांपाचितःकोष्ठ वन्हिनाजायतेकटुः । रसोभवतिसंपक्वादपक्वादामसंभवः ३ व न्हेर्वलेनमाधुर्यं स्निग्धतांयातितद्रसः। पुष्टीपित्तधरानाम साक

उसीको देही कहते हैं पाप पुण्य दुख सुख करिकै व्याप्त है सो मनके करे कर्मनके संग बँधाहै ॥ ६२ ॥ काम क्रोध लोभ मोह अहङ्कार५इन्द्री१०बुद्धि ये सोरह देहके बन्धन के हेतु हैं ॥ ६३ ॥ जीवात्मा अज्ञान करिकै इन में बँधा रहता है और ज्ञान करिके बन्धनतेमुक्त होजाताहै अज्ञान ते दुखके योगमें दुःख पाता है औ ज्ञानकरिके सुख पाताहै [इतिसृष्टिक्रमः] ॥ ६४ ॥ इतिशा-र्ङ्गधरे कलादिकाख्याने पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

[अथाहार]जोकछु भोजनकिया सो प्राणवायु का प्रेरित प्रथम आमाशयमें जाताहै षट्रसमें कोई रसहो मधुर औ फेना सा हो जाता है ॥ १ ॥ अन्य ग्रंथोंमें लेखहै कि कफाशयमें हो आमाशयमें जा फेनभाव होजाताहै इति सो रस भावहो पाचक पित्तमें दग्ध मय खट्टा होजाता है तब समान वायुका प्रेरित ग्रहणी में पड़ता है ॥ २ ॥ फिर ग्रहणीसे अग्निकोष्टमें पचिके कटु होजाता है जो अग्नि आशय में अच्छी तरह पचा तो रस हुआ अरु जो अपक्व रहा तो आंव होगया ॥ ३ ॥ तौन रस अग्निके बलसे पचिके मधुर औ चिकना होजाता है सो वह पित्तधरा पुष्टीकला कही जाती है और पक्वाशय आमाशय के मध्य में स्थित ग्रहणी कही जाती है

लापरिकीर्त्तिता पक्वामाशयमध्यस्था गृहणीत्यभिधीयते पुष्णा-
तिधातुनखिलान्सम्यक्पक्वोऽमृतोपमः ४ मन्दवन्हिविदग्धश्च
कटुचाम्लोभवेद्रसः । विषभावंव्रजेद्वापि कुर्याद्वारोगसङ्करं ५ आ
हारस्यरसःसारः सारहीनोमलद्रवः शिराभिस्तज्जलंनीतं वस्तौ
मूत्रत्वमाप्नुयात् तत्किट्टंचमलंज्ञेयं तिष्ठेत्पक्वाशयेचतत् ६ वलि
त्रितयमार्गेण यात्यपानेननोदितं । प्रवाहिनीसर्जनीच ग्राहिके
तिवलित्रयं ७ रसस्तुहृदयंयाति समानमरुतेरितः । रंजितःपाचि
तस्तत्र पित्तेनायातिरक्तताम् ८ रक्तंसर्वशरीरस्थंजीवस्याधारमु
त्तमं । स्निग्धंगुरुचरःस्वादुविदग्धंपित्तवद्भवेत् ९ पाचिताःपित्तता
पेनरसाद्याधातवःक्रमात् । शुक्रत्वंयातिमासेन तथास्त्रीणांरजो
भवेत् १० कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः । गर्भःसं

सो सम्यक् कहैं अच्छी तरह पका रस अमृत की तुल्य अखिल
धातुनको पोषताहै ॥ ४ ॥ जो मंदाग्निकरि अपक्व रहा तब कडुवा
खट्टाविष समान बहुतरोग उत्पन्न करताहै ॥ ५ ॥ सो रस अहार
का सारहै जब अहारसे रस भिन्नभया सो सारहीन अहार मल
और जल रहगया उस जलको मूत्रवाहिनी शिराने लेके वस्तीजो
मूत्रकीथैलीतिसमेंछोड़ासोमूत्रहै तिसकेनाम उसीको कीटमलहो
पक्वाशय में रहताहै ॥६॥ सो मल अपान वायु प्रेरित त्रबली में हो
निकलताहै त्रिबली कहैं मलमार्ग जिसमें तीन बल शंखकी नाईंहैं
तिसकेनाम प्रवाहिनी सर्जनी ग्राहिका ३॥७॥ सो रस समान वायु
प्रेरित हृदय में जाय रंजित पित्तसे पचिकै रक्त होजाता है ॥ ८ ॥
वह रक्त उत्तम जीवाधार सर्व शरीरमें स्थित है औ चिकना है
गुरु है चर है स्वादुहै जब दग्ध होताहै तब पित्त सम कटु होजा
ताहै॥ ९ ॥ पित्तकी आंचसे पचिकै मासभरमें रसादिक धातु क्रम
सेशुक्र होता है स्त्री के शरीर में उसीक्रम से रज होताहै दूसरीरीति
सेएक दिन में भोजन का रस फिर रस पचिकै पांचदिन में रुधि
र ऐसे प्रतिधातु पांच दिन में पचिपचिकै महीना भरमें शुक्र हो
ता है ॥ १० ॥ जब स्त्री पुरुष की कामनासे संयोग द्वारा शुद्ध रक्त
वीर्य मिश्रित होता है तब स्त्री के गर्भ स्थित होता है जब गर्भ से

जायतेनार्याःसंजातोबालउच्यते ११ आधिक्यादूजसःकन्यापुत्रः शुक्राधिकेभवेत् । नपुंसकंसमत्वेनयथेच्छापारमेश्वरी १२ अस्थीनिमज्जाशुक्रंचपितुरंशाखयोनताः । शुक्राश्रितोभवेत्स्यावोगोस्त्वरजसाश्रिता बालस्यप्रथमेमासिदेयाभेपजरक्तिका । अवलेहीकृतैकैवक्षीरक्षौद्रसिताघृतैः १३ वर्द्धयेत्तावदेकैकांयावद्भवति वत्सरः । मापैर्वृद्धिस्तदूर्ध्वंस्याद्यावत्षोडशवत्सराः १४ ततः स्थिराभावेत्तावद्यावद्वर्षाणिसप्तति । ततोबालकवन्मात्राह्रासनीयाशनैःशनैः ॥ मात्रेयंकल्कचूर्णानांकषायाणांचतुर्गुणाः १५ अंजनंचतथालेपःस्नानमभ्यंगकर्मच । वमनंप्रतिमर्शश्चजन्मप्रभृतिशस्यते १६ कवलःपंचमाद्वर्षादष्टमात्तून्यस्यकर्मच । विरेकःषोडशाद्वर्षाद्विंशतेश्चैवमैथुनं १७ बाल्यंवृद्धश्छविर्मेधात्वग्दृष्टिःशुक्र

बाहर आया तब बालक हुआ ॥ ११ ॥ जो रज विशेषवाली हुई तौ कन्या हुई शुक्र अधिक बली हुआ तौ पुत्र भया जो रज शुक्र समान भये तौ नपुंसक हुआ आगेजो ईश्वरकी इच्छा इस इच्छा शब्द से यह युक्तहै कि दोनों की समता से दो भी होजातेहैं वा रजवीर्य मिश्रित होतेहैं श्वासकी पवन गर्भाशयके मध्य पर जानेसे वा तुरतही पुनर्मैथुनसे जोडिया होते हैं ॥ १२ ॥ अस्थि मज्जावीर्य ये पिता के अंशसे होतेहैं प्रथाव शुक्राश्रित गौर रजसाश्रित है— बालक को मास पर्यंत रत्ती औषधि दूध सहत मिश्री घीके अवलेह में देना ॥ १३ ॥ फिर वर्ष पर्यंत जै महीने का हो तै रत्ती देना फिर सोलह वर्षताईं जैवर्षकाहो तैमासे औषधि देना॥१४॥ फिर १६ वर्ष से ७० वर्ष तक सोलही मासे देना फिर सत्तर ७० से ऊपर बालक की तरह कम औषधि देना जैसे सत्तरसे महीना बढ़ा तौ रत्ती कम सोलह मासे देना बहत्तरहो तौ चौदह मासे यह चूर्ण औ कल्क का क्रमहै और काढ़े का क्रम इसी रीति से चौगुना जानना ॥ १५ ॥ जबते बालक उत्पन्नहो तबते येकर्म उचित हैं काजल लेप स्नान उबटना तैलमर्दन वमन माथे कान में तेल देना ॥ १६ ॥ कवल कहें औषधि की लुगदी मे रखना पांचवर्ष के पीछे नास विधि आठ वर्ष के बीते रेचन सोलह वर्ष उपरांत बीस में मैथुन ॥ १७ ॥ [अथावस्था] दश वर्ष ताईं बाल्य बीस ताईं

विक्रमो । बुद्धिकर्मेन्द्रियंचेतोजीवितंदशतोह्रसेत् १८ (इतिआहारपाकगर्भोत्पत्तिकुमारपोषणानि) । अल्पकेशःकृशोरूक्षोवाचालश्चलमानसः ॥ आकाशचारीस्वप्नेषुवातप्रकृतिकोनरः १९ अकालेपलितैर्व्याप्तोधीमान्स्वेदीचरोषणः । स्वप्ने पुज्योतिषांद्रष्टापित्तप्रकृतिकोनरः २० गम्भीरबुद्धिःस्थूलांगःस्निग्धकेशोमहाबलः । स्वप्नेजलाशयालोकीश्लेष्मप्रकृतिकोनरः २१ ज्ञातव्यामिश्रचिन्हैश्चद्वित्रिदोषोल्वणानराः । कौमारंयौवनंवार्द्धंप्राणिनांत्रिविधंवयः । कफपित्तानिलप्रायंक्रमतःप्रकृतिस्त्रिधा २२ (इति हितोपदेशात्) तमःकफाभ्यांनिद्रास्यान्मूर्छापित्ततमोभवा ॥ रजःपित्तानिलैर्भ्रांतिस्तंद्राश्लेष्मतमोनिलैः २३ ग्लानिरोजःक्षयाद्दुः

वाढ़ तीस ताईं शरीर चालीस तक धारण शक्तिपचास तक त्वचा साठ तक दृष्टि सत्तर लौं वीर्य अस्सीतक बल नब्बे लौं बुद्धि सौ तक कर्मेन्द्रिय मन शक्ति एक से दशतक चेत एक सौ बीस तक जीवत्व दश दश वर्ष प्रति यह काल जानना ॥ १८ ॥ [इति आहार पाक गर्भोत्पत्ति कुमार पोषणानि] वातप्रकृति लक्षण—सदा केश दुर्बल रूखा बकवादी मनस्थिर नहीं आकाश चारी स्वप्न देखै ये वात प्रकृति नर के लक्षण हैं ॥ १९ ॥ पित्त प्रकृति—लघुवैश में केश पकैं बुद्धि तीव्र स्वेद बहुत निकरै क्रोधी अग्नि नक्षत्रादि स्वप्न में देखै ये पित्तप्रकृति मनुष्य के लक्षण हैं ॥ २० ॥ कफप्रकृति लक्षण गम्भीर बुद्धि स्थूल शरीर चिकने केश अधिक बल जलादि स्वप्न में देखै ये कफप्रकृती पुरुष के लक्षण हैं ॥ २१ ॥ [अथ द्विचिदोष प्रकृति लक्षण] जो दोदोषके लक्षण हों तौ दो दोषज प्रकृति जानौ तीनौ के लक्षण होयतौ त्रिदोषज प्रकृति जानौ कौमार—यौवन—वृद्ध—यह तीनप्रकारकी अवस्था है— और कफ पित्त वायु की आधिक्यता से प्रकृतिभी तीन प्रकारकी है ॥ २२ ॥ [इति हितोपदेशात्] तमोगुण और कफ मिलके नींद आती है इसे स्वप्नावस्था कहते हैं पित्तमें तमोगुण मिलनेसे अचेतहोताहै तिसेमूर्छा कहतेहैं रजोगुण पित्तवात मिलेसे संभ्रम होता है तमोगुण कफवात संयुक्त होनेसे तंद्रा होतीहै तंद्राकहे निद्रा स्थित न होय ॥ २३ ॥ बल हानि

स्वादजीर्णाच्छ्रमाद्भवेत् । यःसामर्थ्येऽप्यनुत्साहस्तदालस्यमुदीर्यते २४ चैतन्यशिथिलत्वाद्यत्पुंस्त्वैकंश्वासमुद्भवेत् । विवृतास्यवदनःस्वासं जृम्भासाकथ्यतेबुधैः २५ उदानप्राणयोरूर्ध्वंयोगान्मौलिकफश्रवात् शब्दस्संजायतेतेनः क्षुतंतत्कथ्यतेबुधैः २६ उदानकोपादाहारस्सुस्थिरत्वाच्चयद्भवेत् । पवनस्योर्ध्वगमनंतमुद्गारं प्रचक्षते २७ (इतिप्रकृतिलक्षणानि)-इतिश्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरविरचितसंहितायांश्रीशार्ङ्गधरेआहारकथनन्नामषष्ठोध्यायः ६ ॥

रोगाणांगणनापूर्वं मुनिभिर्याप्रकीर्त्तिता । मयात्रप्रोच्यतेसैव तद्भेदाबहवोमताः १ पंचविंशतिरुद्दिष्टाज्ज्वरास्तद्भेद उच्यते । पृथग्दोषैस्त्रिधाद्वंद्व भेदेनत्रिविधःस्मृतः २ एकश्चसन्निपातेन तद्भेदाबहवस्स्मृताः । प्रायशःसन्निपातेनपंचस्युर्विषमज्वराः ३ सन्ततःसततश्चैव अन्येद्युष्कस्तृतीयकः । चातुर्थकश्चपंचैते की

से दुःखसे अजीर्णसे ग्लानि होतीहै सामर्थ्य रखकर जतन करै उसे आलस्य कहतेहैं॥२४॥चैतन्य स्थानकी शिथिलतासे एक श्वासको खैंचिके मुख फैलायके छोड़ै उसे जंभाई कहते हैं॥२५॥उदान और प्राणवायुके ऊपर चढ़नेसे शिरका कफ गिरता है उसके शब्द को छींक कहतेहैं ॥२६॥ जब अहार अपने स्थानसे गया वहांकी भरी हुई उदान वायु कोप करि ऊपर निकलती है उसे उकार कहते हैं ॥२७॥ इतिश्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरविरचितसंहितायांशार्ङ्गधरे आहार कथनं नामषष्ठोध्याय: ६ ॥

प्रथम मुनियोंकी कही हुई रोगोंकी गणना सो इसग्रन्थमें मैं कहताहूं रोगों के बहुत भेद हैं॥१॥ पचीस भांति का ज्वरका भेद कहताहूं तीन प्रकार के भिन्न भिन्न हैं बातज्वर कफज्वर औ द्वि दोषते तीनि प्रकारके हैं बात पित्त ज्वर बातकफ ज्वर कफ पित्त ज्वर ऐसे कहतेहैं ॥२॥ औ एक सन्निपात ज्वरहै तिसकेबहुत भेद कहतेहैंबहुधासन्निपातसेपांचप्रकारकेविषमज्वरउत्पन्नहोतेहैं॥३ वा जो ज्वर हमेश: बना रहै उसे सन्तत कहतेहैं १ एक बसाहै दूसरा किसी बेर फिर आवै उसे सतत कहते हैं २ दूसरे दिन आवै उसे अन्तरिया कहते हैं ३ तीजे दिन वाले को तिजरिया कहैं ४

र्तिताविषमज्वराः ४ तथागन्तुज्वरोप्येक स्त्रयोदशविधोमतः । अ
भिचारग्रहावेशं शापैरागंतुकस्त्रिधा ५ श्रमाच्छेदात्क्षताद्दाहाच्चतु
र्धाघातजोज्वरः । कामाद्भीतेशुचोरोषा द्विषादौषधिगंधतः ॥ अभि
षंगज्वराःषट्स्युरेवंज्वरविनिश्चयः ६ पृथक्दोषैःसमस्तैश्चशो

चौथे दिन आवै उसेचातुर्थ कहैं ५ ये पांच विषमज्वर हैं ॥ ४ ॥ एक
प्रकारका आगन्तुक ज्वर है सो तीन कारण करके तेरह प्रकार
का होता है अभिचार कहे टोना जंत्रादि से १ ग्रहदशा से २
शापसे ३ ये तीन प्रकार हैं ॥ ५ ॥ श्रमसे १ चोटसे २ घतसे ३ जलने
से ४ ये चार प्रकार आघात कहैं कामचेष्टा में स्त्री का अभाव भये
अथवा चित्ताशक्त स्त्रीके वियोग से १ डरसे २ शोकसे ३ क्रोध से ४
विष से अथवा विष गन्धसे ५ प्रबल औषधि सेवन से ६ येछःहअभि-
षंगज्वर हैं ये सब ज्वर २५ निश्चय किये गये हैं ॥ ६ ॥ अब १२ प्रथम कहे
औ तेरह आगन्तुक पच्चीसों के लक्षण कहता हूं ज्वरके आने से
देह कांपै ज्वर आनेका कोई समय बन्धन नहीं ॥ दोहा ॥ सूखहोठ
नरनींदनहिं अङ्गुलिरूखमुख फीक सिरहृदिशूलोदरफुलै मलवध
जम्भाळीक ॥ इतिवातज्वर ॥ वेगदस्तओकहउबकि कण्ठघाणमुख
पाक । स्वेतप्रलापभ्रिटकटु मूर्छादाहमदाक ॥ तृष्णापियरोमूत्रमल
नयनत्वचान्हसुपीत । वचनभ्रुलानेभ्रमसहितसोपित्तज्वरनीत ॥ २ ॥
॥ इतिपित्तज्वर ॥ शीतलतासंकुचिततन आलसमध्यसताय । श्वेतमूत्र
मलमीठगुरु गुरुताअरुचिजड़ाय ॥ जाड़ारोमांचौउबकि अतिनि
द्रातनपीर । रोधनासिकाश्रुलहल प्रबलउचगंभीर ॥ सूक्ष्मखेदलघु
उष्णता अमवनासिक्रुवकासु । अरुचिनयनसितनयनरंग कफज्वर
कहियेतासु ॥ ३ ॥ इतिकफज्वर ॥ तृष्णामूर्छादाहभ्रम नींदनमस्तक
पीर । रोमहर्षगरमुखसुखै घुंघुअरुचिवपकीर ॥ गांठिगांठिपीड़ा
करै बातपित्तज्वरजान ॥ इतिबातपित्तज्वर ॥ संकुचशीतलजकड़तन
खांसीनींदप्रधान । सन्धिपीरमस्तकजकड़ घाणद्रावअतिखेद ॥ म
ध्यमज्वरसन्तापयुत बातकफज्वरखेद ॥ इतिबातकफ ॥ कटुलसलस
मुखदन्तचत हिक्काकासरप्यास । खनजाड़ाखनहो अरुचि कफपि
त्तज्वरचास ॥ इतिकफपित्त ॥ खनजाड़ाखनदाहपुनि अस्थिमाथमें
पीर । लारनयनजलश्रवणमें शब्दविलक्षणचीर ॥ तंद्राकांटककंठगत
मोहप्रलापकास । श्वासअरुचिभ्रमजम्भखर दग्धसदृशआभास ॥

कादामाद्भयादपि । अतीसारस्सप्तधास्याद्ग्रहणीपञ्चधामता ७
पृथग्दोषैःसन्निपातात्तथाचामेनपंचमी । प्रवाहिकाचतुर्द्धास्यात्पृथ

तनमस्तकाइतवतअस्थिरक्तपित्तकफेन प्यास अनिद्राहृदयदुष्टखेद सनंहैन अतिदुर्बलताघातनछिंबरघरक्तकठछिंछोइ । उल्लगातफिरि कीअसित दागकलेवर जोइ ॥ गुंगक्तानपक्कपेटगुरु दोष बकुतदिन पाक। दोषबढ़ैपावक्तघटै लक्षणसन्निनिशाक ॥ कहिअसाध्यलक्षण सकलकष्टसाध्यजोघाट। योरेलक्षणसाध्ययेजोलघुसरितापाद॥इति सन्निपात॥सातकिदशद्वादशदिवस घटैनसंततताप। सततचढ़ैद्वैबार नितकहतवैद्यनिष्पाप॥इतिसंततसततज्वर॥ वढ़ैअनेद्युःबारइकटिकै घटीउनवास ॥ अंतरियादिनबीचदै तिजरीहैतजिचास॥ चातुर्थिक दिनचैथितै कहतसकलरुजहार। भूतप्रेतबिपरीतजपहोमजनितअ- भिचार॥राक्षसादिपीड़ाजनित कहिज्वरग्रहआवेश। वृद्धसिद्धद्विज गुरुशपितकहतशापज्वरदेश ६ अतिसारसप्तप्रकार प्रतिदोष दोषबिकार पुनिशोकआंवडराय। ग्रहणीपुपंचकहोय प्रतिदोष संतोआम रहिजातजोमुगखाम ७ [अथातीसार रोग] अतीसार सात प्रकारके हैं बातातीसार पित्तातीसार कफातीसार त्रिदोषा तीसार शोकातीसार आमातीसार भयातीसार७लक्षण जिसके मलमेंआंव वा फेना मिला पतला गिरै लालरंग रूखा वा हलका होयबारबारवेग होहो भरभराहटसे शूल से हो ये वातातीसार लक्षण हैं—पीत व नीला व ताम्र मल गिरै मूर्छाहोय गुदामें जलन औ गुदा पक जाय प्यास होय ये पित्तातीसार लक्षण—श्वेत रंग गाढ़ा कफ सहित बिसैंदी गंध मल ठंढा देह में रोम हर्ष होय इति कफातीसार—सूकरमेदा तथा मांसधोवन सा मल गिरै औ बाताति दोषातीसारन के लक्षण मिलै उसे त्रिदोषातीसार जा- निये बहुत कठिन साध्य हैं ॥ इति ॥ जो धन पुत्रादि वा प्रतिष्ठादि हानिके शोकसे भोजन न करै उसके शोक की उष्णता ओझडीमें हो अग्निको बिकल करती है उसके तेजसे रुधिर उफन ताम्ररंग होय मलके साथ गिरै वा केवल रुधिर गिरै औ आमगंध हो वा अति दुर्गन्ध हो उसे शोकातीसार कहते हैं सो भी अतिही कष्ट साध्य है अति उष्ण चीज औ पित्तक चीज खानेसे वा व्रतसे गरमी होके गिरै रुधिर का भाड़ा होता है उसे रक्तातीसार कहते हैं

र्दोषैस्तथास्त्रजः ८ अजीर्णंत्रिविधंप्रोक्तंविष्टब्धंवायुनामतं । पित्ता

और सूल व्याधि असं होकाके भी निरा रक्त गिरता है इति रक्ता तीसार—और अन्नरसपरिपाक न होने से आंव होतीहै सो मल के संग अनेक रंग हो गिरती है औ सूल करती है उसे आमाती-सार कहते हैं भयते अतीसार होता है भय से तीनों दोष कोप करतेहैं जिसदोषके लक्षणमिलें उसी दोषका कोप जानना ॥ इति अतीसारलक्षण—[अथग्रहणीरोग]पांचतरहकी ग्रहणीहोतीहै॥७ बातग्रहणी पित्तग्रहणी कफग्रहणी त्रिदोषग्रहणी आमग्रहणी ५ [ग्रहणी लक्षण]जब अग्न्याशयमें वातादिक दोष स्थितहोके कोप करते हैं उस्से उत्पन्न संग्रहणी रोग होताहै उस्से आंव गिरताहै दुर्गन्ध सफेत वा वायु करिके ग्रंथित सुलके भाड़ा नहीं होता औ पित्त करिके क्षणक्षण भर में दिशा लगती है तब कच्ची आंव वा जितनी पकै उतनी गिरती है शक्ति घटती है आलस्य बढ़ता है अग्नि मन्द होतीहै उस्से अन्नका पाक अच्छीतरह नहीं होता औ वही आंव शरीरको जड़ करतीहै यह संग्रहणी का प्रथम रूप है बायुके कुपित भये सूल पेटफुलना खांसीश्वास होता है उसेबात संग्रहणी कहिये— पित्तके कुपितभये खट्टी डकार आती है छाती कण्ठ जलता है रुचि न होइ उसे पित्तसंग्रहणी कहिये—कफके कुपित्त भये उवासी मुख मीठा लिबलिबा खांसी नाक बहना आलस्य ये कफसंग्रहणीके लक्षण जानिये—जिसमें तीनों दोष के लक्षण होय वह सन्निपात संग्रहणी है आमवात से हो सो आमसंग्रहणी और संचित होके अठयें चौथे दिन गिरैतिसे आमातीसार कहिये प्रवाहिका चार भांति की है सो अतीसारके भेद जानों बातसे पित्तसे कफसे रक्तसे इनचारोंसे होताहै वायु कोप करिके ओभ्कड़ीमें कफ संचय करै फिर कुपथ्य के कारण पाके कफ मलमें मिल पतला करि बहताहै उसे प्रवाहिका कहतेहैं जो वायु हो तो सूल हो औ मल के संग फेन गिरै यह बातप्रवाहिका है औ दाह हो पीतमल गिरै सो पित्तप्रवाहिका है जो देह टूटै आलस्य होके कफ मिश्रित पांडुरंग मल गिरै उसेकफ प्रवाहिका कहैं जोरुधिर मिल पतला मल बहै रुकै नहीं उसे रक्त प्रवाहिका कहतेहैं॥ ८॥ अजीर्ण के तीन भेद हैं किया हुआ भोजन यथा योग्य न पचै उसे अजीर्ण कहते हैं जो बायु करके कोष्ठ बद्ध होता है तब शरीर में सूल हड़-

छिद्रयंविज्ञेयंकफेनामंतदुच्यते९ विषाजीर्णरसादेकदोषैःस्यादल सन्निधा । विशूचीत्रिविधाप्रोक्ता दोषैःसास्यात्पृथक्पृथक् ॥ दंड कालसकश्चैवमेकैकंस्याद्विलंबिका १० अर्शांसिषड्विधान्याहु र्वातपित्तकफाश्रिताः । सन्निपाताच्चसंसर्गा तेषांभेदोद्विधास्मृ तः सहजोत्तरजन्मभ्यां तथाशुष्कार्द्रभेदतः ११ त्रिवैवचर्मकी लानिवातात्पित्तात्कफादपि द्वाविंशतिप्रकारेण कृमयःस्युर्द्विधो

फटन पेट फूलै उसे विष्टब्ध अजीर्ण कहते हैं जो सम्भ्रम मूर्छा दाह देहपीर खट्टी डकार आवै जो वायु करके कोष्ट बंध उसे पित्त विद ग्धाजीर्ण कहैं जो उबकाई डकार देह भारी देह सूजन उसे कफ आमाजीर्ण कहते हैं ॥ ९ ॥ जो अन्नभोजनकरि रस होताहै उससे एक विषाजीर्ण होताहै जो रस न पचै सो विष तुल्य होके मरणा वस्था के अनेक रोगको संचय करताहै सो तीनप्रकारका है—वि- सूची—दण्डालस—विलंबिका—लक्षण भाड़ा जल्दी २ आवै मूर्छा उबाकी शूल भ्रम देह में दाह तृष्णा देह धुनना अति खेद इसे विसूचिका कहते हैं कोई हलका कहते हैं शरीर दण्डाकार हो अकड़जाय प्यास डकार इसे दण्डालस कहैं अधो ऊर्द्ध वायु रुधकै पेटस्तम्भ हो फूले शूल हो इसे विलम्बिका कहैं गुलशीतरस कहैं बन्द हैजा कहैं ॥ १० ॥ अर्श कहैं बवासीर छः प्रकार की है बा- तार्श पित्तार्श कफार्श सन्निपातार्श रक्तार्श संसर्गार्श ६ इनके दो भेदहैं एक शरीरसे होताहै जिसे शुष्क कहते हैं दूसरा विपरीता हार विहार से होता है जो शंखाकार अक्र मलमार्ग में है साढ़े पांच अंगुलका उसमें बातादिक के कोपसे मांसका अंकुर उभर आताहै लक्षण—माथेमें शूल कटि पीड़ा मन्दाग्नि येवातार्शहैं ज्वर दाह खेद मूर्छा ये पित्तार्श है खास भेद अरुचि माथा भारी औ अंकुर फूल कै पीडा करै बैठने में क्लेश ये कफार्श लक्षणहैं ऐसेही सन्निपातार्श है औ अति गरमी करकै रक्त गिरै देह पीली बल क्षीण यह रक्तार्श है मल के वेग से अंकुर रक्त देइ कांटे से गड़ैं ये संसर्गार्श लक्षणहैं ॥ ११ ॥ चर्मकील तीनि भांतिकी होतीहैं बातज— पित्तज—कफज—देह में बाईस तरह के क्रमि हैं तीन ऊर्ध्व बासी जुंवा चीन्हर किलनी ये केश बस्त्रकी मलिनतासे होते हैं औ अठारह अन्तर बासी में सात भेद हैं सो कफ से होते हैं हृदया-

च्यते १२ वाह्यास्तथाभ्यंतराःस्युस्तेपुयूकावहिश्चराः१३लिखा श्चान्येभ्यंतराःस्युःकफात्तेहृदयादिकाः । अंत्रादाउदराविष्टा गुर वश्चमहांकुराः १४ सुगंधदर्भकुसुमास्तथारक्ताञ्चमातरः । सौर सालोमविध्वंसारोमद्वीपाउदुंवराः १५ केशादाश्चतथैवान्येस- कृज्जातामकेरुकाः । लेलिहाश्चसलूनाश्च सौसुरादाश्चकेरुकाः । तथान्येकफरक्ताभ्यांसंजातास्नायुकाःस्मृताः १६ व्रणास्यकृम यश्चान्येविषमावाह्ययोनयः । पांडुरोगाश्चपंचस्युर्वातपित्तकफै स्त्रिधा १७ त्रिदोषैर्मृत्तिकाभिश्चतथैकाकामलास्मृतास्यात्

दिका १ अंतरदा २ उदराविष्टा ३ मख:४ महागुदा ५ सुगन्धा ६ दर्भकुसुमा ७ कफाशय से आमाशय पर्यंत होते हैं कुपित होके ऊर्ध्व मार्ग अधोमार्गहो निकलतेहैं श्वेतवर्ण ताम्रवर्णमोटे लम्बेतथा धानसमान लक्षण मन्दाग्नि वकारी ज्वर नाभिलाल १२—१३ १४ औ रुहरक्तसे होतेहैं माचा १ सौरसा २ लोमविध्वंसा ३ रोम द्विपा ४ उदुंबरा ५॥१५॥ केशादा ६ ये रक्तवाही शिराके स्थानमें होते हैं लक्षण—लाल अति सूक्ष्म जो देखनहीं परै वह कष्ट उ- त्पन्न करते हैं पांच प्रवलर कृमि मलमें होते हैं कच्चे मलमें रहते हैं खेत पीत दीर्घ मोटे कभीमुखसे कभीमलके संग गिरतेहैं अग्नि मन्द पीड़नादि उपद्रव होते हैं कफ औ रक्तसे उत्पन्न होते हैं उसे स्नायु कहतेहैं नाहरू कहतेहैं ॥१६॥ बहुत विषम बाह्ययोनि व्रण कृमि हैं [अथ पाण्डु] पाण्डु रोग पांच भांतिका होता है बातज पित्तज कफज त्रिदोषज माटी भक्षणसे५ लक्षण—मुख कांति हीन भांवर कंप सूजन पेट पजावा आलस्य ये पांडु स्वरूप हैं और कमलपांडु कुंभक पांडु हलीमपांडु इनकेलक्षण पीत चमरा हलदी सा मूत्र लाल मल उष्ण बल हीन ये कमल पांडु देह कृष्ण वापीत कभी हरित सामर्थ हानि अग्निमन्द सूक्ष्म ज्वर नपुंसकता खांसी ये कुंभक पांडु ऐसेही लक्षण हलीम पांडुके हैं ॥ १७ ॥ रक्त पित्तके तीन भेद जानों निदान उसका यह है परिश्रम शोक मार्ग गवन मैथुन इत्यादि अति करने से रुधिर उफनाय मुख औ दिशा सेगिरै उसे रक्तपित्त कहते हैं जब वह उफना रुधिर निदान उस का यह है कफ कोपता है तो मुखसे गिरता है जो वायु को

स्यात्कुम्भकामलाश्चैका तथैकंचहलीमकं १८रक्तपीतंत्रिधाप्रोक्त मूर्द्धगंकफसंभवं । अधोगंमारुतंज्ञेयं तद्द्वयेनद्विमार्गगं १६ कासाःपञ्चसमुद्दिष्टा स्तेत्रयस्युस्त्रिभिर्मलैः। उरःक्षताच्चतुर्थःस्या त्क्षयाद्धातोश्चपंचमः २० क्षयापंचैवविज्ञेया स्त्रिभिर्दोषैस्त्रयश्च ते। चतुर्थःसन्निपातेन पंचमःस्यादुरःक्षतात् २१ शोषाःस्युःषट्प्रकारेण स्त्रीप्रसंगाच्छुचोवृणात् । अध्वश्रमाच्चव्यायामाद्वार्द्धक्याद-पिजायते २२ श्वासाश्चपञ्चविज्ञेयाक्षुद्रस्स्यात्तमकस्तथा। ऊर्ध्वं

पता है तौ मलमार्ग से गिरता है अग्नि कोप से नाकसे गिरता है औ कफवात दोनोंसे मुख औ दिशासे गिरताहै ॥ १९ ॥ कास कहैं खांसी पांच प्रकारकी है वात से पित्त से कफसे कलेजे के विकारसे धातु चीणसे ५ पेट कोष हृदय मस्तक पीड़ा सूखी धांस खोखी ये बात कास लच्चण ज्वर मस्तक दाह धमेर पीतकफ निकलना ये पित्त कास लच्चण अरुचि खुजरी कफ से देह जकड़ना ये कफ़ कास लच्चण औ वातसे करेजे में घाव परना सूखी खांसी के पीछे रक्त आना पसुरी पीड़ा यह चत कास लच्चण है धातु चय होकै देह छश सर्व संरंधि पीड़ा करिकै खांसी उत्पन्न होतीहै यह धातु चय का लच्चणहै ॥ २० ॥ अब पांचप्रकारकीच्चयी कहतेहैं वातच्चय पित्त चय कफ चय सन्निपात चय उरुच्चय इसका चरक के मत से निदान कहता हूं भुजा कोषैं जलना हाथ पांउं जलना ज्वर व्यथा कंठस्वर बिपरीत हाथ पांय पिराना खांसी ये वातज च्चय लच्चण हैं दाह होना ज्वर रहना अतीसार रक्त सहित मल गिरना यह पित्तच्चय के लच्चण हैं कोष्ट में पीड़ा होइ कफ गिरै ज्वर होइ खांसी यह कफच्चय लच्चण हैं ज्वर रहै खांसी रहै अंतरदाह होइ यह सन्निपात च्चय लच्चण हैं कंठ घर घराना ज्वर होना खांसी आना अग्नि मंद दुर्गंधि सहित कफ की गांठि गिरै यह उरुच्चत च्चय लच्चण है ॥ २१ ॥ शुष्क रोग छः प्रकार का अति मैथुनसे शोचसे छतसे अति चलने से अति परिश्रम से अति बुढ़ापे से जब रसादिक सात धातु शरीरको सुखाती हैं ॥ २२ ॥ श्वासकहैं दमापांच प्रकार का है च्चयी श्वास तमक श्वास ऊर्ध्व श्वास छिद्र श्वास महा श्वास वायुकोप से ऊर्ध्व

श्वासोमहाश्वासः छिन्नश्वासश्चपंचमः २३ कथिताःपंचहिक्कास्तु तास्तुक्षुद्रान्नजातथा । गम्भीरायमलाचैव महतीपञ्चमीतथा २४ चत्वारोग्निविकाराःस्यु र्विषमोवातसंभवः । तीक्ष्णःपित्तात्कफान्मंदोभस्मकोवातपित्ततः २५ पंचेवारोचकाज्ञेयावातपित्तकफैस्त्रिधा । सन्निपातान्मनस्तापा च्छर्दयःसप्तधामताः २६ त्रिभिर्दोषैः पृथक्तिस्त्रःकृमिभिःसंन्निपाततः।घृणायाश्चतथास्त्रीणांगर्भाधाना-

श्वास चढ़ती है देह में मंद धार ये छवों श्वास साध्य लक्षण हैं कंठ घरघराना पसुली पीर अति दुख से कफ निकलै दम चढ़ै ये तमकश्वासहैं बहुत ऊंची श्वास खींचै उसे ऊर्ध्व श्वास कहैं घरघरा के जोर से श्वास आवे बिह्वलहो खांसनेकी शक्ति न रहै सो महा श्वास कहैं हृदय में जाड़ा मूर्छा प्रलाप अति बक श्वास टूटना ये ऊर्ध्व श्वास असाध्यहै ॥२३॥ हिक्का कहैं हिचकीपांच प्रकार की है क्षुद्रा अन्नजा गंभीरा यमला महती जो बार बार वायु मदबेग से ऊर्ध्व गमन करै उसे क्षुद्रहिक्का कहैं विशेष खाने पीने से अन्नजा हिक्का होती है भारी शब्द से हिचकी आवे उसे गंभीरा कहैं रहि रहि के आवै उसे यमला कहते हैं देह कांपि के निरंतर हिचकी आवै तिस को महा हिक्का कहैं ॥२४॥ जराग्नि के चार विधि विकार हैं वात कोप से हो उसे विषम कहैं पित्त से हो उसे तीक्ष्ण कहैं कफ से हो उसे मंदाग्नि कहैं बात पित्त से हो उसे तीक्ष्ण कहैं कफसे हो उसे मंदाग्नि कहैं बात पित्तसे हो उसे भस्माग्नि कहते हैं अथ लक्षण जो अन्न कभी पचै कभी न पचै यह विषमाग्नि है भोजन पर भोजन करै उसे तीक्ष्णाग्नि कहते हैं थोड़ा भोजन करने से भी न पचै उसे मंदाग्नि कहते हैं जो बार बार भोजन करै अन्न पचै औ देह में न लगै उसे भस्माग्नि कहतेहैं ॥२५॥ अरुचि के पांच भेदहैं वातसे पित्त से कफसे सन्नसे संताप से लक्षण दांत खट्टे मुंह फीका हृदयपीडा यह वातारोचकहै मुंह कडुवा स्वाद हीन ये पित्त अरुचि मुंह फीका वा चिटका यह कफ अरुचिहै तीनों लक्षण हों तो सान्नपात अरुचि है मन संताप हो तिसमें जो दोष अधिक हो वही लक्षण जानौ छर्दि कहैं वमन सो सात प्रकार का है ॥ २६ ॥ वा छर्दि कहैं बार २ उवांत बातछर्दि पित्तछर्दि सन्निछर्दिछिन्दछः० स्त्रीके गर्भ धारण

ञ्जायते २७ स्वरभेदाःषड्वेस्यु र्वातपित्तकफैस्त्रयः। मेदसासन्निपातेनक्षयात्षष्ठःप्रकीर्तितः २८ तृष्णाचषड्विधाप्रोक्तावातात्पित्तात्कफादपि। त्रिदोषैरुपसर्गाक्षयाद्धातोश्चषष्ठिका २९ मूर्छा चतुर्विधाज्ञेया वातपित्तकफैःपृथक् । चतुर्थीसन्निपातेन तथैकश्च भ्रमःस्मृतः ॥ निद्रातंद्राचसंन्यासोग्लानिश्चैकैकशःस्मृतः ॥ क्षे० मदास्सप्तसमाख्याता वातपित्तकफैस्त्रयः । त्रिदोषैरसृजामद्या द्विपादपिचसप्तमः ३० मदात्ययश्चतुर्धास्याद्वातात्पित्तात्कफा-

समय अथ लक्षण हृदय मस्तक पीड़ा मुख सूखै नाभि शूल उवाकी फेन युक्त डकार देह पीत ये वातछर्दि उबकाई पीत हरित दाह युक्त ये पित्तछर्दि कफ संयुक्त उबकाई हो तो कफछर्दि जो उबकाई खट्टी नीली लाल दाह युक्त हो तो सन्निछर्दि जो निरंतर जी मिचलाय विशेष थूकै तो क्रमिछर्दि जो कुछ देर उबाकै कुछ थंभि रहै तो घृणछर्दि कहै अन्यग्रंथ कारका मत है कि स्त्री की जैसी पित्त प्रकृतिहो उतनीछर्दिहो ॥ २७ ॥ स्वरभेद छः प्रकार का है वात भेद पित्तस्वर कफस्वर गलेमें विशेष भेद से धातु क्षयसे ॥ २८ ॥ तृषाछः प्रकारकी है वातजपित्तज कफज त्रिदोषज घाव लगेसे धातुक्षयसे ॥ २९ ॥ मूर्छा चार प्रकार की है वात मूर्छा पित्तमूर्छा कफमूर्छा सन्निपातमूर्छा तस्यलक्षणं संज्ञा कहे चेष्टाकी बहानेवाली जो नाड़ी सो वातादिक से रुधिर होवे अकस्मात् तमोगुण को प्राप्त हो तमोगुण कहैं दुख सुख का तिरस्कार करनेवाला काष्ठवत् भूमि पर गिरा देताहै उसे मूर्छा कहतेहैं भ्रम एक प्रकार का तिस्का लक्षण संदेह संहित घुमेर आना निद्राएक प्रकार की है तंद्रा एक प्रकार की है लक्षण कुछ जगै कुछ सोवै संन्यास एक प्रकार का लक्षण हाथ पाइं चलैं नहीं मृतक समान पड़ा रहै उसे संन्यास कहतेहैं संन्यास रोगमें बहुत जल्दी प्रयत्न करै तो मनुष्य तुरत मरजाइ इससे हाथ पाँव की कलाई में सूची छेद रुधिर निकालै मस्तक में फस्त दे रुधिर निकालै तो जिवै ग्लानि एक प्रकार की है चे० मदरोग सात प्रकार का है वातमद पित्तमद कफमद सन्निपातमद रक्तके कोप से लसारवनि से विष खाने से कच्ची सुपारी खाने से कोदव खाने से धतूरा खाये से जैसे

दपि। त्रिदोषैरपिविज्ञेयस्सएकःपरमस्तथा ३१ पानाजीर्णंतथै वैकं तथैकःपानविभ्रमः । पानात्ययःतथाचैको दाहास्सप्तमता स्तथा ३२ रक्तपित्ताःतथारक्ताः तृष्णायाःपित्ततस्तथा। धातु क्षयान्मर्मघाताद्रक्तपूर्णोदरादपि ३३ उन्मादाःषट्समाख्याता स्त्रिभिर्दोषैस्त्रयश्चते । सन्निपाताद्विषाद्ज्ञेयः षष्ठोदुःखेनचेतसः ३४ भूतोन्मादाविंशतिः स्युस्तेदेवाद्दानवादपि। गन्धर्वकिन्नरा द्रक्षा त्पितृभ्योगुरुशापतः ३५ प्रेताच्चगुह्यकाद्वृद्धा त्सिद्धाद्भूता त्पिशाचतः। जलाधिदेवतायाश्च नागाच्चब्रह्मराक्षसात् राक्षसा दपिकूष्मांडा कृत्यवैतालयोरपि ३६ अपस्मारश्चतुर्द्धास्या त्स-

मद होता है ऐसाही वातादिक कुपित हो मनको विभ्रम करते हैं उसे मद कहते हैं॥ ३०॥ मदात्यय रोग कहते हैं अति मद ते चार विधिके रोगहैं वात से पित्त से कफ से त्रिदोष से एक परम मद कहैं मनुष्य की बुद्धि भ्रष्टहो अनेकभांति चिन्हैं करै प्राण विकल रहैं उसे मदात्यय कहते हैं॥ ३१॥ पानाजीर्ण एक प्रकार एक पान बिभ्रम एक प्रकार पानात्यय दाह सात प्रकार का है॥३२॥ रक्त पित्त से प्यास से पित्त से धातुक्षय से मर्मघात से मारखाने से हृदय में रुधिर संचित होनेसे॥३३॥उन्माद रोग छः प्रकार का है वातोन्माद पित्तोन्माद कफोन्माद बिषसेवन से शोक से लक्षण जब वातादि दोष बढ़िके स्वमार्ग छोड़ि नाड़ीमार्ग में जाके चित्त को भ्रमकरे उसे उन्माद कहैं तब हँसै रोवै नाचै काला होजाइ अजीर्ण बस्त्रत्याग बुद्धिस्मृति मांस भोजन में अरुचि॥३४॥ भूतोन्माद रोग बीस तरह के हैं देव से दानव से गंधर्व से किन्नर से यक्ष से पितर से गुरु शापसे॥ ३५॥ प्रेत से गुह्यक से वृद्ध औ सिद्ध शापसे भूत से पिशाच से जल देवता से सर्प से ब्रह्मराक्षस से राक्षस से कूष्मांड से कर्त्तव्य से लक्षण संतुष्ट पवित्रता सुगंध माला धारण संस्कृत भाषा ये देवोन्माद ब्राह्मण गुरु देवता की निंदा निर्भय ये गंधर्वोन्माद किन्नर गंधर्व आपको जानै लाल आँखि मलीन रक्त बस्त्र प्रियदंभ पितृक्रियारहित मांस तिल गुड़ पर विशेष इच्छा करै ये पितृउन्माद गुरुशाप से गुरुशापोन्माद वृद्ध सिद्ध गुरुवत् भूत प्रेत गुह्यक बुद्धि अनुमान से जानौ ऊर्ध्व वायु होय बड़बड़ाय

मीरात्पित्ततस्तथा।श्लेष्मणापितृतीयःस्याच्चतुर्थःसन्निपाततः३७
चत्वारश्चामवाताःस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा। चतुर्थःसन्निपातेनशूला
न्यष्टौबुधाजगुः ३८ पृथग्दोषैस्त्रिधाद्वन्द्व भेदेनत्रिविधान्यपि।
आमेनसप्तमंप्रोक्तं सन्निपातेनचाष्टमं ३९ परिणामभवंशूलमष्टधा
परिकीर्त्तितं।मलैर्यैःशूलसंख्यास्या तैरेवंपरिणामजं अन्नद्रवभवं

असंगलभाषै दुर्गंधयुक्त रहै तो पिशाचोन्मादी जानौ जलधिदेवता श्मशानदेववत् जो ओंठ भोजन में लगाइ जीभ से चाटै तो सर्पोन्माद है देव गुरु वेद शास्त्र ब्राह्मण को निंदै तो ब्रह्मराक्षसोन्माद जानौ मद मांस विषयातुर निर्लज्जा राक्षसोन्माद है अरु अनुमान से जानना ॥ ३६ ॥ अपस्मार कहैं मृगी के चार भेद हैं वातज पित्तज कफज त्रिदोषज लक्षण तनकंपदांत कड़कड़ाना श्वासघरघराना यह बातापस्मार है जो मुख से फेन पीला उगलै तौ पित्तापस्मार है हाथ पांव थरथराना देह सपेद औ ठंढी हो तो कफापस्मार है तीनों दोष लक्षण मिलै तो सन्निपातापस्मार है असाध्य जानना ॥३७॥ आमवात चार प्रकार का है वातज पित्तज कफज त्रिदोषज वातादि दोष कोप करिकै जठराग्नि मंद करै तो भोजन अपक्व रहै सो आंव होजाय तिस्से देह में पीर ज्वर अरुचि गात अकड़ै सूतै सामान्य लक्षण हैं जिसमें देहपीड़ा विशेष हो तो वातज है दाह हो तो पित्त से पित्तज कफसे आमवात है देह अकड़ जाय खुजरी हो तो कफ आमवात है तीनो लक्षण हों तो सन्निपातामवात है शूल के आठ भेद हैं॥३८॥वातसे पित्तसे कफ से बात पित्त से पित्त कफ से कफ बात से आंव से सन्निपातसे इसका मुख्य कारण वायु है सो सूखी रूखी द्रव्य सेवन से कुपित होइ हृदय पसुरी संधिन में पैठि शूल उपजाती है शीत काल में शीत पदार्थ सेवन से अधिक होती है जो पसीना निकाले से तेल मर्दन से उष्ण भोजनसे कम हो तो बात शूल जानौ जोठंढी मीठी वस्तु से दबै तो पित्तशूल है जो शिशिर में औ बसंत में भोजन करै पीछे पीड़ा हो तो कफ शूल है जो दाहज्वर होय तो वात पित्त है नाभि में पीर हो तो पित्तकफ पेडू कंठ हृदय में शूल होतो कफ बात है जो ओझरी में गुड़गुड़ाहट हो तो आँवशूल है तीनों लक्षण से त्रिदोष शूल जानौ ॥ ३९ ॥ परिणाम शूल

शूलंज्वरातिपित्तभवंतथा४० एवंकंगणितंसुज्ञै रुदावर्तास्त्रयोदशए-
कःक्षुन्निग्रहात्प्रोक्तस्तृष्णारोधाद्द्वितीयकः॥४१ निद्राघातात्तृतीयः
स्याच्चतुर्थश्वासनिग्रहात्। मूत्ररोधात्पंचमःस्यात्षष्ठःक्षवथुनिग्रहा-
त् ४२ जृम्भारोधात्सप्तमःस्या दुद्गारग्रहतोष्टमः। नवमःस्यादश्रु
रोधाद्दशमःशुक्रधारणात् ४३ मूत्ररोधान्मलस्यापि रोधाद्वातवि-
निग्रहात्। उदावर्तास्त्रयश्चैते घोरोपद्रवकारकाः ४४ आनाहो
द्विविधोज्ञेय एकःपक्वाशयोद्भवः। आमाशयोद्भवश्चान्यः प्रत्याना-

भोजनान्त में आठ प्रकार का होता है वातज पित्तज कफज द्वंद्वज ३ आमवात से त्रिदोष से और एक अन्न द्रव शूल है जब अन्न पचना आरम्भ हो तब होता है उसे अन्न द्रव कहते हैं और जब अन्नशेष पचता है तब शूल हो उसे परिणाम शूल कहते हैं और अम्लपित्त से जो शूल हो उसे जरत पित्त शूल कहैं ॥ ४० ॥ उदावर्त रोग तेरह प्रकार के होते हैं १ क्षुधा २ तृष्णा ॥ ४१ ॥ निद्रा ३ श्वास ४ उबाकी ५ छींक ६ ॥४२॥ जँभाई ७ डकार ८ आंसू ९ वीर्य १० ॥४३॥ मूत्र ११ मल १२ वायु १३ इन सबोंके रोध होने से उदावर्त होता है इन में तीन विशेष उपद्रवी हैं मलमूत्र वायु का निरोधये प्राणांत उपद्रव करतेहैं जिन के वायुकुपितहो ऊपर जाय नानाभांति के दुःख उत्पन्न करती है उसे उदावर्त कहते हैं क्षुधाते देह थरथराना ऐंड़ाना अरुचि १ तृषा से कण्ठ सूखना कंमसुनना २ निद्रा से जंभा मस्तक भारी आलस्य रक्त लाव ३ श्वाससे हृदय रोग गुल्म ४ उबाकी से कण्डू पांडु अरुचि ५ छींक रोध से मस्तक शूल अधासीसी ६ जंभा से नासिका रोग ७ डकार से आमाशय अव्यक्त भाषण ८ आंसूसे मुख रोग ९ वीर्य से असमरी सजाख प्रमेह येते रोगहो १० मूत्रनिरोध से मूत्रकृच्छ्र अंड की संधि में पीड़ा अंडवृद्ध ११ मल निरोध से डकार विशेष मरोर होनापेट फूलना १२ वायु निरोध से नानाप्रकार के उदर रोग १३ ॥ ४४ ॥ आनाह रोगदो तरह का होताहै एक जोपक्वा-शयका होके पेट फुलाताहै उसे आनाह कहतेहैं एक आमाशयसे होता है उसे प्रत्यानाह कहते हैं तस्यलक्षणं कटि में पीड़ामल स्तंभ आलस्य पेटफूटना ये आनाह लक्षणहैं आमाशयमें शूल मुख

हस्सकथ्यते ४५ उरोग्रहस्तथाचैको हृद्रोगाःपंचकीर्तिताः। वाता
दिभिस्त्रयःप्रोक्ताश्चतुर्थःसन्निपाततः ४६ पंचमःकृमिसंजातस्तथा
ष्टावुदराणिच । वातात्पित्तात्कफात्त्रीणि त्रिदोषेभ्योजलादपि
प्लीहाक्षताद्बद्धगुदादष्टमंपरिकीर्तितं ४७ गुल्मास्त्वष्टौसमाख्या-
तावातपित्तकफैस्त्रयः। द्वन्द्वभेदास्त्रयःप्रोक्ताःसप्तमःसन्निपाततः४८

से रार डकार यह प्रत्यानाह हैं ॥४५॥ उरोग्रह एकप्रकारकाहै
रक्त मांस प्लीहा औ यकृत इन सबों के बढ़ने से उरोग्रह होताहै
हृदिरोग पांचप्रकार के हैं वातज पित्तज कफज सन्नज कृमिज ५
हृदय में सुईसी चुभना दण्डसे कुचना कुल्हाड़ीसे फारना आरी
से चीरना ऐसा दर्द हो तो वातजहै हृदय में ग्लानि मूर्छाधुआं
सी डकार येपित्तजहैं देह भारीखांसीअरुचि येकफजहैं जो तीनों
दोषके लक्षणहों तोहृदय में विशेषपीराहोतो त्रिदोषजहै ॥४६॥
उबकाईशूलमुखमेंलालथुकथुकीये कृमिज लक्षणहैंउदररोग आठ
भांतिकेहैंवातोदर पित्तोदरकफोदर त्रिदोषोदरजलोदरप्लीहो
दरक्षतोदरबद्धगुदोदर अस्यलक्षणं हाथपांवनाभि कोषसोथसंधि
पीड़ा पेट शूल पेट गुड़गुड़ाना ये वातोदर हैं ज्वर मूर्छा दाह
खजुरी अतीसार शरीर पीतवाताम्नये पित्तोदरहैं शरीर ग्लानि
निद्रा देह गुन खांसी अरुचि श्वास यह कफोदर हैं विवेक] शून्य
दुर्बुद्धि नख केश मूत्र मल स्त्री लोम वश्य हेतु पुरुष को खिला दे
ती तिससे नवदोष कुपित्तहो होताहै मूर्छा मोहपांडुवर्ण शरीर
दुर्बल तृषातुर यह त्रिदोषहैं पेट चिकना फूला नसै दीखै प्यास
अधिक देह कृश यह जलोदर है पेट बड़ा कांपै कृश मंदज्वर पेट
पत्थर सदृश पांडु वर्ण ये प्लीहोदर हैं पेट और नाभि के मध्य में
पीड़ा अति देहकृश मल पीवसा पानीसा मिलागिरै वा खार
दिशाजाय यह क्षतोदरहै जो मल सूखाहुआ अति कष्टसे थोरा
थोरा कांख कै गिरै यह बद्धगुदोदर लक्षण है॥४७॥ गुल्म आठ
प्रकारका है वात गुल्म पित्त गुल्म कफ गुल्म वातपित्तगुल्मकफ
वातगुल्मत्रिदोष गुल्म रक्तगुल्म वातादि कोपकरि पेट में गांठि
सागुल्मपांच तरहको उत्पन्नकरताहै दोदोनोंपार्श्व में एकनाभि
मेंएक हृदयमें एक पेडूमें होता है कभी चलकै और ठौर पीड़ा
करै कभीकभी कहीं अड़कै पीड़ाकरै मूत्रघात तेरहप्रकारकाहो

रक्तादष्टमकःख्यातो मूत्रघातास्त्रयोदश । वातकुण्डलिकापूर्वं वातष्ठीलाततःपराः ४९ वातवस्तिस्तृतीयःस्यान्मूत्राघातश्चतुर्थकः । पंचमंमूत्रजठरं षष्ठोमूत्रक्षयःस्मृतः ५० मूत्रोत्सर्गःसप्तमस्यान्मूत्रग्रंथिस्तथाष्टमः । मूत्रशुक्रंचनवमं विट्घातोदशमःस्मृतः ५१ मूत्रासादश्चोष्णवातो वस्तिकुण्डलिकातथा । त्रयोप्येतेमूत्रघाताः पृथक्घोराःप्रकीर्तिताः ५२ मूत्रकृच्छ्राणिअष्टौस्युर्वातात्पित्तात्कफात्त्रिधा५३सन्निपाताच्चतुर्थःस्यान्मूत्रकृच्छ्रञ्चपञ्चमं । विट्कृच्छ्रं षष्ठमाख्यातं घातकृच्छ्रञ्चसप्तमं ५४ अष्टमंचाश्मरीकृच्छ्रं

ता है वातकुंडलिका वातष्ठीला ॥ ४८ । ४९ ॥ वात वस्ती मूत्रातीत मूत्रजठर मूत्रक्षय ॥ ५० ॥ मूत्रोत्सर्ग मूत्र ग्रन्थिमूत्रशुक्रविट्घात ॥ ५१ ॥ मूत्रासाद उष्णवात वस्तिकुण्डलिका इस में से तीन मूत्र घाद उष्णबात वस्तिकुण्डलिका ये प्राण संकट उपद्रव करते हैं लक्षण चिनगहोके थोड़ा२ मूत्रस्राव होतो वातकुंडलिकाहै अति पीड़ा हो मलमूत्र बंद रहैतौ वातष्ठीला जानौ पेडू कोष्टमें अधिक पीर हो औ मलमूत्र बंद रहैतौ वातवस्ती है जो मूत्र शंकाबनी रहै उतरै नहीं तौ मूत्रातीत है पेडू फूलै पीड़ाकरै मूत्रनद्रवैतौ मूत्र जठरहै शूलदाह हो मूत्र न गिरै तो मूत्रक्षय है चिनगहो कांखने से रक्त समथोरा २ मूत्रद्रावहोतौ मूत्रोत्सर्गहै मूत्राशय के मुंहपर गांठिपर पीड़ाकरै तौ मूत्रग्रंथिहै जो मूत्रत्याग के आदि वा अंत मूत्र राखधोवनसा गिरै तो मूत्र शुक्र जानौ मूत्रमें मलकी गंधहो तौ विट्घात जानौ जो दाह युक्त गोरोचन शंखचूर्ण के रंग मूत्र होके सूखनेपर निसदोष की रंगत होजाय तौ उसीदोष को मूत्रसाद जानौ जो मूत्र पीला या शुद्ध या रक्त वा खार कष्टते थोड़ा गिरै तौ उष्णवात जानो जो मूत्रकी थैली के मुखपर सूजन हो धीरे २ पीला या लाल मूत्रगिरै येवस्ति कुंडलिका के लक्षण हैं ॥ ५२ ॥ मूत्र कृच्छ्रके आठभेद हैं वात मूत्र कृच्छ्र पित्त कृ० कफ० कृ० ॥ ५३ ॥ सन्नि कृ० शुक्र कृ० विटकृ० अश्मरीकृ० ये आठ हैं अथ अस्य लक्षणं पेडू नाभि पीर अधिक कांख२ थोरा २ मूत्रहो तौ वात कृच्छ्रहै दाह चिनग हो लाल मूत्र द्रवै तौ पित्त कृच्छ्र है पेडू भारी मूत्रस्वेद चिकनाहो तौ कफ कृच्छ्रहै तीनो के लक्षणहों तौ

चतुर्धाचाश्मरीमता । वातात्पित्तात्कफाच्छुक्रा न्मेहास्स्युर्यश्च विंशतिः ५५ इक्षुमेहस्सुरामेहः पिष्टमेहश्चसांद्रकः ५६ शुक्रमेहो दकाख्योच लालमेहश्चशीतकः । सिकताख्यःशनैर्मेहो दशैतेकफ सम्भवाः ५७ मंजिष्ठाख्योहरिद्राख्यो नीलमेहश्चरक्तकः । कृष्णा मेहःक्षारमेहः षडेतेपित्तसम्भवाः॥ हस्तिमेहोवसामेहो मज्जामेहो मधुप्रभः । चत्वारोवातजामेहा इतिमेहाश्चविंशतिः ५८ सोमरो-

सन्निपात कृच्छ्र है सो असाध्य जानौ मूत्रधातु मिश्रित क्रमसे उतरै तौ शुक्र कृच्छ्र है जो कांखनेसे मूत्रद्रवै तो विट कृच्छ्र है घाव की तरह अंत निश्चय हो औ छरछराय के मूत्रद्राव कै मूत्रद्राव होय तौ घात कृच्छ्र है पेड़ू या डंडी में पीड़ा औ शूलहो तौ प्रमरी क-हिये ॥ ५४ ॥ प्रमरी कहें पथरी के चारभेद हैं वात प्रमरी पित्त० कफ० शुक्रप्रमरी अथास्य लक्षणं वात पित्त कोपकरि मूत्र की थैली के मुहपर रसको सुखाय पथरीसी स्थिर करतेहैं वही पथरी है पेडू औ डंडीको फाड़ने लगतीहै मूत्रनहीं उतरता जब कांखने से पथरी कुछ हटती है तब दशबीस बूंद मूत्र गिरताहै तौ वात पथरी है जो उष्णमल सावागले हाड़के कनकेसे वाकाली पथरीहो तो पित्तप्रमरी है पेडू भारी मूत्रश्वेत ठंढा कष्टसेहो तौ कफप्रमरी जानौ जब धातु सूखके पथरी परती है तब पेडूमें पीर अंडकोस में सूजन ये शुक्रप्रमरी लक्षण हैं प्रमेहरोग बीसप्रकार का है ॥ ५५ ॥ इक्षुमेह सुरामेहपिष्टमेह सांद्रमेह॥ ५६॥ वा शुक्रमेह उदकमेहलाल मेह सिकतामेह शनिमेह येदश भेद कफ संभव है ॥ ५७ ॥ मंजिष्ठा मेह हरिद्रा०नील०रक्त०कृष्ण०क्षारमेहये छह पित्त संभवहैंहस्ति मेहवसामेह मज्जामेह मधुमेह ये चारिवात संभवहैं सब मिलिके बीस प्रकार के हैं अथास्य लक्षण जो मूत्र मार्ग से ऊष रससा शुक्रगिरै तौ इक्षुमेह जानौ जिसमें मद अगंध आवै वह सुरामेह जानौ पीठीसा गिरै तौ पिष्टमेह जो शुक्रजानौ गिरनेपर जमजाइ तौ सांद्रमेह है जलसी धातुगिरै तौ उदक मेह लारसी धातुगिरै तौ लाल मेह जानौ जो धातु अधिक गिरै औ ठंढीहो तौ शीत मेह जानौ जो धातु बालूसी गिरै तौ सिक्तामेह है जो धातुधीरे २ गिरैतौ शनैमेह जानौ १० मंजीठरंग धातुहोय तौ मंजिष्ठमेह है पीतरंग होय तौ हरिद्रामेहजानौ गजमद की तरह सदा

गस्तथाचैकः प्रमेहपिडिकादश । सराविकाकच्छपिका पुत्रिणी विनतालजी ५९ मसूरिकासर्षपिकाजालिनीचविदारिका । विद्रधिश्चदशैताःस्युः पिडिकामेहसम्भवाः ६० मेदोदोषस्तथाचैकः

सर्वदा बहै तौ गजमेह है नील धातुहो तौ नील मेहरक्त शुक्रगिरै तौ रक्तमेह काली धातुगिरै तौ कृष्णमेह खारपानी सी गिरै तौ क्षार मेह जानौ मज्जासी धातुगिरै तौ मज्जामेह सहत सी धातु गिरै यासहत गंधहो तौ मधुमेह है ॥ ५८ ॥ सोमरोग एकप्रकार का है सबदेह का जल मूतहो बहता है उसे सोम कहतेहैं प्रमेह संबंधी फोड़ा दश प्रकारके हैं सराविका कच्छपिका पुत्रिणी विनता अलजी मसूरिका सर्षपिका जालिनी विदारिका विद्रधी अथ लक्षणं जो फोरादि उलटे तुलाहो तौ सराविका है जो कछुए की तरह हो दाह करै तौ कच्छपिका जानौ जिस फोड़े पर नन्ही २ फुनसी निकरैं तौ पुत्रिणीहै जो फफोड़ा काले पट्ठे पर या अंडकोश पर हो औ जाइकै इन्द्रीकी जड़के पासतीसैतौ विनता है जो फोड़ा पत्थरसा हो उसके आस पास काली या लाल फुनसियां हों औ ज्वरदाह अधिकहो तौ अलजी कहिये जो मसूरसा हो तो मसूरिका है जो सरसोंसे फोड़े हों तौ सर्षपिका जानौ जो बड़ा फोड़ा दाह सहित हो औ ऊंची नीची सूजनहो तौ जालिनी जानौ कंदासाहो तौ विदारीजानौ जो विद्रौधी सो उसे विद्रधी जानौ ॥ ५९ । ६० ॥ मेद रोग एक प्रकार का है लक्षण कफ उत्पत्ति कारक आहार मधुरान्न मधुर रस घृत तैल मैदा चावल चून इनसे केवल मेद बढ़ती है परन्तु और सब धातुन को क्षीण करि अनेक उपद्रव उपजाता है अनायास कर्तादि कुपित्त होके मेद के योग देह मोटी करते हैं स्तन नितंब पेट भारी हो जाता है भगंदर ज्वर अतीसार पीलपांव अर्श इत्यादिक रोग उत्पन्न होते हैं सोथ नव प्रकार काहै वातशोथ पित्तशोथ कफशोथ वातपित्तशोथ पित्त कफशोथ कफवातशोथ त्रिदोष शोथ अभिघात शोथ विष शोथ ये नव भेद हैं यथा अस्य लक्षण जो अनायास सूज आवे फिरअच्छा हो पिराय झल झलाय ये वात शोथ हैं सूजन नरम जरदी या श्यामता लिये नेच लाल दाह सूजन में हो पकि जाय येपित्त

शोथरोगानवस्मृताः। दोषैःपृथक्द्वयेस्सर्वै रभिघाताद्विषादपि ६१ वृद्धयस्सप्तगदिता वातात्पित्तात्कफेनच। रक्तेनमेदसामूत्रा दन्त्र-वृद्धिश्चसप्तमः ६२ अंडवृद्धिस्तथाचैका तथैकागंडमालिका। गं-

शोथ हैं जो सूजन भारी औ पीड़ा हो अरुचि अग्नि मंद राति में पिरायये कफ शोथ हैं वात पित्त लक्षणहोय तो वात पित्तपित्त कफल० होतो पित्त कफहै जो कफ वातल० होतो कफ वातशो०जो त्रिदोष लक्षणहो तो सन्निपात शो० किसी भांति क्षत लगे सूजन होतौ अभिघात शो० जानौ विषधर जीव के दांत डंक पूंछ पंजा नख दंष्ट्रिसे क्षतहो सूजैतौ विष शोथ जानौ॥६१॥ अंड वृद्धि वृषण फूलना उसे वृद्ध कहते हैं तिसके सात भेद हैं वात वृद्ध पित्त वृद्ध कफ वृद्ध रक्त वृद्ध मूत्र वृद्ध आंत वृद्ध ये सात प्रकार हैं अस्यलक्षणं जब वायु अंड कोश में भरिकै पीड़ा उत्पन्न करतीहै औ रुखाई छाय लेती है तौ वात वृद्ध है जो पके गूलर के रंग दाह युक्त पके फोड़े की नाईं उष्ण होतौ पित्त वृद्ध जानौ ठंढा भारी चिकना कठोर खुजलाय कुछ पीड़ा हो तौ कफ अंड वृद्धि जानौजो काले रंगकी फुड़िया सहित पित्त लक्षण होतौ रक्तांड वृद्ध जानौ जो ताल फल से नील गोल होतौ मेद वृद्ध है और एक अन्योक्तअंड वृद्ध को मांस वृद्धकहतेहै उसका निदान यहहै कि मूत्रवेगके रोके से दोनौं ओर की गोली फूल जाती है जब मूत्र रुक जाता है तब धीरे २ दोनौं कौडीन में हलाइ २ पचता फिर वायु कोप से उतरिकै पीड़ा करताहै फूलताहै उसेमूत्रवृद्धि कहतेहैं जो वायुके कोपसेनस अंडकोशमेंलटक आतीहै जब वह नस फिर वायु कोप पाइके फूलती है उसमें आंत उतरि आतीहै उसे अंत्रवृद्ध कहते हैं वह दबाने से फिर ऊपर चढ़ि जाती है॥६२॥ अंड वृद्धि कहैं गलांड गले की संधिनमें अंडे सी गांठै फूल कै कड़ी हो रहै पीड़ से अंड वृद्ध एक प्रकार के हैं गंड माला एकही प्रकारकी है गले में माला की नाईं फोड़े होकै पकैं फूटैं उसे गंडमाला कहते हैं गल गंड एक प्रकार का है जिसे घेघा कहते हैं अपची एक प्र-कारकी है गंडमाला की नाईं गांठैं पकैं फूटैं वहै एक अच्छाहो-नेन पावै दूसरा और हो उसे अपची कहते हैं और चरक में गले के छत्तीस तरह के रोग और कहे हैं ग्रंथि कहे गांठि की

डापचीतिचैकास्याद् ग्रन्थयोनवधामताः ६३ त्रिभिर्दोषैस्त्रयोरक्ता च्छिराभिर्मेदसोव्रणात् । स्थ्नामांसेननवमः षड्विधंस्यात्तथार्बुदं ६४ वातात्पित्तात्कफाद्रक्ता न्मांसादपिचमेदसः । श्लीपदश्चत्रिधाप्रोक्तो वातात्पित्तात्कफादपि ६५ विद्रधिःषड्विधाख्यातो वा-

तरह नौ भांति की होतीहै जिसे बतोरी कहतेहैं बात ग्रंथि पित्त ग्रंथि रक्त ग्रंथि शिरा ग्रंथि व्रण ग्रंथि अस्थि ग्रंथि मास ग्रंथि येनव प्रकार के ग्रंथि रोग हैं अथास्य लक्षणं जो गांठि जूता के आ-कार हो चिलकि छिलकि उठे छूने से कठोर पिराय और मरन हो खरल के आकार हो रक्त बढ़ै तौ वातग्रंथि जानौ जो ग्रंथि दाह करे फफोले की नाईं भलाय औ पकै नहीं काला लह्व बढ़ै तौ पित्तग्रंथि जानौ जो गांठि ठंढीहो कुछ पीडाकरै खुजरी होय कठोर बहुत होय दिनमें बढ़ै पकैसे पीब देइ तौ कफग्रंथि जानौ जिसमें पित्तग्रन्थिके लक्षणहों रक्तवर्ण विशेषहोय रक्तग्रन्थ जानो बटिया सी हो तो शिराक ग्रंथि जानौ दबाने से इधर उधरदौरै ऊंची हो औ मर्म स्थान में हो तौ असाध्य मेदग्रंथि जानौ जो हाड़बढ़कै हाड़में सट जाय औ ग्रंथि निसरिआवै पत्थरसी पीडा होतौ पीडाहाड़ ग्रंथि जानौ सोभी असाध्यहै जो हाड़काढ़ै तौ अच्छी हो जो मांससे होती है उसे मांस ग्रंथि कहते हैं जो घाव पूरिकै ऊपर मांस बढ़िकै गांठि उभरै उसे व्रण ग्रंथि कहतेहैं कोई मांसहड्ड कहते हैं ॥ ६३ ॥ अर्बुद रोग छह प्रकारकाहै वातार्बुद पित्तार्बुद कफार्बुद मांसार्बुद मेदार्बुद रक्तार्बुद जो प्रथम ग्रं-थिके लक्षण लिख आये है वै सेई हैं रक्तार्बुद औ मांसार्बुद ये कठिन हैं इनके लक्षण भिन्न २ कहता हूं जो मांसपिंडसा हो लाल रंग पक फूटकै अति दुख देता है उसे रक्तार्बुद कहतेहैं मांस दुष्ट होकै मांस घीकुआर रादकी नाईंहो चिकना लाल अतिक-ठिनतासे पकै फूटकै हमेशा बहा करे जल्दी अच्छा न हो जोमर्म स्थानमेंहोतौअसाध्यहै औरजगह साध्यहै यहमांसार्बुदहै ॥ ६४ ॥ श्लीपद कहैं फीलपाँव सो तीनि भांति के हैं वातसे पित्त से कफ से अस्य लक्षणं जांघके जोड़ की संधिमें प्रथम छोटी गिलटी उभर के पीडा करतीहै फिर कुछ दिनोंमें सब जोड़की नसैंतन जातीहैं चलने से समझ पड़ताहै फिर धीरेधीरे रुधिर सहितपाड़ा उतरि

तपित्तकफैस्त्रयः। रक्ताच्छतात्त्रिदोपैश्च व्रणाःपंचदशोदिताः ६६
तेषांचतुर्द्धाभेदाःस्यु रागन्तुर्देहजस्तथा । शुद्धोदुष्टश्चविज्ञेयस्त-
त्संख्याकथ्यतेपृथक् वातव्रणःपित्तजश्च कफजोरक्तजोव्रणः ६७
वातपित्तभवश्चान्यो वातश्लेष्मभवस्तथा । तथापित्तकफाभ्यांच
सन्निपातेनचाष्टमः नवमोवातरक्तेन दशमोरक्तपित्ततः ६८ श्लेष्म
रक्तभवश्चान्यो वातपित्तासृगुद्भवः । वातश्लेष्मासृगुत्पन्नः पित्त-
श्लेष्मास्रसम्भवः सन्निपातासृगुद्भूत इतिपंचदशव्रणाः ६९ स-
द्योव्रणास्त्वष्टधास्या दवक्लिप्तबिलम्बिनौ । छिन्नभिन्नप्रचलिता
घृष्टबिद्धनिपातिता ७० कोष्ठभेदोद्विधाप्रोक्तः छिन्नांत्रोनिःसृतां-

के पैर से गांठि तक फूलता है उसेफीलपावं कहते हैं और हाथ में और अंग में भी होता है तराईको भूमिमें अधिक होता है बात—ज में पीड़ा पित्तजमें दाह कफजमें चिकनी सोथ मंद पीर॥ ६५ बिद्रधी छह प्रकार का है वातज पित्तज कफज रक्तज क्षतज त्रि-दोषज ये छह बिद्रधी हैं अथास्य लक्षणं जो लाल वा पीत नु-कीली अति पीड़िका युक्तहोतौ बात बिद्रधीहै जो दाहयुक्त लाल होतौ पित्त बिद्रधी जो दीपक सी पांडु वर्ण पककै कालो पर जाय तौ कफ बिद्रधी रक्त बिद्रधीके पित्त सम लक्षण हैं जो किसी भांति घाव संबंधी हो तौ पित्त बिद्रधी है जिसमें दाह ज्वर खु-जरी और बिविध उपद्रव हो तौ त्रिदोष बिद्रधी जानौ ब्रण कहे पिटकी फोड़ासो पंद्रह प्रकारकेहैं ॥ ६६ ॥ तिसमेंभीचारिभेद हैं आगंतुक देहज शुद्ध दुष्ट तिसकी संख्या वातज पित्तज कफज रक्तज ॥ ६७ ॥ वातज पित्तज वात कफज पित्त कफज सन्निपातज वात रक्तज रक्त पित्तज ॥६८॥ कफ रक्तज वात पित्त रक्तज वात कफ रक्तज पित्त कफ रक्तज सन्निपात रक्तज अथास्य लक्षणं जो चोट चपेट लगने सेपकै फूटै उसे आगंतुक ब्रण कहते हैं वामादिक के कोपसे होउसे देहज कहते हैं जो जीभ के रंग हो छोटा या बड़ा चिकनापीड़ा न करै न पकै फूटै न कड़ाहो वह शुद्ध ब्रणहै जो दुर्गंध युक्त हमेशा ऊपर कठोर भीतर पुल पुला उसे दुष्ट ब्रण कहते हैं ॥ ६९ ॥ सद्योब्रणकहें आगंतुक ब्रण सो आठ प्रकारका है अवक्लिप्त बिलंबिन छिन्न प्रचलित घृष्ट बिद्धनिपातित अथास्य समान्य ल-

त्रकः। अस्थिभंगोष्टधाप्रोक्तो भग्नपिष्टविदारिताः विवर्तिश्चवि-
श्लिष्टश्चतिर्यक्क्षिप्तस्त्वधोगतः ऊर्ध्वगस्संधिभग्नश्चवन्हिदग्ध
श्चतुर्विधः ७१ प्लुष्टोतिदग्धोदुर्दग्धः सम्यग्दग्धःप्रकीर्तितः ७२
नाड्यःपंचसमाख्याता वातपित्तकफैस्त्रिधा। त्रिदोषैरपिशल्येन
तथाष्टौस्युर्भगन्दराः ७३ शतयोनस्तुपवनादुष्ट्रग्रीवश्चपित्ततःपरि

लक्षणं नाना प्रकार के जो अस्त्र हैं तिन की धार से कटै या मुद्ग-
रादि की चोट से घाव हो या चुटहल रक्त जमके पकै फूटै उसे
आगंतुक व्रण कहते हैं ॥ ७० ॥ कोष्ट भेद कहैं उदर क्षत लगना दो
भांतिका है एक छिन्नांत्रक दूसरा निःसृतांत्रक पेट में क्षत लगने
से आंत कटिके बाह्यज निकरै सो छिन्नांत्रक है और जो बाहर
निकरि परै वा बिना टूटे बाहर निकरै तिसे निःसृतांत्रक कहैं अ-
स्थिभंग कहैं हाडटूटना सो आठ भांतिका है बिदारितभग्नपिष्टवि-
वर्तित विश्लिष्ट तिर्यक् अधो गत ऊर्द्ध गत संधि भंग अस्य लक्षणं
जो हाड से हाड रगड खाय संधि पर सूजन हो पीड़ा करै तो
भग्न पिष्ट है जो संधि चर्म फटि कै हाड़ निकरै तौ बिदारित है
जो हाड़ बैठने में यथा स्थान न बैठे ऊपर नीचे होजाय उसे विव-
र्तित कहते हैं जो हाड़ हटने से संधि ढीली पै सूजन परिकै पीड़ा
करै तो विश्लिष्ट जानौ हाड़ सलकना कहै हाड़की ठौर पलट
जाना उसे तिर्यक् कहते हैं जो हाड़ अपने ठौर से नीचे को स-
लक जाय तो अधोगत कहिये जो ऊपर को सिलकै तो ऊर्ध्व
गत कहैं जो हाड टूटजाय उसे संधिभंग कहैं ॥ ७१ ॥ वन्हि दग्ध
चारि प्रकारका है प्लुष्ट अतिदग्ध दुर्दग्ध सम्यग्दग्ध ४ अस्य लक्षणं
जो अग्नि स्पर्श से त्वचा का रंग पलट जाय उसे प्लुष्ट कहते हैं
जो चर्म जरिकै मांस नस हाड़ देखि परै तो अतिदग्ध है जो देह
जरि खाल उलट जाय दाह युक्त पीड़ा करै तो दुर्दग्ध है जो सब
देह जरि लुआठ समान हो जाइ उसे सम्यग्दग्ध कहैं ॥ ७२ ॥
नाड़ी व्रण पांच प्रकारका है वात नाड़ी पित्त नाड़ी कफ नाड़ी
त्रिदोष नाड़ी सन्न नाड़ी अथास्य लक्षणं क्षत संबंधी सूजन पकी
वा कची को धोवे औ शुद्ध न होइ वा क्षत के अंततक बाती न
जाइ तौ बहुत पीड़ा करै औ बिल समान चमड़े पर दीखै औ
भीतर नाड़ी कहैं पुंगली सा सीधा या टेढ़ा या लंबा हो औ पीब

स्रावीकफात्ज्ञेय ऋजुर्वातकफोद्भवः ७४ परिक्षेपीमरुत्पित्तादर्शोजः कफपित्ततः। आगन्तुजातचोन्मार्गी शंखावर्त्तस्त्रिदोषजः ७५ मेढ्रे पंचोपदंशास्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । सन्निपातेनरक्ताश्चमेढ्रशूका म्यस्तथा ७६ चतुर्विंशतिसंख्याता लिंगार्शोग्रन्थितंतथा। वि-वृत्तमवमंथश्च मृदितंशतयोनकः ७७ अष्ठीलिकासर्षपिका त्व-क्पाकश्चावपाटिकः। मांसपाकःस्पर्शहानि विरुद्धमणिरुद्भवः ७८

देता रहै उसे नाड़ीव्रण नासूर कहतेहैं शल्य एक प्रकारका है शल्य कहैं शाल जो कील कांटा कांच भूमि कै रहिजाय तौ मास पकाता सड़ाता है उसे शल्य नाड़ी व्रण कहते हैं ॥ ७३ ॥ भगंदर आठ प्रकार का है वायु से श्वेत पीत पित्त से उष्ट्रग्रीव कफसेपरि-स्रावी वात कफ से ऋतु ॥ ७४ ॥ वातपित्त से परिक्षेपी कफपित्त से अर्शोजि आगंतु से उन्मार्गी त्रिदोष से शंखावर्त अथास्य लक्षणं गुदा के चारों ओर दो अंगुल तक जो फोड़ा बड़ा या छोटा हो पकि फूटि कै भीतर ताईं छिद्र परजाइ उसे भगंदर कहतेहैं एक तरह का नासूर है उस राह भी मल आता है भगंदर एकभांति हो अनेक भांति पकि फूटि कै बहा करता है ॥ ७५ ॥ इंद्री में पंच प्रकारका उपदंश होताहै जिसे गरमीकहैं वातसे पित्तसे कफसे त्रिदोष से रक्त से अथास्य लक्षणं इंडी में क्षतलगै या कड़ हाथ से या रोम टूटने से व रजस्वला प्रसंग से होताहै यह निदान का मत है बुद्धि से यह समझ परता है कि ऐसे घावकेवि-चार दिन में दूर होता है यह रोग दुष्ट योनि के संयोग से प्रथम इंडी में घावपरिकै धीरे २ सब शरीर में घाव परजाते हैं ॥ ७६ ॥ इन्द्री में शूकज रोग चौबीस भांति का भी होता है यह अति विषयाकांक्षी पुरुष स्थूल करने को बिषादि तीव्र औषधि लगाते हैं तौ बाल समान सूक्ष्म समान सपेद किरौना सा होताहै उसे शूक कहतेहै इसीकेवे चौबीस भेदहैं लिंगार्श १ ग्रन्थित २ विवृत्त ३ अवमंथ ४ मृदित ५ शत योनक ६ ॥ ७७॥ अष्ठीलिका ७ सर्षपिका ८ त्वक्पाक ९ अवपाटिका १० मांसपाक ११ स्पर्शहानि १२ बिरुद्ध मणि १३ ॥ ७८ ॥ मांसार्बुद १४ पुष्करिका १५ संमूढ़पिडिका १६ अलजी १७ रक्तार्बुद १८ विद्रधि १९ कुंभिका २० तिलकालक २१ विकृदा २२ प्रशक्त २३ परिवर्तिक २४ अथास्यलक्षणं ये सब

मांसार्वुदं पुष्करिका संमूढैःपिडिकालजी । रक्तार्बुदंविद्रधिश्च कुम्भिकातिलकालकः विरुद्धःप्रसकःप्रोक्तस्तथैवपरिवर्तिका ७९ कुष्ठान्यष्टादशोक्तानि वातात्कापालिकंभवेत् । पित्तेनोदुंबरंप्रोक्तं कफान्मराडलचर्चिके ८० मरुत्पित्ताद्दक्तजिव्हं श्लेष्मवाताद्विपादिका । तथासिध्मैककुष्टञ्चकिटिभंचालसंतथा ८१ कफपित्तात्पुनःदद्रुःपामाविस्फोटकस्तथा । महाकुष्टंचमेदलंपुंडरीकंशतारुकं ८२

रोग इन्द्री पर होते हैं सो क्षुद्र रोग गिने जाते हैं और २ निदान में कहते हैं कि ये रोग इंद्री के मुखपर होतेहैं मांस बढ़िकै कुंदरू की तरह होजाता है उसमें फुंसी भी होतीहैं और २ भी अनेक प्रकार के उपद्रव संयुक्त होते हैं ॥ ७९ ॥ कुष्ट रोग अठारह प्रकार का है प्रथम वातजन्य कापालिकलक्षणं कृष्ण रंग वा रक्त रंग माटी के खपरे की नाईं रूखा खखरा चमड़ा पतला होतौ कापालिक कहिये दूसरा उदुंबरा गूलर तुल्य दाहपीड़ा खुजरी युक्त हो वह उदुंबर कुष्ट कहिये जो कुष्ट सपेद चिकना चिकत्तासा हो वह तीसरा कफजन्य मंडल कुष्ट है जो पांव में काली काली सी पिडकी होकै फटफट कै वह खजुरी करै वह चौथी विचर्चिका है॥ ८० ॥ जो लाल हो बीचमें कालापीड़ा युक्त रीछ की सी जीभ सो वातपित्तजन्य ऋक्ष जिह्वा कुष्ट पांचवां है जो गोड़ के चन्द्र में पकिकै घाव परै या हाथ की हथेली में हो वह विपादिका छठवां कुष्ट है जो सपेद ललाई लिये हो चमड़ा पतला हो और उसमें कूट सा भरै वह सातवां सिध्मकुष्ट है यह छाती में होता है उसे सिहुंवा भी कहते हैं कफ पित्तसे उत्पन्न है जो घावं होकै कालापरजाय वह कफवात जन्य हैं आठवां किटिभकुष्ट है जो लाल लाल पिड़की होकै खुजजाय वह अलसकुष्ट नवमाहै ॥ ८१ ॥ जो श्याम चमड़ा होकैचिकना औ नन्हीं पिडकी संयुक्त हो औ खजलाय वह दशवांदद्रुकुष्टहै उसे दाद भी कहते हैं जो देह में छोटी बड़ी पिडकी परिकै फूटै खजुआय एक अच्छीनहो और निकलै वह ग्यारहवां पामा कुष्टहै और खजुली भी कहैं टेंट में हो तो टेटी कहैं कफ पित्त के जोरसे सब देह लाल होकै छोटी छोटी पिडकी सब देह फोरि

त्रिदोषैःककणांज्ञेयं तथान्यच्छित्रसंज्ञकं । तच्चवातेनपित्तेनश्लेष्मणाचत्रिधाभवेत् ८३ क्षुद्ररोगाःषष्ठिसंख्यास्तेष्वादौशर्करार्बुदं । इन्द्रवृद्धापनसिका विवृतांधालजीतथा ८४ वाराहदंष्ट्रोवल्मीकं कच्छपीतिलकालकः । गर्दभीरकसाचैव यवप्रख्याविदारिका ८५ कदरोमसकश्चैव नीलिकाजालगर्दभः । इरिवेल्लीजतुमणि गुदभ्रंशोग्निरोहिणी ८६ सन्निरुद्धःगुदःकोढ़ःकुनखोनुशयातथा । पद्मिनीकण्टकश्चिप्पमलशोमुखदूषिका ८७ कच्छाव्टपणकच्छूश्च गन्धपाषाणगर्दभः । राजिकाचतथाव्यंगश्चतुर्धापरिकीर्तिताः ८८ वातात्पित्तात्कफाद्रक्ता दित्युक्तंव्यंगलक्षणं । विस्फोटाःक्षुद्ररोगेषु

के छालेकी नाईं निकलै उसे विस्फोटक बारहवांकुष्टकहैं उसीको शीतला भी कहते हैं जो कुष्ट शरीर की त्वचाको हाथी की खाल समान करदे औ पसीना न निकरै वह तेरहवां महाकुष्ट है उसे चर्मकुष्ट औ गजचर्म भी कहैं जो कुष्ट लाल होकै पिराय खजुवायके पिडिकी सा होजाय वह चौदहवां कुष्ट चर्मदल कहते हैं जो कुष्ट कमलपत्र सम ऊंचा शरीर पर देखि परै वह पुण्डरीक पन्द्रहवां कुष्ट है जो कुछ छोटा फोड़ाहोकै बहुत छेद परजाइ वह शतारुका सोलहवां कुष्ट है ॥८२॥ जो पकिके घाव काला होजाय अति पीड़ा करै उसे काकणकुष्ट कहते हैं यह सत्रहवां त्रिदोषजनितअसाध्यहै अठारहवां श्वित्रकुष्ट सोकुष्टपकै न फूटै सोत्रिदोषसेतीनि प्रकार का श्वित्रकुष्ट होताहै जिसके हो उसे कोढ़ी कहतेहैं वायु से रूखा औ लाल चकत्तासा होताहै पित्तसे ताम्रवर्ण दाहसहित चिकना होताहै कफसेसफेद चकत्तासघनसघन कठोरहोताहै यह श्वेतकुष्टहै ॥८३॥ वा क्षुद्ररोग साठि प्रकारकेहैं शर्करार्बुद१ इन्द्रवृद्धा २ पनसिका ३ विवृता ४ अंधालजी ५ ॥ ८४ ॥ वराहदंष्ट्रा ६ वल्मीक ७ कच्छपी ८ तिलकालक ९ गर्दभी१० रकसा ११ यवप्रख्या १२ बिदारिका१३ ॥८५॥ कदर१५मसक १५ नीलका१६ जालगर्दभ १७ इरिवेल्ली१८ जतुमणि १९ गुदभ्रंश२० अग्निरोहिणी २१ ॥ ८६ ॥ सन्निरुद्धगुद २२ कोढ़ २३ कुनख २४ अनुसय २५ पद्मिनीकंटक २६ चिप्प२७ अलस२८ मुखदूषिका २९ ॥ ८७ ॥ कच्चा

२ पृथापरिकीर्तिता ८६ पृथग्दोषैस्त्रयोद्वंद्वै स्त्रिविधासप्तमोसृजः।
अष्टमःसन्निपातेन क्षुद्रकुसुमसूरिका ६० चतुर्दशप्रकारेण त्रिभि
र्दोषैस्त्रिधाचसा । द्वन्द्वजात्रिविधाप्रोक्ताः सन्निपातेनसप्तमी ६१
अष्टमीत्वग्गताज्ञेयानवमीरक्तजामता। दशमीमांसजाख्याताचत-
स्त्रोन्याश्चदुस्तरा।ःमेदोस्थिमज्जाशुक्रस्थाक्षुद्ररोगाइतीरिता ६२

३० वृषणकच्छ ३१ गंध ३२ पाषाणगर्दभ ३३ राजिक ३४ व्यंगक है बागके चारिभेद हैं ॥ ८८ ॥ वातज पित्तज कफज रक्तज ३८ विस्फोटक आठ प्रकारका है परन्तु क्षुद्ररेखाकी गिनतीमें है वात विस्फोटक पित्त वि० कफ वि० वातपित्त वि० कफपित्त वि० वातकफ वि० रक्तविस्फोटक सन्निपातवि० ॥८६॥ मसूरिकारोगभीक्षुद्रसंज्ञक है तिसके चौदह भेद हैं ॥ ६० ॥ वात मसूरिका पित्तमसूरिका कफ म० वातपित्त मसूरिका कफपित्त मसूरिका वातकफ म० त्रिदोष मसूरिका ॥ ६१ ॥ त्वचा म० मांस म० इससे परे चारि अति कठिन हैं मेदमसूरिका मज्जा म० अस्थिम० धातु म० ॥ ६२ ॥ अस्यलक्षणं जो पिडिकी पकिके गाढ़ा या पतला पानी सी बहै फिरि सूखिके त्वचा कठोरहो फटिके रुधिर बहै उसे शर्करार्बुद कहते हैं जो एक फुंसी उठै उसके नीचे और छोटी २ बहुत फुंसी हों वह इन्द्रवृद्ध है जो पिडिकी कानके भीतर हो उसे पनसिका कहते हैं जो गूलर सदृश हो घेरा अधिक बढ़ावै दाह विशेष करै उसे निष्टता कहते हैं जिस फोड़ेका मुंह न देख परै अति ऊंचा अधिक घेर बांधै वह अंधालजी है जो शरीरमें गांठि सी कठिन उभरै बूढ़े दांतके रंग पीरहो खजुआय वह बराहदंष्ट्रा है जो पिडिकी बुल्लासी होके बीच में खाली हो किनारे सुह करिके बहै वह बल्मीक है जो पिडिकी बहुत कड़ी कटोरीकी पेंदी समान हो उस पिडिकी को कच्छपिका कहैं जो देहमें तिल समान हो देहसे ऊंचा न हो पीड़ा न करै उसे तिलकालक कहैं जो बटिया सम ऊंचीहो लाल रंग उसमें और पिडिकी निकलै पीड़ा करै वह गर्दभिका है जो फूलके पकै फूटै नहीं खजुरी हो वह रकसा है जो यव समानहो तो यवप्रख्या है जो कांख या छाती या आंड संधिमें पताल में कोठा सी हो वह बिदारिका है जो हाथ पांयमें कांटा लगिके

उसी ठौर गांठि परि रहि जाय उसे कदर कहैं गुखरू है जो देह में उरद सदृश निकलिके रहिजाय पीड़ा न करै उसे मसक कहिये मस्सा है जो देहमें अनायास खाल कालीपरजाइ उभरैनहीं और कोई बिकार न करै उसे नालिका कहते हैं लहसुन है जो देहमें सूजन होइके टेढ़ीमेढ़ी लम्बी सर्पाकार फूलिके नसजाल परिजाइ और खान हो अजाय उसे जालगर्द्दभ कहते हैं जो बटिया सी होतही अति पीड़ा उत्पन्न करै उसे बल्लिका कहैं जो देहमें देहके रंग ऊंचाहो पीड़ा न करै औ जन्मते हो उसे जतुमणि कहते हैं और आचार्यचिन्ह कहते हैं जिसके मलत्याग समय कांच निकल आवै उसे गुदभ्रंश कहतेहैं काखकहैं बगलमें मांसमें जाला समान होके फोड़ा होताहै अन्तरदाह होके ज्वर आताहै सो दशपांच दिनमें मनुष्यको मार डालता है वह अग्निरोहिणी है जिस रोगमें मलमार्ग की बाईं नस रक्तको कोप करिके मोटी परिके मलमार्गको संकीर्णकरै तो मलगाढ़ा औ मोटा बहुत क्लेशमें गिरै वह सन्निरुद्धगुदहै कफपित्त औ रक्तकोकोप करिके लाललालचकत्ता शरीरमें परते हैं बहुत खजुरी करते हैं च्चणमें होइ च्चणमें मिटै इसे रक्तपित्ती कहतेहैं नख लगिके देहमें नकोटो जाइ उसे कुनख कहैं जो पांयमें छोटी पिडिकी होके पकै फूटै सूजन हो सो अनुसाया है जो पीली बटिया हो खजुआइ उसमें कांटा समान हो वह पद्मिनी कण्टक है जो अग्निवाय के झलका परै अथवा न च्चत पकै फूटै उसके चेप लगे से उत्पन्न हो या आम्रादिक की चेप लगे पकजाय उसे चिप्प कहतेहैं जो पैर या हाथके गावा ते पानी या खराब कीचड़ या कोई बिष या कोई बिषमिश्रित माटी या बिषधर कीट जन्तुके स्थानकी माटी या भल्लातादि वृक्ष तरे की माटी सड़िके स्पर्शसे सड़िजाय और बहुत खजुरी करै उसे अलस कहैं खवा हैं और जो जठानीमें मुखपर कांटे कांटे से बहुत होजातेहैं टोवने से खराते हैं और गड़ते हैं वह मुखदूषिका है लोग उसे मुहासा कहते हैं जो बगलमें छोटी २ फुन्सियां परजाती हैं उसे कच्छा कहते हैं जो गण्डकोशकी जड़ पर छोटी २ पिडिकी हो वह गर्दभ है जो शरीरमें राईके समान फुंसियां परजायँ उसे राजिका कहते हैं कुदैया कहते हैं वायुपित्त कुपित्त हो मुह पर जाइ चमड़ा काला करै औ पतला करै उसे व्यंग कहैं झाईं है

विसर्परोगानवधावातपित्तकफैस्त्रिधा । त्रिधाचद्वन्दभेदेनसन्निपा-
तेनसप्तमः । अष्टमोवन्हिदाहेननवमश्चाभिघातजः ६३ तथैकः
श्लेष्मपित्ताभ्या मुदर्दःपरिकीर्त्तितः । वातपित्तेनचैकस्तु शीतपित्ता
मयःस्मृतः ६४ अम्लपित्तंत्रिधाप्रोक्तं वातेनश्लेष्मणातथा । तृतीयं
श्लेष्मवाताभ्यां वातरक्तंतथाष्टधा ६५ वाताधिक्येनपित्ताच्च क-
फाद्दोषत्रयेणच । रक्ताधिक्येनदोषाणां द्वन्देनत्रिविधंमतं ६६

औ आठ बिस्फोटक शीतलाके भेदमें हैं सो क्षुद्ररोग की गनतीमें
हैं औ चौदह मसूरिका ये भी शीतलाके भेदहैं क्षुद्रगनीहै ॥६२॥
बिसर्पि रोग के नव भेद है बातबिसर्प पित्त बि० कफ बि० बात
पित्त बि०कफ बातबि०कफ पित्तबि०सन्निपातबि०अग्निदग्धबि०
ताड़नाबि० ॥ अथास्यलक्षणं जिसमें बात ज्वरके लक्षणकंप बिषम
वेगादिक होकै सूजन हो औ चमक शूल कोचन हो फूटै सो बात
बिसर्पिहै जिसमें पित्त ज्वरके लक्षण हों औ सूजन दाह युक्तलाल
रंग हो वह पित्त बिसर्प है जिस में कफ ज्वर के लक्षण हों औ
चिकनी हो खजुआय सो कफ बिसर्पि है औ द्वंद्वज में जिन दुई
दोषोंके लक्षण मिलैं सोई द्वंद्वज बिसर्पि जानों जिसमें तीनों दोष
के लक्षण हो वह सन्निपात बिसर्पि है जो बिसर्पि आगिले जलने
से हो उसके पित्त बिसर्पिके लक्षण होतेहैं वह वन्हिदाह बिस-
र्पि है जो घाव लगेसे हो वह अभिघात बिसर्पिहै॥६३॥श्लेष्म बायु
करिकै उदर्द रोग होताहै औ बातपित्त करिकै शीत पित्त रोग
होताहै कफ बायु के कोपकरिकै शरीर में लाल २ छोटे बड़े च-
कत्ते परते हैं औ बहुत खजुआतेहैं उसेउदर्द कहतेहैं जोबात पित्त
के कोप करिकै होता तो पीड़ा अधिक खाज कम करता है उसे
शीत पित्त कहते हैं और ज्वर उबकाई औ दाह लक्षण आदि
युक्त होते हैं यह दोनों एकही भेद मेंहै॥६४॥अम्ल पित्त रोग के
तीन भेदहैं बातअम्लपित्तकफ अम्लपित्त कफबातअम्लपित्त ये
बिरुद्ध भोजन औ दुष्टान्न भोजन करनेसे होते हैं या बासी औ ज-
ले अन्न के भोजन करने से पित्त कुपित्त हो कै खट्टी डकार लाताहै
औ अहार का परिपाक अच्छी तरह नहीं होता उसे अम्ल
पित्त कहते हैं ॥६५॥ औ बात पित्त आठ प्रकार का है जिसे बात

अशीतिर्वातजारोगाः कथ्यन्तेमुनिभापिताः । आक्षेपकोहनुस्तम्भ उरुस्तम्भश्शिरोग्रहः ९७ वाह्यायामोन्तरायामः पार्श्वशूलंकटिग्रहः । दण्डापातनकःखल्ली जिह्वास्तम्भस्तथार्दितः ९८ पक्षाघातःकोष्ठशीर्षं मन्यास्तम्भश्चपंगुता । कलायखंजतातूनी प्रतितूनीचखंजता ९९ पादहर्षोगृध्रसीच विश्वाचीचापवाहकः । अपतानोत्रणायामो वातकंठोपतंत्रकः १०० अङ्गभेदोङ्गशोषश्च मिन्मिनत्वञ्चगद्गदः । प्रत्यष्ठीलाऽष्ठीलिकाचवामनत्वञ्चकुब्जता १ अङ्गपीड़ाङ्गशूलश्च सङ्कोचस्तम्भरुक्षता । अङ्गभगोङ्गविभ्रंशो विड्ग्रहोवद्धविट्कता २ मूकत्वमभिजृम्भास्या दत्युद्गारोंत्रकूजनं । वातप्रवृत्तिःस्फुरणं शिराणाम्पूरणंतथा ३ कंपःकार्श्यंशून्यताच प्रलापःक्षिप्रमूत्रता । निद्रानाशःस्वेदनाशो दुर्वलत्वंवलक्षयः ४ अतिप्रवृत्तिःशुक्रस्य कार्श्यंनाशश्चरेतसः । अनवस्थितचित्तत्वं काठिन्यंविरसास्यता । कषायवक्रताध्मानं प्रत्याध्मानंचशीतता ५

रक्त में वायु विशेष है वह वातजवातरक्त है जिसमें पित्त अधिक है वह पित्तवातरक्त है औ जिसमें कफ अधिक है वह कफजवात रक्त है जो तीनों दोष के लक्षण हों तौ त्रिदोषज वातरक्त है जिसमें रक्त अधिक हो वह रक्तजवातरक्त है औ तीनि द्वंद्व में जो दोष मिश्रितहो सो जानिये वातपित्तज वातकफज कफ पित्तज ये आठ प्रकारके वातरक्त हैं ॥९६॥ वातरोग अस्सी प्रकार के ऋषिलोग कहिगयेहैं आक्षेपक हनुस्तंभ शिरोग्रह ॥९७॥ वाह्यायाम अंतरायाम पार्श्वशूल कटिग्रह दंडापातनक खल्ली जिह्वास्तंभ आर्दित ॥९८॥ पक्षाघात कोष्टशिरसमन्यास्तंभ पंगुताकलायखंजता तूनी प्रतितूनी खंजता ॥९९॥ पादहर्ष गृध्रसी विश्वाचीअपबाहुकअपतान व्रणायाम वातकंठ अपतंत्र ॥१००॥ अंगभेद अंगशोष मिन्मिन रूक्षता प्रत्यष्ठीला अष्ठीलिकावामनत्वकूबड़ ॥१॥ अंगपीड़ा अंगशूल संकोचस्तंभ रूक्षता अंगभंग अंगविभ्रंस बिट्ग्रह बद्धबिट्कता ॥२॥ मूकत्व अतिजृंभाअत्युद्गारअंत्रकूजन वातप्रवृत्तिस्फुरणशिरापूरण ॥३॥ कंपकार्श्य शून्यता प्रलाप क्षिप्रमूत्रनिद्रानाश स्वेदनाशदुर्बलत्व

रोमहर्षश्चभीरुत्वं तोदकंडूरसाज्ञता । शब्दाज्ञताप्रसुप्तिश्चगंधाज्ञत्वंदृशःक्षयः ६ ॥ इतिवातजरोगगणना ॥

बलक्षय॥४॥शुक्रातिप्रवृत्ति शुक्रकार्श्य शुक्रनाश अनवस्थितचित्त काठिन्य विरसास्यता कषाय वक्त्रता अध्मान प्रत्यध्मान शीतता ॥५॥ रोमहर्ष भीरुत्व तोदकंडू रसाज्ञता शब्दाज्ञता प्रसुप्ति गंधाज्ञत्व दृशक्षय ॥ ६ ॥ अस्यलक्षणं जिस वायुमें हाथी के सवार की नाईं बारबार झूलै वह आक्षेपक हैं १ जिसमें ठोढ़ी अकड़कै मुख खुलारहै वह हनुस्तंभ है २ जिसमें कूलेकी नसें जकड़कै निर्बलहो चल न सकैं वह उरुस्तंभ है ३ जो माथेकी शिराकहे नसै निस्तेज होकै मस्तक में पीड़ाकरै वह शिरोग्रह है असाध्य है ४ पीठउभरकै जो मनुष्य धन्वाकार होजाय वह बाह्यायाम है ५ जोछाती ऊंचीहोकै धन्वाकार होजाय वह अंतरायाम है ६ जो पसुरी में पीड़ाकरै वह पार्श्वशूल है ७ जो कमर जकड़ जाय वह कटिग्रह है ८ जो देह दंडाकार होजाय वह दंडपातनक है ९ जिस वायुमें पांव या जांघ घुटना नितंब से औ कमर में अधिक पीड़ा हो वह खल्लीहै १० जो वायु जीभकी नसतान ले भोजन मुह में कठिनता से लियाजाय वह जिह्वास्तंभ है ११ जो वायु आधा मुहको फेरदे माथाकांपै जीभसे बोला न जाय दृष्टि तिरछी होजाइ वह आर्दित है १२ जो आधा अंग निर्बल होजाय वह पक्षाघात कहैं अर्धांग १३ जो गोडकी टिझनी सूजजाय स्यार कैसा मूड़ हो वह कोष्टशीर्ष कहैं सिवाय मुंडहैं १४ जिससें घींच तन जाइ मस्तक इतउत न डुलै वह मन्यास्तंभ है १५ जो वायु कूलेकी मोटी नसों को मानिले पांवको फैलने सिकुड़ने न दे वह पंगु हैं १६ जो वायु मनुष्यके शरीरकी चाल खंजरीट की नाईं करदे चलने में कांपै पांव इधर उधर परै वह कलाप खंज है १७ जो वायु गुद औ इंद्री में चिलक उत्पन्न करै वह तूणीहै १८ जोगुद लिंगमें चिलक उत्पन्न करिकै मूत्र मलाशय ताईं चुभै सो प्रत्यूणी है १९ जिसमें पंगु वायु के लक्षण हों पर एकै पांव लंगड़ा करै वह खंजहै २० जो पैर में झुझनी करै वह पादहर्ष है २१ जिसमें पीठकमर कूला चूतर जांघपैर इनमें उठने बैठने में क्लेशहो तौ गृध्रसी है २२ जो वायु हाथ औ कान की नसै

तानिकै हाथ ऊपर न उठनेदे वह विश्वाची है २३ जिसमें वह वाहनतिजाइ वह वाङ्क है २४ जो वायु हृदय में प्रवेश करि ज्ञानको नष्टकरै दृष्टिरोकै कंठशब्द विलक्षण करै कभी सावधान कभी अचेत रहै स्थिर चित्त नर है वह अपतानक है२५जो वायु चोट लगिकै घाव औ पीड़ाकरै वह व्रणायाम है २६ जिस में चलने के श्रमसे या ऊंचेनीचे पैरपरै या टेढ़ापरने से वायु घुटनों में उतरिकै सूजन औ पीड़ा उत्पन्न करै वह वातकंटक है २७ जो वायु ऊर्ध्वगति होकै हृदय मस्तक कंध वा देह में पीड़ाकरै औ धनुषाकार करिकै दृष्टि को रोकै कबूतर की नाईं बोलै मोह में पड़ैवह अपतंत्रहै २८ जो सब शरीरमें पीड़ा करै तौ अंगभेद है २९ सब शरीर को शोषैसो अंगशोषहै३० जोमिन मिनायके बोलै वह मिन्मिनत्व है ३१ जिसमें कंठ से स्पष्ट शब्द न कढ़ै वह ऊष्णता है ३२ जो नाभिके नीचे ऊंचा पत्थरसा करदे औ मल मूत्र निरोध करि पेटमें गांठि गांठिसा परिकै मंदमंद पीड़ाकरै वह अष्ठीलिका है ३३ जो अष्ठीलिका की नाईंगांठि टेढ़ी सूधी लंबोहो अधिक पीड़ादे वह प्रत्यष्ठीलिका जानोजो पेटमें गांठि२ सी सरिकै मंद मंद पीड़ाकरै वह अष्ठीलिका है ३४ जो वायु गर्भाशय में प्रवेश करि गर्भको संकुचित करै तौ बालक छोटा उ-त्पन्न हो वह बावन है ३५ जो वायु दुष्टहो छाती पीठ को सं-कुचितकरै वहकुब्जहै ३६जिसमेंसब अंगमें पीड़ाहोवह अंगपीड़ा है ३७ जिसमें शरीर विषेसूजासा गड़ै वह अंगशूल है ३८ जो सर्वांगको संकुचित करै वहसंकोचहै ३९ जोदेहको क्षीणकरै वह स्तब्धहै ४० जो देह में रुखाई करै वह रूक्षहै ४१ जिसे कभी कोई अंग शिथिल हो कभी कोई वह अंग भंगहै ४२ जो देह को काष्ठवत् अचेतकरै वह अंग विभ्रंसहै ४३ जो मल निरोधकरि अच्छी तरह न गिरनेदे वह विट्ग्रह है ४४ जो पक्वाशय में जो मल खिडें औ भिन्न२ पिंडिसेकरै वह बद्ध विटकता है ४५ जो वायु शब्द निरोध करै वह मूक कहैं गुंगहै ४६ जो अति जंभु-आई लावै वह अति जृंभहै ४७ जिसमें अधिक डकारै आवैं वह अत्युद्गारहै ४८जो वायुआंतमें प्रवेश करिबोलै वहअंत्रकूजनहै ४९ जो अति उत्सर्ग करै अर्थात् गुदासे अधिक निकरै वहवातप्र वृत्तिहै ५० जो शरीर जहां२ फरकै वह फुरण है ५१ जो जहां

अथपित्तजारोगा श्चत्वारिंशदिहोदिताः । धूम्रोद्गारोविदाहःस्यादुष्णांगत्वंमतिभ्रमं ७ कांतिहानिष्कंठशोषो मुखशोषोल्पशुक्रता ८ तिक्तास्यताम्लवक्त्रत्वंस्वेदस्रावोंगपाकता । क्लमोहरितवर्णत्व मतृप्तिःपीतकायता ९ रक्तस्रावोंगदरणं लोहगंधास्यता

तहां नसों को फुलावै वह शिरापूर्ण है ५२ जो सब देह कँपावै वह कंपवायु है ५३ शरीर को जो दुर्बल करै वह कार्श्य है ५४ जो शरीर श्याम करै वह श्यामता है ५५ जिसे मानुष असंभव बोलै वह प्रलाप है ५६ जो मूत्र वारवार आतुरता से होतौ क्षिप्रमूत्र है ५७ जिसमें नींद न आवै वह निद्रानाश है ५८ जो पसीना निकरै वह स्वेदनाश ५९ जो शरीर को दुबला करै वह दुर्बलत्व है ६० जो वायु शुक्रमें प्रवेश करि फारिकै बहावैवह शुक्रातिप्रवृत्ति है ६१ जो बलको घटावै वह बलक्षय है ६२ जो धातुको किंचित्क्षीणकरै वह शुक्रकार्श्य है जो चित्तको स्वस्थ न रक्खै वह अनवस्थितचित्तत्व है ६३ जो धातु को अति क्षीण करै तौ शुक्रनाश है ६४ जो देहको कठोर करै वह काठिन्यहै ६५ जिसमें जीभ का स्वाद न मिलै वह विरसास्य है ६६ जो जीभ ऐंठजाय वचन न कहिसकै वह वायुकषायवक्त्रताहै ६७ जो वायु पक्वाशयमें जाय पेटफुलाय गुड़गुड़ करैवहआध्मानहै ६८ जो वायु आशय में जाइ कफसे मिलिपेट फुलाइपीड़ाकरैवह प्रत्याध्मानहै ६९ जो शरीरको ठंढाराखै वहशीतताहै ७० जिसमें वारवार रोमांच हो वह रोमहर्षण है ७१ जो भय उत्पत्ति करै वह भीरुत्वहै ७२ जो देह में सुईसी चुभै वह भेदहै ७३ जो खाज उत्पन्न करै वह कंडूहै ७४ जिससे मधुरादिक रसका स्वाद न मिलै वह रसाज्ञात है ७५ जिससे कानसे सुन न परै वह शब्दाज्ञात है ७६ जिसमें त्वचा पर हाथधरे स्पर्शकपरैसो प्रसुप्तिहै ७७ जिसमें गंधज्ञान न हो वह गंधाज्ञात है ७८ जिसमें दृष्टिसे सूझैनहीं वह दृष्टःक्षयहै ७९ ॥

वापित्त जनित चालीस रोगहैं धूम्रोद्गार१ बिदाह उष्णांगमतिभ्रम ॥ ७ ॥ कांतिहानि कंठशोष अल्पशुक्रत्व ॥ ८ ॥ तिक्तास्य अम्लवक्त्रस्वेदस्राव अंगपाकत्व क्लम हरितवर्णत्व अतृप्ति पीतकाय ॥ ९ ॥ रक्तस्राव अंगदरण लोहगंधास्य दौर्गंध्य पीतमूत्रता अरति पीत विट्कता ॥ १० ॥ पीतावलोक पीतनेत्रता पीतदंतता शीतेच्छा

तथा । दौर्गंध्यंपीतमूत्रत्व मरतिःपीतविट्कता १० पीतावलोक-
नंपीत नेत्रतादन्तपीतता । शीतेच्छापीतनखता तेजोद्वेषोल्प
निद्रता ११ कोपश्चगात्रसादश्च भिन्नविट्कत्वमंधता । उष्णो
च्छ्वासत्वमुष्णत्वंमूत्रस्यचमलस्यच १२ तमसोदर्शनंपीतमण्ड-
लानांचदर्शनं । निःसरत्वंचपित्तस्य चत्वारिंशद्रुजःस्मृताः १३

पीतनखता तेजोद्वेष अल्पनिद्रता ॥ ११ ॥ कोप गात्रसाद भिन्नविट्-
कता अंधता उष्णोच्छ्वास उष्णमूत्रता उष्णमलता ॥ १२ ॥ तमो
दर्शनपीतमंडलदर्शन निःसरत्वेतिये चालीसरोगपित्तसंभवहैं १३ ॥
अस्यलक्षणं जिसे पित्त कोप से धुआंसी डकार आवै वह धूमोद्गार
है १ जोअति दाहकरै वह विदाह २ जोदेह गरमरहै वह उष्णांग
है ३ जो बुद्धि थिर नरहै कभी कुछसमझै कभीकुछ न समझैवह मति
भ्रमहै ४ जो चेष्टा मलिनकरैवह क्रांन्तिहानि है ५ जो कंठ सुखावै
वह कंठशोष है ६ जो शुक्रक्षीणकरै स्त्रीप्रसंगमें बिनाशुक्रपात शि-
थिलहोजाय वह अल्पशुक्रहै ७ जो मुख कडुवारहै वह तिक्तास्यहै
८ जो मुख खट्टारहै तौ अम्लवक्त्र है ९ जो पसीना अधिक आवै
वह स्वेदस्रावहै १० पांच कुपित्त दुष्ट हो अंग पकाता है वह अंग
पाक है ११ जो ग्लानि से अनेक पदार्थ ग्रहण करते भ्रमै वह
क्लम है १२ जिसमें देह हरित हो वह हरितवर्णत्व है १३ देह
पीली पर जाय वह पीत कायता है १४ जिस पित्त के कोप से
भोजन करने से तृप्ति न होइ वह अतृप्ति है १५ जिसमें मुखादि
मार्ग से रक्त गिरै वह रक्तस्राव है १६ जो शरीर में त्वचा चटक
जाव वह अंगदरण है १७ जो लोहा घिसने से वा लोहा सड़ाय
कसीस बने तिस कैसी बास आवै वह लोहगंधास्य है १८ जोदेह
में दुर्गंधि आवै वह दौर्गन्ध्य है १९ जिसमें मूत्र पीला आवै
सो मूत्र है २० जिससे सर्ब पदार्थ में चित्त न चलै वह अरतिहै २१
जिस के मल पीला आवै वह पीतबिटकत्व है २२ जिसमें सब प-
दार्थ पीले देख परैं वह पीतावलोक है २३ जिससे आंखि पीली
परजाय वह पीत नेत्र है २४ जो दांत पीले होजाय वह पीतदंत
है २५ जो ठंढी चीज पर इच्छा चलै वह शीतेच्छा है २६ जोपीले
नख होजायं तौ पीतनख २७ जो तेजमय चीज देखि अच्छी न

इतिपित्तजरोगगणना ॥ कफस्यविंशतिःप्रोक्ता रोगास्तंद्रा तिनिद्रता । गौरवंमुखमाधुर्य्यंमुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावा लोकनंश्वेत विट्कत्वंश्वेतमूत्रता । श्वेतांगवर्णताशैत्य मुष्णेच्छा तिक्तकामिता १५ मलाधिक्यंचशुक्रस्य वाहुल्यंवहुमूत्रता । आलस्यंमंदवुद्धित्वं तृप्तिर्घुर्घरवाक्यता । अचैतन्यंचगदिताविं-शतिःश्लेष्मजागदाः१६ ॥ इतिकफजरोगगणना ॥

लगै वह तेजोद्वेष है २८ जो निद्रा कम आवै वह अल्पनिद्रा है २९ जो क्रोध अधिक हो वह कोप है ३० जो देह पीड़ित करै वह गात्रसाद है ३१ जो मल फटकैफुट कैसा हो वह भिन्न विट्का है ३२ जो दृष्टि नाश करै वह अंधता है ३३ जो उष्ण श्वासाआवै सो उष्णोच्छ्वास है ३४ जो मूत्र अत्युष्ण हो वह उष्णमूत्रत्व है ३५ जो मल अत्युष्ण गिरै तो उष्णमलत्व है ३६ जो उंधेरे में अंधेरा जान परै वह तमोदर्शन है ३७ जो देह में पीले रंग ठौरठौर देखपरै वह पीतमंडल है ३८ जो देखने में पृथ्वी पर कहीं कहीं पीलेधब्बे से देख परैं वह पीत मंडल दर्शन है ३९ जो पित्त मुख से वा मल मार्ग से गिरै वह निस्सरत्व है ४० बीस रोग कफसंभव हैं तन्द्रा कफ अतिनिद्रा गौरव मुखमाधुर्य मुखलेपप्रसेक ॥१४॥ श्वेतावलोकन श्वेतविट्कत्व श्वेतांगवर्णता उष्णेच्छातिक्तकामिता ॥ १५ ॥ मलाधिक्य शुक्रबाहुल्य बहुमूत्रताआलस्य मंदबुद्धित्वतृप्ति घुर्घरवाक्यता अचैतन्य येबीस प्रकारके कफरोगहैं अस्यलक्षणं जिसमेंआंखें झपी रहैं निद्रानपरै वह तंद्रा है जो निद्रा विशेषहो तौ अति निद्रा है जो शरीरभारी रहै वह गौरवहै जो मुखमें गुड़का स्वाद बना रहै वहमुखमाधुर्य जो मुखमें लसलसाहट हो तौ मुख लेप जो लारगिराकरै तौ प्रसेकहै जो सर्वत्र श्वेत देखपरै तो श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मल गिरै तौ श्वेतविट्कत्व है जो मूत्रश्वेत हो तौ श्वेतमूत्र है जो शरीर श्वेत हो तो श्वेत मार्गवर्णत्व है जो देह ठंढीबनी रहै तो शैत्यता है जो उष्ण पदार्थ पर इच्छा रहै तौ उष्णेच्छाहै जो कटु पदार्थ पर चित्त चलै तो आलस्य है मंद बुद्धि होजाय तौ मंदबुद्धि है सूक्ष्माहार से तृप्ति हो तौ तृप्तिहै जो बोलने में गला घर्घराय तौ घर्घर वाक्य है मंदचेतना हो तौ अचैतन्य है॥ १६ ॥

रक्तस्यचदशप्रोक्ता व्याधयस्तेपुगौरवं । रक्तमण्डलतारक्तने-त्रत्वंरक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठीवनारक्त पिटिकानांचदर्शनं । औष्ण्यं चपूतिगंधित्वंपीड़ापाकश्चजायते १८ चतुस्सप्ततिसंख्याता मुख रोगास्तथोदिताः । तेष्वोष्टरोगगणिता एकादशमिताबुधैः । वात पित्तकफैस्त्रेधा त्रिदोषैरसृजास्तथा १९ क्षतंमांसार्बुदंचैव खंडौष्ठ स्वगलार्बुदं । मेदोर्बुदंचार्बुदंच रोगाएकादशौष्टजाः २० दंतरोगा दशाख्याता दालनःकृमिदंतकाः । दन्तहर्षकरालश्च दन्तचालश्च शर्करा २१ अधिदन्तःश्यावदन्तो दन्तभेदःकपालिका । तथात्र-योदशमिता दन्तमूलामयास्मृताः २२ शीतादोपकुशौद्यौतु दन्त

रक्तविकारसे दश भांतिके रोगहैं गौरवरक्त अंगलरक्त नेत्वरक्त मूत्रता ॥१७॥रक्तष्ठीवनरक्तपिटिकादर्शन जोउष्णतेहैं पूतिगन्धित्व पीड़ा पाक ये दश रोग रक्तजन्य है इनके नामहीं सदृश लक्षण हैं ॥१८॥ अब मुखके जो चौहत्तर रोगहैं सो कहताहूं तिसमें ग्या-रह ओष्ठरोग पण्डित कहते हैं वातसे पित्त से कफ से त्रिदोष से रक्तसे॥ १९ ॥ क्षत से मांसार्बुद खण्डौष्ठ जलार्बुदमेदार्बुद अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला पर जाइ गांठि परै पीड़ा करै तन फूटै फटै वा खाल उखड़ै तौ वातज है जो छोटी फुन्सियां परैं पीड़ा दाहहो पीली परै पक जाय तो पि-त्तज है जो ओष्ठश्वेत कुछक पीड़ायुक्त पिटिकी हो ठण्ढे रहैं तो कफज है जो ओठ पिडिकी पीड़ा सहित हों कभी श्वेत कभी का-ला पीलाहो सो त्रिदोषज है जो ओष्ठ खजूरफलके रंगहों फुन्सी युक्त रक्त बहै मांसकी गुत्थी निकसै ओठ में कृमि उत्पन्न हों यह रक्तज ओष्ठ है जब ओठ में क्षत लगे से खजुआय पकै घाव परै वह क्षतहै मांस दुष्ट होके ओठ मोटाहो मांस पिण्ड सा हो सो मां-सार्बुद हैं जिसमें ओठ फटके बहै वह खण्डौष्ठ है जो मांस पिण्ड सा मोटाहो पानीसा बहै सो जलार्बुद है जो ओष्ठश्वेत रहै श्वेत पानी बहै सो मेदार्बुद है ओठमें फकत गांठि परिजाय वह अर्बुद है ॥२०॥ दशदन्तरोगकहतेहैं दालन कृमिदन्तदन्तहर्षकरालदन्त चालशर्करा ॥ २१ ॥ अधिदंतश्यावदंत दंतभेद कापालिका ये दश दंतरोग हैं अस्यलक्षणं॥ जो दंत टीसैं सो दालन हैं जो दांत कृमि

विद्रधिपुप्पुटौ । अधिमांसोविदर्भश्च महासुखिरसौखिरौ २३ तेष्वेवगतयःपंच वातात्पित्तात्कफादपि । सन्निपाताद्गतिश्चान्या रक्तनाडीचपंचमी२४तथाजिह्वामयाःषट्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा। अलसस्यचतुर्थःस्यादधिजिह्वाचपंचमी । षष्ठीचैवोपजिह्वास्यां त् तथाष्टौतालजागदाः २५ अर्बुदंतालुपिडिकाकच्छपीतालुसंह-

परने से काले होजायँ पीड़ा करैं सो श्यावदंत है जो ठंढा पानी दांतमें लगे सो दंतहर्ष है जो दांत टेढ़े वकुरे होजायँ तो करालहै जो दांत हलैं तो दांतचालन है जो दांतमें मैल जमके खरखराहट हो सो शर्करा है जो दंत के तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करै वह अधिदंत है पित्तकोप से दांत काला नीला होजाय वह श्यावदंत है जो दांत हलके पीड़ा करै औ फटके बाहर बटिया सी पड़जाय वह दंतभेद है जो दांत से परत उखड़ै वहकापालिका है दंतमूल रोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होताहै ॥ २२ ॥ तिन तेरहके नाम शीताद उपकुश दंतविद्रधि पुप्पुट अधिमांस विदर्भ महासुखिर सौखिर॥ २३॥ इसमें वातादि दोषसेदंतनाड़ीरोगपांचप्रकार काहै वातनाड़ी पित्तनाड़ी कफ नाड़ी सन्निपातनाड़ी रक्त नाड़ी येतेरह दंतमूलरोगहैं अथास्यलक्षणं॥ जो मसूढ़ा फटिजाय रक्तदे तो शीताद है जो मसूढ़ामें दाह होय पकै दांत हलै पीर क्रमहो रक्त बहै फूलै मुखमें दुर्गंध आवै वह उपकुश है जो मसूढ़ा बाहर वा भीतर सूजै पिराय रुधिरपीव देइ सो दंतविद्रधिहै जो दोतीन दांत का मसूढ़ा विशेष फूलै वह पुप्पुट है जो चौहड के मसूढ़ा में पीड़ा अधिक हो वह अधिमांसहै जोमसूढ़ा दांत गिरानेके लिये दांत रगड़ा करै वा व्रण उत्पन्न करै वा सूजन विशेष उत्पन्न करै दांत हिलावै वह विदर्भ है जिस मसूढ़ा में दांत हिलै औ तालु फटिजाय औ मसूढ़ा गलिजाय वह महासौखिर है जो मसूढ़ा पिरायके सूजै लार बहावै वह सौखिर है जो मसूढ़ामें फोड़ा होके पकै फूटै और पोलापर दुर्गन्धआवै लांबीनाड़ीसो दाबनेमें समुझ परै वह नाड़ीहै यहि नाड़ीमें जिस दोषका अधिकार जानिपड़ै वह वही नाड़ी जानिये ॥ २४ ॥ जिह्वारोग-जीभमें छः प्रकारके रोगहैं वातजन्य पित्तज कफज अलस अधिजिह्वा उपजिह्वा ये छः नाम हैं अथास्यलक्षणं जो जीभ फटिकै मधुरादि षट्रस का

तिः । गलतुंडीतालुशोष स्तालुपाकश्चपुप्पुटः २६ गलरोगास्त-
थाख्याता अष्टादशमितावुधैः । वातरोहिणिकापूर्वं द्वितीयापित्त
रोहिणी २७ कफरोहिणिकाप्रोक्ता त्रिदोपैरपिरोहिणी । मेदोरो-
हिणिकावृन्दोगलौघोगलविद्रधिः।स्वरहातुंडिकेरीचशतघ्नीतालु-
कोर्वुदं २८ गिलायुर्वलयश्चापि वाताद्गण्डःकफात्तथा । मेदोगंड
स्तथैव स्यादित्यष्टादशकंठजाः २९ मुखांतःसंभवारोगा अष्टौ

स्वाद परिज्ञान न होय जैसे मारवाड़ देशमें जिह्वा हक्खरखराय तौ वातजहै जो जीभ लाल वा पीली परजाय दाहकरै कांटेपरै सो पित्तजहै जो जीभमें कारे कारे कांटे से उठें औ मोटेहों औ श्वेतजीभ हो तौ कफजहै जो जीभ अपनी जड़कीओर खिंचिजाइ और सूजन अधिकहो औ जड़पकिजाय तौ अलसहै जो जीभकी नोक सम सूजन जीभ होइ पकिकै बहै तौ अधिजिह्वा है असाध्य है जो जीभकी नोकसी सूजन तरेहो औ लालहो खजुआय वह उपजिह्वा जानो ॥ २५ ॥ अथाष्ट प्रकार तालुरोग—अर्बुदतालु पिटिका कच्छपी तालुसंहति गलतुंडी तालुशोष तालुपाक पुप्पुटअस्य लक्षणं तालुके मध्यमें कमलांकुर समान उत्पन्नहो औ रक्तार्बुद के लक्षण मिलैं सो तालुअर्बुदहै जोतनिके सूजै रक्तविकार समपीड़ा दाहहो सो पिटिकाहै जो कछुआ कीसीपीठ सूजआवै धीरधोरी हो सो कच्छपिका है जो तालुके बीचमें लंबी सूजन हो पीड़ाकरै सो तालुसंहति है जो तालुकी जड़ लम्बी मोटी सूजजाय वह गल तुंडी है जो तालु फूलै फटै सो तालु शोष है जो पकिजाइ सो तालु पाक है जो झरबेरी के समान ग्रंथि परिजाइ औ मेदाश्रित हो सो पुप्पुट है ॥ २६ ॥ अथाष्ट प्रकार कण्ठरोग वात रोहिणी पित्त रोहिणी ॥ २७ ॥ कफरोहिणी त्रिदोष रोहिणी वृंदगलौघ गल विद्रधी स्वरहा तुण्डकेरी शतघ्नी तालुक अर्बुद ॥ २८ ॥ गिलायुर्वलय वातगण्ड कफगण्ड मेदागंड ये अठारह प्रकारके कंठज रोगहैं अथास्यलक्षणं जीभ की जड़ के पास चने के सम छोटी हो गले के मार्गको रोध करै इसमें त्रिदोष वा मेद जिसका विशेष लक्षण मिलै वही रोहिणी जानौ पांच रोहिणी तरह और हैं सो बहुत भांति गले के भीतर क्षत गांठि सूजन होंकै कंठ रोध करि पीड़ा

स्यातामहर्षिभिः । मुखपाकोभवेद्वाता त्पित्तात्तद्वत्कफादपि ३० रक्ताच्चसन्निपाताच्च पूत्यास्योर्द्ध्वगुदावपि । अर्वुदंचेतिमुखजाश्चतुस्सप्ततिरामयाः ३१ कर्णरोगास्समाख्याता अष्टादशमिता बुधैः। वातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपाताच्चविद्रधिः । शोथोर्वुदंपूतिकर्णः कर्णार्शःकर्णहल्लिका३२वाधिर्यतंद्रिकाकंडूः शष्कुलीकृमिकर्णकः।कर्णनादःप्रतीनाहइत्यष्टादशकर्णजाः ३३ कर्णपालीसमुद्भू-

करतेहैं और तीनिगंड ऊपर होतेहैं जिसे घेघा कहतेहैं सो तीनों दोषसे होतेहैं जिसका लक्षण मिलै वही प्रधान जानौ ग्रंथ गौरव होनेके कारण इस ग्रंथमें नहीं लिखा ॥ २९ ॥ मुख के अन्तमें आठ प्रकार के रोग हैं ये सब मिलिकै मुखके भीतर चौहत्तर भांति के रोगहैं वातमुख पाक कफ मुखपाक ॥ ३० ॥ सन्निमुखपाक रक्तमुख पाक दुर्गन्ध ऊर्ध्वगुद अर्वुद ये आठ मुखके रोग हैं अथास्य लक्षणं मुखके भीतर चारों ओरफुन्सी होय पीड़ाकरैं उनमें जिस दोष के लक्षण पाये जायं वही मुखपाक जानौ मुखमें फोड़ा होकै दुर्गंधआवैसो दुर्गंधास्यहै मुखके भीतरफोड़ा होके विथर जायसो ऊर्ध्व गुद है मांसकी गांठि उत्पन्न होकै पीड़ाकरै वह अर्वुद है ॥३१॥ वा कर्णरोग अठारह प्रकारकेहैं वातज पित्तज कफज रक्तज विद्रधि ॥ ३२ ॥ कर्णशोथ अर्वुद पूति कर्ण कर्णार्श कर्णहल्लिका वाधिर्यतंद्रिका कण्डू शष्कुलि क्रमिकर्णक कर्णनाद प्रतिनाह ये अठारह नाम कानरोग के हैं अथास्यलक्षणं कानमें शब्द उठै औ पीड़ा हो औ मल सूखिकै पानी बहै तौ वात है जो लाल सूजन होके फटै दुर्गन्ध आवै औ बहै वह पित्तजकर्ण रोग है जो सूजन हो खुजाय औ सद चिकनासा बहै कम सुनै पीड़ाकरै सो कफज कर्णरोगहै जिसमें कुछ पित्त के लक्षण मिलै वह रक्तज कर्ण है जो तीनों दोषके लक्षण पायेजायं वह सन्निपात कर्णहै कानमेंघाव या विद्रधि होकै वा फोड़ा होकै पीप वा रक्त बहै सो कर्णविद्रधि है जो कान में सूजन हो तौ कर्णशोथ है जो कानमें गिलटीसी होकै पिराय तौ कर्णार्वुद है जो दुर्गन्धित पीव बहै तौ पूतिकर्ण है जो चनेकी घेंटीसी हो खजुआइ दाह पीड़ाकरै तौ कर्णार्श है जो कानमें कोईजंतु प्रवेशकरै उसके चलने सेविकल होती है थिर र-

ता रोगाःसप्तइहोदिताः। उत्पातपालिशोपश्चविदारीदुःखवर्द्धनः। परिस्पोटश्चलेहीचपिप्पलीचेतिसंस्मृताः ३४ कर्णमूलामयाःपंच वातात्पित्तात्कफादपि। सन्निपाताच्चरक्ताच्च तथानासाभवागदाः ३५ अष्टादशैवसंख्याताः प्रतिश्यायस्तुतेष्वपि। वातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपातेनपञ्चमः। पीनसःपूतनासश्च नासार्शश्चभ्रंशं क्षवः।नासानाहःपूतिरक्तमर्वुदंदुष्टपीनसं। नासाशोषोघ्राणपाकपुय श्रावश्चदीप्तयः ३६ तथादशशिरोरोगा वातेनार्द्धविभेदकः। शि-

हने से खरिश रहती है इसे कुलिका कहते हैं जो सुनि न परै तौ भेरविर्य है जो कानमें वीन शब्द सा भनभनाहट हो तौ जो कान खजुआय औ कर्णमल सूखजाइ सो गुथ्थीहै पिटिकीहो बहै सो शष्कुली है ग्रंथान्तर में कर्णस्राव कहते हैं जो कानमें कीड़ा पर जाइ सो कृमिकर्ण है जोभेरि मृदंगादि कासा शब्द पूरित रहै तौ कर्णनादहै जो कर्णमलगलिकैबहै तौप्रतिना हहै उस्सेआधासीसी भी होतीहै ॥ ३३ ॥ कर्णपाली रोग सात प्रकारका है उत्पातपाली शोषपाली विदारी दुःखवर्द्धन परिपोट लेहीपिप्पली अथास्य लक्षणं कर्णरंध्रके ऊपर जासूर्पाकारपरदाहै उसेपालीकहतेहैं उसे भारी आभूषण पहिरनेसे वा खजुआनेसे वा दबजानेसे कालपरपकै दाहपीड़ा करै फिर सूजकै लाल होजाइ सोउत्पातहै जो पाली सूखिकै छोटी परिजाइ तौशोष पाली है जो पाली फटिकै खजुआइ सो विदारी है जो कानकी नस छिद जाइ वा बिपरीत छेद होतौ छिद्र बढ़न में सूजै जलन हो पकै सो दुखवर्धन है जो गहिना पहिरने उतारने सेसूजै कालापरै पकैसो परिस्पोट है जो पाली में नन्हीं २ फुंसी हो खजुआय जलन हो सो लेहीहै जो पाली मे वेदनारहित सूजन हो स्तब्ध हो सो पिप्पली है ग्रंथान्तरमें उन्मथ नाम है ॥ ३४ ॥ कर्णमूल पंच प्रकारके हैं वातज पित्तज कफज त्रिदोषज रक्तज अथास्यलक्षणं कान की जड़ के नीचे सूजन को कर्ण मूल कहते हैं बात से पीड़ा पित्तसे दाह कफ से खाजत्रिदोषसे तीनों लक्षणरक्तसे लालदाहसंयुक्त ॥ ३५ ॥ नाक में अठारह प्रकारकेरोग हैं तिसमेंपांचप्रतिश्यायहैं वातप्रतिश्याय पित्तप्र० रक्तप्र० सन्निप्र० पीनस पूतिनासा नासार्शभ्रंशक्षवनासा

रस्तापश्चवातेन पित्तात्पीड़ातृतीयका ३७ चतुर्थीकफजापीड़ा रक्तजासन्निपातजा। सूर्यावर्तसिरःपाकात्कृमिभिःशंखकेनच ३८ तथाकपालरोगाः स्युर्नवतपूपशीर्षकं । अरुंषिकाविद्रधिश्चदारुणांपिडकार्बुदं । इन्द्रलुप्तन्चखलितिः पालितंचेतितेनव ३९

नाह पूति रक्त अर्बुद दुष्ट पीनस नासाशोष घ्राण पाकपुय स्राव दीप्तक ये अठारह प्रकार हैं अथास्य लक्षणंप्रतिश्याय कहै नाक वहना नाकबंद होकेफिर कुछ पानीबहै कंठ तालुओठ सूखजाइ कनपटी में पीर हो सो वात प्रतिश्याय है जो काला पीलापानी बहै सो पित्तप्र०है जो कफ सा श्वेतपानी बहै माथा जकड़ारहै सो कफप्र०है जो रक्त बहै नेत्र लाल होतौ वायुपक्षी रक्तप्र० है जो तीनों दोष मिलै तो सन्निप्र० है जो नाक सूखिकैवैली उखड़ै सुगंध दुर्गंध जान परै श्वास खुरसी आवै तौ पीनस है जो नाक वा मुख से दुर्गंध आवै तो पूतनासाहैं जोमांसकी फुटकी उठआवै तौ नाशार्श है नाकड़ा भी कहते हैं जो प्रथम कफरूधास्त से अनायास गिरै तौ भ्रन्सथु है जो छीक अधिक आवै तो क्षव है जो श्वासावरोध होतो प्रतिनाह है जो अभिघात से रक्तवा पीव बहै तौ पूति रक्त है जो नाक के भीतर खुटियासी परि जाय तौ अर्बुद है जो पीनस से अधिक कष्ट देइ तौ दुष्ट पीनस है इसे पीनस भी कहते हैं जो कष्ट करि खींचने से श्वासा आवै जाय तौ नाशाश्वास है जोनाक फूटिकै ऊपर से पीव बहै तौघ्राणपाक है जो नाकसे पीव बाकनककसा बहै सो पुटस्रावहै जो नाक में दाह होकै देह संतप्त करै तौ दीप्तक है ॥३६॥ माथेके दश प्रकारके रोगहैं अर्द्धावभेद वातज शिरोभिताप पित्तज शिरोभिताप ॥ ३७ ॥ कफजशिरो रक्तज शि० सन्निजशि०सूर्यावर्तशि०पाक कृमिजशि०शंखक ये दश रोग हैं॥३८॥ जो वायु निज कोप वाकफ की सहाय से अर्द्ध मस्तक में निरोध करै तौ चिलक कुठार के प्रहार सम उत्पन्न होती है उसी कनपटी में कान नेत्र ललाट में अधिक पीड़ा करती है तौ वही आंख भी लाल होतीहै सो अर्द्धावभेदकहै उसे आधासीसी भी कहते हैं जो रातिकोव्यथा बढ़ै वह वातजशिरोभिताप है जो मस्तक आरासा चिरै नाकसे श्वास धुआंसी कढ़ै राति को ठंढक रहै सो पित्तजहै जो माथा

तथानेत्रभवाःख्याता चतुर्णवतिरामयाः । तेषुवर्त्मगदाःप्रोक्ताश्च-
तुर्विंशतिसंख्यकाः ४० कृच्छ्रोन्मीलःपक्ष्मघातः कफोत्क्लिष्ट-
श्चलोहितः । रुग्निमेषःकर्दमश्च रक्तोत्क्लिष्टःकुकूणकम् ४१
पक्ष्मशेषश्चरोधश्च पित्तोत्क्लिष्टश्चपोथकः । कृष्णवर्त्माचबहलः
पक्ष्मोत्संगस्तदार्बुदः ४२ कुम्भिकासिकतावर्त्म लगणोञ्जन

भारी हो बंध जाय मुंह पर भरभराहट हो सो कफज है जो पित्त लक्षण युक्त माथा अति उष्ण रहै हाथ से छुआ न जाय सो रक्तज शिरोभिताप है जो तीनोंदोष पाये जावें सोसन्निशिरोभिताप है जो सूर्योदय से भौंह औ आंखि में पीर बढ़ती जाय औ दुपहर से दिन उतरते उतरती जाय सो सूर्यावर्त है जो क्षयेका रुधिर वा चरबी क्षय होजाय तौ छींक बहुत आवै पीड़ा करै सो शिरपाक है जो मस्तक में कृमि परै तो भाला सा कोचै माथे की मज्जा चर लेती है जो कनपटी में अति पीड़ा हो सूजन हो तौ पित्त वायु रक्त कोप से शंखक होता है सो विष सदृश माथा गला निरोध करि तीन दिन में प्राण हरलेता है इसमें वैद्य तीन दिन बीत जाने पर चिकित्सा करते हैं॥३८॥अथवा पाल रोग नव प्रकार है उपशीर्षक अरुंषिका विद्रधी दारुण पिडिका अर्बुद इंद्रलुप्त खालित्य पलित ये नव रोग हैं अथास्य लक्षणं वातादि दोष कोप करि कपाल में सूजन उत्पन्न करै जो दोष अधिक हो वही उपशीर्षक है जो कृमि करिकै बहुत छिद्र हो बहै सो अ-रुंषिका है जो मस्तक में ग्रंथि परिके पिराय सो विद्रधि है जो माथा रूखा हो भूसी जमैं औ खजुआय सो दारुण है इसे रूसी भी कहते हैं जो माथे में बटिया सदृश ऊंची होय वह पिटिका है पीड़ा संयुक्त हो जो मस्तक में गांठि सी होकै पीड़ा करै तौ अर्बुद है कफ रक्त कोप करि रोकै छेदों को रुंधि कै गिरायदेते हैं सोई इंद्रलुप्त है और वो भी होता है उसे बादखोरा भी कहतेहैं जो माथेके बार गिरकै चिकना होजाय सो खालित्य का है चंदुवाहै जो काल वा अकालमें केशश्वेत होजाइ सोपलितहै॥३९॥ नेत्रमण्डलमें ९४ रोगहैं उसमेंवर्त्मगद २४ हैं॥४०॥ कृच्छ्रोन्मील पक्ष्मघातकफोत्क्लिष्ट, लोहित,रुग्निमेष,कर्दम, रक्तोत्क्लिष्ट, कुकूण ४१॥पक्ष्माशेषरोध, पित्तोत्क्लिष्ट, पोथक,कृष्टवर्त्मा,बहल,पक्ष्मोत्सं

नामिका । तथैवश्याववर्त्माच विषवर्त्मातथालजी ४३ उत्क्लिष्ट वर्त्मेतिगदाः प्रोक्ताःवर्त्मसमुद्भवाः । नेत्रसन्धिसमुद्भूतानवरोगाःप्र-कीर्तिताः ४४ जलश्रावःकफश्रावः रक्तश्रावश्चपर्वणी । पूय-श्रावःकृमिग्रन्थि रुपनाहस्तथालजी ४५ पूयालसइतिप्रोक्ता रोगानयनसंधिजा । तथाशिरागतारोगा बुधैःप्रोक्तास्त्रयोदश४६ शिरोत्पातःशिराहर्षः शिराजालश्चशुक्तिका । शुक्लार्माधिगमासा-र्मा प्रस्तार्यर्माचपिष्टकः ४७ शिरायाःपिडिकश्चैव कफग्रंथिति-कोर्जुनः । स्नाय्वर्मोचाधिमांसःस्यादितिशुक्लगतागदाः । तथाकृष्ण समुद्भूताःपंचरोगाःप्रकीर्तिताः ४८ शुद्धशुक्रशिराशुक्रं क्षतशुक्रं तथांजिका । शिरासंगश्चसर्वेपि प्रोक्ताःकृश्नगतागदाः ४९ कांचंतुषड्विधंज्ञेयंवातात्पित्तात्कफादपि । सन्निपाताच्चरक्ताच्च षष्ठं संसर्गसम्भवं ५० तिमिराणिषडेवस्यु वातपित्तकफैस्त्रिधा । संसर्गेणचरक्तेन षष्ठंस्यात्सन्निपाततः ५१ लिङ्गनाशःसदाधा-स्यात् वातात्पित्तात्कफेनच । त्रिदोषैरुपसर्गेण रक्तात्संसर्गजस्त-था ५२ अष्टधादृष्टिरोगास्युःतेषुपित्तविदाधकम् । अम्लपित्तंवि-

ग अर्बुद॥४२॥ कुंभिका, सिकतावर्त्म, लंगण, जननामिका, श्याववर्त्मा विषवर्त्मा, अलजी ॥ ४३ ॥ उत्क्लिष्टवर्त्मा यह रोग वर्त्म समुद्भूत हैं नेत्र की संधिमें ९ रोग हैं ॥ ४४ ॥ जलस्राव, कफस्राव, रक्तस्राव पर्वणी, पूयस्राव, क्रमिग्रंथि, उपनाह, अलजी ॥४५॥ पूयालसये नयन संधिजरोगहैं शिरागततेरह रोगहैं ॥ ४६ ॥ शिरोत्पात, शिराहर्ष शिलाजाल, शुक्तिका, शुक्लार्म, अधिगमासार्म, प्रस्तार्यर्मा पिष्टक ४७ ॥ शिरापिडक, कफग्रंथिक, अर्जुन, स्नाय्वर्मा, अधिमांस, ये शुक्लगतरोग हैं नेत्र की काली जगह में ५ रोग हैं ॥ ४८ ॥ शुद्धशुक्र शिराशुक्र, क्षतशुक्र, अंजिका, शिरासंगये कालीपुतलीकेरोगहैं॥४९॥ काच ६ तरहका है वात, पित्त, कफ, संसर्ग, रक्त, सन्निपातसे ॥ ५० ॥ तिमिर ६ प्रकार का है वात, पित्त, कफ, संसर्ग, रक्त सन्निपात से ५१ ॥ लिंगनाश ७ प्रकार का है वात, पित्त, कफ, त्रिदोष, उपसर्ग रक्त संसर्ग से ॥ ५२ ॥ नेत्ररोग ८ प्रकारके हैं उसमेंपित्त बिदाधक

दग्धञ्च तथैवोष्णाविदाधकम् ५३ नकुलाध्यं धूसराध्यं रात्र्यध्यं ह्रस्वदृष्टिकः। गम्भीरदृष्टिरित्येते रोगादृष्टिगताःस्मृता ५४ चत्वारश्चाधिमंथाःस्यु र्वातपित्तकफास्रजः। अभिष्पंदाश्चचत्वारो रक्तादोषैस्त्रिभिस्तथा ५५ सर्वाक्षिरोगाश्चाष्टौस्युस्तेषुवातविपर्ययः। अम्लशोफोन्यतोवातस्तथापाकात्ययःस्मृताः ५६ शुष्काक्षिपाकश्चतथा शोफोम्लोषितएवच। अथाधिमंथइत्येतेरोगास्सर्वाक्षिसंभवाः ५७ पुंस्त्वदोषास्तुपञ्चैव प्रोक्तानेत्रेर्ष्यकःस्मृतः। आशेकश्चैवकुम्भीकस्सुगंधीखंडसंज्ञितः।शुक्रदोषास्तथाष्टौ स्युर्वातपित्तकफेनच कुडपंश्लेष्मवाताभ्यां पूयाम्भःश्लेष्मपित्ततः ५८ क्षीणञ्चवातपित्ताभ्यां ग्रन्थिश्चश्लेष्मरक्ततः। मलानांसन्निपाताच्चशुक्रदोषाइतीरिताः ५९ तथास्त्रीरोगनामानिप्रोच्यंते पूर्वशास्त्रतः।अष्टावार्त्तवदोषास्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा।पूयाभंकुणपंग्रन्थिः क्षीणंमलसमन्तथः ६० तथाचरक्तप्रदरं चतुर्विधिमुदाहृतं।वातपित्तकफैस्त्रेधा चतुर्थंसन्निपाततः ६१ विंशतिर्योनिरोगास्युः वातात्पित्तात्कफादपि।सन्निपाताच्चरक्ताच्च लोहितंक्षय

अम्लपित्त, विदग्ध, उष्णविदाधक ॥ ५३ ॥ नकुलाध्य, धूसराध्य रात्र्यध्य, ह्रस्वदृष्टिक, गंभीरदृष्टि, ये दृष्टिगत रोग हैं ॥ ५४ ॥ चार अधिमंथहैं वात, पित्त, कफ, अस्रज, अभिष्यंद ४ रक्तसे दोषसे३ ५५ ॥ सबनेत्ररोग ८ हैं उसमेंवास विपर्जय,अम्लशोफ, वात, पाकात्यय ॥ ५६ ॥ शुष्काक्षिपाक, शोफ, अम्लोषित ये अधिमन्थ रोग नेत्रमें उत्पन्नहैं ॥ ५७ ॥ पुंस्त्वदोष पांचहीहैं और नेत्रेर्ष्यक हैं अशोक, कुम्भीक, सुगंधी, खंड और शुक्रदोष ८ हैं वात पित्त कफसे कुडपश्लेष्म और वातसे पूयाम्भ, श्लेष्म, और पित्तसे ॥५८॥ क्षीण वात पित्तसे ग्रंथि, श्लेष्म और रक्तसे मलों के सन्निपातसे ये शुक्र दोष कहे ॥ ५९ ॥ अब स्त्रियोंके रोग कहते हैं ८ ऋतु से वात, पित्त कफ से ३ प्रकार के पूयाभ, कुणप, ग्रंथि, क्षीण, मलसमन्तथ ॥ ६० ॥ रक्तप्रदर ४ प्रकार का है वात, पित्त, कफसे तीन प्रकार का चौथा संनिपातसे ॥ ६१ ॥ बीस योनिरोग हैं वात, पित्त, कफ

तस्तथा ६२ शुष्काचवामिनीचैव खंडितान्तर्म्मुखीतथा। सूची मुखीविप्लुताच जातघ्नीचपरिप्लुता ६३ उपप्लुताप्राक्चरणा महायोनिरुदाहृता। कर्णिकाचातिचरणा योनिरोगाइतीरिताः ६४ चतुर्विधंयोनिकन्दं वातपित्तकफैस्त्रिधा। चतुर्थंसन्निपातेन तथाष्टौगर्भजागदाः ६५ उपविष्टकगर्भःस्यात्तथानागोदरःस्मृतः। मक्कल्लोमूढगर्भश्च विष्कम्भोमूढगर्भजः। जरायुदोषोगर्भस्य पातश्चाष्टमकःस्मृतः ६६ पञ्चैवस्तनरोगाःस्युर्वातात्पित्तात्कफादपि। सन्निपातात्क्षताच्चैव तथास्तन्योद्भवागदाः ६७ वालरोगेषुकथिता स्त्रीदोषाश्चत्रयःस्मृताः। अदक्षपुरुषोत्पन्नः सपत्नीविहितस्तथा ६८ दैवाज्जातस्तृतीयस्तु तथाथेसूतिकागदाः।

संनिपात, लोहित क्षयसे ॥ ६२॥ शुष्का, वामिनी, खंडिता, अंतर्म्मुखी, सूचीमुखी, विप्लुता, जातघ्नी परिप्लुता ॥ ६३ ॥ उपप्लुता, प्राक्चरणा, महायोनि, कर्णिका, अतिचरणा ये सबयोनिरोगहैं ॥ ६४ ॥ चारप्रकारका योनि कंदहै वात पित्त कफसे ३ प्रकार का चौथा संनिपात से ८ रोग गर्भज हैं ॥ ६५ ॥ उपविष्टक, नागोदर, मक्कल्ल मूढगर्भ विष्कंभ जरायुदोष पात ये आठहैं ॥६६॥ अथपांच प्रकार स्तनरोग वातजपित्तज कफज सन्निज क्षतज जैसे ये पांच स्तनरोगहैं ऐसेही वातादि पांचरोगदूध उतरनेमें स्तनरोग बालरोगमें कहेहैं दूधवाली वा बिनादूधवाली स्त्रीके स्तन में वातादि दोष कोप करि मांस जो रक्त दूषित करै तौ पांच विधि रोग होइ सो रक्तज विद्रधि के सब लक्षण युक्त होतेहैं वातज में बायु के ऐसे दोष प्रति जानना ॥ ६७ ॥ स्त्री के दोष उत्पन्न करनेवाले तीन दोष हैं अदक्ष पुरुष कहैं जो स्त्रीके व्यवहारमें चतुर न होइ उसके संताप करिके जो रोग उत्पन्न होय वह अदक्ष पुरुषोत्पन्न कहिये जो सवति की ईर्षा संताप कारण करके रोग होय वह पत्नी विहितहै जो निज स्त्री से पुरुष प्रसन्नता से मन न देइ औरही स्त्री से स्नेह रखता होइ इस चिन्तासे क्षमहोवै शरीर में जो रोग उत्पन्न होताहै वह दैविकहै ॥ ६८ ॥ अथ बालांतरोग जो बालक होनेसे अंतमें रोग उत्पन्नहोय वह बालांत है उसीको प्रसूति भी कहते हैं इसमें

ज्वरादयश्चिकित्स्यास्ते यथादोषंयथाबलं ६९ द्वाविंशतिर्बाल रोगास्तेषुक्षीराभवास्त्रयः । वातात्पित्तात्कफाच्चैव दन्तोद्भेदश्चतुर्थकः । दंतघातोदंतशब्दः कालदंतोहिपूतनं ७० मुखपाकोमुखश्रावो गुदपाकोपशीर्षकौ । पार्श्वारुणस्तालुकंठो विच्छिन्नंपरिगर्भिकः ७१ दौर्बल्यंगात्रशोषश्च शय्यामूत्रंकुकूणकः । रोदनं चाजगल्लीस्याद्इतिद्वाविंशतिस्मृतः ७२ तथाबालग्रहाख्याता

ज्वरादिक दोष देखिकै औ रोगी का बलाबल विचारि कै चिकित्सा करना जिसमें देह लोड़ै ज्वर प्यास सूजन शूल अतीसार होसो असाध्य है जो केवल खाने पीने से हुआ है ज्वरादिक वह विशेष भयंकर है जो मज्जा रोग करिकै शूल उत्पन्न करै औ रक्त अवरोधन करि सब देह में शूल उत्पन्न करै वह बहुत दुखदाई है वह शूलालास मज्जा है ॥ ६९ ॥ अथवा दश प्रकार बालरोग हैं तिसमें तीन रोग माता के स्तन संबंधी हैं वातज पित्तज कफज येदूध संबंधीहैं चारि रोग दांतन के हैं दंतोद्भेद दंतघात दंतशब्द अकालदंत ये ४ दंत रोग हैं एक पूतना ॥ ७० ॥ मुखपाक मुखस्राव गुदपाक उपशीर्षक पार्श्वारुण तालुकण्ठ बिच्छिन्न परिगर्भिक ॥ ७१ ॥ दौर्बल्य गात्रशोष शय्यामूत्र कुकूणक रोदन अजगल्ली इसभांति बाईस बालरोग हैं अथास्य निदानलक्षणं ॥ बात करि दूषित दूध पीने से बालक को बातजन्य रोग पैदा होतेहैं स्वरक्षीन दुर्बलत्व मलमूत्रावरोध ये बातज हैं पित्त दूषित दुग्ध पान से सदैव पसीना छितरा बिथरा मल नेत्र पीतहै देह सब ताती बनी रहै ये पित्तजहैं कफ संबंधी दुष्ट दूध पीने से लार बिशेष बहै निद्राधिक मुंह आंखि फिरि जाय उबकाई आवैं ये कफज हैं बालक के पहिले दांत आने में ज्वर झाड़ा खांसी माथे में पीर उबाकी दौर्बलत्व यह दंतोद्भेद है सातयें वा आठयें वर्ष बालक के दूध संबंधी दांत उखड़ने से ज्वरादि उपद्रव होतेहैं वह दंतघात हैं इसे दंतपात भी कहतेहैं जब बालक के दंत निकसते हैं वह दंतशब्द हैं जो दंत अकाल में गिरकै जमते हैं तब ज्वरादिक पीड़ा होतीहै वह अकालदंत है जो बालक बारबार झाड़ा फिरै औ आलस्य करि माता धोवै नहींतौ गुदामें खुजलीपैदाहोकै फुंसि-

द्वादशैवमुनीश्वरैः । स्कंदग्रहोविशाखास्यात्स्वग्रहश्चपितृग्रहः ७३

यां उत्पन्न होती हैं सो पक फूल कै घावपर जाइ वह अहिपूतना है रुधिर कोप से होती है औ ग्रंथकर्ता इसे क्षुद्ररोग में लिखते हैं परंतु यह रोग केवल बालक के होता है इससे इस ग्रंथकर्ता ने बालरोगमें लिखा है जो बालक की मुखमें सपेद मलाई सी जमी फटी फटीली देख परै वह मुखस्राव है सपेद मूहा प्रसिद्ध है जो मुखमें बह लाल छालेसे हों वह मुखपाक है यह लालमूहा प्रसिद्ध है बालकी गुदा पकै घाव पर जाइ वह गुदपाक है जो बालक के मूड़ पर मैल जमकै पिरकी परती है अथवा रुधिर कोप से फलके घाव परजाइ वह उपशीर्षक है बालक रोग के मध्य में त्री जन्य दोष महापद्मनाम बिसर्प रोग दो प्रकार होता है एक वस्तिज दूजा शीर्षज आड़ाके चक्रसे हृदय पर्यंत दुख देइ तौ वस्तिजहै जो मुख वा तालु वाहिरतक लालताम्र सम होकै हृदय से गुदा पर्यंत दुख दे वह शीर्ष है ये विसर्पलक्षण हैं ग्रंथांतर में इसे पद्मबिसर्प कहते हैं बालक के तालू में कफ कोप से कांटा परजाता है उसे तालुकण्ठक औ दारदंत कहते हैं जिस बालक का तालू खाली परिजाय तौ स्तन पान न करि सकै बड़े कष्ट से दूध पिये मल पतला गिरै नेत्र वा कंठ में बिकार जाइ कै मनसे नहीं पीवे ज्यों का त्यों दूध डालि देइ ऐसे उपद्रव युक्त हो तो बिच्छिन्न है इसे तालूपात भी कहतेहैं जो गर्भिणीका कुसमय पान करै तौ ये उपद्रव पैदा होते हैं खांसी, अग्निमंद, उबाकी, तंद्रा अरुचि, भ्रम इत्यादि रोग उत्पन्न होतेहैं उसे परिगर्भिक कहते हैं गर्भिणी का स्तन पान करने से बालक बहुक्लेश पातेहैं वह दुर्वल होके पेट तोंबीसा निकल आता है ये परिगर्भिक के लक्षण हैं जो शरीर बहुतक्षश होजाय सो गात्रशोषहै औ सुखंडी भी कहते हैं इसमें उबकाई औ अतीसार भी होता है जो बालक अज्ञान होकै राति व दिनको बिछौनामें मूतै सो शय्यामूत्रहै दुग्धदोषसे बालक की आंख की पलक पर खाज होके आंखि से पानी बहता है औ बालक आंखि नाक मस्तक घसता है उजारे में आंखिनहीं खोलता उसे कुकूणक कहतेहैंजो बालक बिशेष रोवै उसकाक्रमबढ़ रोवना देखि कै अनुमान करिकै रोग जानना वह रोदन है कफ कोप से बालक के शरीरमें मूंगासी पिरकी ह्वै शरीर के रंग में

नैगमेयग्रहस्तद्वच्छकुनिःशीतपूतना। मुखमंडितिकातद्वत्पूतना चांधपूतना। रेवतीचैवसंख्याता तथास्याच्छुष्करेवती ७४

मिल रहतीहै पीड़ा नहीं करती एकसे एक मिलके रहतीहै वह अजगल्ली है सो बालक के विशेष करि होता है जवान के कमहोता है॥ ७२॥ अथ बारह प्रकार बालग्रह रोगहै स्कंदग्रह, विशाखा ग्रह खग्रह पितृग्रह॥ ७३॥ नैगमेयशकुनि शीतपूतना मुखमंडितिका पूतना अंधपूतना रेवती शुष्करेवती ये बारह प्रकार हैं अस्यसामान्यलक्षणं स्कंदादि द्वादशग्रहग्रस्त बालक अनायास चौंकता है उठि२ बैठताहै ओंठ दांत चबाता है मुखसे फेन गिरता है सोता नहीं हाथ पांव सूज जाते हैं मल पतला अच्छीतरह बोलता नहीं देह में मछलीके रक्तकीसी गंध आतीहै दूध नहीं पीता सब ग्रहों के सामान्य लक्षण जो बालक कुछ कांपै आंखि देह से पानी बहै वा एकै अंग कांपै ऊपर को देखै दांत चबाय मुह टेढ़ा बनावै दूध न पिये कुछ रोवै वह स्कन्दग्रह है जिस ग्रह में बालक को ज्वर औ ऊर्द्धदृष्ट हो वह विशाखाग्रह है इसके विशेष लक्षण बालतंत्र में हैं जिस ग्रहमें बालक बेहोश होजाइ मुंह से फेन गिरै ज्वरादिक उपद्रव हो रोवै अधिक देह में रक्त पीव की गंध आवै उसे खग्रह कहते हैं ग्रंथांतरमें स्कंदापस्मार कहते हैं अग्निघ्नातादि पित्तरक्त करि पीड़ित बालक को ज्वरादिक उपद्रव होते हैं वह पितृग्रह है नैगमेयग्रह पीड़ित बालक तिसे उबकाई कुछ कंप कंठ मुख शोष मूर्छा देहमें दुर्गंध ऊर्ध्वदृष्टि दांत चबाना वह नैगमेय है जो बालक अंग गलित हो तो भयङ्कर रूप लक्षण उचकता हो देहमें पक्षीकीसी गंध आवै आंख पिराय उबकाई व अतीसार देहमें दुर्गंध यह शीतपूतना है जिस बालक का मुख प्रसन्न हो शरीरकी नसें देखिपरैं अधिक खाय देह में औ मूत्र में दुर्गन्ध आवै वह मुखमंडितिका है जिस बालकको ज्वर अतीसार पियास ऊर्द्धदृष्टि रोना निद्राहीन बिह्वलता वह पूतनाहै जो बालक खांसै ज्वर पियास देहमें मेदगन्ध रुदन विशेष दूध न पिये मल अधिक गिरै वह अंधपूतना जो बालक की देह में पिरकी घाव घाव से रुधिर बहै देहमें दुर्गंध मल पतला ज्वर वह रेवतीहै जो बालकको ज्वर शूल अजीर्ण माथेमें पीड़ा मुखशोष सो शुष्क रेवती है॥ ७४॥

तथाचवरणभेदास्तु वातरक्तादिकाश्चये । द्विचत्वारिंशयुक्तास्ते रोगेष्वेवमुनीश्वरैः ७५ द्विषष्टिदोषभेदास्यु स्सन्निपातादिकाश्चये । तेपिरोगेषुगणिताःपृथक्प्रोक्तानतेक्कचित् ७६ हीनमिथ्यातियोगानां भेदैःपञ्चदशोदिताः । पञ्चकर्मभवारोगा स्तेपुरोगेषुसंज्ञिताः ७७ स्नेहस्तेदोतथाधूमोगंडूषोजनतर्प्पणे। अष्टादशैवताःपीडास्ताश्चरोगेषुलक्षिताः ७८ शीतोपद्रवएकः स्या देकश्चोष्णोद्भवोमलः । शल्योपद्रवएकश्च क्षीरश्चैकःस्मृतस्तथा ७९ स्थावरंजंगमंचैव कृत्रिमंचत्रिधाविषं। तेषांचकाल

बातरक्त करिकै पांवकेरोग सुन्निपाद स्तंभपादस्फुटनइत्यादिक पांवरोग सुनिलोग बयालीस कहिगयेहैं सोये रोग श्लीपदादिक रोगनमें प्रथम कहिगयेहैं सो जानना ॥ ७५ ॥ सन्निपातादिक दोष करिके बासठ ६२ प्रकार के रोग हैं सो बातादिक दोष में भिन्न भिन्न रोग कहि चुके हैं परंतु इन्हैं भिन्न करि कोई नहीं कहता ऐसा समझना ॥ ७६ ॥ पंचकर्म बमन बिरेचन निरूहण बस्ती अनुबासन बस्तीन सांस पाचों कर्म उत्तर खंडमें कहेंगे और हीनयोग मिथ्यायोग अतियोग इन तीनों प्रकार के भेद हैं सोभी उत्तर में कहेंगे बमन कहे औषधि देकै उबकावना बिरेचन कहे औषधि करके मल गिराना निरूहणबस्ती अनुबासनबस्ती औषधि की पिचकारी गुदा मार्ग से देनी नस्यक हैं नाक में औषधि देने का यत्न इस भांति पांचो कर्म जानना हीनयोग मिथ्यायोग अतियोग इनसे नानाभांति के दुख उत्पन्न होते हैं ॥ ७७ ॥ स्नेहादि संग्रह भी उत्तरखंड में है स्नेहपात स्वेदन धूमपान गंडूष अंजन तर्पण इन छहों में हीनयोग मिथ्यायोग अतियोग ये तीनों भेद करिकै अठारह भेद हैं उस्से उत्पन्न जो रोग सो उक्त रोगमें संग्रह करि आये हैं ऐसे जानना स्नेहपान स्वेद धूमपान गंडूषता अंजन यह प्रथम परिभाषा में लिख गये हैं औषधादिक करिके धातुको दृढ़ करने का प्रयोग उसे तर्पण कहतेहैं अथवा नेत्रतृप्त करनेके प्रयोग उसे भी तर्पण कहते हैं ॥ ७८ ॥ शीतादि चार उपद्रव बहुत ठंढा योग करेसे मनुष्य को ठंढा उपद्रव उत्पन्न होता है बहुत उष्णसे उष्ण उपद्रव उत्पन्न होताहै शल्य कहैं नख केश

कूटाद्यै नवधास्थावरंविषं। जंगमंबहुधाप्रोक्तं तत्रलूताभुजंगमाः ८० वृश्चिकामूषकाकीटा प्रत्येकंतेचतुर्विधाः। दंष्ट्राविषंनखविषं वालशृंगास्थिभिस्तथा ८१ मूत्रात्पुरीषाच्छुक्राच्च दृष्टेर्निश्वासतस्तथा। लालायाःस्पर्शतस्तद्वत् तथाशंकाविषंगतं ८२ कृत्रिमंद्विविधंप्रोक्तं गरदूषीविभेदतः। सप्तधातुविषंज्ञेयं तथासप्तोपधातुजं ८३ तथैवोपविषेभ्यश्च जातंसप्तविधंविषं। दुष्टनीरं

कांटा हाड़सींग खांड़ा इनके लगनेसे वा इनमेंसे कोई वस्तु पेटमें जाय उससे जो रोगहोइ वह शल्योपद्रवहै मूढ़वैद्यजो संभलखार बनातेहैं परंतु कच्चा रहिजाताहै वह खिलानेसे जोरोग उत्पन्नहोतो विष अग्नि शस्त्र वा वज्र इन्हों की तरहसे मरताहै ऐसे चार भेदहैं ॥ ७९ ॥ अथविषरोग स्थावर जंगम कृत्रिम येतीन प्रकारके विषहैं तिसमें स्थावर विषके नवभेदहैं औ जंगमविष बहुत प्रकारकाहै तिसमें लूता सांप ॥ ८० ॥ बिच्छू मूषा कीट इसमें वात पित्त कफ सन्निपात करिकै एकएक के चारचार भेद होजाते हैं किसी के दांतमें विषहै किसी के नखमें किसीके वार में किसीके सींगमें किसीकेहाड़में॥ ८१ ॥मूत्रमें मलमें धातुमेंदृष्टिमें श्वासमेंलारमें स्पर्शमें ऐसे भिन्न भिन्न जाति प्रति विष हैं अननें विष की शंका आनेसे वायु कुपित्तहो ज्वरादि उपद्रव शरीरमें प्रगट करै सो शंकाविष है ॥ ८२ ॥ कृत्रिम विषके दो भेद हैं एक वच्छनागादि एकदूषी संतत संपति के निमित्त शत्रुता करिकै वा स्त्री लोग नानाप्रकार की चीज पसीना रज दिनाई मलमूत्र इत्यादि अन्नके संग खिलादेती हैं तौ पांडुरज ज्वरादि उपद्रव होताहै वा मधुवत युक्त भयेते विषहोयहै नींबू कपूर मिश्रित भयेते विषहोय यह कृत्रिम विषहै औ बच्छ नागादि कृत्रिम विष एकही बार देहको जीर्णकरि प्राण लेताहै जिसमें कम पराक्रम है सो प्राणनहीं नाश करसक्ता परंतु ज्वरादि उपद्रव करिकै देशकाल अन्न वा दिवादि निद्रा करिकै पीड़ित करताहै और सप्तरसादि धातुनको दूषित करताहै इसी कारण दूषित विष कहतेहैं येदोप्रकारके कृत्रिम विषहैं विषकेभेद सुवर्णादिक अशोध सप्तधातु की भस्म खानेसे वा हरतालादि सप्त उपधातु की भस्म खानेसे सप्त मदादिक अशुद्ध उपविष खानेसे विषसमान पीड़ा होतीहै उसकी विष संज्ञाहै अथ दुष्टनीर जिस

विषंचैकं तथैकंदिग्धजंविषं ८४ कपिकच्छुभवाकंडूर्दुष्टनीरभवा तथा । तथाशूरणकंडूश्च शोथोभल्लातजस्तथा ८५ मदश्चतुर्विधश्चान्यः पूगभंगाक्षकोद्रवैः । चतुर्विधोन्योद्रव्याणांफलत्वग्मूल पत्रजं ८६ इतिप्रसिद्धागणिता येकिलोपद्रवाभुवि । असंख्याश्चापरेधातु मूलजीवादिसंभवा ८७ इतिश्रीशार्ङ्गधरसंहितायां रोगगणनायांसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इतिशार्ङ्गधरस्यप्रथमखंडस्समाप्तः ॥

पानीमें कीचड़ सेवाल पत्तादिक जंतु के वा मेड़क के मल मूतसे पानी बिगड़ जाताहै उसे दुष्टनीर कहतेहैं उसके नहानेसे पीनेसे विष समान पीड़ित होताहै शस्त्रादिक में विषके पानीको चढ़ातेहैं उस शस्त्रके घातका घाव नहीं अच्छा होता औ विष सदृश उपद्रव होताहै सो दिग्धविष है ॥ ८३ । ८४ ॥ अथचारि प्रकार आगंतुक उपद्रव वन किमाच दुष्ट पानी सूरन अंगके छूनेसे देह खजुआय भिलावांसे देह सूजआवै इसप्रकारसे चारि भेदहैं और भी चारि प्रकार हैं सुपारी भांग बहेड़ा की मिंगी कोदव धान्य इनचारों के खानेसे चारि प्रकारके मद होतेहैं इसीप्रकार और भी जानना ॥ ८५ । ८६ ॥ औषधि वनस्पति फूलडार पातमूल इनके खाने से चारि विधि के मद होतेहैं इसप्रकार जो पृथ्वीमें प्रसिद्ध रोगोपद्रवहैं तिनकी संख्या निश्चय करिगयेहैं इससे वा सुवर्णादि धातु हरतालादि उपधातु नानाप्रकार की वनस्पति वा औषधि वा जीवादिक करिकै अनेक उपद्रव उत्पन्न होते हैं सो उपद्रव असंख्य हैं अनुमान से जानना ॥ ८७ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधर व्याख्यायां निर्मितशार्ङ्गधर सुधाकरनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इतिशार्ङ्गधरस्यप्रथमखंडस्समाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

शार्ङ्गधरसंहिता ॥

मध्यखण्ड वार्त्तिकतिलकसहित ॥

अथातःस्वरसः१ कल्कः२क्काथश्च ३ हिम४फांट५कौ। ज्ञेयाः कषायाःपंचैते लघवःस्युर्यथोत्तरं १ आहतात्तत्क्षणोत्कृष्टाद् द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्भवः। वस्त्रनिष्पीडितोयःस्यात्स्वरसोरसउच्यते२ कुडवंचूर्णितंद्रव्यं क्षिप्तञ्चद्विगुणेजले। अहोरात्रात्स्थितंतस्माद्भ-वेद्वारसउत्तमः ३ आदायशुष्कद्रव्यञ्च स्वरसानांचसंभवे। जलेष्ठ गुणितेसाध्यं पादशेषञ्चगृह्यते ४ स्वरसस्यगुरुत्वाच्च पलमर्द्धं प्रयोजयेत् ।निशोषितंचाग्निसिद्धंपलमात्रंरसंपिवेत् ५ मधुश्वेता गुडक्षारंजीरकंलवणंतथा । घृततैलंचचूर्णादीन्कोलमात्रान्रसे क्षिपेत् ६ ॥

अथ मध्य खण्ड प्रारम्भः॥ अथ क्वाथ जिसे काढ़ा कहैं सो पांच प्रकार का है स्वरस कहे अंगरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हिम ४ फांट ५ एक से एक गुण में न्यून हैं यथा अंगरससे लघु कल्क॥ १ ॥ उत्तम भूमि से तुरत की उखारी औषधि जल बिना कूटि कै वस्त्र में डारिय निचोरि लेय उसरसको स्वरस कहतेहैं॥ २॥ सोई द्रव्यकुडव कहे सोलह तोले कूटि कै दुगुने पानी में दिन राति भिजोइ राखै उसके रसकोभी स्वरस कहतेहैं ॥ ३ ॥ जो द्रव्य हरी न मिलै तौ सखीद्रव्य अठगुणे पानीमें औटै जब चौथाईरहै तबलैलेइ॥४॥ ओदी द्रव्यका रस गरुआ है इस कारण कार्यमें आधा पल लेना औ सूखी द्रव्य रातकी भीजीका रस हलकाहै इससेपल भर लेना ५॥ स्वरस व काढ़ावयंनका निकालारसइनमेंसहत शक्करगुड़ खार जीरा लोन घृततैल औ चूर्ण ये सब आठ मासे युक्त करना॥ ६॥

अमृतायाःरसःक्षौद्र युक्तःसर्वप्रमेहजित् । हरिद्राचूर्णयुक्तोवा रसोधात्र्यासमाक्षिकः ७ वासकःस्वरसःपेयो मधुनारक्तपित्त जित् । ज्वरकासक्षयहरः कामलाश्लेष्मपित्तहा ८ त्रिफलायारसः क्षौद्र युक्तोदार्वीरसोथवा। निंवस्यवागुडूच्यावा पीतोजयतिका-मलां ९ पीतोमरिचचूर्णेन तुलसीपत्रजोरसः। द्रोणपुष्पीरसोप्प्येवं निहंतिविषमज्वरान् १० जंव्वाम्रामलकीनाञ्च पल्लवोत्थोरसो जयेत् । मध्वाज्यक्षीरसंयुक्तो रक्तातीसारमुल्वणं ११ स्थूलवव्वू-लिकापत्र रसःपानाद्व्यपोहति । सर्वातिसारस्योनाक कुटजस्त्व ग्रसोथवा १२ आर्द्रकःस्वरसःक्षौद्र युक्तोवृषणवातनुत् । श्वास कासारुचिंहंति प्रतिश्यायंव्यपोहति १३ वीजपूररसःपानान्मधु-क्षारयुतोजयेत् । पार्श्वहृद्वस्तिशूलानि कोष्टवायुञ्चदारुणं १४

गुर्चका रस सहत युक्तखानेसे सबप्रमेह नाश होयहैआंवरेका रस हल्दी का चूर्ण सहत मिश्रित करि खिलानेसे भीप्रमेह नाश होय है ॥ ७ ॥ अथवासा स्वरसरक्त पित्तादिपर रूसेका स्वरससहत मि-लायकेपियेसे रक्त पित्त नाशहोइ औज्वर खांसी क्षयीकमल कफ औपित्त येरोगभी नाशकरै ॥ ८ ॥ अथ त्रिफलादि स्वरस कमलपर त्रिफले का रस सहत वा बड़ी हरद्दीकारस सहत व नींब का रस सहत वा गुर्च का रस सहत युक्त पियै तौ कमल रोगको नाशकरै ९ ॥ अथ तुलसी आदि रस विषम ज्वरपर तुलसी का रस मरिच का चूर्ण वा गूमाका रस मरिच साथ पियै तौ विषमज्वर नाश होइ ॥ १० ॥ अथ जंब्वादिरस रक्तातीसार पर जामुनि आंब आ-वरा इनतीनों की पत्तीकारस सहतघतदूध सहित पियै तौ दिनी रक्तातीसार दूरिहोय ॥ ११ ॥ अथ बबरादि स्वरस अतीसारपर बबूर की छालकारस सहतयुक्त पिलावै तौ सात भांति का अती-सार जाइ वा कुरैका रस वा करील का रस सहत संग पिये तौ अतीसार जाइ ॥ १२ ॥ अंडकोश औ श्वास पर अदरक का रस सहत पियेतौ वातांड छूटपचै श्वास खांसी अरुचि नाक बहना सब रोग मुक्तहोय ॥ १३ ॥ अथ बीजपूर रस पार्श्वादि शूलपर बिजौरा नींबू का रस सहत औ यवाखार सहित पिये तौ पशुरी की शूल हृदयकी शूल पेडूपीर कोष्टबद्ध ये सब रोगनसे निर्मुक्त होय ॥ १४ ॥

शतावर्याश्चमधुना पित्तशूलहरोरसः । निशाचूर्णयुतःकन्या रसः
प्लीहाऽपचीहरः १५ अलंवुषायाःस्वरसः पीतोद्विपलमात्रया ।
अपचीगंडमालानां कामलायाश्चनाशनः १६ रसोमुंड्याःसको-
ष्णोवा मरिचैरवधूलितः । जयेत्सप्तदिनाभ्यासात्सूर्यावर्तार्द्धभेदकौ
१७ ब्राह्मीकूष्मांडषट्ग्रंथा शङ्खिनीस्वरसःपृथक् । मधुकुष्टयुतो
पीतः सर्वान्मादापहारकः १८ कूष्मांडकस्यस्वरसो गुडेनसह
योजितः । दुष्टकोद्रवसंजातं मदंपानादृव्यपोहति १९ खड्गादि
छिन्नगात्रस्य तत्कालंपूरितोव्रणाः । गांगेरुकीमूलरसै र्जायतेगत
वेदना २० पुटपाकस्यकल्कस्य स्वरसोगृह्यतेयतः । अतस्तुपुट
पाकानां युक्तिरत्रोच्यतेमया २१ पुटपाकस्यमात्रेयं लेपस्यांगार
वर्णता । लेपञ्चदृव्यंगुलंस्थूलं कुर्याद्दृव्यंगुष्टमात्रकं । काश्मरीवट

अथ सतावरि रस पित्त शूलपर सतावरि रस सहत पियै तौ पित्त शूलहरै अथ घीकुवार रसप्लीहापर घीकुवार रसहरदी चूर्ण पियै तौ पित्त अपची पेटकी गांठि दूरिहोइ ॥१५॥ अथ मुंडीरस गंड-माला अपची पर मुंडीरस आठ तोले पियै तौ गंडमाला अपची कांवर रोगमिटै ॥ १६ ॥ अथ मुंडीरस सूर्यावर्तादि पर मुंडीस्वरस उष्ण मरिच चूर्ण युत सात दिन पिये तौ सूर्यावर्त आधाशीशी अच्छी होइ ॥ १७ ॥ अथ ब्रह्मादि स्वरस उन्माद परब्राह्मी श्वेत कुम्हड़ा कचर वा वच कौड्याला इनका स्वरस भिन्न भिन्न सहत औ कूटके संगपिये तौ सब उन्माद जाइ ॥ १८ ॥ श्वेत कुम्हडा का रस उन्माद पर सपेद कुम्हड़े का रस पुराने गुड़ संयुत पिये तौ दुष्ट कोदव का उन्माद नाशहोइ ॥ १९ ॥ अथ वरियारारस घाव पर शस्त्रके लगे के घाव में तुरंत वरियारे का रस लगावै तौ घाव अच्छा होइ ॥ २० ॥ पुटपाक के रसकी विधि पुटपाक का रसलेते हैं इससे उसका यत्न कहतेहैं ॥ २१ ॥ कोई ओदी द्रव्यहो उसे पीसिकै गोली बांधै तिसपर रेंड वा वरगद वा जामुन का पत्ता लपेटै फिर कपरौटी करि दोअंगुल मोटी माटीलैसै तब अग्निमें धरै जब लालहो तब निकारिकै उसका रस निचोरि ले उसे पुट-पाक रस कहते हैं तब चारि रुपया भर इस रुपया भर सहत

जंव्वादिपत्रैर्वेष्टनमुत्तमं । पलमात्ररसोग्राह्यष्कर्षमात्रंमधुक्षिपेत् । कल्कचूर्णद्रवाद्यास्तु देयाःस्वरसवद्बुधैः २२ तत्कालौकृष्टकुटज त्वचंतंदुलवारिणा । पिष्टांचतुःपलमितां जम्बूपल्लववेष्ठितां २३ सूत्रवद्धांचगोधूम पिष्टेनपरिवेष्ठितां । लिप्तांचघनपंकेन गोमयैर्वह्निनादहेत् २४ अंगारवर्णांचमृदं दृष्ट्वावह्नेःसमुद्धरेत् । ततो रसंगृहीत्वाच शीतंक्षौद्रयुतंपिवेत्२५ जयेत्सर्वानतीसारान्दुस्तरान्शुचिरोत्थितान् २५ कंडितंतंदुलपलं जलेष्टगुणितेक्षिपेत् । भावयित्वाजलंग्राह्यं देयंसर्वत्रकर्मसु २६ अरलुत्वंकृतश्चैव पुट पाकोग्निदीपनः । मधुमोचरसाभ्यांच युक्तस्सर्वातिसारजित् २७ न्यग्रोधादेश्चकल्केन पूरयेद्गौरतित्तिरेत् । निरंत्रमुदरंसम्यक्पुट पाकेनतत्पचेत् । तत्कल्कस्यरसःक्षौद्र युक्तःसर्वातिसारनुत् २८ पुटपाकेनविपचेत्सुपक्कंदाडिमीफलं । तद्रसोमधुसंयुक्तः सर्वातीसारनाशनः २९ वीजपूराम्रजंवूनां पल्लवानिजटाःपृथक् । विपचे

संयुक्त पिये औ जो कल्कचूर्ण पतली द्रव्य मिश्रित करनी हो तो पुटरस को यथायोग्य देना ॥ २२ ॥ अथ कुरैया पुटपाक सर्वातीसार पर चारतोले कुरैया की छाल ताजे चावल के धोवन में पीसिकै गोला बांधजामुन के पत्ते लपेटै ॥ २३ ॥ फिर सूत से बांधि मोठ के आटा सों लेपकरि माटी लगावै तब गौरा के गोइठा में फूंकिकै अंगारा होजाय तबआगिसे निकाल निचोरि ठण्ढाकरि सहत डारिपियैतोबहुत दिनका कठिन अतीसारजाय ॥२४।२५॥ चावल धोवनकी क्रिया चार रुपया भरि शुद्ध चावल अठगुने पानी में धोइ वही धोवन सर्वत्र देय ॥ २६ ॥ पुनः अरलू जो करील वा सोहन पाता का पुटपाक अग्निको दीपन करताहै जबसहत औ मोचरस मिलाइकै देइ तब अतीसार जाइ ॥ २७ ॥ पुनः बर पीपल गूलर पाकर जगन्नाथी पीपरि इनकी छाल पानीमें पीस गोला बांधि श्वेत तीतरकै पेटकी साफ अंतरी निकाल डालै उसमें गोला धरि पुटपाक करै पकेपर गोला निकाल रस निचोरि ले सो रस सहत संयुक्त देइतौसब अतीसार जाइ ॥२८॥ पुनःचारपक्के अनारका पुटपाक बनाइ तिसका रस सहत मिलाइकै देइ तौ सब अतीसार

त्पुटपाकेन क्षौद्रंयुक्तस्यतद्रसः। छर्दिं निवारयेत्घोरांसर्वदोषसमु-द्भवां ३० पिष्टानांवृषपत्राणां पुटपाकरसोहिमः । मधुयुक्तोजये द्रक्त पित्तकासज्वरक्षयान् ३१ पचेत्क्षुद्रांसपंचांगां पुटकेनचतद्र-सः । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः कासश्वासकफापहः ३२ विभीतकंफलं किंचित् घृतेनापिविलेपयेत् । गोधूमपिष्टेनांगारैर्विपचेत्पुटपाक-वत् ३३ ततःपक्वंसमुद्धृत्य त्वचंतस्यमुखेक्षिपेत् । कासश्वास प्रतिश्यायं स्वरभंगान्जयेत्ततः ३४ चूर्णंकिंचित्घृताभ्यक्तसुंठ्या एरंडजैर्दलैः । वेष्टितंपुटपाकेन विपचेन्मंदवह्निना ३५ ततउद्धृ-त्यतच्चूर्णं ग्राह्यंप्रातःसितान्वितं । तेनयांतिशमंपीडा आमाती-सारसंभवा ३६ सुंठीकल्कंविनिक्षिप्य रसैरेरंडमूलजैः । विपचे त्पुटपाकेनतद्रसःक्षौद्रसंयुतः। आमवातसमुद्भूतां पीडांजयतिदुस्त-रां ३७ सौरणंकंदमादायपुटपाकेनपाचयेत् । सतैललवणस्तस्य रसश्चार्शोविकारनुत् ३८ शरावसंपुटेदग्धं श्रृंगंहरिणजंपिवेत् । गव्येनसर्पिषापिष्टं हृच्छूलंनश्यतिध्रुवं ३९ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरे द्वितीयखंडे चिकित्सास्थानेस्वरसादि कल्पनाऽध्यायः ॥ १ ॥

नाश होइ ॥ २९ ॥ बिजौरा पुटपाक उवाकी पर बिजौरा नींबू जामुनकी पाती वा जड़के पुटपाक का रस सहत युत देइ तौ सब दोषकी छर्दि जाइ ॥ ३० ॥ बासा पुटपाक रक्तपित्त कासज्वर पर रूसेके पुटपाक का रस अरु सहत पिये से रक्तपित्त कास छर्द ज्वर जाइ ॥ ३१ ॥ भटकैः कासश्वास पर भटकटैया के पंचांगका पुटपाक रस पीपरि का चूर्ण डारिकै देतो कासश्वास कफ जाइ ॥ ३२ ॥ विभीत पुटपाक कासश्वास पर बहेरे पर घी लगाइ मिसानसे लेप अंगार पर पुटपाक करै ॥ ३३ ॥ उसका छिलका मुखमें राखे से कासश्वास प्रतिश्याय स्वरभंग ये रोग जाइं ॥ ३४ ॥ सोंठिपुरान आमातीसार पर सोंठ चूर्ण किंचित् घृत से बटी बनाय रंडपच में लपेट मन्दाग्निमें पुटपाक करै ॥ ३५ ॥ उस चूर्णको सबेरे शक्कर संग खाइ तो आमातीसारकी पीड़ा मिटै ॥ ३६ ॥ पुनः सोंठ चूर्ण रंडकी जड़ के रस में सानि पुट पाक करि रस निकारि सहत संग खाइ

पानीयंषोडशगुणंक्षुण्णेद्रव्यपलेक्षिपेत् । मृत्पात्रेक्वाथयेद्ग्राह्य मष्टमांशावशेषितं १ तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णंमृद्वग्निसाधितं । सृतःक्वाथःकषायश्च निर्यूहःसनिगद्यते २ आहाररसपाकेचसंजाते द्विपलोन्मितं । वृद्धवैद्योपदेशेन पिबेत्क्वाथंसुपाचितं ३ क्वाथेक्षिपेत्सितामांशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः । वातपित्तकफातंके विपरीतंमधु स्मृतं ४ जीरकंगुग्गुलक्षारंलवणंचशिलाजितुं । हिंगुत्रिकुटकंचैव क्वाथेशाणोन्मितंक्षिपेत् ५ क्षीरंघृतंगुडंतैलं मूत्रंचान्यद्रवंतथा । कल्कंचूर्णादिकंक्वाथे विक्षिपेत्कर्षसंमितं ६ गुडूचीधान्यकारिष्ट पद्मकंरक्तचंदनं । गुडूच्यादिगणक्वाथः सर्वज्वरहरःपरः । दीपनो दाहहृल्लास तृष्णाछर्द्यरुचिंजयेत् ७ गुडूचीपिप्पलीमूलं नागरैः पाचनंस्मृतं । दद्याद्वातज्वरेपूर्णे लिंगेसप्तमवासरे ८ शालपर्णी

तौ आमवात की पीड़ा जाय ॥३७॥ सूरन पुराना बवासीर पर पुट पाककरि पका जमीकंद लोन तेल साथ खाइ तौ अर्श नाश होइ ३८ ॥ हरिण शृंग पुराना हृदयशूल पर हरिणसींग शराव संपुटमें जराइ गौ के घी में डारि पियै तौ हृदय की शूल जाइ ॥ ३९ ॥ इति शार्ङ्गधरसुधाकरे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ क्वाथ ॥ चारि रुपया भर द्रव्य चौंसठि रुपया भर पानी माटी के पात्र में भरि मंदाग्नि में औटै जब आठ रुपये भरि रहै तब उतारि लेइ ॥ १ ॥ कुछ उष्ण रहै तब पियै क्वाथके चारि नामहैं सृतक्वाथ कषाय निर्यूह ॥ २ ॥ आहारका रस पकेपर वृद्धवैद्यके उपदेशसे दै पल काढ़ा पिये ॥ ३ ॥ क्वाथमें लघुमिश्री डारने का प्रमाण जो प्रधानहो तौ मिश्री थोड़ी देना पित्तमें अष्टमांश कफमें षोडशांश सहत वायुमें षोडशांश पित्तमें अष्टमांश कफमें चौथाअंशदेना ४ ॥ जीरकादि अनेक वस्तु डालनेका प्रमाण जीरा गूगल छार सैंधव शिलाजित हींग त्रिकुट काढ़े में चारि माशे दे वा बल समय देखिकै ॥५॥ दूध घी गुड़ तेल गोमूत्र और क्वाथादि लुगदी चूर्णादि ये सब दशमाशे देना बलसमय देखिकै ॥६॥ गुर्चादि काढ़ा सब ज्वरपर गुर्च धनिया नींबकी छाल पद्माख रक्तचन्दन इस गुर्चादि क्वाथ से सब ज्वर नाश होयहैं यह दीपन है दाह हल्लास उबकाई ये रोग दूरहोयं ॥७॥ गुर्वादि पाचन वातज्वरपर गुर्चपीपरा

वलाद्राक्षा गुडूचीसारिवातथा । आसांक्वाथं पिवेत्कोष्णं तीव्रवात ज्वरच्छिदं ९ काश्मरीसारिवाद्राक्षा त्रायमाणामृताभवः । कषायः स॰ुडःपीतो वातज्वरविनाशनः १० कटुफलेंद्रयवापाढ़ा तिक्ता मुस्तैःसृतंजलं । पाचनंदशमेह्निस्यात्तीव्रपित्तज्वरेन्नृणां ११ पर्पटोवारकस्तिक्ता कैरातोधन्वयाशकः । प्रियंगुश्चकृतःक्वाथएषांश-र्करयासह । पिपासादाहपित्तास्र युक्तंपित्तज्वरंजयेत् १२ द्राक्षा हरीतकीमुस्त कटुकीकृतमालकं । पर्पटश्चकृतक्वाथ एषांपित्तज्व-रापहः । तृणमूर्च्छादाहपित्तासृक्शमनोभेदनःस्मृतः १३ वीजपूर शिफापथ्या नागरंग्रंथिकैःसृतं । सक्षारंपाचनंश्लेष्म ज्वरेद्वादश वासरे १४भू निंवनिंवपिप्पल्यःशठीशुंठीशतावरी । गुडूचीवृहती चेतिवीयोहन्यात्कफज्वरम् १५ पटोलत्रिफलातिक्ताशठीवासा मृताभवः । क्वाथोमधुयुतःपीतोहन्यात्कफकृतंज्वरं १६ पर्पटाव्दा

मूल सोंठि यह काढ़ा बातज्वर में सतयें दिन देइ यह पाचन है ॥ ८ ॥ बातज्वर पर शालपर्णी कहे वनउर्दी बरियारा रासन गुर्च सरिवन इनका काढ़ा पियेसे तीव्रबातज्वर जाइ ॥ ९ ॥ दूसरा काढ़ा बातज्वर पर खभारी सरिव दाप त्रायमाण गुर्च इनका काढ़ा पिये गुड़ डारिकै तौ बातज्वर जाइ ॥ १० ॥ कटुफलादि पाचन पित्तज्वरपर कायफर इंद्रजव पाढ़ा कुटकी नागरमोथा पित्तज्वर में दशवें दिन देइ ॥ ११ ॥ पित्त पापरादि क्वाथ पित्तज्वर पर पित्तपापरा कूसा कुटकी चिरायता जवासा प्रियंगूदाना पीतसरसौं सा होता है यह काढ़ा चीनी के संग पियै तौ तृषादाह रक्त पित्तज्वर मुक्त होइ ॥ १२ ॥ दूसरा दाख हड़ कुटकी अमलतास पित्तपापड़ा इनका क्वाथ पित्तज्वर नाशकरै है तृष्णा मूर्च्छा दाह रक्तपित्त इन्हैंशमन औ भेदन करै ॥ १३ ॥ बिजौरा पाचक कफज्वर पर बिजौरा की जड़ हड़ सोंठि पिपरामूल यवाखार डारिकै कफज्वरके बारहेंदिन काढ़ा पियै तौजल्दी पाचन करै ॥ १४ ॥ पुनः क्वाथ चिरायता नीम पीपरि कचूर शतावरि गुर्च भटकटैया यह काढ़ा कफज्वरनाशकरता है॥१५॥ पुनःक्वाथ

मृताविश्वकिरातैःसाधितंजलं । पञ्चभद्रमिदंज्ञेयं वातपित्तज्वरा-
पहं १७ क्षुद्राशुंठीगुडूचीनांकषायःपौष्करस्यच । कफवाताधिकेपे
यो ज्वरेवापित्रिदोषजे । कासश्वासारुचिकरेपार्श्वेशूलविधायिनि
१८ आरग्वधकणामूलंमुस्तातिक्ताभयाकृतः । क्वाथःशमयतिक्षिप्रं
ज्वरंवातकफोत्तरं । आमशूलप्रशमनो भेदीदीपनपाचनः १९ अमृ-
तारिष्टकटुका मुस्तेंद्रयवनागरैः । पटोलचंदनाभ्यांच पिप्पलीचूर्ण
युक्सृजं । अमृताष्टकमेतच्चपित्तश्लेष्मज्वरापहं । छर्द्यरोचकहल्लास
दाहतृष्णानिवारणं २० कंटकारीद्वयंशुंठी धान्यकंसुरदारुच ।
एभिःसृतंपाचकःस्यात्सर्वज्वरविनाशनः २१ शालिपर्णीपृष्टपर्णी
बृहतीद्वयगोक्षुरैः । विल्वोग्निमंथश्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः२२
दशमूलमितिख्यातं क्वथितंतज्जलंपिवेत् । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तं
वातश्लेष्महरंपरं २३ सन्निपातज्वरहरंसूतिकादोषनाशनं । शोप

पटोल त्रिफला कटुकी कचूर रूसा गुर्च मधुयुक्त इनका काढ़ा पीने
सें कफज्वर नाश होइ ॥ १६ ॥ पित्तपापराक्वाथ वातज्वरपर पित्त-
पापरा मोथा गुर्च सोंठि चिरायता इस पंचभद्र काढ़े से वातपित्त
ज्वर जाइ ॥ १७ ॥ छोटी भटकटैया क्वाथ कफ वात ज्वर पर भट-
कटैया सोंठि पुष्करमूल यह काढ़ा कफ बात ज्वर नाशकरै औ
सन्निपात ज्वर में पियै तौ कासश्वास अरुचि औ पसुड़ीकी पीड़ा
हरै ॥ १८ ॥ अमलतासादिक्वाथवातकफज्वरपरअमलतासपिपरा-
मूल मोथा कटुकी हड़ बात कफ ज्वर बेगही नाश करै आमशूल
शमन करै औ गोटा गिरावै अग्निदीपन पाचनकरै ॥ १९ ॥ अथ
अमृताष्टक क्वाथ गुर्च नीम कटुकी मोथा इंद्रयवसोंठि पटोलरक्त-
चंदन इनका क्वाथ पीपरि का चूर्ण डारिकै पीने से पित्त कफज्वर
नाशहोय उबकाई अरुचि इल्लाशदाह तृषा इनकोनिवारै ॥२०॥
भटकटैयादि क्वाथ सबज्वरनपर दोनों भटकटैयासोंठधनिया देव-
दारुयह पाचनक्वाथ सब ज्वरहरै ॥ २१ ॥ दशमूलक्वाथवातकफ पर
बनउर्दी बन मूंग दोनों भटकटैया गुषुरू बेल की जड़ अग्निमंथ
सोहन पत्ता खंभारी पाढ़ा ॥ २२ ॥ इन दशों की जड़का काढ़ा
पीपरि के चूर्णके संगपियै तौ बातकफज्वर नाशहोइ ॥ २३ ॥ सन्नि

शैत्यभ्रमस्वेद कासश्वासविकारनुत् । हृत्कंठग्रहपार्श्वार्ति तंद्रामस्तकशूलनुत् २४ अभयामुस्तधान्याकं रक्तचंदनपद्मकैः । वासकेन्द्रयवोशीर गुडूचीकृतमालकैः २५ पाढानागरतिक्ताभिः पिप्पली चूर्णयुक्सृतं । पिवेत्त्रिदोषज्वरजित्पिपासादाहकासनुत् २६ प्रलापश्वासतंद्राघ्नं दीपनंपाचनंपरं । विण्मूत्रानिलविष्टंभ वमीशोषा रुचिंजयेत् २७ कैरातकटुकीमुस्तं धान्येंद्रयवनागरैः । दशमूल महादारु गजपिप्पलिकायुतैः । कृतःकषायःपार्श्वार्ति सन्निपात ज्वरंजयेत् । कासश्वासवमीहिक्का तंद्राहृद्ग्राहनाशनः २८ कट्फलाम्बुदभार्गीभिर्धान्यारोहिपपर्पटैः । वचाहरीतकीशृंगी देवदारु महौषधैः । क्वाथःकासज्वरंहंति श्वासश्लेष्मगलग्रहान् । क्वाथोजीर्णज्वरहरंगुडूच्यापिप्पलीयुतः । तथापर्पटजःक्वाथः पित्तज्वरहरः परः २९ निदिग्धिकामृताशुंठी कषायंपाययेद्भिषक् । पिप्पली चूर्णसंयुक्तं श्वासकासार्दितापहं । पीनसारुचिवैश्वर्यशूलजीर्ण

पातज्वर सूतिका दोषसुखसूखनाशीतल अंगभ्रमपसीनाकासश्वास नाशकरै हृदय शूल पार्श्वपीर तंद्रा मस्तकशूल पार्श्व पीर तंद्रा सब सुक्त होय ॥२४॥ हरीतकी क्वाथ सन्नि ज्वर पर हड़ मोथा धनिया रक्तचंदन पद्माष खसा इंद्रयव खशगुर्च अमलतास ॥२५॥ पाढ़े की जड़ कुटकी पीपरिका चूर्ण समेत काढ़ा पियै तौ सन्निज्वर तृषादाह कासहरै ॥ २६ ॥ भ्रम श्वास तंद्राहरै दीपनपाचन करै वायुसे मलमूत्ररोध वमनकंठशोष अरुचिये उपद्रवनाशकरै ॥ २७ ॥ पुनरष्टांग दश मूल क्वाथ चिरायता कटुकी मोथा धनिया इंद्रयव सोंठ दश मूल देव गजपीपरि समेत क्वाथपियै तौ पशुरीपीर सन्नि ज्वर कास श्वास वमन हिचकी तंद्रा हृदय रोग नाश होई ॥ २८ ॥ कायफर कासज्वर पर कायफर मोथा भारंगी धनियां खस पित्तपापरा वच हड़ काकड़ाश्रृंगी देवदारु सोंठि इस काढ़े से कासज्वर नाशहोइ श्वास कफ कंठरोग मिटै गुर्चकाकाढ़ा पीपरियुक्त पियेसे जीर्णज्वर छूटै पित्तपापरे का क्वाथ पीपरियुक्त पीनेसे पित्त ज्वर जाइ ॥ २९ ॥ पुनः भटकटैया में पीपरि डारि पिये तौ कास

ज्वरापहं ३० क्षुद्राधान्यकशुंठीभि र्गुडूचीमुस्तपद्मकैः। रक्तचंदन भूनिंब पटोलवृषपौष्करैः। कटुकेंद्रयवारिष्ट भार्गीपर्पटकैःसमैः। क्वाथंप्रातर्निपिबेत सर्वशीतज्वरच्छिदं ३१ मुस्ताक्षुद्रामृताशुंठीधात्रीक्वाथःसमाक्षिकः। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तो बिषमज्वरनाशनः ३२ पटोलत्रिफलानिंबद्राक्षासंपाकवासकैः। क्वाथःसितामधुयुतो जयेदेकाहिकंज्वरं ३३ गुडूचीधान्यमुस्ताभि श्चंदनोशीरनागरैः। कृतं क्वाथंपिबेत्क्षौद्रं सितायुक्तंज्वरातुरः। तृतीयज्वरनाशाय तृष्णा दाहनिवारणं ३४ देवदारुशिवावासा शालिपर्णीमहौषधैः। धात्रीयुक्तंसृतंशीतंदद्यान्मधुसितायुतं। चातुर्थिकज्वरेश्वासे कासेमंदानलेतथा ३५ गुडूचीधान्यकोशीर शुंठीवालकपर्पटैः। बिल्व प्रतिविषापाढ़ा रक्तचन्दनवत्सकैः। किरातमुस्तेन्द्रयवैः क्वथितंशिशिरंपिबेत्। सक्षौद्रंरक्तपित्तघ्नं ज्वरातीसारनाशनं ३६ नागरंकूट

श्वास पीनस अरुचि गला बैठब शूल जीर्णज्वर ये रोग दूरहोयं॥ ३०॥ सर्व शीतज्वर पर भटकटैया क्वाथ भटकटैया धनियां सोंठि गुर्च मोथा पद्माख रक्तचंदन चिरायता पटोल रूसा भोचरस कटुकी इन्द्रयव नींब भारंगी पित्तपापरा इनका क्वाथ प्रात पिये तौ सब शीत ज्वर नाशहोय॥३१॥ विषमज्वरपर मोथा क्वाथ मोथा भटकटैया गुर्च सोंठि आमला सहत पीपरि युक्त पिये तौ विषमज्वर मुक्तहोय॥ ३२॥ नित्य आते ज्वर पर पटोल क्वाथ पटोल त्रिफला नीम दाख अमलतास रूसा सहत खांड़ युक्त पिये तो एकाह्निक ज्वर छुटै॥ ३३॥ तृतीयक ज्वर पर गुडूच्यादि क्वाथ गुर्च धनियां मोथा रक्तचंदन खस सोंठि इनका काढ़ा शक्कर सहतयुक्त पिये तौ तृतीयक ज्वर प्यास दाह ये उपद्रव निर्मुक्त होयं॥ ३४॥ चातुर्थिक ज्वर पर देवदारुक्वाथ देवदारु हड़ रूसा शालपर्णी सोंठि आंवरा इनका काढ़ा मधुमिश्री युक्त पियै तौ चातुर्थिक ज्वर जाइ श्वासकास मंदाग्नि सब दूर होइ॥ ३५॥ ज्वरातीसार पर गुडूच्यादि क्वाथ गुर्च धनियां खस सोंठि सुगंधवाला पित्तपापरा बेल अतीस पाढ़ा रक्तचंदन कुरैया चिरायता मोथा इन्द्रयव यह काढ़ा ठंढा करि सहत मिश्रित कर पियै तौ ज्वरातीसार रक्त

जोमुस्त मस्तातिविषातथा। एभिःकृतंपिबेत्काथं ज्वरातीसार नाशनं ३७ धान्यानागरविल्वाब्द वालकैःसाधितंजलं । आमशूलहरंग्राह्यं दीपनंपाचनंपरं ३८ सधान्यनागजःक्वाथ पाचनोदीपनस्तथा । एरंडमूलयुक्तश्च जयेदामानिलव्यथां ३९ वत्सकातिविषाविल्व मुस्तवालकजःसृतः । अतीसारंजयेत्सामं चिरजंरक्तशूलजित् ४० कुटजातिविषापाढा धातकीलोध्रमुस्तकैः । ह्रीवेरदाडिमयुतैः कृतःक्वाथःसमाक्षिकः । पेयोमोचरसेनैव कुटजाष्टकसंज्ञकः । अतीसारान्जयेद्दाह रक्तशूलाम दुस्तरान् ४१ ह्रीवेरधातकीलोध्रः पाढालज्जालुवत्सकैः । धान्याकातिविषामुस्ता गुडूचीविल्वनागरैः । कृतःकषायःशमयेदतीसारंचिरोत्थितं । अरोचकामशूलश्च ज्वरघ्नःपाचनःस्मृतः ४२ धातकीविल्वलोध्राणिवालकंगजपिप्पली । एभिःकृतंसृतंशीत शिशुभ्यःक्षौद्रसंयुतः । प्रदद्यादवलेहंवा सर्वातीसारशांतये ४३

पित्त नाश होइ ॥ ३६ ॥ पुनः सोंठि कुरैया मोथा गुर्च अतीस इस काढ़ेसे ज्वरातीसार जाइ ॥ ३७ ॥ आमशूल पर धान्यपंचक क्वाथ धनियां सोंठि बेल मोथा खस इनके क्वाथ से आमशूलजाइ ग्राही दीपन पाचन है ॥ ३८ ॥ सहित धनियां सोंठिकाक्वाथ दीपन पाचन है जो रंड की जड़ युक्त करै तौ आमवात दूर करै ॥ ३९ ॥ आमातीसार पर कुरैया क्वाथ सहित रक्तातीसार पर कुरैया मूल अतीस बेल मोथा खस इनका काढ़ा आमातीसार दूर करै ॥ ४० ॥ कुटजाष्टक कुरैया मूल अतीस पाढ़ा मूल धवफूल लोध मोथा हाऊबेर अनार इनका काढ़ा मधु मोचरस युक्त पिये तो सब अतीसार जाइं इसको कुटजाष्टक कहते हैं दाह रक्त कठिन शूल दूरि करै ॥ ४१ ॥ अतीसार पर हाऊबेरक्वाथ हाऊबेर धवफूल लोध लजालू कुरैया धनियां अतीस मोथा गुर्च बेल सोंठि इनके काढ़ा से चिरकाल का अतीसार दूर होइ अरोचक आमशूल ज्वर हरै पाचन है ॥ ४२ ॥ बालकन के सब अतीसार पर क्वाथ धवफूल बेल लोध सुगन्धवाला गजपीपरि इनका काढ़ा मधु युक्त देइ वा अवलेह बनाके दे तो सबअतीसार जाइं ॥ ४३ ॥

शालपर्णीवलाविल्व धान्यंशुंठीकृतःसृतः । अध्मानशूलसहितां वातजांग्रहणींजयेत् ४४ गुडूच्यतिविषाशुंठीमुस्तैःक्काथःकृतो जयेत् । आमानुसक्तांग्रहणींग्राहीपाचनदीपनः ४५ यवधान्यपटोलानां क्काथःसक्षौद्रशर्करः । योज्यंछर्द्यतिसारेषु विल्वाम्रास्थिभवस्तथा ४६ त्रिफलादेवदारुश्चमुस्तामूषककर्णिका । शिग्रुरेतत्कृतःक्काथः पिप्पलीचूर्णसंयुतः । विडंगचूर्णयुक्तश्च कृमिघ्नःकृमिरोगहा ४७ फलत्रिकामृतातिक्ता निंवकैरातवासकैः । जयेन्मधुयुतःक्काथः कामलापीततांतथा ४८ पुनर्नवाभयानिंवदार्वीतिक्तपटोलकैः । गुडूचीनागरयुतः क्काथोगोमूत्रसंयुतः । पांडुकासोदरश्वासशूलसर्वांगशोथहा ४९ वासाद्राक्षाभयाक्काथः पीतःसक्षौद्रशर्करः । निहंतिरक्तपित्तार्तिंश्वासकासंच दारुणं ५० रक्तपित्तक्षयंकास श्लेष्मपित्तज्वरंतथा । केवलोवास-

संग्रहणी पर बनउर्दीक्काथ बनउर्दी वरियारा बेलधनियां सोंठि केकाढ़े से पेटफूल नाभिशूल सहित वातग्रहणी दूर होइ॥४४॥ चतुर्भद्रक्काथ गुर्च अतीस सोंठ मोथा यह आमाशक्ति ग्रहणी दूर करै दीपन पाचन करै॥४५॥ सर्वातीसार पर इंद्रयव धनियां पटोल इनका काढ़ा खांड़ सहत संग खाइ तो छर्द अतीसार जाय आमकी गुठली बेलका काढ़ा सहत मिश्रीयुक्त पिये से सब अतीसार जाय॥४६॥ कृमि पर त्रिफलाक्काथ त्रिफला देवदारु मोथा मूसाकरणी सहिंजनक्काथ पीपरि विडंगयुक्त पिये से कृमि औ कृमिज उपद्रव सब जाइं॥४७॥ कामलपर त्रिफलादिक्काथ त्रिफला गुर्च कटुकी नीम चिरायता रूसा इस क्काथ को सहत समेत पिये तो कमलपांडु नाशहोय॥४८॥ पांडु पर गदापुरैनाक्काथ शोथादिक कामपर गदापुरैना हड़ नींब दारुहरदी कटुकी पटोल गुर्च सोंठि इनका काढ़ा पिये तो पांडुकास उदररोगश्वासउदर शूल सर्वांग सूजन अच्छीहो॥४९॥ रक्तपित्त पर रूसाक्काथ रूसा दाख हड़ इसका काढ़ा सहत वा मिश्रीयुक्त पिये रक्तपित्त पीड़ा दारुण कासश्वास जाइ॥५०॥ पुनः रूसेका काढ़ा सहत संग पियेसे रक्त

कः क्काथः पीतं क्षौद्रेणनाशयेत् ५१ वासाक्षुद्रामृताक्काथः क्षौद्रेण ज्वरहा सदा । कासघ्नं पिप्पलीचूर्णयुक्तः क्षुद्रासृतस्तथा ५२ क्षुद्रा कुलत्थवासाभि र्नागरेणचसाधितः । क्काथः पौष्करचूर्णाढ्यः श्वास कासौ निवारयेत् ५३ रेणुकापिप्पलीक्काथो हिंगुकल्केनसंयुतः । पानादेवहिपञ्चापिहिक्कान्नाशयतिक्षणात् । जयेत्त्रिदोषजांछर्दिं पर्पटः पित्तजांतथा ५४ विल्वात्वचोगुडूच्यावाक्काथः क्षौद्रेणसंयुतः । जयेत्त्रिदोषजांछर्दिं पर्पटः पित्तजांतथा ५५ हिंगुपौष्करचूर्णाढ्यो दशमूलसृतोजयेत् । गृध्रसीकेवलः क्काथ सेफालीपत्रजस्तथा ५६ रास्नामृतामहादारु नागरैरैंडजंसृतं । सप्तधातुगतेवातेसामैस- र्वांगगेपिवेत् ५७ रास्नागोक्षुरिकैरंडदेवदारुपुनर्नवः । गुडूच्यारग्व- धश्चैवक्काथमेषांविपाचयेत् । शुंठीचूर्णेनसंयुक्तंपिवेज्जंघाकटीग्रहे । पार्श्वपृष्ठोरुपीडायामामवातेसुदुस्तरे ५८ रास्नाद्विगुणभागस्या-

पित्त छयी कास कफ पित्तज्वर नाशहोय ॥ ५१ ॥ कासज्वर पर वासाक्काथ रूसा भटकटैया गुर्च मधुयुक्त खानेसे ज्वरकास मिटै जो भटकटैया का काढ़ा पीपल चूर्ण संयुक्त दे तो खांसी मिटै ॥ ५२ ॥ कासश्वास पर क्षुद्रादिक्काथ भटकटैया कुरथी रूसा सोंठि पुष्कर- मूलका चूर्णयुक्त पिये से कासश्वास जाइ ॥ ५३ ॥ हिक्का पर मेवड़ी क्काथ मेवड़ी का बीज पीपरि हींग भुनी युक्त पिये से पांचों प्रकार की हिचकी जाइ ॥ ५४ ॥ उबकाई पर विल्वादिक्काथ बेलकीछाल वा गुर्च का काढ़ा मधुयुक्त पियेतो त्रिदोषजन्य छर्दि मिटै जो पित्तपापरा सहतयुक्त पिये से पित्तछर्दि जाइ ॥ ५५ ॥ गृध्रसी वायुपर दशमूलक्काथ हींग पुष्कर मूलका चूर्ण प्रथम कहे दशमूलक्काथ में युक्त करि पियै तौ गृध्रसी वायु जाइ जो मेवड़ी क्काथमें हींग व रंडमूल चूर्ण युक्त पिये तो तुरंत गृध्रसी वायु मिटै ॥ ५६ ॥ वायुपर रासन पंचक क्काथ रासन गुर्च देवदारु सोंठि रंडमूल ये काढ़ा पियेसे सप्तधातु गत वात सब अंगवायु दूरिहो ॥ ५७ ॥ वायु पर रासना सप्त रासन गुखुरू रंड देवदारु गदापुरैना गुर्च अमलतास ये काढ़ा सोंठि चूर्ण डारिकै पियेसे जांघ कटि पसुरी पीड़ छाती औ भारी आमवात मिटै ॥ ५८ ॥ संपूर्ण वायु पर महा

द्वेकभागास्ततोपराः । धन्वयासवलैरंडदेवदारुशठीवचः। वासको नागरंपथ्याचव्यःमुस्तपुनर्नवा।गुडूचीवृद्धदारुश्चशतपुष्पाश्चगो-क्षुरः। अश्वगन्धाप्रतिविषा कृतमालशतावरी । कृष्णासहचरश्चैव धान्यकंवृहतीद्वयं।एभिःकृतंपिवेत्क्काथंशुंठीचूर्णेनसंयुतम्। कृष्णा चूर्णेनवायोगराजगुग्गुलकेनवा। अजमोदादिनावापितैलेनैरंडजे-नवा। सर्वांगकंपेकुब्जत्वपक्षाघातेथवाहुके। गृध्रस्यामामवातेच श्लीपदेचापतन्त्रके। अण्डवृद्धौतथाध्माने जंघाजानुगदेर्दिते। शु-क्रमायेमेदरोगेवन्ध्यायोन्यामयेपुच। महारास्नादिराख्यातोब्रह्म-णागर्भकारणं ५९ एरंडोवीजपूरश्चगोक्षुरंवृहतीद्वयं। अश्मभेद-स्तथाविल्व एतन्मूलैःकृतःसृतः । एरंडतैलहिंग्वाढ्योयवक्षारः ससैंधवः।स्तनकंधकटीमेढ्र हृदयोत्थव्यथांजयेत्६० नागरैरंडयोः क्काथःक्काथमिन्द्रयवस्यवा । हिंगुसौवर्चलोपित्तोवालशूलनिवा-रणाः ६१ त्रिफलारग्वधःक्काथः शर्कराक्षौद्रसंयुतः। रक्तपित्तहरो

रासनादि क्काथ दोभाग रासन और सब एक भागमें जवासा वरियारा रंड देवदारु कचूर वच रूसा सोंठि हड़ चावमोथा गदा पुरैना गर्व विधारा सौंफ गुखुरू असगंध अतीस अमलतास शता-वरि पीपरि इंद्रयव धनियां दोनौं भटकटैया इसका काढ़ा सोंठि चूर्णडारि पाक वा पीपरिका चूर्ण वा योगराज गुग्गुल साथ अज-मोदादि चूर्णके संग वा रेंडी के तेलके संग तौ सर्वांग कंप कूबड़ पक्षाघात वाहुक गृध्रसी आम पीलपाव अपतंत्र अंडवृद्धि पेट फू-लना जंघापीर धातुरोग वंध्याकी योनि दुष्टतायह महारास्नादि क्काथ ब्रह्माने कहाहै इसमें बहुत मनुष्य एकऔषधिका दूनारास-नलेते हैं सो अनुचितहै ॥ ५९ ॥ छातीकी वायुपर अरंडका मम्मक रंड बिजौराकी जड़ गुखुरूदोनौं भटकटैया पाषाण भेदलकरी बेल इन सब जड़नका काढ़ा रेंडी का तेल हींग पवार सैंधव युक्त पिये तौ स्तन पीड़ा कंठमेढ़ हृदय सब पीड़ा मिटैं ॥ ६० ॥ वातशूल पर शुंठी क्काथ सोंठि रंड मूल वा इन्द्रयव का काढ़ा भुनी हींग कालानोन युक्त पियेसे बात शूलजाय ॥ ६१ ॥ पित्तशूल पर त्रिफला

दाहपित्तशूलनिवारणः ६२ एरंडमूलद्विपलं जलेष्टगुणितेपचेत् । तत्क्काथोयावशूकाषः पार्श्वहृत्कफशूलहा ६३ दशमूलकृतःक्काथो यवक्षारःससैंधवः । हृद्रोगगुल्मशूलानिकासंश्वासंचनाशयेत् ६४ हरीतकीदुरालंभा कृतमालकगोक्षुरैः । पाषाणभेदसहितैः क्काथो माक्षिकसंयुतः । विवंधेमूत्रकृच्छ्रे चसदाहेसरुजेहितः ६५ वीर तरुवृक्षवंदा कासस्सहचरत्रयं । कुशद्वयंनलोगुंद्रा वकपुष्पोग्नि मंथकः । मूर्वापाषाणभेदश्चश्योनाकोगोक्षुरस्तथा । अपामार्गश्च कमलं ब्राह्मीचेतिगणोवरः । वीरतर्वादिरित्युक्तःशर्कराश्मरिकृच्छ्र-हा । मूत्रघातंवायुरोगा न्नाशयेन्निखिलानपि ६६ एलामधूकगो-कंट रेणुकैरंडवासकाः । कृष्णाश्मभेदसहिताः क्वाथयेपांसुसाधि-तः । शिलाजतुयुतःपेयः शर्कराश्मरिकृच्छ्रहा ६७ समूलगोक्षुरः क्काथः शितामाक्षिकसंयुतः । नाशयेन्मूत्रकृच्छ्राणि तथाचोष्णास-

क्वाथ त्रिफला अमलतास इन काढ़े में शक्कर सहत युक्त करि पिये से रक्त पित्तदाह पित्तशूल जाय ॥ ६२ ॥ कफशूल पर रंडमूल क्वाथ रंडकी जड़ दोपल सोरह पल पानी में काढ़ा करि यवाक्षार डारि पिये कफजन्य पार्श्वपीर हृदयपीर नाशहोय ॥ ६३ ॥ हृदय रोग पर दशमूलक्वाथ दशमूलका काढ़ा यवाखार सेंधव युक्त पिये से हृदि रोग वायुगोला कास स्वास नाश होय ॥ ६४ ॥ मूत्रकृच्छ्र पर हरीतकी क्वाथ दशमूल का काढ़ा यवाखार सेंधव युक्त पिये से हृदिरोग वायुगोला कासस्वास नाशहोय ॥ ६५ ॥ हड़ जवासा अमलतास पाषाणभेद गुखुरू इनका काढ़ा सहत संयुक्त पिये से मलमूत्र रोधदाह सहित सब रोग अच्छे होयं मूत्रक्वाथ पर अर्जुनक्वाथ आकाशवल्लरि कासकल तीनों कटसरैया नल दोनोंकुश नरकटमूल गोंदी शिवलिंगी अरणी तूर्ण हालकारी पाषाणभेद वा करील गुखुरू चिर्चिरा कमलपत्र यह पीतरव श्रेष्ठ गण है इस क्वाथको पिये सें शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात संपूर्ण वायुरोग नाशहोय ॥ ६६ ॥ पथरीशर्करादिपर एलाक्वाथइलायची सुरेठी गुखुरू मेवड़ी बीजरंड रूसा पीपरि पाषाणभेद इनका काढ़ा शिलाजीत संयुक्त पियेसे शर्कराप्रमेह मूत्रकृच्छ्रवे रोगनाश

क्षीरजं ६८ वराब्दार्व्यब्ददारूणांक्वाथःक्षौद्रेणमेहहा। वत्सकस्त्रि-
फलादार्वीमुस्तकोबीजकस्तथा ६९ फलत्रिकाब्ददार्वीणां वि-
शालायाःशृतंपिबेत् । निशाकल्कयुतःसर्वं प्रमेहंविनिवर्त्तयेत् ७०
दार्वीरसाञ्जनमुस्तं भल्लातःश्रीफलंवृषः । कैरातश्चपिबेदेषां क्वाथं
शीतंसमाक्षिकं । जयेत्सशूलप्रदरंपीतश्वेतासितारुणं ७१ न्यग्रो-
धप्लक्षकोशाम्र वेतसोबदरीतुणिः । मधुयष्टीप्रियालश्च लोध्रद्वय
मुदुंबरः । पिप्पलश्चमधूकश्चतथापालाशपिप्पलः । सल्लकीतिं-
दुकीजंबूद्वयमाम्रतरुःशिवा । कदंबककुभैश्चैवभल्लातकफलानिच।
न्यग्रोधादिगणक्वाथं यथालाभंप्रकारयेत् । अयंक्वाथोमहाग्राही
व्रणभग्नंचसाधयेत् । योनिदोषहरोदाह मेदोमेहविषापहं ७२
बिल्वोग्निमंथश्योनाकःकाश्मरीपाटलातथा । क्वाथमेषांजयेन्मेदो

होयं ॥ ६७ ॥ मूत्रकृच्छ्र पर गोखुरूक्वाथ गोखुरूके पंचांगका काढ़ा
मिश्री सहतसंयुक्त पिलावै तो मूत्रकृच्छ्र उष्णवायु अच्छीहोय ॥ ६८ ॥
मूत्रकृच्छ्र पर त्रिफलाक्वाथ त्रिफला दारुहल्दी मोथा देवदारु इन-
का काढ़ा सहत संयुक्तपिये तो प्रमेह नाशहोय पुनः तैसेही कुरैया
त्रिफला दारुहल्दी मोथा ककही इनका काढ़ा सहत सहित पिये
तो प्रमेह नाशहोय ॥ ६९ ॥ प्रमेह पर त्रिफलाक्वाथ त्रिफला मोथा
दारुहल्दी इन्द्रायण की जड़ इनका काढ़ा हर्दी संयुक्त पिये
तो सकल प्रमेह नाशहोय ॥ ७० ॥ प्रदर पर दारुहर्दीक्वाथ दारु
हर्दी रसवत मोथा भिलावा तेन्दूसा चिरायता इनका काढ़ा
ठंढा करि मधुसंयुक्त पिये तो पीतश्वेत कालालाल सहित शूल सों
का प्रदररोग अच्छाहोय ॥ ७१ ॥ क्षतव्रणादि पर वरादिकक्वाथ
वर पाकर आंमल वेतस वरतुनि मधुजेठी चिरौंजी लोध गूलरी
पीपरि मधूक जगन्नाथीपीपरि पलाश तिन्दुक दोनों जामुनआम
हड़ कदंब अर्जुनतरु भिलावेका फल जो द्रव्य इनसें न मिलै सो
त्यागि देइ यह न्यग्रोधादिगणक्वाथ बहुत ग्राहीहै जो घाव खराब
होगया तो अच्छा हो योनिदोष दाह मेद प्रमेह विष ये सब
नाश होयं वेतसको कहीं जगन्नाथीपीपरि कहते हैं ॥ ७२ ॥ मेद-
रोग पर बेलक्वाथ बेलअरणी सोहनपात खंभारी सिरस इसका

दोषंक्षौद्रेणसंयुतः ७३ क्षौद्रेणत्रिफलाक्काथःपीतोमेदोहरःस्मृतः । शीतीभूतंतथोष्णांबु मेदोहृत्क्षौद्रसंयुतं ७४ पथ्याचित्रकविश्वानां साधितोदेवदारुणा । क्काथस्त्रिवृच्चूर्णयुतोगोमूत्रेणोदरंजयेत् ७५ पुनर्नवामृतादारु पथ्यानागरसाधितः । गोमूत्रगुग्गुलयुतःक्काथः शोथोदरापहः ७६ पथ्यारोहितकंक्काथं यवक्षारकणायुतं । पिबेत्प्रातर्यकृत्प्लीह गुल्मोदरनिवृत्तये ७७ पुनर्नवादारुनिशा निशा शुंठीहरीतकी । गुडूचीचित्रकोभार्गी देवदारुकृतःसृतः ७८ पाणि पादोदरमुरः प्राप्तंशोफंनिवारयेत् । फलत्रिकोद्भवंक्काथं गोमूत्रेणैवपाययेत् । वातश्लेष्मकृतंहंति शोथंवृषणसंभवं ७९ रास्ना मृतावलायष्टी गोकंठैरंडजःसृतः । एरंडतैलसंयुक्तो वृद्धमंत्रभवां जयेत् ८० कांचनारत्वचःक्काथःशुंठीचूर्णेनसाधयेत् । गण्डमालां तथाक्काथः क्षौद्रेणवरुणत्वचः ८१ साखोटवल्कलक्काथं गोमूत्रेण

काढ़ा सहत संग पिवे तो मेद दोष मिटै ॥ ७३ ॥ पुनः त्रिफलादि क्काथ त्रिफले का काढ़ा सहत संग पिवे तो मेददोष जाय उष्णजल ठएढा करि सहत संयुक्त पिवे तो मेद दोष जाय ॥ ७४ ॥ उदररोग पर चावक्काथ चाब चीता सोंठि देवदारु इनका काढ़ा निसोत चूर्ण गोमूत्र के साथ पिवे तो उदररोग दूर होय ॥ ७५ ॥ पेटफूलने पर गदापुरैनाक्काथ—गदापुरैना गुर्च देवदारु सोंठ यह काढ़ा गोमूत्र गुगलयुक्त पिये से पेटकी सूजन मिटै ॥ ७६ ॥ पिलही पर हरीतक्यादिक्काथ—हड़ अगियाखर यह काढ़ा यवाखार पीपरि युक्त पियेसे प्लीहा वायुगोला यकृत अच्छीहो रोहितनाम करिके खर लेना ॥ ७७ ॥ शोथ पर गदापुर्ण्याक्काथ—गदापुरैना दारुहल्दी सोंठ हड़ गुर्च चीता भारंगी देवदारु इनके क्काथ सेहाथ पांव उदर छाती मुखकी सूजन जाय ॥ ७८ ॥ अंडवृद्धि सूजन पर त्रिफलाक्काथ त्रिफलाके काढ़ेमें गोमूत्र संयुक्त करि पिये से वात कफ जन्य अंडवृद्धि जाय ॥ ७९ ॥ आंतवृद्ध पर रासनक्काथ रासन गुर्च बरियारा मुरैठी गुखुरू रेंड यह काढ़ा में रेंड़ी के तेल युक्त पिये से अंडवृद्धि मिटै ॥ ८० ॥ गण्डमाला पर कचनारक्काथ—कचनार की छाल का काढ़ाके सोंठ चूर्णयुक्त पिये से गण्डमाला जाय ॥ ८१ ॥ पीलपाव

युतंपिवेत् । श्लीपदीनांविनाशाय मेदोदोषनिवृत्तये ८२ पुनर्नवा वरुणयोः क्वाथोंतर्विद्रधिंजयेत् ८३ तथाशिग्रुभवःक्वाथो हिंगुसैंधवसंयुतः । वरुणादिगणक्वाथमपक्केमध्यविद्रधौ । उपकादिरजोयुक्तं पिवेच्छमनहेतवे ८४ वरुणोदकपुष्पन्वविल्वापामार्गचित्रकं। अग्निमंथद्वयंशिग्रु द्वयंचवृहतीद्वयं । सरेकत्रयंमूर्वामेषशृंगीकिरातकः । अजाशृंगीचविम्बीचकरंजश्वशतावरी । वरुणादिगणक्वाथः कफमेदोहरःस्मृतः । हंतिगुल्मंशिरःशूलं तथाविद्रधिपीनसान् ८५ खदिरत्रिफलाक्वाथो महिषीघृतसंयुतः । विडंगचूर्णयुक्तश्च भगंदरविनाशनः ८६ पटोलत्रिफलारिष्ट किरातखदिराशनैः । क्वाथःपीतोजयेत्सर्वा नुपदंशान्सगुग्गुलः ८७ अमृतैरंडवासानां क्वाथएरंडतैलयुक् । पीनस्सर्वांगसंचारि वातरक्तंजयेद्ध्रुवं ८८

पर सहोड़ाक्वाथ सहोड़े का काढ़ा गोमूत्र सहित पिये तो युक्त पीलपाव मेददोष मिटै ॥ ८२ ॥ अंतरविद्रधि पर गदापूर्णक्वाथ गदापुर्ना वरुणा इनका क्वाथपिये तो भीतरका फोड़ा व पिड़की अच्छी होय ॥ ८३ ॥ इसीभांति सहंजनक्वाथ हींग सेंधव डारिपिये तो वरुणादिक काढ़ामें उपकादिचूर्ण शमनहेतु मिलावे तो कच्ची मध्यविद्रधी अच्छी होय ॥ ८४ ॥ अथ वरुणादिगतक्वाथ वरणापच सौलसिरी वा झिजुगुरी आवेल चिञ्चिरा चीता दोनों अरणी दोनों सहिंजन दोनों भटकटैया तीनों कटसरिआसुसे मेषशृंगी चिरायता बनकुंदरू मूल वा पालर करंज शतावरि इस वरुणादि गण क्वाथसे मेदादोष शुद्ध होय गुल्म शिरोशूल अन्तरविद्रधी पीनस सब दूरहोय मेढ़ासिंगी प्रसिद्ध है ॥ ८५ ॥ भगन्दरपर खदिरादिक्वाथ खैर त्रिफलाका काढ़ा भैंस का घृत वायविडंग के चूर्ण संयुक्त पिये तो भगन्दर अच्छा होय ॥ ८६ ॥ उपदंशकहे गरमी पर पटोलादिक्वाथ खैर त्रिफलाका काढ़ा पटोल त्रिफलावीव चिरायता खैरका हीर आसन गुग्गुलके साथ इन औषधिन का क्वाथ पिये तो सब उपदंश दूरहोय ॥ ८७ ॥ वातरक्त पर गुडूच्यादिक्वाथ गुर्च रेंडकी मूल रूसा इनका क्वाथ रेंडके तेलके संग पिये तो सर्वांग प्रवर्ती वातरक्त निश्चय करिके दूरहोय ॥ ८८ ॥

पटोलंत्रिफलातिक्तागुडूचीचशतावरी । एतत्क्काथोजयेत्पीतोवाता-
स्रंदाहसंयुतं ८९ क्काथोवल्गुजचूर्णाढ्यो धात्रीखदिरसारयोः।जये-
त्सुशालितोनित्यं श्वित्रंपथ्यासिनांनृणां ९० मंजिष्ठात्रिफलाति-
क्ता वचादारुनिशामृता । निम्वश्चैषांकृतःक्काथो वातरक्तविनाशनः।
पामाकपालिकाकुष्ठ रक्तमंडलजन्मतः ९१ मंजिष्ठामुस्तकटुजो
गुडूचीकुष्ठनागरैः । भार्गीक्षुद्रावचानिंव निशाद्वयफलत्रिकैः ९२
पटोलकटुकामूर्वीविडंगासनचित्रकैः । शतावरीत्रायमाणा कृष्णेन्द्र
यवत्रासकैः ९३ भृङ्गराजमहादारु पाढाखदिरचंदनैः । त्वग्वरुणा
कैरात वाकुचीकृतमालकैः । सास्फोटकमहानिंव करंजातिविषा-

दूसरा पटोल त्रिफला कटुकी गुर्च शतावरि इनका काढ़ा पिये
तो वातरक्त दाहयुक्त आराम होय ॥ ८९ ॥ आँवरा खैरसार दोनों
का काढ़ा व कुचौ चूर्णयुक्त थोड़े दिनोंके भये कुष्टपर अभ्यास कर
पिये औ पथ्य यथावत् करे तो श्वेतदाग मिटजाइ ॥ ९० ॥ वातरक्त
कुष्टपर लघु मंजिष्टादिक्काथ मजीठ त्रिफला कटुकी बच दारुहर्दी
गुर्च निम्ब इनका क्काथ पिये से वातरक्त कंडुगलित कुष्ट रक्तमंडल
दूरहोय ॥ ९१ ॥ सर्वकुष्ट वृद्धि मंजिष्टादिक्काथ मजीठ मोथा
कुरैया गुर्च कूट सोंठ भारंगी भटकटैया बच नीम दोनों हर्दी
त्रिफला ॥ ९२ ॥ पटोल कटुकी मुर्री वायविडंग आसनचीता शता-
वरि त्रायमाणा पीपरि इन्द्रयव रूसा भंगरा देवदारु पाढ़ा ख-
दिरसार रक्तचन्दन निशोथ बरुण चिरायता वकुची अमलतास
छोरा मकोयन करंज अतीस खस इंदारू जवासा साव पित्तपापड़ा
ये सब द्रव्य समान लेके काढ़ा करि पीपरि गुग्गुल मिश्रित करि
पियेसे अठारहो कोढ़ औ वातरक्त पीड़ा उपदंश पीलपाव प्रसुप्त
कहे शून्यवायु पक्षाघात मेदादोष नेत्ररोग यह वृद्धि मंजिष्टादि
क्काथ इन रोगनके दूर करने को हित है शिरोशूल नेत्र पर हरी-
तकीक्काथ हड़ बहेड़ा आंवरा भूनिम्ब कहे चिरायता निशानिंव
आंबाहर्दी गुर्च इस षडंग काढ़ेमें गुड़ मिश्रित करि पिये से शि-
रोशूल भौंह कान आधाशीशी सूर्यावर्त्त लेवाड़ी दंतपात रोग-
दंत रतौंधी पटल फूली नेत्ररोग नेत्रपीड़ा ये सब दूर होयं ॥ ९३ ॥
नेत्ररोग पर अरूसादिक्काथ रूसा सोंठ गुर्च हर्दी रक्तचन्दन

जलैः । इन्द्रवारुणिकानंता सारिवापर्पटैःसमैः । एभिःकृतंपिबे त्क्वाथं कणागुग्गुलसंयुतं ९४ अष्टादशेषुकुष्टेषु वातरक्तादितेतथा । उपदंशश्लीपदेच प्रसुप्तपक्षघातके । मेदोदोषेनेत्ररोगे मंजिष्ठादिःप्रशस्यते ९५ पथ्याक्षधात्रीभूनिंबैर्निशानिंबामृतायुतैः । क्वाथःकृतःषडंगोयं सगुडःशीर्षशूलहा । भ्रूशङ्खकर्णशूलानि तथा चार्द्धशिरोरुजं । सूर्यावर्त्तंशेषकञ्च दंतपातंचतद्रुजं । नक्ताध्यंपटलं शुक्रं चक्षुःपीडांव्यपोहति ९६ वासाविश्वामृतादार्वी रक्तचन्दन चित्रकैः । भूनिंबनिंबकटुकीपटोलत्रिफलांबुदैः । यवकालिंगकुटजैः क्वाथःसर्वाक्षिरोगहा । वैश्वर्य्यंपीनसंश्वासं नाशयेदुरसःक्षयं । अमृतात्रिफलाक्वाथः पिप्पलीचूर्णसंयुतः । सक्षौद्रःशीतलोनित्यं सर्वनेत्रव्यथांजयेत् । अश्वत्थोदुम्बरप्लक्ष वटवेतसजःसृतः । व्रणः शोथोपदंशानां नाशनःक्षालनात्स्मृतः । प्रमथ्यापोच्यतेद्रव्य पलात्कल्कीकृतात्सृता । तोयेष्टगुणितेतस्याः पानमाहुःपलद्वयं ९७ मुस्तकेंद्रयवैःसिद्धा प्रमथ्यार्द्धपलोन्मिता । सुशीतामधुसंयुक्ता रक्तातीसारनाशिनी ९८ साध्यंचतुःपलंद्रव्यं चतुःषष्टिपले-

चीता चिरायता नीम कटुकी पर्वल त्रिफला मोथा यव इन्द्रयव कुरैया इस क्वाथसे सब नेत्र रोग नाशहोयं स्वरभंगसे कंठ खुलजाय पीनस श्वास कलेजे का घाव जाता रहै ॥ ९४ ॥ दूसराक्वाथ पर्व यथा गुर्च त्रिफलेका काढ़ा सहत पीपरि संयुक्त ठण्डाकरि पीने से सर्व नेत्ररोग बिनाश होयं ॥ ९५ ॥ व्रत पर पिप्पल्यादि क्वाथ पीपर गूलर पकरिया बेड बेतस इनका काढ़ा करि घाउ धोवै तो उपदंश कहे गर्मी औ घाव सूजन सब अच्छा होय ॥ ९६ ॥ क्वाथ की दूसरीबिधि औषधी पीसके गोली बनावै तब अठगुणा पानी में डारि काढ़ा करै जब चौथाई पानी रहै तब उतारि ले उसे प्रमथ्या कहते हैं इसके पानकी मात्रा दोपल है ॥ ९७ ॥ रक्तातीसार पर मोथादि प्रमथ्या मोथा इंद्रयवका प्रमथ्या दोपल ठंढा करि मधुमिश्री युक्त पिये से रक्तातीसार नाशहोय ॥ ९८ ॥ यवागू बिधान षोडश तोले द्रव्यमें उसका सोलहगुणा पानी २५६ तोले

वुनि । तत्क्वाथेनार्द्धशिष्टेन यवागूंसाधयेद्बुधः ९९ आम्रामातक जंबूत्वक् कषायेविपचेद्बुधः । यवागूंशालिभिर्युक्तां तांभुक्ताग्रहणीं जयेत् १०० कल्कद्रव्यंपलंशुंठीपिप्पलीचार्द्धकार्षिकी । वारिप्रस्थेनविपचे त्सद्रव्योयूषउच्यते १ कुलत्थयवकोलैश्च मुद्गैर्मूलकशुष्ककैः । शुंठीधान्याकयुक्तैश्च यूषश्लेष्मानिलापहः । सप्त मुष्टिकइत्येषः सन्निपातज्वरांजयेत् । आमवातहरंकंठं हृदिवक्र विशोधनः २ क्षुणांद्रव्यंपलंसाध्यं चतुःषष्टिपलेजले । अर्द्धशिष्टंच तद्द्रव्य पानेभक्तादिसंविधौ ३ उसीरपर्पटोदीच्य मुस्तनागरचंदनैः । जलंसृतंहिमंदेयं पिपासाज्वरनाशनं ४ अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्द्धकेनवा । अथवाक्वाथनेनैव सिद्धमुष्णोदकंवदेत् ५ श्ले-

भर देय आधा जरिजाय तब द्रव्य छानिकै फेंकदेइ जो पानीरह-जाय उसे यवागू कहते हैं इस पानीसे रोगी को पथ्य देते हैं इस प्रकार जो शेष रहा पानी तिसमें पथ्य चुरावै जब रसका शोषि लेइ तब देतेहैं ॥ ९९ । १०० ॥ यूषविधान सोंठकाकल्क औषधि एक पल तिसमें पीपरि पांच मासे प्रस्थभर पानीमें पचाइ तिसमें अन्न खूब गलाइकै देइ उसे यूषकहते हैं ॥ १ ॥ सन्निपात पर सप्तमुष्टि यूष कुरथी यवबेर मूंग मूरीकी पेंदी जो पत्ताके पास होती है ये सब सूखी द्रव्य इन सबका यूष सोंठ धनियां युक्त प्यावै तो कफ-वात नाशहोइ ये सप्तमुष्टिक यूषसे सन्निपात ज्वर जाइ आमवात जाइ कण्ठ हृदय मुख शुद्ध रहै ॥ २ ॥ पानादि कल्पना कुटी द्रव्य पलभर चौंसठि पल पानीमें औटै जब आधा रहिजाय उस पानी को भक्त कहते हैं इसे भोजन समय देना थोड़ा थोड़ा करि देना चाहिये ॥ ३ ॥ ज्वर तृषा पर उसीरादि पान खस पित्त पापड़ा सुगंधवाला मोथा सोंठि रक्तचन्दन इन्हैं पकाइ पानी ठंढा कर देय तौ पियास ज्वर नाशहोइ ॥ ४ ॥ उष्णोदक चिक अठवां अंश वा चौथा अंश अर्द्ध शेष अथवा अतितप्तकरै उसे उष्णोदक कह-तेहैं अथ सुश्रुतोक्तश्लोक सार्द्धद्वयं॥ तत्पादहीन वातघ्नं मर्द्धहीनंत पित्तजित्। कफघ्नं पादशेषंचपानीयं दीपनंस्मृतं। शारदंचार्द्धपादोनं पादहीनंतुहेमनं। शिशिरेचवसंतेचग्रीष्मेपादावशेषतं। विपरीतसृतं

ष्मामवातमेदोघ्नं वस्तिशोधनदीपनं । कासश्वासज्वरंहंति पीत मुष्णोदकंनिशि६ क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीरान्नीरंचतुर्गुणं । क्षीराव-शेषंतत्पीतं शूलमामोद्भवंजयेत् ७ अथान्नप्रक्रियाचैव प्रोच्यतेना-तिविस्तरात् । यवागूःषड्गुणजले सिद्धास्यात्कृशरापना ८ तंदुलै मुंद्गमाषैश्च तिलैर्वासाधिताहिता । यवागूर्ग्राहणीवल्या तर्पणी वातनाशिनी ९ विलेपीघनाक्वाथो सिद्धानीरेचतुर्गुणे १० वि-लेपीतर्पिणीहृद्यामधुरापित्तनाशिनी ११ यूषोवलकरःकंठ्यो लघु पाकोकफापहः १२ जलेचतुर्दशगुणेतंदुलानांचतुःपलं । विपचेत्स्रा-वयेन्मंडं सभक्तोमधुरोलघुः १३ नीरेचतुर्दशगुणे सिद्धोमंडस्त्व-सिक्थकः । शुंठीसैंधवसंयुक्तः पाचनोदीपनःस्मृतः १४ धान्यत्रि-कटुसिंधूत्थ युक्तस्तक्रेणयोजितः । अष्टश्चहिंगुतैलाभ्यां समंडोष्ट गुणःस्मृतः । दीपनःप्राणदोवस्ति शोधनोरक्तवर्द्धनः । ज्वरजित्स-

हृद्वा वार्षिकं भार्गिकमिति ॥ ५ ॥ कफ आंव वात मेदा वस्ती शो-धन दीपन श्वास कास ज्वर ये रोग राति को उष्णोदक पीनेसे जातेहैं ॥ ६ ॥ क्षीरपाक विधि द्रव्यका आठगुणा दूध दूधका चौथा गुणपानी एकत्र कर औटै जब पानी जरजाइ तबदूधपियै तौ आंव शूल दूरहोय ॥ ७ ॥ अन्नप्रकार अब संक्षेप से अन्नविधि कहतेहैं अन्न यवागूसे छः गुना जल देकै पकावै उसे कृशरा औ घना कहते हैं ॥ ८ ॥ चावर मूंग माष तिल इनका यवागू करै यह ग्रहणी को बल देता है तृप्त अरु वाये नाशकारी है ॥ ९ ॥ विलेपी पसर अन्न में चौगुना जलदे पकावै सो विलेपीहै सो तृप्त करै मन प्रसन्न करै प्रिय है मधुर है पित्तनाशक है ॥ १० ॥ अथ पेय अन्न को चौदह गुने पानीमें सिद्धकरै पतला माठानहो जो पिया जाइ उसे पेय कहतेहैं उससे कुछही गाढेको यूष कहतेहैं ॥ ११ ॥ यूष हलका है ग्रहणी शुद्धकर्त्ता है धातु पुष्टीकरै बल करै कंठ शुद्धकरै लघुपाक है कफहारक है ॥ १२ ॥ भातविधि चावर से चौदह गुणा पानीलेकै चुरावै उसका मांड़ निचारै सो मीठा है हलका है उसे भक्तमंड कहतेहैं शुद्धमंड उसी मांड में सोंठ सैंधव डारिकै पिये तौ दीपन पाचन करै ॥ १३ । १४ ॥ अष्टगुण मंड धनियां त्रिकुटा सैंधव महाहींग

र्वदोषघ्नो मंडोष्टगुणाउच्यते १५ शुकंडितैस्तथाभ्रष्टैर्वाय्यमंडोय-वैर्भवेत् । कफपित्तहरःकंठ्यो रक्तपित्तप्रसादनः १६ लाजैर्वातंदुलैर्भ्रष्टै र्लाजमंडप्रकीर्तितः । श्लेष्मपित्तहरोग्राही पिपासाज्वर-जिन्मतः ११७ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्यखंडे क्वाथकल्पनाद्वितीयो ध्यायः ॥ २ ॥

क्षुणोद्रव्यपलेसम्यक् जलमुष्णंविनिक्षिपेत् । मृत्पात्रेकुडवोन्मानं ततस्तुश्रावयेत्पटात् । तस्यचूर्णाद्रवःफांटस्तन्मानंद्विपलोन्मितं । सितामधुगुणादीस्तु क्वाथेवतत्रनिक्षिपेत् १ मधूकपुष्पं मधुकं चन्दनंसपरूपकं । मृडालंकमलंलोध्रंखंभारीनागकेशरं । त्रिफलासारिवाद्राक्षालाजांकोष्णोजलेक्षिपेत्। सितामधुयुतःपेयः फांटोवासौहिमोथवा । वातपित्तज्वरंदाहं तृष्णामूर्च्छारतिभ्रमान् । रक्तपित्तंमदंहन्यान्नात्रकार्याविचारणा २ आम्रजंबूकिशलयै र्वट

तेल की भुनी पय युक्त मांडका अष्टगुण मांड नाम है प्राणदाता है वस्तिशोधन रक्तवर्द्धन ज्वरघ्न सब दोष हरणहै ॥ १५ ॥ यवमंड पित्तादि पर यव कूटि भूनिकै पुरवै सो वाद्यमण्ड है कफ पित्तहरै कंठ शुद्ध करै रक्त पित्त हरै ॥ १६ ॥ लाजमंड धान काला वा कुटी द्रव्य वा भुजे धानका बनावै सो लाजमंड है कफ पित्त हरै ग्राही है तृषा ज्वर नाश करै ॥ ११७ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेमध्यखंडे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

फांट कल्क वा कुटी द्रव्य पल भर एक कुडव पानी माटी के पात्रमें अच्छीभांतितप्तकरि उतारिले उसकुटीऊई द्रव्यवत्उसोदक में डारि ढकदे जब ठंढा हो तब छानि लेइ इसे फांट कहते हैं आठ रुपये भर फांट की मात्रा है मिश्री सहत पुराना गुड़जिस भांति काढ़े में डारना कहा है उसी भांति फांट में पड़ता है ॥ १ ॥ पित्तज्वर मै मधूकफांट मऊआ मुरेठी फालसा चंदन कमलनील लोध नागकेशरि त्रिफला सारिवन दाष लावा तप्त बारि में डारि मिश्रीसहत संयुक्त पिलावै इस फांट वा हिमसे बात पित्त ज्वर दाह प्यासमूर्च्छा मतिभ्रमरक्त पित्तमद ये सब दूरहोयं इसकार्यमें कुछ विचार नहीं ॥ २ ॥ पियास पर आम्रादिफांट आम जामुन की

सुंगप्ररोहकैः । उशीरेणकृतःफांटः सक्षौद्रोज्वरनाशनः । पिपासा छर्द्यतीसार मूर्च्छांजयतिदुर्जयाम् ३ मधूकपुष्पकंभारी चन्दनो शीरधान्यकैः । द्राक्षायाश्चकृतःफांटः शीतःशर्करयायुतः । तृष्णा पित्तहरःप्रोक्तो दाहमूर्च्छाभ्रमांजयेत् ४ मंथोपिफांटभेदःस्यात्तेनवा त्रैवकथ्यते । जलेचतुःपलेशीते क्षुण्णंद्रव्यपलंक्षिपेत् । मृत्पात्रेमंथ-येत्सम्यक् तस्माच्चद्विपलंपिबेत् ५ खर्जूरदाडिमद्राक्षा तिंतिडी काम्लिकामलैः । सपरूषैःकृतोमंथः सर्वमद्यविकारनुत् ६ क्षौद्र युक्तामसूराणां शक्तवोडाडिमांभसा । मथितावारयंत्याशु छर्दिं दोषत्रयोद्भवाम् ७ प्लावितैःशीतनीरेण सघृतैर्यवसक्तुभिः । ना-तिसांद्रद्रवैर्मंथस्तृष्णादाहास्रपित्तहा ८ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्य खंडेफांटकल्पनातृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

क्षुण्णंद्रव्यंपलंसम्यक् षड्भिर्नीरपलैःप्लुतं । निशोषितंहिमः सस्यात्तथाशीतकषायकः । तन्मानंफांटवज्ज्ञेयंसर्वत्रैवैषनिश्चयः १

कोंपल बट दिंगसा औ जटा खश इनका फांट करि पिये से ज्वर प्यास छर्दि अतीसार मूर्च्छा सबदूरहोयं ॥ ३ पित्त तृष्णापर मधूका फांट मऊआ चंदन खंभारी खसधनियां बालावा दाष इनकाफांट शक्कर युक्त पियै तौ तृष्णा दाह मूर्च्छा भ्रम ये सब जायं ॥ ४ ॥ अब मंथजो फांटभेद मेंहै सो कहतेहैं द्रव्यका चौगुना जलमाटीके पात्र में डारिकै मथै उस पानी को छान दो पल पियै ॥ ५ ॥ खजूर अ-नार दाख तिन्तिली इमली आंवरा फालसा इसका मंथ सकल मदनाशक है ॥ ६ ॥ उबकाई पर मसूरादि मंथ मसूरिका सत्तू सहत दाड़िमरस इनका मंथ पिलावै तौ सन्निजनित छर्दि जाइ ॥ ७ ॥ तृष्णापर यवमंथ यवके सत्तू ठंढे पानी में मथै बहुत गाढ़ा न हो तृषादाह रक्त पित्त ये नाशकरै ८ इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेमध्य खंडेफांटकल्पनातृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

कुटीद्रव्य पल भर छः पल जलमें सांझ को भिजोइ राखै प्रात निचोरिकै छानिलेइ इसे हेम कहते हैं शीतकषाय भी कहते हैं इसकी मात्रा फांटवत् दोपलहै यह सर्वत्र निश्चयजानौ ॥ १ ॥ रक्त

आम्रजंबूचककुभं चूर्णीकृत्यजलेक्षिपेत् । हिमंतस्यपिबेत्प्रातः सक्षौद्रंरक्तपित्तजित् २ मरिचंमधुजष्टीच काकोदुम्बरपल्लवाः। नीलोत्पलंहिमंस्तस्य तृष्णाछर्दिं निवारणाः ३ नीलोत्पलंव-लाद्रक्षा मधूकंमधुकंतथा । उशीरंपद्मकञ्चैव काश्मरीचपरूषकं। एतच्छीतकषायश्च वातपित्तज्वरंजयेत् । सप्रलापभ्रमंछर्दि मो-हतंद्रानिवारणा ४ अमृतायाहिमःपेयो जीर्णज्वरहरस्मृतः । वा-सायाश्चहिमःकास रक्तपित्तज्वरंजयेत् ५ प्रातःसशर्करःपेयो हि-मोधान्याकसंभवः । अन्तर्दाहंतथातृष्णां जयेच्छीतोविशोधनः ६ धान्याकधात्रिवासानां द्राक्षापर्पटयोर्हिमः । रक्तपित्तंज्वरंदाहं तृष्णाशोषञ्चनाशयेत् ७ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्यखंडेहिमकल्पना चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

द्रव्यमार्द्रंशिलापिष्टं शुष्कंवासजलंभवेत् । प्रक्षेपाएवकल्का स्ते तन्मानंकर्षसंमितं १ कल्केमधुघृतंतैलं देयंद्विगुणमात्रया ।

पित्तपर आम्रादिहिम आम जंबू अर्जुन कूटि पानी में भिजोवै उसका हिम प्रातसमय सहत संयुक्त पियै तौ रक्तपित्त जाइ ॥ २ ॥ तृषा पर मरीच्यादि हिम मरिच मुरेठी काठ गूलर की कोंपल नीलकमल के हिम से तृषाछर्दि नाशहोइ ॥ ३ ॥ पित्तज्वर पर नील कमलादिहिम नीलकमल बरियारा दाष मऊआ मुरेठी खस पद्माक खंभारीफल फालसा यह शीत कषाय बात पित्तज्वर प्रलाप भ्रमछर्दि मोहतंद्रा ये सब हरती है ॥ ४ ॥ जीर्णज्वर पर गुडूच्यादिहिम गुर्च के हिम से जीर्णज्वर जाता है बासा के रूसाके हिमसे कासरक्त पित्तज्वर जाताहै ॥ ५ ॥ धनियांका हिम शक्करडारिप्रातपिये से अंतर्दाह तृष्णा मूत्रारोधये सब रोग नाश होतेहैं ॥ ६ ॥ रक्त पित्त पर धनियांहींग धनियांआंवरा रूसादाष पित्तपापड़ा इस हिम से रक्तपित्तज्वरदाह तृषा कंठशोषसब दूर होइं॥७॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्यखंडेहिमकल्पनाचतुर्थोध्यायः॥ ४ ॥

अथकल्कविधिः सूखी द्रव्य जल में पीसै औदो निर्जल तिसै कल्क औ प्रक्षेप कहते हैं मात्रा दशमाशे ॥ १ ॥ कल्कमें मधु घृत तेल मात्रासें दूना देना मिश्री गुड़ समान मात्रा के अति थोड़ी

सितागुणांसमंदद्या द्रवादेयाश्चतुर्गुणाः २ त्रिवृद्ध्यापञ्चवृद्ध्या-या सप्तवृद्ध्याथवाकणाः । पिवेत्पिष्ट्वादशदिनं तास्तथैवापकर्ष-येत् ३ एवंविंशद्दिनंसिद्धं पिप्पलीवर्द्धमानकं । अनेनपांडुवातास्त्र कासश्वासारुचिज्वराः । उदरार्शःक्षयश्लेष्मा वातानश्यंत्युरोग्रहाः ४ लेपान्निंवदलैःकल्को व्रणशोधनरोपणः । भक्षणाच्छर्दि कुष्ठानि पित्तश्लेष्मकृमींजयेत् ५ महानिंवजटाकल्को गृध्रसीनाशनःस्मृ-तः।शुद्धकल्कोरसोनस्यतिलतैलेनमिश्रितः।वातरोगान्जयेत्तीव्रान् विषमज्वरनाशनः ६ पक्वकन्दरसोनस्य गुटिकानिस्तुषीकृताः । पाटयित्वाचतन्मध्यं दूरीकृत्यतदंकुरं ७ तदुग्रगंधनाशायरात्रौत-क्रेविनिक्षिपेत् । अपनीयचतन्मध्याच्छिलायांपेषयेत्ततः । तन्मध्ये पञ्चमांशेन चूर्णमेषांविनिक्षिपेत् ८ सौवर्चलंयवानींच भर्जितं हिंगुसैंधवं । त्रिकुटंजीरकंचैव समभागानिचूर्णयेत् ९ एकीकृत्य

पतलीचौगुनी ॥ २ ॥ पांडुपर वर्द्धमानपीपरि पीपरि तीन वा पांच व सात बढ़ावै औ जै पीपरिसे आरंभकरै तै प्रतिदिन बढ़ावै दश दिन ताईं फिर उतनी प्रतिदिन घटाइ बीसवेंदिन प्रथम दिनकी मात्रा पूरीकरै यों वर्द्धमानपीपरि सिद्ध करैसे पांडुवात कास श्वास अरुचि उदरविकार चयी कफवात छाती जकड़ना सबदूर हों और जो पानी व दूध संग पियाचाहै तौ तीन दिनतक दो व तीनतोलेदूधले फिरकल्कसे चौगुनाले ॥ ३ । ४ ॥ घावपरनिंवकल्क नीमपत्र की लुगदी घावपर लगावै उससे घाव साफ हो पूरता है जहां लुगदी लगसकै जहां न लगसकै उसे घाव नहीं कहते वह नासूर है उसकी विधि दूसरी है और खानेसे छर्दि सब कुष्टपित्त श्लेष्मा क्रमि अच्छाहो ॥ ५ ॥ गृध्रसीपर बकाइन कल्कबकाइन की जड़की छालकाकल्क गृध्रसी वायु को दूर करता है एक लहसुन की पीठीकरि तिलकातेल मिश्रित करिखाय तो तीव्रवात विषम ज्वरनाशहोइ ॥ ६ ॥ वातरोगपर दूसरा पके लहसुन के जवा छीलकै भीतर के अंकुर निकार मट्ठे में डारि रात भरि राखै तौ उसकी सुगंधिजाय ॥ ७ ॥ मट्ठेसेनिकासपीसिकैपंचमांश इसचूर्णकोजो आगे कहतेहैंसोडारै ॥ ८ ॥ कालालोन अजवाइनभुनीहींगसैंधव त्रिकुटा

ततःसर्वं कल्कंकर्षप्रमाणतः । खादेदग्निवलापेक्षी ऋतुदोषव्यपेक्षया । अनुपानंततःकुर्या देरंडसृतमन्वहं । सर्वांगैकांगजंवात मर्दितंचापतंत्रकं । अपस्मारंतथोन्माद मूत्रस्तंभञ्चगृद्रसीं । उरःपृष्ठकटीपार्श्वकुक्षिपीडांकृमींजयेत् १० अजीर्णमातपंरोपमतितीरपयोगुडं । रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरंतरं । मद्यंमांसंतथाम्लंच रसंसेवेतनित्यशः ११ पिप्पलीपिप्पलीमूलं भल्लातकफलानिच । एतत्कल्कश्चसक्षौद्र मूरुस्तम्भनिवारणः १२ विष्णुक्रान्ताजटाकल्कः सिताक्षौद्रघृतैर्युतः । परिणामभवंशूलं नाशयेत्सप्तभिर्दिनैः १३ शुंठीगुडतिलैःकल्कं दुग्धेनसहयोजयेत् । परिणामभवंशूल मामवातञ्चनाशयेत् १४ अपामार्गस्यवीजानां कल्कस्तंदुलवारिणा । पीतोरक्तार्शसांनाशं कुरुतेनात्रसंशयः १५ वदरीमूलकल्केन तिलकल्कश्चयोजितः । मधुक्षीरयुतःकुर्याद्रक्तातीसारनाशनं१६ कूष्मांडकरसेपिष्टांलाक्षांकर्षमितांपिवेत् । रक्त

जीरायेसववरावरकूटलेइ॥९॥यहचूर्णऔलहसुनकीलुगदीमिलाइकै इघमाशे खायअग्निप्रवलहो रोगीकीशक्तिविचारिऋतु अनुसार मात्रादेअनोपान रंडकीजड़कीछालका काढ़ा सर्वांग व एकांगवात अपतंत्र मृगी उन्माद गठिया गृद्रसी छाती पीड़ा पीठ करिहांउं पसुरी कोंषपीड़ा औ कृमिदोष नाशहोयं ॥१०॥ संयम रोगी करै लघु भोजन घाम त्याग अक्रोध जल थोरा पियै दूध गुड़ त्याग औषधि के भोगीकोपथ्य शराबमांस खटाईखाय॥ ११॥ ऊरुस्तंभपर पीपरादिकल्क पीपरि पीपरामूल भिलावा की लुगदी सहत संयुक्त देय तौ गठिया दूरहो ॥१२॥ विष्णुक्रांता परिणाम शूल पर विष्णुक्रांता की जड़का कल्क मिश्री सहत घी युक्त सातदिन खियै परिणाम शूलजायऔ पचनस्थानशूलजाय ॥ १३ ॥ पुनः सोंठिगुड़ तिल दूध में पीसै इस कल्क से परिणाम व शूलमिटै आमवातजाय १४॥अथरक्तार्शपर चिर्चिरादि कल्क चिर्चिरा का चावल चावलके धोवन में पीसकै पियेसेरक्तार्शजाय ॥ १५ ॥ रक्तातीसारपर बेरकल्क रबेमूलकी छाल तिलका कल्क सहत दूध में पिये से रक्तातीसार जाय ॥ १६ ॥ रक्तच्छर्दी पर लाहीकल्क एक कर्षलाही पेठाकेरस में

क्षयमुरोघातं क्षयरोगञ्चनाशयेत् १७ तंदुलीयजटाकल्कःसक्षौद्रःसरसांजतः । तंदुलोदकसंपीतो रक्तप्रदरनाशनः १८ अंकोलमूलकल्कश्च सक्षौद्रस्तंदुलांवुना । अतीसारहरःप्रोक्त स्तथाविषहरःस्मृतः १६ बंध्याकर्कोटकीमूलं पाटलायाःजटाथवा । घृतेन विल्वमूलंवा द्विविधंनाशयेद्विषं २० अभयासैंधवकणाशुंठीकल्कस्त्रिदोषहा । पथ्यासैंधवशुंठीभिः कल्कोदीपनपाचनः २१ तृवृत्पलाशवीजानि पारसीकजवानिका । कंपिल्लकंविडंगंच गुडश्च समभागिकः २२ तक्रेणकल्कएतेषाम्पीतःकृमिगणापहः । नवनीततिलैःकल्को जेतारक्तार्शसांस्मृतः २३ नवनीतसितानागकेशरश्चापितद्विधः । पीतोमसूरयूषेण कल्कशुंठीशलाटुजः । जयेत्संग्रहणींतद्वत्तक्रेणाट्टहतीभवः २४ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्यखंडे पंचमोऽध्यायः ॥५ ॥

पीसिकै पियेसे रक्तक्षयी छाती क्षत क्षयजाय ॥ १७ ॥ रक्तप्रदरपर चौराईकल्क चौराई मूल चावल के धोवनमें पीसिकै सहत रसौंत संग पियै तौ रक्तप्रदर जाय॥१८॥ अतीसार पर अंकोलकल्क अंकोल मूल की छाल चावल के धोवनमें पीसि सहतडारि पियै तो अतीसार औ विष दूर हो॥१९॥ विषपर खिखसाकल्क खिखसा व सिरस मूल व बेर मूल का कल्क घी संग खाने से विष नाशहोय २०॥ दीपन पाचन हरीतकी कल्क हड़ सोंठि सैंधव पीपरि का कल्क तीनों दोष हरता है पुनः हड़ सोंठ सैंधव का कल्क दीपन पाचनहै ॥ २१ ॥ कृमिपर निशोथकल्कपलाशबांदा खुरासानी अजवाइन कबीला वायबिडंग गुड़ ये सबसमान मट्ठाके साथखाने से कृमिरोगजाई ॥ २२ ॥ पुनः नैनू मिश्री नागकेशरिके कल्कसे रक्तार्श नाशहोय मसूरिका कहाढ़ाआ यूष सोंठ बेलफलकाकल्क उस यूष के संग पीने से ग्रहणी नाश होय भटकटैया फलका कल्कमट्ठा से ग्रहणीनाशहो॥२३॥२४॥इतिशार्ङ्गधरसुधाकरेपञ्चमोऽध्यायः॥ ५ ॥

अत्यंतशुष्कंयद्द्रव्यं सुपिष्टंवस्त्रगालितं । तत्स्याच्चूर्णंरजःक्षौद्र स्तन्मात्राकर्षसंमिता १ चूर्णेगुडसमोदेयः शर्कराद्विगुणाभवेत् । चूर्णेषुभर्जितंहिंगु देयंनोत्क्लेदकृद्भवेत् २ लिहेच्चूर्णंद्रवैःसर्वं घृताद्यैर्द्विगुणोन्मितैः । पिवेच्चतुर्गुणैरेव चूर्णमालोडितंद्रवैः ३ चूर्णावलेहगुटिका कल्कानामनुपानकं । वातपित्तकफातंकेत्रिद्व्येक पलमाहरेत् ४ यथातैलंजलंप्राप्य क्षणेनैवप्रसर्पति । अनुपान वलादंगे तथासर्पतिभेषजं ५ द्रवेणयावतासम्यक् चूर्णंसर्वंप्लुतं भवेत् । भावनायाःप्रमाणन्तु चूर्णप्रोक्तंभिषग्वरैः६ आमलंचित्रकं पथ्या पिप्पलीसैंधवस्तथा । चूर्णितोयंगणोज्ञेयः सर्वज्वरविनाशनः । भेदीरुचिकरश्लेष्म जेतादीपनपाचनः ७ मधुनापिप्पली चूर्णं लिहेत्कासज्वरापहं । हिक्काश्वासहरंकंठ्यंप्लीहघ्नंबालकोचितं ८ एकाहरीतकीयोज्याद्वौतुयोज्यौविभीतकौ । चत्वार्यामलका न्येव त्रिफलैषाप्रकीर्तिताः ९ त्रिफलामेहशोथघ्नी नाशयेद्विषम-

अथ चूर्णविधिः ॥ अथ सूखी द्रव्य कूटिकै कपड़ेमें छानिले उसे चूर्ण रज औ चौद्र कहते हैं इसके खाने की मात्रा कर्षभरहै ॥ १ ॥ चूर्ण में गुड़ समान लेना खांड़ दूनी हींग भूनीहुई देना ॥ २ ॥ घृत सहतादि तथा द्रववस्तु दूनीदै चाटै औ पीने की द्रव्य चूर्ण के साथ चौगुनी देना ॥ ३ ॥ चूर्णअवलेह गुटिकाअथ कल्कचूर्णअवलेह गुटिका इनका अनोपान बात में तीन पल पित्त में दोपल कफ में एक पल दीजिये ॥ ४ ॥ अनुपान देनेका कारण यहहै कि जैसे तेल पानी में डारे से फैलजाता है तैसे अनुपान के बल से औषधि प्रवेश करती है ॥ ५ ॥ औषधि में किसी की पुटदेना होतौ जितनेमें चूर्ण पुटकी माफिक हो तितना देना भाव न देना होतो चूर्ण स्थान में भावप्रकार में देख लेना ॥ ६ ॥ सर्वज्वरपर आमलकादि चूर्ण आंवरा चीता हड़ पीपरि सैंधव यह पंचगुणचूर्ण सर्वज्वर नाशकरै रेचक रोचक कफहर्ता दीपन पाचन है ॥ ७ ॥ ज्वरपर पीपरिचूर्ण पीपरि सहत युक्त चाटै तौ ज्वरकास हिचकी श्वास कंठरुज पिलही सकल रोगनाश होयं ॥ ८ ॥ प्रमेह पै त्रिफलाचूर्ण हड एकभाग बहेड़ा दोभाग आंवरा चार भाग इसप्रकार त्रि-

ज्वरान् । दीपनीश्लेष्मपित्तघ्नी कुष्ठहंत्रीरसायनी । सर्पिर्मधुभ्यां संयुक्ताः सैवनेत्रामयांजयेत् १० पिप्पलीमरिचंशुंठी त्रिभिस्त्र्यूषणमुच्यते । दीपनंश्लेष्मदोषघ्नं कुष्ठपीनसनाशनं । जयेदरोचकं सामं मेहगुल्मगलामयान् ११ पिप्पलीचविकाविश्वा पिप्पली मूलचित्रकैः । पञ्चकोलमितिख्यातं रुच्यंपाचनदीपनं । आनाह प्लीहगुल्माघ्नं शूलश्लेष्मोदरापहं १२ त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैः चातुर्जातंसकेशरं । त्रिगन्धञ्चचतुर्जातं रूक्षोष्णंलघुपित्तकृत् । वर्ण्यं रुचिकरंतीक्ष्णं विषश्लेष्मामयांजयेत् १३ काकोलीक्षीरकाकोली जीभकर्षभकौतथा । मेदाचान्यामहामेदा जीवन्तीमधुकन्तथा । मुग्धपर्णीमाषपर्णी जीवनीयोगणस्त्वयं । जीवनीयोगणस्वादुर्गर्भसंधानकृद्गुरुः । स्तन्यकृद्गृहणोवृष्यः स्निग्धशीततृषापहः । रक्तपित्तंक्षयंशोषं ज्वरदाहानिलांजयेत् १४ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौ जीवकर्षभकौतथा । ऋद्धीवृद्धीचतैःसर्वैरष्टवर्गउदाहृतः । अष्टवर्गो

फला है ॥ ९ ॥ सो त्रिफला प्रमेह शोथ विषमज्वर नाश करता है दीपन है कफपित्तनाशन है कुष्टहरण रसायन है वही त्रिफला सहत घतयुक्त खाने से नेत्ररोग दूरि करै है ॥ १० ॥ पीपरि मरिच सोंठि इसे ऊषण औ त्रिकुटा कहतेहैं दीपनहै कफ कुष्ट पीनस नाशकर्ताहै आंव अरुचि मेह गुल्म कण्ठरोग सबदूरहोयं ॥ ११ ॥ कफादिपर पंचकोलचूर्ण पीपरि चाव सोंठि पीपरामूल चीता इसे पंचकोल कहतेहैं रोचन कहेपाचन दीपनहै अनाह पिप्पली गुल्म शूल कफ उदररोग सबनाश होतेहैं ॥ १२ ॥ त्रिगंधचूर्ण पत्रज तज इलायची राचि गंधहै चातुर्जात तज पत्रज इलायची ये बात जातहै ये दोनों रूखे हैं उष्ण हैं कुछ पित्तकारक हैं क्रांति रुचि कर्तातीक्ष्ण हैं औ विष औ कफको नाश करते हैं ॥ १३ ॥ जीवनीगण काकोलीक्षीर काकोली जीभ कर्षभक मेदा महामेदा जीवंति दूधियालता की छीनी की छीमी कीसी तरकारी होती है मुरेठी मूंगफली उर्दफली इनकी जीवनीगण संज्ञाहै सो स्वादिक है गर्भस्थितकारकहै भारीदुग्धवर्द्धिनीहै धातुपोषकहै धातु शोधक है स्निग्ध ठंढीतृषा रक्त पित्तक्षयी शोषज्वर दाह बायु

बुधैःप्रोक्तो जीवनीयसमोगुणः १५ सिंधुसौवर्चलंचैव विडंसामुद्र-
कंगुडं । एकद्वित्रिचतुःपंच लवणानिक्रमाद्विदुः १६ तेषुमुख्यंसैंध
वंस्यादनुक्तेस्तत्प्रयोजयेत् । सैंधवाद्यंरोमकांतं ज्ञेयंलवणपंचकः
१७ मधुरंसृष्टविण्मूत्रं स्निग्धंसूक्ष्मंवलापहं । वीर्योष्णंदीपनंती
क्ष्णं कफपित्तविवर्द्धनं १८ स्वर्जिकायावशूकश्च क्षारयुग्ममुदाहृतं।
ज्ञेयोवन्हिसमौक्षारौ स्वर्जिकायावशूकजौ १९ क्षाराश्चान्येपिगु
ल्मार्शो ग्रहणीरुक्छिदःसराः । पाचनाकृमिपुंस्त्वघ्नाः शर्कराश्म
रिनाशनाः २० त्रिफलारजनीयुग्मं कंटकारीयुगेशठी । त्रिकटुग्रं-
थिकंमूर्वा गुडूचीधन्वयासकाः २१ कटुकीपर्पटोमुस्तं त्रायमाणा
चवालकं । निंबःपुष्करमूलंच मधुजष्टीचवत्सकः २२ यवानींद्रय
वोभार्गी शिग्रुवीजंसुराष्ट्रजा । वचात्वक्पद्मकोशीरं चंदनातिविषा
वला २३ शालपर्णीपृष्टपर्णी विडंगंतगरंतथा । चित्रकोदेवकाष्ठं

ये सब हरै ॥ १४ ॥ ह्वैमेदा है काकोली जीव कर्षभक रिद्धि वृद्धि ये
अष्टवर्गहैं परंतु आठ से कोई मिलती है अष्ट वर्ग को वैद्यजीवनी
गण तुल्यकहतेहैं ॥ १५ ॥ विषमूच पर लवणपंचक चूर्ण सेंधा काला
विडनोन खारी गुड़ नील साँभर ये पांचलोन क्रमसेजानो ॥ १६ ॥
इनमें सेंधा मुख्य है जहां नाम न लिखे तहां सेंधा लेना सेंधे से
साँभरि तक पांच लोन जानो ॥ १७ ॥ पाक मधुर हैं मलमूत्रपकाइ
कै गिराताहै चिकना अवेश करता बलहरता धातुको गरमकरता
दीपन तीक्ष्ण कफ पित्त बढ़ाताहै ॥ १८ ॥ गुल्मादिपर खार सज्जी
खार यवाखार ये दोहैं सो दोनों अग्नि समान हैं दीप्यमान हैं
१९ ॥ और खार सहिंजनखार गदापूर्णखार सांगुला अर्शग्रहणी
इन रोगों को नाश करता है पाचन कृमिनाशक पुंस्त्वघ्न शर्करा
मेह हरता है ॥ २० ॥ सर्व ज्वरपर सुदर्शनचूर्ण त्रिफला दोनोंहर्दी
दुवौभटकटैया कचूर त्रिकुटा पीपरामूल मूरी गुर्च जवासा ॥ २१ ॥
कटुकी पित्तपापड़ा मोथा त्रायमान नेत्रबाला नीम की छाल पु-
ष्करमूल मुरेठी कुरैया ॥ २२ ॥ अजाइन इन्द्रयव भारंगी सहिंजनके
बिया भुनी फटकरी बच तज पद्माख खस श्वेतचन्दन अतीस बरि-

च चव्यंपत्रंपटोलजं २४ जीवकर्षभकौचैवलवंगंवंशलोचनं । पुंड
रीकंचकाकोली पत्रजंजातिपत्रकं २५ तालीसपत्रंचतथा समभा-
गानिचूर्णयेत् । सर्वचूर्णस्यसार्द्धांश कैरातंप्रक्षिपेत्सुधीः २६ एत
त्सुदर्शननाम चूर्णंदोषत्रयापहं । ज्वरांश्चनिखिलान्हन्यान्नात्र-
कार्याविचारणा २७ पृथग्द्वन्द्वगंतुजांश्च धातुस्थान्विषमज्वरान् ।
सन्निपातोद्भवांश्चापि मानसानपिनाशयेत् २८ शीतज्वरैकाहि
कादी न्मोहतंद्राभ्रमतृषां । श्वासंकासंचपांडुत्वंहृद्रोगंहंतिकामलां
२९ त्रिकपृष्ठकटीजानु पार्श्वशूलनिवारणं । शीतांबुनापिवेद्धीमा
न्सर्वज्वरनिवृत्तये ३० सुदर्शनंयथाचक्रं दानवानांचनाशनं । तद्व-
ज्ज्वराणांसर्वेषा मतच्चूर्णंनिवारणं ३१ कासश्वासज्वराहरा त्रिफ
लापिप्पलीयुता । चूर्णितामधुनालीढा भेदीचाग्निप्रबोधिनी ३२
कटुफलंमुस्तकंतिक्ता शटीशृंगीचपौष्करं । चूर्णमेषांचमधुना शृंग

चारा ॥ २३ ॥ बनउर्दी बनमूंग बायबिड़ंग तगर चीता देवदारु चाबु पटोल ॥२४॥ जीव कारिषभक इन दोनोंके अभाव में बिलारी कंद लेना लौंग बंसलोचन कमलपत्र काकोली के अभाव में मुरैठी लेना दुइमें दूना तेजपात जाविची ॥ २५ ॥ तालीस पत्र ये सब समान ले चूर्ण करै सब चूर्णका आधा चिरायता डारै ॥ २६ ॥ यह सुदर्शन चूर्ण त्रिदोष नाश कर्ताहै सब ज्वर हर्ता निश्चय है ॥ २७॥ एकाहिक द्वंद्व सन्निज मानस ऐसे सब ज्वर नाशक है ॥ २८ ॥ शीतज्वर जूड़ी अंतरिया तृतीयक चातुर्थिक मोहतंद्रा भ्रम तृषा श्वास कास पांडु हृदिरोगको हरै॥२९॥रीढ़ पीठ कटिहाड़ जांघ पसुरी इन अंगन की पीड़ा नाश हाइ जा शीत जल संग पिये तासबै ज्वर हरै ॥ ३० ॥ यथा सुदर्शनचक्र सब दानवों को नाश करताहै तथा सुदर्शन चूर्ण सब ज्वरोंको नाश करताहै ॥ ३१ ॥ कासश्वास ज्वर हरै त्रिफलादि चूर्ण कास श्वास ज्वर पर त्रिफला पीपरि चूर्ण सहत संगचाटै तो भेदीहै अग्नि प्रबल करताहै ॥ ३२॥ कफज्वरपर कायफलादि चूर्ण कायफल मोथा कुटकी कचूर काकरा सिंही पुष्कर मूल इन द्रव्यन का चूर्ण सहत अदरखरस संग

वेररसेनच। लेह्यंज्वरहरंकंठ्यं कासश्वासारुचींजयेत्। वातशूलं तथाछर्दिं क्षयंचैवव्यपोहति ३३ शृंगीप्रतिविषाकृष्णा चूर्णिता मधुनालिहेत्। शिशोकासज्वरछर्दिं शांत्यैवाकेवलांविषां ३४ शुंठीप्रतिविषाहिंगु मुस्ताकुटजचित्रकैः। चूर्णमुस्तांबुनापीत वातातीसारनाशनं ३५ हरीतकीप्रतिविषा सिंधुसौवर्चलंवचा। हिंगुचेतिकृतंचूर्णं पिवेदुष्णोनवारिणा। आमातीसारशमनं ग्राहीचाग्निप्रबोधनं ३६ मुस्तमिंद्रयवंबिल्वं लोध्रंमोचरसंतथा। धातकीचूर्णयेत्तक्र गुडाभ्यांपाययेत्सुधीः। सर्वातीसारशमनं निरुणाद्धिप्रवाहिका। लघुगंगाधरंनाम चूर्णंसंग्राहकंपरं ३७ मुस्तारलकश्शुंठीभि र्धातकीलोध्रवालकैः। बिल्वमोचरसाभ्यांच पाठेंद्रयववत्सकैः। आम्रबीजंप्रतिविषालज्जालुरितिचूर्णितं। क्षौद्रतंडुलपानीय पी[illegible]यातिप्रवाहिका। सर्वातिसारग्रहणी प्रशमंयातिवेग

चाटे ज्वर हरै कंठशुद्ध होइ कासश्वास अरुचि बात शूल छर्दि छयी सब जाइ ॥ ३३ ॥ बालक को खांसी ज्वर पर काकरा सिंही आदि चूर्ण काकरासिंही अतीस पोपरि मधुयुक्त चटावै तौ बालक की खांसी ज्वर छर्दि दूर होय तैसेही केवल अतीसार सें ॥ ३४ ॥ आमातीसार पर शुंठ्यादि चर्ण सोंठ अतीस हींग मोथा कुरैया चीता इनका चूर्ण उष्णपानी के साथ पिये से आंव अतीसार दूर होय ॥ ३५ ॥ आमबात पर हरीतक्यादि चूर्ण अतीसार सेंधालोन कालालोन वचहींग इनका चूर्ण उष्णोदकसों पियेतो आम बातातीसार जाइ ग्राहीहै अग्नि प्रबल करै ॥ ३६ ॥ सर्बातीसार पर लघु गंगाधरचूर्ण मोथा इन्द्रयव बेल लोध मोचरस धवफूल इनका चूर्ण मट्ठा गुड़ डारिकै प्यावै तोसब अतीसार प्रबाहकबंद करै यह लघु गंगाधर चूर्ण परम ग्राहीहै ॥ ३७ ॥ अतीसार पर वृद्ध गंगाधर चूर्ण मोथा सोंठि कुरैया धव फूल लोध सुगंध वाला बेल मोच रस पाढ़ा इंद्रयव मधुकुरैया आमकी बिजुरी अतीस लजालू इनका चूर्ण सहत चावल के धोवन संयुक्त पिये तौ प्रबाहिक सब अतीसार ग्रहणी जल्दी आराम होयवह वृद्धगंगाधरचूर्ण सरित-

तः । वृद्धगंगाधरंनामसरिद्वेगोपिबंधकं ३८ तक्रेणयःपिबेन्नित्यं चूर्णंमरिचसंभवं । चित्रसौवर्चलोपेतंग्रहणीतस्यनश्यति । उदरप्लीह मंदाग्नि गुल्मार्शोनाशनंभवेत् ३९ अष्टौभागाःकपित्थस्यषट्भागा शर्करामता । दाडिमंतितिडीकंचश्रीफलंधातकीतथा । अजमोदापिप्पलीच प्रत्येकंस्युस्त्रिभागिका । मरिचंजीरकंधान्यं ग्रंथिकंवालकंतथा । सौवर्चलंयवानीचचातुर्जातंचचित्रकं । नागरंचैकभागास्युः प्रत्येकंसूक्ष्मचूर्णितं । कपित्थाष्टकसंज्ञस्याच्चूर्णमेतद्गलामयन् । अतीसारक्षयंगुल्मं ग्रहणींचव्यपोहति ४० दाडिमाद्वेपलेग्राह्यो खंडादशपलानिच । त्रिगंधस्यपलंचैकं त्रिकटुश्चपलत्रयं । एतदेकीकृतंसर्वं चूर्णंस्याद्दाडिमाष्टकं । रुचिकृद्दीपनंकंठ्यं ग्राहिकासज्वरापहं ४१ दाडिमस्यपलान्यष्टौ शर्करायाःपलाष्टकं । पिप्पली पिप्पलीमूलं यवानीमरिचंतथा । धान्यकंजीरकंशुंठी प्रत्येकंपल

प्रवाह रोकने को समर्थ है ॥ ३८ ॥ मट्ठा मिरच चूर्ण चीता काला लोन संग पिवै तौ ग्रहणी नाश होय उदर रोग प्लीहा मंद अग्नि गुल्म अर्श ये सब अच्छे होइं ॥ ३९ संग्रहणी पर कपित्थाष्टकचूर्ण आठ भाग पक्का कैथा छः भाग खांड़ अनार अमली बेल धव फूल अजमोद पीपरि ये सब तीन तीन भाग मरिचजीरा श्वेत धनियां पीपरा मूल सुगंध बाला अजवाइन तज पत्रज इलायची नाग केशरि चीतासोंठि ये सब एक एक भाग इन सबकाा हीन चूर्णकरै यहकपित्थाष्टक नामचूर्ण गलेके रोग अतीसार क्षयीगुल्म ग्रहणी सब को अच्छा करैहै ॥ ४० ॥ग्रहणीपर दाडिमाष्टक अनार आठ रुपया भर शक्कर बत्तीसभरतज पत्रज इलायची तीनों मिलाके चार भर त्रिकुटा बारह भरइन्हैं एककरि चूर्ण करै यह दाडिमाष्टक नाम चूर्ण रोचक दीपनग्राही है कंठ शुद्धकरै कासज्वर नाश करै ॥ ४१ ॥ अतीसार परदूसरा दाडिमाष्टक अनार आठ पल पीपर पीपरामूल अजवाइनधनियां जीरा श्वेत सोंठ सब पल पल भर बंसलोचन दशमाशे तजपत्रज एला नागकेशरि ये पांच पांच

सम्मितं । कर्षमात्रात्वगाक्षीरी त्वक्पत्रैलाश्चकेशरं । प्रत्येकंको
लमात्रास्यु स्तच्चूर्णंदाडिमाष्टकं । अतीसारंक्षयंगुल्मंग्रहणीचग-
लग्रहं । मंदाग्निपीनसंकासं चूर्णमेतद्व्यपोहति ४२ लवंगशुद्ध
कर्पूर मेलात्वग्नागकेशरं । जातीफलमुशीरंच नागरंकृष्णजीरकं।
कृष्णागुरुत्वगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलंकणा: । चंदनंतगरंवालंकं-
कोलंचेतिचूर्णयेत्। समभागानिसर्वाणिसर्वार्द्धाचसिताभवेत्। लवं
गादिमिदंचूर्णं राजार्हंवह्निदीपनं । रोचनंतर्प्पणंवृष्यंत्रिदोषघ्नंव
लप्रदं। हृद्रोगंकंठरोगंच कासंहिक्कांचपीनसं। यक्ष्माणंतमकंश्वास
मतीसारमुरःक्षतं । प्रमेहारुचिगुल्मादीन्ग्रहणीमपिनाशयेत्४३
जातीफलंलवंगैलापत्रैस्त्वग्नागकेशरैः। कर्पूरचन्दनतिलैस्त्वक्क्षी
रीतगरामलैः। तालीसपिप्पलीपथ्याचित्रकस्थूलजीरकैः। शुंठीवि
डंगमरिचैःसमभागानिचूर्णितैः। यावंत्येतानिसर्वाणि कुर्याद्भङ्गाच
तावती । सर्वचूर्णसमादेया शर्कराचभिषग्वरैः । कर्षमात्रंतथाखा
देन्मधुनाप्लावितंसुधीः । अस्यप्रभावाद्ग्रहणी कासश्वासारुचिक्ष
यात् । वातश्लेष्मप्रतिश्यायः प्रशमंयातिवेगतः४४ मरिचंनागपु

भाषा यह दूसरा अनाराष्टकचूर्ण अतीसार गुल्म ग्रहणी जलग्रह
मंदाग्नि पीनस कास येरोगनाशकरै ॥४२॥ अथोपर लवंगादिचूर्ण
लवंगशुद्ध कपूर इलायची नागकेशरि जायफल खस सोंठ कृष्णजीरा
कृष्णअगर बंशलोचन जटामासी नीलकमल पीपरि चंदन तगर सुगंध
बाला कंकोल इनका चूर्णकरि चूर्णकी आधी मिश्री मिलावै यह लवं-
गादि चूर्ण राजदीपन रोचक तृप्तिकारक धातु पुष्ट करै त्रिदोष
हरै बलप्रद कंठ हृदिरोग कास हिचकी पीनस क्षयी तमक श्वास
अतीसार उरक्षत प्रमेह अरुचि गुल्मग्रहणी ये सब दूरिकरै॥४३॥
जातीफलादि चूर्ण जायफल लौंग इलायची तज पत्रज नागकेशरि
कपूर चंदन तिल बंशलोचन तगर आंवरा तालीस पत्र पीपरि हड़
चीता कालाजीरा सोंठि बिडंग मरिच सबको समान भाग लेना
तिसका चूर्णकरि चूर्णके बराबर खांड़ दे कर्ष भर सहत मिलाइ कै

ष्पाणि तालीसंलवणानिच । प्रत्येकमेकभागास्युः पिप्पलीमूल चित्रकैः । त्वक्क्षणातितिडीकंचजीरकंचद्विभागिका: । धान्याम्लवेत सौविश्वं भद्रैलाबदराणिच । अजमोदाजलधराः प्रत्येकंस्युस्त्रि भागिकाः । सर्वौषधचतुर्थांशं दाडिमस्यफलंभवेत् । द्रव्येभ्यानि खिलेभ्यश्च सितादेयाद्धमात्रया । महाखांडवसंज्ञस्या च्चूर्णमे तत्सुरोचनं । अग्निदीप्तिकरंहृद्यं कासातीसारनाशनं । हृद्रोगंकंठ जगरं मुखरोगप्रणाशनं । विसूचिकातथाध्मान मर्शोगुल्मकृमीन पि । छर्दिपंचविधंश्वासचूर्णमेतद्व्यपोहति ४५ चित्रकंत्रिफलाव्यो षं जीरकंहवुषावचा । यवानीपिप्पलीमूलं शतपुष्पाजगंधिकाः । अजमोदाशटीधान्यंविडंगंस्थूलजीरकं । हेमाह्वापौष्करंमूलंक्षारौ लवणपंचकं । कुष्टंचेतिसमांशानि विशालायाद्विभागिका । त्रट त्रिभागाविज्ञेया दंत्याभागत्रयंभवेत् । चतुर्भागाशातलास्या त्स र्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । पाचनंस्नेहनाद्यैश्च स्निग्धकोष्ठस्यदेहिनां । दद्याच्चूर्णविरेकायसर्वरोगप्रणाशनं । हृद्रोगेपांडुरोगेच कासेश्वा

खाय इसके प्रभाव से ग्रहणी कासश्वास अरुचि क्षयी वात कफ नाक टपकना ये रोग वेगही दूरिहोइं ॥ ४४ ॥ अरुचि पर महा खांडवचूर्ण मरिच नागकेशरि तालीसपत्र पांचौ लोन ये सब स- मान भाग लेना ग्रंथि चित्रक तज पीपरि अमली जीरा ये सब द्वैद्वै भागलेना धनियां अमलवेतस सोंठि बड़ी इलायची बेर अजमोद मोथा ये तीनतीन भाग सबद्रव्यकी चौथाई अनार सबकी आधी मिश्री देइ यह महा खांडअसंज्ञक चूर्ण रोचक दीपन है हृदयको बलप्रद है अतीसार हृदिरोग कंठ जलना मुखरोग शीत रस पेट फूलना अर्श गुल्म कृमि छर्दिपंच विधि सब श्वास नाश करै ॥ ४५ ॥ उदररोग पर नारायणचूर्ण चीता त्रिफला सोंठि पीपरि मरिच जीरा हड़ बेर बच अजवायन ग्रंथ सौंफ अजमोद कचूर धनियाँ विडंग कालीजीरी चोक पुष्करमूल दोनोंखार पाँचौलोन कूट ये सब समान ले इन्द्रायन द्वैभाग निशोथ तीनिभाग जमालगोटा तीन

सेभगंदरे। मंदाग्नौचज्वरेकुष्ठेग्रहण्यांचगलग्रहे। दद्यांद्व्यकानुपा
नेनतथाध्मानेसुरादिभिः। गुल्मेवदरनीरेण विट्भेदेदधिमस्तुना।
उष्णांबुभिश्चजीर्णेचवृक्षाम्लैःपरिकर्तृषु। उष्ट्रीदुग्धेनोदरेषुतथात
क्रेणवागवां। प्रसन्नयावातरोगे दाडिमैरर्शसांतथा। द्विविधंचवि
षेदद्यात् घृतेनविषनाशनं। चूर्णनारायणंनाम दुष्टरोगगणापहं।
४६ हवुषात्रिफलाचैव त्रायमाणाचपिप्पली। हेमक्षीरस्तवच्चैव
शातलाकटुकावचा ४७ नीलनीसैंधवंकृष्णालवंगंचेतिचूर्णयेत्।
उष्णोदकेनमूत्रेण दाडिमात्रिफलारसैः ४८ तथामांसरसेनापि
यथायोग्यंपिवेन्नरः। अजीर्णप्लीहगुल्मेषु शोकार्शोविषमाग्निषु ४९
हलीमकामलापांडुकुष्ठाध्मानोदरेष्वपि। शुंठीहरीतकीकृष्णा तृवृ
त्सौवर्चलंतथा। समभागानिसर्वाणि सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ५०
ज्ञेयंपंचसमंचूर्णं मेतच्छूलहरंपरं। आध्मानजठराशोघ्नं मामवा

भाग पीतपुष्पी सेंड़खडमूल चारिभाग ये सब एकत्र करि चूर्णकरै
कठिन काठ रोगी को प्रथम पाचन स्वेदनिकर यह चूर्ण रेचनार्थ
देइ तौ सबरोग हृदिरोग पांडु कासस्वास भगन्दर मन्दाग्नि ज्वर
कुष्ठ ग्रहणी कंठरुज ये रोग नाशकरै अनोपान कहताहूं पेटफूलेमें
मद्य संग गुल्म मे बेर क्वाथसंग मलफोरनेमें दही व जल अजीर्ण में
उष्णोदक पेटरोगमें अमला कठादरादि में उष्ट्री दूध वा गोतक्रसें
बातरोगमें सुरा मण्डमें दे अर्शमें अनाररस संग दे दोनों विष में
घीके संगदेना यह नारायणचूर्णहै दुष्ट रोगोंके गण कहे समूह को
नाशक है॥४६॥ अजीर्णपर हवुषादि चूर्ण हाऊ बेर त्रिफलाके माय
माण पीपर चौक निशोथ पीतपुष्पमें हड़की जड़ कटुकी बच ॥४७॥
नीलकी पत्ती सैंधव कालालोन इनका चूर्ण उष्णोदक वा गोमूत्र
अनारकारस त्रिफलारस ॥४८॥ व मांसरस संग जिसरोगीको जो
उचितहो तिसकेसाथ पिये अजीर्ण प्लीहा गुल्म शोथ अर्श विषमा
ग्नि॥४९॥हलीमक कमल पांडु कुष्ट पेटफूलना उदररोग येसब दूर
होयँ शूलादिपर पंचसमचूर्ण सोंठ हड़ पीपरि निशोथ कालालोन
सम समचूर्ण भागले सूक्ष्मचूर्णकरै॥५०॥यह पंचसमचूर्ण बड़ीशूल पेट

तद्रसंस्मृतं ५१ कर्षमात्राभवेत्कृष्णात्रवृत्तास्यात्पलोन्मिता । खंडात्पलंचविज्ञेयं चूर्णमेकत्रकारयेत् । कर्षोन्मितंलिहेदेतत्क्षौद्रेणा ध्माननाशनं । गाढविट्कोदरकफा न्पित्तशूलानिनाशयेत् ५२ लवणत्रितयंक्षारौ शतपुष्पाद्वयंवचा । अजमोदाजगंधाच हवुषा जीरकद्वयं ५३ मरिचंपिप्पलीमूलं पिप्पलीगजपिप्पली । हिंगुश्चहिंगुपत्रीच शठीपाठोपकुंचिका ५४ शुंठीचित्रकचव्यानि विडंगंचाम्लवेतसं । दाडिमंतिंतिडीकंचत्रिवृद्दन्तीशतावरी । इंद्रवारुणिकाभार्गी देवदारुजवानिका ५५ कुस्तुंवुरुस्तुंवुरूणि पुष्करं वदराणिच । शिवाश्चेतिसमांशानि चूर्णमेकत्रकारयेत् ५६ भावयेदार्द्रकरसैर्वीजपूररसैस्तथा । तत्पिवेच्छर्कराजीर्ण मद्येनोष्णेनवारिणा ५७ कोलांभसावातकेण दुग्धेनौष्ट्रेनमस्तुना । यकृत्प्ष्ठकटीशूल गुदकुक्षिहृदामयान् ५८ अर्शोमंदाग्निविष्टंभ गुल्मप्लीलोदराणिच । हिक्काध्मानश्वासकासान्जयेदेतन्नसंशयः ५९ एतद्रे-

फूलना जठरसंबंधी आर्श आमवात सब हरै ॥ ५१ ॥ नाराचचूर्ण पीपरि दशमाशे निशोथ चारिटंकभर खांड़ पलभर इनसबको एकत्रकरि चूर्णकरै कर्षभर सहत संगखाय पेटफूलनाजाइ गाढउदर कफपित्त शूल नाशहोइ ॥ ५२ ॥ क्षारादि पर लवण त्रितयादि चूर्ण तीनों लोन दोनों खार सौंफ सोवाबीज अजमोद ममरीहाऊबेर दोनों जीरे ॥ ५३ ॥ मरिच पीपरामूल पीपरि ऊरऊरा कचूर पीठी मगरैला ॥ ५४ ॥ सोंठ चीता चाव विडंग अमल वेतस अनार अमली की छाल निशोथ जमालगोटा शतावरि इंद्रूरन भारंगी देवदारु अजवाइन ॥ ५५ ॥ धनियां तुंवरु पुष्करमूल बेरछड़ सबका समान चूर्णकरै ॥ ५६ ॥ अदरक रस बिजौरा रसमें भावना देय पुरानी मद्यकै संगपियै वा उष्णोदक संग ॥ ५७ ॥ बेरके क्वाथ से व मट्ठे से व ऊंट पयमें व दही के तोड़में पियैसे यकृत प्लीहा कटिशूल गुदकोष हृदिरोग ॥ ५८ ॥ अर्श मंदाग्नि मलस्तंभ गुल्म प्लीहा उदर रोग हिचकी पेटफूलना श्वास कास ये सब दूर होयं व इन द्रव्यन का घीव बनाइ कै वैद्य देय तौ भी ये रोग दूरकरै ॥ ५९ ॥ शूलपर तंबुरादि तम्बुर तीनों

बोधयेःसम्यग्घृतेवासाधयेत्सुधीः ५६ तुंबुरूणित्रिलवणं यवानी पुष्कराह्वयं । यवक्षाराभयाहिंगुविडंगानिसमानिच ६० त्वत्रि भागिकाज्ञेया सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् । पिवेदुष्णेनतोयेन यवक्काथेनवापिवेत् । जयेत्सर्वाणिशूलानि गुल्माध्मानोदराणिच ६१ चित्रकोनागरंहिंगु पिप्पलीपिप्पलीजया । चव्याजमोदमरिचं प्रत्येकंकर्षसंमितं ६२ स्वर्जिकाचयवक्षारः सिंधुसौवर्चलंविडं । सामुद्रिकंरोमकंच कोलमात्राणिकारयेत् ६३ एकीकृत्वाखिलंचूर्णंभावयेन्मातुलंगजैः । रसैर्वादाडिमैर्वापिशोपयेदातपेनवा ६४ तच्चूर्णंनाशयेद्गुल्मं ग्रहणीमामजंरुजं । अग्निंचकुरुतेदीप्तिंरुचिकृत्कफनाशनं ६५ सैंधवंपिप्पलीमूलंपिप्पलीचव्यचित्रकं । शुंठीहरीतकीचेतिक्रमवृद्ध्याविचूर्णयेत् । वड़वानलनामैतच्चूर्णंस्यादग्निदीपनं ६६ अजमोदाविडंगानिसैंधवंदेवदारुच । चित्रकंपिप्पलीमूलं शतपुष्पाचपिप्पली ६७ मरिचंचेतिकर्षांशं प्रत्येकंकारयेद्बुधः । कर्षास्तुपंचपथ्यायाः दशस्युर्वृद्धदारुकात् ६८ नागराच्चदशैवस्युः

लोन अजवाइन पोष्करमूल यवाखार हड़ हींग विडंग ये द्रव्य समान ले ॥ ६० ॥ निशाथ तीनभाग सबका सूक्ष्म चूर्णकरि उष्णोदक यवक्वाथ में पिये तो सर्व शूल गुल्म पेटफूलना सब अच्छे होई ६१ ॥ मंदाग्नि पर चित्रकादि चूर्ण चीता सोंठ हींग पीपरि पीपरामूल चाव अजमोद मरिच सब कर्षभर लेना ॥ ६२ ॥ दूनों खार सेंधा काला पाँगा कटीला सांभर ये कोल कोल ले ॥ ६३ ॥ चूर्ण करि बिजौरा रसमें बांटि घाममें सुखाइलेइ ॥६४॥ यह चूर्ण गुल्म ग्रहणी आम रोग हरै अग्नि दीप्त रुचि करै कफ नाशकरै ॥ ६५ ॥ मन्दाग्नि पर बडवानल चूर्ण सेंधा पीपरामूल पीपरि चाव चीता सोंठ हड़ क्रमसेबढ़ाइचूर्णकरै जैसेसेंधा१माशातौपीपरामूल२माशा पीपरि ३ माशा भर लेनायह बाड़वानल नाम अग्नि दीपन है॥६६॥ वातादि पर अजमोदादिचूर्ण अजमोद विडंगसेंधो देवदारु चीता पीपरामूल सौंफ पीपरि ॥ ६७ ॥ मरिच ये द्रव्य कर्ष कर्ष भर हड़

सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । पिवेत्कोष्णजलेनैव चूर्णंचगुडसंमितं६९ भ-
क्षयेदथवासम्यक्परस्वपथनाशनं। आमवातरुजंहंति संधिपीडांच
गृद्ध्रसीं ७० कटिपृष्ठगुदास्थनांच जंघयोश्चरुजोजयेत् । तूणीप्र-
तूणीविश्वाचींकफवातामयांजयेत्७१ हिंगुपाढाभयाधान्यंदाडिमं
चित्रकःशठी । अजमोदात्रिकटुकं हवुषाचाम्लवेतसः ७२ अज
गंधातितिडीकं जीरकंपुष्करंवचा । चव्यंक्षारद्वयंपंच लवणानि
विचूर्णयेत् ७३ प्राग्भोजनस्यमध्येवा चूर्णमेतत्प्रयोजयेत् । पि-
वेद्वाजीर्णमध्येन तक्रेणोष्णोदकेनवा ७४ गुल्मेवातकफोद्भूते वि-
ट्ग्रहेष्ठीलिकासुच । हृद्वस्तिपार्श्वशूलेषु शूलेचगुदयोनिजे ७५
मूत्रकृच्छ्रे तथानाहे पांडुरोगेऽरुचौतथा । हिक्कायांयकृतिप्लीहि
श्वासेकासेगलग्रहे ७६ ग्रहण्यर्शोविकारेषु चूर्णमेतत्प्रशस्यते ।
भावितंमातुलिंगस्य वहुशःस्वरसेनवा । कुर्याद्ववटिकांवध्वा वात
श्लेष्मामयापहः ७७ यवानीदाडिमंशुंठी तिंतिडीकाम्लवेतसौ ।

पांचकर्ष बिधारा दशकर्ष ॥ ६८ ॥ सोंठ दशकर्ष येसब चूर्णकरै गुड़
मिश्रित करि उष्णोदकसे पिये ॥ ६९ ॥ अच्छीतरह खाय तौसूजन
दूरहोइ आमबात गांठि पीर गृद्ध्रसी बाय ॥ ७० ॥ कटि पीड़ापीठ
गुदा जांघपीर तूनी बायप्रतूनी बायु बिश्वाची कफ रोग बायुकेरोग
येसब नाश होई ॥७१॥ शूलादि पर हिंग्वादि चूर्ण हींगपाढ़ा हड़
धनियां अनार चीता कचूर अजमोद त्रिकुटा हाऊबेर अमलबेतस ॥
७२॥ ममरी इमली की छाल जीरा पुष्करमूल बच चाव दूनों खार
पांचो लोन सब चूर्ण करै ॥ ७३ ॥ भोजनादिक के प्रथम अथवा पु-
राने मद्यके संग या गरम जलके साथखाइ ॥७४॥ बात कफका गुल्म
कोष्ठबन्ध ष्ठीलिका हृदय पेडू पशुरी गुदायोनिये सबशूल ॥ ७५ ॥
मूत्रकृच्छ्र पेट फूलन पांडु अरुचि हिचकी यकृत प्लीह श्वासकास गल
रोग ॥ ७६ ॥ ग्रहणी अर्श इनपर यह चूर्णहै बिजौराके रसमें सात
भावना दे गोली बांधले इससे वात कफ रोग नाशहोयं ॥ ७७ ॥
अरुचि पर यवानी खांडव चूर्ण अजवाइन अनार सोंठ इमली की
छाल अमलबेतस झुर बैर ये सब चार चार माशा ॥ ७८ ॥ मरिच

बदराम्लंचकुर्वीत चतुःशाणमितानिच ७८ सार्द्धद्विशाणमरिचं पिप्पलीदशशाणिका । त्वक्सौवर्चलधान्याकं जीरकंद्विद्विशाणिकं ७९ चतुःषष्टिमितैःशाणैः शर्कराचात्रयोजयेत् । चूर्णितंसर्वमेकत्र यवानीखांडवाभिधं ८० नाशयेत्पांडुरोगंच हृद्रोगंग्रहणीज्वरं । छर्दिशोषातिसारांश्च प्लीहानाहविबंधता । अरुचिंशूलमंदाग्नि मर्शोजिह्वागलामयान् ८१ तालीसंमरिचंशुंठी पिप्पलीवंशलोचना ।एकद्वित्रिचतुःपंच कर्षैर्भागंप्रकल्पयेत् ८२ एलातजौचकर्षार्द्धं प्रत्येकंभागमावहेत् । द्वात्रिंशकर्षतुलिता प्रदेयाशर्करावुधैः ८३ तालीसाद्यमिदंचूर्णं पाचनंरोचनंस्मृतं । कासश्वासज्वरहरं छर्द्यतीसारनाशनं ८४ शोषाध्मानहरंप्लीह ग्रहणीपांडुरोगजित् । पक्वावाशर्कराचूर्णं क्षिपेद्वागुटिकाततः ८५ सितोपलाषोडशःस्या दष्टौस्याद्वंशलोचना । पिप्पलीस्याच्चतुष्कर्षा क्षुद्रेलास्याद्द्विकर्षकी ८६ एकःकर्षस्त्वचःकार्यश्चूर्णयेत्सर्वमेकतः । सितोपलादिकंचूर्णं मधुसर्पिर्युतंलिहेत् ८७ श्वासकासक्षयहरं हस्त

ढाई शाण पीपरि दश शाण तज कालानोन धनियां जीरा येदोदो शाण ॥ ७९ ॥शर्करा चौंसठिशाण शाण चारिमाशेका होताहै इन सबका चूर्णकरै इसे यवानीखांडव कहतेहैं ॥ ८० ॥ यह पांडु हृदिरोग ग्रहणी छर्दि शोष अतीसार प्लीहा पेट फूलना कोष्ठ बद्ध अरुचि शूल मंदाग्नि अर्श जीभ रोग गलारोग इनसबका नाशक है ॥ ८१ ॥ अरुचिपर तालीसादि चूर्ण तालीस मिर्च सोंठि पीपरि बंशलोचन द्रव्य प्रति कर्ष बढ़ाइ लेइ ॥ ८२ ॥ इलायची तजआधा आधाकर्ष खांड़ बत्तीस कर्षलेइ ॥ ८३ ॥ यह तालीसादिचूर्ण पाचन रोचन है कासश्वास ज्वर छर्दि अतीसार ॥ ८४ ॥ शोष पेटफूलना प्लीह ग्रहणी पांडु इन सबको नाशकरै व खांड़पर गोली बांध ले तौभी वही गुणहै॥८५॥कासक्षय पित्तादिपर सितोपलादिचूर्णमिश्रीसोलहकर्ष बंशलोचनआठ पीपरिचारछोटीइलायचीदो॥ ८६॥ तजएककर्ष यह सितोपलादि चूर्ण सहत घी मिलायकै चाटै ॥ ८७॥

पादांगदाहजित् । मंदाग्निसुप्तजिह्वात्व पार्श्वशूलमरोचकं । ज्वरमूर्ध्वगतंरक्तं पित्तमाशुव्यपोहति ८८ सामुद्रलवणांकार्यं मष्ट कर्षमितंवुधैः । पंचसौवचलग्राह्यं विडसैंधवधान्यकं ८६ पिप्पलीपिप्पलीमूलं कृष्णाजीरकपत्रकं । नागकेशरितालीस मम्ल वेतसकंतथा ६० द्विकर्षमात्राण्येतानि प्रत्येकंकारयेद्बुधः । मरिचं जीरकंविश्व मेकैकंकर्षमात्रकं ६१ दाडिमंस्याच्चतुष्कर्षं त्वगेला चार्धकार्षिके । वीजपूररसेनैव भावितंसप्तवारकं । एतच्चूर्णीकृतं सर्वं लवणंभास्कराभिधं ६२ शाणप्रमाणंदेयंतु सस्तुतक्रसुरासवैः । वातश्लेष्मभवंगुल्मं प्लीहानमुदरक्षयं ६३ अर्शांसिग्रहणी कुष्ठं विड्विवंधंभगन्दरं । शोफंशूलंश्वासकासा वामदोषंचहृद्रुजं ६४ मंदाग्निंनाशयेदेत द्दीपनंपाचनंपरं । सर्वलोकहितार्थाय भास्करेणोदितंपुरा ६५ एलाप्रियंगुमुस्तानि कोलमज्जाचपिप्पली । श्रीचन्दनंतथालाजा लवंगंनागकेशरं । एतच्चूर्णीकृतंसर्वं सिताक्षौद्रयुतंलिहेत् । वातपित्तकफोद्भूतां छर्दिंहंत्यतिवेगतः ६६

श्वास कासक्षयी हाथ पावका तपना मन्दाग्नि जीभ सूखना पसुरी पीड़ा अरुचि ज्वर रक्त पित्त रोग नाशकरै ॥ ८८ ॥ ग्रहणी सुलापर लवणभास्करचूर्ण पांगालोन आठकर्षभर कालापांचभर बिड़सैंधा धनियां ॥ ८९ ॥ पीपरि पिपलामूल काला जीरा पत्रज नागकेशरि तालीस अमल बेतस ॥ ९० ॥ ये सब दो दो कर्ष मरिच जीरा सोंठ कर्ष कर्षभर ॥ ९१ ॥ अनार चारभर इलायची तज पांच पांचमाशे येसब एकत्रकरि चूर्णकरै यह लवणभास्कर है ॥ ९२ ॥ एक शाण दहीके तारके संग देय एक मट्ठा वा मद्यके संगदेइ तौ बात कफ जन्य गुल्म प्लीह पेट रोग छर्दि ॥ ९३ ॥ अर्श ग्रहणी कुष्ट कोष्टबद्ध भगंदर सूजन शूलश्वास कास आमदोष हृदयरोग ॥ ९४ ॥ मन्दाग्नि ये सब रोग नाशकरै दीपन पाचन है संपूर्ण लोगन के हित प्रथम श्रीभास्कर ने कहा है ॥ ९५ ॥ बात पित्त कफ छर्दिपर एलादिचूर्ण इलायची प्रियंगु मोथा बेरकी मिंगी पीपरि श्वेत चन्दन लावा लवंग नागकेशरि सब चूर्णकरि सहत मिश्री मिलाइ

मूलंपत्रंफलंपुष्पंत्वचंनिंबात्समाहरेत् । सूक्ष्मचूर्णमिदंकृत्वा पलैः पंचदशोन्मितं । लोहभस्महरीतक्यौ चक्रमर्दकचित्रकौ । भल्लातकविडंगानि शर्करामलकंनिशा । पिप्पलीमरिचंशुंठी वाकुची कृतमालकः । गोक्षुरश्चपलोन्मान मेकैकंकारयेद्बुधः । सर्वमेकी कृतंचूर्णं भृङ्गराजेनभावयेत् । अष्टभागावशेषेण खदिरासनवारिणा । भावयित्वाचसंशुष्कं कर्षमात्रंततःपिबेत् । खदिरासन तोयेन सर्पिषापयसाथवा । मासेनसर्वकुष्ठानि विनिहंतिरसायनं पंचनिंबमिदंचूर्णं सर्वरोगप्रणाशनं ९७ शतावरीगोक्षुरकं बीजं चकपिकच्छुजं । गांगेरुकीचातिबला बीजमिक्षुरकोद्भव ९८ चूर्णितंसर्वमेकत्र गोदुग्धेनपिबेन्निशि । नतृप्तिंयातिनारीभि रेतच्चूर्ण प्रभावतः ९९ अश्वगन्धादशपला तन्मात्रोवृद्धदारुकः । चूर्णीकृत्योभयंविद्यात् घृतभांडेनिधापयेत् १०० कर्षैकंपयसापीत्वा नारीभिर्नैवतृप्यति । अगत्वाप्रमदांभूयो वलीपलितवर्जितः १

चाटै तौ वातपित्त कफ जन्य छर्दि नाश होय ॥ ९६ ॥ कुष्टपर पंच निंबचूर्ण निंबके पंचांग का चूर्ण सूक्ष्म पीसिकै पन्द्रहपल लोह भस्म हड़चवा बड़बीन चीता भिलावा विडंग खांड़ आंवरा हरदी पीपरि मरिच सोंठि बकुची अमलतास गुखुरू येसब पलपल भर ले सब चूर्ण भँगरे के रसमें भावना दे खैर औ आसन सेरभर पानी में काढ़ा करै अष्टमांश रहै तिसमें फिर भावना देइ फिर सुखाइ चूर्ण करि एक कर्ष खाय खैर आसन के क्वाथके संग व दूध व घीकेसाथ मास भर सेवन करै तौ सबकोढ़ नाशकरै यह रसायन है इसे पंचनिंब चूर्ण कहते हैं सब रोग नाश करता है ॥ ९७॥ शतावरि चूर्ण पुष्टपर शतावरि गुखुरू किमाचके बीज गुलसकरी बरियारा तालमखाना ९८ ॥ इनका चूर्ण गोदुग्धमें पिये इसके प्रभावसे स्त्रीसे तृप्त न होय और जो स्त्री प्रसंग न करै तौ बलीहोय बार न श्वेत होयं ॥ ९९ ॥ पुष्टिपर अश्वगंधादिचूर्ण नागौरी असगंधचालीसतोलेभर बिधारा चालीस भर दूनौ का महीनचूर्ण घृतके भाजन में धरै ॥१००॥ दश माशे दूधमें पिये तौ स्त्रीसेतृप्त न होय धातुष्टद्धपर -नवायसादि

चित्रकंत्रिफलामुस्ता विडंगंत्र्यूषणानिच । समभागानिकार्याणि नवभागाहतायशः २ एतदेकीकृतंचूर्णं मधुसर्पियुतंलिहेत् । गोमूत्रमथवातक्र मनुपानंप्रशस्यते ३ पांडुरोगंजयत्युग्रं हृद्रोगंचभगन्दरं । शोथकुष्ठोदराशांसि मन्दाग्निमरुचिंकृमीन् ४ अकारकरभःशुंठी कंकोलंकुंकुमंकणा । जातीफलंलवंगंच चंदनंचेतिकार्षिकान् ५ चूर्णानीमांस्ततःकुर्या दहिफेनंपलोन्मित ६ सर्वमेकीकृतंचूर्णंसूक्ष्मंतद्वस्त्रगालितम् । सितासर्वसमादेया माषैकंमधुनालिहेत् । शुक्रस्तम्भकरंचूर्णं पुंसामानन्दकारकं । नारीणांप्रीतिजननंसेवेतनिशिकामुकः ७ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेचूर्णकल्पनाषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

चूर्ण चीता त्रिफला मोथा विडंग त्रिकुटा ये सब समान तमयाअंश पोलाद भस्म ॥ १।२ ॥ इनका चूर्ण सहत और घृतके संगचाटै गोमूत्र व मट्ठाके साथ॥३॥तौ पांडु हृदिरोग भंगदर सूजनकोढ़ उदर रोग अर्श मन्दाग्नि अरुचि कृमि नाशहायं ॥ ४ ॥ स्तंभन पर अकरकरादि चूर्ण अकरकरहा सोंठ कंकोल केसरपीपरि जायफल लौंगश्वेत चन्दन ये कर्षकर्ष भर ॥५॥ चर्णकरि पलभर अफीम दे पीसि कपड़छान ले ॥ ६ ॥ सब समान खांड़ देइ माशाभर सहत में चाटै यहचूर्ण वीर्यस्तंभन करे स्त्री पुरुष को सुखदेता है कामी पुरुष इसरातिको सेवन करै ॥७ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरे चूर्णकल्पनाषष्ठोऽध्यायः॥६॥

—•—•—

बटिकाश्चाथकथ्यन्तेतन्नामगुटिकावटी।मोदकोवटिकापिण्डीगुं-
डीवर्त्तिस्तथोच्यते १ लेहवत्साध्यतेवह्नौगुडोवाशर्करायथा। गु-
ग्गुलंवाक्षिपेत्तत्रचूर्णंतन्निर्म्मितावटी २ कुर्य्यादवह्निसिद्धनक्कचिद्
गुग्गुलुनावटी। द्रव्येणमधुनावापिगुटिकांकारयेत्सुधीः ३ सिताच
तुर्गुणादेयावटीषुद्विगुणोगुडः । चूर्णाचूर्णसमाकार्य्योगुग्गुलंमधु
तत्समं ४ द्रवंचद्विगुणंदेयंमोदकेपुभिषग्वरैः । कर्षप्रमाणंतन्मानं
वलंदृष्ट्वाप्रयुज्यते ५ इन्द्रवारुणिकामुस्ताशुंठीदन्तीहरीतकी। तृ-
विच्छुटीविडंगानिगोक्षुरश्चित्रकंतथा ६ तेजोह्वाचद्विकर्षाणि पृ
थग्द्रव्याणिकारयेत्।शूरणस्यपलान्यष्टौवृद्धादारुचतुःपलं ७ चतुः
पलानिभल्लातंक्काथयेत्सर्वमेकतः। जलद्रोणचतुर्थांशंगृह्णीयात्क्का
थमुत्तमं८ क्काथद्रव्यांत्रिगुणितंगुडंक्षिप्त्वापुनःक्षिपेत् । सम्यक्प
क्कञ्चज्ञात्वावैचूर्णमेतत्प्रदापयेत् ९ चित्रकंत्रिवृतादन्तीतेजोह्वा
पालिकापृथक्। पृथक्त्रिफलिकाभागाव्योषैलामलकत्वचं १०

अथ बटी कल्पना॥ बटिका गुटिका बटीमोदक पिंडीगुण्डी ये
गोलीके नाम हैं॥ १॥ गुड़ औ खांड़ दे आगिमें पकावै जैसे अव-
लेह तब गुग्गुल व चूर्ण उसी मत्तमें डारि गोली बांधै॥ २॥ बिना
आगिके योग गुगुल से भी गोली बंधती है और गोली वस्तु तथा
सहत से भी बंधती है॥ ३॥ मिश्री चौगुनी गुड़ दूना चूर्ण लिखे
प्रमाणदेना गुग्गुल सहत बराबरदेना ॥४॥द्रव्य वस्तु दूनीदेना सद्
वैद्य यही रीति करैं कर्षभर गोली खानेका प्रमाण है व देह बल
दोष देखि खिलावै॥ ५॥ इन्दारु की गुटिका अर्शपर इन्दारु
मोथा सोंठ जमालगोटा की जड़की छाल हड़ निशोथ कचूर बिडंग
गुखुरू चीता॥६॥बच ये सब दो दो कर्ष जमीकन्द आठपल बिधारा
चारिपल॥ ७॥भिलावा चारपल द्रोणभर पानीमेंऔटै जब चौथाई
रहै तब उतार लेइ। ८॥ छानके उसका तिगुना गुड़ दे मतकरै जब
पकनितार उठैतबयह चूर्णडारै ॥९॥ चीता निशोथ जमालगोटा जड़
बच ये पल पलभर त्रिकुटा इलाइची आंवरा तज तीनतीन पल इन
को पीस छानके प्रस्थभर सहतमें पूर्वोक्त यह चूर्णयुक्त बंधने माफिक

निक्षिपेन्मधुशीतेव तस्मिन्प्रस्थप्रमाणकं । एवंसिद्धोभवेच्छ्रीमान् वाहुशालगुडाभिधः ११ जयेदर्शांसिसर्वाणिगुल्मंवातोदरंतथा आढ्यवातंप्रतिश्यायंमहान्तंक्षयपीनसं । हलीमकंपांडुरोगंप्रमेहंचविनाशयत् १२ मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसंमिता । अर्द्धकर्षोयवक्षारःकर्षयुग्मंचदाडिमं १३ एतच्चूर्णीकृतंयुज्यादष्टकर्षगुडेनहि । शाणप्रमाणांवटिकांकृत्वावक्त्रे विधारयेत् । अस्याः प्रभावात्सर्वेपिकासायांत्येवसंक्षयं १४ गुडशुंठीशिवामुस्तैर्धा-रयेद्गुटिकामुखे । श्वासकासेषुसर्वेषुकेवलंवाविभीतकं १५ आमलंकमलंकुष्ठंलाजाश्चवटरोहकं।एतच्चूर्णंसमधुनागुटिकाधारणंमुखे१६तृष्णाप्रद्धांहरत्येषामुखशोषंचदारुणं । विडंगंनागरंकृ-ष्णापथ्यामलविभीतकं।वचागुडूचीभल्लातंसद्विषंचात्रयोजयेत्१७ एतानिसमभागानि गोमूत्रेणैवपेषयेत् । गुंजाभागुटिकाकार्या दद्यादार्द्रकजैःरसैः १८ एकामजीर्णगुल्मस्य द्वेविसूच्यांप्रदापयेत् । तिस्रस्तुसर्पदंष्ट्रे तु चत्वारस्सन्निपातके । वटीसंजीवनी

हो तब मिलावै तब बाहुशाल गुड़ सिद्ध होय ॥ १०।११ ॥ सब अर्श गुल्म वातोदर आढ्यवायु नाक टपकना क्षयीपीनस हलीमक पांडु प्रमेह ये सब नाश होयं ॥ १२ ॥ कासपर मरिचादि गुटिका मरिच पीपरि कर्ष कर्ष भर यवाखार ५ माशे अनार दो कर्ष ॥ १३ ॥ गुड़ आठकर्षमें चारिचारि माशेकी गोलीबांधि सो मुखमें धरराखै इस के प्रभाव से सब खांसी जाइ ॥ १४ ॥ श्वासपर गुड़ादिगुटिका गुड़ सोंठि हड़ मोथा की गोली जितने गुड़से बँधे माशे भरकी मुहमें राखै तो सब श्वास कास हरै तैसे केवल बहेरा रखने से ॥ १५ ॥ प्यासपर आंवरादिवटी आंवरा कमल कूट लाजावट जटा इन्हैं पीसि सहत में गोली बांधि मुखमें राखै तो महाप्यास मुख सखना दूर हो ॥ १६ ॥ सन्निपर संजीवनी गुटिका विडंग सोंठ पीपरि हड़ आंवरा बहेरा बच गुरुच भिलावा शुद्ध सिंगिया ॥ १७ ॥ ये सब समान ले गोमूत्र में खरल करै घुंघची समान गोली बांधै अदरखके रसमें खिलावै ॥१८॥ अजीर्णमें गोलीएक बिसूचिकामेंदो

नाम्ना संजीवयतिमानवं १६ व्योषाम्लवेतसंचव्यं तालीसंचित्र
कंतथा । जीरकंतितिडीकंच प्रत्येकंकर्षभागिकं २० त्रिसुगंधंत्रि-
शाणांस्या द्गुडःस्यात्कर्षविंशति । व्योषादिगुटिकासेयं पीनसश्वा
सकासजित् । रुचिस्वरकराख्याता प्रतिश्यायप्रणाशिनी २१
आमेषुसगुडाशुंठी मजीर्णेगुडपिप्पली । कृच्छ्रेजीरगुडंदद्या द-
र्शःस्युःसगुडाभयां २२ वृद्धदारुकभल्लात शुंठीचूर्णेनयोजितः ।
मोदकःसगुडोहन्यात् षड्विधार्शकृतांरुजं २३ शुष्कशूरणचूर्ण-
स्य भागाद्द्वात्रिंशदाहरेत् । भागान्षोडशचित्रस्य शुंठ्याभागचतु-
ष्टयं २४ द्वैभागौमरिचस्यापि सर्वमेकत्रचूर्णयेत् । गुडेनपिंडिकां
कुर्या दर्शसांनाशनंपरं २५ शूरणोवृद्धदारुश्च भागैःषोडशभिः
पृथक् । मुशलीचित्रकौज्ञेया वष्टभागान्वितौपृथक् २६ शिवा
विभीतकोधात्री विडंगंनागरंकणा । भल्लातःपिप्पलीमूलं तालीसं
चष्टयकपृथक् २७ चतुर्भागप्रमाणानि त्वगेलामरिचंतथा । द्वि-

सांपकेडसेको तीन सन्निपातमें चार इसका संजीवनीबटी नामहै
मनुष्यको जिलाती ॥ १९ ॥ पीनसादिपर त्रिकुटादिबटी त्रिकुटा
अमलवेतस वच तालीसदल चीता जीरा इमली की छाल ये सब
कर्षकर्षभर ॥ २० ॥ तज पत्रज इलायची चारि चारि माशे गुड़बीस
कर्ष यह व्योषादि नाम गुटिका पीनस श्वास कास को नाशकरै
रुचिकरै कंठस्वर शुद्धकरै नाक टपकना बंदकरै ॥ २१ ॥ आंवदोष
में गुड़ सोंठ की गोली देना अजीर्ण में गुड़ पीपरि कृच्छ्र में गुड़
हड़की गोलीदेना ॥ २२ ॥ अर्शपर वृद्ध दारुमोदक विधारा भि-
लावां सोंठ पीसि गुड़में गोली बांधि देइ तो छहौं भांति के अर्श
दूरकरै ॥ २३ ॥ अर्शपर शूरनवटिका सूखे शूरन का चूर्ण बत्तीस
भाग चीतासोलहभाग सोंठचारभाग॥२४॥ मरिचदोभाग सबचूर्ण
करि गुड़में गोली बांधि खिलावै तौ सब अर्श नाशहोय ॥ २५ ॥
पुनः सूरनविधारा सोलहसोलह भागलेइ मुशली आठभाग लेइ
चीताभी आठभागलेइ॥२६॥त्रिफला विडंग सोंठ पीपरि भिलावा
पिपरामूल तालीस भिन्न भिन्न ॥ २७ ॥ चार चार भाग तज इला

भागमात्राणिपृथक् सर्वस्त्वेकत्रचूर्णयेत् २८ द्विगुणेनगुडेनाथ वटिकांकारयेद्बुधः । प्रबलाग्निंचकुरुते तथार्शोनाशनःपरः २९ ग्रहणींवातकफजां श्वासंकासंक्षयामयं । प्लीहानंश्लीपदंशोथं प्रमेहंचभगंदरं । निहंतिपलितंतृष्णा स्तथामेध्यारसायनाः ३० त्रिफलात्र्यूषणंचव्यं पिप्पलीमूलचित्रकं । दारुमाक्षिकधातुश्च दार्वी मुस्तंविडङ्गकं ३१ प्रत्येकंकर्षमात्राणि सर्वंद्विगुणितंतथा । मंडूरंचूर्णयेच्छुद्धं गोमूत्रेष्टगुणेक्षिपेत् ३२ पक्त्वाचवटकंकृत्वा दद्यात्तक्रानुपानतः । कामलापांडुमेहार्शः शोथकुष्ठकफामयान् । गुरुस्तंभमजीर्णंच प्लीहानंनाशयेदपि ३३ चंद्रप्रभावचामुस्तं भूनिंबामरदारुच । हरिद्रातिविषादार्वी पिप्पलीमूलचित्रकान् ३४ धान्यकंत्रिफलाचव्यं विडंगंगजपिप्पली । व्योषंमाक्षिकधातुश्च द्वौक्षारौलवणंत्रयं ३५ एतानिशाणमात्राणि प्रत्येकंकारयेद्बुधः । त्रिवृन्दन्तीपत्रकंच त्वगेलावंशरोचना ३६ प्रत्येकंकर्षमात्राणिकुर्यादेतानिबुद्धिमान् । द्विकर्षंहतलोहस्यचतुष्कर्षसिताभवेत् ३७ शिला

चवी मरिच है है भाग इनसबका चूर्णकरि ॥ २८ ॥ दूनेगुड़ में गोली बांधि खिलावै तौ अग्नि प्रबल होय अर्श ॥ २९ ॥ वात कफजन्य ग्रहणी श्वास कासक्षय प्लीहा पीलपद शोथ प्रमेह भगंदर बार श्वेतहोना सब मिटै धातु वृद्धि प्रबल करै यह रसायनहै ॥ ३० ॥ कामलादि पर मंडूरवटक त्रिफला त्रिकुटा चाव पिपरामूल चीता देवदारु सोनामाखी हरदी मोथा मजीठ ॥ ३१ ॥ ये कर्ष कर्ष भर मंडूर शोधकै सबसे दूनाले अष्टगुने गोमूत्र में ॥ ३२ ॥ पकाइ गोली बांधि मठेकै साथ खाय तौ कामल पांडु अर्शशोथ प्रमेह कुष्ट कफ रोग गठिया अजीर्ण प्लीहा इनको नाशकरै ॥ ३३ ॥ कपूर वच मोथा चिरायता शुर्व देवदारु हरदी अतीस दारुहरदी पिपली मूल चीता ॥ ३४ ॥ धनिया त्रिफला वच वायविडंग गजपीपरि त्रिकुटा सोनामाखीकी भस्म सज्जीखार यवाखार तीनौलोन सेंधा काला पागा ॥३५॥ ये सबद्रव्य चारचार माशे निशोथ दतून पत्रज तज इलायचीवंशलोचन ॥३६॥ येकर्षकर्षभर बुद्धिमानलेइलोहभस्म

जत्वष्टकर्षं स्यादष्टौकर्षाश्चगुग्गुलोः । एभिरेकत्रसंक्षुणैःकर्त्तव्या गुटिकाशुभा ३८चन्द्रप्रभेतिविख्यातासर्वरोगप्रणाशिनी। प्रमेहा न्विंशतिकृच्छ्रम्मूत्राघातंतथाश्मरी ३९ विबन्धानाहशूलानिमेहनं ग्रन्थिमर्वुदं। अण्डवृद्धिंकटीशूलं श्वासंकासंविचर्चिकाम् ४० अन्त्र वृद्धिंतथापांडुकामलांचहलीमकं ।कुष्ठान्यर्शांसिकंडूंचप्लीहोदरभगं दरं४१दन्तरोगंनेत्ररोगंस्त्रीणामार्त्तवजांरुजां।पुंसांशुक्रगतान्रोगा- न्मंदाग्निमरुचिंतथा४२वातपित्तकफंहन्याद्बल्याबृष्यारसायनी। चंद्रप्रभायाःकर्षस्तु चतुःशाणोविधीयते ४३ यवानीजीरकंधान्यं मरिचंगिरिकर्णिका। अजमोदोपकुंचीचंचतुःशाणाःपृथक्पृथक्४४ हिंगुषट्शाणिकंकार्यं क्षारौलवणपंचकं। त्रिवृच्चाष्टमितैःशाणैः प्र- त्येकंकल्पयेत्सुधीः ४५ दन्तीशठीपौष्करंच विडंगंदाडिमंशिवा। चित्राम्लवेतसःशुंठी शाणैःषोडशभिःपृथक् ४६ वीजपूररसेनैव गुटिकांकारयेद्बुधः। घृतेनपयसामद्यै रम्लैरुष्णोदकेनवा ४७

दो कर्षइन सबका चूर्णकरि मिश्री चारकर्ष ॥ ३७ ॥ शुद्ध शिलाजीत आठकर्ष गुग्गुल आठकर्ष येसब एकत्रकरि कूटिकै गुटिका सुंदरब- नावै॥३८॥यह चंद्रप्रभागुटिका सबरोग नाशकरै प्रमेह कृच्छ्र मूत्रा घातपथरी ॥३९॥ विट्बंध पेटफूलना शूलइंद्री फूलनग्रंथीअर्बुद अंड वृद्धि कटि शूल श्वास कास कुष्ठ भेद ॥ ४० ॥ अंत्रवृद्धि पांडु कमल व भेलभेद सब कुष्ट सर्वार्श खजुरा प्लीहा उदररोग भगंदर ॥ ४१ ॥ दंतरोग नेत्ररोग स्त्रीके ऋतुरोग पुरुष का धातुरोग मंदाग्नि अरुचि ॥ ४२ ॥ वात पित्त कफ सब नाशकरै बलकरै धातुबढ़ावै यह रसायन है दशमाशे वा सोलह माशे वा दोषबल विचारिकै खाय ४३ ॥ गुल्मपर कजाइन गुटिका अजवायन जीरा धनिया मरिच कणाकांता अजमोद मगरैला भिन्नभिन्न चारमाशा॥४४॥ भूंजीहींग छः शाणइनकौ खार पांचौलोन निशोथ येआठ आठ माशा ॥ ४५ ॥ दतूनि कचूर पुष्करमूल विडंग अनार हड़ चीता अम्लवेतस सोंठ येसब सोरह माशले चूर्णकरै ॥ ४६ ॥ बिजौराके रसमें बटी बांधै घृत दूध मद्य नींबूरस उष्णोदक ॥ ४७ ॥ इनकेसंग कांजीयन

पिबेत्काकायनप्रोक्तां गुटिकांगुल्मनाशिनीं । मद्येनवातकेगुल्मे गोक्षीरेणाचपैत्तिके४८मूत्रेणाकफगुल्मंच दशमूलैस्त्रिदोषजं । उष्ट्री दुग्धेननारीणां रक्तगुल्मंविनाशयेत् ४९ हृद्रोगंग्रहणीशूलं कृमी नर्शांसिनाशयेत् । नागरंपिप्पलीचव्यंपिप्पलीमूलचित्रकौ । भृष्ट हिंग्वजमोदाच शर्षपाजीरकद्वयं ५० रेणुकेंद्रयवापाठा विडंगं गजपिप्पली । कटुकातिविषाभार्गीवचामूर्वाविकंटकं ५१ प्रत्येकं शाणिकानिस्युर्द्रव्याणीमानिविंशतिः । द्रव्येभ्यस्सकलेभ्यश्च त्रिफलाद्विगुणाभवेत् । एभिश्चूर्णीकृतैःसर्वैः समोदेयश्चगुग्गुलुः ५२ वंगरौप्यंचनागंचलोहसारंतथाभ्रकं । मंडूरंरससिंदूरं प्रत्ये कंपलसंमितं । गुडपाकसमंकृत्वा इमंदद्याद्यथोचितं । एकपिंडं ततःकृत्वा धारयेत्घृतभाजने ५३ गुटिकाशाणमात्रास्युः कृत्वाग्राह्यायथोचिता । गुग्गुलुर्योगराजोयं त्रिदोषघ्नंरसायनं ५४ मैथुनाहारपानाभ्यां त्यागोनैवात्रविद्यते । सर्वान्वातामया न्कुष्ठ मर्शांसिग्रहणीगदं ५५ प्रमेहंवातरक्तंच नाभिशूलंभगंदं । उदावर्तंक्षयंगुल्म मपस्मारमुरोग्रहं ५६ मंदाग्निंश्वासकासंच

वनायके वैद्यपिलावै गुल्मको नाशकरै बात गुल्मको मद्यमें पित्त गुल्मको गोक्षीरसंग ॥ ४८ ॥ कफ गुल्मको गोमूत्र संग त्रिदोषज गुल्मको दशमूलके क्वाथसाथ स्त्रीके रक्तगुल्मको उष्ट्रीदुग्ध संगदेइ ४९ ॥ वातादि रोगपर योगराज गुग्गुल सोंठ पीपरि चावग्रंथि चीता भुनीहींग अजमोद सरसों दोनों जीरे ॥ ५० ॥ मेवड़ीवीज इंद्रयव पाढ़ा बिडंग गजपीपरि कुटकी अतीस भारंगी बच मुर्रा गुखुरू ॥ ५१ ॥ येसब शाणशाण भर सबका दूना त्रिफलेका चूर्ण ५२ ॥ सब चूर्णके समान शुद्ध गुग्गुल बंग रूपरस लोहा अभ्रक नागेश्वर मंडूरस सिंदूरसाररस पलपल भरदे गुड़ पाककरि रस औ सबचूर्ण गुड़पाकमेंसानि एक पिंडकरि घृतभांड में धरै ॥ ५३ ॥ गोलीचारमाशेकी यहयोगराज गुग्गुल त्रिदोष नाशक रसा- यनहै ॥ ५४ ॥ मैथुन विहार पानाहार वर्जित नहीं सब बातरोग सर्वार्श ग्रहणी ॥ ५५ ॥ प्रमेह बातरक्त नाभिपीर भगंदर उदावर्त

नाशयेदरुचिंतथा । रेतोदोषहरंपुंसांरजोदोषहरंस्त्रियां ५७ पुं-
सामपत्यजनको वंध्यानांगर्भदस्तथा । रास्नादिक्काथसंयुक्तो
विविधंहंतिमारुतं ५८ काकोल्यादियुतःपित्तंकफमारग्वधादिना ।
दार्वीसृतेनमेहांश्च गोमूत्रेणैवपांडुतां ५९ मेदोवृद्धिंचमधुना
कुष्ठंनिंवसृतेनच । छिन्नाक्काथेनवातास्त्रं शोथंशूलंकणासृतात् ६०
पाढलाक्काथसहितो विषमूषकजंजयेत् । त्रिफलाक्काथसहितो
नेत्रार्तिंहंतिदारुणां ६१ पुनर्नवादिक्काथेन हन्यात्सर्वोदराण्यपि
६२ त्रिफलायास्त्रयःप्रस्थाः प्रस्थैकममृताभवेत् । संकुट्यलोह
पात्रेण सार्द्धद्रोणांवुनापचेत् ६३ जलमर्द्धसृजंज्ञात्वागृह्णीयाद्व-
स्त्रगालितं । ततःक्काथेक्षिपेच्छुद्धं गुग्गुलंप्रस्थसम्मितं ६४ पुन
र्दं यमयोपात्रे दार्व्यासंहर्षयेन्मुहुः । सार्द्रीभूतंततोज्ञात्वागुडपाक
समाकृतं ६५ चूर्णीकृत्यततस्तत्र द्रव्याणीमानिप्रक्षिपेत् । त्रि-
फलाद्विपलाज्ञेया गुडूचीपालिकामता ६६ षडक्षंत्र्यूषणंप्रोक्तं
विडंगानांपलार्द्धकं । दंतीकर्षमिताकार्या त्रिवृत्कर्षमितंतथा ६७

क्षयी गुल्म मिर्गी छातीरोग ॥ ५६ ॥ मन्दाग्नि श्वासकास नाश
करै पुरुषके धातु स्त्रीके रजोदोष ॥ ५७ ॥ नपुंसकको पुंसत्वप्रद वांझ
गर्भधारै रास्नादिक्काथसाथ बातरोगहरै ॥५८॥ ककोल्यादि काथ
संग पित्तहरै आरग्वधादि संग कफनहरै हलदी काथ संग प्रमेह
हरै गोमूत्र संग पांडु सहतसंग मेद वृद्धि नीम काथ संगकुष्ट नाशै
गुर्च काथ संग बातरक्तनाशै पीपरि काथसंग शोथ शूल नाशै॥५८॥
६० ॥ सिर्स काथसंग मूषकदंश बिषहरै त्रिफलाकाथ संग नेत्ररोग
हरै ॥ ६१ ॥ पुनर्नवा काथसंग सबउदर रोगहरै ॥ ६२ ॥ बातरक्त
पर कैशोर गुग्गुल त्रिफला तीनप्रस्थ गुर्च एकप्रस्थ त्रैकूटके डेढ़
द्रोण पानीमें औटावै॥ ६३ ॥ जब अर्द्धजल रहै तब छानिकै शुद्ध
गुग्गुल प्रस्थभर डारै ॥ ६४ ॥ फिरि लोहपात्र में लोहकी करछी
से घोटि गुड़पाक सम गाढ़ाकरि ॥ ६५ ॥ औषधि डारै जो आगे
कहेंगे आंवरा बहेड़ा हड़ अर्द्धअर्द्ध पलगुर्च एकपल,सोलहत्रिकुटा
छःकर्ष विडंग अर्द्धपल दंतूनि एककर्ष निशोथ एककर्ष ॥ ६६ ॥ ६७॥

ततःपिंडीकृतंसर्वंघृतपात्रेविनिक्षिपेत् । गुटिकाशाणमात्रेणयुंज्या
द्दोषाद्यपेक्षया ६८ अनुपानेभिषग्दद्यात्कोष्णंनीरंपयोथवा । मं-
जिष्ठादिसृतंवापियुक्तियुक्तंततःपरं ६९ जयेत्सर्वाणिकुष्ठानिवात
रक्तंत्रिदोषजं । सर्वव्रणानिगुल्मांश्च प्रमेहपिडिकांतथा ७० प्र-
मेहोदरमन्दाग्निं कासंस्वपथुपांडुतां । निहंतिचामयान्सर्वा नुप-
युक्तोरसायनः ७१ कैशोरिकाविधानोयं गुग्गुलःकांतिकारकः ।
व्रणादिनानेत्रगदांगुल्मादीन्वरुणादिना ७२ क्काथेनखदिरस्यापि
व्रणान्कुष्ठादिनाशयेत् । अम्लंतीक्ष्णमजीर्णंच व्यवायंश्रममातपं ।
मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यक् गुणार्थीपुरसेवकः ७३ त्रिफलंत्रिफलाचूर्णं
कृष्णाचूर्णंपलोन्मितं । गुग्गुलंपंचपलिकं क्षोदयेत्सर्वमेकतः ७४
ततस्तुवटिकांकृत्वाप्रयुंज्याद्वह्न्यपेक्षया । भगंदरंगुल्मशोथा वर्शां
सिचविनाशयेत् ७५ अष्टाविंशतिसंख्यानिपलान्यानीयगोक्षुरैः ॥
विपचेत्षड्गुणेनीरे क्काथोग्राह्योविशेषतः ७६ ततःपुनःपचेत्तत्रपुरं

सब गुड़ पाकमें सानि पिंडबांधि घीपात्रधरै शाणभर गोली वा
दोष बिचारिकै देइ ॥ ६८ ॥ वैद्यको अनोपान तप्तवारि वा दूध वा
मजीठ क्काथ में देना वा यथोचित देना योग्यहै ॥ ६९ ॥ सब कुष्ट
जाइ त्रिदोष जन्य बातरक्तजाइ सब व्रणगुल्म प्रमेह पिटिका॥७०॥
प्रमेह उदररोग मंदाग्नि कास सूजन पांडु आंत्र रोग येसबनाश
होइ यह रसायनहै ॥ ७१ ॥ कैशोरक ऋषि ने कहाहै किशोर गु-
ग्गुल नामहै कांतिप्रदहै त्रूसादि क्काथसंग नेत्ररोग दूरकरै वरुणा
दिक्काथसंग गुल्म दूरकरै ॥ ७२ ॥ खदिरादि क्काथसंग व्रण दूरकरै
कुष्टदूरकरै खट्टी तीक्ष्ण मैथुन श्रम घाम मद्यक्रोध येसब त्यागकर
जो गुण चाहै तो संयम से रहै ॥ ७३ ॥ भगंदर पर त्रिफला गुग्गुल
त्रिफलाचूर्ण तीनपल पिप्पलीचर्ण पलभर शुद्ध गुग्गुल पांचपल
पीसिकै एकत्रकरि ॥७४॥ गोलीबांधि रोगीकी अग्नि बिचारि कै
देयतो भगंदर गुल्मशोथ बवासीर दूरहोवं ॥ ७५ ॥ प्रमेह गोक्षु-
रादि गुग्गुल गोखुरू अट्ठाईसपल छःगुणे पानीमें काढ़ाकरि अर्द्ध
शेषले ॥ ७६ ॥ सातपल गूगुलदे फिरि पकावै जब गुड़ पाकसा हो

सप्तपलंक्षिपेत् । गुडपाकसमाकारं ज्ञात्वातत्रविनिक्षिपेत् ७७ त्रिकुटात्रिफलामुस्तं चूर्णितंपलमात्रकं । ततःपिंडीकृतस्यास्य गुटिकामुपयोजितः ७८ हन्यात्प्रमेहंकृच्छ्रं चप्रदरंमूत्रघातकं । वातस्त्रम्वातरोगांश्च शुक्रदोषंतथाश्मरीं ७९ त्रिफलाष्टपलंकार्यंभल्लातंचचतुःपलं । वाकुचीपंचपलिकाविडंगानांचतुःपलं८० हतलोहंत्वक्चैव गुग्गुलाश्चशिलाजतु एकैकंपलमात्रंस्या त्पलार्द्धपौष्करं भवेत् ८१ चित्रकस्यपलार्द्धंस्याद्विशाणांमरिचंभवेत् । नागरंपिप्पलीमुस्तं त्वगेलापत्रकुंकुमं ८२ शाणोन्मितंस्यादेकैकंचूर्णयेत्सर्वमेकतः । ततस्तत्प्रक्षिपेच्चूर्णं म्पक्वखंडेचतत्समे ८३ मोदकांपलिकांकृत्वा प्रयुंजीतयथोचितान् । हन्यात्सर्वाणिकुष्ठानि त्रिदोषःप्रभवामयन् ८४ भगन्दरंप्लीहगुल्मे जिह्वाताल्वगलामयान् । क्षिरोक्षिभ्रू गतान्रोगा न्नन्यान्पृष्ठि गतानपि । ८५ प्राग्भोजनस्यदेयंस्या दधःकायस्थितेगदैः । भेषजंभुक्तमध्येच रोगेजठरसंस्थिते । भोजनस्योपरिग्राह्य मूर्ध्वजंतुगदेषुच

तब जोद्रब्य कहताहूं सो पीसिकै डारै ॥ ७७ ॥ त्रिफला त्रिकुटा मोथा येसातौं पलपल भर मिलाय पिंडीकरि गोली बांधै ॥ ७८ ॥ प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदर मूत्राघात बातरक्त बातरोग शुक्ररोग पथरी सबनाश होयं ॥ ७९ ॥ कुष्टपर त्रिफला मोदक त्रिफला आठपल भिलावाचार वकुचीपांच विडंगचार ॥ ८० ॥ लोहभस्म निशोथ गुग्गुल शिलाजीत सब एकएकपल पुष्करमूल अर्द्ध पल ॥ ८१ ॥ चीता अर्द्ध पल मरिच दोशाण सोंठ पीपरि मोथा तज इलायची पत्रज केशरि ॥ ८२ ॥ सबशाण शाणभरले चूर्णकरि सबचूर्ण समान खांड़ले पाककरि चूर्णडारि गोलीबनावै ॥ ८३ ॥ पलपल मित मोदकबनाइ रोगबलदेखि रोगीको खिलावै तौ सबकुष्ट नाशहोइ त्रिदोष जन्य आंवरोग ॥ ८४ ॥ भगंदर प्लीहा गुल्म जिह्वा कंठ रोग ग्रीव पीठ इन सबको रोगनाश होइ ॥ ८५ ॥ शरीरके नीचेके रोगनमें भोजनादि औषधि देना मंदाग्नि जनितमें भोजन के मध्यदेइ शिरोसंबंधी रोगन में भोजनांत समयमें देना ॥ ८६ ॥

८६ कचनारत्वचोग्राह्यं पलानांदशकंबुधैः । त्रिफलापट्पला ग्राह्या त्रिकटुःस्यात्पलत्रयं ८७ पलैकंवरुणांकुर्या देलात्व-क्पत्रकंतथा । एकैकंकर्षमात्रंस्या त्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् ८८ याव च्चूर्णमिदंसर्वं तावन्मात्रस्तुगुग्गुलः । सकटुःसर्वमेकत्रपिंडंकृत्वा चधारयेत् ८९ गुटिकाशाणमात्रेण प्रातर्ग्राह्यायथोचिता । गंड-मालांजयेत्युग्रामपचीमर्बुदानिच । ग्रंथिवृणादिगुग्गुलांश्च कुष्ठा निच भगंदरं ९० प्रदेयश्चानुपानार्थं क्राथोमुंडितिकाभवः । क्राथःखदिरसारस्य पथ्याक्राथोदकोष्णकं ९१ निस्तुषंमाषचूर्णस्यतथागोधूमसंभवं । निस्तुषंयवचूर्णंचशालितंडुलजंतथा ९२ सूक्ष्मंचपिप्पलीचूर्णं पलकान्युपकल्पयेत् । एतदेकीकृतंसर्वंभर्जयेत्गोघृतेनच ९३ अर्द्धमात्रेणसर्वेभ्य स्ततःखंडसमंक्षिपेत् । जलंचद्विगुणंदत्वा पाचयेत्त शनैःशनैः ९४ ततःपक्वंसमुद्धृत्य मोदकंचपलोन्मितं । कुर्यात्सायंचतंभुक्त्वा पिवेत्क्षीरंचतुर्गुणं ९५ वर्जनीयोविशेषेण क्षाराम्लौद्वौरसावपि । कृत्वैवंरमयेन्नारीं वीर्येन क्षीयतेनरः ९६ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डे वटककल्पनासप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

गंडमाला पर कचनार गुग्गुल कचनार छाल दशपल त्रिफला छः पल त्रिकुटा तीनपल ॥८७॥ वरुण एकपल इलायची पत्रज कर्ष कर्ष भर सब एकत्रकरि चूर्णकरै ॥८८॥ सर्व चूर्णके समान गुग्गुलपीसि चूर्णमें मिलाय पिंड बनावै ॥ ८९ ॥ चारिमाशेकी गोली बनाइ रोगबल औषधिबल देखि रोगीको प्रातसमय देयतो गंडमाला अपची अर्बुद घाव ग्रंथि कुष्ट भगंदर नाश होयँ ॥ ९० ॥ अस्यानुपानं ॥ मुंडीका रस इड़ क्वाथ वा उष्णोदक में देइ ॥ ९१ ॥ धातु पुष्टिपर माषादि मोदक माष कहे उरद दालि धोइ चूर्ण करि लेइ गोहूंचूर्ण यवकी गूदी का चूर्ण साठी चाउरका चूर्ण ॥ ९२ ॥ पीपरि चूर्ण सब पलपल भर लेइ सब चूर्णों का आधा गोघृत दे भूजै ॥ ९३ ॥ चूर्णोंके समान खांड़ले तब सबका दूना जलडारि मंद

क्वाथोदेयंपुनःपाकात्घनत्वंसारसक्रिया । सोवलेहश्चलेहः स्यात्तन्मात्रास्यात्पलोन्मिता १ सिताचतुर्गुणाकार्याचूर्णाच्च द्विगुडोगुडः । द्रव्यंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्रनिश्चयः २ सुपक्वेतंतुमत्वंस्यादवलेहोप्सुमज्जते । स्थिरत्वंपीड्यतेमुद्रा गंधवर्णरसोद्भवं ३ दुग्धमिक्षुरसंयूपंपंचमूलकषायकं । वासाक्वाथंयथायोग्यमनुपानंप्रशस्यते ४ कंटकारींतुलांनीरे द्रोणपक्वांकषायकम् । पादशेषंगृहीत्वाच तस्मिंश्चूर्णानिदापयेत् ५ पृथक्पलांशान्येतानि गुडूचीचव्यचित्रकैः । मुस्तकर्कटशृंगीच त्र्यूषणंधन्वयासकं ६ भार्गीरास्नाशठीचैव शर्करापलविंशतिः । प्रत्येकंचपलान्यष्टौ प्रदद्यात्घृततैलयोः ७ पक्वावलेहत्वमानीय शीतेमधुपलाष्टकं । चतुःपलंतुगोक्षीरं पिप्पलीनांचतुःपलं ८ क्षिप्त्वा

मंद आंचदे घोटै ॥ ९४ ॥ जब सिद्धहो तब पलपल भरके लड्डू बांधि सांझको खाइ उसपर चारिपल दूध पिये ॥ ९५ ॥ फिर खार और खटाई दोरस न खाइ स्त्रीप्रसंग करै तौवीर्य न द्रवै देहपुष्टहै॥९६॥ इतिश्रीशार्ङ्गधर सुधाकरे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथावलेहकल्पना द्रव्यको क्वाथसहश औटावै फिरविशेष आंच देइ जब गाढ़ाहो तब अवलेह कहैंलेहभीकहतेहैं जाना चारितुद्रा भर ॥ १ ॥ चूर्णसे मिश्री चौगुनीदेना गुड़दूना द्रव्यादि चौगुने यह सबत्र रीतिहै ॥२॥जब आंचदेनेपर तारबंधे औपानी में पाककी बूंद न बूड़ै न घुलै तबसिद्धजानै और अंगुरीसे दबानेसे कुछदबै तब सुगंध रसादि डारै ॥ ३ ॥ औ दूधसे ऊखसे उत्पत्ति वस्तु यूषासे पंचमूल क्वाथसे रूसा क्वाथ से इन अनोपान से देना अथवा औरजो रोगान्वित अनोपान होसो देना ॥ ४ ॥ हिचकी औ कास श्वासपर भटकटैया वलेह भट कटैया चारि सेर लै द्रोण भर जलमें औटै जब चौथाई रहै तब उसमें चूर्ण डारै ॥ ५ ॥ गुर्च चाव चीता मोथा काकरासिंगी त्रिकुटा यवासा ॥ ६ ॥ भारंगी ये सब कचूर ये पलपल भरले चूर्ण करै शक्कर बीसपल घृत आठ पल तेल आठ पल ॥ ७ ॥ ये सब काढ़े में औटै अवलेह सिद्ध हो ठंढाकरि आठ पल सहत बंशलोचन चारिपल पिप्पलीचूर्ण चारिपल मिलाइ ॥ ८ ॥ उत्तम

निदध्यात्सुदृढेमृत्मयेभाजनेशुभे । लेहोयंहंतिहिक्कार्त्तिं श्वासकासानशेषतः ९ पाटलारग्निकाश्मर्यविल्वारलुकगोक्षुरैः । पर्ण्यौबृहत्यौपिप्पल्यः शृंगीद्राक्षामृताभया १० वलाभूम्यामलीवासा ऋद्धीजीवंतिकाशठी । जीवकर्षभकौमुस्तं पौष्करंकाकनाशिका ११ मुद्गपर्णीमाषपर्णी विदारीचपुनर्नवा । काकोल्यौकमलंमेदे सूक्ष्मैलागुरुचंदनं १२ एकैकंपलसंमानं स्थूलचूर्णितमौषधं । एकीकृत्यमहत्पात्रे पंचामलशतानिच १३ पचेद्द्रोणजलंक्षिप्त्वा ग्राह्यमष्टावशेषितं । ततस्तुतान्यामलानि निष्कुलीकृतवाससां १४ दृढहस्तेनसंपीड्य क्षिप्तातत्रततोघृतं । पलसप्तमितंतानि किंचिद्भ्रष्टाल्पवह्निना १५ ततस्तत्रांक्षिपेत्क्वाथंखण्डस्यार्द्धपलोन्मितं । लेहवत्साधयित्वाच चूर्णानीमानिदापयेत् १६ पिप्पलीद्विपलादेयातुगाक्षीराचतुष्पला । प्रत्येकंचत्रिशाणाःस्या त्त्वगेलापत्रकेशरं १७ ततस्त्वेकीकृतंसर्वंक्षिपेत्क्षौद्रंचषट्पलं । इत्येतच्चावनंप्रोक्तंच्यवन

पात्र में राखै इस अवलेह से हिचकी श्वासकास अशेष नाश करै ९ ॥ क्षयादि पर च्यवनप्रसावलेह जिसमें अग्निमंथ खमारी पाटल वेल श्योनाक बनमूंग बनउर्दी गुखुरू भटकटैया दो पीपरि काकरासिंगी दाख गुर्च हड़ ॥ १० ॥ नागबलायतालावाला रूसा ऋद्धि बिना बाराही कन्द दधियापाली कचूर तीव करिष भक इन बिना बिलाईकन्द मोथा पुष्करमूल काकतुण्डी ॥ ११ ॥ बन मूंग बनउर्दी बिलाईकन्द गदाचूर्ण काकोली क्षीर काकोली इन बिना असगन्ध कमलगट्टा महामेदा इन बिना मुरेली इलायची अगर श्वेतचन्दन ॥ १२ ॥ ये सब पलपल ले जौकोट करि पांचसौ आँवरे औ चूर्ण द्रोण भरि पानी बड़े पात्रमें डारि पकावै जब अष्टमांश रहै तब उतारि आँवरा की गुठली दूरकरै ॥ १३।१४ ॥ कपरा में निचोरै आँवरा स्वरस औ काढ़ा छानि जुदाधरै फिरि आंवराकीगूदी मलकै सातपलघीमें भूंजिले ॥ १५ ॥ तब वहकाढ़ा और अर्द्ध तुला खांड़ दै अवलेह साधकै तब यह चूर्ण डारै ॥ १६ ॥ पीपरि दोपल बंशलोचन चारपल तज इलाइची पत्रज केशरि ॥ १७ ॥

प्रासंसंज्ञिकं १८ लेहंवह्निवलंदृष्ट्वाखादेत्क्षीणोरसायनं । बाल
वृद्धाःक्षतक्षीणा नारीक्षीणाश्चशोणितः १९ हृद्रोगिणःस्वरक्षीणाः
येनरास्तेषुयुज्यते । कासंश्वासंपिपासांच वातास्रमुरसोग्रहं २०
वातंपित्तंशुक्रदोषं मूत्रदोषंचनाशयेत् । दद्यात्स्मृतिंस्त्रीषुहर्षं कां
तिवर्णप्रसन्नतां । अस्यप्रयोगादाप्नोति नरोजीर्णविवर्जितः २१
निष्कुलीकृत्यकूष्मांड मग्नौपलशतंपचेत् । निक्षिप्यद्विगुणेनीरे
अर्द्धसृष्टंचगृह्यते २२ तानिकूष्मांडखंडानि पीडयेद्दृढवाससा ।
आतपेशोषयेत्किंचि च्छूलाग्रैर्बहुसोव्यधेत् २३ क्षिप्त्वाताम्रकटा
हेच दद्यादष्टपलंघृतं । तेनकिंचिद्भर्जयित्वा पूर्वोक्तंचजलंक्षिपेत्
२४ खंडात्पलशतंदत्वा सर्वमेकत्रपाचयेत् । सुपक्वेपिप्पलीशुंठी
जीराणांद्वेपलेपृथक् २५ पृथक्पलार्द्धधान्याकं पत्रैलामरिचंत्वचं ।
चूर्णीकृत्यक्षिपेत्तत्र घृतार्द्धंक्षौद्रमावहेत् २६ खादेदग्निवलंदृष्ट्वा
रक्तपित्तज्वरीक्षयी । शोषतृष्णातमश्छर्दि कासश्वासक्षतातुरः २७

चारौ तीन माशा सहत छः पलदे च्यवनऋषिका कहा यह च्यवन-
प्रास है ॥ १८ ॥ अग्निबल देखि क्षीण पुरुष खाइ यह रसायन है
बालक वृद्ध क्षतसे क्षीण नारिका क्षीण जिसकी अति मन्द नाड़ी
चलै अंगुरी तरे सूख गयाहो ॥ १९ ॥ हृदय रोग स्वर क्षीण को
खिलावै श्वासकास प्यास वात रक्त उरपीर ॥ २० ॥ वात पित्त
शुक्रमूत्र दोष ये सब नाशहों मेदास्मृति बढ़ावै स्त्री को सुखद हो
कांति वर्ण प्रसन्नता उदय हो शरीर जीर्ण न हो ॥ २१ ॥ रक्तपित्त
पर कूष्मांडपाक कुम्हड़ा छीलि सौटूक करि दूनेपानीमें पचावै
आधा रहै तब उतारिले ॥ २२ ॥ उन टुकरन को वस्त्र में बांधि
निचोरि घाममें सुखाइकै शुदनीसे गोदै ॥ २३ ॥ तांबेकी कढ़ाहीमें
सात पल घीमेंभुजै तब उसका निचुरा पानी उसी में डारै ॥ २४ ॥
सौपल खांड़दे पकाय सोंठि पीपरि जीरा दै दै पल ॥ २५ ॥ धनियां
पत्रज इलाइची मिर्च बचअर्द्ध अर्द्ध पल सबका चूर्ण घीका आधा
सहत डारि ॥ २६ ॥ बलानुसार पित्तवालेको ज्वरी को क्षयीको
सोष प्यास कासश्वास छर्दि येरोगयुक्तनको क्षतातुरको दे ॥२७॥

कूष्मांडकावलेहोयं बालवृद्धेषुयुज्यते । उरःसंधानकृद्वृष्यो बृंहणोबलकृन्नतः २८ युक्तयाकूष्मांडखंडस्य शूरणांविपचेत्सुधीः । अर्शसांमूढवातानां मंदाग्नीनांचयुज्यते २९ हरीतकीशतंभद्रं यवानीमाढकंतथा । पलानिदशमूलस्य विंशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकंपिप्पलीमूल मपामार्गःशठीतथा । कपिकच्छुशंखपुष्पी भार्गीचगजपिप्पली ३१ बलापुष्करमूलंच पृथग्द्विपलमात्रया । पचेत्पंचाढकेनीरे यवैःखिन्नैर्हृतंनयेत् ३२ तच्चामयाशतंदद्यात्काथेनास्मिन्विचक्षणः । सर्पिस्तैलंचपलकं क्षिपेद्गुडतुलांतथा ३३ पक्वालेहत्वमानीतं सिद्धशीतेपृथक्पृथक् । क्षौद्रन्चपिप्पलीचूर्णं दद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयंखादे त्तेनलेहेननित्यशः । क्षयंकासंज्वरंश्वासं हिक्कार्शोरुचिपीनसान् ३५ ग्रहणींनाशयेदेष वलीपलितनाशनः । बलवर्णकरःपुंसा मवलेहोरसायनः । विहितोगस्त्यमुनिना सर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलांद्रोणे जल

कूष्माण्ड अवलेह बालवृद्धको देना छाती पुष्ट करै वीर्य धातु बढ़ावै बलवर्द्धन है ॥ २८ ॥ अर्शपर खंड कूष्मांडावलेह जैसे कुम्हड़ा की विधि है सोई ब्वरन की भी है पेठा औ जमीकंद की चोटी काचै करि दूनो को एकत्र करि उसी रीति से अवलेह बनाइ खिलावै तो अर्श मन्दाग्नि मूढवात ये सब अच्छे होयं ॥ २९ ॥ क्षयी पर अगस्त हरीतकी बड़ीहड़ै सय एक आढक दशमूल बीस पल ॥ ३० ॥ चीता पीपरामूल चिचिंरा कचूर केवांच कौड़ाला भारंगी जल पीपरि ॥ ३१ ॥ बरियारा पुष्करमूल सब द्वैद्वै पल पांचआढक जलमें पचाइ गलाइ उतारि छानलेइ ॥ ३२ ॥ तिसमेंसौ हड़ तेल घीआठपल गुड़तुलाभर देइ ॥ ३३ ॥ पकावैठंढाकरि सहत पीपरिका चूर्ण ये सब एक एक कुड़व डारै ॥ ३४ ॥ इस अवलेह के संग दो हड़ नित खाय क्षयीका रोग श्वासज्वर हिचकी अर्श अरुचि पीनस ॥ ३५ ॥ ग्रहणी ये रोग नाश होइं बलवंत हो श्वेत बार कृष्ण हों रूपवान हो पुरुष को यह अवलेह रसायन है अगस्त्य मुनिकी कही यह हरीतकी सब रोग को नाशकरै ॥ ३६ ॥ अयार्श पर कुरैया

स्यविपचेत्सुधीः । कषायवादशेषंच गृह्णीयाद्वस्त्रगालितं ३७ त्रिंशत्पलगुडस्यात्रदत्वाचविपचेत्पुनः । सांद्रत्वमागतंदृष्ट्वा चूर्णानीमानिदापयेत् ३८ रसांजनंमोचरसं त्रिकटुंत्रिफलातथा । लज्जालूचित्रकंपाठा बिल्वमिन्द्रयवंवचा ३९ भल्लातकप्रतिविषां विडंगानिचवालकं । प्रत्येकंपलसंमानं घृतस्यकुडवंतथा ४० सिद्धशीतेततोदद्यान्मधुनाकुडवंतथा । जयेदोषोवलेहस्तु सर्वाणयर्शांसिवेगतः ४१ दुर्नामप्रभवारोगा अतीसारमरोचकं । ग्रहणीपांडुरोगंच रक्तपित्तंचकामलं । अम्लपित्तंतथाशोथं कार्श्यंचैवप्रवाहिकाम् ४२ अनुपानेप्रयोक्तव्य माजंतक्रंपयोदधिः । घृतंजलंवाजीर्णेच पथ्यभोजीभवेन्नरः ४३ कुटजत्वक्तुलामर्द्धां द्रोणनीरेविपाचयेत् । पादशेषंसृतंनीत्वा चूर्णान्येतानिदापयेत् ४४ लज्जालुधातकीविल्व पाठामोचरसस्तथा । मुस्तंप्रतिविषाचैव प्रत्येकंस्यात्पलंपलं ४५ ततस्तुविपचेदग्नौ यावद्दर्वीप्रलेपनं । जलेनछागदुग्धेन पीतोमंडेनवार्जयेत् ४६ घोरान्सर्वानतीसारान् नानावर्णांचवेदनां ।

अवलेह कुरैया की छाल तुलाभर एकद्रोण पानी में पचावै जब चौथाई रहै तब उतारि वस्त्रसे छानलेय॥३७॥ फिरतीस पल गुड़ दे पकावैगाढ़ाभये यह चूर्णडारि॥३८॥रसौत मोचरस त्रिकुटा त्रिफला लजालू चीता पाढ़ा बेल इंद्रयव बच ॥ ३९ ॥ भिलावा अतीस विडंग सुगन्धबाला ये पलपल भरघी कुड़व भर॥ ४०॥ठंढापरे कुडव भर सहत दे यह अवलेह सर्वार्शको बेगही दूरि करै ॥४१॥दुर्गम रोग अतीसार अरुचि ग्रहणी पांडु रक्त पित्तकमल पित्तशोथ खजुरी प्रवाहिका ये सब दूरहोयं॥४२॥तस्यानुपानं छगरी का दूध वा मट्ठा दही घी उसीका या पानी भोजनके पाचन समय औषधि खाय ॥ ४३ ॥ सर्वातीसारपर कुरैयाटक अर्द्धतुला कुरैया छाल द्रोण भर पानीमें पकावै जब चौथाई रहै तब यह चूर्णडारै ॥४४॥लजालू धवफूल बेलपाढ़ा मोचरस मोथा अतीस येपल पल भर॥४५॥ फिर उसो काढ़ेको औटै जबलग करछीमें न लगे तब सिद्धजानो सो बकरी पय वा पानी वा मांड़के संग पियै॥४६॥तौसर्व अतीसार

असृग्दरंसमस्तंच सर्वाशींसिप्रवाहिका ४७इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्य खंडअवलेहकल्पनाष्टमोध्यायः॥ ८॥

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्य घृतंवातैलमेवच । चतुर्गुणेद्रवेसाध्यं तस्यमात्रापलोन्मिता १ निक्षिप्यक्काथयेत्तोयं क्वाथद्रव्याच्चतुर्गुणं। पादशिष्टंगृहीत्वाच स्नेहस्तेनैवसाधयेत् २ चतुर्गुणंमृदौद्रव्येका ठिन्येष्टगुणंजलं । अत्यन्तकठिनेद्रव्ये नीरंषोडशिकंमतं ३ तथाच मध्यमेद्रव्ये दद्यादष्टगुणंपयः । कर्षादितःपलंयाव दद्यात्षोडशिकंजलं । ततस्तुकुडवंयाव त्तोयंचाष्टगुणंभवेत् । प्रस्थादितःक्षिपेन्नीरे खारीयावच्चतुर्गुणं ४ अंवुक्काथरसैर्यत्र पृथक्स्नेहस्यसाधनं । कल्कस्यांशंतत्रदद्या च्चतुर्थंषष्ठमष्टमं ५ दुग्धेदध्निरसेतक्रे कल्केदेयोष्टमांशकः । कल्कस्यसम्यक्पाकार्थं तोयमत्रचतुर्गुणं । ६ द्रव्याणियत्रस्नेहेषुपंचादीनिभवंतिहि । तत्रस्नेहसमान्याहुर्य

की घोर वेदना निवृत्त हो सब भांति रक्तवाह सर्वार्श प्रवाहिका नाश करै॥४७॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेणविरचितेअवलेहकल्पना ष्टमोध्यायः॥ ८ ॥

अथघृत तैल साधना कल्कसों चौगुना घृत वा तेल औ क्काथादि द्रव्यभी चौगुनो देना वारमात्रा एक पलभर है॥ १॥ जिसद्रव्य का क्काथदेनाहो तोचौगुनेजलमें औटै चौथाईरहै तब उतारिछानिले उसमें घी तेल सिद्ध करै॥२ ॥ कोमल द्रव्यमें चतुर्गुणा जल कठोरमें आठगुणा अत्यंत कठोरमें सोलह गुणा जलदे॥३॥मध्यमें अठगुणा पुनर्विधि रुपया भरसे चार रुपया भरताईमें सोलह गुणापानी दे क्काथ करै पलसे कुड़व ताईं अठगुना प्रस्थसे खारी पर्यंत चौगुना दे॥४॥और जो केवल कल्क पानी घी व तेलमें सिद्धकरै तो चतुरांश कल्कदे सेरभर तेल पाव सेर कल्क और जोकल्क काढ़ेकेसंगघी तेल पकावै तौ घृत तेलका षष्ठांश कल्कदेना तीन पावमें आधपाव औ जब कल्क रसके संग घी वा तेलमें पकावै तौ तेलका अष्टमांशकल्क देना सेर में आधपाव घृततेल का प्रमाण यहीहै॥५॥ दूध दही रस मट्ठा इनमें अष्टमांश कल्कदेइ औ कल्क भलीभांति पकाने के कारण चौगुना जल देना॥६॥औ जहां कल्क घी तेल क्काथपाथ पांचों

थापूर्वंचतुर्गुणं ७ द्रव्येनकेवलेनैव स्नेहपाकोभवेद्यदि । तत्राम्बु पिष्टःकल्कःस्याज्जलंचात्रचतुर्गुणं ८ क्काथेनकेवलेनैव पाकोयत्रेरितःक्कचित् । क्काथाद्रव्यस्यकल्कोपि तत्रस्नेहेप्रयुज्यते ९ कल्कहीनस्तुयःस्नेहः ससाध्यःकेवलेद्रवे । पुष्पकल्कस्तुयत्स्नेह स्तत्र तोयंचतुर्गुणं । स्नेहात्स्नेहाष्टमांशश्च पुष्पकल्कःप्रयुज्यते १० वर्त्तिवत्स्नेहकल्कःस्या यदांगुल्याविवर्त्तितः । शब्दहीनोऽग्निनिःक्षिप्त स्नेहसिद्धोभवेत्तदा ११ यदाफेनोगमस्तैले फेनशांतिश्चसर्पिषि । गंधवर्णरसोत्पत्तिः स्नेहसिद्धस्तथाभवेत् १२ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तो मृदुर्मध्यखरस्तथा । ईषत्सरसकल्कस्तु स्नेहपाको मृदुर्भवेत् १३ मध्यपाकश्चसिद्धिश्च कल्केनीरसकोमलैः । ईषत्कठिनकल्कश्च स्नेहपाकोभवेत्खरः १४ तदूर्ध्वंदग्धपाकःस्या द्दाह

होयं तहां स्नेहादिक समान देना पानी चौगुना देइ॥७॥जब सगी द्रणी द्रव्य घृत तेलमें पकानी होय तौ जलमें द्रव्यपीसि गलावा कल्क करि चौगुने पानीमें पचावै ॥८॥ जो केवल काढ़में कहाहो तहां उसी क्काथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत वा तेल युक्तवह काढ़ा औ चौगुना पानीदे पकाना॥९॥जहांकल्क रहितहै तो केवल द्रव्य वस्तु दूध पानी देके पकालेना जब फूलको कल्क में स्नेह सिद्ध कहैंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेहसे स्नेह सिद्ध कहैंगे तब स्नेह का अष्टमांश दूसरा स्नेह ले पुष्प कल्क युक्त पकालेना ॥ १० ॥ जब वह स्नेह पाक अंगुरी में लेकेमलसे गोली बनजाय उसे आग पर डारै औ जलसे शब्द चिर्चिराहट नकरै तब सिद्ध भयाजानो॥ ११॥ तेल फेन उठने से सिद्ध जानिये घृत फेन शांति से सिद्ध जानिये जब गंध आवै औ निर्मल होजाइ और से उत्पत्ति करै तब घृत वा तेल सिद्ध भया जानिये॥ १२ ॥ स्नेहपाक तीनप्रकार का है मृदु मध्य खर जो कल्क मोमवत् रहै तौ मृदु जानिये॥ १३ ॥ जो कल्क निरसहो कुछ कोमल रहै तौ मध्य जानिये जो कल्क निरस औ कठोर होजाइ तौ खरा जानिये॥ १४॥ जो इस प्रमाण से अधिक सो रेतो जानो स्नेह बिगड़गया अकार्थगया जो कच्चारहै तो से

कल्किप्रयोजनं । आमपाकश्चनिर्वीर्यो वह्निमांद्यकरोगुरुः १५ नस्यार्थस्यान्मृदुःपाको मध्यमःसर्वकर्मसु । अभ्यंगार्थःखरःप्रोक्तो युंज्यादेवंयथोचितं १६ घृततैलगुडादींश्च साधयेन्नैकवासरे । प्रकुर्वंत्युषिताह्येते विशेषागुणसंचयं १७पिप्पलीपिप्पलीमूलं च व्यचित्रकनागरैः। ससैंधवश्चपलिकैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत्१८क्षीरं चतुर्गुणंदत्वातत्सिद्धंप्लीहनाशनं । विषमज्वरमंदाग्नि हरंरुचिकरं परं १९ पिप्पलीपिप्पलीमूलं चित्रकोहस्तिपिप्पली । स्वदंष्ट्रा नागरंधान्यं पाठाबिल्वंयवानिका२०द्रव्यैश्चहलकैरेतै श्चतुःषष्टि पलंघृतं। घृताच्चतुर्गुणंदेयं चांगेरीरससंबुधैः२१ तथाचतुर्गुणंदत्वा दधिसर्पिर्विपाचयेत् । शनैःशनैःविपक्तव्यं चांगेरीघृतमुत्तमं २२ तद्घृतंकफवातघ्नं ग्रहण्यर्शोविकारनुत् । हंत्यावाहगुदभ्रंशं मूत्र कृच्छ्रप्रवाहिकां २३ मसूराणांपलशतं नीरद्रोणेविपाचयेत् । पाद शेषंसृतंनीत्वा दत्वाबिल्वपलाष्टकं२४घृतप्रस्थंपचेत्तेन सर्वातिसार

वन करे से मन्दाग्नि करै औ भारी हो ॥ १५ ॥ नास लेने को नरम हितहै मध्यम सर्व कार्य साधकहै खरा मर्दनको है जहांजैसा चाहै तहां तैसाबनावै ॥ १६ ॥ घृत तेल गुड़ एकदिन न साधै दिनांतर दे करै तौ अधिक गुण करै ॥ १७ ॥ पिलही पर क्षीर षट् पल पीपरि पीपरामूल चावचीता सोंठ सेंधौ येसब पलपलभर घी प्रस्थ भरमें पचावै ॥ १८ ॥ दूध चौगुना जब सिद्ध हो तौ यह घी प्लीहो को नाश करता है विषमज्वर मन्दाग्नि दूर हो औ रुचि करै संग्रहणी अतीसार पर चंगेरी घृत ॥ १९ ॥ पिपरी पिपरामूल चीता गजपीपरि गुखुरू सोंठ धनियाँ पाढ़ा बेल अजवाइन ॥ २० ॥ ये पल पल भर औ घी चौसठ पल छोटी लुनियाका रस २५६ पल दै ॥ २१ ॥ औ २५६ पल दहीके दे मंद मंद आंच पचावै इसका नाम चांगेरी घृतहै ॥ २२ ॥ इससे बात कफ ग्रहणी अर्श दूर हो पेटफूलना कांचनिःसरणमूत्रकृच्छ्रप्रवाहिकासब नाशहोयं ॥ २३ ॥ अतीसार पर मसूर घृत सौपल मसूरी को द्रोणभर जल में क्वाथ करै चौथाई रहै तब उस काढ़े में आठ पल बेलकी गूदी दे ॥ २४ ॥ औ प्रस्थभर घृत

नाशनं । ग्रहणीभिन्नविट्कंचनाशयेज्ञ्प्रवाहिकां २५ अश्वगंधाप लशतं तदर्द्धंगोक्षुरंमतं । शतावरीविदारीच शालिपर्णीबलास्मृता २६ अश्वत्थस्यचशुंगानि पद्मबीजंपुनर्नवा । काश्मर्यश्चफलंचैव मापबीजंतथैवच २७ पृथक्दशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेंभसःपचेत् । द्रोणेशेषेरसेतस्मिन्पचेच्चैवघृताढकं २८ मृद्वीकापद्मकंकुष्टंपिप्प लीरक्तचंदनं । पत्रकंनागपुष्पंच आत्मगुप्ताफलंतथा २९ नीलोत्प लंसारिवेद्वेजीवनीयगणास्तथा । पृथक्कर्षसमान्भागांछर्क्करायाःपल द्वयं ३० रसस्यपौंड्रकेक्षूणामाढकैकंसमाहरेत् । रक्तपित्तंक्षतंक्षीणां कामलांवातशोणितं ३१ हलीमकंपांडुरोगंवर्णभेदंस्वरक्षयं । मूत्र कृच्छ्रमुरोदाहं पार्श्वशूलंचनाशयेत् ३२ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यंवहूवंत पुरचारिणां । स्त्रीणांचैवाप्रजातानां दुर्बलानांचदेहिनां ३३ श्रेष्ठंबल करंवर्ण्यं हृद्यंपुष्टिरसायनं । ओजस्तेजस्करंहृद्य मायुष्यंप्राण-

वर्द्धनं ३४ संबद्ध यतिशुक्रस्य पुरुषंदुर्बलेंद्रियं। सर्वरोगविनिर्मुक्तो पयसिक्तोयथाद्रुमः। कामदेवइतिख्यातः सर्पिरुक्तंमहागुणं ३५ त्रिफलाद्वेनिशेकौंती सारिवेद्वेप्रियंगुका। शालिपर्णीपृष्टपर्णी देव दार्व्यैलवालुकं ३६ नातंविशालदंतीचदाडिमंनागकेशरं। नीलोत्प लैलामंजिष्ठा विडंगंपद्मकुष्ठकं ३७ जातीपुष्पंचंदनंच तालीसंबृहतीतथा। एतैःकर्षसमैःकल्कै र्जलंदत्वाचतुर्गुणं ३८घृतप्रस्थंपचे-द्धीमानपस्मारेज्वरेक्षये। उन्मादिवातरक्तेचकासेमंदानलेतथा३६ प्रतिश्यायेकटीशूले तृतीयकचतुर्थके। मूत्रकृच्छ्रे विसर्पेचकंडूपां-ड्वामयेतथा ४० विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वथैवप्रयुज्यते। वंध्यानांपुत्रदं भूतयक्षरक्षोहरंस्मृतं४१अमृताक्वाथकल्काभ्यांसक्षीरंविपचेद्घृतं। वातरक्तं जयत्याशुकुष्टंजयतिदुस्तरं ४२ सप्तच्छदप्रतिविषासंपा

बढ़ाता है दुर्बलेंद्री पुरुष को बली हों सब रोगनाश हों जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होता तैसे मनुष्य का शरीर होता है यह कामदेव घृत बड़ा गुणदाई है कल्यायन घृत अपस्मार पर त्रिफला दूना हरदी रेणुका सरिवन पिठवन मकरावन ढ़री बन मूंग देव दारु दाल वा लून मिलै तो सुगन्धबाला देइ ॥ ३५ । ३६ ॥ तगर इन्द्रा-रुन तमाल गोटेका बीज अनार नागकेशर नील कमल इलाइची मजीठ बिडंग पद्माष कूट ॥ ३७ ॥ मालती पुष्प श्वेतचन्दन तालीस पचटङ्क भटकटैया ये सब कर्षभरपानी में पीसि कल्क करि चौगुना पानी दे ॥ ३८ ॥ उसपानी में प्रस्थभर और वह कल्क देकै पकाय वैद्य देइ इस घीसे मिरगी पित्त श्रम ज्वर क्षयी बात रक्त कास मन्दाग्नि ॥ ३९ ॥ नाक टपकना कटि पीड़ा तिजरी चातुर्थिक मूत्र कृच्छ्र विसर्पिका खजुरी पांडु ॥ ४० ॥ दोनों विषमें प्रमेहमें और रोगसब अच्छे हों बांझ पुत्र जनै भूत राक्षस बाधा सब दूर हो पानी कल्याण घृत इसका नामहै ॥ ४१ ॥ बात रक्तपर अमृतादि घृत गुर्चका कल्क गुर्चका क्वाथ दूधके साथ घृत पचावै इससे बात रक्त औ कोढ़ दूर हो ॥ ४२ ॥ बात कुष्टादिपर तिक्तादि घृत छितौनी अमलतास अतीस कटुकी पाढ़ा मोथाखस त्रिफला पित्त पापड़ा ॥ ४३ ॥ पटोल नीम मजीठ पिपरी पद्माष कचूर चन्दन

ककटुरोहिणी। पाठामुस्तमुशीरंच त्रिफलापर्पटस्तथा४३ पटोल निम्बमंजिष्ठा पिप्पलीपद्मकंशटी । चंदनंधन्वयासश्च निशालेद्वे निशेतथा ४४ गुडूचीसारिवेद्वेच मूर्वावासाशतावरी त्रायंतींद्रयवा षष्ठीभूनिंवाश्चाक्षभागिकं४५ घृतंचतुर्गुणांदत्वाघृतादामलकीरसाः द्विगुणांसर्पिषश्चात्रथजलमष्टगुणांभवेत् ४६ तत्सिद्धंपाययेत्सर्पि र्वातिरक्तेषुसर्वसु । कुष्टानिरक्तपित्तंच रक्तार्शांसिचपांडुतां ४७ हृद्रोगगुल्मवीसर्प्य प्रदरंगंडमालिकां। क्षुद्ररोगंज्वरंचैव महातिक्त मिदंजयेत् ४८ कासीसंद्वेनिशेमुस्तं हरितालंमनःशिलां। कपिल्लकंगन्धकंच विडंगंगुग्गुलंतथा ४९ सिक्थंकंमरिचंशुंठी तुत्थ कंगौरसर्षपं । रसांजनंचसिन्दूरं श्रीवासंरक्तचन्दनं ५० इति मेदंनिम्बपत्रं करंजंसारिवावचा । मंजिष्ठामधुकंमांसी शिरीषं लोध्रपद्मकं ५१ हरीतकीप्रपुन्नागं चूर्णयेत्कार्षिकंपृथक्। ततस्त च्चूर्णमालोड्य त्रिंशत्पलमितंघृते ५२ स्थापयेत्ताम्रपात्रेच घर्मेसप्त दिनानिवै। अस्याभ्यंगेनकुष्ठानि दर्द्रुपामाविचर्चिकाः ५३ सूक्

दोषविसर्पाश्च विस्फोटावातरक्तजाः । शिरःस्फोटोपदंशांश्च ना-
डीदुष्टव्रणानिच ५४ शोथोभगन्दराश्चैव लूतासाम्यंचदेहिनां ।
शोधनंरोपणंचैव सुवर्णकरणंघृतं ५५ जातीनिम्बपटोलंच द्वेनिशे
कटुरोहिणी । मंजिष्ठामधुकंसिक्थं करंजोशीरसारिवा ५६ तुत्थं
चविपचेत्सम्यक् कल्कैरेभिःघृतंवुधः । अस्ययोगाप्ररोहंति सूक्ष्म
नाडीव्रणाअपि । मर्माश्रिताक्लेदिनश्च गम्भीरासरुजोव्रणा ५७
चित्रकंशिखिनीपथ्या कंपिल्लस्तद्दृतायुगं । वृद्धदारुकसंपाकोद-
न्तीचत्रिफलातथा ५८ कोशातकीदेवदालीनीलनीगिरिकर्णिका ।
शातलापिप्पलीमूलं विडंगंकटुकीतथा ५९ हेमक्षीरीचविपचेत्क
ल्कैरेभिःविचूर्णितैः । घृतप्रस्थंस्नुहीक्षीरं पट्पलंतुपलद्वयं ६०
अर्कक्षीरस्यमतिमान्तास्सिद्धंगुल्मकुष्ठनुत् । हन्तिशूलमुदावर्त्तं शो-
थाऽध्मानंभगंदरं ६१ शमयत्युदरान्यष्टौ निपीतंविंदुसंख्यया।
गोदुग्धेनोष्ट्रदुग्धेन कुलत्थस्यसृतेनवा ६२ उष्णोदकेनवापीत्वा
विंदुवेगैर्विरच्यते । एतद्बिन्दुघृतंनाम नाभिलेपाद्विरच्यते ६३

त्रिफलायारसप्रस्थं प्रस्थंवासारसंतथा। भृंगराजरसप्रस्थंप्रस्थ माजम्पयस्तथा ६४ दत्वातत्रघृतंप्रस्थं कल्कैःकर्षमितैःपृथक्। त्रिफलापिप्पलीद्राक्षा चंदनंसैंधवंबला ६५ काकोलीक्षीरकाकोली मेदामरिचनागरं। शर्करापुंडरीकञ्च कमलंचपुनर्नवा ६६ निशायुग्मंयमधुकं सर्वैरेभिर्विपाचयेत्। नक्तांध्यंनकुलांध्यंच कंडू पिल्लंतथैवच ६७ नेत्रस्रावंचपटलं तिमिरंकाचकंजयेत्। अन्येपि प्रशमंयांति नेत्ररोगासुदारुणाः। त्रैफलंघृतमेतद्धि पानेनस्या द्विपूचितं६८ द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वासारिवाचंदनद्वयं। मधुपर्णीचमधु कं पद्मकेशरपद्मकं ६९ उत्पलोशीरमेदाभि स्त्रिफलापंचवल्कलैः। कल्कैःकर्षमितैरेतैः घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७० विसर्पलूताविस्फोट व्रणाकुष्ठविषापहं। गौर्यादिकमितिख्यातं सर्वव्रणहरस्मृतः ७१ बलामधुकरास्नाभि र्दशमूलफलत्रिकैः। पृथग्द्विद्विपलैरेभि र्द्रोणा

गरम पानी से जो बूंद पिये से दस्त हों यह विंदुघृत नाभि में लेप करने से दस्त आवै॥ ६३॥ नेत्ररोग पर त्रिफलाघृत त्रिफले का रस एक प्रस्थ रूसेका एक प्रस्थ भंगरेका एक प्रस्थ बकरीका दूध एक प्रस्थ॥ ६४॥ एकप्रस्थ घी कर्षकर्ष और द्रव्य त्रिफला पीपरि दाख चंदन सैंधव बरियारा॥६५॥दोनोंकाकोली विना असगंध मेदा बिना मुरेठी मिर्च सोंठ खांड़ श्वेतकमल रक्तकमल गदापुरैना॥ ६६॥ दोनों हरदी मुरेठी इनका कल्ककरि घी में पकावें तौ नक्तान्ध नकुलांध खाज पिल्लरोग॥ ६७॥ नेत्रस्राव पटल तिमिर नीलबिंदु ये सब अच्छे हों इस त्रिफलादि घृतको खाइ वा नाश ले यथोचित अनोपान करै॥ ६८॥ घावपर गौर्यादिघृत हरदी दोनों शालि-पर्णी मुर्री सरिवन चंदन दोनोंमुरेठी कमल केशर कमल॥ ६९॥ नीलकमल खस मेदा विना मुरेठी त्रिफला आम्र बट पीपर पाकर गूलर इनकीछाल सब कर्षकर्ष ले कल्ककरि प्रस्थभर घीमें पचावै॥ ७०॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका अग्निआसन शीतलाकीट विष क्षत सब अच्छे करै॥ ७१॥ शिरोरोग पर मयूरघृत बरियारा मुरेठी रासन दशमूल त्रिफला दो दो पल दे द्रोण भर जलमेंपकावै॥

नीरेणपाचयेत् ७२ मयूरपिच्छपित्तान्त्र यकृत्पादास्यवर्जितं । पादशेषेसृतंनीत्वा क्षीरंदत्वाचतत्समं ७३ घृतंप्रस्थंपचेत्सम्यक् जीवनीयैर्पिचून्मितैः । तत्सिद्धंशिरसःपीडा मन्याष्ठकग्रहंतथा ७४ अर्दितंकर्णनाशाक्षि जिह्वागलरुजोजयेत् । पातेनस्येतथाभ्यंगेकर्णपूरेपुयुज्यते ७५ हेमंतकालेशिशिरेवसंतेपुचसेव्यते ७५ त्रिफलामधुकंकुष्ठं द्वेनिशेकटुरोहिणी । विडंगपिप्पलीमुस्तं विशाला कट्फलंवचा ७६ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यो सारिवेद्वेप्रियंगुका । शतपुष्पाहिंगुरास्ना चंदनंरक्तचंदनं ७७ जातीपुष्पंतुगाक्षीरी कमलं शर्करातथा । अजमोदाचंदतीच कल्कैरेतैश्चकार्षिकैः ७८ जीववत्सैकवर्णाया घृतंप्रस्थंगवांपचेत् । चतुर्गुणेनपयसा पचेदारण्यगोमयैः ७९ सुतिथौपुष्यनक्षत्रे मृद्भांडेताम्रजेतथा । ततःपिवेच्छुभदिने नारीवापुरुषोथवा ८० एतत्सर्पिर्नरःपीत्वा स्त्रीपुनित्यंवृषायते । पुत्रंसंजनयद्धीमान्वन्ध्यापिलभतेसुतं ८१ अनायुषंवाजनये

७२ ॥ मयूरमांस विना आँत ओझरी पित्ता पांउ पानी में गलावै चौथ्याई रहै उतारिले यह यूष जितना हो तितना दूधदे ॥ ७३ ॥ प्रस्थभर घी में कर्षकर्ष भर जीवनीगण औ काढ़ा सब पचावै शिर रोग मन्या व्यथा पृष्ट ग्रह ॥ ७४ ॥ लकवा कर्ण नाक नेत्र जीभ गला सबके रोग नाशै खाय सूंघै मलै कानमें डारै हेमन्त शिशिर बसंत में सेवनकरै ॥ ७५ ॥ वंध्याकोफल घृत त्रिफला मुरेठी कूट दोनोंहर्दी कुटकी विडंग पीपरि मोथा कायफर ॥ ७६ ॥ मेदा महामेदा विना मुरेठी दोनोंकाकोली विना असगंध सरिवन पिटवन मकरा सौंफ हींग रासन दूनोंचंदन ॥ ७७ ॥ चमेलीपुष्प वंशलोचन कमल शक्कर अजमोद दतून ये कर्षकर्ष भर ले कल्ककरि ॥ ७८ ॥ एक रंग का गाय औरबछरा होऔर ताही तिसकाभी प्रस्थभर चौगुना दूधदे बिनुवाँकंडामें मन्दमन्द आंचदेपचावै ॥७९ ॥ सुंदरतिथिपुष्य नक्षत्रमें मट्टी वा ताँबेके पात्रमें शुभदिन पिये स्त्री वा पुरुष ॥ ८० ॥ पुरुष जो पियै सो वृषभतुल्य कामी रहै कैसाभी असमर्थहो परंतु पुरुषत्व उत्पन्न करै औ बाँझिन के पुत्रहोइ ॥ ८१ ॥ ज्यहि स्त्री को

द्याचसूतापुनस्स्थिता । पुत्रमाप्नोतिसानारी बुद्धिवन्तंशतायुषं ८२
एतत्फलघृतंनाम भारद्वाजेनभाषितं । अनुक्तंलक्ष्मणामूलंक्षिपंत्यत्र
चिकित्सकाः ८३ त्रिफलाद्वेसहचरे गुडूचीसपुनर्नवा । शुकनाशा
हरिद्रेद्वेरास्नामेदाशतावरी ८४ कल्कीकृत्यघृतप्रस्थं पचेत्क्षीरं
चतुर्गुणं । तत्सिद्धंपाययेन्नारीं योनिरोगनिपीडितां ८५ पलिता
चलितायाच निःसृताविकृताचया । पित्तयोनिंचविभ्रान्तांखण्डयो
निश्चयास्मृता ८६ प्रपद्यन्तेहितास्थानं गर्भंगृह्णान्तिवासकृत् ।
एतत्फलघृतंनाम योनिदोषहरंस्मृतं ८७ विषनिंबामृताव्याघ्री
पटोलानांसृतेनच । कल्केनपक्वसर्पिस्तु निहन्याद्विषमज्वरान् ।
पांडुकुष्ठंविसर्पंच कृमीनर्शांसिनाशयेत् ८८ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्य
खंडेघृतकल्पनाध्यायःनवमः ॥ ९ ॥

पुत्र मरिजाता हो उसके पुत्रहो सौवर्ष जिये घृत सेवन से ॥ ८२ ॥
यह फलघृत भारद्वाज भाषितहै बिनाकहे वैद्य इस घृत के संग लक्षमणा बूटीकी जड़ देतेहैं ॥ ८३ ॥ योनि दोष पर त्रिफलादि घृत
त्रिफला दो कठसरैया गुर्च गदापुरैना सिरस दोनोंहर्दी रासन मे
दो शतावरि ॥ ८४ ॥ इनका क्वाथ प्रस्थभर घृत चारिप्रस्थ दूध में
पकावै जब घी सिद्धहो तब स्त्री पियै तौ सब योनि दोष दूर हों ॥
८५ ॥ पलित चलित निश्चित विकृत पित्त योनि विभ्रांत खंडयोनि॥
८६ ॥ ये सब योनिरोग मिटैं और गर्भटिकै यह फल घृत नाम घृत
योनिदोषपर बहुत अच्छाहै ॥ ८७ ॥ विषम परपंच तिक्त घृत रूसा
नीम गुर्च भटकटैया पटोल इनहीं का काढ़ा और कल्क में घी
पकाय खाय तौ विषमज्वर जाय पांडु कुष्ट विसर्प कृमि अर्श येभी
दूरहोयँ ॥ ८८ ॥ इतिश्री शार्ङ्गधर सुधाकरे नवमोध्यायः ॥ ९ ॥

—— ० ——

लाक्षाढकंक्काथयित्वाजलैश्चचतुराढकैः। चतुर्थांशंसृतंनीत्वा तैलंप्रस्थमितंक्षिपेत् १ मस्त्वाढकंचगोदध्नःसर्वंतैलेविनिःक्षिपेत्। शतपुष्पामश्वगंधा हरिद्रादेवदारुच २ कटुकारेणुकांमूर्वां कुष्टंच मधुयष्टिकां। चंदनंमुस्तकंरास्नांपृथक्कर्षप्रमाणतः ३ चूर्णयेत्तत्र निक्षिप्यसाधयेन्मृदुवह्निना। अस्याभ्यंगात्प्रशाम्यंतिसर्वेपि विषमज्वराः ४ कासश्वासंप्रतिश्यायस्त्रिकपृष्टग्रहस्तथा। वात पित्तमपस्मार मुन्मादंयक्षराक्षसं ५ कंडूशूलंचदौर्गंध्यं गात्राणां स्फुटनंजयेत्। पुष्टगर्भाभवेदस्य गर्भिण्यभ्यंगतोभृशं ६ अश्व गंधावलाविल्व पाटलावृहतीद्वयं। श्वदंष्ट्रातिवलानिम्ब श्योना- कंचपुनर्नवा ७ प्रसारण्यग्निमंथंच कुर्याद्दशपलंपृथक्। चतुर्द्रोण जलेपक्का पादशेषंसृतंनयेत् ८ तैलाढकेरसंयोज्यं शतावर्यारसा- ढकं। क्षिपेत्तत्रचगोक्षीरं तैलात्तस्माच्चतुर्गुणं ९ शनैर्विपाचयेदेभिः

अथघृत तैल साधन प्रकारः॥ लाक्षादितैल लाही एकआढक आढक तीनसेर छःरुपयेभर होताहै चारि आढक पानीमें काढ़ा करि चौथ्याई रहै उतारिले प्रस्थभर तैल दे प्रस्थ ६४ रुपयाभर है एक दहीकाजल आढकभरदे सौंफ असगंध हर्दी देवदारु दो कटुकी सेवड़ी वीज मुर्री कूट मुरेठी चंदन मोथा रासन कर्षभर तीन चूर्ण करि तैल में सिद्ध करै मध्यम आंच से इसतैलके लगाये विषमज्वर शमनहोय चारि कासश्वास नाक वहब चिक कह्रै रीड़ पीड़ा पीठ जकड़ना वातपित्तज मिरगी यक्षराक्षसी उन्मादपांच खाज पेटपीर दुर्गंध देहफूटन मिटै गर्भिणी मलै तो गर्भपुष्टि होय ६॥ वायुपर नारायणतैल असगन्ध वरियारा वेल पाढ़ा भटकटैया दोनों गुखुरू ककई नीम सोहनपत्ती गदापुरैना॥ ७॥ गंध प्रसा- रिणी अरणी ये दशदश पल सब द्रव्य ले चार द्रोण पानीमें पकावै जब एक द्रोण रहै द्रोण एकसेर एक छटांक का होताहै॥८॥ तब एक आढक तैलमें शतावरि का रस एक आढक देइ जो गोली होय तो रस निचोरिकै देइ सूखीहो तो काढ़ा करिकै देय तैलका चौगुना दूध गऊका दे॥ ९॥ तिसमें कल्क डारि धीरेधीरे पचावै

कल्कैर्द्विपलिकैःपृथक् । कुटैलाचंदनंवाला नासीशैलेयसैंधवैः १०
अश्वगन्धबलारास्ना शतपुष्पेन्द्रदारुभिः । पर्णीचतुष्टयेनैव तग-
रेणप्रसाधयेत् ११ तत्तैलंनावनेऽभ्यंगे पानेवस्तौचयोजयेत् । प-
क्षाघातंहनुस्तंभं मन्यास्तंभंगलग्रहं १२ कुब्जत्वंबधिरत्वंच गति
भंगंकटिग्रहं । गात्रशोषेंद्रियध्वंसे नष्टशुक्रेज्वरक्षये १३ अंत्रवृद्धि
कुरंडंच दंतरोगशिरोग्रहं । पार्श्वशूलंचपंगुल्यं बुद्धिहानिंचगृध्र-
सीं १४ हन्याच्चविषमंवातं जयेत्सर्वांगसंश्रयं । अस्यप्रभावाद्वंध्या
पि नारीपुत्रंप्रसूयते १५ मर्त्योगजोवातुरग स्तैलादस्मात्सुखी
भवेत् । यथानारायणोदेवो दुष्टदैत्यंविनाशयेत् । तथैववातरोगा-
णां नाशनंतैलमुत्तमं १६ बलामूलकषायेण दशमूलसृतेनच । कु-
लत्थयवकोलानां क्काथेनपयसातथा १७ अष्टाष्टभागयुक्तेन भाग
मेकंचतैलतः । गणेनजीवनीयेन शतावर्येन्द्रवारुणी १८ मंजिष्ठा
कुष्टशैलेय तगरागुरुसैंधवैः । वचापुनर्नवामांशी सारिवाद्वयपत्रकैः

कूट इलाइची चंदन सुगन्धबाला जटा मासी छरीला ॥ १० ॥ सेंधा
नोन असगंध बरियारा रासन सौंफ देवदारु शालपर्णी पृष्टपर्णी
बनउड़दी बनमूंग तगर येसब दुइ दुइ पल लेके कल्ककरे औ तेल
मेंसाधिलेइ ॥ ११ ॥ उसतेल का नासदेइ औ शरीरपै मलै पिचकारी
आदि कामें देइ पक्षाघात ठोढ़ी जकड़ना मन्या गला जक-
ड़ना ॥ १२ ॥ कूबरा बहिरा लंगड़ा कमर जकड़न देह सूखना नपुं-
सकत्व ये सब अच्छे होयं और ज्वरक्षय होइ ॥ १३ ॥ अंडवृद्धि
अंत्रवृद्धि दंतरोग शिरोरुज पसुरीपीड़ा पंगुत्व गृध्रसी ॥ १४ ॥ बुद्धि
हानि विषम वात सर्वदेह की वाई इस तेलके प्रभाव से वंध्याके
पुत्रहो मनुष्य घोड़ा हाथी सबको हितहै ॥ १५ ॥ दृष्टांत जैसे नारा-
यण दुष्ट दैत्यों को नाशकरतेहैं तैसे यह तेल बात रोगोंको नाश
करता है ॥ १६ ॥ वातघ्न बरियारातेल बरियाराकी जड़काक्काथ
दशमूलक्काथ कुलथीक्काथ यवक्काथ झरबेरीक्काथ येकाढ़े और
दूध ॥ १७ ॥ येसब आठआठसेर तेल सेर भर जीवनीगण शतावरि
इन्द्रारुण ॥ १८ ॥ मजीठ कूट छरीला तगर अगर सेंधव बच गदा-

१९ शतपुष्पाश्चगंधाभ्यां मेलयित्वाचपाचयेत् । गुर्विणीनांचना रीणां नराणांक्षीणरेतसां २० व्यायामक्षीणगात्राणां सूतिकानां चयुज्यते । राजयोग्यमिदंतैलं सुखीनांचविशेषतः । वलातैलमि- तिख्यातं सर्ववातामयापहं २१ प्रसारिणीपलशतं जलद्रोणेवि- पाचयेत् । पादशिष्टःसृतोग्राह्यस्तैलंदधिचतत्समं २२ कांजिकंच समंतेन क्षीरंतैलाच्चतुर्गुणं । तैलात्तथाष्टमांशेनसर्वकल्कानियोज येत् २३ मधुकंपिप्पलीमूलंसैंधवंचित्रकंवचा । प्रसारिणीदेवदारु रास्नाचगजपिप्पली २४ भल्लातःशतपुष्पाच मांशीचैभिर्विपा- चयेत् । एततैलंवरंपक्कं वातश्लेष्मामयांजयेत् २५ कुब्जत्वंजत्व पंगुत्वं गृध्रसीमर्दितंतथा । हनुपृष्ठशिरोग्रीवा कटीस्तंभंचनाशयेत् २६ अन्यांश्चविषमान्वाता न्सर्वान्नाशुव्यपोहति । माषायवात सीक्षुद्रा मर्कटीचकुरंटकं । गोकंटकःटंटुकश्च कुर्यात्सप्तपलंभिषक् २७ चतुर्गुणांवुनापक्का पादशेषंसृतंनयेत् । कर्पाशकास्थिवदरं श

पुरैना जटामासी सरिवन पिठवन तेजपात ॥१९॥ सौंफ असगंध इन सबको मिलाइकै पचावै गर्भिणी स्त्री, औ धातुक्षीण पुरुष॥२०॥ अति श्रमी प्रसूती को दे यह तेल राजा औ सुखी पुरुषों के कारण है यह बला तेल सब बातको हरता है॥२१॥ प्रसारिणी तेल गन्धक प्रसारिणी सौ पलले पसेरी एक एक द्रोण जलमें पचावै चौथाई रहे तब उतारि लेउस काढ़े की बराबर दही औ तेल दे ॥२२॥ तेलके समान कांजी औ तेलका चौगुना दूध तेलका आठवां भाग सब द्रव्य॥ २३ ॥ मुरैठी पिपरामूल सेंधा चीता बच गंध प्रसारिणी देवदारु रासन गजपीपरि ॥२४॥ भिलावां सौंफ जटामासी इन सबका कल्क तेलमें पचावै यहतेल पकावै उत्तमहै बातश्लेष्म रोग को जीतता है॥२५॥ कुबड़ा अंग भंग पंगु को हित गृध्रसी,बायु हनपृष्ट शिरग्रीव कटिइनका जकड़ना दूरकरै औ कठिन बात रोग नाशकरै॥२६॥ बायुपर माषतैल उर्द यव अर- सी भटकटैया केवांच कुरैया गुखुरू सोनाक येसातौ पल पलभर ले॥२७॥ चौगुने पानीमें पचाइ चौथाई रहे उतारिले बिनवरगूदी

गावीजंकुलत्थकं २८ पृथक्‌चतुर्दशपलं चातुर्गुण्यजलेपचेत् । चतु-र्थांशावशिष्टंच गृह्णीयात्क्काथमुत्तमं २९ प्रस्थैकंछागमांसस्य चतुःषष्टिपलेजले । निक्षिप्यंपाचयेद्धीमा न्पादशेषंसमानयेत् ३० तैलप्रस्थेततःसर्वा न्काथानेतान्विनिक्षिपेत् । कल्कैरेभिश्चविपचेदमृताकुष्ठनागरैः ३१ रास्नापुनर्नवैरंड पिप्पल्याशतपुष्पया । वलाप्रसारिणीभ्यांच मांस्याकटुकयातथा ३२ पृथगर्द्धपलैरेभि-स्साधयेन्मृदुवह्निना । हन्यात्तैलमिदंशीघ्रं ग्रीवास्तम्भाववाहु-कौ ३३ अर्द्धांगशोषमाक्षेप मुरस्तंभापतानकौ । शाखाकंपःशिरःकंपंविश्वाचीमर्दिततंथा । माषादिकमिदंतैलंसर्ववातविकारनुत् । ३४ शतावरीवलायुग्मं पर्ण्यांगंधर्वहस्तकः । अश्वगंधाश्चदंष्ट्राच विल्वकाशःकुरंटकः ३५ एषांसार्द्धपलान्भागा न्कल्कयेच्चविपाचयेत् । चतुर्गुणेननीरेण पादशेषंसृतंनयेत् ३६ विपाच्यप्रस्थतैलेन क्षीरप्रस्थंविनिक्षिपेत् । शतावरिरसप्रस्थं जलप्रस्थंचयोज-येत् ३७ शतावरीदेवदारु मांसीतगरचन्दनं । शतपुष्पावलाकुष्ठ

बेर सनई बीज कुरथी ॥२८॥ ये चौदह चौदह पलले चौगुने पानी में पचाइ चौथाई रहे उतारि ले॥ २९ ॥ प्रस्थ भर छाग मांस चौंसठ पल जलमें पचाइ उतारि छानिले॥ ३० ॥ तबप्रस्थ भरतैल में सब क्वाथ औ मांस यूषदेकै पचावै औ यह कल्कभी पचावै गुर्च सोंठि ॥ ३१ ॥ गदा पूर्ण रासन रंड पीपरि सौंफ बरियारा गन्ध-प्रसारिणी जटामासी कटुकी॥ ३२ ॥ येसब आधा आधा पलभीमी आंचदे उस तेलमें पकावे इस तेलसे ग्रीवा जकड़ना बाकु व्यथा ३३ ॥ अर्द्धांग सूखना आक्षेप ऊरुस्तंभ पतानक सर्वांगकंप शीत रस इस माषादि तेल ते येरोग दूरहोंय सब बात बिकार न रहै ३४ ॥ शतावरितैल शतावरि दूनौ बला दूनौ पर्णी रंड असगंध गुखुरू बेलकास कुरैया ॥ ३५ ॥ सब डेढ़ डेढ़ पल कल्क करि चौगुने जलमें पचाइ चौथ्याई रहै उतारिले ॥ ३६ ॥ फिरि प्रस्थ भर तेल प्रस्थ भरदूधमें पचावै एक प्रस्थ भरि शतावरि रस प्रस्थ भरपानी में पचावै॥३७॥ फिरिशतावरि देवदारुजटामासी तगर चंदन सौंफ

मेलाशैलेयमुत्पलं ३८ ऋद्धिमेदाचमधुकं काकोलीजीवकस्तथा । एषांकर्षसमैःकल्कैस्तैलंगोमयवह्निना ३९ पचेतन्मूर्ध्नितैलेन नरःस्त्रीपुष्टमायते । नारीचलभतेपुत्रं योनिशूलंचनश्यति ४० अंग शूलंशिरःशूलं कामलींपांडुतांतथा । गृध्रसीक्लीहशोषंच मेहान्दण्डा पतानकं ४१ सदाहवातरक्तंच वातपित्तंमदादितं । असृग्दरंतथा ध्मानं रक्तपित्तंनियच्छति ४२ शतावरीतैलमिदं कृष्णात्रेयेनभाषितं। ओंवारायणीयेस्वाहा । उत्तराभिमुखोभूत्वाखनेत्खदिरशंकुनां ४३ ओंसर्वव्याधसाधनीययेस्वाहाइत्युत्पाटनमंत्रः ॥ ओंकुमार जीवनीयेस्वाहा इतिपावकमंत्रः ४४ काशीशंलांगुलीकुष्टं शुंठी कृष्णाचसैंधवं। मनःशिलाश्चमारश्च विडंगंचित्रकोद्रुमः ४५ दंतीकोशातकीवीजं हेमाह्वाहरितालकं । कल्कैःकर्षमितैस्तैलं ततःप्रस्थं विपाचयेत् ४६ स्नूह्यर्कपयसादद्या त्पृथग्विपलसंमितं । चतुर्गु

बरियारा कूट इलायची छरीला कमल ॥ ३८ ॥ ऋद्धि सिद्धि बिना वराही कंद सोंठा विना मुलैठी दुइबार कहीहै इस्से दूनी लेना काकोली बिना असगंध जीवक विनावाराही कंद येसब कर्ष भर ले कल्क करि गोंइठाकी आंच में पचावै ॥ ३९ ॥ इसमायेसे लगाने से पुरुष स्त्रियोंसे वृषभ तुल्य रहे स्त्री पुत्र जनै योनि विकार नाश होय ॥ ४० ॥ अंगशूल शिरशूल कमल पांडु गृध्रसी प्लीह शोष प्रमेह दंडा पतानक वायु ॥ ४१ ॥ दाह सहित वातरक्त वात पित्त मदकान रुधिर अफरान रक्त पित्त येसब दूर होयं ॥ ४२ ॥ यह शतावरि तेल कृष्णसे आत्रेयने कहाहै प्रथम मंत्र निमंत्रण दूसरा उत्पाटन तीसरा पावक मंत्र येतीनो मंत्र मूलसे जानना ॥ ४३ ॥ अर्श पर कसीस तेल कसीस करिसारी कूट सोंठ पीपरि सैंधव मैनसिल कनेर वाय विडंग चीता अडूसा ॥ ४४ ॥ जमाल गोटा बनतोरई बीज च:क हरताल येसब कर्ष कर्ष भरले कल्क करि प्रस्थ भर तेलमें पकाइ ॥ ४५ ॥ दोपल सेंहुड़ दूध दोपल मदारदूध तेलका चौगुना गोमूत्र दे भली भांतिपकावै ॥ ४६ ॥ यह खारनाद आचार्य भाषितहै इसको लगानेसे बवासीरका मस्सा गिरपरताहै और छार

गागवांमूत्रं दत्वासम्यक्प्रसाधयेत ४७ कथितंक्षारनादेन तैलम-
र्शोविनाशनं । क्षारवत्पातयत्यर्शः दर्शस्यभ्यंगतोभृशं ४८ वलिंन
दूपयत्येतत्क्षारकर्मकरंस्मृतं ४९ मंजिष्ठासारिवासर्जयष्टीसिक्थैः
पलोन्मितैः । पिंडाख्यंसाधयेत्तैल मभ्यंगाद्वातरक्तनुत् ५० अर्क
पत्ररसेपक्व हरिद्राकल्कसंयुतं । साधयेत्सार्षपंतैलं पामाकच्छूवि
चर्चिनुत् ५१ मरिचंहरितालंच त्रिवृत्तारक्तचंदनं । मुस्तामनःशि-
लामांसी द्वेनिशेदेवदारुच ५२ विशालाकरवीरंच कुष्टमर्कपयस्त
था । तथैवगोमयरसं कुर्यात्कर्षमितंपृथक् ५३ विषंचार्द्धपलंदेयं
प्रस्थंचकटुतैलकं । गोमूत्रंद्विगुणंदत्वा जलंचद्विगुणंभवेत् ५४
मरिचाख्यमिदंतैलं सिद्धंकुष्ठव्रणापहं । जयेच्चित्राणिसर्वाणि पुं
डरीकंविचर्चिकां । पामांसिध्मांनिरकसांदद्रूकच्छूविनाशयेत् ५५
त्रिफलारिष्टभूनिम्ब द्वेनिशेरक्तचंदनं । एतैःसिद्धंमनुष्याणां तैल

कर्मसा कष्टनहींहोता क्षारकर्मसधिये करतेहैं तौमलसांगकेचक्रमें
जोखिमजातीहै इसमें नहींआती॥४९॥वातरक्तपर पिंडतैल मजीठ
सरिवन राल मुरेठी मोम पल पल भरले तेलमें पचावै इस पिंड
तेलके लगाने से वात रक्त दूर होय ॥ ४८ ॥ कंडूपर मदार तैल
मदार पचका रस हरदी का कल्क सरसोंके तेलमें पकावै तौ ख-
जुरी दाद विचर्ची दूरहों कुष्टपर मरिच तैल हरताल निशोथ
रक्त चन्दन मोथा मैन शिल जटामांसी दानौ हरदी देवदारु ॥
५० ॥ इंद्रायन कनेर कूट मदारकादूध गोबर का रस कर्ष कर्षभरले
५१ ॥ आधा पल सिंगिया प्रस्थ भर करुआ तेल गोमूत्र दूना
जल दूनादे ॥ ५२ ॥ इसमरिचादि तैलसे कुष्टके घाव अच्छेहों श्वेत
रक्त कालेदाग मिटें खसरा सेहुंआ कटीला दाद भैंसहा दादसब
दूरहों ॥ ५३ ॥ घातपर त्रिफला तैल त्रिफला नीम चिरायता दुवौ
हरदी रक्त चंदन इसकाबना तैल लगाने से मनुष्यका बहुत गुणहै
५४ ॥ पलित पर निंबतैल नीम बीज की मिंगी भंगरा रस में
भावना दे फिर आसन रस में दे उसका तैल निकारि नासले
तौ अकाल के पके बाल कालेहों दूध भात पथ दे ॥ ५५ ॥ पुनस्तैल
मुरेठी कथ आंवरे का कल्क चौगुना तेलदे पकावै फिरचौगु-

मभ्यंजनेहितं ५६ भावयेन्निम्बबीजानिभृङ्गराजरसेनहि । तथा सनस्यतोयन तत्तैलंहन्तिनश्यतः । अकालपलितंसर्वं पुंसांदुग्धान्नभोजनं ५७ यष्टीमधूकक्षीराभ्यां नवधात्रीफलैःसृतं । तैलंनस्मे कृतंकुर्यात्केशांश्मश्रूणिसंघसः ५८ करंजच्चित्रकंजाति करवीरश्चपाचितं । तैलमेभिर्ढृतंहन्या दभ्यंगानिंद्रलुप्तकं ५६ नीलिकाकेतकीकन्दभृङ्गराजःकुरंटकः । तथार्जुनस्यपुष्पाणि बीजकःसुमनोपिच ६० कृष्णातिलाचतगरं समूलंकमलंतथा । अयोरजः प्रियंगुश्च दाडिमत्वग्गुडूचिका । त्रिफलापद्मपंकश्च कल्कैरेतैः पृथक्पृथक् ६१ कर्षमानैःपचेत्तैलं त्रिफलाक्काथसंयुतं ६२ भृङ्गराजरसेनैव सिद्धं केशस्थिरीकृतं । अकालपलितंहंति दारुणांचोपजिह्वकं ६३ भृङ्गराजरसेनैव लोहकीटफलंत्रिकं । सारिकंचप्रचेत्कल्कैः तैलंदारुणनाशनं । अकालपलितंकंडू मिंद्रलुप्तंचनाशयेत् ६४ इरिमेदत्वचंक्षुण्णां पचेत्पलशतोन्मितं । जलद्रोणेन

ना पानी दे पकावै केवल तेल रहै तब उतारिले इस के नास से केशसघन हों॥ ५६ ॥ करंज तेल इंद्रलुप्त पर कंजा चीता चमेली कनेर में तेल पकाइ लगावै तौ बाद चारा दूरहोय॥ ५७ ॥ पलितपर नीलकादितेल नीलकेतकी मूल भंगरा कटसरैया अर्जुन फूलन का छार॥ ५८ ॥ चमेली कालेतिल तगर कमल का सर्वांग लोहचून मालकांगनी अनारकी छाल गुर्च ॥ ५९ ॥ त्रिफला कमल की जड़की माटी कर्ष कर्ष भर सब द्रव्यलेके उसमें तेलपचावै त्रिफले का क्काथ समेत॥ ६० ॥ भांगरे का रसभी डारै सिद्धकरि तेल लगावै बालस्थित होय अकाल पलितअच्छाहो दारुण उपजिह्वक शिररोग येसब अच्छे हों॥ ६१ ॥ पलित पर भंगराज तेल भंगरेके रसमें लोहचून वाकीट त्रिफल माखि इनकी कल्कमें तेलपचावै दारुण नाशहो पलित खाज इंद्रलुप्त मिटै॥ ६२ ॥ मुखदंत रोग पर इरिमेदादि तेल खैर छाल एकसौअस्सी पल कूट के द्रोणभरजल में पचाइ चौथाई रहै उतारिले॥ ६३ ॥ आधा आढकतेल दे खैर लौंग गेरू अगर पद्माख॥ ६४ ॥ मजीठ लोध मुरैठी लाही बटकीजड़

तत्क्वाथं गृह्णीयात्पादशेषितं ६५ तैलस्यार्द्धाढकं दत्वा कल्कैः कर्ष मितैः पचेत् । इरिमेदलवंगाभ्यां गैरिकागुरुपद्मकैः ६६ मंजिष्ठा लोध्रमधुकं लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः । त्वग्जातीफलकर्पूर कंकोल खदिरैस्तथा ६७ पतंगधातकीपुष्पं सूक्ष्मैलानागकेशरं । कट्फलं नचसंसिद्धं तैलंमुखरुजंजयेत् ६८ प्रदुष्टमांसंचलितं शीर्णंदंतंच शौषिरं । शीतादोदंतहर्षश्च विद्रधीकृमिदंतकं । दंतस्फुटनदौर्गंध्यं जिह्वाताल्लोष्ठजांरुजं ६९ हिंगुतुंबुरुशुंठीभिः कटुतैलंविपाच येत् । तस्यपूरणमात्रेण कर्णशूलंप्रणाशयति ७० वालबिल्वानि गोमूत्रे पिष्ट्वातैलंविपाचयेत् । साजक्षीरंसुनीरंच बाधिर्येकर्णपूरणं ७१ वालमूलकशुंगानां क्षीरंक्षारुयुगंतथा । लवणानिचपंचैव हिंगुशिग्रूमहौषधं ७२ देवदारुवचाकुष्ठं शतपुष्परसांजनं । ग्रंथिकंमद्रमुस्तंच कल्कैष्कर्षमितैःपृथक् ७३ तैलप्रस्थंचविपचेत्कद लीवीजपूरयोः । रसाभ्यांमधुसुक्तेनचतुर्गुणमितेनच ७४ पूरश्रावं

मोथा तज जायफल कपूर कंकोल खदिर सार ॥ ६५ ॥ पतंग धवपुष्प इलाइची नागकेसर ये सब कर्ष कर्ष भरले इसमें तेल पचाइ लगावे तौ मुखरोग दूर होय ॥ ६६ ॥ मुख मांसवढ़ना दांत हलना दांत फूटना मुख कानका बिकार दांतठंढाहोना दांत किटकिटाना मुखकानि नामादंतकृमिदंत फूटना दुर्गंध जीभ रोग तालुरोग ओठरोग सब मिटै ॥ ६७ ॥ कर्णशूल पर हिंगुतेल हींग तुंवरसोंठि कडुवा तेल में पचावै इसे कानमें डालने से पीर दूर होय ॥ ६८ ॥ बधिरत्व पर बेलका तेल छोटे बेल गोमूत्र में कल्क करि तेल बकरीका दूध पानी सहित पकाइ कानमें डालने से बधिरत्व दूरि करै ६९ ॥ कर्ण बहने पर खार तेल लघमूरी का खार सज्जी यवाखार पांचों लोन हींग सहिंजना सोंठि ॥ ७० ॥ देवदारु वच कूट सौंफ रसौत पीपरामल मोथा कर्ष कर्ष भरिले कल्क करि ॥ ७१ ॥ प्रस्थ भर तेल में केलेका रस बिजौरा रस सहित पकावै चौगुना मधु सुक्त दे ॥ ७२ ॥ तौ पीबकानसे गिरना शब्दहोना पीड़ा बहिरापन कान कीड़ी औ कानकेसबरोगऔमुखरोगदूरहोयं ॥ ७३ ॥ जंभीरी नीबूका रस प्रस्थ भर कुडवभरसहित पीपरि पलभर ॥ ७४ ॥ सब इका

कर्णनादं शूलंबधिरतांकृमीन्। अन्यांश्चकर्णजान्रोगा न्मुखरोगंश्च नाशयेत् ७५ जंभीराणांफलरसं प्रस्थैकंकुडवोन्मितं। माक्षिकंतत्र दातव्यं पलैकंपिप्पलीस्मृतं ७६ एतदेकीकृतंसर्वं मृद्भांडेचनि-धापयेत्। वचांभोमधुसंयुक्तं श्रृंगवेरगुडान्वितं ७७ धान्यराशौ त्रिरात्रस्थ मधुसुक्तमुदाहृतं ७८ पाठाद्वेचनिशेमूर्वा पिप्पलीजाति पल्लवैः। दंत्याचतैलसंसिद्धं तस्यंस्याद्दुष्टपीनसे ७९ व्याघ्रीदं तीवचाशिग्रु तुलसीव्योषसैंधवः। कफस्यपाचनंतैलं पूतिवासाग दापहं ८० कुष्टविल्वकणाशुंठी तैलंनासार्शसांहितं ८१ वज्रीक्षी रर्कक्षीरं द्रवंधत्तूरचित्रकं। महिषीविट्भवरसं सर्वांशंतिलतैलकं ८२ पचेत्तैलावशेषं तद्गोमूत्रं थचतुर्गुणं। तैलावशेषंपक्वाच्च तत्तैलं

डै करि माटी के पात्रमें बचका काढ़ा अदरक का रस गुड़ येभी मिश्रित करि पूर्वोक्त पात्रका मुंहमूंदि आवाजमेंग। गुड़देतेहि मुख मूंदि तीन तीन दिन धान्य समाधो ताहिकहै मधुयुक्त चतुर्थ वैद्य महाधो तीसरे दिन काढ़े सो मधुसुक्त है ॥ ७५ ॥ पीनस पर पाठादि तैल पाढ़ा दूनौं हर्दी मुर्रा पीपरि चमेली पत्र दतूनि इनके तेल से दुष्ट पीनस अच्छा होय ॥ ७६ ॥ नाकरोग पर भट-कटैया तेल भटकटैया दतूनि बच सहिंजन तुलसी सोंठि मिरच पीपरि सैंधव इनके तेल से नाक से पीब गिरना और नाक रोग दूर होयं ॥ ७७ ॥ छिकापर कूटतेल कूट बेल पीपरि सोंठि दाख इनका काढ़ा औ कल्क करि तेल वा घीमें पचाइ नास लेइ तौ छींक रोग दूर होइ ॥ ७८ ॥ नासार्श पर गृहधूमादि तैल रसोंई के स्थान का करहुंआ पीपरि देवदारु जवाखार करंज सैंधव चिचड़ा बीजइनका तेल नाक रोग हर्ता हितहै ॥ ७९ ॥ सब कोढ़ पर कमिया-सेहुंड़ का दूध मदार दूध धतूरे और चीतेका रस भैंसके गोबरका रस तिल तेलमें ॥ ८० ॥ ये सब पचाइ तेल रहै तब चौगुनो गोमूत्र दे फिर पचाइ तेल रहे तबप्रस्थ भर तेल में ॥ ८१ ॥ गंधक मिलावा चीता मैनसिल हरताल विडंग दूनौं अतीस कटु तुरई कूट जटा मासी बच त्रिकुट ॥ ८२ ॥ दारु हर्दी मुरेठी सज्जी जीरा देवदारु ये सब कर्षकर्षभरपीस तेल मिलकरै इस मज्जके तेल

प्रस्थमात्रकं ८३ मंत्रकाग्निशिलातालं विडंगातिविषाविषं । ति
क्तकोशातकीकुष्ठं वचामांसीकटुत्रयं ८४ पीतदारुचयष्ट्याह्व खर्जि
काक्षीरजीरकं । देवदारुचकर्षांशं चूर्णंतैलेविमिश्रयेत् । वज्रतैल
मितिख्यात मभ्यंगात्सर्वकुष्ठनुत् ८५ सिद्धंतुशिखिकारिष्टो द्राक्षा
कल्कःकषायवान् । सार्चितंतैलमाज्यंवा नस्यात्क्षवथुनाशनं ८६
गृहधूमकणादारु क्षारनक्ताह्वसैंधवैः । करवीरसिफादन्ती तृष्ट
टकोशातकीफलं । रंभाक्षारोदकेतैलं प्रशस्तंलोमशातनुत् ८७ इ-
तिश्रीशार्ङ्गधरेतैलकल्पनानवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

द्रव्येषुचिरकालस्थं द्रव्यंयत्साधितंभवेत् । आसवारिष्टभेदैस्त त्प्रोच्यतेभेषजोविषं १ यदपक्वौषधांतुभ्यांसिद्धंमद्यसआसनः॥
अरिष्टःक्वाथसिद्धस्यात्तयोर्मानंपलोन्मितं २ अनुक्रमानारिष्टेषुद्रव
द्रोणेतुलांगुडं । क्षौद्रंक्षिपेद्गुडादर्द्धं प्रक्षेपंदशमासिकं ३ ज्ञेयः
शीतरसःसिन्धु रपक्वमधुरद्रवैः । सिद्धःपक्वरसःसिन्धु संपक्वामधुर

लगाने से सब कुष्ट नाश होय ॥ ८३ ॥ कनेरका तेल रोम सातनपर
कनेर मूल निशोथ कटुतुरई केला क्षार औ केले की पानी में तेल
सिद्ध करि लगावै तौ बाल गिरि परैं ॥ ८४ ॥ इतितैलकल्पनानव-
मोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथासव कल्पना उदकादि द्रव्य वस्तुमें औषधि देकै पात्र में
भरि मुंह मूंदि मास भरि रखने से औषधि उत्तम होती है उसे
आसव या अरिष्ट कहते हैं आसव अरिष्ट में दो भेद हैं ॥ १ ॥ उद
कादि पदार्थ में जो औषधि पूर्वोक्त रीति से सिद्ध करै उसे आसव
कहिये जो कोई द्रव्य के क्वाथ में उसी रीतिसे सिद्धकरै उसे अ-
रिष्ट कहिये इसके खानेकी मात्रा चार रुपये भर है ॥ २ ॥ जहां
अरिष्ट में द्रव्यकी तौल होय वो जलादि पदार्थ द्रोण भर दे गुड़
तुला भर सहत अर्द्धतुला औ द्रव्यका चूर्ण गुड़ का दशांश दे अ-
रिष्ट करै ॥ ३ ॥ सिन्धुमद्य भेद कहते हैं जो कच्चे ऊख रसादि
मधुर पदार्थ में सिद्ध करै उसे शीतरस सिंधु कहिये जो पक्वाइक्ष

द्रवैः ४ परिपक्कान्नसंधान समुत्पन्नंसुरांजगुः । सुरामंडःप्रसन्नः स्या ततःकादंबरीघनः ५ तदधोजगलोज्ञेयो मेदकोजगलाघनः। पक्कोसौहृतसारस्या त्सुराबीजंकिरावकं ६ यत्तालखर्ज्जररसैः संधितंस्याद्धिवारुणी। कंदमूलफलादीनि सस्नेहलवणानिच ७ यत्रद्रवेभिश्रूयंते तत्सूक्तमभिधीयते। विनष्टमम्लतांयांतिमद्यम्वा मधुरद्रवः ८ विनष्टेसंधितोयस्तु तच्चुक्रमभिधीयते। गुडांवुनास तैलेन कंदशाकफलैस्तथा ९ संधितंचाम्लताजातं गुडसूक्तंप्रचक्ष ते । एवमेवेक्षुसूक्तस्यान्मृद्वीकासंभवंतथा१० तुषांतुसंधितंज्ञेयं मासैर्विदलितैर्यवैः। यवैस्तुनिस्तुषैःपक्कैःसौवीरसंधितंभवेत् ११ कुल्माषधान्यमंडादि संधितंकांजिकंविदुः। संडातीसंधिताज्ञेया मूलकैःसर्षपादिभिः १२ उशीरंवालकंपद्म काश्मीरीनीलमुत्तमं।

रसमें सिद्धकरै उसे पक्वरससिंधु कहिये ॥ ४ ॥ सुराप्रसन्नादि भेद करि अग्नि वा यंत्र से उतारै उसे सुरा कहिये सुराके फेन को प्रसन्ना कहिये फेन रहित जो नीचे रहै उसे कादंबरी कहिये घन भी कहिये ॥ ५ ॥ सुराके नीचे रहै उसे जंगल कहिये जंगल के घने भाग को मेदकमस कहिये मेदक पकाने से जो सारा न करै उसे सुराबीज औ कयव कहिये ॥६॥ ताड़ वा खजूरिका रस अग्नियंत्र योग करि वा कच्चा लेप सिद्धकरै सोवारुणी है कंद मूल फल घृत तैलादि स्नेह लवण ॥७॥ ये सब द्रव्य पदार्थमें अग्नि व यंत्र योगसे मथन करै उसे सूक्त कहिये ॥ ८ ॥ जो बिनष्ट कहैं चलित रस लोके खमीर सो खमीर उठी मद्य वा तुरंत मधुरद्रवमें द्रव्य चूर्ण करि संधितकरी मासभरको उसेचुक्रकहिये वा गुड़ पानी तेल कंदमूल फल ॥९ ॥ इन्हैंपूर्वोक्तरीतिसे कर मासभरमें सिद्धकरै उसेगुड़सूक्त कहिये इसीप्रकार ऊखरसका औ दाखका सूक्त होता है ॥ १० ॥ यवपानी युक्त एकदिन संधितकरै उसे तुषांबुकहिये और यव गूरी पानीमें रिझाय एकदिन संधितराखै उसे सौवीर कहिये ॥ ११ ॥ कुरथी वा चावल पानीमें रिझावे उसे माड़ कहिये उस माड़ में सोंठि राई जीरा हींग लोन डारि तीनबारि दिन संधित राखै उसे कांजी कहिये मूरी उबालै पानीमें हींग सरसौ जीरा सेंधा

प्रियंगुपद्मकंलोध्रं मंजिष्टाधन्वयासकं १३ पाढाकिराततिक्तञ्च न्यग्रोधोदुम्बरःशठी । पर्पटंपुंडरीकंच पटोलंकांचनारकं १४ जंवू शाल्मलिनिर्यासं प्रत्येकंपलसंमितं । भागान्सुचूर्णितान्कृत्वा द्राक्षायाःपलविंशतिः १५ धातकीषोडशपलं जलद्रोणद्वयेक्षिपेत् । शर्करायास्तुलांदत्वा क्षौद्रस्यैकतुलांतथा १६ मासैकंस्थापयेद्भांडे मांसीमरिचधूपिते । उशीरासवइत्येष रक्तपित्तविनाशनः । पांडुकुष्ठप्रमेहार्शः कृमिशोथहरस्तथा १७ पिप्पलीमरिचंचव्यं दरिद्राचित्रकोघनः । विडंगकमल्लोलोध्र पाढाधात्र्यैलवालुकं १८ उशीरंचंदनंकुष्ठं लवंगंतगरंतथा । मांसीत्वगेलापत्रंच प्रियंगुर्नागकेशरं १९ एषामर्द्धपलोन्मानं सूक्ष्मचूर्णीकृतांछुभान् । जलद्रोणद्वयेक्षिप्त्वा दद्याद्गुडतुलात्रयं २० पलानिदशधातक्या द्राक्षाषष्ठिपलान्क्षिपेत् २१ एतान्येकत्रसंयोज्यमृद्भाण्डेचविनिक्षिपेत् ।

अदरक डारि चारिपांचदिन राखै उसेसंडाकी कहिये इसभांति आसव अरिष्ट बनताहै ॥ १२ ॥ रक्तपित्त पर खसासव खस सुगंधबाला कमलपत्र खम्भारी नीलकमल पद्माख मालकंगनी लोध मजीठ जवासा ॥१३॥ पाढ़ा चिरायता कटुकी बट जय गुलरी कचूर पित्तपापड़ा श्वेतकमल कचनार ॥ १४ ॥ जामुनि सेमर का गोंद ये सब पल पल भरले चूर्ण करि दाख बीस पल देय ॥ १५ ॥ धवफूल सोरह पल दुइद्रोण जल तुलाभर शक्कर तुलाभर सहत १६ ॥ जटामासी औ मिर्च इनका धुंआ दे बासनमें सब औषधि भरि महीना भरि राखै इसे उसीरासव कहते हैं रक्तपित्त नाश करता है पांडु कुष्ट प्रमेह अर्श कृमि सूजन ये रोग भी अच्छे होयं १७ ॥ क्षयी पर पीपरिआसव पीपरि मरिच चाव हरदी चीता मोथा विडंग सुपारी लोध पाढ़ा आंवरा छरीला॥१८॥ खस सपेद चंदनकूट लवंग तगर जटामासी दालचीनी इलायची तेजपातपुष्प प्रियंगु वा गोंदी नागकेशर ॥ १९ ॥ आधा आधा पल लेके महीन बुकनी करि जल द्रोण दोमें डारि तीनतुला गुड़देय ॥ २० ॥ दश फल धवपुष्प सोंठिपल दाख ये सब माटी के बासन में एक मास

ज्ञात्वागतरसंतस्य पाययेदग्न्यपेक्षया ।क्षयंगुल्मोदरंकार्श्यं ग्रह
णींपांडुतागदं । अर्शांसिनाशयेच्छीघ्रम्पिप्पल्याद्यासवरुत्वयं २२
लोहचूर्णंत्रिकटुकं त्रिफलाचयवानिका । विडंगंचित्रकंमुस्तं चतुः
पलमितंपृथक् २३चूर्णीकृत्यततःक्षौद्रं चतुःषष्ठिपलंक्षिपेत् ।दद्या
द्गुडतुलांतत्रजलद्रोणद्वयंतथा २४ घृतभांडेविनिक्षिप्य विदग्ध्या
न्मासमात्रकं।लोहासवमिदंमर्त्यो पिबेद्वह्निकरंपरं२५पांडुश्वयथु
गुल्मानि जठरान्यर्शसांरुजं।कुष्ठप्लीहामयंकंडूकासश्वासंभगंदरं
२६अरोचकंचग्रहणींहृद्रोगंचविनाशनं। तुलांकुटजमूलस्यमृद्वीका
र्द्धतुलांतथा। मधूकपुष्पकाश्मर्याभागान्दशपलोन्मितान्२७ चतु
र्द्रोणेंभसःपक्त्वाक्काथयेद्द्रोणशेषिते। धातक्याविंशतिपलंगुडस्य
चतुलांक्षिपेत्२८मासमात्रंस्थितेभांडेकुटजारिष्टसंज्ञकः।ज्वरान्प्र
शमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णंधनंजयं२९ विडंगंग्रंथिकंरास्ना कुटजत्व
क्फलानिच । पाटलंवालुकंधात्री भागोन्यंचपलान्पृथक् ३० अष्ट

राखै ॥ २१ ॥ जब जानै सब औषधि एकतन होगई तब अग्निबल देखिकै खिलावै तौ क्षयी पेट रोग दुर्बलता ग्रहणी पांडु अर्श यह पीपरि आसव इनरोगोंको जल्दी दूरकरै ॥ २२ ॥ पांडुपर लोह आसव लोह चून त्रिकुटा त्रिफला अजवाइन बिडंग चीता मोथा सब द्रव्य चारि चारि पललै ॥ २३ ॥ इन सबका चूर्ण करै चौंसठ पल सहत तुलाभर गुड़ दे दुइद्रोण जलदे ॥ २४ ॥ घृतपात्रमें एक मासराखि यह वह्निकर लोहआसव पीनेसे ॥ २५ ॥ पांडु शरीर फूलना गुल्म अर्श कुष्ट पिलही खाज कासश्वास भगंदर अरुचि ग्रहणी हृद्रिोग ये रोग नाशहोई ॥ २६ ॥ ज्वरपर कुरैयारिष्ट कुरैयाछाल दाख आधातुला महुआ खंभारीछाल दशदशपल ॥ २७ ॥ चारिद्रोण पानीमें पचाय द्रोण भरिरहै तब उतारिलै बीसपल धवफूल तुला भर गुड़ डारि ॥ २८ ॥ माटीके पात्रमें मास भर राखै यह कुटजारिष्ट सब ज्वर दूरिकरि अग्नि तीक्ष्णकरै ॥ २९ ॥ वि-द्रधी पर विडंगारिष्ट विडंग पीपरामूल रासन कुरैया छाल एक एक पल पाढ़ा एला बाल छड़ आंवरा ये पांच पांच पल ॥ ३० ॥

द्रोणेंभसःपक्त्वाकुर्याद्द्रोणावशेषितं । पूतेशीतेक्षिपेत्तत्रक्षौद्रंपल शतत्रयं ३१ धातकीविंशतिपलं त्रिजातंद्विपलंतथा । प्रियंगुकांचनाराणां सलोध्राणांपलंपलं ३२ व्योषस्यचपलान्यष्टौ चूर्णीकृत्यप्रदापयेत् । घृतभांडेविनिःक्षिप्य मासमेकंविधापयेत् ३३ ततः पिबेद्यथार्हंच जयेद्विद्रधिमुत्थितं । उरुस्तंभाश्मरीमेहा न्प्रत्यष्ठीलाभगंदरान् ३४ तुलार्द्धंदेवदारुःस्या द्वासाचपलविंशतिः । मंजिष्टेन्द्रयवादंती तगरंरजनीद्वयं ३५ रास्नाकृमिघ्नम्मुस्तंचशिरीषंखदिरार्जुनं । भागान्दशपलान्दद्या द्यवान्यावत्सकस्यच ३६ चंदनस्यगुडूच्याश्चरोहिणीचित्रकस्यच । भागानष्टपलानेता नष्ट द्रोणेंभसःपचेत् ३७ द्रोणशेषेकषायेच शीतीभूतेप्रदापयेत् । धातक्याषोडशपलं माक्षिकस्यतुलात्रयं ३८ व्योषस्यद्विपलंदद्या त्त्रिजातस्यचतुःपलं । चतुष्पलंप्रियंगुश्च द्विपलंनागकेशरं ३९ सर्वाण्येतानिसंचूर्ण्य घृतभांडेनिधापयेत् । मासादूर्ध्वंपिबेदेनं प्रमेहं हंतिदुर्जयं ४० वातरोगान्ग्रहण्यर्शो मूत्रकृच्छ्राणिनाशयेत् । देव

आठद्रोण जलमें औटाइ द्रोण भर रहै उतारिले ठंढाभये तीनसै पल सहत ॥ ३१ ॥ बीसपल धवफूल तज पत्रज इलायची दैपल गोंदी कचनार लोध पल पल भर ॥ ३२ ॥ त्रिकुटा आठपल चूर्ण करिकै डारै घृत भाजनमें एक मास भर राखै ॥ ३३ ॥ जैसा अग्निबल देखै तैसा पिलावै तौ विद्रधी दूरहो ऊरुस्तंभ पथरी प्रमेह प्रत्यष्टीला भगंदर गंडमाला हनु स्तंभ इस विडंगारिष्टसे ये रोग अच्छे होयं ३४ ॥ प्रमेह पर देवदारु अरिष्ट अर्द्धतुला देवदारु रूसा बीस पल मजीठ इन्द्रजव दतूनि तगर दोनों दार्वी ॥ ३५ ॥ रासन विडंग मोथा सिरस खैर अर्जुन दशदशपल अजवाइन कुरैया ॥ ३६ ॥ चंदन गुर्च कटुकी चीता आठआठ पल पानी आठ द्रोणमें पचावै ॥ ३७ ॥ जब द्रोणभर रहै तौ ये औषधिडारै धवपुष्प सोलहपल तीनतुला सहत ॥ ३८ ॥ त्रिकुटा दोपल तज पत्रज इलायची चारपल प्रियंगु चारपल नागकेशर दोपल ॥ ३९ ॥ इनसबका चूर्ण घीकेबर्त्तनमें मास भरराखै फिर पिवे तौ दुर्जय प्रमेहको हनै ॥ ४० ॥ वातरोग ग्रहणी

दार्व्यादिकोरिष्ट दद्रुकुष्ठनिवारणं ४१ खदिरस्यतुलार्द्धंतु देव-दारुचतत्समं । वाकुचीद्वादशपला दार्वीस्यात्पलविंशतिः ४२ त्रिफलाविंशतिपला चाष्टद्रोणांभसःपचेत् । कषायेद्रोणशेषेण पूतेशीतेविनिक्षिपेत् ४३ तुलाद्वयंमाक्षिकस्य तुलैकाशर्करा मता । धातक्याविंशतिपलं कंकोलंनागकेशरं ४४ जाती फलंलवंगैला त्वक्पत्राणिपृथक्पृथक् । पलोन्मितानिकृष्णाया दद्यात्पलचतुष्टयम् ४५ घृतभांडेविनिक्षिप्य मासादूर्ध्वंपिवे-न्नरः । महाकुष्टानिहृद्रोगं पांडुरोगार्बुदानिच ४६ गुल्मग्रन्थी न्क्रमीन्कासं तथाप्लीहोदरंजयेत् । एषोवैखदिरारिष्टः सर्वकुष्ठनि-वारणः ४७ तुलाद्वयंचवव्बूलं चतुर्द्रोणेजलेपचेत् । द्रोणशेषेरसे शीते गुडस्यचतुलांक्षिपेत् ४८ धातकीषोडशपलां कृष्णांद्विपलि कांतथा । जातीफलानिकंकोलं त्वगेलापत्रकेशरं ४९ लवंगंमरि चंचैव पलिकान्युपकल्पयेत् । मासमात्रंस्थितंस्थाप्यं वव्बूलारिष्ट कोजयेत् ५० क्षयंकुष्ठमतीसारं प्रमेहंश्वासकासजित् । द्राक्षातु

अर्थ मूत्रकृच्छ्र नाशै इसदेवदारु अरिष्टसे दादकुष्टअच्छाहो॥४१॥ कुष्टपर खदिरारिष्ट खैरअर्द्धतुला देवदारु अर्द्धतुला वकुची १२ पल हर्दी २०पल ॥४२॥त्रिफला२०पलआठद्रोण जलमें पचावै द्रोणभर रहै ठंढा करि औषधिडारै॥४३॥सहत २तुला खांड १ तुला धवफूल २पल कंकोल नागकेशर॥४४॥जायफल लौंग इलायची तज पत्रज ये सब पल भर पीपरि ४ पल ॥ ४५ ॥ घीके बासनमें मास भर राखिकै पियेसे महाकुष्ठ हृद्रोग पांडु अर्बुद ॥४६॥गुल्म ग्रंथि कास प्लिहो ये सबजायं यहएक खदिरारिष्ट सब कुष्टको खोताहै ॥४७॥ क्षयी पर बबूलारिष्ट बबूरछाल २ तुला ४ द्रोण पानीमें पचाइ द्रोणभर राखि ठंढाकरि तुलाभर गुडदे ॥ ४८ ॥ धवफूल १६ पल पीपरि दो पल जायफल शीतल चीनी तज पत्रज केसर ॥ ४९ ॥ लौंग मरिच ये पलपल भर पीसिकै डारि मास भर माटीके पात्रमें राखि इस ब-बूरारिष्ट से ॥५०॥ क्षयी कुष्ट अतीसार प्रमेह श्वासकास सबदूर

लाद्वे द्विद्रोणे जलस्यविपचेत्सुधीः ५१ पादशेषेकषायेच पूतेशीते विनिःक्षिपेत् । गुडस्यद्वितुलांतत्र त्वगेलापत्रकेशरं ५२ प्रियंगु मरिचंकृष्णां विडंगंचेतिचूर्णयेत् । पृथक्पलोन्मितैर्भागै स्ततोभां डेनिधापयेत् ५३ समंतंतांघट्टयित्वा पिवेज्जातरसंततः । उरःक्ष तंक्षयंहंति कासश्वासगलामयान् ५४ द्राक्षारिष्टाह्वयःप्रोक्तोव- लकृन्मलशोधनः । रोहीतकतुलामेकां चतुर्द्रोणेजलेपचेत् ५५ पा दशेषेरसेपूते शीतेपलशतद्वयं । दद्याद्गुडंचधातक्या पलषोडश कंमतं ५६ पंचकोलंत्रिजातंच त्रिफलांचविनिक्षिपेत् । चूर्णयित्वा पलांशेन ततोभांडेनिधापयेत् ५७ मासादूर्ध्वंचपिवतां गुदजार्यां तिसंक्षयं । ग्रहणीपांडुहृद्रोगं प्लीहगुल्मोदरांजयेत् । वुद्शोफा रुचिहरो रोहितारिष्टसंज्ञकः ५८ दशमूलानिकुर्वीत भागैःपंचपलैः पृथक् । पंचविंशत्पलंकुर्या च्चित्रकंपौष्करंतथा ५९ कुर्याद्विंशत्प लंलोध्रं गुडूचीतत्समोभवेत् । पलैःषोडशभिर्धात्री रविसंख्यैर्दुरा लभा ६० खदिरोवीजसारश्च पथ्याचेतिपृथक्पलैः । अष्टभिर्गु

होंं उरक्षत पर द्राक्षा रिष्ट अर्द्धतुला दाष २ द्रोण जलमें पचाइ ५१ ॥ चौथ्याई राखि ठंढाकरि ये औषधि डारै गुड़ २ तुला तज इलायची पत्रज केसर ॥ ५२ ॥ पुष्प प्रियंगु अथवा मकरा मरिच पीपरि विडंग ये सब एक एक पल माटी पात्रमें धरि एकंगकरि ॥ ५३ ॥ मुहपर बासनके मुद्राकरि मासभरि राखै तब पियै तौ उर- क्षत क्षयी कासगलेके भीतरके रोगदूरहोइ ॥५४॥ यह द्राक्षारिष्ट बलकरै मल शोधै रोहितारिष्ट अंश पर हरहारी कुषा १ तुलाचार द्रोण पानीमें पचाइ ॥ ५५ ॥ चौथ्याई रहै उतारि ठंढाकरि गुड़ २०० पलदे धवपुष्प १६ पल ॥ ५६ ॥ सोंठपीपरि पीपरामूल चाव चीता पत्रज इलायची तज पत्रज त्रिफला ये पल पलभर लै चूर्णकरि सब द्रव्य बासन भरिधरै ॥ ५७ ॥ महीना भर पीछे पियै तौ कांच के रोग ग्रहणी पांडु हृदिरोग पिलही गुल्म औ कुष्ट शोथ अरुचि इस रोहिता रिष्टसे दूरहोइ ॥ ५८ ॥ क्षयीप्रमेह पर दशमूलारिष्ट दशमूल पांच पांच पल चीता पुष्करमूल पचीस पचीस पल ॥ ५९ ॥

शितंकुष्ठं मंजिष्ठोदेवदारुच ६१ विडंगंमधुकंभार्ङ्गी कपित्थंक्षपुन वा। च०यंमांसीप्रियंगुश्च सारिवाकृष्णजीरकं ६२ त्रिवृत्तारेणुकारास्ना पिप्पलीक्रमुकःशठी । हरिद्राशतपुष्पाच पद्मकंनागकेसरम् ६३ मुस्तमिंद्रयवंशुंठी जीवकर्षभकौतथा । मेदाचान्या महामेदा काकोल्यौऋद्धिर्वृद्धिके ६४ कुर्यात्पृथग्द्विपलिका न्पचे दष्टगुणेजले । चतुर्थांशसृतंनीत्वा मृद्भांडेसंनिधापयेत् ६५ ततः षष्टिपलाद्राक्षां पचेन्नारेचतुर्गुणे । त्रिपादशेषंसीतंच पूर्वक्काथेसृतं क्षिपेत् ६६ द्वात्रिंशत्पलिकंक्षौद्रं दद्याद्गुडचतुःशतं । त्रिंशत्पला निधातक्या कंकोलंजलचंदनं ६७ जातीफलंलवंगंच त्वगेलापत्रकेशरं। पिप्पलीचेतिसंपूर्णा भागैर्द्विपलिकैःपृथक् ६८ शाणमात्रांचकस्तूरीं सर्वमेकत्रनिक्षिपेत् । भूमौनिखातयेद्भांडे ततोजात रसंपिवेत् ६९ केतकस्यफलंक्षिप्त्वा रसनिर्मलतांनयेत् । ग्रहणी मरुचिंशूलं श्वासकासंभगन्दरं ७० वातव्याधिंक्षयंछर्दिं पांडुरोगं

लोध २० गुर्च २० आंवरा १६ जवासा १२ पल ॥ ६० ॥ खैर बिजयसार हड आठपल कूट मजीठ देवदारु ॥ ६१ ॥ विडंग भारंगीकैथा बहेरा गदापुरैना चावजटामासी मकरासरिवन कष्णजीरा ॥ ६२ ॥ निशोथ मेवड़ीका बीज रासन पीपरि सुपारी कचूर हर्दी सौंफ पद्माष नागकेसर ॥ ६३ ॥ मोथा इन्द्रयवसौंठ दूनौ कटसरैया मेदा महा मेदा काकोली वृद्धी ऋद्धी ॥ ६४ ॥ ये सब दुइदुइ पल सब औषधिन का अठगुना जल औटावै जब चौथ्याई रहिजाइ तब उतारि माटी के पात्र में धरै ॥ ६५ ॥ दाष साठ पल चौगुना जलदै औटै चौथ्याई जरै तीन चरण रहै तब ठंढाकरि पहिले क्वाथ साथ मिलावै ॥ ६६ ॥ सहतपल ३२ गुड़ पल ४०० धवपुष्प पल ३० शीतल चीनी खस वा चंदन ॥ ६७ ॥ जायफल लौंग तज इलायची पत्रज केसर पीपरि इन सबका चूर्ण दो दो पल ॥ ६८ ॥ कस्तूरी चारिमाशे सब इकट्ठे करि उसीमें डारि धरती खोदि गाड़ै उसमेंका रसपिये ६९ ॥ निर्मली रगरके डारै तौ रस निर्मल होजाइ इसके पान करनेसे ग्रहणी अरुचि शूल श्वास कास भगंदर ॥ ७० ॥ वात व्याधि

चकामलां । कुष्टान्यर्शांसिमेहांश्च मन्दाग्निंप्रदराणिच ७१ शर्करामश्मरीमूत्र कृच्छ्रंन्धातुक्षयंजयेत् । कृशानापुष्टिजननो वंध्यानांगर्भदःपरं । अरिष्टादशमूलाख्यस्तेजःशुक्रवलप्रदः ७२ ॥
इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेसंधानकल्पनायां दशमोऽध्यायः॥१०॥

स्वर्णतारारताम्राणि नागवंगौचतीक्ष्णकं । धातवःसप्तविज्ञेयाः ततस्तान्शोधयेद्बुधः १ स्वर्णतारारताम्राणां यंत्राण्यग्नौप्रतापयेत् । निषिंचेत्तप्ततप्तानि तैलेतक्रेचकांजिके २ गोमूत्रेचकुलित्थानां कषायेचत्रिधात्रिधा । एवंस्वर्णादिलोहानांविशुद्धिःसम्प्रजायते ३ नागवंगौप्रतप्तौवा गलितौतौनिखेचयत् । त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्या द्रविदुग्धेनचत्रिधा ४ स्वर्णास्यद्विगुणंसूत मम्लेनसहमर्दयेत्। तद्गोलकसमंगंध निदग्वादग्धरोत्तरं ५ गोलकंचततोरुध्वा सरावदृढसंपुटे । त्रिंशद्वनोपलैर्दद्या त्पुटान्येवंचतुर्दश ६ निरुत्थं जायतेभस्म गंधोदेयःपुनःपुनः । कांचनेगलितेनागं षोडशांशेन

क्षयी छर्दि पांडु कमल कुष्ट अर्श प्रमेह औ मंदाग्नि उदर रोग ७१ ॥ सिक्ता प्रमेह पथरी मूत्र कृच्छ्र धातुक्षय ये रोग जायं दुर्बल मोटाहोय बांझिनि पुत्रजनै यह दशमूलारिष्टतेज धातु बलदेताहै ॥ ७२ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधर सुधाकरे दशमोध्यायः॥१०॥

स्वर्णादिधातुशोधन॥सोनाचांदीतांबाशीशारांगलोहाइनसातों धातुनके शोधनेकी रीति कहतेहैं ॥ १ ॥ सोनाचांदी पीतर तांबा लोहा पांचौंके सूक्ष्म पत्रबना आगिमें लालतपाइ तेलमट्ठे कांजीमें बुझाइ ॥ २ ॥ गोमूत्रमें कुरथी क्वाथमेंइनसबमें तीन तीनबार बुझावै इसीभांति स्वर्णादि धातुशुद्ध होतीहैं ॥ ३ ॥शीशा रांगा जस्ता ये गलाइकै पूर्वोक्त पदार्थ न में तीनबार बुझावैफिरतीन२बार मदार दुग्ध में बुझावै ॥४॥ सोना मारनेकी बिधि शुद्धसोना तिसका दूना शुद्ध पारा नींबूके रसमेंघोटिगोलीकरिगोली समान गंधक घीसि तरे ऊपरधरै ॥५॥ मट्टीके दो सरवाले एकनीचेमेंगोलाधरि दूसरा ऊपरढकैउसपर कपरौटीकरिबिनुवांकंडाकी आंचदेइइसेसराव संपुटकहतेहैं इसीप्रकारआगिसेनिकारसंपुटकरिचौदहबार आंचदेइ॥६॥योंप्रतिआंचदेगंधकदेनेसेस्वर्णभस्म निर्मलहोतीहै पुनर्वि-

निःक्षिपेत् ७ चूर्णयित्वातथाम्लेन घृष्ट्वाकृत्वाचगोलकं । गोल-
केनसमंगंधं दत्वाचैवाधरोत्तरं ८ सरावसंपुटेधृत्वा पुटेत्रिंशद्वनो-
पलैः । एवंसप्तपुटैर्हेम निरुत्थंभस्मजायते ६ कांचनाररसैर्घृष्ट्वा
समसूतकगंधकं । कज्जलीहेमपात्राणि लेपयेत्समयातया १०
कांचनारत्वचःकल्क मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् । धृत्वातत्संपुटेद्गोलं
मृण्मषासंपुटेचतत् ११ निधायसंधिरोधंचकृत्वासंशोष्यकेकिलैः ।
वह्निःखरतरंकुर्या देवंदत्वापुटत्रयं १२ निरुत्थंजायतेभस्म सर्वं
कार्येषुयोजयेत् । कांचनारप्रकारेण लांगलीहंतिकांचनं १३ ज्वा
लामुखीतथाहन्या त्तथाहंतिमनःशिला । शिलासिंदूरयोश्चूर्णं
समयोरर्कदुग्धकैः १४ सप्तैवभावनादद्या च्छोषयेच्चपुनःपुनः ।
ततस्तुगलितेहेम्नि कल्कोयंदीयतेसमः १५ पुनर्धमेदृढतरं य-
थाकल्कोविलीयते । एवंवारत्रयंदद्या त्कल्कोहेमम्रतिर्भवेत् १६

घिसोनेकी १६ मासे सोना लगाइ माशाभरि मीषाडारि उतारि ठंढाकरि ॥ ७ ॥ वर्णकरै नींबूके रसमें गोलाबांधै नीचे ऊपर गंधक धरि ॥ ८ ॥ गोलेके समान सराव संपुटकरि ३० गोइटाकी आंचदे तब सोना रुत्थ भस्म हो ॥ ९ ॥ तीसरा कचनार के रसमें पारा गंधक समान मिलाय खरलकरै जब कजली हो तब सोनेके पत्रपर लगावै ॥ १० ॥ फिर कचनारकीछाल पीसिकै उसगोले पर बहुतसी लपेटै फिर दोघरिया मिट्टीकी बना एक में धरि दूसरी ऊपर ढकि ॥ ११ ॥ कसिकै कपरौटी करि सुखाय बड़ी आंचदे इसीतरह प्रथम कही रीति से तीन आंचदे ॥ १२ ॥ जब जिवानेसे न जिवै तौ उत्तम है भस्म जैसे कचनारि विधान मरताहै तैसेही करि या रीतिसे भी मरता है ॥ १३ ॥ ऐसे ज्वालामुखी कहैं अरणी से भी भस्म होताहै तैसे मैनशिल से चौथा मैनशिल सेंदुरसमले मदार दूध में घोटि ॥ १४ ॥ सातवार घोटि घोटि सुखाय सुखायले तब दशमाशे सोना लगाइ चरक खाने लगै तब दशमाशे वह मैनशिल सिंदूरका सिद्धचूर्णसोनेमें छोड़ै ॥ १५ ॥ बुकनीदैकै तीनआंचदे जबतक वह बुकनी न जरिजाइ तबतक आंचदे इसी भांति बुकनीदेदे तीन

पारावतमलैर्लिंपे दथवाकुक्कुटोद्भवैः । हेमपत्राणितेषांच प्रदद्या दंतरांतरं १७ गंधचूर्णसमंकृत्वा सरावयुगसंपुटे । प्रदद्यात्कुक्कुट पुटं पंचभिर्गोमयोत्पलैः १८ एवंनवपुटंदद्याद्दशमंचमहापुटं । त्रिं शद्वनोपलैरेवं जायतेहेमभस्मतां १९ भागैकंतालकंमर्द्य याम मम्लेनकेनचित् । तेनभागत्रयंतार पत्राणिपरिलेपयेत् २० धृत्वा मूषापुटेरुध्वा पुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः । समुद्धृत्यपुनस्तालं दत्वाबुध्वा पुटैःपचेत् । एवंचतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्रजायते २१ स्नुहीक्षीरेण संपिष्टं माक्षिकंतेनलेपयेत् । तालकस्यप्रकारेण तारपत्राणिवुद्धि-मान् २२ पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्रजायते । अर्कक्षीरेणसंपिष्टो गंधकस्तेनलेपयेत् । समेनारस्यपत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः २३ ततोमूषापुटेधृत्वा पुटेद्गजपुटेनतु । एवंपुटद्वयेनैव भस्मारंभवति

आंच देइ तौ सोना भस्म होय ॥ १९ ॥ पांचवां कबूतर की वा कु-क्कुटकी वीट दोनों सोनेके पत्रकरि लपेटै ऊपरनीचे ॥ १७ ॥ उसीके समान गंधक चूर्ण भी दोनों ओर धरै तब संपुटकरै फिर थोड़ीसी भूमि खोदि पांच कंडेमें फूंकदे ॥ १८ ॥ इसप्रकार नवबार आंचदेय दशवींबार बड़ी आंच तीस कंडेकी देइ इसीप्रकार सोना भस्म होताहै ॥ १९ ॥ इतिस्वर्ण भस्म प्रकारः ॥ अथ तारविधिः ॥ एक भाग तबकिया हरताल जंभीरी नींबूके रसमें घोटि जंभीरीके अभावमें जो खट्टानींबू मिलै सो लेइ तब तीनभाग चांदीका पत्रकरि पहिले कहीं कजली चांदीकेपत्र पर तले ऊपर लेपकरै ॥ २० ॥ मूसायंत्रमें तीस बिनुवां कंडामें फूंकदे मूषायंत्र रीति दोघरिया सुनार कैसी बनाइ एकमें वस्तुधरि दूसरीढकि कपरौटीकरि सुखायले ऐसेही पूर्वोक्त कजली लेपलेय चौदह बार मूषायंत्रमें फूंकै तब चांदी भस्म होइ ॥ २१ ॥ दूसरी विधि छिरिया सेंहुड़ के दूधमें रूपा माखी पहर भर घोटि तिगुने चांदीपत्र पर लपेटै पूर्वोक्त प्रकार चौदह चौदह आंचदेइ तौ रूपा भस्म होय ॥ २२ ॥ इति रूप भस्म ॥ अथ पीतर के पत्र पहरे करि खटाई देदे अच्छी भांति मांजै जब चुकने लगै तब उस पत्रपै पीतर समान गंधक मदार के दूधमें कजलीकरि पूर्वोक्त पत्रपर लपेटि ॥ २३ ॥ मूष संपुटकरि गजपुट में आंचदे गज

ध्रुवं २४ आरवत्कांस्यमप्येवं भस्मताम्रन्तुनिश्चितं। अर्कक्षीर वदाजंस्या त्क्षीरंनिर्गुण्डिकातथा। ताम्ररीतिध्वनिवधे समंगंधक योगतः २५ सूक्ष्माणिताम्रपत्राणि कृत्वासंस्वेदयेद्बुधः। वासरत्र-यमम्लेन ततःखल्वेविनिःक्षिपेत् २६ पादांशंसूतकंदत्वा याम-म्लेनतुमर्दयेत्। ततउद्धृत्यपत्राणि लेपयेद्द्विगुणेनच। गंधकेना-म्लघृष्टेन तस्यकुर्याच्चगोलकं। ततःपिष्ट्वाचमीनाक्षी चांगेरीचपु नर्नवा २७ दत्वाल्केनवहिर्गोलं लेपयेद्द्व्यंगुलोन्मितं। धृत्वा तद्गोलकंभांडे सरावेनावरोधयेत् २८ वालुकाभिःप्रपूर्याथ विभू-तिलवणांवुभिः। दत्वाभांडेमुखेमुद्रां ततश्चुल्ह्यांविपाचयेत् २९ क्रमवृद्धाग्निनासम्य क्यावद्यामचतुष्टयं। स्वांगशीतलमुद्धृत्य मर्दयेच्छूरणद्रवैः ३० दिनैकंगोलकंकुर्या दर्द्धगंधेनलेपयेत्। स-

कहैं जो गजभर गहरा गढ़ा हाथ भरकी गुलाई में नीचेतक खोदि गोइठा भरि बीच में यंत्रधरि फूंकदे ऐसेही दो आंचमें निश्चय पीतलमरै॥ २४॥ पीतर की नाईं कांस तांबा भी भस्म होताहै मदार पय व छगरीपय व सिवड़ीरसमें गंधक पीसि तांबे वा कांसे वा पीतरपत्र पर लगाइ पूर्वोक्त रीतिसे फूंकै तौ तीनों मरैं॥ २५॥ ताम्र भस्म इमलीपत्र की मुटाई समपत्र करि ताम्रपत्र पर खटाई का पानीदे तीन दोलायंत्र की आंचदे खरलकरै॥ २६॥ तांबे की चौथाई पारादे पहरभर नींबू में घोटै फिर तांबेकी दूनी गंधक नींबू में घोटै फिर तांबेकी दूनी गंधक नींबूके रसमेंघोट पत्र पत्र लेप गोला बांधि मकोइ वा ग्मलनिया वा गदापुरैना॥ २७॥ इनकी पीठि हो अंगुल मोटी गोलापर लपेटएक बासनमें धरि मुख मूंदि दे॥ २८॥ तब एक बड़ेबासन की पेंदी में छेदकरि उसपर अभ्रक धरि थोड़ा बालू भरै तिसपर लोनका पानी छिड़कि पहिला बा-सन धरै फिर बालूभरि लोनका पानीदे दबाई दे जिसमें वह बा-सन तुपजाइ तब बड़े बासन का मुंह मूंदि कपरौटी करि चूल्हे पै धरि लकड़ी की आंचदेइ॥ २९॥ मंद आंचदे फिरि क्रमसे तेज करता चारपहरआंचदे ठंढाकरि शूरनकेरसमें एकदिन॥३०॥उसी तांबे का आधा गंधक आधा घीले खरलकरि उसेतांबे पर लेपकरि

घृतेनततोमूषा पुटेगजपुटेपचेत् ३१ स्वांगशीतंसमुद्धृत्यमृतं
ताम्रंशुभंभवेत् । वांतिभ्रांतिक्लमंरेकं नकरोतिकदाचन ३२ तांबो
लीरससंपिष्टं शिलालेपात्पुनःपुनः । द्वात्रिंशद्भिःपुटैर्नागा निरुत्थो
यातिभस्मतां ३३ अश्वत्थचिंचात्वक्चूर्णं चतुर्थांशेननिक्षिपेत् । मृ-
त्पात्रेद्राविते नागे लोहदर्व्याप्रचालयेत् ३४ यामैकेनभवेद्भस्म
तत्तुल्याचमनःशिला । कांजिकेनद्वयंपिष्ट्वापचेद् दृढपुटेनच ३५
स्वांगशीतंपुनःपिष्ट्वाशिलायांकांजिकंपुनः । पचेत्सरावाभ्यामेवं
षष्टिपूर्पैर्मृतिःभवेत् ३६ मृत्पात्रे द्राविते वंगेचिंचाश्वत्थत्वचोरजः ।
क्षिप्त्वावंगचतुर्थांशमयोदार्व्याप्रचालयेत् ३७ ततोद्वियाममात्रेण
वंगभस्मप्रजायते । अथभस्मसमंतालं क्षिप्त्वाम्लेनविमर्दयेत् ३८
ततोगजपुटेपक्त्वा रसेनापुनरम्लयेत् । तालेनदशमांशेन याममेकं
ततःपुटेत् ३९ एवंदशपुटैःपक्वं वंगस्तुम्रियतेध्रुवं । शुद्धंलोहभवं

मूसायंत्रमें धरि फिर गजपुट आंचदे ॥ ३१ ॥ जबउसीमें स्वाभाविक
शीत हो जाय तब निकारिले तौ उवाकी संभ्रम चित विकलाई
और दस्तआना दूरहो तब जानिये तांबा शुद्ध भया ॥ ३२ ॥ शीशा
भस्मपानके रसमें मैनशिलको पीसि शीशेके पत्र पर लगावै बत्तिस
कंडाकी आंचदे ऐसेही बत्तिस आंच दे ॥३३॥ पुनर्विधानं ॥ पीपरि
अमलीकी छाल का चर्ण चौथ्याई शीशादे माटीके बासनमें धरि
नीचे आंच करै जब शीशा गलै तब बही दोनों छाल का चूर्णडारि
डारि लोहे की करछी से चलाता जाय ॥ ३४ ॥ ऐसे पहर भर
आंचदेइ तब शीशेकी भस्मलेके बराबर मैनशिलदे कांजीमें घोटि
सुखाय गजपुट आंचदेय ॥ ३५ ॥ ठंढाभये फिर मैनशिल कांजीदे
पीसि गजपुटदेइ ऐसे साठिआंचदेइतब शीशामरैजो साठिसेकम
देइ तौ जी सक्ताहै ॥ ३६ ॥ वंगभस्म रांगामाटी के बासनमें लगाइ
चौथ्याई पीपरि अमलीकी छालका चूर्णदे लोहेकी करछीसेघोटै
३७ ॥ दोपहर घोटैतौ रांगाभस्महोय रांगकीभस्मकेतुल्यहरताल
डारि निम्बू के रसमेंघोटै ॥ ३८ ॥ गजपुट की आंचदे फिर निकार
नींब का रस औ दशांश हरतालदेघोटै पहरभर ॥ ३९ ॥ फिरउसे

चूर्णं पातालगरुडीरसैः । मर्दयित्वापुटेद्वह्नौ दद्यादेवंपुटत्रयं४०
पुटत्रयंकुमार्य्याश्चकुठारच्छिन्नकारसैः । पुटषट्कंततोदद्या देवंती-
क्ष्णंमृतिर्भवेत् ४१ क्षिपेद्द्वादशमांशेन दरशंतीक्ष्णचूर्णतः । मर्दये
त्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मंततःपुटेत् । एवंसप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवा
प्नुयात् ४२ रसेकुठारच्छिन्नायाः पातालगरुडीरसैः । स्तन्येनचा
र्कदुग्धेन तीक्ष्णस्यैवंमृतिर्भवेत् ४३ सूतकाद्दिगुणंगंधं दत्वाकु-
र्याच्चकज्जलीं । द्वयोःसमंलोहचूर्णं मर्द्दयेत्कन्यकाद्रवैः ४४ याम
युग्मंततःपिंडं कृत्वाताम्रस्यपात्रके । घर्मेधृत्वोरुबुकस्य पत्रैरा-
च्छादयेद्बुधः ४५ यामार्द्धेनोस्मताभूया द्धान्यराशौन्यसेत्ततः ।
दत्वोपरिसरावंच त्रिदिनांतेसमुद्धरेत् ४६ पिष्ट्वाचगालयेद्वस्त्रा
देवंवारितरंभवेत् । एवंसर्वाणिलोहानिस्वर्णादीन्यपिमारयेत् ४७
शिलागन्धार्कदुग्धाक्तास्स्वर्णाद्यास्सप्तधातवः । म्रियतेद्वादशपुटैः

फूंकदे इसभांति दश आंचदेतब बंग तैयारहोय शुद्धलोहा तिसका
चूर्ण पातालमूली औपातालमूली बिना कुरहटा के रसमें घोटैआं
च दे ऐसे तीनिआंचदे ॥ ४० ॥ फिरघीकुवारके रसमेंघोटै तीनआंच
दे फिर कुरैया छालकेक्वाथमेंघोटि छःआंचदे तो लोह भस्महोता
है ॥ ४१ ॥ पुनः जितना लोहा होतिसका बारहवांअंश सिंगरफदे
घीकुवारके रसमें दोपहर घोटैआंचदे तोलोहभस्म होताहै ॥४२॥
पुनः कुरैया रस व कुरहटारसमें वा स्त्री के दूधमें वा मदार रसमें
सिंगरफ युक्त किसी में घोटि सात आंच देतो लोह भस्म होताहै
४३ ॥ पुनः पारेकी दूनी गंधक मिलाइ कजलीकरिकजलीकेसमान
लोह चूर्णले घीकुवार के रसमें दोनों घोटै ॥४४॥ दोपहरघोटिपि-
डी बनाय तांबेके पात्रमेंधरि रेंड पात से ढांकि ॥ ४५ ॥ चारिघरी धूप
में राखि पतौआ उतारि फेंकिदेइ दूसरे पात्रसे ढांपि अनाज की
राशिमें तीनदिन गाड़िकै निकारिलेइ ॥ ४६ ॥ तब पीसिकै कपड़ेमें
छानि पानीपर डारे से लोह तिरैगा ऐसेहीस्वर्णादि सब धातुमा-
रिये ॥ ४७ ॥ तीसरीबिधि शिल औ गंधक मदारके दूधमें खरलक
रिये इसीप्रकार सातधातु में चाहे जिस धातुको बारहआंच देइ

सत्यंगुरुवचोयथा ४८ माक्षीकंतुत्थकाभ्रौच नीलांजनशिलाल- काः । रसकश्चैवविज्ञेया एतेसप्तोपधातवः ४९ माक्षिकस्यत्रयो भागाः भागैकंसैंधवस्यच । मातुलंगद्रवैर्वाथजंवीरोत्थद्रवैःपचेत् ५० चालयेल्लोहपात्रेण यावत्पात्रंसुलोहितं । भवेत्ततस्तुसंशुद्धं स्वर्ण माक्षिकमृच्छति ५१ अन्यच्च॥ कुलत्थस्यक षायेणदष्ट्वातैलेनवापु- टेत् । तक्रेणवाजमूत्रेण म्रियतस्वर्णमाक्षिकं ५२ कर्कोटीमेषशृं- ग्युत्थैर्द्रवैर्जंवीरजैरसैः । भावयेदापयेत्तीव्रेविमलाशुध्यतिध्रुवं ५३ विष्टयामर्द्दयेत्तुत्थं मार्जारककपोतयोः । दशांशंटंकणंदत्वा पुटेन्मृदु पुटेनतत् । पुटंदध्नापुटंक्षौद्रे देयंतुत्थविशुद्धये ५४ कृस्नाभ्रकन्ध मेद्वह्नौ ततःक्षीरेविनिःक्षिपेत् । भिन्नपत्रंततःकृत्वा तंडुलीयाम्ल योर्द्रवैः ५५ भावयेदष्टयामन्त देवंशुध्यतिचाभ्रकं । बध्वाधान्य सुतावस्त्रे मर्द्दयेत्कांजिकैस्सह ५६ कृत्वाधान्याभ्रकंतत्तु शोषयि-

धातु भस्महोजाती यहरीतिनिश्चयहै जैसे गुरुसत्यवचन कहाताहै ४८॥ सोना रूपामाषी तूतिया अभ्रख सुरमा शिलाजीत हर- ताल खपरिया येसात उपधातुहैं ॥ ४९ ॥ सोना रूपामाषी शोधन मारन सोना व रूपा व माषी तीनभाग सैंधव एकभाग बिजौरावा जंभीरीका रस॥ ५० ॥ लोहपात्रमें डारि आगिपरचढ़ाइघोटै जब बासन लालहोजाइ तब जानैकिसोना रूपामाखी शुद्धहो मरगई ५१ ॥ तब उतारि उसे कुलथी क्वाथ तिलतेलसमानले घोटै वा मठा वाछागमूत्र मेंघोटि तीसकंडेकीआंचमें फूंकदेतौ सोना माखीमरै ५२॥ रूपामाषी वंध्याखिकसा मेढ़ासिंगीवा जंभीरीके रसमेंघोटि तीव्र घाम मेंधरैतो रूपा माषी शुद्धहोइ और मारना सोनामाषी की तरह जानौ ॥ ५३ ॥ तूतिया शोधन बिलाई बीट तूतिया का दशांश सोहागादे घोटि मध्यम आंच दे फिर दहीका पुटदे फूंकै फिर सहत पुटदे फूंकै तबशुद्धहोय ॥ ५४ ॥ अभ्रक शोधन मारण कृष्ण अभ्रक लालकरि तपाइ दूधमें बुझाइ चूर्णकरि चौराई औ कोई खटाई मिलाइ आठ पहर घोटै तौ शुद्ध होय तब वस्त्रमेंबांधि धान औ अभ्रक कांजी में डारि मलै॥ ५५॥ ५६ ॥ फिर छानि बासन में धरि जब थिराइ कांजी बहाइ अभ्रक सुखाइ मदार दूधमें दिन

त्वाथमर्दयेत् । अर्कक्षीरैर्दिनंमर्द्यं चक्राकारन्तुकारयेत् ५७ वेष्टये दर्कपत्रै श्च सम्यग्गजपुटेपचेत् । पुनर्मर्द्यंपुनःचाध्य सप्तवारंत्रय-न्ततः ५८ ततोवटजटाक्वाथै स्तद्वद्द यंपुटत्रयम् । म्रियतेनात्रसंदेहः सर्वकर्मसुयोजयेत् ५९ शुद्ध धान्याभ्रकंमुस्तं शुंठीषड्भागयोजि-तं। मर्दयेत्कांजिकेनैवं दिनंचित्रकजैरसैः ६० ततोगजपुटंदद्या त्तस्मादुद्धृत्यमर्दयेत् । त्रिफलावारिणातद्वत्पुटेदेवंपुटैस्त्रिभिः ६१ वलागोमूत्रमुशली तुलसीशूरणाद्रवैः । मर्दितंपुटितंवह्नौत्रित्रिवेलं व्रजेन्मृतिं ६२धान्याभ्रकस्यभागैकं द्वौभागौटंकणस्यच। पिष्ट्वा तदर्धमूषायां रुध्वातीव्राग्निनापचेत् । स्वभावशीतलंचूर्णंसर्वरोगे षुयोजयेत्६३नीलांजनंचूर्णयित्वा जंवीरद्रवभावितं दिनैकमात पशुद्धं भवेत्कार्येषुयोजयेत् ६४ एवंगैरिककाशीसं टंकणानिवरा टिका। शंखतोरोचकंकुष्ठशुद्धमायातिनिश्चितं६५ पचेदह्नंअजामूत्रे दोलायंत्रेमनःशिलां।भावयेत्सप्तधापित्तैरजायाशुद्धिमृच्छति ६६

भर घुटाइ टिकिया करै ॥ ५७ ॥ मदार पत्रमें लपेट गजपुट आंचदे ऐसेही मदार दूधमें घोटि घोटि सातपुटदेइ ॥ ५८ ॥ फिर बरगद जटा क्वाथमें घोटि घोटि तीन पुटदेइ इसप्रकार निस्संदेह अभ्रक मरेगा सब कर्म योग्य होयगा ॥ ५९ ॥ दूसरी विधि शुद्ध अभ्रक ले छटा छठा अंश मोथा सोंठ दे कांजीमें दिनभर खरलकरि फिर चीता के रसमें ॥ ६० ॥ तब गजपुट आंचदे फिर निकार तीनबार त्रिफला रसमें घोटि घोटि गजपुट आंच देइ ॥ ६१ ॥ फिर बरि-यारा गोमूत्र मुशली कृष्ण तुलसी शूरन इनके रसमें घोटि घोटि तीनबार गजपुट आंच देइ तौ अभ्रक मरै ॥ ६२ ॥ एक भाग शुद्ध अभ्रक दो भाग सुहागा देकै अंध मूषक यंत्रमें रूंधि गजपुट की तीव्र आंचमें फूंकै इसकी ठंढी प्रकृति है सब रोगमें देने योग्य है ६३ ॥ सुरमा शोधन मारण सुरमा चूर्णकरि जम्भीरी नींबूके रसमें घोटि एक दिन घाममें धरै तौ सब कार्य योग्य होता है ॥ ६४ ॥ ऐसेही गेरू कसीस सुहागा कौड़ी शंख फिटकड़ी चोक ये सबशुद्ध होब ॥ ६५ ॥ मैनशिल शोधन मारण मैनशिल बकरी के मूत में

अन्यच्च ॥ अगस्तिपत्रतोयेन भावयेत्सप्तवारकं । शृंगवेररसे वापि विदधातिःमनःशिला ६७तालकंकणशःकृत्वासचूर्णकांजिके क्षिपेत् । दोलायंत्रेणयामैकं ततःकूष्मांडजैर्द्रवैः६८ तिलतैलैःपचेद्यामं यामंचत्रिफलाजलैः ।एवंयंत्रेचतुर्यामंपाच्यंशुद्धतितालकं६९ नरमूत्रेतुगोमूत्रे सप्ताहंरसकंपचेत्।दोलायंत्रेणशुद्धंस्यात्ततःकार्येषु योजयेत् ७० लाक्षःमीनपयश्छागटंकरंमृगशृंगकं । पिण्याकंसर्षपाशिग्रु गुंजोर्णागुडसैंधवं ७१ यवतिक्ताघृतंक्षौद्रं यथालाभंविचूर्णयेत् । एभिर्विमिश्रिताःसर्वे धातवोगाढवह्निना । मूषाध्मातास्रजायंते मुक्तसत्वानसंशयः ७२ कुलत्थकोद्रवक्काथे दोलायंत्रे विपाचयेत् । व्याघ्रीकंदगतंवज्रं त्रिदिनेशुद्धिमृच्छति ७३ तप्तं तप्तन्तुतद्वज्रं खरमूत्रेनिषेचयेत् । पुनःस्तप्तंपुनःसेच्य मेवंकुर्यात्त्रिसप्तधा ७४ मत्कुणेतालकंपिष्ट्वा यावद्भवतिगोलकं । तद्गोलेनि-

डोल यंत्रमें तीनदिन पकाय बकरीके मूतमें सातभावनादे तबमैनशिल शुद्धहोय ॥ ६६ ॥ वा अगस्त पत्रके रसमें सातभावना दे वा अदरकके रसमें सात भावनादे तौ मैनशिल कार्यसाध्यहोय ॥ ६७ ॥ हरतालशोधन हरतालचूर्ण कांजीके पानीमें डोलायंत्रकरि सिद्ध करै योंही कुम्हड़ा के रसमेंकरै ॥ ६८ ॥ तिलकेतेलमें पहरदोला यंत्र करै पहर भर त्रिफला क्वाथमें इसप्रकारकखारमें चारि पहर में सिद्धकरै शुद्धहोय॥ ६९ ॥ खपरिया शोधन खपरियाले गोमूत्रवा मनुष्यमूत्रदे सातदिनदोलायंत्रमेंशुद्धकरैतबकार्यसाध्यहोय ॥ ७० ॥ सब धातुनके सतनिःसारण विधि ॥ लाही लघुमीन छगरी पय सुहागा मृगसींग पीना सरसौं सहिंजन लालगुंजा गुड़सैंधव ॥ ७१ ॥ यव कटुकी घृत मधु इनमें जो एक दो न होतौ चिन्ता नहीं जिस धातुमें चाहै तिसमेंदे अंधमूषयंत्रकरिआंचदे तौ सबधातुका सत निकलताहै॥७२॥हीरा शोधन मारन कुरथी औ कोदवके क्वाथको दोल यंत्रमें भर तिसमें भटकटैया की जड़की लुगदीमें हीरारख कपड़ेमें बांधि सिद्धकरै तीनदिन तब हीरा शुद्धहो फिर आगिमें तपाय खरमूत्रमें२१बार बुझावै॥ ७३ । ७४॥ मत्कुण कहे खटकिरवा

हितंवज्रं तद्गोलंचाधिकं धमेत् ७५ सेचयेदश्वमूत्रेण तद्गोलंचक्षिपेत्पुनः । रुध्वात्मातंपुनःसेच्य मेवंकुर्यात्त्रिसप्तधा । एवंचम्रियते वज्रं चूर्णंसर्वत्रयोजयेत् ७६ हिंगुसैंधवसंयुक्ते क्वाथेकौलत्थजे क्षिपेत् । तप्तंतप्तंपुनर्वज्रं भूयाच्चूर्णंत्रिसप्तधा ७७ मंडूकंकांस्यजेपात्रे निगृह्यस्थापयेत्सुधीः । सभीतोमूत्रयेत्तत्र तन्मध्येवज्रमावहेत् । तप्तन्तप्तञ्चबहुधा वज्रस्यैवम्मृतिर्भवेत् ७८ वैक्रांतंवज्रवच्छोध्यं नीलम्बालोहितंतथा । हयमूत्रेणसिंचेत तप्तंतप्तंहिसप्तधा ७९ ततश्चमेषदुग्धेन पंचांगेगोलकंक्षिपेत् । पुटेन्मूषापुटेरुध्वा कुर्यादेवंचसप्तधा ८० वैक्रांतंभस्मतांयाति वज्रस्थानेनियोजयेत् । स्वेदयेद्दोलिकायंत्रे जयंत्यास्वरसेनच । मणिमुक्ताप्रवालानि यामैकंशोधनंभवेत् ८१ कुमार्यातंदुलीयेन स्तन्येनचनिषेचयेत् । प्रत्येकंसप्तवेलंच तप्ततप्तानिकृत्स्नसः ८२ मौक्तिकानि

और हरताल पीसि गोलाकरि उसमें हीराधरि तीव्र आंच देइ मूषा यंत्रमें राखि भाथीसें फूँकै ॥ ७५ ॥ फिर अश्व मूत्रमें २१ बार बुझाय हरताल गोलामें धरिफूंकै इक्कीसबार अश्वमूत्र में बुझाय फूंकै ऐसेहीरा भस्म होताहै उसको चूर्ण सर्वत्र साध्यहै ॥ ७६ ॥ पुनर्विधिः ॥ हींग सेंधानोन कुरथी क्वाथमें डारि उसमें हीरा तपाइ तपाइ २१ बार बुझावै तौ हीरामरै ॥ ७७ ॥ तृतीय विधि मेंढुक कांसेके पात्रमें मूंदै उसे डरावै जब भयसे मूते उस मूतमें हीरा तपाइ तपाइ बहुत बुझावै तौ खिलकै चूर्णहो मरिजाय ॥ ७८ ॥ वैक्रांती शोधन मारण वैक्रांत कच्चे हीरेको कहतेहैं काला हो वा लाल सो हीरे की नाईं शोधै लाल करि करि १४ बार बुझाइ ७९ ॥ मेढ़ासिंही के पंचांग के गोलेमें धरि मूसा यंत्रमें भरि संपुट करि फूंकदे इसी तरह सातबार ॥ ८० ॥ तब वैक्रांत भस्महोय सो हीरे की ठौर देइ सर्व रत्न शोधन मारण अच्छे मोती व माणिक वा मूंगा अरणी रसदे दोल यंत्रमें एक पहर सिद्धकरै तो शुद्धहोय ८१ ॥ घी कुवार चौराई वा स्त्रीकादूध इन तीनोंमें सात सातबार माणिकादि तपाइ तपाइ बुझावै ॥ ८२ ॥ मूंगा मुक्तादि सबच्चण

प्रवालानि तथारत्नान्यशेषतः । क्षणाद्विकृतवर्णानि म्रियंतेनात्र संशयः ८३ उक्तमाक्षिकवन्मुक्ता प्रवालानिचमारयेत् । वज्रवत्स र्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा ८४ शिलाजतुसमानीय ग्रीष्मतप्त शिलाच्युतं । गोदुग्धत्रिफलाक्काथैर्भृङ्गराजैश्चमर्दयेत् । आतपे दिनमेकंतु तच्छुष्कंशुद्धतांव्रजेत् ८५ मुख्यांशिलाजतुशिलां सूक्ष्मखंडंप्रकल्पितां निक्षिप्यात्युष्णपानीययामैकंस्थापयेत्सुधीः ८६ मर्दयित्वाततोनीरं गृह्णीयाद्वस्त्रगालितं । स्थापयित्वाचमृत्पात्रे धारयेदातपेबुधः ८७ उपरिस्थंघनंयत्स्यात् तत्क्षिपेदन्यपात्रके । धारयेदातपेतस्मा दुपरिस्थंघनंनयेत् ८८ एवंपुनःपुनर्नीत्वा द्विमासाभ्यांशिलाजतु । भूयात्कार्यसमावह्नौ क्षिप्त्वालिंगोपमं भवेत् ८९ निर्धूमंचततःशुद्धं सर्वकर्मसुयोजयेत् । अधःस्थितंचयत्तच्छेषं तस्मिन्नीरंविनिःक्षिपेत् । विमर्द्यधारयेद्धर्मेपूर्ववच्चैवतन्नयेत् ९० आक्षांगारैर्धर्मतप्तिकिट्टं लोहजंतद्द्रवांजलिः । सेचयेत्ततस्तंच

भरमें वर्ण पलट जातेहैं इसमें संशयनहीं ॥ ८३ ॥ मूंगा मोती सोना माषी की रीति से भी मरताहै और सब रत्न हीरेकी नाईं शोधै मारै ॥ ८४ ॥ शिलाजीत शोधन ग्रीष्म की तापकरि पर्वत से चूवा शिलाजीत लाइ गाईका दूध वा त्रिफला क्काथ वा भंगरे के रसमें पहरभर घोटि दिनभर घाममें धरे सूखजाइ तौ शुधिजाइ ॥ ८५ ॥ दूसरी रीति अच्छे शिला जीतको शिलाले छोटे छोटे टूककरै अति उष्ण जलमें पहर भर राखै ॥ ८६ ॥ उसे पानीमेंपीसै फिर छानकै लैलेइ फिर माटीके बासनमें करि घाममें धरै ॥ ८७ ॥ जब मलाई परैउसेकाढ़ि और पात्रमें रक्खै फिर और जब तत्ता करै ८८ ॥ दे फिर मलाई लेले पहिली मलाईमें रखताजाइ इसीभांति दो मासतक करै तब शिलाजीत कार्य का होताहै औ आगिमें रखनेसे लिंगाकार होताहै ॥ ८९ ॥ निधूमभये जानिये कि शिलाजीत अच्छा बनगया पहिली मलाई इस प्रकार बनी फिर पहिली मलाईके तरे और जो बहुबारका निकला पानी उसके तरे थिराइरहै इन दोनोंको गरम पानी दे दे पीसि फिर दोमास

सप्तवारंपुनःपुनः ६१ चूर्णयित्वाततःक्वाथैर्द्विगुणैस्त्रिफलाभवैः। आलोड्यभर्जयेद्वह्नौ मंडूरंजायतेवरं ६२ क्षारवृक्षस्यकाष्ठानि शुष्काण्यग्नौप्रदीपयेत् । नीत्वातद्भस्ममृत्पात्रेक्षिप्त्वानीरेचतुर्गुणे ६३ विमर्द्यधारयेद्रात्रौप्रातर्वस्त्राजलंनयेत् । तन्नीरंक्वाथयेद्वह्नौ यावत्सर्वंविशुष्यति ६४ ततःपात्रात्समुल्लिख्य क्षारोग्राह्यःसित-प्रभः । चूर्णाभःप्रतिसार्यस्य जिक्तस्यात्क्वाथवस्थितः । इतिक्षार द्वयंधीमान् युक्तःकार्येप्रयोजयेत् ६५ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरेएकादशो ऽध्यायः ॥ ११ ॥

पारदःसर्वरोगाणां जेतापुष्टिकरःस्मृतः । सुदिनेसाधनंकुर्यात् संसिद्धिंदेहलोहयोः १ रसेंद्रःपारदःसूतः हरजःसूतकोरसः । बुधै स्तस्येतिनामानि ज्ञेयानिरसकर्मसु २ ताम्रातारारनागाश्च हेम

ताईं दूनापानी डारि शुद्धकरै ॥ ६० ॥ अथ मंडूरबिधि कीटी लोहा का मैल बहेराकी लकड़ीके कोइलामें लालकरि गोमूत्र में सातबार बुझावै ॥ ६१ ॥ तब कीटका चूर्णकरि दूने त्रिफला क्वाथमें मिलाइ पात्र में धरि आंचमें त्रिफला क्वाथ जराइकै उतारिले तब मंडूर अच्छाहोइ ॥ ६२ ॥ अथक्षारविधि क्षार वृक्षकी लकड़ीको राखकरि चौगुने पानीमें घोलि ॥ ६३ ॥ रातभरराखि प्रातथिरा-ना पानीलेआगिपर चढ़ाइ पानीजरावै जब पानीजरिजाय ॥ ६४ ॥ तब उतारिलै उसीको क्षार कहतेहैं सपेद हो जाताहै और सब पानी न जरै तौ क्वाथ सम रहताहै ये दो प्रकार खार वैद्य जन औषधिमें देतेहैं कुरैया पलास बकायन बहेड़ा अमलतास मदार अमली सेंहुड़ चिर्चिरा पाढ़ाकेला जमालगोटा सहिंजन मूरी इत्यादि क्षारवृक्षहैं ॥ ६५ ॥ इतिशार्ङ्गधरेएकादशोध्यायः॥ ११॥

पाराको सर्वरोग जीतनेवालाऔ पुष्टिकारककहतेहैं शुभदिन शुद्ध करना आरंभ करै अच्छा सिद्धहोतो जरा व्याधि दूरिकरै लोहादिधातु पारेसे संस्कारकरै उत्तम होइ शरीरपुष्टि करतीहै प्रमाण॥उत्तमंरसराजेन मध्यमंबंधकादिभिः । अधमंमूलक्षारैश्च तैले नाप्यधमाधमं १ पारानाम रसेंद्रपारद सूतहरज सूतकरस ये छह

वंगौचतीक्ष्णकं । कांस्यकंवृतलोहंच धातवोनवसंस्थिताः ३ सूर्यादीनांग्रहाणांते कथितानामभिःक्रमात् ४ राजीरसोनमुपायां रसं क्षिप्त्वापिवंधयेत् । वस्त्रेणदोलिकायंत्रे स्वेदयेत्कांजिकैस्त्र्यहं । दिनैकंमर्दयेत्सूतं कुमारीसंभवैर्द्रवैः । तथाचित्रकजैःक्वाथैर्मर्दयेदेक वासरंकाचमाचीरसैस्तद्वद्दिनमेकंचमर्दयेत् ५ त्रिफलायास्तथाक्वाथैरसोमर्द्यःप्रयत्नतः । ततस्तेभ्यःपृथक्कुर्यात्सूतंप्रक्षाल्यकांजिकैः६ ततःक्षिप्त्वारसंखल्वे रसादर्द्धांशसैंधवं । मर्दयेन्निम्बुकरसैर्दिन मेकमनातुरं ७ ततोराजीरसोनश्च सुष्यश्चनवसादरः । एतैरस समैस्तद्वत्सूतोमर्द्यस्तुषांवुना८ ततःसंशोप्यचक्राभंकृत्वालिप्त्वा चहिंगुना । द्विस्थालीसंपुटेकृत्वा पूरयेल्लवणेनच । अधःस्थालीं ततोमुद्रां दद्याद्दृढतरांवुधः । विशोष्याग्निंविधायाधो निषिंचेदंवुनोपरि । ततस्तुकुर्यात्तीव्राग्निं तदधःप्रहरत्रयं । एवंनिपातयत्यूर्ध्वे रसोदोषविवर्जितः । अथोर्ध्वंपिठरीमध्ये लग्नोग्राह्योरसोत्तमः ६

नाम पंडित रसक्रिया में समझलेइ ॥ २ ॥ तांबा रूपा और शीशा सोना रांगा पौलादि कांसालोहा ये नवधातु सूर्यादि नवग्रह के क्रमसे नदी नाम समझलेइ ॥ ३ ॥ रस शोधन राई लहशुन की लुगदी का मसायंच करि पारा भरि मुख मूंदि गाढ़े वस्त्रमें बांधि दोलायंच में कांजीके संग तीनदिन आंचदेइशुद्धकरै फिर एकदिन घीकुवारमें घोटि ॥ ४ ॥ एकदिन चीता क्वाथमें एकदिन मकोइ रसमें ॥ ५ ॥ एकदिन त्रिफलाके रसमें धोइ पारा निकारि धोइ लेइ ॥ ६ ॥ पारा एक भाग सेंधा अर्द्धभाग दिनभर नींबू के रसमें खूब घोटि ॥ ७ ॥ राई लहशुन अच्छा नौसादर ये सब पारेके समानले पारेके संगदे तुषांवुमें सब मिलाय मर्दनकरै तब सूखकै गाढ़ाहो तब टिकरी बना हींग लेपकरि फिर एक हांडी नोन भरि तिसके बीचमें पूर्वोक्त टिकिया धरि तिसपर दूजी हांडी के मुहरगरेहों जिसमें संधि न रहै तब कपरौटीकरि आंचदेइ ऊपर भीजी कपरी राखै उसे सींचतारहै नीचेआंच तेजराखै तीनपहर तक जब ठंढी हो तब ऊपरवाली हांडीमें जो दोषवर्जित रस

लोहपात्रेविनिःक्षिप्य घृतमग्नौप्रतापयेत् । तप्तेघृतेतत्समानं क्षिपेद्गंधकजंरजः १० विद्रुतंगंधकंज्ञात्वा दुग्धमध्येविनिःक्षिपेत्। एवंगंधकशुद्धिःस्यात्सर्वकार्येषुयोजयेत् ११ मेषीक्षीरेणदरदम्ल वर्गैश्चभावितं । सप्तवारंप्रयत्नेन शुद्धिमायातिनिश्चितं १२ निंबूरसैर्निंवपत्र रसैर्वायाममात्रकं । पिष्ट्वादरदमूर्ध्वंच पातये-त्सूतयुक्तिवत् । ततःशुद्धंरसंतस्मा न्नीत्वाकार्येषुयोजयेत् १३ कालकूटंवत्सनाग शृंगकश्चप्रदीपनः । हालाहलोब्रह्मपुत्रो हारिद्रः सक्तुकस्तथा । सौराष्ट्रिकइतिप्रोक्ता विषभेदाअमीनव १४ अर्कसेहुंडधत्तूरा लांगलीकरवीरकः । गुंजाहिफेनमित्येताः सप्तोपविषजातयः १५ एतैर्विमर्दितःसूतश्छिन्नपक्षःप्रजायते । मुखंचजायतेतस्य धातूंश्चग्रसतेपरा १६ अथवाकटुकक्षारौ राजीलवणपंच-कैः । रसोनोनवसारश्च शिग्रुश्चैकत्रचूर्णितैः । समांशैःपारदादेतै

लपटा छुड़ाइके सब काम में युक्तकरै ॥ ८ । ९ ॥ गंधक शोधन लोहे की कढ़ाईमें घी अति तप्तकरै घीके समान गंधक चूर्ण छोड़ै जब गलै तब चौगुनो दूधमें गरमही नाइकै बुझावै तौ गंधक शुद्ध हो सब कार्य योग्यहै ॥ १० । ११ ॥ सिंगरफ शोधन सिंगरफ को भेड़की दूध और नीबूके रसमें घोटि सुखावै इसे भावनाकहिये ऐसे सात भावना देनेसे सिंगरफ निश्चय शुद्ध होय ॥ १२ ॥ सिंगरफ से पारा निकालनेकी बिधि नीबूरस वा नोमपत्र रसमें पहर भर सिंगरफ घोटि फिर डमरू यंत्रकरि उतारि लेइ डमरूयंत्रयों कहतेहैं जैसे प्रथम पारा उड़ाया है उड़ाय लेनेसे भी पारा शुधि जाताहै सर्व कार्य कारक हो जाता है ॥ १३ ॥ अब पारे का मुख करना कहे क्षुधाकार करनाभी कहतेहैं कालकूट बच्छनाग सिंगिया प्रदीपन हलाहल ब्रह्मपुत्र हरदिया सक्तुक सौराष्टक ये नव बिषहैं औ मदार सेहुंड़ धतूरा करियारी कनेर लाल घुंघुची अफीम ये सात उपविषहैं ॥ १४ । १५ ॥ इन सब बिषमें मर्दन करनेसे पारा पक्षहीन हो जाताहै समस्त धातुनके भक्षणकरने को समर्थहोताहै ॥ १६ ॥ अथ दूसरा प्रकार त्रिकुटा दोनों खार और राई औ पांचोलोन

जँभीरीणारसेनवा। निंबूतोयेकांजिकेवासोष्णंखल्वेविनिक्षिपेत् १७
अहोरात्रत्रयेण स्याद्रसोधातुचरन्मुखं । अथवाविन्दुलीकिट्टैः
रसोमर्द्यस्त्रिवासरं। लवणाम्लैर्मुखंतस्य जायतेधातुघस्मरं १८
अथकच्छपयंत्रेण गंधजारणमुच्यते। मृत्कुंडेनिक्षिपेन्नीरं तन्मध्ये
चसरावकं १९ महत्कुंडपिधानाभं मध्येमेखलयायुतं। लिप्त्वाच
मेखलामध्ये चूर्णतत्ररसंक्षिपेत्। रसस्योपरिगंधस्य रजोदद्या
त्समांशकं। दत्वोपरिसरावंच रस्ममुद्रांप्रदापयेत्। तस्योपरि
पुटंदत्वा चतुर्भिर्गोमयोपलैः। एवंपुनःपुनर्गंधं षड्गुणंजारयेद्बुधः
गन्धजीर्णोभवेत्सूत स्तीक्ष्णाग्निःसर्वकर्मसु २० धूपसारंरसंतारी
गन्धकंनवसादरं।। यामेकंमर्दयेदम्लै र्भागंकृत्वासमांशकं २१
कांचकुप्यांविनिक्षिप्य तांचमृद्वस्त्रमुद्रया। विलिप्यपरितोवक्त्रे मु

लहसुन नौसादर सहंजनकी छाल ये सब सम भागले चूर्णकरै तब
पारेके समानले जंभीरी रस वा नींबू रस वा कांजीमें गरमकरि
खरलकरै ॥ १७ ॥ तीन दिनरात तब पारा सब धातुन को खाइ
और तोलन बढ़ै पारा के मुख होताहै और छछुंदा वा वीर-
बहूटी में तीनदिन घोटै फिर पांचौलोन औ नींबूके रसमें घोटै
तब पारेका मुख खुलै औ धातु भक्षणकरै ॥ १८ ॥ कच्छप यंत्रकरि
गंधक फूंकन विधि एक माटीका कूंड़ाले तिसमें चार अंगुल पानी
भरि एक सहनकी राखि उस सहनकी के तरे पानी एक अंगुल
१९ ॥ तिसमें पारा और गंधक सम भाग धरि ऊपर दूसरी सह-
नकीढकि चूनेसे दोनों सहनकीका मुख निःसंधि मूंदिकरि फिर
उसके मुंहपर माटी लगाइ बंदकरै जिसमें कंडन की करसी न
गिरै तब ऊपर से चार बिनुवां कंडाकी आंचदेय इसी प्रकार
छःबार पारा गंधक समानदे चार कंडा की आंचदेदे फूंकै तौ
पारातीक्ष्णाग्निकारी है औरसबकार्ययोग्यहोताहै ॥ २० ॥ अथ
पारद भस्म विधि धुआंकासार अर्थात् कररुवां पारा फटकारी
गंधक नौसादर सब द्रव्य को सम भागले पहर भर नींबू के रस
में घोटि ॥ २१ ॥ फिर आतशी सीसी में भरि कपरौटी करि धूप
में सुखावै तब एक नांदले बीच मेंछीछेद उस छिद्रपर अभ्रक धरि

द्रांदत्वाचशोषयेत् २२ अधःसच्छिद्रपिठरी मध्येकूपींनिवेशयेत् । पिठरीम्वालुकापूरैर्भृत्वाचाकूपिकांगलं । निवेशचुल्ह्योंतदधः कुर्या द्वह्निंशनैःशनैः । तस्मादप्यधिकंकिंचि त्पावकंज्वालयेत्क्रमात् । एवंद्वादशभिर्यामैर्म्रियतेसूतकोत्तमः । स्फोटयेत्स्वांगशीतंतामूर्द्धगं गन्धकंत्यजेत् । अधस्थंम्रियतेसूतं सर्वकार्येषुयोजयेत् २३ अपामार्गस्यवीजाना मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् । तत्संपुटेन्यसेत्सूतं मल यूदुग्धमिश्रितं २४ द्रोणपुष्पीप्रसूनानि विडंगगिरिमेदकं । एतच्चूर्णमधोर्ध्वंच दत्वामुद्रांप्रकल्पयेत् । तद्गोलंसंधयेत्सम्यग्मृ णमूषासंपुटेत्सुधीः । मुद्रांदत्वाशोषयित्वा ततोगजपुटेपचेत् । एव मेकपुटेनैवसंजातंभस्मसूतकं २५ काष्ठोदुंवरिकादुग्धैःरसेकिंचि द्विमर्दयेत् । तद्दुग्धघृष्टहिंगोश्च मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् २६ धृत्वा तत्सम्पुटेसूतं तत्रमुद्रांप्रदापयेत् । धृत्वातद्गोलकंप्राज्ञो मृणमूषासं पुटेधिके २७ पचेन्मृदुपुटेनैव सूतकोयातिभस्मतां । नागवल्लीर सेघृष्टः कर्कोटीकंदगर्भितः मृणमूषासंपुटेपक्कः सूतोयात्येवभस्म तां २८ इतिश्रीशार्ङ्गधरेद्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥

उसपर सीसी स्थितकरि ऊपर बालूभरि चूल्हे में धरि तरे आगि बारि पहर बारह पहिले अतिमंद आंचकरि फिर क्रमक्रम आंच तीव्र करै तौ पारा न उड़ै सिद्ध होइ जब सिराइ तब सीसी निकारिफोरै उसमें गंधक ऊपर गलेमें पारातले पेंदीमें होयगाउस गंधकको फेंकपारासमेटिले वहपारा सर्वकार्ययोग्यहोताहै ॥ २३ ॥ पुनः चिचिड़ा बीज पीसि दो मूषाबनाइ पारा कठगूलरके दूधमें घोटि ॥ २४ ॥ मूषायंत्रमें इस चूर्णके बीचमें पाराधरै गुमाफूल बिडंग खैरकाचूर्ण ऊपर दूसरा मूसाधरि कपरौटीकरि माटी लेसकै सुखावै एक गजपुट की आंचदे ऐसे पारा एकही आंच में भस्म होय ॥ २५ ॥ पुनः कठगूलर के दूधमें पारा घोटि फिर उसी दूधमें हींगपीसि मूसाबनाइ पारा धरि कपरौटी करि माटीके मूसामें धरैपुनःकपरौटीकरि ॥२६॥२७॥ तीसगोइटाकी आंचदे पाराभस्म होताहै पुनः पानके रसमें पारा घोटि खिखसा जड़ कोलके भरै

खंडितंहारिणंशृंगंज्वालामुख्यारसैःसमः। रुध्वाभांडेपचेच्चुल्ह्यां याममयुग्मंततोजयेत् १ अष्टांशंत्रिकुटंदद्या न्निष्कमात्रंतुभक्षयेत् । नागवल्लीरसैःसार्द्धंवातपित्तज्वरापहं २ अयंज्वरांकुशोनाम रस सर्वज्वरापहं । पारदंरसकंतालं तुत्थंटंकणगंधकं । सर्वमेतत्समं शुद्धं कारवेल्यारसैर्दिनं ३ मर्द्दयेल्लेपटोतेन ताम्रपात्रोदरंभिषक् । अंगुल्यर्द्धप्रमाणेन ततोरुध्वाचतन्मुखे ४ पचेत्तंवालुकायंत्रे क्षिप्त्वाधान्यानितन्मुखे । यदास्फुटंतिधान्यानि तदासिद्धंविनिर्दिशेत् ५ ततोनयेत्स्वांगशीतंताम्रपात्रोदराद्भिषक्। रसंज्वरारिनामानं विचूर्णमरिचैःसमं ६ माषैकंपर्णखंडेनभक्षयेन्नाशयेज्ज्वरान्। त्रिदिनैर्विषमंतीव्र मेकद्वित्रिचतुर्थकं ७ तालकंतुत्थकंताम्रं रसगन्ध मनश्शिलाः । कर्षंकर्षंप्रयोक्तव्यं मर्दयेत्त्रिफलांवुभिः ८ गोल्यं

उसीसे मूंदि कपरौटीकरै माटी लेप सुखाइ थोरी आंचमें फूंकेसे पारा भस्म होताहै ॥ २८ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरेद्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥

अथ ज्वरांकुश हरिणके सींग चूर्णकरि बराबर जैतका रसले माटीके बासनमें धरि मुंह मूंदि दोपहरकी आंच देइ उतारि लेइ ॥१॥ अठवांअंश त्रिकुटादेपीसै चाररत्ती ज्वरांकुश पानके रस में खिलावै तौ बात पित ज्वर नाश करै ॥ २॥ यह ज्वरांकुश नाम रससब ज्वरको अच्छाहै ज्वरारिरस पारा खपरिया हरताल तूतिया सुहागा गंधक ये समान शोधि करेले के रसमें एकदिन ३ ॥ घोटिकै ताम्रपात्रमें अर्द्ध अंगुल मोटालेपि पात्र मुख मूंदि ४ ॥ कपरौटीकरि बालुका यंत्रमें धरि यंत्रमुख खुलाराखि आंचदेय जब उसबासमें धानडारे से खीलहोजाय तब जानिये कि रससिद्धभया ॥५॥ जब स्वभाव से ठंढाहो तबउसे पात्रसे छुड़ाइले उस ज्वरांकुशके समान मरिच मिलाइ पीसलेय एकमाशे पानके टूकमें धरि खिलावै ज्वरको नाशकरै तीनदिन खानेसे अतिकठिन ज्वर अंतरिया तिजारीचातुर्थिक सबदूरहोयं ॥६।७॥ शीतज्वरारि रस हरताल तूतिया तांबा भस्म शोधा पारा गंधक शुद्ध मैनशिल ये सब कर्षकर्षभरलेकै त्रिफलाके रसमेंघोटै ॥८॥ गोला बांधिके-

न्यसेत्संपुटके पुटंदद्यात्प्रयत्नतः । ततोनिंव्वार्कदुग्धेन वज्रीदुग्धेन सप्तधा ९ क्वाथेनदंत्याश्यामाया भावयेत्सप्तधापुनः । माषमात्रं रसंदिव्यं पञ्चाशन्मरिचैर्युतं १० गुडंगद्यानकंचैव तुलसीदल युग्मकं । भक्षयेत्त्रिदिनंभक्त्याशीतारिर्दुर्लभंपरं ११ पथ्यंदुग्धोदनंदेयं विषमंशीतपूर्वकं । दाहपूर्वंहरत्याशु तृतीयकचतुर्थकौ १२ द्व्याहिकंसततंचैववैवर्ण्यंचनियच्छति । भागकैःस्याद्रसाच्छुद्धादेली यःपिप्पलीशिवा १३ अकारकरभोगन्धः कटुतैलेनशोधितः । फलानिचेंद्रवारुण्या श्चातुर्भागमिताअमी १४ एकत्रमर्दयेच्चूर्ण मिंद्रवारुणिकारसैः । माषोन्मितांवटींकृत्वादद्यात्सद्यज्वरेभिषक् । छिन्नारसानुपानेन ज्वरघ्नीगुटिकामता १५ शुद्धोवुभुक्षितःसूतो भागंद्वयमिताभवेत् । तथागंधस्यभागौद्वौ कुर्यात्कंजलिकाद्वयोः १६ सूताच्चतुर्गुणेष्वेक पारदेषुविनिक्षिपेत् । भागैकंटंकणंदत्वा दुग्धेक्षीरेणमर्दयेत् १७ तथाशंखस्यखंडानां भागान्यष्टौप्रकल्पयेत् । क्षिपेत्सर्वंपुटस्यांतं चूर्णलिप्तसरावयोः १८ गर्तेहस्तोन्मि

परौटीमाटीलेस खूब फूंकि मदारकेदूधमें सात भावनादे ॥९॥ फिर जमालगोटाकीजड़के काढ़ेमें फिर निशोथके काढ़ेमेंसातभावनातब एकमाशे रस पचास मरिच ॥१०॥ छः माशे गुड़ दोतुलसीदलभक्ति पूर्वक तीनदिन खाय शीतारि रस इसकानामहै बहुत दुर्लभ है ॥११॥ पथ दूधभात देय जूड़ी दाह ज्वर तिजारी चातुर्थिक ॥१२॥ अंतरिया नित्यज्वर और ज्वर जनित विकार सबनाशहोई अथ ज्वरघ्नी गुटिका शुद्ध पारा एकभाग एलुआ पीपरि हड़जंगी॥१३॥ अकरकरहा कडुआ तेल का शोधागंधक इंद्रायन ये चार चारभाग १४ ॥ इंद्रायन रसमें घोटि माष मात्र गोली बांधि तरुण ज्वरमें गुर्च रसमें वैद्य ज्वरघ्नीगुटिका खिलावै॥१५॥ लोकनाथ रसपारा बुभुक्षित धातुभक्षक दोभाग दोनोंको खरलकरि कजरीकरै पारे से चौगुनी कौड़ी की भस्म पारे समान सुहागा गोदूधमें घोटै १६॥१७॥ पारे से अठगुणी शंखकी भस्म शुद्ध सब पीसि दो सरवोंके भीतरलेस ॥ १८॥ दोनों को संपुट करि वस्त्र लपेटि माटी लगाइ

तेभृत्वा पाच्यंगजपुटेनच । स्वांगशीतंसमुद्धृत्य पिष्ट्वातत्सर्वमेकतः १६ षड्गुंजासंमितंचूर्ण मेकोनत्रिंशदूषणोः । घृतेनवातजे दद्यान्नवनीतेनपैत्तिके २० क्षौद्रेणकफजेदद्या दतीसारेक्षयेतथा । अरुचौग्रहणीरोगे कार्श्येमंदानलेतथा २१ कासश्वासेषुगुल्मेषु लोकनाथरसाभिधा । तस्योपरिघृताक्तंच भुंजीतकवलत्रयं । मंचक्षणेकमुत्तानं शयीतानुपधानके २२ अनम्लमम्लंसघृतं भुंजीत मधुरंदधि । प्रायेणजांगलंमांसं प्रदेयंघृतपाचितं २३ सदुग्धभक्तंदद्याच्च जातेग्नौसंध्यभोजनं । सघृतान्मुग्धवटकान्व्यंजनेष्ववधारयेत् २४ तिलामलककल्केनस्नापयेत्सर्पिषाथवा । अभ्यंजयेत्सर्पिषाच स्नानंकोष्णोदकेनच २५ कचित्तैलंनगृह्णीयान्नविल्वंकारवेलकं । वार्ताकंशफरींचिंवात्यजेद्व्यायाममैथुनं २६ मद्यं संधानकंहिंगु शुंठींमाषमसूरिका । कूष्मांडंराजिकाकोलं कांजिकंचैववर्जयेत् २७ त्यजेदयुक्तंनिद्रांच कांस्यपात्रेचभोजनं । कका

गज पुट में फूंक दे जब ठण्ढा हो तब निकारे खुरच के खरल करै १९ ॥ फिर छः रत्ती यह रस मिरच संग खरल करि वात रोग में घी से देय पित्तमें मक्खन साथ देइ ॥ २० ॥ कफ रोगमें शहत दे अतीसार छर्दि अरुचि ग्रहणी दुर्बलता मन्दाग्नि ॥ २१ ॥ कास श्वास गुल्म इन रोगों में शहत युक्त दे इस लोकनाथपर प्रथम घी भात खाय तीन कौर फिर क्षणभर बिना तकिये बिछौने खाटपर उताना सोइ फिर चाहै जैसे सोवै ॥ २२ ॥ खटाई छोड़ मधुरदही अच्छे घृत के संग अन्न खाय और अवश्य जंगली मृगादि पशु भक्ष मांस घी में अच्छीतरह भूंजि खाइ ॥ २३ ॥ औ संध्या के समय पक्का अग्नीवशेष दूध भात भोजन करै और मूंगके मोदक अधिक घृत में बने खाइ भोजन संग ॥ २४ ॥ तिल आँवरा पीसि उबटना लगाइ वा घी मर्दन करि न्हाइ उष्णो दक से कमर ताईं न्हाइ ॥ २५ ॥ तैल न छुवै बेल करेला भयकरो अमली अमसी भोग त्यागै ॥ २६ ॥ मद्यअचार हींग सोंठि उर्द मसूर पेठा राई बेर कांजी तजै ॥ २७ ॥ ओस में न सोवै कांसे में न खाय

रादियुतंसर्वं त्यजेच्छाककलादिकं २८ ग्राह्योयंलोकनाथस्तु शुभेनक्षत्रवासरे । पूर्णातिथौसितेपक्षे जातेचंद्रवलेतथा २९ पूजयित्वालोकनाथं कुमारींभोजयेत्ततः । दानंदत्वाद्विघटिका मध्ये ग्राह्योरसोत्तमः ३० रसाञ्चजायतेताप स्तदाशर्करयायुतं । सत्वं गुडूच्याग्रहणीया वंशलोचनयायुतं ३१ खर्जूरंदाडिमंद्राक्षा इक्षुखंडाश्चदापयेत् । अरुचौनिस्तुषंधान्यं घृतभ्रष्टंसशर्करं ३२ दद्यात्तथाज्वरेधान्यं गुडूचीक्वाथमाहरेत् । उशीरंवासकक्वाथं दद्यात्समधुशर्करं ३३ रक्तपित्तेकफेश्वासे कासेचस्वर संक्षये । अग्निभ्रष्टंजयाचूर्णं मधुनानिशिदीयते ३४ निद्रानाशेतिसारेच ग्रहण्यांपावकक्षये । सौवर्चलाभयाकृष्णा चूर्णमुष्णजलेक्षिपेत् ३५ शूलेजीर्णेतथाकृष्णा मधुयुक्ताज्वरेहिता । प्लीहोदरेवातरक्ते छर्द्यांचैवगुदांकुरे ३६ नाशिकादिषुरक्तेषु रसं दाडिमपुष्पजं । दूर्वायास्वरसंनस्ये प्रदद्याच्छर्करान्वितं ३७ को

ककारादि आम के फल औ सागतजै ॥ २८ ॥ यह लोकनाथ रस शुभ मुहूर्त्त पूर्णा तिथि शुक्ल पक्ष बलवान चन्द्रमा देखि ॥ २९ ॥ लोक नाथ रसको पूजि कुंवारी जिवाइ दानदेइ द्विघटिका साधि भक्षण आरम्भ करै ॥ ३० ॥ इसके खानेपर ताप आतीहै तब मिश्री गुर्चका सत वंशलोचन इन सबको मिलाइकै दे ॥ ३१ ॥ खजूर अनार दाष ऊंख की गंडेरी दे तो रस ताप दूरहो बाधा की छाल दूरि करि घी में भूंजिकै चूर्ण करि मिश्रीमिलाइ खिलावै ३२ ॥ उसी ताप में धनिया गुर्च का काढ़ादे खसकूखे का काढ़ादे मधु मिश्री मिलाइ दे ॥ ३३ ॥ रक्त पित्त कफ कास श्वास स्वरभंग ये सब अच्छे होयं भांग भूंजि चूर्ण करि लोकनाथ संयुक्त रातको खिलावै ॥ ३४ ॥ नींद नाश में अतीसार में संग्रहणी में मन्दाग्नि में ये सब दूर होयं सोंचर हड़ पीपरि साथ रस दे गरम पानी पिलावै ॥ ३५ ॥ तौ शूल औ अजीर्ण दूरि करै पीपरि शहत युक्त पिलही बात रक्त छर्दि अर्श दूरकरै ॥ ३६ ॥ नासादि कारण अनार रसमें दे दूब रस मिश्री लोकनाथ युक्त

लमज्जाकणावर्हिं पक्षभस्मसशर्करं । मधुनालेहयेच्छर्दिं हिक्का कोपप्रशांतये ३८ विधिरेषःप्रयोज्यस्तु सर्वस्मिन्पोटलीरसे । मृगांकेहेमगर्भेच मौक्तिकाख्येपरेषुच । इत्ययंलोकनाथोक्तो रसः सर्वरुजोजयेत् ३९ भुर्जवन्तनुपात्राणि हेम्नःसूक्ष्मानिकारयेत् । तुल्यानितानिसूतेन खल्वेक्षिप्त्वाविमर्दयेत् ४० कांचनाररसेनैव ज्वालामुख्यारसेनवा । लांगल्यावारसैस्ताव यावद्भवतिपिष्टिका ४१ ततोहेम्नाचतुर्थांशं टंकणंतत्रनिःक्षिपेत् । पिष्टमौक्तिकचूर्णंच हेमंद्विगुणमाहरेत् ४२ तेषुसर्वसमंगन्धं क्षिप्त्वाचैकत्रमर्दयेत् । तेषांकृत्वाततोगोलं वासोभिःपरिवेष्टयेत् ४३ पश्चान्मृदावेष्टयित्वा शोषयित्वाचधारयेत् । सरावसंपुटस्यांत स्तत्रमुद्रांप्रदापयेत् ४४ लवणैःपूतंरिभांडं स्थापयेत्तंचसंपुटं । मुद्रांदत्वाततोगोलं वासोभिःपरिवेष्टितं । शोषयित्वामुखन्तस्यवहुभिर्गोमयैःपुटेत् ४५ ततःशीतेसमाहृत्य गंधंसूतसमंक्षिपेत् । घृष्ट्वाचपूर्ववत्खल्वे पुटेद्गजपुटेनच ४६ स्वांगशीतंततोनीत्वा गुंजायुग्मंप्रयोजयेत् ।

नासदे ॥ ३७ ॥ बेरसिंगी मोरपंख की भस्म मिश्री सहतयुत ग्रहद् खाय तौ छर्दि हिचकी दूरिकरै ॥ ३८ ॥ ये जो भांति भांति के अनोपान लोकनाथ में कहे सो पोटली के रसमेंभी सब उसी रीतिसेदेना जैसे मृगांक हेमगर्भ मौक्तिकाख्यऔ पंचरत्नादिपोटलिकारस इनसबोंमें लोक सदृश पंथुकरै तौ संपूर्णरोगअच्छेहों॥ ३९ ॥ मृगांक पोटली रस क्षयादि पर सोनेका यंत्र समानबनाइ सोनेके सम पारा मिलाइ खरल करै ॥ ४० ॥ कचनारका रस वा अरणी रस वा करिया रसमें घोटै जबतक गोला बंधनाइ ॥ ४१ ॥ सोनेका चौथाई सुहागादे और सोनेका दूना मोतीकाचूना दे ४२ ॥ इन सब के समान गंधक देसब खरलकरि गोलाबांधिखूब कपड़ा लपेटे ॥ ४३ ॥ फिर माटीसे लेस सुखाइसराव संपुटकरि ४४ ॥ लोन पूरित पात्रमें संपुटधरै उसका मुंहसुखाइ गजपुटमें फूंकदे ॥ ४५ ॥ ठंढाभये पर निकारिकै सोनेकेसमान पारा और सोने समान गंधकको युक्तकरि पूर्ववत् रसमें खरल करि फिर

ष्टानिर्मरिचैर्युक्ता कृष्णात्रयमथापिवा ४७ विलोक्यदेयादोषा दि ह्य केवरसरक्तिका । सर्पिषामधुनावापि देयादोषाद्यपेक्षया ४८ लोकनाथसमंपथ्यं कुर्यात्स्वस्थमनाशुचिः । श्लेष्माणंग्रहणीं कासंश्वासंक्षयमरोचकं । मृगांकोयंरसोहन्या त्कृशत्वंवलहानि तां ४६ सूक्ष्मात्पादप्रमाणेन हेम्नापिष्टींप्रकल्पयेत् । तयोःस्याद् द्विगुणंगंधं मर्दयेत्कांचनारिणा ५० कृत्वागोलंक्षिपेन्मूषां संपुटे मुद्रयत्ततः । पचेद्भूधरयंत्रेण वासरत्रितयंवुधः ५१ ततउद्धृत्य तत्सर्वंदद्यादर्द्धंधंचतत्समं । मर्दयेदार्द्रकरसैश्चित्रकस्यरसेनवा ५२ स्थूलपीतवराटींश्च पूरयेत्तनयत्नतः । एतस्मादौषधात्कुर्या दष्ट मांसेनटंकणं ५३ टंकणार्द्धंविषंदत्वा पिष्ट्वासेहुंडदुग्धकैः । मुद्रये त्तेनकल्केन वराटीनांमुखानिच ५४ भांडचूर्णप्रलिप्तेवं धृत्वामु-

इसीक्रियासे गजपुटमें फूंकै ॥ ४६ ॥ जब ठंढाहो तब निकासि दोगुंजारस आठमरिच वा तीनपीपरिको संगदे ॥ ४७ ॥ औ दो- षको बिचारिकै औषधि रत्तीभर घाट वा बाढ़ समझके देइ घी अथवा सहतके साथ दोष बिचारिकेदेना ॥ ४८ ॥ पथ्यलोक नाथ सदृश इसमें भी देना योग्यहै चित्त एकाग्रकरि अतिपवित्र हो खाइ तौ श्लेष्मा ग्रहणी कास श्वास क्षयी अरुचि यह मृगांक रस इन रोगों को दूर करता है बलहीन को बलवान् करता है दुर्बल को मोटा करै ॥ ४९ ॥ कफ क्षयी पर हेमगर्भपोटली रस पारा पारेको चौथ्याई सोना ले खरलकरै जब पीठीहोजाइ तब दोनों से दूनीगंधक दे कचनारके रसमेंघोटि गोलाकरै ॥ ५० ॥ सो मूषा यंत्रमें भरि संपुटकरि बस्त्र लपेट माटीलगाइ सुखाइ भूधर यंत्र में फूंकदे भूधरयंत्र एकहाथ गहिरा लंबा चौड़ा खोदि तिसमेंछोटा गढ़ाखोदि औषधिरख माटीसेदाबि तिसपर बिनुवां कंडा करसी करि बड़ेगढ़ेमें भरि आंचदे तीनदिन ॥ ५१ ॥ जब स्वभावसे शीतल हो तब निकारि समान गंधकले अद्रक वा चीतेकेरसमेंघोटि ॥ ५२ ॥ बड़ी पीली कौड़ीमें भरि औषधिका अष्टमांश सुहागा ॥ ५३ ॥ सु हागेका आधा सिंगिया दोनों सेंहुड़के दूधमें पीसि कौड़ी का मुख बंदकरि ॥ ५४ ॥ फिर माटी पात्रमें चूनालेसि कौड़ी में भरि

द्रांप्रदापयेत् । गर्तेहस्तोन्मितेधृत्वा पुटेद्गजपुटेनच ५५ स्वांग शीतंरसंनीत्वा प्रदद्याल्लोकनाथवत् । पथ्यंमृगांकवज्ज्ञेयं त्रिदिनं लवणंत्यजेत् ५६ यदाछर्दिर्भवेत्तस्य दद्याच्छिन्नारसंतदा । मधुयुक्तंतदाश्लेष्मकोपेदद्याद्गुडार्द्रकं ५७ विरेकेभर्जिताभंगा प्रदेया दधिसंयुता । जयेत्कासंक्षयंश्वासं ग्रहणीमरुचिन्तथा ५८ अग्निंनकुरुतेदीप्तिं कफंवातंनियच्छति । हेमगर्भःपरेज्ञेयो रसःपोटलिकाभिधः ५९ चतुर्विंशश्चशंखस्यभागेकंटंकणस्यच । तयोश्चपिष्टिकांकृत्वागन्धोद्वादशभागिकः ६० कुर्यात्कज्जलिकांतेषां मुक्ताभागांश्चषोडश । चतुर्विंशश्चशंखश्च भागैकंटंकणस्यच ६१ एकत्रमर्दयेत्सर्वं पक्वनिंबुकजैरसैः । कृत्वातेषांततोगोलं मूषासंपुटकेन्यसेत् ६२ मुद्रांदत्वाततोहस्त मात्रेगर्तेचगोमयैः । पुटेद्गजपुटेनैव स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ६३ पिष्ट्वागुंजाचतुर्मानं दद्याद्गव्याज्यसंयुतं । एकोनत्रिंशदुन्मान मरिचैःसहदीयते ६४ राजतेमृण्मयेपात्रे कांचनेवापिलेहयेत् । लोकनाथसमंपथ्यं कुर्यात्प्रयतमान-

दूसरे दिवस बंदकरि मुद्रित करि गजपुट आंचदे ॥ ५५ ॥ ठंढाभये निकारि लोकनाथकी रीतिसे खिलावै मृगांककी रीतिसे पथ्यदे तीन दिन लोन वर्जितरहै ॥ ५६ ॥ जो छर्दि होइ तौ गुर्च का रस वा क्वाथ मधु युक्त दे कफार्ति में गुड़ अद्रकारस युक्तदे ॥ ५७ ॥ अतीसारमें भूनीभांगदही दोनोंकी संगदे कास श्वास क्षयी ग्रहणी अरुचि इनमेंभी दही भंग संगदे ॥ ५८ ॥ अग्नि दीपन कफ वात नाशन यह हेम पोटली रस श्रेष्ठहै ॥ ५९ ॥ पुनर्हेमगर्भरस कास पर पारा चारभाग सोना चारभाग दोनों पीठीकरि द्वादशभाग गंधक दे ॥ ६० ॥ तीनोंकी कजलीकरि सोलहभाग मोती चौबीस भागशंख एकभाग सुहागा ॥ ६१ ॥ ये सब एकत्र करि पक्के नींबूके रसमें घोटि गोलाबांधि मूसापुटमेंधरि मुद्रा साधि ॥ ६२ ॥ सुखाइ हाथभर भू खोदि उसमें धराइ हाथभर कंडा भराइ फूंकिदे जब शीतपरै तब निकारिधरै ॥ ६३ ॥ चारिरत्ती रस मिर्च उन्नीस गोघृतमें पीसि ॥ ६४ ॥ चांदी वा माटी वा कांचके पात्रमेंधरि खिलावै

सः ६५ कासेश्वासेक्षयेवाते कफेग्राहणिकाग्रहे । अतीसारेप्रयो
क्तव्या पोटलीहेमगर्भिका ६६ शुद्धसूतंविषंगंधं प्रत्येकंशाणस-
म्मतं । धूर्तबीजंत्रिशाणंस्यात् सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत् ६७ हेमा-
ह्वाकारयेदेषां चूर्णंसूक्ष्मंप्रयत्नतः । देयंजंबीरमज्जाभिश्चूर्णंगुंजा
द्वयोन्मितं ६८ अद्रकस्वरसैर्वापि ज्वरंहंतित्रिदोषजं । एकाहिकं
द्व्याहिकंच तृतीयंवाचतुर्थकं । विषमञ्चज्वरंहन्या द्विस्यातोयं
ज्वरांकुशः ६९ दरदंवत्सनाभंच मरिचंटंकणंकणा । चूर्णयेत्सम
भागेन रसोह्यानंदभैरवः ७० गुंजैकंवाद्विगुंजावा बलंज्ञात्वाप्र-
योजयेत् । मधुनालेहयेच्चानुकुटजस्यफलत्वचं । चूर्णितंकर्षमात्रं
तु त्रिदोषोत्थातिसारजित् ७१ दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंगव्याज्यंतक्र
मथवा । पिपासायांजलंशीतं विजयाचहितानिशि ७२ विषंपल
मितंसूतः शाणिकश्चूर्णयेद्द्वयं । तच्चूर्णंसंपुटेधृत्वाकांचलिप्तसरा
वयोः ७३ मुद्रांदत्वाचसंशोष्यततश्चुल्ह्यांनिवेशयेत् । वह्निःशनैः

लोकनाथ रससम पथ्यबतावै ॥ ६५ ॥ इस यंत्रसे कास श्वास क्षयी
बातकफ ग्रहणी अतीसार क्षयीको देइ यह हेमगर्भ पोटली इन
सब रोगन को हरलेइ ॥ ६६ ॥ पारा गंधक बिष शोधे चारिचारि
माशे धतूराबीज बारहमाशे सबका दूना ॥ ६७ ॥ चोक चोक
त्रिनाकूट सब युक्तकरि सूक्ष्म चूर्णकरि द्वै गुंजारस जंभीरीके ॥ ६८॥
वा अदरख रसमें दे त्रिदोष जनितज्वर नाशकरै नित्य आनेवाला
अंतरिया तिजरिया चातुर्थिक यह ज्वरांकुश विषमज्वर नाशकरै
निश्चय कर ॥ ६९ ॥ आनंदभैरव रस अतीसार पर शुद्ध शिंगरफ
सिंङ्गिया मरिच सुहागा पीपरि येसब समानले महीनचूर्ण करिये
यह आनंदभैरव ॥ ७० ॥ रोगीका बलदेखि रस एक जुवार वा दो
गुंजा इंद्रयव कुरैयाछाल दोनों दशमाशे पीसि रसयुक्त शहत में
मिलायचटावै तौत्रिदोषजन्य अतीसार दूरहोय ॥ ७१॥ गऊ का
दही वा मट्ठा वा घृत पथ्य भातसाथ खाइ ठंढापानी पिलावै और
भाग अच्छीतरहै धोय बनाय रातको पिलावै ॥ ७२ ॥ सन्नि-
पात पर लघुसूचिकाभरण सिंगिया १ पल पारा ४ माशे दूनों

शनैःकुर्या त्प्रहरद्वयसंख्यया ७४ ततउत्पाट्यतन्मुद्रां उपरिस्थेसरावके। संलग्नोयोभवेद्रसः सगृह्णीयाच्छनैःशनैः ७५ वायुस्पर्शोपयानस्या ततःकूप्यांनिवेशयेत् । रसःसूचीमुखेलग्नं कूप्यां निर्यातिभेषजं ७६ तावन्मात्रोरसोदेयो मूर्च्छितेसन्निपातिनि। क्षुरेणप्रच्छितेमूर्ध्नि तदंगुल्याचघर्षयेत् ७७ रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्च्छितोपिहिजीवति। तथैवसर्पदंष्टस्तुमृतावस्थोपिजीवति। यदातापो भवेत्तस्यमधुरंतत्रदीयते ७८ भस्मसूतसमंगंधं गंधात्पादंमनःशिला। माक्षिकंपिप्पलीव्योषं प्रत्येकंशिलयासमं ७६ चूर्णयेद्भावयेत्पित्तै र्मत्स्यमायूरसम्भवैः । सप्तधाभाव्यसंशुष्कं देयंगुंजाद्वयोन्मितं८० तालपर्णीरसैश्चानुपंचकोलसृतंपिबेत्। जलबुंदोरसोनाम सन्निपातंनियच्छति। जलयोगश्चकर्त्तव्य स्तेनवीर्यंभवेद्रसः ८१

खरल करि दो पहर्ई कांचकी सुककरी कूईमें धरिकै ॥ ७३ ॥ मुद्रा करि सुखाइ चूल्हेपर चढ़ाइ मन्दमंद दोपहरकी आंचदेइ ॥ ७४ ॥ दूनों जुदाकरि ऊपर के सरवे में लगाभया रसलेसे छोल ॥ ७५ ॥ जिस माच में पवन न जासकै वा शीशी में धरै सूचीमुखसे शीशी करि लेइ सूचीमुख एक सुई सललो कहे उसका मुख सुई समान हो उससूचीमुख कहते हैं उससे जितना निकसै ॥ ७६ ॥ तितना सन्निमूर्च्छित का शिर मुड़ाइ पछने देइ जो रक्तनिसरै उसीघाव पर उस रसको अंगुरी से मलै ॥ ७७ ॥ जो रुधिर औ रसमें मिल जाइ तौ मूर्च्छित जागै तैसेही सांपका काटा जागै फिर इसै इस उपचारसे तपश्चाबै तब उस रोगीको मधुर अर्थात् गंडेरी अनार छुहारा दाखादि खिलावै ॥ ७८ ॥ सन्निपर जलबुंद रस पाराभस्म समान गंधक की चौथाई मैनशिल सोनामाषी पीपरि सोंठ मिर्च राव मैनशिल समान लो ॥ ७९ ॥ खरल करि मछरी के पित्तमें सात भावना दे तैसे मयूर पित्तमें सात भावना दे सुखाइ दो गुंजा खवावै ॥ ८० ॥ श्वेत मुसली के रसमें औ पंचकोल कहे सोंठ मिर्च पीपरि चाव चीता इनके काढ़ेमें दे यह जलबुंद रस सन्नि को दूर करता है जल ठंढा पियै ठंढे जलसे हाथ मुंह धोवै जलकास्पर्श

शुद्धसूतंविषंगंधं मरिचंटंकणंकणा । मर्दयेद्धूर्तजैर्द्रावै र्दिनमेकंच शोषयेत् ८२ पंचवक्त्रोरसोनाम द्विगुंजःसन्निपातहा । अर्कमूलक षायंतु सत्र्यूषमनुपाययेत् ८३ युक्तंदध्योदनंपथ्यं जलयोगंचका रयेत् । रसेनानेनसाम्यंति सक्षौद्रःकफोद्भवाः ८४ मध्वार्द्रकरसं चानु पिबेदग्निविवृद्धये । यथेष्टंघृतमांसाशी शक्तोभवतिपावकः ८५ रसगंधकतुल्यांशंधतूरफलजैरसैः । मर्दयेद्दिनमेकंतुतत्तुल्यंत्रि कटुंक्षिपेत् । उन्मत्ताख्योरसोनाम नस्येस्यात्सन्निपातजित् ८६ निस्त्वग्जैपालवीजंच दशनिष्कंविचूर्णयेत् । मरिचंपिप्पलीशुंठी प्रतिनिष्कंविमिश्रयेत् ८७ भाव्योजंवीरजैर्द्रावैःसप्ताहंसंप्रयत्नतः रसोयमंजनेदत्तः सन्निपातंविनाशयेत् ८८ सूतंटंकणकंतुल्यं म-रिचंसूततुल्यकं । गंधकंपिप्पलीशुंठी द्वौद्वौभागौविचूर्णयेत् ८९ सर्वतुल्यंक्षिपेद्दंती वीजंनिस्तुषितंभवेत् । गुंजैकंरेचनंसिद्धं नारा

राखै तौ औषधि वत्सपाती सन्निपात दूर करती है ॥ ८१ ॥ सन्नि पर पंचवक्त्र रस शुद्धपारा सिंगिया गंधक मिरच सुहागा पीपर धतूरा के रसमें एक दिन मर्दन करै घाममें सुखावै ॥ ८२ ॥ यहपंच वक्त्र रस दुइगुंजा सन्निपात में देइ तौ सन्निदूर जाइ मदारमूल क्वाथ सोंठि मिरच पीपरिकै संगदे यही अनोपानहै ॥ ८३ ॥ पथ्य दहीभात दे औ जलयोग कहे जल बैठि औषधि खाइ सहतसंग देय तौ कफजनित उपद्रव अच्छे होयं ॥ ८४ ॥ अद्रक सहत संग देइ तौ अग्नि दीपनकरै औ यथायोग्य घृत मांसखाइ तौ अग्नि प्रबल करै ॥ ८५ ॥ सन्निपात पर उन्मत्तरस पारा गंधक सम भाग ले धतूर फलके सम खरल करि तिसके समान त्रिकुटा दे पीसि यह उन्मत्त रसकी नास देने से सन्निपात दूरहोइ ॥ ८६ ॥ सन्नि-पात पर अंजन जमालगोटा छीलि पित्ता दूरकरि चालिस माशे चूर्णकरै सोंठि मिरच पीपरि चार चार माशे ले ॥ ८७ ॥ जंभीरी रसमें सात दिन घोटि अंजन करै तौ सन्निपात दूर होइ ॥ ८८ ॥ शूलपर नाराचरस पारा सुहागा समभाग करि समान मिरच गंधक पीपरि सोंठि द्वै द्वै भागले खरल करै ॥ ८९ ॥ सबके समान

चोयंमहारसः। आध्मानमलविष्टंभ मुदावर्त्तंचनाशयेत् ९० दरदं टंकणंशुंठी पिप्पलीचैककार्षिका। हेमाहस्वापलमात्रं स्याद्दंतीबीजं चतत्समं ९१ विचूर्ण्यैकत्रसर्वाणि गोदुग्धेनैवपाययेत्। त्रिगुंजं रेचनेदद्या दिष्टंमाध्मानरोगिषु ९२ भस्मसूतत्रयोभागा भागैकं हेमभस्मकं। मृततास्रस्यभागैकं शिलागंधकतालकं ९३ प्रति भागद्वयंशुद्धमेकीकृत्यविचूर्णयेत्। वराटीपूरयेत्तेनक्षागक्षीरेणटंक णं। पिष्ट्वातेनमुखंरुध्वा मृद्भांडेसंनिरोधयेत् ९४ शुष्कंगजपुटे पक्काचूर्णयेत्स्वांगशीतलं। रसोराजमृगांकोयं चतुर्गुंजः क्षयाप- हः। दशपिप्पलिकाक्षौद्रै रेकोनत्रिंशदूषणैः ९५ शुद्धसूतंद्विधागंधं कुर्यात्खल्वेनकज्जलीं। तयोःसमंतीक्ष्णचूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ९६ द्वियामांतेकृतंगोलं ताम्रपात्रेनिधापयेत्। आच्छाद्यैरंडपत्रेण यामार्द्धेत्युष्णताभवेत् ९७ धान्यराशौन्यसेत्पश्चा दहोरात्रात्समु-

शुद्ध जमालगोटा दे एकत्र करि खरल करै गुंजाभर देवे से रेचन होइ यह नाराच नाम रस आध्मान मल विष्टम्भ उदावर्त्त ये सब रोग नाश करता है॥ ९० ॥ शूलपर इच्छाभेदी रस शुद्ध शिंगरफ सुहागा सोंठि पीपरि कर्ष कर्ष भर चोक पलभर जमालगोटा पलभर॥ ९१ ॥ सब खरल करि गोदूध में तीन गुंजा रेचनार्थ देइ यह इच्छाभेदी रससे विष्टम्भ आध्मान दूर हो॥ ९२॥ क्षयीपर राजमृगांक रस पारा भस्म तीनभाग सोना भस्म एकभाग तांबा भस्म मैनशिल शुद्धगंधक हरताल॥ ९३॥ दैदैभाग सबघोटि कौड़ी में भरि बकरी के दूधमें सुहागा पीसि कौड़ीका मुख मूंदि माटी बासनमें धरि संपुट करि॥ ९४॥ सुखाइ गजपुटमें फूंकदे जब सिराइ तब खरल करै इस राजमृगांक रसको चार गुंजा देइ तौ क्षयी क्षय होइ अनोपान उन्तीस मिर्च सहत वा दश पीपरि सहत संगदेइ॥ ९५॥ छर्दी पर क्षयकेशरिरस शुद्ध पारे से दूनी शुद्ध गंधक खरलकरि कजलीकरि दोनोंके समान फौलादकी भस्मले सबको घीकुवार के रसमें॥९६॥ दो पहरभर घोटि बासनमें रख रेंडपत्तसे ढांपि पहर भर दूधमें धरे उष्णाहोइ॥९७॥ तब नाजकी राशि में

द्धरेत् । संपीड्यगालयेद्धस्ने ततोवारितरंभवेत् ६८ त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवंगकैः । नवभागोन्मितैरेतैः समंपूर्वरसोभवेत् ६६ संचूर्ण्यलोडयेत्क्षौद्रै भक्ष्यंनिष्कद्वयंद्वयं । अयमग्निरसोनाम्ना क्षयकासनिकृन्तनः १०० सूतार्धगन्धकोमर्द्यो यामैकं कन्यकारसैः । द्वयोस्तुल्यंताम्रपत्रं पूर्वकल्केनलेपयेत् १ दिनैकंस्थालिकायंत्रे पक्वमादायचूर्णयेत् । सूर्यावर्तोरसोह्येषः द्विगुंजःश्वासजिद्भवेत् २ शुद्धंसूतंमृतंलोहं तार्प्यंगन्धकतालकं । पथ्याग्निमंथनिर्गुण्डी त्र्यूषणंटंकणंविदं ३ तुल्यांशंमर्दयेत्खल्वे दिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः । मुण्डीद्रावैर्दिनैकन्तु द्विगुंजंवटकीकृतं ४ भक्षयेद्वातरोगार्तो नाम्नास्वच्छंदभैरवं । रास्नामृतादेवदारु शुण्ठीवातारिजंसृतं । सगुग्गुलंपिबेत्कोल मनुपानंसुखावहं ५

एक दिनरात गाड़िकै निकारि लेइ फिर खरलकरि वस्त्रमें छानि ले तब जलपर डारै तौ तिरैगी ॥ ९८ ॥ त्रिकुटा त्रिफला इलाइची जायफल लौंग येसब नवभाग इन सबसमान अग्नि रसले ॥ ९९ ॥ ये सब खरलकरि सहतमें दै निष्क खाइ यह अग्नि रस क्षयी औ कास को नाश करता है ॥ १०० ॥ श्वासपर सूर्यावर्त्तरस पारा की आधी गंधक पहरभर घीकुवार के रसमें घोटि दोनों के सम तांबे का पात्र ले तिसपर लेपकरि यह कजरी ॥ १ ॥ एक दिन थाली यंत्रमें पकाइ ऐंचले थालिकायंत्र माटी की हांडी में लोन भरि लाइकै तांबेका पत्रधरि मुंहमूंद कपरौटी करि फूंक देइ यह सूर्यावर्त्त रसपीसि दै गुंजाखवावै तौ श्वासनाशकरै ॥२॥ स्वच्छन्द भैरवरस शुद्धपारा मरालोहा सोनामाखी गंधक हरताल हड़ अरणी सेवड़ी त्रिकुटा भुनासुहागा सिंगिया सेवड़ीरस ॥ ३ ॥ त्रिकुटा भुना सुहागा सिंगिया तीन सेवड़ी रसमें सब मिलाइ समान खरलकरि फिर एकदिन गोरखमुंडी के रसमें खरलकरि दो गुंजा के समान गोलीकरै॥४॥यह स्वच्छंद भैरवरस वातरोगीको खिलावै रासन गुर्च देवदारु सोंठ रेंडकी जड़ इनका काढ़ाकरि गुग्गुल युक्त गरम उसको संग पिलावै यह अनोपान सुखदायी है ॥ ५ ॥

दग्धान्कपर्दिकान्पिष्ट्वा त्र्यूषणटंकणांविषं । गन्धकंसूतशुद्धञ्च तुल्यंजम्बीरजैर्द्रवैः ६ मर्दयेत्क्षयेन्माषं मरिचाज्यंलिहेदनु । निहंतिग्रहणीरोगं पथ्यंतक्रौदनंहितं ७ मृतंताम्रमजाक्षीरैः पाच्यंतुल्यैर्गतंद्रवं । तत्ताम्रंशुद्धसूतंच गंधकंचसमंसमं ८ निर्गुण्डी स्वरसैर्मर्द्यं दिनंतद्गोलंसंधयेत् । यामैकंवालुकायंत्रे पाच्यंभोज्यं द्विगुंजकं ९ वीजपूरकमूलंच सजलंचानुपाययेत् । रसस्त्रिविक्रमो नामनमासैकेनाश्मरीप्रणुत् १० तालंताप्यंशिलासूतं शुद्धसैंधवकं कणां । समांशंचूर्णयेत्खल्वे सूताद्द्विगुणगंधकं ११ गं तुल्यंमृतंताम्रंजंबीरैर्दिनपंचकं । मर्द्यंयद्भिःपुटैःपाच्यं भूधरेसंपुटेपचेत् । पुटेपुटे द्रवैर्मर्द्यंसर्वमेततुषट्पलं १२ द्विपलंमारितंताम्रं लोहभस्मचतुष्पलं । जंबीराम्लेनतत्सर्वं दिनमर्द्यंपुटेल्लघुः १३ त्रिंशदंशंविषं

हंसपोटली ग्रहणीपर सुनीकौड़ीपीसि सोंठ मिर्च पीपरि सुहागा सिंगिया गंधक शुद्धपारा सबद्रव्य समानले जंभीरीके रसमें ॥ ६ ॥ खरलकरि माशा एकभरखाइ ऊपरिच घीकेसाथ तब ग्रहणी नाश होय माठा भात पथ्य देय ॥ ७ ॥ त्रिविक्रमरसपथरी पर मरा तांबा बकरी दूध समानले किसी पात्रमेंधरि आंचदे दूधतरै उतारि तब तांबे के समान शुद्ध पारा गन्धक ॥ ८ ॥ सेवड़ी के रसमें एक दिन घोटि गोलीकरि मूसायंत्रमें धरि बालुकायंत्रमें आंचदे तब दो गुंजा खिलावै ॥ ९ ॥ बिजौरा की जड़कोसमेत काढ़ेमें यह रस देय इसरसकात्रिविक्रमनामहै माशभर सेवन करै तौ पथरी दूरहो ॥ १० ॥ कुष्टपर महातालेश्वर हरतालेश्वर हरताल सोनामाषी मैनसिल पारा सैंधव सुहागा येसबसमान खरलकरि पारेसे दूनी गंधकदे ॥ ११ ॥ गन्धक के तुल्य मरातांबा जंभीरीके रसमें पांचदिन घोटि सराव संपुटमें धरि कपरौटी करि भूधर यंत्रमें फूंकदे ऐसेछः बार फूंकदे फिर निकारि बिजासारमें पांच दिनघोटै पूर्ववत् आंचदे तबछः पल रसले ॥ १२ ॥ मरा तांबा दो पललोहमराचारपलयेतीनौ जंबीरीरसमेंएकदिनघोटि दशगोइटामेंआंचदे ॥ १३ ॥ इस भस्मका तीसवांअंश सिंगियादे खरलकरै

चास्य क्षिप्त्वासर्वंविचूर्णयेत् । महिषाज्येनसंमिश्रं निष्कार्द्धंभक्षये त्सदा १४ मध्वाज्येवाकुचीचूर्णं कर्षमात्रंलिहेदनु । सर्वकुष्ठंनिहं-त्याशु महातालेश्वरोरसः १५ भस्मसूतसमोगंधो मृतायस्ताम्र गुग्गुलः । त्रिफलाचमहानिम्ब चित्रकश्चशिलाजतुः १६ इत्येतच्चू-र्णितंकुर्यात्प्रत्येकं शाणषोडश । चतुष्षष्टिकरंजस्यवीजचूर्णंप्रकल्प येत् १७ चतुःषष्टिमृतंचाभ्रं मध्वाज्याभ्यांविलोडयेत् । स्निग्धभां डेधृतंखादे द्द्विनिष्कंसर्वकुष्टनुत् । रसःकुष्टकुठारोयं गलत्कुष्ठनिवा रणम् १८ शुद्धसूतंद्विधागंधं मर्द्यंकन्याद्रवैर्दिनं । तद्गोलंपिठरीम ध्यताम्रपात्रेणरोधयेत् । सूतिकात्रिगुणेनैव शुद्धेनाधोमुखेनच १९ पार्श्वेभस्मनिधायाथपात्रोर्ध्वेगोमयेजलं । किंचित्किंचित्प्रदातव्यं चूल्ह्यांयामद्वयंपचेत् । चंडाग्निनातदुद्धृत्यस्वांगशीतंसमुद्धरेत् २० काष्ठोदुंवरिकावह्नि त्रिफलाराजवृक्षकं । विडंगंवाकुचीवीजंक्वाथ

तमदोमाशे भैंसके घीमें नितखाइ ॥ १४ ॥ इस पीछे बकुचीका चूर्ण दशमाशे मधुयुक्तघीके साथखाइ तौ सबकुष्ट नाशहोयं इसका नाम महातालेश्वरहै ॥ १५ ॥ कुष्ट कुठाररसपाराभस्म गंधक मरालोहा ताम्र गुग्गुल त्रिफला बकाइन चीता शुद्धशिलाजीत ॥ १६ ॥ येद्रव्य सोलह शाण चौंसठिशाण करंज बीजकाचूर्ण ॥ १७ ॥ अभ्रक भस्म ६४ शाण सब इकट्ठीकरि समान घृत भांडमें भरि धरि इसे आठ माशे खिलावै तोसब कुष्टदूर करै यहकुष्ट कुठार रस गलित कोढ़भी नाशकरता है ॥ १८ ॥ उदयादित्य रस शुद्धपारा दूनीगंध-क एकदिन घीकुवारके रसमें मर्दनकरि गोलीबांधि माटीके पात्र में धरि पारेसे त्रिगुणा तांबेकी गहरी कटोरी बनाइ उस माटी पात्रके भीतर गोले परढांपि किसी बस्तुसे निःसंधिकरि बंदकरि १९ ॥ चारों ओर ढकने के राखभरि चूल्हेपरधरि दोपहर आंच देइ और उस तांबेके ढकनेपर पानीमें गोबरघोलि थोड़ा थोड़ा छोड़ता जाइ अंतमें तीव्र आंचदे ठंढा भये उतारि ॥ २० ॥ काठ गूलरचीता त्रिफला अमलतास पत्र बिडंगबकुची बीज इनका क्वाथ

येत्तेनभावयेत् २१ दिनैकमुदयादित्यो रसोदेयोद्विगुंजकः । विच
र्चिकांदद्रुकुष्टं श्वेतकुष्टंचनाशयेत् २२ अनुपानंप्रकर्त्तव्यं वाकुची
फलचूर्णकं । खदिरस्यकषायेन समेनपरिपाचितं । त्रिशाणंवागवां
क्षीरैः क्वाथैर्वात्रिफलोद्भवैः । त्रिदिनांतेभवेत्स्फोटः सप्ताहाद्वाकिला
सके २३ नीलीगुंजाचकाशीसंधत्तूरंहंसपादिकां । सूर्यभक्तांचचांगे-
रींपिष्ट्वातुल्यानिलेपयेत् २४ स्फोटस्थानप्रशांत्यर्थं सप्तरात्रंपुनः
पुनः । श्वेतकुष्टंनिहंत्याशु साध्यासाध्यंनसंशयः २५ अपरंश्वित्रलेपो
पिकथ्यन्तेऽत्रभिषग्वरैः । गुंजाफलानांचूर्णंच लेपितंश्वेतकुष्टनुत् ।
शिलापामार्गभस्मापि लिप्तंश्वित्रंविनाशयेत् २६ शुद्धसूतंचतुर्गं
धं पलंयामंविचूर्णयेत् । मृतताम्राभ्रलोहानां दरदंचपलंपलं २७
सुवर्णंरजतंचैव प्रत्येकंदशनिष्ककं । माषैकंम्मृतवज्रंच तालसत्व
पलत्रयं २८ जंबीरोन्मत्तवासाभिः स्नुह्यर्कविषमुष्टिभिः । मर्द्यं
हयारिजैर्द्रावैः प्रत्येकेनदिनंदिनं २९ एवंसप्तदिनंमर्द्यं तद्गोलं
करि रसको भावना दे॥२१॥ एक दिन घोटि यह उदयादित्यरस दो
गुंजा खिलाने से बिचर्चिका दाद श्वेतकुष्ट अच्छा होइ ॥ २२ ॥ अ-
नोपान खदिरसारक्वाथ वा गऊकादूध वा त्रिफलेके क्वाथमें तीन
माशा वकुचीचर्ण इ गुंजारस युक्त खाइ ॥ २३ ॥ तौ तीनदिनके अंतमें
फूटक कुष्ट दूर हो सातदिनके अंतमें सपेदकुष्ट दूर हो श्विनपरलेप
नीलपत्र गुंजा कसीस धतूरा हंसपद सूर्यमुखी छोटीलुनिया देसब
सम भाग लेपकरनेसे ॥ २४ ॥ जहां फूटा हो तहां तौ सातदिनमें
गलित कुष्ट अच्छा होय औ श्वेत कुष्ट साध्य वा असाध्य दूर होय
२५ ॥ इसीपर श्रेष्ठवैद्य और लेप कहते हैं घुंघची चीता जलमें
पीसि लगानेसे श्वेतकुष्टदूर होय मैनशिल चिर्चिरा राखि पीसि
पानीके साथलेपकरै तौ श्वेत कुष्ट दूर होय ॥ २६ ॥ कुष्टपर सर्वेश्वर
रसशुद्धपारा एकपलगंधक चारपल एकपहर खरलमरातांबाअभ्रक
लोह इंगुर शुद्ध सबएकएकपल ॥ २७ ॥ मरा सोना चांदी एकपल
माशे भर हीरा दोपल हरतालकासत ॥ २८ ॥ जंभीरी धतूरा वा-
सा सेहुड़ मदार बकाइन वा कुचला करै रमूल इनसबके रसमें
एक एक दिन भावनादे घोटि ॥ २९ ॥ ऐसे सातदिन घोटिगोला

वस्त्रवेष्ठितं । वालुकायंत्रगंस्वेद्यं त्रिदिनंलघुवह्निना ३० आ-
दायचूर्णयेत्श्लक्ष्णंपलैकंयोजयेद्विषं । द्वेपलेपिप्पलीचूर्णमिश्रंसर्वे
श्वरोरसः ३१ द्विगुंजोलिह्यतेक्षौद्रैः सुप्तमंडलकुष्ठजित् । वाकुची
देवकाष्टंच कर्षमात्रंसुचूर्णयेत् । लिहेदेरंडतैलेन अनुपानंसुखावहं
३२ हेमाह्वापंचपलिकं क्षिप्त्वातक्रघटेपचेत् । तक्रेजीर्णेसमुद्धृत्य
पुनःक्षीरेघटेपचेत् । क्षीरेजीर्णेसमुद्धृत्य क्षालयित्वाविशोषयेत् ३३
तच्चूर्णंपंचपलिकंमरिचानांपलंद्वयं । पलैकंमूर्च्छितंसूतमेकीकृत्वातु
भक्षयेत् । निष्कैकंसुप्तकुष्ठातः स्वर्णक्षीरीरसोह्ययं ३४ भस्मसूतं
मृतंकांतं मुंडंभस्मशिलाजतु । शुद्धंताप्यंशिलाव्योषं त्रिफलांको-
लवीजकं ३५ कपित्थरजनीचूर्णं भृङ्गराजेनभावयेत् । विंशद्वारं
विशोष्याथ मधुयुक्तंलिहेत्तदा ३६ निष्कमात्रंहरेन्मेहा न्मेहवद्ध
रसोमहान् । महानिंवस्यबीजानि पिष्ट्वाषट्सम्मितानिच ३७

करि सुखाइ कपरौटीकरि वालुकायंत्रमें तीनदिन मंद मंद आंच
दे पचावै ॥ ३० ॥ फेरनिकासखरलकरि पलभर सींगिया है पल
पीपरि चूनी करि घोटै सर्वेश्वररस इसकानामहै ॥ ३१ ॥ दुइ गुंजा
सहत संग खिलायेसे सुप्तमंडल दूरकरै अनोपान बकुची देवदारु
चूर्ण एककर्ष रंडीके तेलमें मिलाय ऊपरसे चाटै यह अनोपान सुख
देताहै ॥ ३२ ॥ कुष्टपर स्वर्णक्षीरीरस पीस पैसे भर चोक घड़ा भर
मट्ठेमें पचाइ जब मट्ठा गाढ़ाहो तबनिकारि घड़ाभरदूधमें पचा-
वै जबदूध का खोवा होजाय तब निकाल धोइ सुखाइ ॥ ३३ ॥
उस चोकमें दोपल मरिच पलभर पारे की कजली सब मिलाइ
खरलकरै चारिमाशे खिलावै तौ सुप्त कुष्ट पीड़ितके कारण यह
स्वर्णक्षीरीरस कहाहै ॥ ३४ ॥ प्रमेहपर मेहबद्धरस मरापाराकांती
भस्म लोह भस्म शिलाजीत शुद्ध सोना माषी शुद्ध मैनशिल शुद्ध
त्रिकुटा त्रिफला कबेरीकीगुठी ॥ ३५ ॥ कैथा हरदी इनसबकाचूर्ण
भंगरे के रसमें घोटै जब सूखजाय तब सहत मिलाइचाटै ॥ ३६ ॥
माशे४ नित्यखाइतौ प्रमेहनाशहोय इसरसको मेहबद्धनाम कहते
हैं बकाइनके बिया छः पीसिलेइ ॥ ३७ ॥ चारि पैसाभर चावर

पलंतंदुलतोयेन घृतनिष्कद्वयेनच। एकीकृत्यपिबेच्चानुहंतिमेहंचि रंतनं ३८ चतुःसूतस्यगंधाष्टौ रजनीत्रिफलाशिवा । प्रत्येकंचद्वि- भागःस्या त्तिवृज्जैपालचित्रकं ३९ प्रत्येकंचत्रिभागंस्या त्र्यूषदंती चजीरकं। प्रत्येकमष्टभागंस्या देकीकृत्यविचूर्णयेत् ४० जयंती स्नुक्पयोभृङ्ग वह्निवातारितैलकैः । प्रत्येकेनक्रमान्भाव्यं सप्त वारंपृथकपृथक् ४१ महावह्निरसोनाम निष्कमुष्णजलैःपिबेत्। विरेचनंभवंतेन तक्रभक्तंससैंधवं ४२ दिनांतेदापयेत्पथ्यं वर्जये च्छीतलंजलं। सर्वोदरहरःप्रोक्तो मूढवातहरःपरः ४३ गंधकंताल कंताप्यंमृतताम्रमनःशिलां। शुद्धंसूतंचतुल्यांशं मर्द्दयेद्भावयेद्दिनं। पिप्पल्यास्तुकषायेण वज्रीक्षीरेणभावयेत्। निष्कार्द्धंभक्षयेत्क्षौद्रै गुल्मप्लीहादिकंजयेत्। रसोविद्याधरोनाम गोमूत्रंचपिबेदनु ४४ टंकणंहारिणंशृङ्गं स्वर्णंशुल्वंमृतंरसं। दिनैकमार्द्रकद्रावै मर्द्यंरु- ध्वापुटेपचेत् ४५ त्रिनेत्रस्वरसःसोयं माषंमध्वाज्यकैर्लिहेत्। सैं

का धोवन आठ माशे घी सब मिलाइकै पियै तो बहुत दिनी प्रमेह दूर हो ॥ ३८ ॥ जलोदर पर वह्निरस पारा पल चार गंधक पल आठ हरदी त्रिफला हड़ ये सब दुइ दुइ पल निशोथ जैपाल चीता ॥ ३९ ॥ ये सब तीनतीन पल त्रिकुटा जमालगोटे की जड़ श्वेतजीरा आठआठ पल सब मिलाइ खरल करै ॥ ४० ॥ थू- हारस सेंहुड़दूध भंगरारस चीतारस वा काढ़ा रेंड़ीकातेल इन में क्रम से सात सात भावना दे ॥ ४१ ॥ यह महावह्निरस चार माशे मुंह में धरि गरम पानीसे उतारि जाइ तब मल गिरै संध्या को रेचके पीछे पथ्य मट्ठा भात सैंधव लोनदे औ जल गरम पियै सब पेटके रोग दूरहोइं मूढ़बात दूर हो ॥ ४२ ॥ गुल्मपर विद्या- धर रस शुद्धगंधक हरताल सोनामाषी मरातांबा मैनशिल पारा सब समान ले खरलकरि फिर पीपरि क्वाथ में दिनभर खरलकरै एक दिन सेंहुड़ दूधमें खरलकरै ॥ ४३ ॥ दुइमाशे सहत संग चाटै गुल्म प्लीहा दूरहोय यह विद्याधररस खाइ ऊपरसे गोमूत्र पियै ४४ ॥ त्रिनेत्ररस पंक्तिशूल पर सुहागा हरिणश्रृंग सोना तांबा पारा मरे एकदिन अद्रक रसमेंघोटि गजपुटमें फूंकदे ॥ ४५ ॥ यह

घवंजीरकंहिंगु मध्वाज्याभ्यांलिहेदनु । पंक्तिशूलंहरत्याशु मास मात्रंनसंशयः ४६ शुद्धसूतंद्वियागंधं यामैकंमर्दयेद्दृढम् । द्वयोस्तु ल्यंशुद्धताम्रं संपुटेतंनिरोधयेत् ४७ ऊर्ध्वाधोलवणंदत्वा मृद्भांडे धारयेद्भिषक् । ततोगजपुटेपक्त्वा स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ४८ संपुटे चूर्णयेत्सूक्ष्मंपर्णखंडेद्विगुंजकं । भक्षयेत्सर्वशूलार्त्तो हिंगुशुंठीसजी रकं । वचामरिचजंचूर्णं कर्षमुष्णजलैःपिबेत् । असाध्यंनाशयेच्छू लं रसोयंगजकेशरी ४९ शुद्धसूतंविषंगंध मजमोदाफलत्रयं । स र्जिक्षारंयवक्षारं वह्निसैंधवजीरकं ५० सौवर्चलंविडंगानि सामु द्रंत्र्यूषणंसमं । विषमुष्टिसर्वतुल्यं जंबीराम्लेनमर्दयेत् । मरिचा भावटींखादेद्वह्निमांद्यप्रशांतये ५१ शुद्धसूतंविषंगंधंसमंसर्वंविचू र्णयेत् । मरिचंसर्वतुल्यांशंकंटकार्य्याफलद्रवैः । मर्दयेद्भावयेत्सर्व मेकविंशतिवारकं ५२ वटीगुंजात्रयंखादेत्सर्वाजीर्णप्रशांतये । अ-

जिनेचरस आधा भर घृत सहत में चाटै तिसपर सैंधव जीरा हींग घृत सहतमें चाटै यों मासभर चाटेसे पसुरी की समस्त पीड़ा दूर होइ ॥ ४६ ॥ शूलपर गजकेशरी रस शुद्धपारा दूनी शुद्धगन्धक दोनों बलपूर्वक घोटि तिसके समान शुद्धतांबेके कटककरि कजरी में मिलाइ संपुटकरै ॥ ४७ ॥ फिर माटीके पात्रमें नोन बीच में संपुटगाड़ि गजपुट आंचदे ठंढाभये निकाले ॥ ४८ ॥ तब खरलकरि पके पानमें दो गुंजारस खवावै तौ पेटका शूल मिटै और उसीपर भुंजी हींग सोंठ जीरा बच मरिच इनका चूर्ण उष्णोदक के साथ पिये तौ असाध्य शूल भी नाशहोय यह गजकेशरी रसहै ॥ ४९ ॥ मंदाग्नि पर अग्नितुंडी रस शुद्ध पारा बिषगंधक तीनों अजमोद त्रिफला सज्जी यवाखार चीता सैंधव जीरा ॥ ५० ॥ कालानोन विडंग पागालोन त्रिकुटा ये सब सम भागले और सबकी सम कुचलाले जंभीरीके रसमें घोटि मरिच सम गोली बांधि खाइ उस अग्नितुंडी रससे मंदाग्नि दूरहो ॥ ५१ ॥ बिसूचिका पर अजीर्ण कंटकरस पारा सिंगिया गंधक तीनों शुद्ध सब सम भागले खरलकरि सबके समान मरिच दे भटकटैया फलके रसमें भिजोइ इक्कीस बार घोटि ॥ ५२ ॥ तीन रत्ती भर बटी बनाइ खाइ इस

जीर्णकटकश्चायं रसोहंतिविसूचिकां ५३ मृतंसूतंमृतंताम्रं हिंगु पुष्करमूलकंसैंधवंगंधकंतालंकटुकीचूर्णयेत्समं ५४ पुनर्नवादेवदालीनिर्गुंडीतंदुलीयकैः । तिक्तकोशातकीद्रावैर्दिनैकंमर्दयेद्दृढं ५५ मासमात्रंलिहेत्क्षौद्रैःरसोमंथानभैरवः । कफरोगप्रशान्त्यर्थंछिन्नाक्वाथंपिवेदनु ५६ सूतहाटकवज्राणिताम्रलोहंचमाक्षिकं । तालंनीलार्जुनंतुत्थंमहिफेनंसमांशकं ५७ पंचानांलवणानांचभागमेकंविमर्दयेत् । वज्रीक्षीरैर्दिनैकंतुरुध्वातंभूधरेपचेत् ५८ माषैकमाद्रकद्रावैर्लेहयेद्वातनाशनं । पिप्पलीमूलजंक्वाथंसकृष्णमनुपाययेत् । सर्ववातविकारांस्तुनिहन्यात्क्षेपकादिकान् ५९ कनकस्याष्टभागाः स्युःसूतोद्वादशभिःमतः । गंधोपिद्वादशप्रोक्त स्ताम्रशाणद्वयोन्मितं ६० अभ्रकस्यचतुःशाणांमाक्षिकस्यद्विशाणकं । वंगोद्विशाणंसौवीरंत्रिशाणंलोहमष्टकं ६१ विषंत्रिशाणकंचैवलांगलीपलसम्मि

अजीर्णकण्टकवटी के खाने से सब अजीर्ण शान्त होइ औ विसूचिका को हनै ॥ ५३ ॥ अथ मन्थानभैरव पारा तांबा मृतक हींग पुष्करमूल सैंधव शुद्धगन्धक हरताल कटुकी सब समभाग खरल करि ॥५४॥ गदापुरैना बंदाल सेवड़ी चौराई करुई तोरई इन सब के रसमें एक एक दिन बलपूर्वक क्रमसे घोटि ॥ ५५ ॥ मासा भर सहत युक्त नित्य खाइ यह मंथानभैरवरस कफरोग नाशार्थ इस पर निंदक क्वाथ पियै ॥ ५६॥ अथ बातनाशकरस शुद्धपारा शुद्धसोना शुद्ध लोहा शुद्ध हीरा शुद्ध सोनामाषी शुद्ध हरताल शुद्ध सुरमा शुद्ध तूतिया अफीम ये समभाग ॥ ५७ ॥ एक भागमें पांचौ लोन ये सब द्रव्य ले एकदिन सेंहुड़के दूधमें खरल करै संपुटमें राखि भूधरयंत्रमें पचावै ॥ ५८ ॥ माशभर रस अद्रकके रसमें मिश्रित करि खाइ तौ सब बायु नाश होय वा पिपरामूल क्वाथमें पीपरि मिलाइके देय तौ सबदांत बिकार बिलाइजाइ अक्षेपकादि॥५९॥ सन्निपात पर कनकसुन्दररस आठ भाग सोनाभस्म बारहभाग पाराभस्म शुद्धगंधक बारहभाग दो शाण ताम्रभस्म ॥ ६० ॥ अभ्रक भस्म ४ शाण सोनाभाषी भस्म २ बंग २ सुरमाभस्म ३ लोहा भस्म ८ ॥६१॥ बिष ३ पलकरियारी पलभर ये द्रव्य औसरस एक

ता । मर्दयेद्दिनमेकंच रसैरम्लफलोद्भवः ६२ दद्यान्मृदुपुटंवह्नौ ततश्चूर्णंतुकारयेत् । माषमात्रोरसोदेयः सन्निपातेसुदारुणे ६३ आर्द्रकस्यरसेनैवरसेनस्वरसेनवा । किलासंसर्वकुष्ठानिविसर्पंचभगंदरं । ज्वरंगरमजीर्णंचजयेद्रोगहरोरसः ६४ रसोगंधस्त्रिनिष्कः स्यात्कुर्यात्कज्जलिकातयोः । ताम्रन्तारंचवंगाहि साराश्चैकैक कर्षिकाः ६५ शिग्रुज्वालामुखीशुंठीविल्वेभ्यस्तंदुलीयकान् । प्रत्येकंस्वरसैःकुर्या द्यामैकैकंविमर्दयेत् ६६ कृत्वागोलंदृतंवस्त्रैर्लवणैःपूरितंन्यसेत् । कांचभांडेततःस्थाल्यां काचकूपींनिवेशयेत् । वालुकाभिःप्रपूर्याथवह्नियामद्वयंभवेत् ६७ततउद्धृत्यतंगोलंचूर्णयित्वाविमिश्रयेत् । प्रवालचूर्णकर्षेण शाणमात्रविषेणच । कृष्णसर्पस्यगरलैर्द्दिवेलंभावयेत्तथा६८ तगरंमुशलीमांसीहेमाह्वावेतसंकणा । नीलनीपत्रकंचैला चित्रकश्चकुटेरकः ६९ शतपुष्पादेव

दिन जंबीरी नीबूके खरलकरै ॥६२॥ संपुटकरि थोड़ीआंचदे फूंकि फिर खरल करै माशाभर खिलावै तौ अति बड़ा सन्नि दूर होइ ६३ ॥ अद्रक वा लहसुनके रस में खिलावै किलास सर्व कुष्ट विसर्प भगंदर ज्वर विष विकार यह कनकसुन्दर रस इन रोगनको हरै ६४ ॥ सन्निपर भैरवरस पारा ३ निष्क गंधक ३ निष्क दूनों घोटि कजली करि तांबा चांदी सीतर बंग पोलाद ये पाचों भस्म कर्ष भर ॥ ६५ ॥ सहिंजन डेकार सोंठि का काढ़ा बेलके फलका रस चौराईरस इन रसमें पहरपहरभर घोटि ॥ ६६ ॥ गोला बांधि कपरौटीकरि दो कांचके प्याले एकमें लोनभरि गोला धरि दूसरा लोनपूरित प्याला ढांकि कपरौटी करि तब माटी पात्र के तालुका यंत्रमें धरि दोपहर की आंच देइ ॥ ६७ ॥ ठंढा भये निकारि खरल करि फिरि मूंगा चूर्ण कर्ष भर विष माशाभर काले सांपका जहर युक्त एकदिन खरल करै फिर कांच की शीशी में भरि बालुका यंत्र में दोपहरकी आंच दे ठंढा भये निकारि चूर्णकरै ॥६८॥ तगर मुशली जटामांसी चोक जगन्नाथीपोमरि नीलकीपाती इला इची चीता कटसरैया ॥ ६९ ॥ सौंफ बनतोरई धतूरा अगस्त्य मुंडी

द्वालीधत्तूरागस्त्यशुंठिका । मधूकजातीमधुनारसैरेपांविमर्दयेत्
प्रत्येकमेकवेलंचततःसंशोष्यधारयेत् ७० वीजपूरार्द्रकद्रावम-
रिचैःषोडशोन्मितैः । रसोद्विगुंजप्रमितःसन्निपातेप्रदीयते । प्रसि
द्धोयंरसोनाम्नासन्निपातस्यभैरवः ७१ तारमौक्तिकहेमानिसा
रश्चैकैकभागिकः । द्विभागोगंधकःसूत स्त्रिभागोमर्दयेद्दिनं ७२
कपित्थस्वरसैगाढंमृगशृङ्गेततःक्षिपेत् । पुटेन्मध्यपुटेनैवसमुद्धृत्य
चमर्दयेत् ७३ वलारसैःसप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा । लोधप्रति
विषामुक्ताधातकीन्द्रयवामृता । प्रत्येकंसरसैर्नित्यंभावनस्यात्रिधा
त्रिधा ७४ मापमात्रोरसोदेयोमधुनामरिचैस्तथा । हन्यात्सर्वान
तीसारान्ग्रहणींसर्वजामपि । कपाटोग्रहणीरोगेरसोयंवह्निदीप
नः ७५ मृतसूताभ्रकंगंधंयवक्षारंसटंकणं । अग्निमंथंवचाकुर्यात्सूत
तुल्यानिमान्सुधीः ७६ ततोजयंतीजंवीरं भृङ्गद्रावैर्विमर्दयेत् ।
त्रिवासरंततोगोलंकृत्वासंशोष्यधारयेत् । लोहपात्रेसरावंचदत्तो

मजुआ चमेली मैनफल इन सबका रस वा काढ़ाकरि क्रमसे एक
एकवार घोटि सुखाइ राखै ॥ ७० ॥ जंभीरीरस वा अद्रकरस १६
मरिच वा गुंजारस के साथ सन्निपात में देइ यह प्रसिद्ध रसहै
यह सन्निपात भैरव नाम रसहै ॥ ७१ ॥ अथ ग्रहणी कपाटरस
चांदी मोती सोना लोह इनकी भस्म एकएक भाग शुद्धगंधक दो
भाग शुद्ध पारा तीन भाग ये सब खरलकरि ॥ ७२ ॥ फिर कैथेके
रसमें खरलकरि हरिण सींगभरि कपरौटी करि तीस गोइटा
की आंचदे ठंढा भये निकारि निकारि खरलकरि ॥ ७३ ॥ वरि-
यारा रसमें सातबार खरलकरि फिर तीनवार चिरचिरा रसमें
खरलकरि फिर लोध अतीस मोथा धवपुष्प इन्द्रयव गुर्च इनके
रसमें तीन तीनबार खरल क्रमसेकरि ॥ ७४ ॥ माशाभर रससहत
मरिच मिलाइ चाटै सब अतीसार ग्रहणी दूरिकरै यह ग्रहणी
कपाट अग्नि को दीपन करता है ॥ ७५ ॥ वज्रकपाटरस ग्रहणी
पर पारा भस्म अभ्रकभस्म शुद्धगन्धक यवाखार सुहागा अरणी
वीज वालवच ये सब सम भागले ॥ ७६ ॥ यह रस जंभीरी भंगरा

परिविमुद्रयेत् ७७ अधोवह्निंशनैःकुर्याद्यामार्द्धंततउद्धरेत् । रस तुल्यंप्रतिविषांदद्यान्मोचरसस्तथा।कपित्थविजयाद्रावैर्भावयेत्स प्तधाभिषक् ७८ धातकीन्द्रयवामुस्तालोध्रम्बिल्वंगुडूचिकां । एत द्रसैर्भावयित्वावेलैकैकंचशोधयेत् ७९ रसंवज्रकपाटाख्यंशाणोकं मधुनालिहेत् ।वह्निंशुंठीविडंबिल्वंलवणंचूर्णयेत्समं । पिवेदुष्णां वुनाचानुसर्वजांग्रहणींजयेत् ८० तारंवज्रं सुवर्णंचताम्रंसूतक गंधकं । लोहंक्रमादिवृद्धानिकुर्यादेतानिमात्रया ८१ विमर्द्यकन्य काद्रावैर्न्यसेत्कांचमयेघटे । विमुद्र्यपिठरीमध्येधारयेत्सैंधवैर्भृते पिठरींमुद्रयेत्सम्यक् ततश्चुल्ह्यांनिवेशयेत् ८२ वह्निंशनैःशनैः कुर्याद्दिनैकंततउद्धरेत् । स्वांगशीतंचसंपूर्णंभावयेदर्कदुग्धकैः ८३ असगंधाचकाकोलीवानरीमुशलीक्षुरा । त्रित्रिवेलंरसैरेवंशतावर्या श्चभावयेत् । पद्मकंदकसेरूणांरसैःकासस्यभावयेत् ८४ कस्तूरी

इनके रसमें तीन तीन दिन घोटि गोलाकरि सुखाइ लोहे की कढ़ैयामें धरि माटी पात्र से बंदकरि ॥ ७७ ॥ मंद मंद चारघरी आंचदे उतारिलेइ तबउसरस समानअति समोयारस डालि कैथ भांगके रसमें वैद्य सात सात बारघोटै ॥ ७८ ॥ फिर धवपुष्प इन्द्र यव मोथा लोध बेल गुर्च इनके रसमें एकएकबार घोटै सुखाइले ॥ ७९ ॥ यह वज्रकपाटरस शाणभर सहतके संगखाइ ऊपरसे चीता सोंठि पागानोन बेल सैंधव इनसबका समभाग चूर्णकरि उष्णजल साथ खाइ तौ सब ग्रहणी दूरि होई ॥ ८० ॥ मदनकामदेवरस चांदी हीरा सोना तांबा चारों भस्म पारा गंधक लोहा तीनौं शुद्ध ये सातों क्रमसे बढ़ती भागले ॥ ८१ ॥ घीकुवार के रसमें घोटि शीशीमें भरि कपरौटी करि माटीपात्र में नीचे ऊपर नोन भरि बीच में शीशीधरि संपुटकरि चूल्हेपर धरि ॥ ८२ ॥ मंद मंद आंच बारि दिनभर फिर निकारि मदार के दूधमें खरलकरि ॥ ८३ ॥ असगंध काकोली विनाभी असगंध किमाच मुशली तालमखाना शतावरि इनके रस में तीन तीन भावनादे कमल की जड़ कसेरू कांस फिर इनके तीनतीन भावनादेइ ॥८४॥ कस्तूरी चिकुटा कपर

त्वचोपकर्पूरकांकोलैलालवंगकं । पूर्वचूर्णादष्टमांशंततश्चूर्णंविमिश्रयेत् ८५ सर्वैःसमंशर्करास्याद्दत्वाशाणोन्मितंभजेत् । गोदुग्धद्विपलेनैवमधुराहारसेवकः । तरुणीरमयेद्बह्वीःशुक्रहानिर्नजायते ८६ सूतोवज्रमहिर्मुक्तातारंहेमासिताभ्रकं । रसैःकर्षमितानेतान्मर्दयेद्दिरिमेदजः ८७ प्रवालचूर्णंगंधश्च द्विद्विकर्षविमिश्रयेत् । ततोश्वगंधाश्चरसैर्विमर्द्यमृगशृंगके। क्षिप्त्वामृदुपुटेपक्त्वाभावयेद्धातकीरसैः ८८ काकोलीमधुकंमांसी वलात्रयविपंदुकं । द्राक्षापिप्पलवंदाकंवाणपर्णीचतुष्टयं ८९ परूपकंकसेरुंचमधुकंवानरीं तथा । भावयित्वारसैरेषांशोषयित्वाविचूर्णयेत् ९० एलात्वक्पत्रकंमांशी लवंगागुरुकेशरं । मुस्तंमृगमदंकृष्णा जलंचंद्रश्चमिश्रयेत् ९१ एतच्चूर्णंशाणमितं रसःकंदर्पसुन्दरः । खादेच्छाणमिदंरात्रौ शिताधात्रीविदारिकः ९२ एतासांकर्पचूर्णंन सर्पिःकर्षणसंयुतं ।

शीतलचीनी इलाइची लवंग पीसि पूर्व चूर्ण जो भावनादि से सिद्ध किये का अष्टमांश कस्तूर्य्यादि चूर्णयुक्त करि ॥ ८५ ॥ सब के समान शक्कर मिलाइ शाण भरि खाइ आठ पैसा भरि दूध पियै पथ्य मधु करै इसके खाने से बहुत स्त्री गमन करै औ धातु न घटै ८६ ॥ अथ कंदर्पसुन्दर रस पारा शुद्ध हीरा मोती चांदी सोना कृष्णाभ्रक ये पांच भस्म सब कर्ष कर्ष भरले खैर क्वाथ में एक दिन घोटै ॥८७॥ मूंगेका चूर्ण शुद्ध गंधक दोदो कर्ष मिलाइ असगंध रस में एकदिन घुटाइ मृगसींग में भर कपरौटी करि थोड़ी आंच में धरि फूंकदे फिर धवफूलके रस वा क्वाथमें भावना दे ॥ ८८ ॥ फिर काकोली बिना आसन मुरेठी जटामांसी बरियारा गुलशकरी ककई भसीड़ हिंगवट मुनक्का पीपरिका बांदा कटसरैया बनमूंग मुग्धपर्णी माषपर्णी॥८९॥फालसा कसेरू महुआ किमाचबीज इन सबके रसमें एकएक भावना दे सुखाइ खरलकरि धरि राखै ॥९०॥ इलाइची तज पत्रज बंसलोचन लौंग अगर केसर मोथा कस्तूरी पीपरि सुगन्ध बाला कपूर इनका चूर्णकरि ॥९१॥ शाण भरले औ शाणभर पूर्वोक्तकन्दर्पसुंदररस औ खांड़आंवरा बिदारीकंद॥९२॥

तस्यानुद्विपलंक्षीरं पिबेत्सुखितमानसः । रमणीरमयेद्दह्वीर्हानिं क्वापिनगच्छति ९३ शुद्धंरसेन्द्रभागैकं द्विभागंशुद्धगन्धकं । क्षिपेत्कज्जलिकांकृत्वा तत्रतीक्ष्णमवंरजः । क्षिप्त्वाकज्जलिकातुल्यं प्रहरैकंविमर्दयेत् ९४ तत्रकन्याद्रवैर्घर्मे त्रिदिनंपरिमर्दयेत् । ततःसंजायतेतस्य सोष्मोधूमोद्गमोमहान् ९५ अत्यंतंपिंडितंकृत्वा ताम्रपात्रेनिधायच । मध्येधान्यकुसूलाच त्रिदिनंधारयेद्बुधः ९६ उद्धृत्यतस्मात्खल्वेतु क्षिप्त्वाघर्मेनिधायच । रसैःकुठारछिन्नाया स्त्रिवेलंपरिभावयेत् ९७ संशोष्यघर्मेक्काथैश्चभावयेत्त्रिकुटोस्त्रिशः। वासामृताचित्रकानांरसैर्भाव्यंक्रमात्त्रिशः ९८ लोहपात्रेततःक्षिप्त्वा भावयेत्त्रिफलाजलैः । निर्गुंडीदाडिमत्वग्भि र्वासाभृङ्गकुरंटकैः ९९ पलाशकदलीद्रावै र्वीजकस्यसृतेनच । नीलिकालंबुषाद्रावैर्वब्बूलफलिकारसैः २०० भावयेत्त्रित्रिवेलंच ततोनागवलारसैः । शतावरीगोक्षुरकैः पातालगरुडीरसैः । त्रित्रिवेलंयथा

इन सबको मिलाइ कर्षभर घी रातिको खाइ बिषयो पुरुष दूध पिये सो पुरुष बहुत स्त्री संग भोगकरै तौ वीर्य हानि न होइ ९३॥ क्षयीपर लोह रसायन शुद्धपारा एकभाग शुद्धगंधक एकभाग दूनौं घोटि कजली करि तीन भाग शुद्ध पोलाद का चूनस कजली संग पहरभर घोटि ॥९४॥ फिर घीकुवारके रसमें ३ दिनघाममें बैठिघोटै तब घाम औ घोटनकी गरमीसे बहुत धुआं उठैगा ॥९५॥ जबकड़ाहो गोला बांधि रेंडपत्र लपेट तांबेकेपात्रमें रख मुखमूंदि धानमेंतीनदिन गाड़रक्खै ॥९६॥ फिर निकारि वैद्य घाममेंधरि सबु जाकेरसमें तीनभावनादे॥९७॥ जब सूखिजाइ तबसोंठि मिरच पीपरितीनोंके तीनक्काथ करि तीन भावनादेफिर बूसा गुर्च चीता इन्हैं एकएक के रसमें तीन तीन भावनादे ॥ ९८ ॥ जबसेनिकारि लोहपात्र में धरि त्रिफलामें घोटि सेवड़ी अनारका छिलका भसीड़ भंगरा कटसरैया ॥ ९९ ॥ पलाश केला इन्द्रजव बिजैसारके रसका क्वाथ नीलमुण्डी रस बबूर फलीसा ॥ २०० ॥ ये सब इनके रस वा क्वाथमें तीनतीन भावना दे फिर बरियारा शतावरि गुखुरू

लाभं भावयेदेभिरौषधैः १ ततःप्रातर्लिहेदाज्य मधुभ्यांकोलमात्रकं। पलमात्रंवलाक्वाथं पिवेदस्यानुपानकं २ मासत्रयंशीलितं स्या द्वलीपलितनाशनं। मन्दाग्निश्वासकासांश्च पांडुताकफमारुतौ ३ पिप्पलीमधुसंयुक्तंहन्यादेतन्नसंशयः। वातास्त्रम्मूत्रकृच्छ्रं च ग्रहणींचोदरंतथा ४ अंडवृद्धिंजयेदेत च्छिन्नासत्वमधुप्लुतं। वलवर्णकरंवृष्य मायुष्यंपरमंस्मृतं ५ कूष्मांडंतिलतैलंचमाषान्नंराजिकांतथा। मद्यमम्लरसंचैव त्यजेल्लोहस्यसेवकः ६ इतिश्रीशार्ङ्गधरेमध्यमखंडेरसशोधनमारणंद्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

इतिशार्ङ्गधरस्यद्वितीयखण्डस्समाप्तः॥

कटहट इनके रसमें तीन तीन भावनादेना जोमिलै॥ १॥ प्रभात समय आठ माशे रस घृत सहत में खिलावै तिसपर त्रिफला क्वाथ पलभर पिये यह अनोपान है॥ २॥ तीनमाशे सेवन करै श्वेतबार न होइं औ त्वचा की झुरीपरना दूरहोइ मंदाग्नि श्वास खांसी पांडु कफ वायुविकार इनको अर्थ त्रिफलायुक्त खाय॥ ३॥ पीपरि सहत में देइ तौ वातरक्त मूत्र कृच्छ्र ग्रहणी जलोदर॥ ४॥ अंडवृद्धि नरहै गुर्च का सत औ सहत युक्तदेइ तौ बल सुंदरता आयु बढ़ावै॥५॥श्वेतकुम्हड़ा तिलतेल उर्द राई मद्य खटाई येपदार्थलोह खानेवाला तजै॥२०९॥ इतिशार्ङ्गधरे मध्यखंडद्वादशोध्यायः॥ १२॥

इतिशार्ङ्गधरस्यद्वितीयखण्डस्समाप्तः॥

श्रीगणेशायनमः ॥

शार्ङ्गधरसंहिता ॥

तृतीयखण्डवार्त्तिक तिलकसहित ॥

स्नेहश्चतुर्विधाप्रोक्तोघृतंतैलंवसातथा । मज्जाचतत्पिवेन्मर्त्य ष्किंचिदभ्युदितेरवौ १ स्थावरोजंगमश्चैव द्वियोनिःस्नेहउच्यते। तिलतैलंस्थावरेषु जंगमेषुघृतंवरं २ द्वाभ्यांत्रिभिश्चतुर्भिस्तु यमकस्त्रिवृतोमहान् ३ पिवेत्र्यहंचतुरहं पंचाहंषडहंतथा । सप्तरात्रात्परंस्नेहःसात्म्यीभवतिसेवितः ४ दोषकालाग्निवयसां वलंदृष्ट्वा प्रयोजयेत् । हीनाचमध्यमाज्येष्ठा मात्रास्नेहस्यवुद्धिमान् ५ अमात्रयातथाकाले मिथ्याहारविहारतः । स्नेहःकरोतिशोफार्शो

अथोत्तरखंडःप्रारभ्यते ॥ अथस्नेहपानक्रिया स्नेहचारिभांति का कहिये घृत १ तेल २ वसाकहे मांसमें मिली चर्बी ३ हाड़ के भीतर की मज्जा ये चारों स्नेह वैद्य सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावै ॥ १ ॥ ते स्नेह दो प्रकार के हैं स्थावर औ जंगम स्थावर कहिये अचर जहां उपजै वहीं थिरहै ऐसे स्नेह अनेक प्रकारके हैं तिनमें तिलका तेल श्रेष्ठहै जंगम कहे चर जो श्वासा सहित है तिनसे उत्पत्ति घृतादि अनेकन में घृत श्रेष्ठहै ॥ २ ॥ अथ स्नेह भेद घी तेल वैद्य तिसेयम कहे घी तेल वसा मिलावै तौ त्रिवृतकहैं घी तेल वसा मज्जा संयुक्त हो तौ महान् कहैं ॥ ३ ॥ अथ स्नेहपानक्रम घृत रोगी को तीन दिन पिलावै तेल चारदिन वसा पांच दिन मज्जा छः दिन घृतादि स्नेह सात दिनसे अधिक से अधिक पान करने से अहार होजाताहै औषधि सदृश गुणनहीं करता है ॥ ४ ॥ अथस्नेहमात्राप्रकार वातादि दोष ऋतुकाल जठराग्नि अवस्था औ निर्बल सबल समबल विचारि अल्प मध्य ज्येष्ठ मात्रा यथोचित रोगीको देना ॥ ५ ॥ औ मात्रा औ प्राण औ

स्तंद्रानिद्रावसंज्ञिताः ६ अकालेचातिमात्रंवा असात्म्यंयच्चभोजनं । विषमाशनयद्भुक्तं मिथ्याहारःसकथ्यते ७ देयादीप्ताग्नयेमात्रा स्नेहस्यपलसम्मिता । मध्यमायत्रिकर्षास्या ज्जघन्यायद्विकर्षिकी ८ अथवास्नेहमात्राःस्यु स्तिस्रोन्याःसर्वसम्मताः । अहोरात्रेणमहती जीर्यत्यह्नितुमध्यमा ९ जीर्यत्पल्हादिनार्द्धेन साविज्ञेयासुखावहा । अल्पास्यादीपनीवृष्या वातदोषेपुपूजिता १० मध्यमास्नेहनीज्ञेया बृंहणीभ्रमहारिणी । ज्येष्ठाकुष्टविषोन्माद ग्रहापस्मारनाशिनी ११ केवलंपैत्तिकेसर्पि र्वातिकेलवणान्वितं । पेयंबहुकफेवह्निर्व्योषक्षारसमन्वितं १२ रूक्षक्षतविषार्त्तानांवात

बिना दोष समझे बिना बलजाने न्यूनाधिक मात्रा अकाल वा बिपरीत भोजन औ बिहार करने से सूजन अर्श औंघना निद्रा असावधानता ये रोग होतेहैं ॥ ६ ॥ बिना समय घट बढ़ बिना रुचित देश काल बिरुद्ध पदार्थ खाना यह मिथ्याहार है असमर्थ करना अकाल परिश्रम करना ऋतुसे बिपरीत यथा गरमी में धूप खाना शरदी में बहुत जलाभ्यास बिना वस्त्र इत्यादि मिथ्याबिहार ॥ ७ ॥ अथमात्राप्रमाण दीप्ताग्निवाले को मात्रा घृतादि स्नेह पलभर देना मध्यमाग्नी मनुष्य को तीनकर्ष प्रमाण देना मंदाग्नि मनुष्यको दोकर्ष प्रमाण मात्रा देना ॥ ८ ॥ औ ऋषि घृतादि पानकी सामान्यमात्रा कहते हैं तेभी तीनोंहैं ॥ ९ ॥ जोमात्रा आठ पहर में पचै सो महती है दिन भरमें पचै वह मध्यमाहै दो पहरमें पचै सो अल्पाहै इन तीनों मात्राओंमें तोलका प्रमाणनहीं जैसा पचै औ महती मध्यमा से अल्पा सुखदाई है ॥ १० ॥ अथाल्पामात्रा गुण अल्पमात्रा दो कर्षकी अग्नि दीप्तकरै स्त्री प्रसंग की इच्छा करै जो थोड़े बातादिक कुपित हो तिन्हैं शांति करै मध्यम मात्रा कर्ष तीन की शरीर पुष्ट धातुवृद्धि भ्रम शांति करै ज्येष्ठ मात्रा पल भरकी कुष्ट रोग बिष बिकार उन्माद भूत प्रेत बाधा मृगी ये रोग दूर करती है ॥ ११ ॥ दोषोचित अनोपान पित्त कोपमें केवल घृत वायु कोपमें सैंधव संयुक्त घृत कफ कोप में सोंठ मिर्च पीपरि यवाखार पीसि घृतमें युक्त करि प्यावै ॥ १२ ॥ अपर रोगों

पित्तविकारिणां । हीनमेधास्मृतीनांच सर्पिःपानंप्रशस्यते १३ कृमिकोष्ठानिलाबद्धाः प्रवृद्धकफमेदसः । पिबेयुस्तैलसात्म्याये तैलंदीप्तार्थिनस्तुये १४ व्यायामकर्षिताःशुष्क रेतोरक्तामहारजः । महाग्निमारुतप्राणा वसायोग्यानरास्मृताः १५ क्रूराशयाक्लेशस हा वातार्तादीप्तवह्नयः । मज्जानंचपिबेयुस्ते सर्पिर्वासर्वतोहितं १६ शीतकालेदिवास्नेह मुष्णकालेपिबेन्निशि । वातपित्ताधिकेरा त्रौ वातश्लेष्माधिकेदिवा १७ नस्याभ्यंजनगंडूष मूर्द्धकर्णाक्षि तर्पणे । तैलंघृतंवायुंजीत दृष्ट्वादोषबलाबलं १८ घृतेकोष्णांज लंपेयं तैलेयूषःप्रशस्यते । वसामज्जोपिबेन्मंड मनुपानंसुखावहं १९ स्नेहद्विषःशिशून्वृद्धा न्सुकुमारान्कृशानपि । तृष्णातुरानुष्ण

परघृत रूषाई उरक्षत बिषार्ति बात पित्त दोष हीनबुद्धि सुधि भूलना इनमें अवश्य घृत पिलावै ॥ १३ ॥ तैल योग्य रोगी कृमि बिकार बायुबद्ध शरीर कफ औ मेदवृद्ध इनमें तैल पिलावै जो तैल उसे सौभाविक अहित न हो तो अग्निदीप्त करैगा ॥ १४ ॥ बसा पान योग्य जो मनुष्य परिश्रम करि दुर्बल औ पीड़ित हो धातुक्षीण शुष्करक्त शरीर पीड़ा भस्मक आक्षेपकादि वायु बलिष्ट बायु इनमें बसा पिलाना योग्य है ॥ १५ ॥ अस्थिमज्जा योग्य दुष्टकोष्ट को क्लेशित को बायु पीड़ित को प्रबलाग्नि को मज्जा पिलाना योग्यहै औघी सर्व शरीर को हित है ॥ १६ ॥ अथ स्नेह पान समय शीत कालमें दिनको पिलावै उष्णकालमें रातको बात पित्त अधिक वालेको रातको बात कफ अधिक वालेको दिनमेंपिलावै ॥ १७ ॥घृतादिककर्म बिशेष पर नासके कारण मर्दनको कुल्ली को मस्तकमेंदाबनेको कानआंखिमें डालनेको घृत वा तैलबातादि दोष सबल निर्बल बिचारि वैद्ययुक्तकरै॥१८॥अथ स्नेह पानानुपान घृत उष्णोदकके संगपिये तैलयूस संयुक्त चरबी हाड़मज्जा मांड़युक्त पिये तौ सुखद होइ यूस मांड़ बिधि मध्य खंड में देखि करना १९ ॥ स्नेहद्वेषीकहे जिसे स्नेह न भावै तिसे अन्नके संगदेना औ बालक बूढ़ा सुकुमार दुर्बल तृष्णायुक्त ऐसे मनुष्य को भातके साथ

काले सहभक्तेनपाययेत् २० सर्पिष्मतीवहुतिला यवागूःस्वल्पतं दुला । सुखोष्णासेव्यमानातु सद्यःस्नेहस्यकारिणी २१ शर्करा चूर्णसंसृष्टं दोहन्यस्थेघृतेतुगां । दुग्ध्वाक्षीरंपिबेदुष्णं सद्यःस्नेह नमुच्यते २२ मिथ्याहारविहाराद्वा यस्यस्नेहोनजीर्यति । विष्ट भ्यवापिजीर्येत वारिणोष्णेनवामयेत् २३ स्नेहस्याजीर्णशंकाया पिबेदुष्णोदकंनरः । ततोद्गारोभवेच्छुद्धो भक्तंप्रतिरुचिस्तथा २४ स्नेहनपैत्तिकस्याग्नि र्यदातीक्ष्णतरीकृतः । तदास्योदीरयेत्तृष्णां विषमांतस्यपाययेत् । शीतंजलंवामयेच्च पिपासातेनशाम्यति २५ अजीर्णावर्जयेत्स्नेह मुदरीतरुणज्वरी । दुर्बलोरोचकीस्थूलो मू र्च्छितोमदपीडितः२६दन्तवस्तिर्विरक्तश्च वान्तस्तृष्णाश्रमान्वि तः । अकालप्रश्रवानारी दुर्दिनेचविवर्जयेत् २७ स्वेद्यसंशोध्यमद्य स्त्री व्यायामाशक्तमानसाः । वृद्धवालकृशोरुक्षाः क्षीणास्त्राक्षीण

गरमी में देना ॥ २० ॥ स्नेह यवागू तिल भले प्रकार कूटि थोड़ा चाउंका चूर्ण डारि थोड़ा छान औ जलदेकै पतला पकाइ ले तब गुनगुनाखाइ तौ तुरत धातु उत्पन्नकरै शरीर चिकना करै ॥२१॥ अथधारोष्णदुग्धविधिः दोहनीके भीतर मिश्रीपीसि घृत मिलाइ लिप्तकरै तिसमें कि दुग्ध दुहाइ तुरंत गर्मगर्म पिये तौ तुरंत धातु उत्पन्न होइ ॥ २२ ॥ स्नेह पिये पर परिश्रम करने वा कफ कृत पदार्थ खानेसे स्नेह न पचा हो वा मलारोध कियाहो तौ उष्ण- जलसे वमन करावै तौ अजीर्ण दोष मिटै ॥ २३ ॥ जो स्नेह अजीर्ण की शंकाहो तौ तप्त जलप्यावै जब शुद्ध डकार आवै अन्न परइच्छा करै तब जानै अजीर्ण शांतभया ॥ २४ ॥ स्नेहजन्यपित्तकोपयत्न ॥ पित प्रकृती को स्नेह पानसे गरमी होतीहै प्यास विशेष लगती है उसे शीतजल पिला वमन करावै तौ प्यासउष्मा शांतिहो॥२५॥ स्नेह निषेध अजीर्णमें उदर रोग में तरुण ज्वरमें दुर्बलको अरुचि को अतिस्थूलको मूच्छी में मदार्तिको ॥ २६ ॥ बस्ति कर्म भयेको विरेचन भयेको वमनाको परीश्रमी को गर्भ गिरी स्त्री को इन सबको स्नेह न प्यावै॥ २७ ॥ स्नेह योग्य औषधि दे जिसे स्वेद

रेतसः । वातार्तास्तिमिरार्तोये तेषांस्नेहनमुत्तमं २८ वातानुलो मंदीप्ताग्नि वर्चस्निग्धमसंहतं । मृदुस्निग्धोगताग्लानिः स्नेहा द्वेगोथलाघवं २९ विमलेंद्रियतासम्यक् स्निग्धेरूक्षेविपर्यया । भुक्तद्वेषोमुखश्रावो गुदेदाहःप्रवाहिका ३० तंद्रातिसारःपांडुत्वं भृशंस्निग्धस्यलक्षणं । श्यामाकश्चणकाद्यैश्च तक्रपिण्याकसक्तुभिः ३१ दीप्ताग्निशुद्धकोष्ठश्च पुष्टधातुर्दृढेंद्रियः । निर्जरावलवर्णाढ्यः स्नेहसेवीभवन्नरः ३२ स्नेहोव्यायामसंशीतवेगाघातप्रजागरात् । दिवास्वप्नमभिष्यंदि रूक्षान्नंचविवर्जयेत् ३३ ॥

इतिश्रीशार्ङ्गधरेणविरचितेशार्ङ्गधरेस्नेहपानाध्यायःप्रथमः ॥ १ ॥

निकलाहो रेचन करायाहो मद्यपीनेवालेको मैथुन श्रमीको बाल वृद्धको रूक्ष शरीरीको रक्तधातुक्षीण को वातार्तीतिमिर रोगी को घृतादिस्नेह पिलाना योग्य है ॥ २८ ॥ स्नेहगुणादलक्षण ॥ जो स्नेह पानसे गुण भयाहो तो आरोग्य शरीरमें बायु शुद्धकरती है अग्निदीप्त मलचिकना भाड़ासफा तनकोमल तेलयुक्त चिकना ग्लानिरहित स्नेह से भी मनुष्य ऐसाहो जाताहै उपद्रव बिना शरीर हलका इंद्रिय निर्मल ये लक्षण अच्छे स्नेह भयेकेहैं औरूखे के लक्षणहों तौ स्नेह पान विपरीत भया समझना ॥२९॥ स्नेहवि- शेष पीनेसे उपद्रव अन्न न भावै मुखसें पानी छुटै मल मार्गमें जल न रहै औ मल बहै तंद्रा अतीसार शरीर पांडु ये अति स्नेह के लक्षणहैं ॥ ३० ॥ अथ स्नेह रूक्ष रूक्षेस्निग्धप्रतीकार रूक्ष मनुष्य को बिना मक्खन निकारा मट्ठा तिलका कल्क यवकै सत्तू खिलाइ स्निग्धकरै स्निग्धको सांवांच।वल चनादि खिलाइरूखाकरै॥३१॥ स्नेह सेवन गुण अग्नि दीप्त शुद्ध कोठा धातुपुष्ट इंद्री दृढ़ जरा रहित बल कांति युक्त लक्षण होतेहैं ॥ ३२ ॥ स्नेह सेवीको वर्ज्य पदार्थ श्रम न करै ठंढे पदार्थ तजै मल मूत्र न रोकै बहुत न जागै न दिनमें सोवै कफकृत पदार्थ रूक्षान्न न खाय ॥ ३३ ॥

इतिशार्ङ्गधरेस्नेहपानविधिःप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

स्वेदश्चतुर्विधःप्रोक्त स्तापोष्मस्वेदसंज्ञकः । उपनाहोद्रवःस्वेदः सर्ववातार्त्तिहारिणः १ स्वेदौतापोष्मजौप्रायः श्लेष्मघ्नौसमुदीरितौ । उपनाहस्तुवातघ्नः पित्तसंगेद्रवोहितः २ महाबलेमहाव्याधौशीतेस्वेदोमहान्स्मृतः । दुर्बलेदुर्बलःस्वेदोमध्येमध्यतमोमतः ३ बलाशेरूक्षणःस्वेदो रूक्षःस्निग्धकफानिले । कफमेदोवृतोवाते कोष्णगेहंरवेःकरात् ४ नियुद्धंमार्गगमनंगुरुप्रावरणंध्रुवं । चिंताव्यायामभारांश्चसेवेतामयमुक्तये ५ तेषांनस्यंविधातव्यं वस्तिश्चापिहिदेहिनां । शोधनीयाश्चयेकेचित्पूर्वंस्वेद्याश्चतेमताः ६ पश्चात्स्वेद्यागतेशल्ये मूढगर्भगदेतथा । स्वेद्याःपूर्वंत्रयःस्त्रीह भगंदर्यर्शसां तथा । श्मर्याश्चातुरोजंतु शमयेच्छस्त्रकर्मणा ७ सर्वान्स्वेदान्निवा

अथस्वेदनविधिः॥स्वेदन चारभांतिहैं तिनकेनाम तापकहे सेंकना ऊष्माकहे बफारा उपनाहकहे पोटरी से सेंकना द्रव कहे काढ़ादिकमें बैठाना ये चारों बायु पीड़ा हरते हैं ॥ १ ॥ पृथकविशेष कर्तव्य ताप स्वेद औ ऊष्मविधि सो कफनाशकहै उपनाहस्वेद विधि वायुनाशक है द्रवस्वेदविधि पित्तवात नाशकहै चर्क में कहाहै बात कफसें स्वेदकरै औबायुमेंसूक्ष्म औबायुमें कुछ कफ पित्तकेमिले तौसूक्ष्मस्वेद लेइ इसकारण पित्तवायुमें हलका स्वेद न करना २ बलवान् शरीरीको बायुका बड़ाबेगहो तौ स्वेद अधिक करनाउचितहै हलकेशरीरमें हलकास्वेद उचितहै मध्यमरोगवाले को मध्यमतरस्वेद उचितहै ॥ ३ ॥ कफदोषमें रूक्षपदार्थ रेणुकादि से स्वेदकरै कफ बात रोगमें रूक्षस्निग्ध पदार्थसेकरै कफ मेद बायु युक्त रोगमें उष्णस्थानमें बैठाय स्वेदकरै वा घाममें बैठाइकैकरै कम्बलकासा ॥ ४ ॥ वा मल्लयुद्धमार्ग चलावै वा भारीवस्त्रउढ़ावै वा चिंता उपजाइकै वा परिश्रमकराइ बोझ उठवाइ ऐसीयुक्ति से कफ मेद युक्त वायुरोग दूरहोताहै ॥ ५ ॥ और नासयोग्य वस्तियोग्य रेचन योग्यको प्रथम स्वेद निकराय उपाय करै ॥ ६ ॥ जिस स्त्रीके पेट केभीतर गर्भका शल्यहो वा मूढगर्भहो इन दोकागर्भ जब बाहर होजाइ तब स्वेदकरै जिस मनुष्यकी लीह भगंदर अर्श औ अश्मरी इनचारों रोगार्त्तोंको प्रथमस्वेदनकरि शस्त्रउपाय करना उचित है ॥७॥ स्वेदकर्मकरनेका समयस्थान आहार पचनेके अनंतर जिस

तेचजीर्णाहारेचकारयेत् ८ स्वेदाद्धातुस्थितादोषाः स्नेहक्लिन्नस्यदे हिनः॥ द्रवत्वंप्राप्यकोष्टांतं गत्वायांतिविरेकताम् ९ स्विद्यमानशरीर स्यहृदयंशीतलैःस्पृशेत्। स्नेहाभ्यक्तशरीरस्यशीतैराच्छाद्यचक्षुषी १० अजीर्णोदुर्बलोमेहीक्षतक्षीणःपिपासितः। अतीसारीरक्तपित्ती पांडुरोगीतथोदरी ११ मदार्त्तोगर्भिणीचैव नहिस्वेद्याविजानता। एतानपिमृदुस्वेदैःस्वेदसाध्यानुपाचरेत् १२ स्वेदादेषांयान्तिदेहा विनाशन्नोसाध्यत्वंयान्तिचैषाम्विकारः १३ मृदुस्वेदंप्रयुंजीततथा हृन्मुष्कदृष्टिषु। अतिस्वेदात्संधिपीडा दाहतृष्णाक्लमोभ्रमः १४ पित्तासृक्पिडिकाकोपस्तत्रशीतैरुपाचरेत्। तेषुतापाभिधःस्वेदोवा लुकावस्त्रपाणिभिः १५ कपालकंदुकांगारैर्यथायोग्यंप्रयुज्यते।

स्थानमें पवनका प्रवेश न होसकै तहां बैठके स्वेदकर्मकरै॥ ८ ॥स्वेद किये पुरुषको बड़ेपात्रमें तैलभरि बैठावै तौ बातादिक दोष औ रसादि सप्तधातुके विकार मलको पतलाकरि उसके साथ निकल जातेहैं यह अन्य ग्रंथका मतहै और शार्ङ्गधरमते स्वेदी मनुष्यके पसीना निकलतेही रसादि सप्तधातुमेंस्थित बातादि बिकार मलको पतलाकरि निकल जातेहैं ॥ ९ ॥स्वेदीके चित स्वस्थकरने का यत्न जिसका स्वेदकरि पसीना निकालने से मल पतलाहो चित्त सावधानहो तौ छातीपर चंदन लगानेसे सावधान होगा जिसका शरीर तैलमें भिजाया गयाहै औ मल पतला गिरताहै उसकी आंखोंपर कदली वा केवड़ा के जलमें वस्त्र भिजोइ के धरनेसे चित स्वस्थहोगा ॥१०॥स्वेद अयोग्य अजीर्णी दुर्बल प्रमेही उरक्षतपीडितप्यासातुर अतीसारयुक्तरक्तपित्तरोगी पांडुशरीरी उदररोगी ॥ ११ ॥ मदार्त्ती गर्भिणी ऐसेरोगीको स्वेदन न करै जो अवश्य करनाहो तो सूक्ष्म स्वेदले ॥ १२ ॥ अल्पस्वेदनविधि हृदय अंडकोष नेत्रइन इनरोगनमें थोड़ा स्वेदले ॥ १३॥ अति स्वेदोपद्रव संधिपीर दाह तृष्णा ग्लानि भ्रमरक्तपित्त से फुनसी इनकी समताथ शीतोपचारकरै शांतिहोइ ॥ १४ ॥ अथतापस्वेद वालुकपड़ा कपड़े कीगेंद बनाइकै औ अग्नि ये छः भांतिके तापसे कहे जैसा जहां योग्य हो तैसा करै॥ १५ ॥ अथोष्माविधिः पत्थरादि तप्तकरि

उपनस्वेदःप्रयोक्तव्यो लोहपिंडेष्टिकाश्मभिः १६ प्रततैरम्लसिक्तै
श्चकार्येवस्त्रावर्वेष्टिते । अथवातविनाशार्हं द्रव्यक्काथरसादिभिः
१७ उष्णैर्घटंपूरयित्वापार्श्वेछिद्रंविधायच । विमुद्यास्यंत्रिखंडां
चधातुजांकाष्ठजांतथा १८ षडंगुलास्यांगोपुच्छांनाडीयुंज्याद्विह
स्तिकां १९ सुखोपविष्टस्वभ्यक्तगुरुप्रावरणावृतं २० हस्तिशुंडि
कयानाड्यास्वेदयेद्वातरोगिणां । पुरुषायाममात्रांतुभूमिमुत्कीर्य
खादिरैः २१ काष्ठैर्दग्ध्वातथाभ्युक्ष्यक्षीरधान्याम्लवारिभिः । वात
घ्नपत्रैराच्छाद्यशयानंस्वेदयेन्नरं २२ एवंमाषादिभिःस्विन्नैःशयानं
स्वेदमाचरेत् । ततोपनाहस्वेदंचकुर्याद्वातहरौषधैः २३ प्रदिह्यदेहं
वातार्तंक्षीरमासरसान्वितैः । अम्लपिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैःस्नेहसं

सेंकने को उपन कहे लोहे का गोला वा ईंट वा पत्थर तपाइ उ-
स पर खट्टा पदार्थ थोड़ा छिड़क सुखोष्ण भयेकेकी कांबल उढ़ाय
स्वेदन करै ॥१६॥ दूसराबात हारीकहे द्रव्यकुलादि क्काथ वारस उ-
ष्ण करि घड़े में भरि ॥१७॥मुख मूंदि बगल छेदि धातुवाका बांस
की दोहाथलंबी नल बनावै गोपूंछकी सूरति ॥ १८ ॥ तिसके खंड
तीनकरै एकछः अंगुल बाकीके दोसमान पतलीओरसे उस छः अंगु-
लके टुकडेका मोटामुख घड़ेके छेदमें प्रवेश उसमें मध्यखगड ऊंचा
करिजारै ॥१९॥ फिर तीसराखगड सीधालगाइ गजशुंडीसा करि
तीनों संधिमूंदि ॥२०॥ तब रोगी को घी व तिल लगाइ व लेपकरि
कांबल उढ़ाइ सब ओरसे ढकनिःसंधि करि तब उस गज शुंडोका
मुख कांबल के भीतर खोलि स्वेदन करै तो पसीना निकसै तृतीय
रोगीके शरीरसे बीताभर अधिक लंबा चौड़ा गढ़ाखोदि द्वादशां
गुल गहिरा खैरकी लकड़ी भरिफूंकि कारिझारि गढ़े में दूध वा
कांजी वा मट्ठा छिड़क ॥ २१ ॥ वायुहारी रंड पत्र बिछाइ रोगी
को सुलाइ भारी वस्त्र उढ़ावै तौ पसीना निकरै चौथापूर्व प्रकार
गढ़ा तपाइ उर्द औटि पानीले छिड़क रंड बड़ पातादि से शय्या
रचि पूर्ववत् स्वेदन करै ॥ २२ ॥ अथ अन्यांतरे बात हृतद्रव्य घड़ेमें
भरि जलभरि मुंह बंदकरिचारघड़ी आंचदे उतारिले रोगीको
उष्ण तिलमल खरहरी खाटपर सुलाय कपड़ा उढ़ाय नीचेघड़ाधरि

युतैः २४ ततोग्राम्यानूपमांसैर्जीवनीयगणेनच । दधिसौवीरकक्षारवीरतर्वादिनातथा २५ कुलत्थमाषगोधूमैरतसीतिलसर्षपैः । शतपुष्पादेवदारुशेफालीस्थूलजीरकैः २६ एरंडमूलबीजैश्चरास्नामूलकशिग्रुभिः । मिसिकृष्णाकुठेरैश्चलवणैरम्लसंयुतैः २७ प्रसारण्यश्वगंधाभ्यांबलाभिर्दशमूलकैः । गुडूचीवानरैबीजैर्यथालाभंसमाहृतैः २८ खिन्नैश्चवस्त्रसंवुद्धैःसदासंस्वेदयेन्नरः । महाशाल्वणसंज्ञोऽयंयोगःसर्वानिलार्तिहृत् २९ द्रवस्वेदस्तुवातघ्नद्रव्यक्काथेन पूरिते । कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टोवगाहयेत् ३० सौवर्णेरजतेवापिताम्रमायःसदारुजां । कोष्ठकंतत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषड्त्रिंशदंगुलं ३१ आयामेनत्वदैवस्याच्चतुष्कंटसृणंतथा । नाभेषडंगुलंयावन्मग्नः क्काथस्यधारया ३२ कोष्ठकेस्कंधयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ।

नितंब की ओर घट मुख छोर बाफदे ॥ २३ ॥ पसीना पोंछि पोंछि ले इस उस संज्ञक स्वेदते रसादिक सातो धातुके बातादिक दोष पसीने साथ सब निकसि जातेहैं ॥ २४ ॥ अथोपनाह क्रिया दश-मूलादि बातहृत द्रव्य ॥ अथोपनाह महा शाल्वण क्रिया अर्थात् पोटलिकासिक्तविधि ग्रामी मांस जलचरमांस जीवनी गण द्रव्य गोदधि सज्जी यवाखार खारीलोन बीरतर्वादि गण वा गुगुरु मूल ॥ २५ ॥ कुलथी उरद गेहूं अरसी तिल सरसौं सौंफ देवदारु निर्गुंडी मगरैला ॥ २६ ॥ रेंड़ी रासन मूल सहिंजन सोवा बीज पीपरि नाजबोई पांचौलोन ॥ २७ ॥ अनार कठकरैया असगंध बरिआरा दशमूल गुर्च किमाच बिया इनमें जितनी मिलै ॥ २८ ॥ तिन्हैं जलमें पीसि तपाइ पोटली बांधिके सेंके ठंढीपरे गरम तवेपर तपाय तपाय सेंकै इस शाल्वण प्रयोगसे सब बायु पीड़ा दूरहोतीहै ॥ २९ ॥ अथ द्रव स्वेद विधि दश मूलादि बायु हृत द्रव्यों का क्वाथ बनाइ रोगी कढ़ाउ वा चौकोन कोठ़ ॥ ३० ॥ सोने वा चांदी तांबा लोहा वा काठ छत्तीस अंगुल ऊंचा बनाइ बैठाइ ॥ ३१ ॥ वह काढ़ाले रोगी के ऊपर पतलीधार से नावै नाभि के छः अंगुल ऊंचे आवै तबक्काथको हटावै इसीप्रकार एक वा दो दिन टार टार करै इसी भांति तेल दूध घृत द्रवस्वेदन भी

एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेदयेन्नरं । एकांतरेद्व्यंतरेवास्नेहोयुक्तेव
गाहने ३३ शरीरेबलमाधत्तेयुक्तस्नेहोवगाहके । शिरामुखैःरोमकू
पैर्धमनाभिश्चतर्पयेत् ३४ जलसिक्तस्यवर्द्धंतेयथामूलेंकुरस्तरोः ।
तथाधातुर्विवृद्धस्तुस्नेहसिक्तस्यजायते ३५ नातःपरतरःकश्चिदु
पायोवातनाशनः । शीतशूलाद्युपरमेस्तंभगौरवविग्रहेः । दीप्तेग्नौ
मार्द्दवेजातेस्वेदनाद्विरतिर्मता ३६ सम्यक्स्विन्नंविमृदितंस्नानमु
ष्णांबुभिश्शनैः । भोजयेच्चानभिष्पंदिव्यायामंचनकारयेत् ३७
इतिश्रीशार्ङ्गधरेस्वेदविधिर्द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

शरत्कालेवसंतेचप्रावृट्कालेचदेहिनां । वमनंरेचनंचैवकारयेत्कु
शलोभिषक् १ बलवन्तंकफव्याप्तंहल्लासादिनिपीडितं । तथावमन
सात्म्यंचधीरचित्तंचवामयेत् २ विषदोषेस्तन्यरोगेमंदेग्नौश्लीप

करै फिर पवनको बचावै ऐसे हो तीनदिन ॥ ३२ ॥ घृतवा तैलल-
गाइकरै सबनसे अंग रोमोंका मुखखुलि जाताहै नः पवनप्रवेश
करनेपावै ॥३३॥ तो उनके मुखसे स्नेहादि पदार्थप्रवेशके वायु को
निकार देते हैं शरीर को तृप्त औ बलवान करतेहैं ॥ ३४ ॥ दृष्टांत
जैसेजलसे अंकुरकी जड़में जलसींचने से वृद्धमहै पुष्टहो तैसे द्रवसं-
ज्ञक स्वेदसेमनुष्यका रोगनाश हो उगारवहै ॥३५॥ तैसेही रसादि
सप्तधातुमें वातदोष बढ़ने से पेट वा मलमार्गमें भरभराहट हो
तो तैलस्वेद करै इससेपरे बातनाशक और यत्न नहीं जब ताईं
स्वेदकरै कि वायु शूल देहजकड़ना भारीपन दूरहोइ अग्निदीप्त
देह कोमल हलकीहो तब न करै ॥ ३६ ॥ स्वेदकरे पर तैललगाइ
सुखोष्णजल से न्हाइ कफघ्नत भोजन करै ॥ ३७ ॥ इतिशार्ङ्गधरे
उत्तरखण्डद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

शरद बसंत प्राविट्कालके आदि चतुरवैद्य बमन बिरेचन करा-
वैक्योंकि अश्विनीकुमार संहितादि सबग्रंथकार ऐसेही कहते
आयेहैं इससें मनुष्यकी प्रकृति शुद्ध रहतीहै॥१॥बमन योग्यजिसे
बमन करनेकी सामर्थ्यहो कफ व्याप्त हो मुखसे लारबहती हो
जिसेबमन हितहो धीरचित्तहो तिसेबमन करावै ॥२ ॥ बिष रोग

देतथा । हृद्रोगकुष्ठवीसर्पमेहाजीर्णभ्रमेषुच ३ विदारिकापचीकास श्वासपीनसवृद्धिषु । अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारके ४ नाशाताल्वोष्ठपाकेपुकर्णस्रावेद्विजिह्वके । गलगंड्यामतीसारेपित्तश्लेष्मगदेतथा ५ मेदोगदेरुचौचैववमनंकारयेद्भिषक् । नवामनीयस्तिमिरीनचगुल्मोदरीकृशः । नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ६ मदार्तोवालकोवृद्धःक्षुधितश्चनिरूहितः । उदावर्त्यूर्द्धरक्तीचदुश्छर्दिःकेवलानिली ७ पांडुरोगीकृमिव्याप्तःपठनात्स्वरघातकः । एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्याएविषपीडिताः ८ कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकाथस्यपानतः । सुकुमारंकृशंवालंवृद्धंभीरुंनवामयेत् ९ पीत्वायवागूमाकंठक्षीरतक्रदधीनिवा असात्म्यैश्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुत्क्लिश्यदेहिनः १० स्निग्धस्विन्नायवमनंदत्तंसम्यक्प्रव

अन्यरोग मंदाग्नि पीलपद अर्बुद हृद्रोग कुष्ट बिसर्प प्रमेह अजीर्ण भ्रम ॥ ३ ॥ बिदारी अपची कास श्वास पीनस वृद्ध अपस्मार ज्वर उन्माद रक्तातीसार ॥ ४ ॥ नाशा ओष्ठ तालुपाक कर्णस्राव द्विजिह्वक गलगंड अतीसार पित्तश्लेष्म मेद अरुचि इनरोगों में बैद्यवमन बतावै ॥ ५ ॥ वमन अयोग्य तिमिरी गुल्मरोगी उदररोग कृश दुर्बल अतिबूढ़ा गर्भिणी मोटा क्षतवती ॥ ६ ॥ मदपीड़ितबालकरूक्षदेही भूखा निरूहण वस्ती किया उदावर्ती ऊर्द्ध रक्तीछर्दिरोगी केवल वातार्ती पांडुरोगी कृमी वज्रबाक्य अमस्वरभंगी ऐसे रोगियों को वमन करावै ॥ ७ ॥ औ अजीर्णयुक्त विष पीड़ित कफव्याप्त इन मनुष्योंको मुरैठी मऊआकी छालका क्वाथ पिलाइ वमन करावै ॥ ८ ॥ औ सुकुमार दुबला बालक बूढ़ा भयभीत इनको कभी वमन न करावै ॥ ९ ॥ वमनके पूर्वउपचार जिसेवमन कराना हो उसे पहिले पेटभर यवागू दूध मैठा दही औ अनभावनपदार्थ औ कफकृत पदार्थ इनके खानेसे दोष ऊपर उभरआतेहैं तब वमन की औषधि देइ तौ वमन अच्छे प्रकार होताहै औस्नेह पानकिये को अच्छे प्रकार होताहै ॥ १० ॥ वमनयोग्य पदार्थसे वमन प्रयोग में सैंधव वा सहत युक्त औषधि हितकारक होतीहै जो तूतिया वा तांबा घृत युक्त देतेहैं वह विभत्स वमनहै जिसेविभत्सवमनदिये पर

संते । वमनेपुत्रसर्वेषुसैंधवंमधुनाहितं ११ विमत्सं वमनं देयं विपरीतं विरेचनं । क्वाथद्रव्यस्यकुडवंश्रावयित्वाजलाढके १२ अर्द्धभागावशिष्टंचवमनेष्ववधारयेत् । क्वाथपानेनवप्रस्थान्यष्टौमात्राःप्रकीर्त्तिताः १३ मध्यमापड्मितामोक्ताग्निप्रस्थाचकनीयसी । कल्कचूर्णावलेहानांत्रिपलंश्रेष्ठमात्रया १४ मध्यमांद्विपलांविंद्यात्कनीयांपलसंमितां । वमनेचापिवेगास्युरष्टौपित्तांतमुत्तमाः १५ षड्वेगामध्यमावेगाश्चत्वारस्त्ववरामताः । वमनेचविरेकेचतथाशोणितमोक्षणे १६ सार्द्धत्रयंदशपलंप्रस्थमाहुर्मनीषिणः । कफंकटुकतीक्ष्णोष्णैःपित्तंस्वादुहिमैर्जयेत् १७ सस्वादुलवणाम्लोष्णैस्संसृष्टं वायुनाकफं १८ कृष्णाराटफलैःसिंधुकफेकोष्णजलैःपिवेत् । पटो

रेचन देना होतौ घृत न खानेदेइ ॥११॥ वमन औषधि यदि क्वाथ का प्रमाण क्वाथकी द्रव्य कुड़व भरि कूटिकै आढ़क भर जलमें औटाइ आधा जलजाइ तब उतारिलेइ फिर वमन करने वाले मनुष्य को पिलावै ॥ १२ ॥ वमन क्वाथ पान करनेका प्रमाण वमन क्रियाका क्वाथ नव प्रस्थ पिलावै सो ज्येष्ठ मात्राहै छःप्रस्थ पिलावै सो मध्यम मात्राहै तीनप्रस्थ पिलावै सो छोटीमात्राहै ॥ १३ ॥ वमन कार्य में कल्कादिक औषधिका प्रमाण वमनमें कल्कचूर्ण अवलेह तीनतीन पलदेना सो बड़ीमात्राहै दो दो पलकी मध्यम मात्राहै एकएकपल की लघुमात्रा जानना ॥१४॥ वमनकार्य उत्तम मध्यम कनिष्ट वेगका प्रमाण जिस मनुष्यको वमन की औषधिदेइ उसको सातवार ताईं सबदोषगिरैं आठवीं बार पित्तगिरै तौ उत्तम वेगहै पांचबार में सबदोष गिरि छठीवार पित्तगिरै वह मध्यमवेगहै तीनबार में सब दोषगिरि चौथीवार पित्तगिरै वह कनिष्ट वेगहै ॥१५ । १६॥ वमनादिकमें प्रस्थप्रमाण वमन औ रेचन औ तिरारक्त मोक्षण अर्थात् फस्तलेने में प्रस्थ साढ़े तेरह पलका जानना ॥ १७ ॥ दोषविशेष में वमनोपचारद्रव्य कटु तीक्ष्ण उष्णपदार्थसे वमनकरावैसे कफातीका कफनाश होताहै मधुर शीतल पदार्थकरि वमनकरावै से पित्त नाश होताहै मधुर क्षार खटाई उष्ण पदार्थसे कफयुक्त बातनाशहोताहै सोंठ मिर्च पीपरि येतीक्ष्ण हैं मुनक्का अनारादि मधुर हैं ॥ १८ ॥

लकसानिवैश्चपित्तेशीतजलंपिवेत् १९ सश्लेष्मवातपीडायांस
क्षीरंमदनंपिवेत् । अजीर्णेकोष्णपानीयंसिंधुपीत्वावमेत्सुधीः २०
वमनंपाययित्वाचजानुमात्रासनेस्थितं । कंठमेरंडनालेनस्पृशंतंवा
मयेद्भिषक् २१ ललाटंवमनःपुंसःपार्श्वेद्वौचप्रबोधयेत् । प्रसेको
हृद्ग्रहःकोष्टकंडूदुश्छर्दितेभवेत् २२ अतिवांतेभवेत्तृष्णाहिक्कोद्गा
रौविसंज्ञता । जिह्वानिःसर्प्पणंचाक्ष्णोर्व्यावृत्तिर्हनुसंहतिः २३
रक्तछर्दिःष्ठीवनंचकंठपीडाचजायते । वमनस्यातियोगेतुमृदुकुर्या
द्विरेचनं । वदनांतःप्रविष्टायांजिह्वायांकवलग्रहः २४ स्निग्धा
म्ललवणैर्हृद्यैर्घृतक्षीररसैर्हितः । फलान्यम्लानिखादेयुस्त-

कफेवमनविधिः॥ कफ प्रकृतिको मैनफल सैंधव चूर्णकरि उष्णजल में पिलानेसे बारबार कफगिरैगा पित्तप्रकृति को पटोल नीमपत्र चूर्ण करि ठंढे पानी में पिलाने से बारबार पित्त गिरैगा॥ १९॥ औ कफबात पीड़ित को मैनफल दूधमें पिलाने से कफबात दूरहो औ सैंधव उष्णजलमें पिलाने से अजीर्ण मिटै॥२०॥ वमन करनेकी रीति वमन औषधि पीके दोनो घुटने तोरिकै बैठे औ रंडपत्र की डंडी शुद्धकरि गरेमें प्रवेश करै तौ वमन होगा औ वमन करनेवाले का मस्तक औ दोनों ओरकी पसुरी सहराता जाय इसीरीतिसे वैद्यलोग वमन करातेहैं॥ २१॥ वमनको मलक्षण जो वमन अच्छी तरह न होइ तौरोगी के मुखसे लार बहै हृदयमें पीड़ा रहै कोठेमें खजुरी ये उपद्रव होइं॥ २२॥ अतिवमन उपद्रव तृषा अधिक ऊचकी डकार अज्ञानता जीभ निकलना नेत्र चंचलता संभ्रम चित ठोढ़ी जकड़ना मुखसे रुधिर गिरना बारबार थूकना कंठ पीड़ा ये अति वमनके लक्षणहैं॥ २३॥ अतिवात चिकित्सा जो वमन प्रयोगसे वमन अधिक होतौ उसे मृदुरेचनकरै॥ २४॥वमने जिह्वाऐंठनपरचिकित्सा ॥ अतिवमकाई अतिजीभ ऐंठ जातीहै उसेजो पदार्थ अच्छा लगताहो चिकनावा खट्टा वा सलोनासोघीयुक्तको खवाइ उसकेमुखमें रख देना वा दूधदही घृत इनमें कोईमें सानि मुखमें राखै औउसके सन्मुख औमनुष्य खट्टेकलादि खिलावै तौउसे देखनेसे सामनीकी

स्यचान्यग्रतोनराः २५ निःसृतांनतिलद्राक्षाकल्कैर्लिप्त्वाप्रवेशये त् । व्यावृत्तेऽक्षिणिघृताभ्यक्तेपीडयेच्चशनैःशनैः २६ हनुमोक्षेस्मृतः स्वेदोन्यस्तंचश्लेष्मवातहृत् । रक्तपित्तविधानेनरक्तच्छर्दिमुपाचये त् २७ धात्रीरसांजनोशीरलाजाचन्दनवारिभिः । मंथंकृत्वापा ययेच्चसघृतंक्षौद्रशर्करं । शाम्यंतनेनकृष्णाद्यापीडाछर्दिसमुद्भवाः २८ हृत्कंठशिरसांशुद्धिंदीप्ताग्निंचैवलाघवं । कफपित्तविनाशश्च सम्यग्वांतस्यचेष्टितं २९ ततोपराह्नेदीप्ताग्निंमुद्गषष्टीकशालि भिः । हृद्यैश्चजांगलरसैःकृत्वायूषंचभोजयेत् ३० तंद्रानिद्रास्य दौर्गंधंकंडूश्चग्रहणीविषं । गुर्वांतस्यनपीडायैःभवंतीतिकदाचन ३१ अजीर्णंशीतपानीयंव्यायाममैथुनंतथा । स्नेहाभ्यंगंप्रकोपंच दिनैकंवर्जयेत्सुधीः ३२ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरेतृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

जीभसे पानीछुटै तौजीभ कोमल होजाती है औप्रकृति स्वस्थहो- तीहै ॥ २५ ॥अतिवांतसे जीभबाहर निकल आवै उसकायत्न ॥ जो उवाकते उवाकते जीभनिकल आवै तौ तिल औ दाख पीसि जीभ परलेपकर बैठायदेय औरजो आंखें चंचल भईहोंतौ आंखपर घी लगाइ धीरे धीरे सहराइदेइ ॥ २६ ॥ वमने हनुस्तंभ उपचार जो वमनके अंतमें ठोढ़ीजकड़ जाय तौ सेंकने औ कफनाशहारी द्रव्य सूंघनेसे खुलजाताहै वमनके अंतमें रक्तगिरनेकायत्न जोवमनांतमें रुधिर आनेलगे तौ मध्यखंडमें कहा रक्त पित्तोपचार करै ॥ २७ ॥ अतिवमनसे प्यास बढ़नेकायत्न जो तृष्णाबढ़ै आंवरेकारस रसौत धानकी खीलैं लालचंदन खस ये पांचौपलभर चारपल ठंढेपानीमें मथिके घी सहत संयुक्त मिश्रीडारिकै पिलावै तौ शांतिहोइ रसांजनकहै रसवत बनानेकी विधि दारुहरदीका क्वाथकरि तिसके समान बकरीका दूध मिलाइ औटि गाढ़ाकरि सुखाइले उसे रसांजन कहतेहैं ॥ २८ ॥ वमनउत्तम होनेकालक्षण जो वमन सम्यक् होतौ हृदय कंठ मस्तक के कफादिकका दोष न रहै अग्निदीप्तहो अंगहलकाहो कफपित्तजनित विकार नाशहोइ २९ ॥ वमनपरपथ्य मूंगवा साठीके चावरका यूसदेना वा हि- रनकामांस अभावे खसीमांसका यूसदे ॥ ३० ॥ सम्यक् वमनभये

स्निग्धस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनं । अवांतस्यत्वधःस्त्रस्तोग्रहणींछादयेत्कफः १ मंदाग्निगौरवंकुर्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकां । अथवापाचनैरामंश्लेष्माणंचैवयोजयेत् २ स्निग्धस्यस्नेहनैःकार्य्यंस्वेदैःस्विन्नस्यरेचनं । शरद्वतौवसंतेचदेहशुद्धौविरेचयेत् । अन्यदात्ययिकेकालेशोधनंशीलयेद्बुधः ३ पित्तेविरेचनंदद्यादामोद्भूतेगदेतथा । शरीरजानांदोषाणां क्रमेणापरमौषधं । वस्तिर्विरेकोवमनं तथा तैलंघृतंमधु ४ दोषाःकदाचित्कुप्यन्ति जितालंघनपाचनैः । येतु

येरोगनहीं रहते नहोतेहैं तंद्रा निद्रा मुखमें दुर्गंध खाज संग्रहणी बिषदोष ॥ ३१ ॥ वमनपर संयम भारी औगरिष्ट पदार्थ औ ठंढा जल परिश्रम मैथुन तेलमर्दन क्रोध जिसदिन वमन करै तौइनसे बचारहै॥ ३२ ॥ इतिशार्ङ्गधरेउत्तरखंडेतृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

वमनांतेबिरेचन प्रथम मनुष्य स्नेह पानादिक कर्मकरि स्नेह कर्मकरै फिरवमन करै तबरेचनकरै सोरेचन उत्तमप्रकारहै औ प्रथमकर्महीन रेचनकरै कफनीचेजाय ग्रहणीकहे पित्तधरा अग्नि धरा छादलेताहै ॥ १ ॥ इसकारणसे अग्निमंद देहभारी देह व-काड़ना प्रवाहिकहैं दारुण अतीसार येरोग उत्पन्नहोतेहैं जो कर्महीन रेचन औषदिया चाहै तौ नीचेगिरनेवाला कफ औआंव तिससूखे रेंडकीजड़ आदिसेवन कराइ पचाइ रेचनकरै औभेद चरक सुश्रुतवाग्भट्ट इनका मतयहहै कि प्रथमवमन कराइ छःदिन बिताइ तीनदिन स्नेहपान कराइ फिरतीन स्वेद साधित तीनबाद सोरहै दिनलघु भोजन दे रेचन करावै ॥ २ ॥रेचनका दूसराप्रकार जो घृत दूधकरि स्निग्ध मनुष्य वा मट्टीके गोला वा ईंटकरि स्वे-दित मनुष्यतिसे रेचन औ वमनदे औक्वार कातिक चैत बैशाख मेंरेचनकर्मकिये देह शुद्ध होजातीहै औजो वैद्यरोगीका रोगवि-चारतिनके निवारणार्थ अनुक्तकाल मेंभी बिरेचनकरै॥ ३ ॥बिशेष रेचनयोग्य पित्त बिकार आमवायु उदररोग आध्मान वायुकोष्ठ बद्ध इनरोगोंको बिशेष शुद्धकार करा परमौषधि क्रमसे जानना वस्तिकर्म रेचनकर्म वमनकर्म तेल घृत सहत यथारोग यत्न करै ४ ॥ दोषनिवारणमें उत्कर्ष रेचन वातादिदोष लंघन पाचनकरै दमजातेहैं परंतु थोड़ेकुपथ कियेतेउभरआतेहैं औरजो रेचनकरि

संशोधनैःशुद्धानतेषांपुनरुद्भवः५ वालवृद्धावतिस्निग्धः क्षतक्षीणो भयान्वितः । श्रान्तस्तृषार्त्तःस्थूलश्च गर्भिणीचनवज्वरी ६ नव प्रसूतानारीच मन्दाग्निश्चमदात्ययी । शल्यार्दितश्चरूक्षश्च न विरेच्याविजानता ७ जीर्णज्वरीगरव्याप्तो वातरक्तीभगन्दरी । अर्शःपाण्डूदरोग्रन्थी हृद्रोगारुचिपीडिताः ८ योनिरोगःप्रमेहार्त्ता गुल्मप्लीहव्रणार्दिताः । विद्रधीछर्दिविस्फोट विशूचीकुष्ठसंयुताः ९ कर्णनासाशिरोवक्र गुदमेढ्रामयान्विताः । प्लीहशोफाक्षिरोगार्त्ता कृमिक्षारानिलार्दिताः । शूलिनोमूत्रघातार्त्ता विरेकार्हानरामताः १० वहुपित्तोमृदुप्रोक्तो वहुश्लेष्माचमध्यमः । वहुवातःक्रूरकोष्ठो दुर्विरेच्यःसकथ्यते ११ मृद्वीमात्रामृदौकोष्ठे मध्यकोष्ठेचमध्यमा । क्रूरेतीक्ष्णामताद्रव्यैः मृदुमध्यनतीक्ष्णकैः १२ मृदुर्द्राक्षापयश्चांवु तैलैरपिविरिच्यते । मध्यमस्त्रिवृतातिक्ता राजवृक्षैर्विरिच्यते ।

वातादि दोषोंसे शुद्धकिये शरीर वेगनहीं उभरते ॥ ५ ॥ रेचनके अयोग्य बालक वृद्ध अतिस्नेह पानपर उरक्षत क्षीणमनुष्य भय युक्त श्रमित तृषित स्थूल शरीर गर्भिणी नवज्वरी ॥ ६ ॥ तुरतपुत्र जनितास्त्री मंदाग्नि अतिमंद पीड़ित शल्यवेधित क्षतयुक्त रूक्ष कहेनिस्तेज मनुष्य इनको रेचननहीं देना ॥ ७ ॥ रेचनयोग्य जीर्ण ज्वरी विषपीड़ित वातरक्त भगंदर रोगी अर्शरोगी पांडुरोगी उदररोगी ग्रंथि रोगीहृदयरोगी ॥ ८ ॥ योनिये प्रमेह गुल्म प्लीहा व्रणी विद्रधि छर्दि विस्फोटक विसूची ॥ ९ ॥ कुष्टकानरोग नाक-रोग मस्तकरोग मुखरोग गुदारोग गरमी पक्षत सूजन नेत्ररोग कृमिरोग सोम्लादिरोग शूलमूत्रघात इनरोगनकरि पीड़ित म-नुष्यको रेचनदीजै ॥ १० ॥ रेचनतीनप्रकार कोमल मध्यम कराल कोष्टवेधक जिसमनुष्यकी कोमल प्रकृतिहो उसका कोठा मृदुहै जिसकी केवल प्रकृतिहै उसकाकोठा मध्यमहै जिसकी केवलवात प्रकृतिहो उसका कठोर कोठाहै सो कड़ेकोठेवाला रेचन विषम मेंदुखपाताहै उसे रेचनकरनेसे मलद्राव शोधनहींहोता ॥ ११ ॥ कोमल कोठा समुझि मृदुरेचन करावै मध्यम कोठावालेको मध्यम मात्रविरेचन करावै ॥ १२ ॥ मृदुमध्यमादिक कोष्ठीको मृदुमध्-

क्रूरंस्नुकपयसा।हेम क्षीरोदन्तीफलादिभिः १३ मात्रोत्तमाविरेक स्य त्रिंशद्वेगैःकफान्तकै । वेगैर्विंशतिभिर्मध्या हीनोक्ता दशवेग कैः १४ द्विफलंश्रेष्ठमाख्यातं मध्यमंचपलंभवेत् । पलार्द्धंचकषा याणां कनीयस्तुविरेचनं १५ कल्कमोदकचूर्णानां कर्षमध्वाज्य लेहतः । कर्षद्वयंपलंवापि वयोरोगाद्यपेक्षया १६ पित्तोत्तरेत्रिवृच्चू र्णं द्राक्षाक्काथादिभिःपिवेत् । त्रिफलाक्काथगोमूत्रैः पिवेद्दोषंकफा र्दितः १७ त्रिवृत्कुंठीसैन्धवानां चूर्णमम्लैःपिवेन्नरः । वातार्दितो विरेकाय जांगलानांरसेनवा १८ एरण्डतैलंत्रिफला क्काथेनद्विगु णेनवा । युक्तम्पीत्वापयोभिर्वा नचिरेणविरच्यते १९ त्रिवृत्ताकौ टजंवीजं पिप्पलीविश्वभेषजं । मृद्वीकायारसक्षौद्रं वर्षाकालेवि

मादि औषधिदे कोमल कोष्टीको दाख दूध रेंड़ीका तेलयुक्त करि रेचनदे मध्यम कोष्टीको निशोथ कटुकी अमलतास इनको रेच- नदे क्रूरकोष्टी को सेंहुड़का दूध वा जमालगोटा इनकारेचनदे १३ ॥ उत्तम मध्यम कनिष्ट रेचन प्रमाण मल गिरते गिरते अंत में कफगिरे ऐसे तीसवेग आवैं सो उत्तम मात्रा है वेगकहे दस्त जिसमें बीसवेगतक अंतमें कफगिरे वह मध्यमहै जिसमें दशवेगतक कफगिरे वह हीनरेचन मात्राहै॥१४॥रेचनक्काथादि प्रमाण रेचनमें काढ़ाकी मात्रा दोपल उत्तम एक मध्यम आधपल कनिष्टमात्राहै १५ ॥रेचन कल्कादिक प्रमाण कल्क मोदक चूर्णतीनौंका कर्ष कर्ष प्रमाणहै औ सहत घृतयुक्त रेचनदेइ वा रोगीका रोग अव- स्थावल देखि दोकर्षसे पलभरतक यथोचित मात्रा देना ॥ १६ ॥ रेचनेद्रव्यप्रकारः ॥ पित्तमें निशोथ चूर्ण दाख क्काथमें गुलकंद गुलाबफूल बड़ीसौंफके काढ़े सेंदेइ कफकोपमें सोंठि मिर्च पीपरि चूर्ण त्रिफला क्काथमें पिआवै कफदोष दूरहोइ ॥ १७ ॥ वातकोपमें निशोथ सोंठ सैंधव चूर्ण नींबूरस वा कांजी वा जंगली जानवरके मांसका यूषयुक्तदेइ तौरेचन अच्छाहो वायुकोप शांतहो ॥ १८ ॥ अपर औषधि रेचनपर रेंड़ीतेल से दूना त्रिफला क्काथ प्यावै वा दूनादूध युक्त प्यावै भाड़ा जल्दहो ॥ १९ ॥ रेचने ऋतुमेव निशोथ इन्द्रयव पीपरि सोंठि दाख के क्काथ सहत डारि वर्षामें प्यावै ॥

रेचनं २० त्रिवृद्दुरालभामुस्ता शर्करादिव्यचन्दनं । द्राक्षांबुनास यष्ट्याह्वंशीतलंचघनात्यये २१ त्रिवृत्यांचित्रकंपाठा मजाजीशर लांवचं । हेमक्षीरंचहेमन्ते चूर्णमुष्णांबुनापिवेत् २२ पिप्पलीना गरंसिन्धु श्यामाचत्रिवृतासह । लिहेत्क्षौद्रेणशिशिरे वसन्तेचवि रेचनं । त्रिवृत्ताशर्करातुल्या ग्रीष्मकालेविरेचनं २३ अभयामरिचं शुण्ठी विडंगामलकानिच । पिप्पलीपिप्पलीमूलं त्वक्पत्रंमुस्त मेवच २४ एतानिसमभागानि दन्तीचत्रिगुणाभवेत् । त्रिवृदष्टगु णाज्ञेया षड्गुणाचात्रशर्करा २५ मधुनामोदकंकृत्वा कर्षमात्रप्र माणतः । एकैकंभक्षयेत्प्रातः शीतंचानुपिवेज्जलं २६ तावद्विरच्य तेजन्तुर्यावदुष्णांनसेव्यते । पानाहारविहारेषु भवेन्नियंत्रितस्स दा २७ विषमज्वरमन्दाग्नि पाण्डुकासभगन्दरान् । दुर्नामकुष्ठ गुल्मार्शो गलगण्डभ्रमोदरान् २८ विदाहप्लीहमेहांश्च यक्ष्माणां नयनामयान् । वातरोगंतथाध्मानं मूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीं २९ अभ यामोदाकाह्येते रसायनवराःस्मृताः । पृष्ठिपार्श्वोरुजघनं कट्यूदर

२० ॥ शरद्में निशोथ जवासा मोथा सुगन्धबाला मिश्री श्वेतच- न्दन मुरेठी दाख क्राथमें प्यावै तौ रेचनहो ॥ २१ ॥ हेमन्तमें नि- शोथ चीता पाढ़ा जीरा देवदारु वच चोक इनकाचूर्ण उष्णजल के साथ पियेतौ रेचन हो ॥ २२ ॥ शिशिर बसन्तमें पीपरि सोंठि सैं- धव बिधारा निशोथ इनकाचूर्ण सहतयुक्त चाटैतौ रेचनहो ग्रीष्म में निशोथका चूर्ण शक्कर समभाग युक्त करि फांकै तौ रेचन हो ॥ २३॥ रेचनपर अभयादिक मोदक हड़ मिर्च सोंठि विडंग आंवरा पीपरि पीपरामूल तजपत्रज मोथा ॥२४॥ सब समभाग ले जमाल- गोटाकीजड़ त्रिगुण निशोथ अठगुणा शक्कर छःगुणी ॥ २५ ॥ सहत में सब कर्षकर्षभर की गोलीबांधि प्रभात एकखाय शीतलजलपि- यै ॥ २६ ॥ जब वेगमलको रोकाचाहै तब तत्ताजलपिवै और खान पान बिहार यत्नसे परहेज रक्खै॥ २७ ॥ तौ विषमज्वर मंदाग्नि पांडुकास भगंदर दुर्नाम कुष्ट गुल्म अर्श गलगंड भ्रम उदररोग॥ २८॥ दाहप्लीह प्रमेहयक्ष्मानेत्ररोग वातरोग पेटफूलना मूत्रकृच्छ्र

रुजंजयेत् । सततंशीलनादेषां पलितानिप्रणाशयेत् ३० पीत्वा विरेचनंशीतंजलैः संसिच्यचक्षुषी । सुगन्धिंकिंचिदाघ्रायतांबूलं शीलयेद्वरं ३१ नवातस्थोनवेगांश्च धारयेन्नस्वपेत्तथा । शीतांबु नास्पृशेत्क्कापिकोष्णंनीरंपिवेन्मुहुः ३२ बलादौषधिपित्तानि वायुर्वान्तेयथाव्रजेत् । रेकात्तथामलंपित्तं भेषजंचकफोव्रजेत् ३३ दुर्विरक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धस्तंकुक्षिशूलता । पुरीषवातसंगश्चकण्डूमण्डलगौरवाः । विदाहोरुचिराध्मानं भ्रमश्छर्दिश्चजायते ३४ तंपुनः पाचनैःस्नेहैः पक्त्वासंनह्यरेचयेत् । तेनास्योपद्रवायान्ति दीप्ताग्नेर्लघुताभवेत् ३५ विरेकस्यातियोगेन मूर्च्छाभ्रंशोगुदस्यच । शूलंकफातियोगःस्या न्मांसधावनसंन्निभं । मेदोनिमज्जलाभासं

पथरी ॥ २९ ॥ पीठ पसुरी छाती जांघ कटि पेट इनकेरोगदूर होंइस अभ्यासोदक सेवनसे तुरतही बालपकनामिटै यहरसायन श्रेष्ठहै ॥ ३० ॥ रेचन अच्छेप्रकार होनेकायत्न रेचनौषधि पीकैठंढे जलसे आंखैं मुख पोछै सुगंधादि फूल सूंघै पानखायाकरै इसयोग के करसे चित्त स्वस्थरहताहै अच्छीतरह बेगआतेहैं ॥ ३१ ॥ रेचन समय साधना पवन मलमूत्र न रोकै न सोवै ठंढा जल न छुवै ज्यों ज्यों बेगहोइ त्यों बारबार तत्तापानी पिये इससे खुलकै मलगिरैगा ॥ ३२ ॥ सम्यक् रेचनमें जैसे सम्यक् बमनमें कफ औ खाईहुई औषधि पित्त वायु सबदोष मुखसे गिरतेहैं तैसेही येसब मलमार्ग से गिरते हैं ॥ ३३ ॥ रेचन देनेपर बेग न होइ तिसके उपद्रव जिस मनुष्यको रेचनदेनेसे बेग न आवै अच्छीतरह न आवै उसकी नाभि के नीचे कड़ापन और कोष में शूल मलमें वायु मिलजाइ खजुरी मंडल देह जकड़ना दाह अरुचि पेटफूलना भ्रम छर्दि ये उपद्रव उत्पन्न होतेहैं ॥ ३४ ॥ अशुद्धरेचनयत्न जिसे रेचन अच्छीतरह न हुआ उसे रातको अरण्डधादि पाचन दे फिर स्नेह बिधिसे घृत पिलाइ कोठा चिकनाकरि रेचन देनेसे शुद्ध रेचन होगा सब उपद्रव शांत होगा औ जठराग्नि दीप्त हो देह हलकी ॥ ३५ ॥ अति विरेकै उपद्रव मूर्च्छा कांचनिकरन पेट में शूल कफ अधिक गिरना मांसके धोवन सदृश गिरना चरबी सी वा पानी व रुधिर

रक्तंवापिविरिच्यते ३६ तस्यशीतांवुभिःसिक्तं शरीरंतन्दुलांवुभिः। मधुमिश्रैस्तथाशान्तैः कारयेद्वमनंमृदु ३७ सहकारत्वचःकल्को दध्नासौवीरकेणवा । पिष्टोनाभिप्रलेपेन हंत्यतीसारमुल्वणं ३८ अजाक्षीरंपिवेद्वापि वैंकिरंहारिणांतथा । शालिभिर्षष्टिकैःस्वल्पं मसूरैर्वापिभोजयेत् ३९ शीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैः कुर्य्यात्संग्रहणं भिषक्। लाघवंमनसस्तुष्टि मनुलोमंगतेनिले ४० सुविरिक्तंनरंज्ञा त्वापाचनंपाचयेन्निशि । इन्द्रियाणांवलंवुद्धेः प्रसादंवह्निदीपनं। धातुस्थैर्य्यंवयस्थैर्य्यं भवेद्रेचनसेवनात् ४१ प्रवातसेवाशीतांवु स्नेहाभ्यंगमजीर्णतां । व्यायाममैथुनंवापि नसेवेतविरेचितः ४२ शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागूंभोजयेत्कृतां । जांगलैर्विष्किराणां वारसैःशाल्वोदनंहितं ४३ इतिशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेरेचनाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

गिरै॥३६॥ अति बिरेकोपद्रव चंल ठंढेजलसे शरीरपोछै वा गुलाब केवड़ा छिरकै वस्त्रसे पोछै वा चाउरका धोवन सहतयुक्तपीवै औ शरद औषधि दे मृदुबमन करावै इससे उपशमन होता है॥ ३७ ॥ आम की छाल गोदधि सौबीर येपीसि कल्क करि नाभिपर लगावै तो वेग बंदहो सौबीरमें आमकीछाल पीसि नाभिपर लगावै सौबीरकी क्रिया मध्यखंडमें कहीहै॥ ३८॥ भाड़ा बंदकरने को बकरी का दूध शकुनीचिड़ियाका मांस यूस भात वा मसूरी सत साठीचावर का भात खाइ॥ ३९ ॥ औ अनार सेवनकरै ठंढे पदार्थ का सेवनकरै बेग बंद होइ स्वल्प बिरेके लक्षण शरीर हलका प्रसन्नचित्त स्वस्थ गमन बायु ऐसेलक्षण देखि राति को पाचनदेना वा पाचनार्थ रेंडमूल सोंठि धनियेकाकाथ दे ॥ ४० ॥ रेचन सेवनसे इंद्रियां बलवान् हों बुद्धि प्रसन्नरहै अग्नि दीप्त हो धातुपुष्ट अवस्थाबढ़ स्थिर होतीहैं॥ ४१ ॥ रेचनपर बर्जित बयार ठंढाजल तेलस्पर्श अजीर्ण श्रम मैथुन इनसे बचे॥ ४२ ॥ रेचन पर पथ्य चाउर मूंगका यवागू दा हरिणादिमांसका यूस वा लवा बटेर तीतरमांसका यूस भातमें दे॥ ४३ ॥ इतिश्रीशारंगधरसुधाकरे उत्तरखण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

वस्तिर्द्विधानुवासाख्यो निरूहश्चततःपरं । वस्तिभिर्दीयतेय स्मात्तस्माद्वस्तिरितिस्मृतः १ यःस्नेहैर्दीयतेसस्या दनुवासननाम कः । कषायक्षीरतैलैयो निरूहःसनिगद्यते २ तत्रानुवासनाख्यो हि वस्तिर्यःसोत्रकथ्यते। पूर्व्वमेवततोवस्ति र्निरूहाख्योभविष्य ति ३ निरूहादुत्तरंचैव वस्तिःस्यादुत्तराभिधः । अनुवासनभेदैश्च मात्रावस्तिरुदीरितः ४ पलद्वयंतस्यमात्रा तस्माद्द्वौपिवाभवेत् । अनुवास्यरूक्षस्या त्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिली ५ नानुवास्यस्तुकुष्ठी स्यान्मेहीस्थूलस्तथोदरी । अस्थाप्यानानुवास्याःस्यु रजीर्णोन्माद तृट्युतः॥शोकमूर्च्छारुचिभयश्वासकासक्षयातुराः६ नेत्रंकार्यंसुवर्णा दिधातुभिर्वृक्षवेणुभिः । नलैपितैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते ७ एकवर्षात्तुषड्वर्षंयावन्मानंषडंगुलं । ततोद्वादशकंयावन्मानंस्याद

अथ बस्तिकर्म गुदाकेभीतर अंडकोश की जड़ताईं द्रव्य भरि पिचकारी देनेको बस्ति कहतेहैं सो दोप्रकार की है अनुवासन१ निरूहण२ जिसमें घी तेलादि चिकनी वस्तु भरिदीजै उसे अनु- वासन वस्तीकहैं औकाढ़ा दूधतेलमिश्रित पिचकारीभरि पीड़ि- तकरै वह निरूहण बस्तीहै ॥ १ ॥ २ ॥ सो प्रथम अनुवासन वस्तीहै पीछे निरूहणहै इसीसे निरूहणको उत्तरवस्तीभी कहतेहैं अनु- वासनकी द्रव्यका प्रमाण स्नेहादि दोपल वा एकपल का प्रमाण जानना ऐसे पिचकारी के भेदहैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ अनुवासन योग्य रूक्ष प्रकृती वा स्नेह पान रहितको वा अग्निदीप्तकरनेको केवल बात रोगीको ये अवश्य अनुवासन योग्यहैं ॥ ५ ॥ अथानुवासन अयो- ग्य निरूहण योग्य कुष्टी प्रमेही मोटाशरीर उदररोगी ये अनु- वासन योग्यनहीं औ अजीर्ण उन्मादीतृषी शोक मूर्च्छा अरुचि भय श्वासकास क्षयइनसेपीडितको निरूहणवस्तीअयोग्यहै ॥६॥ परंतु अनुवासन योग्यहै वस्तीकहै पिचकारी निर्माणविधि नेत्र कहै पिचकारी की नलजो गुदामेंप्रवेशीजाय सो सुवर्णादिधातु की बांस नरकुलगजदंत मृगसींगकी औ अग्रभाग पन्नावा बिल्लौ- रकीबनावै ॥ ७ ॥ नलीयोग्य अवस्था जोवर्ष एकसे छः वर्ष ताईं बालकके वस्तीकी नली छःअंगुलबनावै औ छः वर्ष से बारहवर्ष

ष्टसंयुतं । ततःपरंद्वादशभिरंगुलैर्नेत्रदीर्घता ८ मुद्गच्छिद्रंकलापा
भंछिद्रंकोलास्थिसन्निभं।यथासंख्यंभवन्नेत्रंश्लक्ष्णंगोपुच्छसन्निभं
९ आतुरांगुष्ठमानेनमूलेस्थूलेविधीयते। कनिष्ठिकापरीणाहमग्रेच
गुटिकामुखं १० तन्मूलेकर्णिकेद्वेचकायेभागाच्चतुर्थकात् । योजये
त्तत्रवस्तिंचबंधद्वयविधानतः ११ मृगाजशूकरगवांमहिषस्यापिवा
भवेत् । मूत्रकोशस्यवस्तिस्तुतदलाभेनचर्मजः । कषायरक्तःसुमृदु
वस्तिःस्निग्धोदृढोहितः १२ व्रणवस्तेरक्तनेत्रंस्यात्श्लक्ष्णमष्टांगु
लोन्मितं। मुद्गच्छिद्रंगृध्रपक्षनालिकापरिणाहिच १३ शरीरोपचयं
वर्णंबलमारोग्यमायुषः।कुरुतेपरिवृद्धिंचवस्तीसम्यगुपासितः१४
दिवाशीतेवसंतेचस्नेहवस्तिःप्रदीयते । ग्रीष्मवर्षाशरत्कालेरात्रौ

ताईंकी आठअंगुलकी बनावै औ बारहबर्षसे ऊपर वालेकी नली बारहअंगुलकी बनावै ॥ ८ ॥ नली छिद्रप्रमाण औ निर्माणविधि छः अंगुलकी नलीका प्रवेश करनेवाला मुखमूंग समानकरै नीचे काछोटी अंगुरीसमान औ आठअंगुलका मटरसा दूसरा मध्य अंगुरीसा बारहअंगुल वालीका भरबेरीकेबेरसमानदूसरा अंगुरी समानराखै नलीबहुत चिकनीरहै गोपुच्छसदृश॥९ ॥ एकओर पतली दूसरी ओरमोटी मोटीओरके चौथ्याई भागमें दोछल्ले जड़ेहों तिसमें थैलीहरिणादिके मूतने की चढ़ाइ पूर्वोक्त छल्लों का मध्यथैली समेत बहुतपुष्टकरै जिसमेंथैली औषधि न औरराह से निसरै तब पिचकारी ठीक जानो ॥ १० । ११ ॥ थैली निर्मित जानो हरण छाग बराह बैल भैंसा इनकेमूत्र की थैली उस नली में लगावै जो येनमिलैं तौ इनके चमड़े की कमलपत्र सम काटि दोनोंओर छील साफकरि थैली समान बनाइ नलीपर चढ़ावै॥ १२ ॥ व्रणादि पिचकारी का प्रमाण घाव फोड़ा नासूरादि की पिचकारी आठअंगुल लम्बी मूंगपैठने माफिक छेद रहै गिद्धके पक्षसदृश मोटी अतिचिकनी पतली छोटी नासूर व्रणयोगहै॥१३॥ वस्ती गुणवस्तो अच्छेप्रकार हो तौ शरीरपुष्ट औ कांतिबल आरोग्य आयु वृद्धि करै ॥ १४ ॥ वस्तीसे वनकाल बसंतऋतु में सन्ध्या समय स्नेह वस्ती करै अनुवस्ती करना ग्रीष्म बर्षा शरदमें रात

स्यादनुवासनं १५ नचातिस्निग्धमशनंभोजयित्वानुवासयेत् । मंदंमूर्च्छांचजनयेत्द्विधास्नेहःप्रयोजितः १६ रूक्षभुक्तवतोत्पन्ने वलंवर्णंचहीयतेयुक्तस्नेहमतोजंतुंभोजयित्वानुवासयेत् । हीनमात्रावुभौवस्तीनातिकार्यकरौस्मृतौ १७ अतिमात्रौतथानाहक्लमातीसारकारकौ । उत्तमस्यपलैःषड्भिर्मध्यमस्यपलैस्त्रिभिः १८ पलार्द्धेनहीनस्ययुक्तामात्रानुवासने । शताह्वासैंधवाभ्यांचदेयं स्नेहेचचूर्णकं १९ तन्मात्रोत्तममध्यान्ताःषडतुर्द्वयमाषकैः । विरेचनात्सप्तरात्रेगतेजातवलायच २० भुक्तान्नायानुवास्यायवस्तिर्देयोनुवासनः । अथानुवासस्त्वभ्यक्तमुष्णाम्बुस्वेदितंशनैः २१ भोजयित्वायथाशास्त्रंकृतंचक्रमणंततः । उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंयोजयेत्स्नेहवस्तिना २२ सुप्तस्यावामपार्श्वेनवामजंघाप्रसारिणः । कुंचितापरजंघस्यनेत्रंस्निग्धेगुदेन्यसेत् २३ वध्वावस्तिंमुखंसूत्रे वामहस्तेनधारयेत् । पीडयेद्दक्षिणेनैव मध्यवेगेनधीरधीः २४

को करना रोगीको उष्ण चिकना भोजन रातको खिलाइ अनुवासन करने से मद वा मूर्च्छा उत्पन्न होतीहै औ रूखेभोजन से बल क्रांति हानिहोय ये दूनोंतरह वस्तीकर्मकरे येरोग होतेहैं ॥ १५ ॥ वस्तीकर्म में न्यूनाधिक मात्रादोष अनुवासन वा निरूहण में हीन मात्रा देनेसे रोग नहींजाता अति मात्रा देने से अनाह ग्लानि अतीसार ये उपजतेहैं ॥ १६ ॥ वस्ती उत्तममात्रा छःपलकी बलीको अनुवासन देना मध्यम बलको तीनपल की बलहीन को हीनमात्रा डेढ़पल देना ॥ १७ ॥ स्नेह में और द्रव्य मात्रा शतावरि सैंधव का चूर्ण छःमाशे की उत्तम मात्रा चारिमाशेकी मध्यम दोमाशे की कनिष्ट जानना ॥ १८ ॥ विरेचनपर वस्तीप्रकार विरेचन कियेको सातदिनबिताय बलआनेपर भोजनकराय अनुवासन वस्तीकरना ॥ १९ । २० ॥ पिचकारीपीड़ित प्रकार अनुवासन कर्म के प्रथमतेललगाइ गरमपानी से नहवाइ ॥ २१ ॥ यथालिखित भोजन कराइ कुछ टहलाइ पवन मलमूत्र शंका मिटाइबाईं करवट पौढ़ाइ ॥ २२ ॥ दहिना गोड़ सिकोड़ बायां पसारि मलमार्गमें घी लगावै ॥ २३ ॥ तबपिचकारी थैलीमें यथालिखित स्नेह मात्रा भरि

त्वं नाकासक्षवादींश्चवस्तिकालेनकारयेत् । त्रिंशन्मात्रामितःकालः प्रोक्तेवस्तेस्तुपीडिते २५ ततःप्रणिहितःस्नेहउत्तानोवाक्शतंभवेत् । जानुमंडलमावेष्ट्यकुर्याच्छोटिकयायुतं २६ एकामात्राभवेदेषासर्वत्रैषविनिश्चयः । प्रसारितैःसर्वगात्रैर्यथावीर्यंप्रसर्पति २७ ताडयेत्तलयोरेनंत्रीन्वारांश्चशनैःशनैः । स्फिजश्चैवंततःश्रोणींशय्यांचैवोत्क्षिपेत्ततः २८ जातेविधानेतुततःकुर्यान्निद्रांयथासुखं । सानिलःसपुरीषश्चस्नेहःप्रत्येतियस्यतु २९ उपद्रवंविनाशीघ्रं ससम्यगनुवासितः ३० जीर्णान्नमथसायाह्नेस्नेहेप्रत्यागतेपुनः लघ्वान्नंभोजयेत्कामंदीप्ताग्निस्तुनरोयदि ३१ अनुवासितायदेयःस्याद्द्वितीयेह्निसुखोदकं । धान्यशुंठीकषायोवास्नेहव्यापत्तिनाशनः ३२

वैद्य बर वस्तीभूखनारि बामेंकरधारि धीरे धीरे मलमार्गमें दो अंगुल प्रवेशै॥२४॥तब दहिने हाथसे द्रव्यभरी थैली मंद मंद पीडित करै जिसमें भीतर पिचकारी देतेहैं उससमय उसाको कौं कखांसीन आवै २५॥रोगीको वस्तिप्रद समय पिचकारी देतीस मात्रा ताई रोंकै इतनी बेरमें स्नेहादिक अंदर प्रवेश होजायगा फिर सौ मात्रातक सीधा सुलावै॥ २६ ॥ मात्रा प्रमाण जंघ मंडल कहे कटिसे घुटनी पर्यंत तिसके चारौं ओर चुटकी बजाता हाथ घूम आवै तौ एक मात्रा होइ यह सब ग्रंथ निश्चयहै ॥ २७ ॥ वस्तीकी पीछे हाथवस्ती पीडित करि रोगीके पांउ हाथ शरीर फैलाइ लंबा करदे इससे सातौं धातु अपने अपने स्थानमें फैल जातीहैं तब हाथ पांयकी हथेरी तरवा जांघ कटि नितंबमें धीरे धीरे थपकी देदे सहराइ दे तब रोगीको शय्या पर स्वस्थ करि पौढ़ाइ निद्रा करावै ॥ २८ ॥ अथवस्तीसम्यक्गुण लगायमें स्नेहादि पक्वनेसे वायु औ मल ये सब इकट्ठा करि जल्दी बाहर निकार देइ तौ जानिये कि वस्तीने गुणकिया ॥ २९ । ३० ॥ वस्ति विकार निवृत्तयोग अनुवासनांत जब स्नेह औषधि मलमार्गसे गिरने पर अग्नि दीप्त होतौ रातको मध्य अतिगलाइ थोरासा दे ॥३१॥ दूसरे दिन तप्तजल पिलावै वा धनियां सोंठि का क्वाथदेय तौ जो स्नेहादि अनुवासन वस्तीसे प्रवेश कियेहैं उसका विकार दूरहो और पुराने चाउरका भात

अनेनविधिनापड्वासप्तवाष्टौनवापिवा । विधेयावस्तयस्तेषामंते चैवनिरूहणं ३३ दत्तस्तुप्रथमोवस्ति स्निहयेद्वस्तिवंक्षणौ । सम्यग्दत्तोद्वितीयस्तुमूर्द्धस्थमनिलंजयेत् ३४ बलवर्णंजनयेत्तृतीयस्तुप्रयोजितः । चतुर्थपंचमौदत्तौस्नेहयेत्तांरसासृजी ३५ पष्ठो मांसंस्नेहयतिसप्तमोमेदएवच । अष्टमोमलमश्चापिमज्जानंचयथाक्रमं ३६ एवंशुक्रगतान्दोषान्द्विगुणःसाधुसाधयेत् । अष्टादशाष्टादशकान्वस्तीनांयोनिषेवते ३७ सकुंजरनवोप्यश्वंजयेतुल्योनरःप्रभुः । रुक्षायवहुवातायस्नेहवस्तिंदिनेदिने ३८ दद्याद्वैद्यस्तथान्येषामन्यावाधमवाहरेत् । स्नेहोपमाद्योरूक्षाणांदीर्घकालमनात्पयः ३९ तथानिरूहःस्निग्धानामल्पमात्राप्रशस्यते । अथाव

खिलावै ॥ ३२ ॥ वातादि दोष वस्ती प्रमाण पूर्वोक्त वत् पिचकारी बनाइ सात या आठया नववेगताईदेना अंतमेंनिरूहण पिचकारी देना॥३३॥अन्योक्त वस्ती वेगकागुण प्रथम वस्ती वेग होनेसे वक्षण द्वारा शरीरमें चिकनई आतीहै अर्थात् वात बढ़तीहै दूसरीसे मस्तक वायु दूरजाय ॥ ३४॥ तीसरीसे शरीरमें बल होताहै चौथी पांचवींसे रसरक्त बढ़ताहै॥३५॥छठी सातवीं से मांसमेदा चिकने होतेहैं आठवीं नववींसे शुक्रधातु स्निग्ध होतेहैं ॥३६॥ इसप्रकार सेनव द्विगुनी अठारह वेग देनेसे शुक्रधातुका दोषनाशहो ॥ ३७ ॥ और जिसे छत्तीस वेगहों तिसेहाथी घोड़ेसदृशबलहो औ देवता समानक्रांतिहो अन्यमते जोरूक्ष बातकारि अधिकपीडितहो उसे अनुबासन वस्ती जब प्रयोजन जानै तब तब देइ औचिकनेवा मोटे मनुष्यको जबजब उचित जानै तब तब निरूहण वस्ती देइतौ रोग नाश होताहै रूखे मनुष्यको स्नेहवस्ती मनुष्यको हलकी हलकी नित्य प्रति देइ और जो रोग चिरकाल का होइ तौ निरूहण वस्ती हलकी हलकी नित्य प्रति देइ ॥ ३८ ॥ स्नेह शीघ्र निकलने पर जब स्नेहादि शीघ निकल परै तब निरूहण-वस्ती करै इसीरीति से जितने वेगदेइ सबके अंतमें निरूहण देता जाय ॥ ३९ ॥ स्नेहस्राव न होनेपर उपद्रव जोविरेचन वमनकारि शुद्ध किया वस्तीकर्म किया तिसमें स्नेहादिका करने से ये उपद्रव

यस्यतत्कालंस्नेहोनिर्यातिकेवलः ४० तस्यान्योन्यतरोहिबोनहि स्निग्धस्यतिष्ठति । अशुद्धस्यमलोन्मिश्रःस्नेहोनैतियदापुनः ४१ तथाशैथिल्यमाध्मानशूलंश्वासश्चजायते । पक्काशयेगुरुत्वंचतत्रद द्यान्निरूहणं ४२ तीक्ष्णंतीक्ष्णौषधैर्युक्ताफलवर्तिर्हितातथा । य थानुलोमनंवायुर्मलंस्नेहश्चजायते ४३ तथाविरेचनंदद्यात्तीक्ष्णं नस्यंचसम्मतं । यस्यनोपद्रवंकुर्यात्स्नेहवस्तिरनिस्सृतः ४४ स र्वोल्पोऽव्यावृतौरौक्ष्यादुपेक्ष्यःसविजानता । अनायातेत्वहोरात्रेस्ने हंसंशोधनैर्हरेत् ४५ स्नेहवस्त्यावनायांतेद्वाभ्यांस्नेहोविधीयते ; गुडूच्येरंडपूतीकभार्गीवृषकरोहिषं ४६ शतावरीसहचरःकाकना सांपलोन्मितम् । पटसप्तसिव्यापदस्तु नायतेवस्तिकर्मणः ४७ दयितात्समुदायेनताश्चिकित्स्यास्तुशुश्रुतात् । यवनापातसीको लकुलित्थान्प्रसृतोन्मितान् ४८ चतुर्द्रोणांभसापक्त्वाद्रोणशेषेण

होतेहैं ॥ ४० ॥ शिथिलगात्र आध्मान पेटफूलना शूलश्वास ओक्करी कठोर इन उपद्रव के दूर करनेको तीक्ष्णनिरूहणदेना ॥४१॥४२॥ तीक्ष्ण औषधि युक्त फलवर्ती जिसमें बायु अधोमार्गी होई मल युक्त स्नेहको गिरावै तिसेतीक्ष्ण रेचन तीक्ष्णनासदेनेसे शमनहोते हैं ॥ ४३ ॥ जो स्नेहवस्ती रुकाने से कोई उपद्रव न होइ औ स्नेहादि भीतर रूपे कोठा के कारण से अटका रहै औ शूलादि उपद्रव न करैं तौ उसे दीर्घकाल तक रहने देइ ॥ ४४ ॥ अथ वस्ती औ- षधिगिरानेका यत्न जो पिचकारीका दिया स्नेह न गिरै तौ दुस- रायकै फिर पिचकारी दे स्नेह गिरावै वा स्नेह रातभर बसरहै तौसर्वरेचन दे गिरावै योंदोनों प्रकारकरिस्नेहगिरावै॥४५॥अनु- वासन स्नेह गुर्च रंडकी जड़ करंज की छाल भारंगीछाल रूसा अगियाखर॥४६॥शतावरिकाटसरैयाकौआडोढ़ीयेपलपलभरभरद यव अरसी बेरकी सींगी कुरथी ये दोदो पल ये सब औषधिसी चारद्रोण जलमें औटाइ द्रोणभर रहै तब छानि आढ़क भर तिलकातेल मिलाइकै जीवनीगण सूक्ष्म चूर्ण करि उसमें डारि कढ़ाई में भरि औटि काथ जराइ उतारि छानै इसेअन- वासन कहतेहैं पिचकारीमें भरतेहैं॥ ४७॥बस्तिकर्म उलटाहोनेसे

तेनच । पचस्नेहं कल्कैस्तैर्जीवनीयः फलान्वितैः ४९ अनुवासनमेतद्धि सर्ववातविकारनुत् ५० पानाहारविहारश्च परिहारश्च कृत्स्नशः । स्नेहपानसमाः कार्या नात्र कार्या विचारणा ५१ ॥ इतिश्री शार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे स्नेहवस्तिविधिः पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

निरूहवस्तिर्बहुधा भिद्यते कारणांतरैः । तैरेवतस्य नामानि कृतानि मुनिपुङ्गवैः १ निरूहस्य परं नाम प्रोक्तमास्थापनं बुधैः । स्वस्थानस्थापनाद्दोषधातूनांस्थापनं मतं २ निरूहस्य प्रमाणं तु प्रस्थ पादोत्तरं मतं । मध्यमं प्रस्थमुद्दिष्टं हीनस्य कुडवास्त्रयः ३ अतिस्निग्धोत्क्लिष्टदोषोक्षतोरस्कः कृशस्तथा । आध्मानछर्दिहिक्कार्शः कास श्वासप्रपीडितः ४ गुदशोफातिसारार्तो विषूचीकुष्ठसंयुतः । गर्भिणीमधुमेही च नास्थाप्यश्च जलोदरी ५ वातव्याधावुदावर्ते वाता

छिद्दत्तर रोग होते हैं तिसकी चिकित्सा शुश्रुतदेखिकरना॥ ४८॥ वस्ती कर्म में पथ्यपान आहार विहारादि आचरण पूर्वोक्त स्नेह पान सदृश देना इसमें भी चाहिये ॥ ४९ । ५० । ५१ ॥ इतिशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे स्नेह वस्तिविधि: पंचमोध्याय: ॥ ५ ॥

अथ निरूहवस्ति विधि:॥ निरूहण बस्ती कारण कहैं रोगानुसार करिके अनेक भेद हैं जहां जैसा करना चाहिये तहां मुनीश्वरोंने तैसाही नाम धराहै यथा कर्षण बस्ती दोषहृत बस्ती दोषशमन बस्ती यह नाम प्रकार जानना ॥१॥ निरूहणका दूसरा नाम स्थापन वस्ती कहते हैं इसकारणसे कि उत्पन्नहुये दोष संयुक्त रसादिक धातु अपने स्थानसे भ्रष्ट हैं उनको बातादिक दोष वा रोगोंको दूरिकरि शुद्ध धातोंको स्थित करती है ॥२॥ निरूहमें क्वाथ प्रमाण निरूह सवा प्रस्थ की उत्तम माचाहै प्रस्थभर की मध्यमतीन कुड़व की कनिष्ट माचाहै ॥ ३ ॥ निरूहमें अयोग्य अति स्निग्ध कोठेवाला ऊर्द्धगत दोष वाला उरक्षती ॥ ४ ॥ कृमि आध्मानी छर्दि हिक्की अर्शी श्वासी कासार्ती ऐसे मनुष्य गुदाके निकट पीड़ित शोथी अतीसारी शीतरक्तकुष्टी गर्भिणी मधु प्रमेही जलोदरी इनरोगिनको निरूहणदेना योग्यनहीं॥ ५ ॥ नि-

सृग्विषमज्वरे। मूर्च्छातृष्णोदरानाहमूत्रकृच्छ्राश्मरीषुच ६ वृद्धा सृक्दरमंदाग्निप्रमेहेषु निरूहणं । शूलेम्लपित्तहृद्रोगेयोजयेद्विधिवद्बुधः ७ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंस्निग्धंस्विन्नमभोजनं । मध्याग्नेर्गृहमध्येचयथायोग्यंनिरूहयेत् ८ स्नेहेवस्तिविधानेनबुधःकुर्यान्निरूहणं । जातेनिरोहेचततोभवेदुत्कटकासमः ९ तिष्ठन्मुहूर्त्तमात्रंतु निरूहागमनेच्छया । अनायातमुहूर्त्तंतुनिरूहंशोधनैर्हरेत् १० निरूहैरेवमतिमान्क्षारमूत्राम्लसैंधवैः । यस्यक्रमेणागच्छंतिविट्पित्तकफवायवः ११ लाघवंचोपजायेत सुनिरूढंतमादिशेत् १२ यस्यस्याद्वस्तिरल्पाल्पवेगोहीनमलानिलः । मूत्रार्तिजाड्यारुचिमान्दुर्निरूढंतमादिशेत् १३ विविक्ततामनस्तुष्टिःस्निग्धताव्याधिनिग्रहः । आस्थापनस्नेहवस्त्योस्सम्यग्दानेतुलक्षणं १४ अनेकविधिनायुंज्यान्निरूहंवस्तिदानवित् । द्वितीयंवातृतीयंवाचतुर्थंवाय-

रूहवस्तीयोग्य वातउदावर्तवातरक्त विषमज्वर मूर्च्छातृष्णाउदर अनाहमूत्र कृच्छ्र पथरी ॥ ६ ॥ पुरानारक्तस्राव मंदाग्नि प्रमेह शूल अम्लपित्त हृदयरोग इन रोगिन युक्त को निरूह देना योग्य है॥७॥निरूह वस्ती विधान जिसे निरूह देनीहो तिसे मलमूत्रकी शंका निवारण कराइ पवन छूटनेकी शंका मिटाइ कोष्टशुद्धकरि देहमें तेललगाइ तप्त जलसे अंग पाटरी से थोरा सेंकि दोपहर प्रथमसे भोजन त्यागि जिसे जैसा दोषदेखै तिसेतैसी औषधि पिचकारी में भरि पूर्वोक्त अनुवासन वस्ती विधान से निरूहन वस्ती करै ॥ ८ । ९ ॥ फेर औषधि बाहर निकसनेको कारण मुहूर्त्त कहे दोघड़ी कच्ची उकुरूं बैठावे इतनेमें औषधि गिरै तौ अच्छा जो न गिरै तौ शोधन कहे रेचन॥ १० ॥ योंभी न गिरै तौ यवाखारगोमूत्र खट्टेकारस सैंधव मिलाइ फिर पिचकारी देनेसे गिरैगी ॥ ११ ॥ अच्छी निरूह लक्षण निरूह अच्छी होतो क्रमसे मलपित्त कफ वायु गिरै औ शरीर हलका होतो निरूहसुष्ट जानिये॥ १२ । १३॥ अशुद्धवस्ती लक्षण जिसकोवस्तिकर्मसे त्रिदोषजन्य विकार औमल नहीं निकरगया उसके मूत्रमार्गमें पीड़ा शरीर जड़ता अरुचि होइ ॥ १४ ॥ निरूहस्नेहवस्तिलक्षणं॥ देहहलकी मन संतोष स्वेद

थोचितं १५ सस्नेहएकःपवनेपित्तेद्वौपयसासह । कषायकटुरू
क्षाद्याःकफेकोष्णास्त्रयोमताः १६ पित्तश्लेष्मानिलाविष्टंक्षीरयूप
रसैःक्रमात् । निरूहंपोषयित्वाचततस्तदनुवासयेत् १७ सुकुमा
रस्यवृद्धस्यबालस्यचमृदुर्हितः । वस्तिस्तीक्ष्णःप्रयुक्तस्तुतेषांहन्या
द्बलायुषी १८ दद्यादुत्क्लेशनंपूर्वंमध्यदोषहरंततः। पश्चात्संशमनी
यंचदद्याद्वस्तिंविचक्षणः १९ एरंडबीजंमधुकंपिप्पलीसैंधवंवचा।
हबुषाफलकल्कश्चवस्तिरुत्क्लेशनःस्मृतः २० शताह्वामधुकंबिल्वं
कौटजंफलमेवच । सकांजिकांश्चगोमूत्रोवस्तिर्दोषहरःस्मृतः २१
शोधनंद्रव्यनिःक्वाथ स्तत्कल्कैःस्नेहसैंधवैः । युक्त्याखजेनमथिता
वस्तयःशोधनाःस्मृताः २२ प्रियंगुर्मधुकोमुस्ता तथैवचरसांजनं ।
सक्षीरःशस्यतेवस्ति दोषाणांशमनेस्मृतः २३ त्रिफलाक्वाथ

चिकना रोगनाश येअच्छीवस्तीकेलक्षणहैं जोचतुरवस्तिकर्म जान
नेवाले वैद्य यों निरूह वस्तिकरैं नहींतौ वस्तिविरुद्ध होतीहै॥१५॥
निरूहवस्तिदानप्रमाण॥ निरूहवस्ति एक वा दो वा तीन वा चार
बार जैसादोष तैसी दे वातरोगमें स्नेहयुक्त निरूह एकबारदेपित्त
में दूध दोबार कफमें कषाय कटुरूक्षादियुक्त सुखोष्णकरितीन
बारदे त्रिदोष में कषाय दूधमांस रसयुक्त क्रमसेचारबारदेनातिस
पीछे स्नेहवस्तिदेना॥१६॥१७॥सुकुमारवाद्धवाबालकको हलकी
निरूहदेना सुकुमारादिकी तीक्ष्ण बस्ती से बल औ आयु घटती
है हड़ वा आँवरादि कटुहैं कुरची यवादि रूक्षहैं ॥१८॥ येद्रव्य
आदि मध्यांत क्रमसे देना प्रथम दोष उभरन मध्य से दोषनाशन
अंतमें दोष क्षीणकरि शमनकारक देना॥१९॥ दोषउभारन द्रव्य
रेंड़ीबीज मऊआछाल पीपरि सैंधववच हाऊबेर इनकीपिचकारी
सेदोष उभरताहै॥२०॥ दोषनाशक द्रव्य शतावरि मुरेठीबेल इंद्र
यव कांजीमेंपीसि गोमूत्रयुक्तपिचकारी रोगहारक देना॥२१॥दोष
शमन औषधि निशोथ आदिक शोधन द्रव्यका क्वाथकरितैल वा
सैंधव डारि मथिकै दोष शोधनिमित्त इसीका अथवा और द्रव्य
काकल्क भी मथिकै पिचकारीदेना ॥२२॥ मकरामूल मऊआछाल
मोथा रसौत येसब समभाग दूधमें पीसि दोषशमनार्थ देना ॥२३॥

गोमूत्र क्षौद्रक्षारसमायुतः। ऊपकादिप्रतीवापै र्वस्तयोलेखना स्मृताः २४ बृंहणांक्वाथनिक्वाथ कल्कैर्मधुरकैर्युतः। सर्पिर्मांस रसोपेता वस्तयोबृंहणामता २५ बदर्यैरावतीशेलुः शाल्मली धन्वनागराः। क्षीरसिद्धाक्षौद्रयुक्ता नाम्नापिच्छलसंगिताः २६ अजोरभ्रेणरुधिरै र्युक्तादेयाविचक्षणा। मात्रापिच्छलवस्तीनां प लैर्द्वादशभिर्मता २७ दत्वाऽदौसैंधवस्याक्षं मधुनाप्रसृतिद्वयं। विनिर्मथ्यततोदद्या त्स्नेहस्यप्रसृतित्रयं २८ एकीभूतेततःस्नेहे कल्कस्यप्रसृतिंक्षिपेत्। संमूर्च्छितकषायेतु चतुःप्रसृतिसंमितं २९ क्षिप्त्वाविमथ्यदद्याच्च निरूहकुशलोभिषक्। वातेचतुःपलंक्षौद्रं दद्यात्स्नेहस्यषट्पलं ३० पित्तेचतुःपलंक्षौद्रं स्नेहस्यचपल त्रयं। कफेषट्पलिकंक्षौद्रं स्नेहस्यैवचतुःपलं ३१ एरंडक्वाथतु-

लेखनवस्ती त्रिफलाक्वाथमेंगोमूत्र सहत यवाखार येद्रव्य समभाग ले ऊषादिगण द्रव्य मिश्रित करि लेखनवस्तीदेना लेखनकहे जो मेद दूषित तिन रोगिनको द्रावसाकरै॥२४॥बृंहणवल्ली मुशली गुगुल कौंचबीज इत्यादि बृंहण द्रव्यहै सो धातुको बढ़ाती है इनका क्वाथकरि मुलहटी छाल दाख अनारादि मधुरद्रव्य काकल्क औ घृत मांसरस ये सब पूर्वोक्त क्वाथमें डारि धातु बढ़ाने को पिचकारी देइ॥२५॥ पिछली बरती बेरकीछालइलाइचीलसो-ड़ेकीछाल सेमर जवासा मोथा येसब समभागले दूधमेंपीसि सहत छागलेढ़ाहरिण इनका रुधिर मिश्रितकरि चतुरवैद्य दोष पिच-लानेको पिच्छल वस्तीदेते हैं इसकी मात्राका प्रमाण बारहपल है॥२६।२७॥निरूहणवस्तीप्रमाणविधि॥ अक्षऔ कर्षएकहीसंज्ञा है सैंधव कर्षभर सहतचारपल मर्दनकरि छःपल घीदे एकत्रकरै इस में दोपल पूर्वोक्त कल्कद्रव्य मिलावै अथवा पूर्वोक्त कल्का द्रव्यका क्वाथकहै काढ़ाकरिलीजिये॥२८॥आठपल प्रमाण कुशलवैद्य इकट्ठी करि मथिनिरूह वस्तीदेय निरूहवस्ती की साधारण विधिजानौ विशेष विधान वातमें ४ पल मधु ६ पल स्नेह इकट्ठीकरि पिचकारी देना॥२९।३०॥ पित्तमें ४ पल मधु ३ पल स्नेह इकट्ठाकरि पिच-कारी देइ कफमेंछः पलमधु ४ पलस्नेह एकत्रकरिदेना॥३१॥ मधु

ल्यांशं मधुतैलंपलाष्टकं। शतपुष्पापलार्द्धेन सैंधवार्द्धेनसंयुतं ३२ मधुतैलकसंज्ञोयं वस्तिदार्वीविलोडितः । मेदोगुल्मकृमिप्लीह मलोदावर्त्तनाशनः ३३ बलवर्णाकरश्चैव वृष्योबृंहणदीपनः। क्षौद्राज्यक्षीरतैलानां प्रसृतिंप्रसृतिंभवेत् ३४ हवुषासैंधवंक्षारौ वस्तिःस्याद्दीपनःपरः । एरंडमूलनिःक्काथो मधुतैलंससैंधवं ३५ एषयुक्तरथोवस्तिः सवचापिप्पलीफलः। पंचमूलस्यनिःक्काथ स्तैलंमागधिकामधुः ३६ ससैंधवःसमधुकः सिद्धिवस्तिरितिस्मृतः। स्नानमुष्णोदकैःकुर्याद्दिवास्वप्नमजीर्णतां। वर्जयेदपरंसर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत् ३७ ॥

इतिश्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखंडेनिरूहणविधिःषष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥

तेल वस्ती रेंडमूलक्वाथ ८ पल सहत तेल चारिचारिपल बड़ीसौंफ सैंधव आधा२पल येसब एककरि क्षणभर मथि ॥ ३२ ॥ यहमधुतैल वस्ती है इसदेनेसे मेदरोग गुल्म कृमि प्लीह मल वा उदावर्त ये रोगनाशहोइ ॥ ३३ ॥ बल क्रांति वीर्य इच्छा धातुवृद्ध अग्नि दीप्त होइ दीपनवस्ती सहतघी दूध तेल ये दो पल हाऊवेर सैंधव कर्ष२ सूक्ष्म पीसि सब मिलाइ पिचकारी दियेसे अग्निदीप्तहोइ ॥ ३४॥ युक्तरथवस्ती रेंडमूल क्वाथ सहत तेलमें सैंधव बच पीपरि मैनफल चारों समभाग चूर्णकरि मिलाइ पिचकारी देइ यह युक्तरथवस्ती सब रोगोंपर दीजातीहै॥ ३५ ॥ सिद्धवस्ती पंचमूल क्वाथ तेल और महुआ मुरेठी क्वाथ में पीपरि सैंधव मिलाइदेइ यह सिद्ध वस्ती सबरोगन परदेते हैं ॥ ३६ ॥ वस्तीमें सेव्य निषेध पदार्थ वस्तीसेवक उष्णजल से न्हाइ दिनमें न सोवै अजीर्ण न होइ औ स्नेह-वस्ती वत्सब आचरण साधै॥ ३७ ॥

इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरे उत्तरखण्डेषष्ठोऽध्यायः॥ ६ ॥

अतःपरं प्रवक्ष्यामि वस्तिमुत्तरसंज्ञितं। द्वादशांगुलकं नेत्रं मध्ये च कृतकर्णिकं १ मालतीपुष्पवृन्ताभं छिद्रं सर्षपनिर्गमं । पंचविंशति वर्षाणामधोमात्रा द्विकार्षिकी २ तदूर्ध्वं पलमानं च स्नेहस्योक्ता विचक्षणैः। अथास्थापनशुद्धस्य तृप्तस्य स्नानभोजनैः ३ स्थितस्य जानुमात्रे वा पीठे हि विटशलाकया । स्निग्धया मेढ्मार्गे च ततो नेत्रं नियोजयेत् ४ शनैः शनैः घृताभ्यक्तं मेढ्मध्यंगुलानिषट् । ततो वपीडयेद्वस्तिं शनैर्नेत्रं च निर्हरेत् ५ ततः प्रत्यागतस्नेहे स्नेहवस्तिक्रमो हितः। स्त्रीणां कनिष्टकास्थूलं नेत्रं कुर्याद्दशांगुलं ६ मुद्गप्रवेशयोग्यं च योन्यंतश्चतुरंगुलं । द्व्यंगुलं मूत्रमार्गे च सूक्ष्मं नेत्रं नियोजयेत् ७ मूत्रकृच्छ्रविकारेषु बालानां त्वेकमंगुलं। शनैर्निःकंपमादेयं सूक्ष्मं नेत्रं विचक्षणैः ८ योनिमार्गे पुनारीणां स्नेहमात्रा द्विपालिकी। मूत्रमा

अथोत्तरवस्तीविधान॥ उत्तर वस्तीकहे मूत्रमार्गमें पिचकारी देने कीविधि तिसमें प्रमाण बारह अंगुल लंबी तिसके मध्यमें पखुरी चमेलीके पुष्प सदृश औ चमेलीपुष्पकी डंडी समान मोटीरहै॥१॥ मात्रा प्रमाण मनुष्यके २५ वर्ष ताईं स्नेहमात्रा दोकर्षकी देइ पचीसके ऊपर पलभर देना ॥२॥ अथ स्थापन वस्तिविधि ॥ स्थापनकहे उत्तरसेवकको शुद्ध स्नान भोजनकराय॥३॥ घुटनेटिकाय बैठावै वा घुटनेको टेंकि खड़ारहै तबइटशलाका चांदीका दो अंगुल मुंहपर मुरा ८ अंगुल सीधा सरसों निकरि जाने माफिक छेद होताहै उसमें घी वा तेल लगाइ मूत्रमार्गमें धीरे धीरे छःतथा आठअंगुल प्रवेशकरै यत्न पूर्वक जिसमें पीड़ा न करै जब मन थैलीतक पहुंचि खट खट बजै तासमानौ इसकी अथरीहै॥४।५॥ इसी शलाकासे बंदमूत्र भीखुलजाताहै शलाका छिद्रसे बहिजाताहै और जो पिचकारी देनीहो तो शलाकाको पेंदीपर थैली बढ़ाइ औषधि भरि पूर्ववत् पीड़ितकरै इससे मूत्र कृच्छ्रादि दूरहोतेहैं यह उत्तर बस्ती क्रमहै॥ ६। ७॥ स्त्रीके उत्तरवस्ति विधान। स्त्रीकी योनिमें दो छिद्रहोतेहैं एक मूत्रमार्ग दूसरा गर्भमार्ग योनि वहीहै उसकी शलाका छंगुनियांकी मुटाई दशांगुलकी मूंग निकरने माफिक छेदराखि चारिअंगुल योनिमें प्रवेश पिचकारीदे औ मूत्रमार्गमें

गें पलोन्मानावालानांचद्विकार्षिकी ६ उत्तानायैस्त्रियैदद्यादूर्ध्वंजा न्वैविचक्षणः। अप्रत्यागच्छतिभिषग्वस्तावुत्तरसंज्ञिके १० भूयोव स्तिंनिदध्याच्चसंयुक्तैःशोधनैर्गणैः।फलवर्तिनिदध्याद्वायोनिमार्गे दृढंभिषक् ११ सूत्रैर्विनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुतां।दह्यमाने तथावस्तौदद्याद्वस्तिंविचक्षणः १२ क्षीरवृक्षकषायेनपयसाशीतले नचावस्तिःशुक्ररजःपुंसांस्त्रीणामार्तवजांरुजं १३ हन्यादुत्तरवस्ति स्तुनोचितोमहिनांकचित्।सम्यग्दत्तस्यालिंगानिव्यापदःक्रमएव च १४ वस्तेरुत्तरसंज्ञस्यशमनंस्नेहवस्तिनां।घृताभ्यक्तेगुदेक्षेप्या श्लक्ष्णा स्वांगुष्ठसंनिभा।मलप्रवर्तिनीवर्तिःफलवर्तिश्चसास्मृता १५ ॥ इतिश्रीदामोदरसूनुनाशार्ङ्गधरेणविरचितायांसंहितायांचि कित्सास्थानेउत्तरखंडे उत्तरवस्तिविधानंनामसप्तमोऽध्यायः॥७॥

सूक्ष्म शलाका दो अंगुल प्रवेश॥८॥बालकके एक अंगुल शलाका प्रवेशै चतुर वैद्य अतिमहीन बालकके रसायनसे देइ पिचकारी पीड़नेसें हाथ न कांपै॥९॥स्त्रियोंकी वस्तिकीमात्राप्रमाणयोनिमार्गे ॥ पिच- कारी देनेकीमात्रादोपलऔषधिलेनामूत्रमार्गकी मात्राएकपलहै बालक वस्त्रीकी दोकर्षहै निपुण वैद्य स्त्रीको उताना पौढ़ाइ पिच- कारीपीड़ितकरै फिरउकुरू बिठाई दियाहुआस्नेह गिरावै॥१०॥ शोधन द्रव्य मूत्रकृच्छ्रादिमें शोधन द्रव्य रेंड़ीतेलादि द्रव्यभरि पिचकारीदेइ अथवा फलवर्ती रंडबीजादि सूत वा वस्त्रकी कड़ी बत्तीबनाइरंडतेलादिमेंतमककरिभिजोइ उसपररेंड़ीपीभि चुपरि योनिमें राखै॥ ११ । १२ ॥जो वस्तिकिये नाभि तरेवस्ती स्थान अधिक उष्ण होइ तौ बट गूलरीकी छालको क्वाथकी पिचकारी देना व ठंढेदूधकी इनसे वस्तीशुद्ध होतीहै औशुक्रसंबंधीपीड़ा औ स्त्रीके आर्तव संबंधी रोग पीर दूरहोइ॥ १३ ॥ प्रमेहीको उत्तर वस्तीकभीअयुक्तनहीं उत्तम वस्ती लक्षणउत्तरवस्तीमेंस्नेह वस्ती हुई तब शुक्रसंबंधी प्रमेहादिकपीड़ादूरहोतीहै उसकेयेलक्षण हैं॥१४॥फलवस्तिमलमार्गे विधान॥मलमार्गमेंघीलगाइ मलगिराने केकारणरेचनद्रव्यरंडबीजादिकड़ी बत्तीपरलेपिगुदामेंधरै इसेफल वर्तीकहैं॥१५॥इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरउत्तरखंडेसप्तमोऽध्यायः॥७॥

नस्यंतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधं । नावनंनस्यकर्मेति तस्यनामद्वयंमतं १ नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तो रेचनंस्नेहनंतथा । रेचनंकर्षणंप्रोक्तं स्नेहनंबृंहणंमतं २ कफपित्तानिलध्वंसे पूर्वमध्ये पराह्नके । दिनस्यगृह्यतेनस्यं रात्रावप्युत्कटेगदे ३ नस्यंत्यजेद्भोजनांते दुर्दिनेचापितर्पणे । तथानवप्रतिश्यायीगर्भिणीगरदूषितः ४ अजीर्णीदत्तवस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः । क्रुद्धश्शोकाभिभूतश्च तृषार्तोवृद्धबालकौ ५ वेगावरोधीस्नातश्च स्नातुकामश्चवर्जयेत् ६ अष्टवर्षस्यबालस्य नस्यकर्मसमाचरेत् । अशीतिवर्षादूर्ध्वंचनावनंनैवदीयते ७ अथवैरेचनंनस्यं ग्राह्यंतैलैःसुतीक्ष्णकैः । तीक्ष्णभेषजसिद्धैर्वा स्नेहैःक्वाथैरसैस्तथा ८ नाशिकारंध्रयोरष्टौ षट्चत्वारश्चविंदवः । प्रत्येकंरेचनेयोज्यो मुख्यमध्यांत्य

अथनस्यकर्म नाक की राह औषधि देनेको नास कहतेहैं इसके दोनामहैं नावनएक नस्यदो ॥१॥ नस्य रीति दो विधि की है एक रेचन दूसरी स्नेहनऔररेचनको कर्षणभी कहिये सोबातादि लेखनको कर्षण करनेवालीहै औस्नेहन नसधातुको दृढकरतीहै इससे बृंहणकहिये ॥ २ ॥ नस्यकर्मसमय कफदूषितकोप्रातनस्यदेना पित्त दूषित को मध्याह्न में देना वायुदूषित को संध्याकेभीतरदेना और जो अतिपीड़ितहो तो रात्रिकादेना ॥ ३ ॥ अथनस्यनिषेधः ॥ नस्यकर्म ऐसेको वर्जितहै भोजनकरचुकेपर तुरतहोनदे दुर्दिनकहे आंधी वा पवनअति वा मेघाच्छादितहो औलंघनीकोपीनसकेआरंभमें गर्भिणीको बिकारीको ॥४॥ अजीर्ण परवस्तीकृतको स्नेह पीतको पानीवा मद्यपीको तर्षणकृतकोक्रोधशो कातों दृद्धऔबालकको ॥ ५ ॥ मलमूत्र वायु आरोधीको तुरित स्नान कियेपर स्नानाकांक्षीको ऐसेमनुष्यनकोऔइन कर्मनकियेपरनस्यकर्म न करै॥६॥ नस्यकर्म योग्यायोग्य आठवर्ष के उपरांत अस्सीवर्ष पर्यंत नासकर्म करना॥७॥ रेचनासबिधि रेचनकार कारकद्रव्यकी नासदेनाचाहै तो सराई वा सरसोंकातेल तीक्ष्णहै तिसकी नासदेना वा तीक्ष्ण द्रव्यमें सिद्धकिया तेल वा तीक्ष्णद्रव्यका क्काथ वा तीक्ष्णद्रव्यका स्वरस ले तेल घृत सिद्धकरि नासदेना ॥ ८ ॥ रेचनेनस्यप्रमाणः॥ रेचन

मात्रया ६ नस्यकर्मणिदातव्यं शाणैकंतीक्ष्णमौषधं । हिंगुस्या यवमात्रंतु माषैकंसैंधवंमतं १० क्षीरंचैवाष्टशाणंस्या त्पानीयंच त्रिकार्षिकं । कार्षिकंमधुरंद्रव्यं नस्यकर्मणियोजयेत् ११ अवपीडः प्रधमनं द्वौभेदावपरौस्मृतौ । शिरोविरेचस्थानेचतौतुदेयौयथा यथं १२ कल्कीकृताद्दौषधाद्यः पीडितोनिःसृतोरसः । सोवपीडः समुद्दिष्ट स्तीक्ष्णद्रव्यसमुद्भवः १३ षडंगुलाद्विवक्त्राया नाडी चूर्णंतयाधमेत् । तीक्ष्णंकोलमितंवक्त्र वातैःप्रधमनंहितम् १४ ऊर्ध्वजत्रुगतेरोगे कफजेस्वरसंक्षये । अरोचकेप्रतिश्याये शिरः शूलेचपीनसे १५ शोफापस्मारकुष्ठेषु नस्यंवैरेचनंहितं । भीरु स्त्रीकृशबालानां नस्यस्नेहोनदीयते १६ गलरोगेसन्निपातेनिद्रा यांविषमज्वरे । मनोविकारेकृमिषुयुज्यतेवावपीडनं १७अत्यंतोत्क टदोषेषुविसंगेषुचदीयते । चूर्णंप्रधमनंधीरैस्तद्धितीक्ष्णतरंयतः १८

संबंधी औषधिकी आठबूंद दोनोंनकु नासदेइ तौउत्तम मात्राहै छःबुंदकी मध्यम चारिबुंदकी कनिष्ठ मात्राहै ॥९॥ नस्यद्रव्यप्रमाणं ॥ नासदेनेको तेलादिसिद्धकरनेमें तीक्ष्ण औषधि एकशाणदेना हींग यवभरि सैंधव माषभरिदूध आठशाण पानी तीनकर्ष प्रमाण देना ॥ १० । ११ ॥ मस्तक रेचनविधि मस्तकरेचन दोप्रकारकाहै एक अवपीड़न दूसरा प्रधमन ये मस्तकरेचन जानना ॥ १२ ॥ अवपीड़नया प्रधमन विधानतीक्ष्णद्रव्यपोसिकैरसरसलेनेको अवपीड़न कहतेहैं१ दूसरी छःअंगुल प्रमाण नली दोमुख की बनाइ एकपर तीक्ष्ण द्रव्यकाचूर्ण धरि नाकमेंप्रवेशकरि दूसरेमुखमेंमुंहलगाइफूंके उसेप्रधमन कहतेहैं तीक्ष्णद्रव्यसोंठिमिर्चपीपरिइसेचिकुटा कहते हैं॥१३।१४॥रेचन वा स्नेहन नासयोग्यऊर्द्ध्वगतकाहे भृकुटी मस्तक कपालदशमद्वार पर्यंतगतरोग कफजन्यस्वरभंग अरोचकनाकटप- कनामाथेकी पीड़ा पीनससूजन मृगीकुष्ट इनमें रेचन उचितहैस्त्री दुर्बलबालक इन्हेंस्नेह उचितनहींहै ॥ १५।१६ ॥ अवपीडन योग्य कंठरोग सन्निपात निद्रा विषमज्वर मनोविकार इनमें अवपीड- न नास योग्यहै॥१७॥प्रधमन योग्य मूर्च्छा अपस्मार संन्यासादि अचेतन रोग में अत्यंत तीक्ष्ण चूर्णादिकरि नासदेना ॥ १८॥

नस्यंस्याद्गुडशुण्ठीभ्यां पिप्पल्यासैन्धवेनच । जलपिष्टेनतेनाक्षि कर्णनाशशिरोगदाः १९ हनुमन्यागलोद्भूताः नश्यंतिभुजपृष्ठजाः । मधूकसारकृष्णाभ्यां वचामरिचसैंधवैः २० नस्यंकोष्णजलेपिष्टं दद्यात्संज्ञाप्रबोधनं । अपस्मारेतथोन्मादे सन्निपातेऽपतंत्रके २१ सैंधवंश्वेतमरिचं सर्षपाकुष्ठमेवच । वस्तमूत्रेणपिष्टानि नस्यंतंद्रानिवारणं २२ रोहीतमत्स्यपित्तेन भावितंसैंधवंवचा । मरिचंपिप्पलीशुंठी कंकोलंलशुनंपुरं २३ कट्फलं चेतितच्चूर्णं देयंप्रधमनंबुधैः २४ अथबृंहणनस्यस्य कल्पनाकथ्यतेधुना । मर्शश्चप्रतिमर्शश्च द्वैभेदौस्नेहनेमतौ २५ मर्शस्यतर्पणीमात्रा मुख्याशाणैःस्मृताष्टभिः । मध्यमाचचतुःशाणै र्हीना शाणमितास्मृता २६ एकैकस्मैतुनात्रेयं देयानाशापुटेबुधैः । मर्श

अथरेचन संज्ञकनस्य गुड़ सोंठि औटिकै व अद्रक रसगुड़घोलि नासदे पीपरि सेंधा औटिकेदे तिससेकान नाक माथा ठोढ़ी कंध गल हाथ पांयकी पीर अच्छे होइ ॥ १९ ॥ पुनःप्रकार मऊयेकी छाल का गाभा पीपरि वच मिरच इन्हैं पीसि तप्त जलसे नासदेइ तौ मृगी उन्माद सन्निपात अपतंत्र अज्ञान ये सबरोग मिटैं शरीर हलकाहो बुद्धि सावधान होतो जानना ॥ २० । २१ ॥ पुनस्तृतीयप्रकार सैंधव श्वेतमिरच सरसौं कूट येसब छाग मूत्रमें पीसि नास देनेसे तंद्रा नेत्रालस्य दूरहोइ ॥ २२ ॥ अथ प्रधमन नस्य सैंधव वच पीपरि मरिच सोंठि कंकोल लहशुनगुग्गुल॥२३॥कायफर इनका चूर्ण रोहू मछरीके पित्तामें पुटदेइ एक नलीके मुंहमें धरि दूसरा मुख नाकमें प्रवेशि औषधिको ओरसे फूटदेइ तौ तंद्रादि अचेतन रोग नाश होइं इसचूर्णका प्रधमन नाम है ॥ २४ ॥ अथ बृंहणनस्य विधान ॥ बृंहण कहे धातु को पुष्टकरै औ बढ़ावै इस बृंहण नामकी मात्रा बृंहण ताके दो भेदहैं एक मर्श दूसराप्रतिमर्श ये दोनों बृंहणहैं ॥ २५ ॥ इनके योग्य मर्शमें तर्पणी नस्यकी मात्रा अष्ट शाणकी मुख्य प्रमाणहै चारि शाण मध्यममात्राका प्रमाणहै एकशाण हीन मात्राका प्रमाणहै॥२६॥येतीन मात्रा बिषे रोगऔ बातादि दोषका बलाबल बिचारिकै रोगीको बिठाय

स्वद्विस्त्रिवेलंवीक्ष्यदोपबलाबलं २७ एकांतरेद्व्यंन्तरेवानस्यं दद्याद्विचक्षणः । त्र्यहंपंचाहमथवा सप्ताहंवाप्रयत्नतः २८ मर्शे शिरोविरेकेच व्यापदोविविधास्मृताः । दोषोत्क्लेशात्क्षयाच्चैव विज्ञेयास्तायथाक्रमं २९ दोषोत्कर्षनिमित्तासु युंज्याद्वमनशोधनं । अथक्षयनिमित्तासु यथास्वंबृंहणंमतं ३० शिरोनाशाक्षिरोगेषु सूर्यावर्तार्द्धभेदके । दंतरोगेबलेहीने मन्यावाहुंशजेगदे ३१ मुख शोषेकर्णनादे वातपित्तगदेतथा । अकालपलितेचैव केशश्मश्रुप्रपातने ३२ युज्यतेबृंहणंनस्यं स्नेहैर्वामधुरद्रवैः । माषात्मगुप्ता रास्नाभिर्बलारुबुकरोहिषैः ३३ कृतोऽश्वगंधयाक्काथोहिंगुसैंधव संयुतः । कोष्णोनस्यप्रयोगेन पक्षाघातंसकंपनः ३४ जयेदर्दित वातच मन्यास्तंभापवाहुकौ । प्रतिमर्शस्यमात्रातु द्विद्विबिंदुमिता

बलउढाइ नाकमें नासदेय ॥ २७ ॥ दो वा तीनबार एक दिनका अंतर देके देइ वा दोदिनका अंतर देकेदेइ वा तीनदिनकाअंतर देइ व पांच दिनका अंतर करदेइ वा सातदिनका अंतर करि नस्यकर्मविचक्षण वैद्यकरै ॥ २८ ॥ जो मर्श संज्ञक नाससे वा रेचन संज्ञकनाससे कोई उपद्रवबढ़ै उसका यत्नकहतेहैं मर्शनासमेंमात्रा अधिक दीजाय वा रेचन नासमें मात्राअधिक दीजाय तौ मेदादिक धातु घटि जाती हैं तौ अनेक उपद्रव उत्पन्न होते हैं इस कारण से जो उबकाई होतीहै औ क्षयादि व्याधिहोतौ बृंहण कहिये जो धातु बढ़ावै सो नाकमें देइ वा खिलावै॥ २९ । ३० ॥ बृंहण नस्य याग्य मस्तकरोग घाणरोग नेत्र रोग सूर्यावर्त रोग सूर्यके चढ़ते बढ़ै और सूर्य के उतरे घटै आधाशीशी दांतरोग दुर्बलता कटिपीड़ा बाहुकंध पीड़ा ॥ ३१ ॥ मुखशोष कर्णनाद वातपित्त बिकार अकाल केशपाक औबालनका गिरजाना इन्द्रलुप्त इनरोगनमें घृतादि स्निग्ध पदार्थवा शर्करादिमधुर पदार्थ इन करिकै बृंहण नासदेना ॥ ३२॥पक्षाघातादिपरनास॥ उरदकिमाच बीज सींगीरासन बरियारा रेंडकीजड़ रोहिष तृण ॥ ३३ ॥ असगंध इनका क्वाथकरि भुनीहींग सैंधवडारि तप्त नासदेय तौ पक्षाघात कंपवायु समेतअर्दितवायुमन्यास्तम्भ अपबाहुकइतनेबात

मता ३५ प्रत्येकशोनासिकयोः स्नेहेनेतिविनिश्चितं । स्नेहेग्रं-थिद्वयंयावन्निमग्नाचोद्धृताततः ३६ तर्जनीलग्नविन्दूनां विन्दुसंज्ञाप्रकीर्त्तिता । एवंविधौ र्विन्दुसंज्ञै रष्टभिःशाणमुच्यते ३७ स-देयोमर्शनस्येतु प्रतिमर्शोद्विविन्दुकः । समयाःप्रतिमर्शस्यवुधैःप्रो-क्ताश्चतुर्दश । प्रभातेदंतकाष्ठांते गृहान्निर्गमनेतथा ३८ व्यायामा ध्वव्यवायांते विण्मूत्रांतेजनेकृते । कवलांतेभोजनांते दिवासुप्तो त्थितेतथा ३९ वमनांततथासायं प्रतिमर्शःप्रयुज्यते । ईषदुच्छिं दनात्स्नेहो यदावक्त्रंप्रपद्यते ४० नस्येनिषिक्तंतंविद्यात्प्रतिमर्शं प्रमाणतः । उच्छिंदंनपिवेच्चैतन्निष्टीवेन्मुखमागतं ४१ क्षीणो तृष्णास्यशोषार्ते वालेवृद्धेचयुज्यते । प्रतिमर्शेनशाम्यंति रोगाश्चै वोर्ध्वजत्रुजाः ४२ वलीपलितनाशश्च वलमिंद्रियजंभवेत् । वि-भीतनिंवखंभारी शिवाशेलुश्चकाकिनी ४३ एकैकंतैलनस्येन

रोग शमन होई ॥ ३४ । ३५ ॥ प्रतिमर्शना एकी मात्रा दोबिंदु-रूपहै घृतादि स्निग्ध पदार्थ है है बुंद एकएक नथुनामें देइ इसे प्रतिमर्श नाम कहते हैं ॥ ३६ ॥ बिंदु संज्ञा पिघला घी वा तेलमें छोटी अंगुरी बोरिकै उठानेसे जितना बुंद टपकताहै उसे बिंदु कहते हैं औ आठ बिंदुको शाण कहते हैं सोई शाण मर्श नाश की मात्रा है औ प्रतिमर्श की दो बिन्दुकी मात्राहै ॥ ३७॥ प्रतिमर्श काल सबेरे दातून करके घरसे निकसते परिश्रम पर राह चलके मूत्रमल त्यागके अंजन करके भोजन कियेपर सूर्य निकरते ॥ ३८ । ३९ ॥ वमनांतमें संध्यासमय येप्रतिमर्शदेनेके समयहैं प्रतिमर्शन स्येदुत्तमलक्षणं॥ नासदेनेसे छींकथोड़ी आवै औ स्नेहमुख मार्गहो मुंहसे गिरपरै तौशुभजानिये॥ ४० ॥प्रतिमर्श योग्य क्षीण धातु तृषित शुष्कमुख बालक बूढ़ा इनको प्रतिमर्श उचितहै औ गले के ऊर्द्धरोगमेंशिथिलको त्वचाकी झुरीपरनेपर पलित इनरोगि-नको प्रतिमर्शनास दूरकरै इंद्रिनमें बलहोइ ॥ ४१ ॥ अकालकेश पाकपरनास॥ बहेड़ा नीम खंभारा हर्र लसौड़ा काकतुंडी इनको बीजनका तेल भिन्न भिन्न काढ़ि नासदेइ तौ बारकारेहोइं॥ ४२॥ ४३ ॥ नस्यविधि॥ पवन औ धूरिवर्जित स्थानमें मनुष्य दातूनकरि

पलितंनश्यतिध्रुवं । अथनस्यविधिंवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे।देशेवात
रुजोयुक्ते कृतदंतनिघर्षणं ४४ विशुद्धंधूमपानेन स्विन्नभालगदं
तथा । उत्तानशायिनं किञ्चित्प्रलंबशिरसंनरं ४५ आस्तीर्णहस्त
पादंच वस्त्राच्छादितलोचनं । समुन्नमितनासाग्रं वैद्योनस्येनयो
जयेत् ४६ कोष्णमच्छिन्नधारंच हेमतारादिशुक्तिभिः । शुक्त्या
वापत्रयुक्त्यावा स्रोतैर्वानस्यमाचरेत् । नस्येष्वासिच्यमानेषु शि-
रोनैवप्रकंपयेत् ४७ नकुप्येन्नप्रभाषेत नोक्षिंदेन्नहसेत्तथा ।
एतर्हिविहितस्नेही नैवांतःसंप्रपद्यते ४८ ततःकासप्रतिश्याय
शिरसोगदसंभवः । शृंगाटकमभिप्लाव्यस्थापयेन्नगिलेद्द्रवं ४९
पंचसप्तदशैवास्य मात्रानस्यस्यधारणे । उपविश्याथनिष्ठीवे
न्नासावक्रगतंद्रवं ५० वामदक्षिणपार्श्वाभ्यांनिष्ठीवेसन्मुखेनहि ।
नस्येनीतेमनस्तापंरजःक्रोधंचसंत्यजेत्५१ शयीतनिद्रांत्यक्त्वाच
उत्तानोवाकशतंनरः । तथावैरेचनस्यांते धूमोवाकवलोहितः ५२

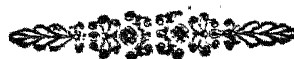
ह्काषी गलासखक शुद्धकरि घाममें उतानापौढ़े पोछेशिरभुकाय
नाक ऊंचीरहै ॥ ४४ । ४५ ॥ हाथ पाउं फैलाइ कपड़ेसे आंखेंढकि
वैद्यवही धीरेसे एक एक ओर नस्य देइ ॥ ४६ ॥ नस्यदेने का
पात्र सोने रूपे वा तांबे वा शीशीका होइ वा सीपीपत्र द्रोण वा
कपड़ेकी पुटरीसे नासदेइ ॥ ४७ ॥ नासलेनेवाला माथा न कँपावै
क्रोध न करै बोलैनहीं माखो मच्छु खटकीरादि काटने न पावैं हंसे
नहीं ऐसेसंयमबिना नस्यद्रव्यप्रवेश नहीं होती॥४८॥खांसीआजाती
हैतोखराबहो मस्तकमें आंखिनमें कांठपीड़ा उत्पन्नकरतीहै॥४९॥
नस्ये साधारण प्रकार: । नासदेनेसे शृंगाटक में औषधि प्रवेशना-
य पांच वा सात वा दशमात्रा ताईं नास धारण करे ॥ ५० ॥ जब
मुंहमें उलरआवै तब परपरै दहिने बायें थूकदे सन्मुख उठकैथूक-
नेसे औषधि गिरजाती है शृंगाटक उसे कहते हैं जो नाक के
दोनों छेद औंह तक पहुंच दो गले को चले गयेहैं एक दहिनी
एक बाईं भृकुटी के नीचे हो कपाल को चले गयेहैं नस्य
बर्जित नास लेके संतापन करै धूरि क्रोध बैठना निद्रा सौमात्रा
ताईं इनसे बचै उताना परारहै धुआं न पावै थूकनलीलै॥ ५१।५२ ॥

नस्येत्रीण्युपदिष्टानिलक्षणानिसमासतः । शुद्धहीनातियोगानिवि शेषाच्छास्त्रचिंतकैः ५३ लाघवंमनसःशुद्धिःस्रोतसांव्याधिसंक्षयः । चित्तेंद्रियप्रसादश्च शिरसःशुद्धिलक्षणं ५४ कंडूपदेहोगुरुतास्रो तसांकफसंस्रवः । मूर्ध्निहीनविशुद्धेतु लक्षणंपरिकीर्त्तितं ५५ म स्तुलुंगागमोवात वृद्धिरिंद्रियविभ्रमः । शून्यताशिरसश्चापि मू- र्ध्निगाढेविरेचिते ५६ हीनातिशुद्धेशिरसि कफवातघ्नमाचरेत् । सम्यग्विशुद्धे शिरसि सर्पिर्नस्यंनिषेचयेत् ५७ कफप्रसेकःशिर सोगुरुतेंद्रियविभ्रमः । लक्षणंनदतिस्निग्धेरूक्षंतत्रप्रदापयेत् ५८ भोजयेच्चानभिष्यंदि नस्याचारिकमादिशेत् । वमनंरेचनंनस्यं नि रूहमनुवासनं ५९ एतानिपंचकर्माणि कथितानिमुनीश्वरैः ६०

इतिश्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखंडेनस्यविधिरष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नस्य शुद्ध आदि भेद नास विषे तीन लक्षण शास्त्रज्ञ कहते हैं शुद्ध हीन अति योग्य सोमैं संक्षेप कहताहूं ॥ ५३ ॥ तमशुद्ध योगभये से देह हलकी मनशुद्ध मुख नाक रंध्र शुद्ध शिररोग रहित चित्त इंद्री प्रसन्न ये शुद्धयोग लक्षणहैं ॥ ५४ ॥ हीन योग लघुयोग भये देह खजुरी गुरुत्व मुख नाक से कफ गिरे ये हीनयोग लक्षण हैं ५५ ॥ अतियोगलक्षण मस्तक की मज्जा नाक से गिरै वायुवृद्ध इंद्री संभ्रम माथा खाली ॥ ५६ ॥ हीनदृढयोग यत्न कफ वायु हारक द्रव्य की भली भांति नास दे फिरि घीकी नासदेइ॥५७ ॥ अति स्निग्धलक्षण जो नस्य कर्म से स्निग्धता अधिक होती कफ अधिक गिरै माथा भारी इंद्री भ्रम ऐसे मनुष्य को रूक्ष नास देना ॥ ५८ ॥ नासमें पथ्य अभिष्यंद्यान्नकहे दध्यादि भक्षणत्यागै सुष्टु पूर्वोक्त आचारकरै पंचकर्म संख्या वमन विरेक नस्य निरूह वस्ती अनुवासन वस्ती ये पंचकर्म हैं ॥ ५९ । ६० ॥

इतिशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डेअष्टमोऽध्याय: ॥ ८ ॥



धूमस्तुषड्विधःप्रोक्तः शमनोबृंहणस्तथा । रेचनःकासहाचैव वामनोव्रणधूपनः १ शमनस्यतुपर्यायोमध्यप्रायोगिकस्तथा । बृं हणस्यापिपर्यायो स्नेहनोमृदुरेवच २ रेचनस्यापिपर्यायो शोधन स्तीक्ष्णएवच । अधूमार्हाश्चखल्वेते शांतोभीरुश्चदुःखितः ३ दंत वस्तिःविरक्तश्च रात्रौजागरितस्तथा । पिपासितश्चदाहार्तः ता लुशोषीतथोदरी ४ शिरोभितापीतिमिरी छर्द्याध्मानप्रपीडितः । क्षतोरस्कःप्रमेहार्त्तः पांडुरोगीचगर्भिणी ५ रूक्षःक्षीणोभावहृतः क्षीरक्षौद्रघृतासवः । भुक्तान्नदधिमत्स्यश्चबालोवृद्धःकृशस्तथा ६ अकालेचातिपीतश्चधूमःकुर्यादुपद्रवान् । तत्रेष्टंसर्पिषःपानंनाव नांजनतर्पणं ७ सर्पिरिक्षुरसंद्राक्षांपयोवाशर्करांवुवा । मधुरा- म्लौरसौवापिशमनायप्रदापयेत् ८ धूमश्चद्वादशाद्वर्षाद्ग्रह्यतेशी तिकांनिच । कासश्वासप्रतिश्यायान्मन्याहनुशिरोरुजः ९ वात

अथधूमपानविधानं॥ धूम पान छः प्रकार के हैं शमन बृंहण विरेच कासहर वामन व्रण धूपन येछःप्रकार जानना ॥ १ ॥ शमन धूम पान की पर्याय संज्ञा मध्य औ प्रायोगिक बृंहण पर्याय स्ने- हन औ मृदु ॥ २ ॥ रेचन पर्याय शोधन औ तीक्ष्ण धूममें अयोग्य थकित भयभीत दुःख पीड़ित ॥ ३ ॥ वस्ती किया देख जाते को राति जागे को प्यासेको मुख सूखनेवालेको ॥४॥ शिरगीरोगीको छर्दकी रोगीको आध्मान रोगी को पेट फूलनेको उरक्षती को पांडुरोगी को गर्भिणी को ॥ ५ ॥ रूक्ष को तीक्ष्ण को दूध दही सहत घृत खरस मद्य मछली इनसे भोजन किये को बालक वृद्ध इनको धूमपान योग्य नहीं और असमय धूम पान करसे उपद्रव उत्पन्न होते हैं ॥ ६ ॥ धूमपानादि अवतर्क कृत उपद्रव की चि- कित्सा॥ धूमपान से भये उपद्रव में घी पिलावै नासदेइ अंजन करै अर्थात् शरीर तृप्ति करने को दाखकायूसदे ॥ ७ ॥ घृतऊखरसदूध मिश्री घोलि खिलावै वा इनका रस सहत युक्त पिलावै वा और मधुर वस्तु वा खटमिट्ठा पदार्थ दे तौ धूम उपद्रव शांत हो ॥ ८ ॥ धूमपानावस्था समय॥ धूमसेवन बारह बर्ष से अस्सी बर्ष पर्यंत के मनुष्य को करावै जो धूमपान अच्छाबनै तौ श्वास कास नाक

श्लेष्मविकारांश्चहन्याद्धूमःसुयोजितः॥ धूमोपयोगात्पुरुषः प्रसन्नेंद्रियवाङ्मनः१० दृढकेशद्विजश्मश्रुःसुगंधवदनोभवेत्॥ धूमनाडीभवेत्तत्रत्रिखंडाचत्रिपर्विका ११ कनिष्ठिकापरीणाहाराजमाषागमांतरा । धूमनाडीभवेद्दीर्घाशमनेरोगिणांगुलैः १२ चत्वारिंशन्मितैस्तद्वद्द्वात्रिंशद्भिर्मृदौस्मृता। तीक्ष्णेचतुर्विंशतिभिःकासघ्नेषोडशोन्मितैः १३ दशांगुलिर्वामनीयेतथास्याद्व्रणनाडिका। कपालमंडलस्थूलाकुलित्थागमरंध्रका १४ अथैषिकांप्रलिम्पेच्च सुश्लक्ष्णांद्वादशांगुलां। धूमद्रव्यस्यकल्केनलेपश्चाष्टांगुलःस्मृतः १५ कल्कंकर्षमितंलिप्त्वाछायाशुष्कंचकारयेत्॥ ईषिकामपनीयाथस्नेहाक्तांवर्तिमादरात्१६ अंगारैर्दीपितांकृत्वाधृत्वानेत्रस्थरंध्रके। वदनेनपिबेद्धूमंवदनेनैवसंत्यजेत् १७ नासिकाभ्यांततःपीत्वामुखेनैववमेत्सुधीः॥शरावसंपुटेक्षिप्त्वाकल्कमंगारदीपितं १८ छिद्रे नेत्रंसुवेश्याथव्रणंतेनैवधूपयेत् । एलादिकल्कंशमनेस्निग्धं

बहना गले माथे की पीर बात कफ अन्य विकार सब दूर हों॥ ९॥ धूमपान विषे उपयोगी की प्रकृति अच्छे धूमपान भये चक्षुरादि इंद्री औ अंतःकरण बाणी ये प्रसन्न होतीहैं ॥१०॥ औ के श दंत डाढ़ी हो कछुनियासी मोटी मटरसा छेद हो ॥११।१२॥ शमन धूम पान की नली ४० अंगुल लंबी लेइ मृदु संज्ञक की ३२ अंगुल लंबी तीक्ष्ण संज्ञक की २४ अंगुल लंबी का समकी १६ अंगुललंबी १३॥ वामनी संज्ञककी १० अंगुल लंबी औ व्रणके घावमें धूनी देनेकी १० अंगुल लंबीपरंतु व्रणकी नली पूर्वोक्त नलियोंसे महीन होऔछेद कुलथी प्रवेश करने माफिक्रहैतौ व्रणधूपित होयगा॥ १४॥ धूमपान स्थैक विधानं॥द्वादश अंगुल की सींक छिलके समेत परद्रव्य कल्क चढ़ाय छांह में सुखाय सींक निकार बकाया कल्क लिप्त रहिजाइ॥ १५। १६॥ उसके छेदमें धूम बोरी महीन बत्ती प्रवेश जलाइदेइ दूसरा छोर मुंहमेंले धुंवांखैंचे औ मुंहसे धुंआं छोड़ै॥ १७॥ औ नाकसेपी मुंहसे छोड़ बुद्धिमान् धूनी विधान दोस कोरै एक संपुटकरै ऊपर छेदरहै उसछेद से संपुट में अग्नि धरि कल्क सुलगावै तवदुमुंहीं नली ले एक संपुट के छिद्रमें दूसरे

सर्जरसंमृद्रौ १६ रेचनेकल्कतीक्ष्णांचकासघ्नेकुद्रिकोषणं । वामने स्नायुचर्माद्य दद्याद्धूमस्यपानकं २० व्रणेनिंबवचाद्यंचधूपनंसं प्रचक्षते । अन्येपिधूमागेहेषुकर्तव्यारोगशांतये २१ मयूरपिच्छं निंबस्यपत्राणिबृहतीफलं । मरिचंहिंगुमांसीचबीजंकार्पाससंभवं २२ छागरोमाहिनिर्मोकंविष्ठावैडालिकीतथा । गजदंतश्चतच्चूर्णंकिंचिद्घृतविमिश्रितं २३ गेहेषुधूमनंदत्तंसर्वान्बालग्रहांजपेत् । पिशाचान्राक्षसांजित्वासर्वज्वरहरंभवेत् २४ परिहारस्तुधूमेषु कार्योरेचननस्यवत् । नेत्राणिधातुजान्वाहुर्नलवंशादिजान्यपि २५

इतिश्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखंडेधूमपानविधिर्नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

मुंहसेव्रणपर धुंआंदेइ ॥ १८ ॥ कल्कधूमद्रव्याणि ॥ शमन धूमपान में एलादि गणका कल्कदेइ मृदुमेंघृतादिस्नेह रालमिलाइ कल्क करिदेइ तीक्ष्ण में सरसौ मधुआदि कल्क करिदेइ कासमें मरिच भटकटैयादि कल्क करिदेइ वमन हेतु चर्मादिका धुंआं देना १९ । २० ॥ व्रणमें नींबवचादि कल्क करिदेइ वाग्भट्टोक्त एलादि गण उभय इलाइची शिलारस कूट कसेरुमूल मकरा जटामासी खस रोहिषतृण वा अगियाखर कपूर कचरी किरमानी अजवाइन तजतमालपत्रतगर मोथा चमेलीकेसर सीपी बाघनख देवदारु अगर केशर किमाच मूल गूगुल राल कपूर चंपापुष्प ये एलादि गण हैं ॥ २१ । २२ । २३ ॥ बालग्रह निवारण धूप मोरपंख नीमपत्र भटकटैया मरिच हींग जटामासीबिनवर केचुरी बिलारबीट हाथीदांत येग्यारहौंके चूर्णमें घृत मिलाइ घरधूपित करैसे सब बालग्रह पिशाच राक्षस उपद्रव औ इन संबंधी सर्व ज्वर नाशहोइ ॥ २४ ॥ धूमेपरिहारः ॥ धूमपान से परिहाररेचन नस्यसदृशकरना धुवांपीनेकीनली धातुमयवा बांसकीमेंपिये ॥ २५ ॥

इतिश्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखंडेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

चतुर्विधःस्याद्गंडूषः स्नेहकःशमनस्तथा । शोधनोरोपणश्चैव कवलश्चापितद्विधः १ स्निग्धोष्णैःस्नेहकोवाते स्वादुशीतैःप्रसादनः। पित्तेकट्वम्ललवणै रूक्षैःसंशोधनैःकफे २ कषायपित्तमधुरः कटूष्णोरोपणोव्रणे । चतुःप्रकारोगंडूषः कवलश्चापिकीर्त्तितः ३ असंचारीमुखेपूर्णो गंडूषाकवलश्चरः तत्रद्रवेणगंडूषः कल्केनकवलःस्मृतः ४ दद्याद्द्रव्येषुचूर्णंच गंडूषेकोलमात्रकं। कर्षप्रमाणःकल्कश्च दीयतेकवलेबुधैः ५ धार्यतेपंचमाद्वर्षाद्गंडूषंकवलादयः। गंडूषान्सुस्थितःकुर्यात् खिन्नमालगलादिकः ६ मनुष्यस्त्रीतथापंच सप्तवादोषनाशनात् । कफपूर्णास्यतांयावच्छेदोदोषस्यवाभवेत् ७ नेत्रघ्राणश्रुतिर्यावत्तावद्गंडूषधारणं। तिलकल्कोदकंक्षीरस्नेहोवास्नैहिकेहितः८तिलानीलोत्पलंसर्पिः शर्कराक्षीरमेवच। सक्षौद्रोहन्तुवक्त्रस्थो गंडूषोदाहनाशनः ९ वैशद्यंजनयत्यास्ये संदधातिमुखव्रणान्। दाहतृष्णाप्रशमनं मधु

गंडूषकवलप्रतिसारविधिः॥ गंडूष ४ प्रकारके हैं स्नेहक शमन शोधन रोपणयोंहीं ४ प्रकारके कवलभीहैं ॥ १ ॥ स्नेहिक गंडूष भेदचिकना उष्णपदार्थ स्नेहिकहै वायुप्रबलतामें दीजै ठंढापदार्थ शमन में पित्त विकारमें कडुवा खट्टा उष्ण शोधन में कफविकार में॥ २ ॥कषायकटु मधुर तप्तकरि रोपणमें देना व्रणादिमें ऐसेही कमलमें जानना ॥ ३ ॥ गंडूषकवल रीति जोगीला काढ़ादिमुंहमें भरिखूब गुल गुलावै उसे गंडूष कहैं जो कल्ककरि मुह में धरि फेराकरै सो कवल है ॥ ४ ॥ उभयोः द्रव्यप्रमाणं ॥ गंडूष के क्वाथ में द्रव्य प्रमाण कोलकवलमें कर्ष कर्षदेना ॥ ५ ॥गंडूष कवलयोग्य अवस्था पांचवर्षके ऊपर सावधानकरि रोगनिवारणार्थ कपाल गला मुख कुक्षसेंक तीन वा पांच वा सात वा दोष नाशतकगंडूष करै ॥६ ।७ ॥पुनः प्रमाण जब मुखमें कफभरआवै वा तीनौदोषशांतितक वानेत्रनाकसे जल टपकनेतक गंडूषकरै बातरोग स्नेहगंडूष तिलकल्कपानी दूध वा तिलादि स्निग्धद्रव्येदेना ॥ ८ ॥ पित्तशमन गंडूषं॥तिल नील कमल घृत खांड़ दूध सहत मुख कुल्ले करैसे पित्तजदाह ठोढ़ी औमुखसे दूरहोइ ॥ ९ ॥ व्रणादि पर गंडूष सहतको

गंडूषधारणात् १० विषक्षाराग्निदग्धेचसर्पिर्धार्यंपयोथवा। तैल सैंधवगंडूषो दंतचालेप्रशस्यते ११ शोषंमुखस्यवैरस्यं गंडूषः कांजिकोजयेत् । सिंधुत्रिकटुराजाभिरार्द्रकेणकफेहितः १२ त्रिफलामधुकंडूषः कफासृक्पित्तनाशनः । दार्वीगुडूचीत्रिफला द्राक्षा जात्याश्चपल्लवाः १३ जवासश्चेतितत्क्वाथः षष्ठांशःक्षौद्रसंयुतः। शीतोमुखेधृतोहन्या न्मुखपाकंत्रिदोषजं १४ यस्यौषधस्यगंडूष स्तथैवप्रतिसारणं । कवलश्चापितस्यैव ज्ञेयोऽत्रकुशलैर्नरैः १५ केशरंमातुलंगस्यसैंधवंव्योषसंयुतं १६ हन्यात्कवलतोजाड्यम रुचिंकफवातजां। कल्कोवलेहश्चूर्णंचत्रिविधंप्रतिसारणं १७ अंगुल्यग्रगृहीतंचयथास्वमुखरोगिणा । कुष्ठंदार्वीसमंगाचपाठातिक्ताचपीतिका १८ तेजनीमुस्तलोध्रंचचूर्णंस्यात्प्रतिसारणं । रक्त

कुल्ला करनेसे मुखक्षत रस अज्ञान चटकना दाह प्यास ये उपद्रव दूरहों मुखशुद्धहो ॥ १० ॥ विषादिपर गंडूष घृत वा दूधके कुल्ले करनेसे विष बिकार चनेसेफटा अग्निसे जरामुख अच्छाहो दांत हलनेपर तिलतैल सैंधव युक्तकुल्ले करैसे दांत हलना दूरहो॥ ११॥ मुखशोषपर मुखसूखना औफीका रहना कांजीके कुल्लेसे शांति होइ कफ दोष पर अदरकके रसमें सैंधव त्रिकुटा राई पीसि मिलाइ कुल्ले करैसे कफदोष मिटै॥ १२॥ कफरक्त पित्तपर त्रिफला चूर्णसहत में डारि कुल्लाकरैसे कफरक्त पित्तदोष मुखमें न रहै मुखरोगपर दारुहर्दी गुर्च त्रिफला दाख चमेली ॥ १३ ॥ जवासा समान ले क्वाथकरि छठवाँभाग सहतदे ठंढेकुल्ले कियेते त्रिदोष मुखपाक मिटै॥ १४ ॥ गंडूष करनेवाली द्रव्य प्रतिसारण औ कवलमेंभीदेना॥ १५ ॥ कवलविधान केसर बिजौरा गूदी सैंधव त्रिकुटाइनसबकाकौर बनाइ मुखमें बिलोवै तौ मुखकी कठोरता औ कफवातकी अरुचि दूरहो ॥ १६ ॥ प्रति सारणप्रकार प्रतीसारण में तीनप्रकार औषधि देनेके हैं कल्क अवलेह चूर्ण जैसा मुखमें दोषदेखै तैसी औषधि अंगुलीके अग्रभागसे मुखकेभीतर मलै॥१७॥ प्रतिसारण चूर्णकूट दारुहर्दी धवपुष्प पाढ़ा कुटकी हर्दी ॥ १८॥ तेजबल मोथा लोध इनका चूर्ण जीभ और दांतकी

श्रुतिदंतपीडांशोथंदाहंचनाशयेत् १६ हीनयोगात्कफोत्क्लेशो रसाज्ञानारुचीतथा । अतियोगान्मुखेपाकःशोथतृष्णाक्लमोभवेत् २० व्याधेरुपचयस्तुष्टिर्वैशद्यंवक्त्रलाघवं । इंद्रियाणांप्रसादश्चगंडूषेशुद्धिलक्षणं २१ ॥ इतिशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेगंडूषादिविधिर्दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अलेपस्यचनामानिलिप्तोलेपश्चलेपनं। दोषघ्नोविषहावर्ण्योमुखलेपस्त्रिधामतः १ त्रिप्रमाणश्चतुर्भागास्त्रिभागार्द्धांगुलोन्नतः । आर्द्रोव्याधिहरःसस्याच्छुष्कोदूषयतिच्छविं २ पुनर्नवांदारुशुंठींसिद्धार्थंसिग्रुमेवच । पिष्ट्वाचैवारनालेनप्रलेपःसर्वशोथहा ३ विभीतफलमंजास्तुलेपोदाहार्तिनाशनः । सिरीषंमधुयष्टींचतगरंरक्तचंदनं ४ एलामांसीनिशायुग्मं कुष्ठम्वालुकमेवच । इतिसंचूर्ण्यलेपोयंपंचमांशघृतप्लुतः ५ जलेनक्रियतेसुज्ञैर्दशांगइतिसंज्ञितः ।

जड़में वारवार मल गिरावै जो इस प्रतिसारणसे दांत पीड़ा रक्त गिरना मसूढ़ा सूजन दाह ये रोग दूरहोइं ॥ १९ ॥ गंडषादि हीन होइ भये से उपद्रवके लक्षण हीनभये कफ अधिक स्वाद अज्ञानता होतीहै अन्नसे अरुचि अति योगसे मुखपकना पित्तकी होना मुखशोष ग्लानि ये उपद्रव होतेहैं ॥ २० ॥ सम्यक्गंडूष लक्षण ॥ मुखव्याधि नाशचित्त प्रसन्न मुखनिर्मल हलका शोभको स्वादऐसाजानना॥२१ ॥ इतिशार्ङ्गधरेउत्तरखंडेदशमोध्यायः॥१० ॥

अथ लेपविधानं ॥लेपके तीन नामहैं लिप्त लेप लेपन लेपदोषघ्न है विषघ्न है वर्ण प्रद है मुखलेप कहे ॥ १ ॥ मुखलेप सो तीनप्रकारका है उसका प्रमाण तीनभांति है जो अंगुलभर मोटा लेपहो सो दोषघ्न है पौन अंगुल मोटा लेप चढ़ावै सो विषघ्न है अर्द्धांगुल लेप वर्ण्य है ऐसे तीनप्रमाणहैं ओदालेप रोगहर्ताहै सूखाकांति हरताहै ॥ २ ॥ दोषघ्नलेप गदापुर्ना देवदारु सोंठि सिर्स सहिंजन त्वचा पांचौ समभाग कांजीमें पीसि सूजनपर लेपनकरै नवौं सूजन दूरहोय ॥ ३ ॥ बहेडेकी मींगीके लेपसे दाह पीड़ा नाश हो दशांगलेप सरसौं मुरेठी तगर लालचंदन ॥ ४ ॥ इलाइची

विसर्पान्विषविस्फोटांछोथदुष्टव्रणान्जयेत् ६ अजादुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः । शोथमारुष्करंहंतिलेपोवाकृष्णमृत्तिकैः ७ लांगल्यतिविषालावुजालिनीवीजमूलकैः । लेपोधान्यांवुसंपिष्टःकीटविस्फोटनाशनः ८ रक्तचंदनमंजिष्ठालोध्रकुष्ठप्रियंगवः । वटांकुरामसूरश्चव्यंगघ्नोमुखकांतिदः ९ मातुलिंगजटासर्पिःशिलागोशकृतोरसः । मुखकांतिकरोलेपः पिटिकाव्यंगकीलजित् १० लोध्रधान्यवचालेप स्तारुण्यपिटिकापहः । तद्वद्गोरोचनायुक्त म्मरिचंमुखलेपनात् ११ सिद्ध्यर्थकवचालोध्र सैंधवस्यप्रलेपनंव्यंगेषुचार्जुनत्वग्वा मंजिष्ठावासमाक्षिका १२ लेपःसनवनीतोवाश्वेताश्वखुरजामखी । अर्कक्षीरहरिद्राभ्यांमर्दयित्वाविलेपनात् १३

मांसी हर्दी दारु हर्दी कूट नेत्रबाला ये दशौ समभाग चूर्णकरि पंचमांश घृत मिलाइ ॥ ५ ॥ पानी में पीसि लेपकरैसे विसर्प विष दोष विस्फोटक सूजनदुष्ट फोड़ा ये सब परानयहों इसकादशांगलेप नामहै ॥ ६ ॥ विषघ्नलेपः बकरीका दूध तिल पीसि माखन युक्त लेपकरै वा कारी माटी तिलकालेप करै विषसंभव सूजन सिलाव सूजन दूरहोइ॥ ७॥ पुनर्लेप करियारी अतीस कटुदूध वा कटुतुरई मूरी तीनोंकेवीज पांचोंकेसमानकांजी में पीसिकै कीटदंश पर विस्फोट परलगावेतैदोषमिटै ॥ ८ ॥ कांतिकारकलेप रक्तचंदन मजीठ कूट मालकांगनी वटांकुर मसूर येसब समानजलमेंपीसि लेप करै व्यंगरोग मिटै कांतिबढ़ै॥ ९॥पुनः बीजपूरकी जड़ घृत मैनशिल गोमयरस मिलाइलेपैकांतिबढ़ै मुहांव्यंगरोगयेसब दूरहोइं॥१०॥ तरुणपिटिकापरलेप जोतरुण मनुष्य के मुंहपरछोटीछोटी पिरिकीउभरैं वह तरुण पिटिकाहै लेप लोध बच धनिया तीनौ सम भागपीसि लेपकरै तैसे गोरोचन मरिच पानी में पीसिलगावै वा सरसौं बच लोध सैंधव समभाग जलमें पीसिलेपै ये तीनप्रकार के लेपलगाये से मुंहपरकी तरुणपनकी पिटिका अच्छीहोइं ॥ ११॥ व्यंगरोगपर लेप अर्जुनकीछाल वा मजीठ वा श्वेतघोड़ेकीनखकी भस्म तीनोंमें कोईद्रव्य सहत संयुक्त लेपकरै व्यंगरोग मिटै ॥१२॥ मुखपरकीझांईपरलेप मदारकेदूध हर्दीघिसलगावै तौबहुत दिन

मुखकाष्ण्र्यंशमंयातिचिरकालोद्भवंध्रुवम् । वटस्यपांडुपत्राणि मालतीरक्तचंदनं १४ कुष्टंकालीयकंलोध्र मेभिर्लेपंप्रयोजयेत् । तारुण्यपिटिकाव्यंगनीलिकादिविनाशनं १५ पुराणमथपिण्याकं पुरीषंकुक्कुटस्यच । मूत्रपिष्टःप्रलेपोयंशीघ्रं हन्यादरूंपिकाम्१६ खदिरारिष्टजंबूनां त्वग्भिर्वामूत्रसंयुतैः। कुटजत्वक्सैंधवंवाले पोह न्यादरूंपिकां१७प्रियालबीजंमधुकं कुष्टमाषैःससैंधवैः । कार्योदारुणिकेमूर्ध्नि प्रलेपोमधुसंयुतः १८ दुग्धेनखाखसंबीजं प्रलेपाद्दारुणंजयेत् । आम्रबीजस्यचूर्णंतु शिवाचूर्णसमंद्वयं १९ दुग्धपिष्टः प्रलेपोयं दारुणंहंतिदारुणं । रसस्तिक्तपटोलस्य पत्राणांतद्विलेपनात् २० इन्द्रलुप्तंशमंयाति त्रिभिरेवदिनैर्ध्रुवं । इन्द्रलुप्तापहोलेपो मधूनाबृहतीरसः २१ गुंजामूलंफलंवापि भल्लातकरसोपिवा । गोक्षुरस्तिलपुष्पाणि तुल्येचमधुसर्पिषी २२ शिरःप्रलेपनंतेन केशसंवर्द्धनंपरं । हस्तिदंतमषींकृत्वा छागीदुग्धंरसां

की भई मुखपरकी भांई निश्चय दूरहोइ ॥ १३ ॥ तारुण्यपिटिका परलेप बटका पीलापत्र चमेली रक्तचंदन ॥ १४ ॥ कूट दारुहलदी लोध सब एकमें पीसिलेपै तौतरुण पिटिका व्यंग भांई दूरहोइ १५ ॥ रूखीपरलेप पुराने तिल वा उसकी खकड़ी कुकुटकी बीट दोनोंगोमूत्रमें पीसि लेपकरै रूखी दूरहोइ ॥ १६ ॥ पुनःप्रकारः खैर नींवजामुन तीनोंकाल गोमूत्रमें पीसिलेपकरै नाशहोइ दारुणरोगपर लेप चिरोंजी मुरैठीकूट माष सेंधवयेपांचों समभाग पीसि सहतयुक्त लेपकरै दारुणरोग मिटै ॥ १७ । १८ ॥ पुनर्लेपः॥ खसखसपीस दूधमें लेपकरै वा आमकी बिजुरी छोटीहड़ दूधमें पीसिलेपै तो दारुणरोग नाशहोइ ॥ १९ ॥ इंद्रलुप्त परलेप करुए परवलकी पत्तीका रसतीन दिनलेपै तौ बादखोरा दूरहो ॥ २० ॥ पुनः भटकटैयाकेरसहतकालेपकरै वा घुंघचीकेपत्र वाफलकारसका सहत केसाथलेपकरै वा भिलावापरका रससहतके साथ लेपकरैसे बादखोरादूरहो ॥२१॥ केशवर्द्धनलेप गुखरू तिलपुष्प का समान चूर्णकरैसमान घृतसहत में फेंटि लगावै तौ बारबाढ़ैं॥ २२॥ बारजमैं पर हाथीदांतकी जराईरसौंत और बकरी के दूधमें पीसिलेपकरै

जनं २३ रोमाणितेनजायंते लेपात्पाणितलेष्वपि । यष्टींदीवर मृद्वीका तैलाज्यक्षीरलेपनैः २४ इन्द्रलुप्तंशमंयाति केशास्युःस घनादृढाः । चतुष्पदानांत्वग्रोमनखशृङ्गास्थिभस्मभिः २५ तैले नसहलेपोयं रोमसंजननंपरं । इन्द्रवारुणिकाबीज तैलेनाभ्यंग माचरेत् २६ प्रत्यहंतेनकालाग्नि सन्निभाःकुंतलाश्चलं । अयोर जोभृङ्गराज स्त्रिफलाकृष्णमृत्तिका २७ स्थितमिक्षुररोमासं लेप नात्पलितंजयेत् । धात्रीफलत्रयंप्रस्थं द्वेतथैकंविभीतकं २८ पं चाम्रमज्जालोहस्य कर्षैकंचप्रदीयते। पिष्ट्वालोहमयेभांडे स्थापये दुषितंनिशि २९ लेपोयंहंतिनचिरादकालपलितंमहत् । त्रिफ लानीलिकापत्रं लोहंभृङ्गरजःसमं ३० अजामूत्रेणसंपिष्टं लेपा त्कृष्णीकरंस्मृतं । त्रिफलालोहचूर्णंच दाडिमत्वग्बिसंतथा ३१ प्र त्येकंपंचपलिकं चूर्णंकुर्याद्विचक्षणः । भृङ्गराजरसस्यापि प्रस्थष ट्कंप्रदापयेत् ३२ मासमेकंततःकुर्या च्छागीदुग्धेनलेपनं । कूर्चे

जहां बार न हों यथा हथेरीमें तौ बारजगें और अंगमेंक्यों न जमेंगे रसौतबिधिनिरूहण वस्तीमें कहीहै ॥ २३ ॥ इंद्रलुप्तपर लेपमुरेठी कमल दाख तीनोंघृत तिलतेल गऊको दूधमेंपीसिलेपकरै बादखोरा दूरहोइ ॥ २४ ॥पुनः चतुष्पद चर्मरोग नख सींग हाड़ इनकी भस्म तिलतेल फेंटि लेप करै तौ नष्टबार जामैं ॥ २५ ॥ केश कृष्ण करन इंद्रायन के बीज का तेल पाताल इंद्र से निकारि सपेदबारोंमें लगावै तौ काले हो जायँ ॥ २६ ॥ पुनः लोहचून भंगरा त्रिफला कालीमाटी येछवों समान चूर्णकरि उष्ण रस में सानि मास भर राखि कुछदिनौं लेपकरै तौ अकाल के श्वेतबाल कालेहोइं ॥ २७ ॥ तृतीयः आंवरा तीन हड़ दो बहेड़ा दो आमकी बिजुली पांच लोहचून एककर्ष ये सब कराही में अति सूक्ष्म घोटै उसीमेंदिन रात रहने दे फिर लेप करै तौ श्वेत श्वेत केशकालेहों ॥ २८ । २९॥ चतुर्थः त्रिफला तिल पत्र लोह चून भंगराये सम भागले छगरी के मूत्रमें पीसि पके बारपर लगाये तो कारेहोयं ॥ ३० ॥ पंचमलेप त्रिफला लोहचून अनार की छाल कमल बाल येपाचौ औषधि पांच पल औ भंगरेका रस छः प्रस्थ निचोरि पूर्वोक्त द्रव्य एकत्र

शिर सिरायोंच संवेष्ट्येरंडपत्रकैः ३३ स्वपेत्प्रातस्ततःकुर्या त्स्ना नंतेन प्रजायते । पलितस्यविनाशश्च त्रिभिर्लेपैर्नसंशयः ३४ शं खचूर्णस्यभागौद्वौ हरितालस्यभागिकः । मनःशिलाचार्द्ध भागा स्वर्जिकाचैकभागिका ३५ लेपोयंवारिपिष्टस्तु केशानुत्पाट्यदी यते । अनयालेपयुक्त्याच सप्तवेलंप्रयुक्तया ३६ निर्मूलकेशस्थानं स्यात्क्षपणस्यशिरोयथा । तालकंशाणयुग्मंस्या त्पट्शाणंशंखचू र्णकं ३७ द्विशाणिकंपलाशस्य क्षारंदत्वाप्रमर्दयेत् । कदलीदंड तोयेन रविपत्ररसेनवा ३८ अस्यापिसप्तभिर्लेपै र्लोमांशातनमु त्तमं । सुवर्णपुष्पीकाशीसं विडंगानिमनःशिला ३९ रोचनासैंधवं चैव लेपनात्स्वित्रनाशनं । वायस्येरंडजाकुष्ठ कृष्णाभिर्गुटिकाकृ ता ४० वस्तमूत्रेणसंपिष्ट्वा प्रलेपान्नुस्वित्रनाशनं । रसांजनमय

करि लोहे की कढ़ाई में सूक्ष्म करि घोटै ॥ ३१ । ३२ ॥ एक मास भरि राखै तिस पीछे निकारि बकरीके दूधसें घिस श्वेत बारनपर लेपकरै और ऊपरसे रंडकेपत्ता बांधै॥३३॥राति भरिबांधेरहै प्रभा-त स्नान करते समय धोय डारै यों ही तीन दिन लेप करने से सपेद बार कारे होयं ॥ ३४ ॥ अथलोमशातनप्रकार बार गिराने कालेप ॥ शंखचूर्ण दोभाग हरताल एक भाग मैनशिल अर्द्ध भाग सज्जी एक भाग ॥ ३५ ॥ येसब दवाई पानी में पीसि जहां के बार गिराने मंजूर हों तहां लेप करै बाकी बारनको कपड़ेसे ढांकेरा-खै लेप के पहिले बार दूर करिकै तब उस ठौर में यह लेप सात बार करै सब बार गिरैं फिर न होइं जैसे बार बनवाये पर यह रोमशातन अति उत्तम है ॥ ३६ ॥ पुनः हरताल शंख चूर्ण पलाश खार दोदो शाण केले के दूरका पानी में वा आकपत्र के रस में पीसि सात बार लेप करे से बार गिर जाइं बार गिराने को यह लेपउत्तम है ॥ ३७ । ३८ ॥सपेदकुष्ट पर लेप ॥ पीली चमेली गजपी-परि कशीश विडंग मैनशिल गोरोचन सैंधव इनोसमभाग गोमूत्र में पीसि लेप करै श्वेत कुष्ट दूरहोइ ॥ ३९ ॥ पुनः काकढोढ़ी कूट पीपरि सब समान खसीमूत्र में पीसि लेप करे श्वेत कुष्ट दूरहोइ ४० ॥ तीसरा बकुची अमलबेतस लाख कठगुलरी पीपरि रसौत

श्चूर्णं तिलाःकृष्णास्तदेकतः ४१ चूर्णंपलिनागवांपित्तैः पिष्ट्वाच गुटिकाकृता। अस्याःप्रलेपात्स्वित्राणिप्रणश्यंत्यतिवेगतः ४२ धात्रीसर्जरसश्चैव यवक्षारश्चचूर्णितः ४३ सौवीरेणप्रलेपोयंप्रयोज्यःसिध्मनाशने। दार्वीमूलकबीजानि तालकंसुरदारुच ४४ तांबूलपत्रंसर्वाणि कर्षिकाणिपृथक्पृथक्। शंखचूर्णंशाणमात्रं सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् ४५ लेपोयंवारिणापिष्टः सिध्मनाशकरःपरः। हरीतकींसैंधवंचगैरिकंचरसांजनं ४६ विडालकोजलेपिष्टःसर्वनेत्रामयापहः। रसांजनंव्योषयुतंसंपिष्ट्यवटकीकृतं४७ कंडूपाकान्वितांहंति लेपादंजननामिकां। प्रपुन्नाटस्यबीजानिवाकुचीसर्षपस्तिलाः ४८ कुष्ठंनिशाद्वयंमुस्तंपिष्ट्वातक्रेणचैकतः। प्रलेपादस्यनश्यंतिकंडूदद्रुविचर्चिकाः ४९ हेमक्षीरीविडंगानिदरदंगंधकस्तथा। दद्रुघ्नःकुष्ठसिंदूरंसर्वाण्येकत्रमर्दयेत् ५० धत्तूरनिंबतांबूलप

लोहचून कारे तिल आठौ सम भाग गोपित्त में पीसि लेप करे श्वेत कुष्टदूरहोइ ॥ ४१ । ४२ ॥ सेऊआंपरलेप ॥ आंवरा रालयवाखार येतीनौ सौवीर वा कांजी में पीसि लेपकरै सेऊआं दूर होइ सौवीर औ कांजीविधान रेचनाध्याय से जानना ॥ ४३ ॥ पुनः दारुहरदी मूरीकेबीज हरताल देवदारु पान ये सब कर्ष कर्ष भर शंख चूर्ण शाणभर सब पानी में पीसि लेप करै सिध्मजो सेऊआं सो दूर होइ ॥ ४४ । ४५ ॥ नेत्रलेप ॥ हड़ सैंधव गेरू रसौत चारौं समान पानी में पीसि पलक पर लेप करै सर्ब नेत्र रोग दूर होइं ॥ ४६ ॥ पुनःरसौत सोंठि मिर्च पीपरिचारौं समान पानी में पीसि गोली बनाइ पलक पर लेप करै इस अंजन नामिका लेप से नेत्र कोरनि की खजुरी औ गुहांजनी जोपलक की कोरपर छोटीछोटी पिरिकी होतीहैं सोदूरहोइं ॥ ४७ ॥ खजुरीपर लेप चकौड़बिया बकुचीसरसों तिलकूट हरदी दारुहलदी मोथा येआठों समभाग मट्ठेमेंपीसि लेपकरै खजुरी दाद्र विचर्चिका पाय फूटना येरोग न रहैं ॥ ४८ । ४९ ॥ सूखीखाजपर लेप ॥ चोक बिडंग सिंगरफ़ गंधक चौकोड़बिया कूट सेंदुर येसातों समानले ॥ ५० ॥ नीमपत्र धतूरापत्र पान तीनोंरस निकारि जुदे

त्रायांस्वरसैःपृथक् । अस्यप्रलेपमात्रेणपामादद्रुविचर्चिकाः ५१ कंडूश्चरकसश्चैवप्रशमंयांतिवेगतः । दूर्वाऽभयासैंधवंचचक्रमर्दःकुठेरकः ५२ एभिस्तक्रयुतोलेपः कंडूदद्रुविनाशनः । चंदनोशीरयष्ट्याह्वबलाव्याघ्रनखोत्पलैः ५३ क्षीरपिष्टैःप्रलेपस्याद्रक्तपित्तशिरोरुजि । सिद्धार्थरजनीकुष्ठप्रपुन्नाटतिलैःसह ५४ कटुतैलेनसंमिश्रंदद्रुघ्नंचविलेपनं । रास्नानीलोत्पलंदारुचंदनंमधुकंबला ५५ घृतक्षीरयुतोलेपोवातवीसर्पनाशनः । मृणालंचंदनंलोध्रमुशीरंकमलोत्पलं ५६ सारिवामलकीपथ्यालेपेपित्तविसर्पनुत् । त्रिफलापद्मकोशीरंसमंगाकरवीरकं ५७ नलमूलामनंताचलेपश्लेष्मविसर्पहा । मूर्वानीलोत्पलंपद्मं शिरीषकुसुमैःसह ५८ प्रलेपःपित्तवातेस्त्रशतधौतघृतप्लुतः । आमलंघृतभृष्टंतुपिष्टंकांजिकवारिभिः ५९ जयेन्मूर्ध्नि

जुदे पूर्वोक्त द्रव्यरसमें पीसि लेपकरै सूखीखाज दाद विचर्चिका पद फूटना खाज रक्त कुष्ट येसब नाशहोई ॥ ५१ ॥ पुनः दूब छोटीहड़ सैंधव बच चकोड़बिया कटसरैया पांचौ मट्ठामेंपीसि लेपकरै खजुरी दाद दूरहोइ ॥ ५२ ॥ रक्तपित्तपरलेप ॥ लालचंदन खस मुरेठी बरियारा व्याघनख कमल येछहौ समभाग दूधमेंपीसिलेपकरै तौ रक्तसंबंधी शिरकेरोगमिटैं ॥ ५३ ॥ उदररोगपरलेप सरसों हरदी कूट चकौड़बिया तिल येसब समान कडुयेतेलमें पीसि लेपकरै शीत पित्त संबंधी उदररोग दूरहोयं ॥ ५४ ॥ बातविसर्पपर ॥ रासननील कमल देवदारु रक्तचंदन मुरेठी बरियारा ये समभाग दूधमेंपीसि घृतमिलाइ लेपकिहेते बात विसर्प दूरहोइ ॥ ५५ ॥ पित्तविसर्पपर कमलनाल रक्तचंदन लोध खसकमल कोकाबेली सरिवनआंवरा अंगीहड़ येसब समभाग पानीमेंपीसि लेपकिहे पित्तविसर्पकीहानिहोइ ॥ ५६ ॥ कफविसर्पपर त्रिफला पद्माक खस धवपुष्प कनेर नरटमूल जवासा येसब समानलेप किहेते कफविसर्पहरै ॥ ५७ ॥ पित्त बात रक्तपर मरोरफली नीलकमल पद्माक सरसोंफूल इनका चूर्ण सौबार धोयेघृत में फेंटि लेप किहेते पित्त बात रक्तकी हानिहोय ॥ ५८ ॥ नाकरक्तस्रावपर आंवरा घीमें भूंजि कांजी मेंपीसि लेप किहेते नाकसे रुधिर गिरना बंदकरै ॥ ५९ ॥ बातज

प्रलेपेनरक्तंनासिकयास्रुतं । कुष्ठमेरंडतैलेनलेपात्कांजिकपेषितम्
६० शिरोर्तिंवातजांहन्यात्पुष्पंवामुचकुंदजं । देवदारुनतंकुष्ठंनल
दं विश्वभेषजम् ६१ सकांजिकःस्नेहयुक्तो लेपोवातशिरोर्तिनुत् ।
दूर्वोशीरनलानांचमूलैःकुर्यात्प्रलेपनं ६२ शिरोर्तिंपित्तजांहन्याद्रक्त
पित्तरुजंतथा । हरेणुनरशैलेयमुस्तैलागरुदारुभिः ६३ मांसीरा-
स्नाक्ष्वकैश्चकोष्णोलेपःकफार्तिनुत् । शुंठीकुष्ठप्रपुन्नाटदेवकाष्ठैः
सरोहिषैः ६४ मूत्रपिष्टैःसुखोष्णैश्चलेपः श्लेष्मशिरोर्तिनुत्। सा-
रिवाकुष्ठमधुकंवचाकृष्णोत्पलैस्तथा ६५ लेपस्सकांजिकस्नेहः
सूर्यावर्ताद्धभेदयोः। वरीनीलोत्पलंदूर्वातिलाःकृष्णाःपुनर्नवा ६६
शंखकेऽनंतवातेचलेपःसर्वशिरोर्तिजित् । अथलेपविधिश्चान्यःप्रो-
च्यतेसुज्ञसंमता ६७ द्वौतस्यकथितौभेदौप्रलेपाख्यप्रदेहकौ । च-

शिरोपीड़ापर कूट वा मुचकुंदपुष्प काँजी में पीसि रंड तेल युक्त मस्तकपर लेपकिजे बातजन्य शिरोपीर मिटै ॥ ६० ॥पुनर्लेपः॥ देवदारु तगर कूट सुगंधबाला पांचो समान कांजी में पीसि रंड तेलयुक्त मस्तकपर लेपकिजे बातसंभव शिरोपीर नाशकरै॥ ६१ ॥ पित्तसंभव शिरोरोगपर लेप आंवरा कसेरू सुगंधबाला कमल पद्माष रक्तचंदन दूवजड़ खस नरकटजड़ ये नवौद्रव्यसमले पानीमें पीसि माथेपर लेप कियेते पित्तसंबंधी और रक्तपित्त संबंधी मस्तक पीड़ा दूर हो ॥ ६२ ॥ कफसंभव शिरोपीरपर मेवड़ी बीज तगर बालछड़ माथा इलाइची अगर देवदारु जटामासी रासन रंड मूल येदश द्रव्यपानी में पीसि गरम करि माथेपर लेपै तौ कफ संबंधी पीड़ा दूर हो ॥ ६३ ॥ पुनः सोंठि कूट चकौड़ बीज देवदारु रोहिष बिना अगियाखर येपांचौ द्रव्यसमान गोमूत्रमें पीसि सुखोष्ण माथेपर लेपे से कफजन्य पीरदूर हो ॥ ६४ ॥ सूर्यावर्त आधाशीशी पर सरिवन कूट मुरैठी पीपर नीलकमल ये कांजीमें पीसि रंडतेलयुक्त लेप कियेते सूर्यावर्त आधाशीशी दूर हो ॥६५॥ शंखक अनंत सब शिरोरोगपर शतावरी नीलकमल दूब कारेतिल गदापुरैना पांचौ समान पानी में पीसि लेप किये शंखक अनंत बात सब शिर मिटै ॥ ६६ ॥ पुनर्विधान ज्ञानीवैद्यों की सम्मति से

मोर्द्रमाहिषंयद्द्वयोन्नतंसमितिस्तयोः६८ शीतस्तनुर्विशोपीचप्रलेपः परिकीर्त्तितः । आर्द्रोघनस्तथोष्णःस्यात्प्रदेहःश्लेष्मवातहा ६९ रोमाभिमुखमादेयौप्रलेपाख्यप्रदेहकौ । वीर्यंसम्यक्विशत्याशु रोमकूपैःशिरोमुखैः ७० नरात्रौलेपनंकुर्याच्छुष्कमाणंनधारयेत् । शुष्कमाणमुपेक्षेतप्रदेहेपीडनंप्रति ७१ तमसापिहितोत्ष्मारोमकूपमुखेस्थितः । विनालेपननिर्यातिरात्रौनलेपयेत्ततः ७२ रात्रावपि प्रलेपादिविधिःकार्योविचक्षणैः । अपाकिशोथेगंभीरेरक्तश्लेष्मसमुद्भवे ७३ आदौशोथहरोलेपोद्वितीयोरक्तसेचनः । तृतीयश्चोपनाहस्याच्चतुर्थःपाटनःक्रमः ७४ पंचमोशोधनोभूयात्षष्ठोरोपणइष्यते । सप्तमोवर्णकरणोव्रणेष्वेतेक्रमामताः ७५ वीजपूरजटाहिंसादेवदारुमहौषधं । रास्नाग्निमथलेपोयंचीतशोथविनाशनः ७६ मधुकंच

लेप का दूसरा विधान कहताहूं एक प्रलेपाख्य दो प्रदेहक ॥६७॥ इनकी ऊंचाई का प्रमाण ये दोनों लेप भैंसके गीलेचमड़े में की मुटाई रहै सो गुणदायक है शीतवीर्य सूक्ष्मप्रवेश बाधारहित है और घनाप्रलेप जानौ उष्णप्रदेहक कफवात हरताहै ॥६८।६९॥ ये दोनों लेप रोम दूर कराइकै लगावै रोमदूरहोने से रोममुख खुलकै अच्छीतरहसेलेपगुणप्रवेशकरताहै ॥ ७० ॥ लेपनिषेध ॥ रात को लेप न करै औ बारका लेपसूखै न पावै क्योंकि सूखने से रोम उचरै तौ देहमें अधिक पीड़ाकरै ॥ ७१ ॥ रात्रिलेप निषेधकारण रात्रिको तम वेगसे शरीरकी उष्णताउफाव रोम मुख पर आइ रहतीहै बिनालेप निकरिजातीहै इसकारणरात्रि को लेप न करै ७२ ॥रात के लेपकी बिधि रात्रिकोलेप चतुर्वैद्य निश्चयकरैं जहां ब्रण चिरकालतक पकतानहों औ गंभीर शोथ हो वा रक्त कफ संभव हो ॥ ७३ ॥ ब्रणोपचारसप्तप्रकार लेपक्रम ॥ प्रथम लेप सूजन दूर करने को दूसरी जगह में रुधिर को यथा स्थानमें पिघलाके फैलाने को तीसरा ब्रणपर की खाल को मृदु औ पतली करनेको चौथा ब्रण फोरके बहानेको ॥ ७४ ॥ पांच शुद्ध करनेको जोपीव न बाकी राखै छठाघाव पूरने को सातवां घाव के चर्म को शरीरकी रंगत करने को जो पीवनरहै ॥ ७५ ॥ ब्रण बातशोथनिवारणलेप ॥

दनंमूर्वानलमूलंचपद्मकं। उशीरंवालकंपद्मंपित्तशोथेप्रलेपनं ७७ कृष्णापुराणपिण्याकंशिग्रुत्वक्सिकताशिवा। मूत्रपिष्टःसुखोष्णो यंप्रदेहःश्लेष्मशोथहृत् ७८ द्वेनिशेचंदनेद्वेचशिवादूर्वापुनर्नवा। उशीरंपद्मकंलोध्रंगैरिकंचरसांजनं ७९ आगंतुजेरक्तजेचशोथेकुर्यात्प्रलेपनं। शाणमूलकशिग्रूणांफलानितिलसर्षपाः८० सक्तवःकिण्वमतसीप्रदेहःपाचनःस्मृतः। दंतीचित्रकमूलत्वक्सुधार्कपयसीगुडः ८१ भल्लातकस्यकाशीशंसैंधवंदारुणस्मृतः। चिरिविल्वोग्निकोदंतीचित्रकोहयमारकः ८२ कपोतकंकगृध्राणांमलंलेपेनदारुणं।स्वर्जिकायावसूकाख्याःक्षारालेपेनदारणा ८३ हेमक्षीर्यास्तथा लेपोव्रणेपरमदारुणः ८४ तिलसैंधवयष्ट्याह्वनिंबपत्रनिशायुगैः।

बिजौरा मूल मांसी देवदारु सोंठि रासन अरनी मूल सब समान पानीमें पीसि लेपकरे बात शोथ शांति हो ॥ ७६ ॥ पित्त शोथपर मुरेठी रक्तचंदन मुर्री नरकट जड़ पद्माष खस नेत्रबाला कमल आठौ समान पानी में पीसि लेपकरै पित्त शोथ दूर हो ॥ ७७ ॥ कफ शोथपर लेप पीपरि पीना सहिंजनछाल बालू वा खांड़ हड़ इन पांचौको गोमूत्र में पीसि गुनगुना लेपकरे यह प्रदेह संज्ञक लेप कफ शोथ दूरकरता है ॥ ७८ ॥ आगंतुक औ रक्तशोथ पर लेप हरदी दारुहरदी रक्तश्वेतचंदन हड़ दूब गदापुरैना खस पद्माष लोध गेरू रसोंत ये सब सम भाग पानीमें पीसि आगंतुक औ रक्तजशोथ पर लेपकरेसे दूरहो ॥ ७९ ॥ व्रणपकानेपर लेप सनकीजड़ मूरी सहिंजनकाबीज तिल सरसौं यव लोह कीट अलसी ये आठौ समानले पानी में पीसि प्रदेह संज्ञक लेपसे व्रण पकैगा ॥ ८० ॥ व्रण फोरनेपर लेप॥चटजीराकीजड़ वा छालसेंड़ुड़ मदारका दूध गुड़ भिलावा कसीस सैंधव ये औषधि इनौं दूध में पीसि व्रणपर लेपकरेसे फूटै ॥ ८१ ॥ पुनः करंजमींगी भिलावा दन्ति मूलकीछाल चीताकनेर ये पांचौंकबूतरकीबीट वा गिद्धबीट में समान मिलाइ लेपकरे फोड़ाफूटै ॥ ८२ ॥ तीसरा लेप ॥ सज्जी यवाखार दोनौं लेपकरै वा चोककी जड़कीछाल लेपकरै फोड़ा फोड़ै में प्रबल है॥८३॥और हेमक्षीरीका लेपभी घावमेंबहुतप्रबल है॥८४॥व्रणशोधनलेप तिल सैंधव मुरेठी नीमपत्र हरदी दारुहरदी

तद्वद्घृतयुतैःपिष्टःप्रलेपोव्रणशोधनः ८५ निम्बपत्रंघृतंक्षौद्रंदार्वीमधुकसंयुतं । तिलैश्चसहसंयुक्तो लेपःशोधनरोपणः ८६ करंजारिष्टनिर्गुंडीलेपोहन्याद्व्रणकृमीन् । लशुनस्याथवालेपोहिंगुर्निवभवोथवा ८७ निंवपत्रंतिलादंतीत्रिवृत्सैंधवमाक्षिकं । दुष्टव्रणप्रशमनो लेपःशोधनरोपणः ८८ मदनस्यफलंतिक्तांपिष्ट्वा कांजिकवारिणा।।कोष्णांकुर्यान्नाभिलेपंशूलशांतिभवेत्ततः ८९ शिग्रुशेफालिकैरंडयवगोधूममुद्गकैः । सुखोष्णोवहलोलेपःप्रयोज्योवातविद्रधौ९० पैत्तिकेसर्पिषालाजामधुकैःशर्करान्वितैः। प्रलेपःक्षीरपिष्टैर्वापयस्योशीरचंदनैः ९१ इष्टिकासिकतालोहकीटंगोसकृतासह।सुखोष्णश्चप्रदेहोयंमूत्रैःस्यात्श्लेष्मविद्रधौ ९२ रक्तचंदनमंजिष्ठानिशामधुकगैरिकैः । क्षीरेणविद्रधौलेपोरक्तागंतुनिमित्त

निशोथ ये सब समभाग चूर्णकरि घीमें लेपि फोड़ेफूटेपर लगावैवा इनके कल्ककी टिकिया बनाइ घीमेंछोड़ जलावै जबटिकियाजरजाइ तबउतारि घीराखिछांड़ै टिकियाफेंकिदेइयेदोनोंप्रकारव्रणशुद्धकरै॥८५॥व्रणशोधन रोपणपरलेप॥ नीमपत्र घृत मधु दारुहरदी मुरेठी तिल इनसबकोपीसकेलेपकियेते व्रणशुद्धहोकेपूरआवै॥८६॥ कृमिनिवारण लेप॥करंज नीम बकाइन तीनों पीसि कृमिकेस्थान में भरै तौ कृमि मरजाइं वा लहशुन वा हींग पीसिभरै वा हींगकीपत्र भरैतौ कृमिनाशै॥ ८७ ॥ व्रणशोधनरोपणपरलेप ॥ नीमपत्र तिल दंतीनिकी जड़ सैंधव ये सब समान पीसि सहत युक्त लेपकियेते व्रण शुद्धहोकै पूरिआवै ॥८८॥ पेटकोरपर नाभिलेपन॥ मैनफल कुटकी कांजीमें पीसि कुछगरम करि नाभिपर लेपकियेसे पेटशूलमिटै ॥ ८९॥वात विद्रधीपर सहिंजन छाल बकाइनपत्र रंडमूल यव गेहूं मूंग ये सब पीसि सुखोष्णलेप करैसे वातविद्रधी दूरहो ॥ ९० ॥ पित्तविद्रधीपर॥ लावा मुरेठी शक्कर घीमें लेप करैवा असगंध खस रक्तचंदन दूधमें पीसि लेपकरैसे पित्तविद्रधी दूरहो ॥ ९१ ॥ कफविद्रधीपर ईंट बालू लोह कीट गोवर चारोंको गोमूत्र में पीसि लेपकरै इस प्रदेह लेपसे कफ विद्रधी दूरहोइ ॥ ९२ ॥ आगंतुक विद्रधी परआरक्तचंदन मजीठ हरदी मुरेठी गे

जे ९३ निचुलःशिग्रुबीजानिदशमूलमथापिवा । प्रदेहोवातगंडेषु सुखोष्णःसंप्रदीयते ९४ देवदारुविशालेच कफगंडेप्रदेहकः । सर्षपारिष्टपत्राणि दग्ध्वावल्लातकैःसह ९५ छागमूत्रेणसंपिष्ट मपचिघ्नम्प्रलेपनं । सर्षपाःशिग्रुबीजानि शणबीजातसीयवान् ९६ मूलकस्यचबीजानि तक्रेणाम्लेनपेषयेत् । गंडमालार्बुदंगंडं लेपेनानेनशाम्यति ९७ प्रक्षयित्वाक्षुरेणांगं कवलानलपीडितं । तत्रप्रदेहंदद्याच्च पिष्टंगुंजाफलैःकृतं ९८ तेनावबाहुजापीडाविश्वाचीगृध्रसीतथा । अन्यापिवातजापीडा प्रशमंयातिवेगतः ९९ धत्तूरैरंडनिर्गुंडी वर्षाभूशिग्रुसर्षपैः । प्रलेपःश्लीपदंहंति चिरोत्थमपिदारुणं १०० अजाजीहपुषाकुष्ठ मेरंडवदरान्वितं । कांजिकेनतुसंपिष्टं कुरंडघ्नम्प्रलेपनं १ करवीरस्यमूलेन परिपिष्टेन

सब समान दूधमें पीसि चोट वा रुधिर विकार पर लेप करै अच्छा हो ॥ ९३ ॥ बातगल गंडपर बेत सहिंजन बीजसमानले जलमें पीसि शीत गरम प्रदेह संज्ञक लेपकरै तैसेही दश मूल पीसिलेप करै ॥९४॥ कफ गलगंडपर देवदारुइंद्रायननान्हो पीसि प्रदेहक लेप कफगंड माला दूरकरै अपची पर सरसौं नीमपत्र भिलावां तीनों समभाव राखिकरि मेष के मूत्र में लेप करै अपची दूरहो ९५॥गंडमाला अर्बुद गल गंडपर लेप सरसौं औ सहिंजन के बीज सनईके बीज अरसी जव ॥ ९६ ॥ मूली के बीज ये सब औषधि समान भागले खटाये भये मट्ठे में पीसिकै लेपकरै तौ गंडमाला अर्बुद गलगंड येरोग दूरहोई ॥ ९७ ॥ अपबाहुकपरलेप ॥ केवल बात पीड़ित कोई अंग अपने सौभाविक कर्म में पीड़ा करै तहांके रोम दूरकरि घुंघुची पीसिसुखोष्ण लेपकरैसे अपबाहुक बायु विश्वाची हाथकी गृध्रसी जंघाकी बायुसंभव पीड़ा दूरहो ९८। ९९ ॥ पीलपांव पर लेप धतूरा रेंड मेवड़ी तीनोंपत्ती गदापूरैना सहिंजन छाल सरसौं ये छहो पीसि अतिकाल के भये पीलपांव पर लेपकिये अच्छेहोइं॥ १०० ॥ कुरंड रोग पर कालाजीरा हाऊवेर कूटरेंडछाल बेरछाल ये पांचों समान कांजीमें पीसि अंडकोश पर लेपकिये अच्छे होइं ॥ १ ॥ उपदंश कहे ग-

वारिणा । असाध्यापिव्रजत्यस्तंलिंगोत्थारुक्प्रलेपनात् २ दहेत्कटाहेत्रिफलां सामषीमधुसंयुताम् । उपदंशेप्रलेपोयं सद्योरोपयते व्रणं ३ रसांजनंशिरीषेण पथ्ययाचसमन्वितं । सक्षौद्रंलेपनेयोज्य मुपदंशगदापहं ४ अग्निदग्धेतुगोक्षीरे प्लक्षचन्दनगैरिकैः । सामृतैः सर्पिषास्निग्धंशालेपंकारयेद्भिषक् ५ तन्दुलीयकषायैर्वा घृतमिश्रैःप्रलेपयेत् । यवान्दग्ध्वामषीकार्या तैलेनयुतयातया ६ दद्यात्सर्वाग्निदग्धेषु प्रलेपंव्रणरोपणं । पलाशोदुम्बरफलैस्तिलतैलसमन्वितैः ७ मधुनायोनिमालिंपेद्गाढीकरणमुत्तमं । माकन्दफलसंयुक्तं मधुकर्पूरलेपनात् ८ गतेपियौवनेस्त्रीणां योनिर्गाढातिजायते।मरिचंसैंधवंकृष्णातगरंबृहतीफलं ९ अपामार्गंतिलाःकुष्ठं यवामाषाश्चसर्षपाः । अश्वगन्धाचतच्चूर्णंमधुनासहयोजयेत् १० अस्यसंततलेपेन मर्दनाच्चप्रजायते । पुंसोलिंगस्तनोत्सेधः संहतिर्भुजकर्णयोः ११ सिलाश्वगन्धासिंधूत्थ छागक्षीरैर्घृतंपचेत् ।

इन्द्रीपरलेप॥ कनेरकी जड़ पानीमें पीसि इंद्रीपर लेपै तौ उपदंश संबंधी असाध्यपीड़ा दूरहोइ ॥ २ ॥ पुन: त्रिफला कढ़ाईमें जराइ राखकरि सहतमें फेंटिकरि लेपकरे गरमी को घाव शीघ्रपुरआतेहैं ॥ ३ ॥ पुन: रसौत सरसौं हड़तीनों समान पीसि सहतसें वेपि उपदंश संबंधी राद्बहते व्रणपर लेप करै तौ उपदंश को हर लेइ ॥ ४ ॥ अग्निदग्धपर लेप ॥ वंसलोचन पाकरि रक्तचंदन गेरू गुर्च ये पांचोंपीसि घी मेल जरेपर लगावै वा घी चौराई क्राथमें मिलाइ लेपकरै जरेकी व्यथा शांतिहोइ ॥ ५ ॥ पुन: यवकी राख तिलके तेलमें वेपि लगावैतौ दग्ध व्रणपूरिआवै ॥ ६ ॥ योनिसंकोचलेप:॥ पलासफल गूलरफल तिलके तेलमें पीसि सहत मिलाइ योनिमें लेपकरै दृढ़ संकुचितहोइ ॥ ७ ॥ पुन: माजू कपूर पीसि सहतमें फेंटि लेपकरै गिरीहुई योनि तनिआवै ॥ ८ ॥ पुरुषइंद्री कठोरकरने का लेप ॥ मरिच सैंधव पीपरि तगर भटकटैयाकी फल ९ ॥ लटजीराके बिया काले तिल कूट यव उरद सरसौं असगंध येसब समानपीसि सहत मिश्रित करि ॥ १० ॥ नित्यइंद्रीपर मला करै तौ इंद्री मोटी होइ स्त्रीके स्तनपर लगाया करै तौ कठोर

तल्लेपान्मर्द्दनाल्लिंगे वृद्धिःसंजायतेपरा १२ इंद्रवारुणिका पत्र रसैःसूतंविमर्दयेत् । रक्तस्यकरवीरस्यकाष्ठेनचमुहुर्मुहुः १३ तल्लिप्तलिंगसंभोगा द्योनिद्रावोभिजायते । ताम्बूलपत्रचूर्णंतु चूर्णंकुष्ठशिवाभवं १४ वारिणालेपनंकुर्याद्गात्रदुर्गंधनाशनं । कुलित्थशक्तवःकुष्ठं मांसीचन्दनजंरजः १५ शक्तवश्चणकस्यैव त्वचंचैकत्रकारयेत् । स्वेददौर्गंध्यनाशश्च जायतेस्यावधूलनात् १६ वचासौवर्चलंकुष्ठं रजन्यौमरिचानिच । एतल्लेपप्रभावेण वशीकरणमुत्तमं १७ अभ्यंगःपरिषेकश्च पिचुर्वस्तिरितिक्रमात् । मूर्द्धतैलंचतुर्द्धास्या द्बलवच्चयथोत्तरं १८ त्रयोभ्यंगादयःपूर्वं प्रसिद्धाःसर्वतःस्मृताः। शिरोवस्तिविधिश्चात्रप्रोच्यतेसुज्ञसंमता १९ शिरोवस्तिश्चर्मणः स्याद्द्विमुखोद्वादशांगुलः । शिरःप्रमाणंतंव-

परनावें औ पुरुषके भुजदंडपर औ कानपरमर्दनकरना भला॥११॥ पुनर्लेपः॥श्वेत फूलका असगंध सैंधव दोनों सूक्ष्म पीसि चौगुणाघृत घृतका चौगुणा भेड़ीका दूध एककरि आंचपर दूधजरादूवा छानि इन्द्री पर लगावै इन्द्री मोटी होइ ॥१२॥ योनिद्रवलेप॥इंदारण पत्र का रसले पारा रक्त कनेरके सोंटे से घोटि बारबार रस डारि जब कजरी पीठी सम होजाइ तब इन्द्री पर लेप स्त्री प्रसंग करै तो स्त्रीसुख पावै पहिले वीर्यपात करै॥ १३ ॥ देहदुर्गंधनिवारणलेप ॥ पानकूट हड़पानीमें पीसि लेपकरै दुर्गंध दूरहोइ ॥१४॥ पुनः कुरथी भुंजि कूट जटामासी श्वेतचन्दन का बुरादा ॥ १५ ॥ भुंजेचनेइन सबकोपीसि कपरछानकर धूराकरैतो दुर्गंधदेहसहित दूरहो ॥१६॥वशीकरणलेप॥ बच कालालोन कूट हर्दी दारु हर्दी मिरच येसब समान पानीमें पीसिदेहमें लोकवश होनेके निमित्त लगावैतो अच्छाहै ॥१७॥ मस्तकमेंतेललगानेकी बिधि॥ अभ्यंगकहै तेल मर्दन परिसेक कहै तेल चुपरना पिचुकहै रुईके पहलको तेल में बोरि माथेमें बांधै वस्ती कहै माथेमें चौफेर चर्मबांधि तेल भरै ये चारि प्रकार हैं सो क्रमसे उत्तरोत्तर बलवान् हैं॥ १८ ॥ शिरोवस्तीविधान॥अभ्यंग परिसेक पिचु ये तीनों सर्वत्र प्रसिद्ध हैं औ शिरोवस्तीविधि आमाचा इहां नहीं कही सो आगे श्लोकमेंक-

ध्वा मस्तकेमाषपिष्ठकैः २० संधिरोधंविधायादौ स्नेहैःकोष्णैः प्रपूरयेत्।तावद्धार्यस्तुयावत्स्या न्नासानेत्रमुखश्रुतिः २१ वेदनोपशमोवापिमात्राणांवासहस्रकं । विनाभोजनमेवात्रशिरोवस्तिः प्रशस्यते २२ प्रयोज्यस्तुशिरोवस्तिः पंचसप्ताहमेवच। विमुच्य शिरसोवस्तिं गृह्णीयाच्चसमंततः २३ ऊर्द्धकायेततःकोष्णा नीरैः स्नानंसमाचरेत् । अनेनदुर्जयारोगा वातजायन्तिसंक्षयं २४ शिरःकंपादयस्तेन सर्वकालेषुयुज्यते । स्वेदयेत्कर्णदेशंतुकिंचिन्नुः पार्श्व शायिनः २५ मूत्रैःस्नेहैःरसैःकोष्णै स्ततःकर्णप्रपूरयेत् । कर्णंतुपूरितंरक्षेच्छतंपंचशतानिच २६ सहस्रंवापिमात्राणां श्रोत्रकंठशिरोगदे।स्वजानुनाकरावर्तंकुर्याच्छोटिकायुतं २७ एषा मात्राभवेदेका सर्वत्रैवैषनिश्चयः । रसाद्यैःपूरणंकर्णे भोजनात्प्रा

हेंगे ॥ १९ ॥ शिरोवस्तिप्रकारः॥ मस्तकपर औषधि धारणकरनेको शिरोवस्ति कहतेहैं बारह अंगुल चौड़ी हाथ भरलंबी शिरके समानडफाकार हरिणचर्म कीसी लेइ दे.नों ओर खुली ढील न हो सो माथे पर चढ़ाइ भीतर से चारों ओर उर्दके पीठंसे निस्संधि करै फिर नीचे चढ़ेभये चमड़ेको अंगुलभर पीठेसे चारोंओर निस्संधि करि सुखोष्णतेलभरै ॥ २० ॥ शिरोवस्तिप्रमाण॥ जबतक नाक मुख नेत्र सजल न बहै व मस्तक व्यथा न मिटै वा सौमात्रा तक वस्ती स्थित रहै मात्रा प्रमाण अनुवासन वस्ती में कहिआवे हैं ॥ २१।२२ ॥ शिरोवस्तीकाल॥ भोजनके प्रथम पांच व सातदिन शिरोवस्ति करै ॥ २३ ॥ शिरोवस्तीपश्चात् क्षतापली प्रमाण पूर्व करिकै उतारि सुखोष्ण जलसे माथाधोवन होइ शिरोवस्तीगुण वातजन्य शिरोकंपादि रोग दुर्जय दूर होताहै इससे वैद्यसदा इस रोग में शिरोवस्ति करावै ॥ २४ । २५ ॥ कर्णपचार मनुष्यकोकुछ स्वेदकरि तुरंत गो.मूत्र व तेल व स्वरस सुखोष्णकानमेंपूरै कर्णद्रव्य धारणप्रमाण ॥ कान कंठशिररोगोंके निवारणार्थ सौमात्रावपांच सौ व हजार मात्रा तकराखै॥२६॥ मात्राप्रमाण घुटनोपर चुटकी व जाते हाथघूमें चौफेर सो मात्राप्रमाणहै ॥२७॥ कर्णपचार समयकानमें औषधि भोजनकेप्रथम रसादिकपूरै औतेलआदिसंध्या

कृप्रशस्यते २८ तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेस्तमुपागते । पीतार्क पत्रमाज्येन लिप्तमग्नौप्रतापयेत् २९ तद्रसःश्रवणेक्षिप्तः कर्ण शूलहरःपरः । कर्णशूलातुरेकोष्णं वस्तमूत्रंससैंधवं ३० निःक्षिपे त्तेनशाम्यन्ति शूलपाकादिकारुजः । शृंगवेरंचमधुकं मधुसैंधवमा मलं ३१ तिलपर्णीरसस्तैलं टंकणंनिंबुकंद्रवं । कटूष्णंकर्णयोःदेय मेतद्वावेदनापहं ३२ कपित्थंमातुलिंगाम्ला शृंगवेररसैःशुभैः । सुखोष्णैःपूरयेत्कर्णौकर्णशूलोपशांतये ३३ अर्कांकुरानम्लपिष्टान्तै लाक्तान्लवणान्वितान् । सन्निदध्यात्स्नुहीकांडेकोरितेतत्क्षदावृते ३४ पुटपाकक्रमंकृत्वारसैःस्तच्चप्रपूरयेत् । सुखोष्णैस्तेनशाम्यंति कर्णपीडासुदारुणाः ३५ महतःपंचमूलस्य कांडान्यष्टांगुलानितु । क्षौमेणावेष्ट्यसंसिच्य तैलेनदीपयेत्ततः ३६ यत्तैलंच्यवतेतेभ्यः

समय॥२८॥कर्णव्यथापर औषधि॥ अर्कवृक्षमें जोपत्ते पीलेपरजाते हैं तिन्हैंघीजि उनपरचुतलगावै तब लघारीआगिसेंसेंकलेइ जबगरम होइ तब निकारि कानमें छोडै तौसब कर्णशूल दूरहोइ॥२९॥ पुनः छागमूत्र में सैंधउडारि कुछ तत्ता करि कानमें पूरै तौ कान के भीतरकी पिटिका दूरहोइ॥३०॥तृतीय अदरकका रसमुरेठी सहत सैंधव आंवरा॥३१॥तिलपर्णीदूबमें होती औगुघुरू कीसी सब सूरति पत्ती समेत फली तिलसदृशहोतीहैं वहतिल पर्णीहै सरसौं कातेल सुहागा नीबूका रस ये सबपीसि कानमें डारैतौ कान की पीड़ा दूरकरै॥३२॥चौथी औ कैथफल का रस बिजौरा रस अमल बेत के रस बिनाचूक रस अदरक रस येचारों सुखोष्ण कानमें डारनेसे कर्णशूल नाशहोयं॥ ३३ ॥ पंचम मदारका कोमल टिंगुसा नींबू रसमें पीसि तिलका तेल सेंधा नोन मिलाइ गोला बांध सेहुंड़ा के मोटेखंड में पोलाकरि गोला धरै अच्छी भांति दाबि उसी के पत्र लपेटि कपरौटीकरि माटी चढ़ाइ मंद आंचमें पकाइ पुटपाक सदृश पक जाइ तब निकारि माटी कपड़ा उतारि कूट के रस निचोर लेइ फिर उस रसको सुखोष्ण करि कानमें डारैतौ कानकी दारुण शूल शांतिहोय॥३४।३५॥ कर्ण शूल पर दीपिका तेल महापंचमूलकी जड़ आठअंगुल रुई वा बस्रलपेट दीपमें बारि

सुखोष्णांतेनपूरयेत् । देयंतद्दीपिकातैलंसद्योरुग्हृणातिवेदनां ३७ एवंस्याद्दीपिकातैलं कुष्टेदेवतरौतथा । तैलंश्योनाकमूलेन मन्दे ग्नौपरिपाचितं ३८हरेदाशुत्रिदोषोत्थं कर्णशूलंप्रपूरणात् । कल्क क्वाथेनयष्ट्याह्वाकाकोलीमाषधान्यकैः ३९ शूकरस्यवसांपक्त्वा कर्णनादार्तिहारिणीं । स्वर्जिकामूलकंशुष्कं हिंगुकृष्णासमन्वि तं ४० शतपुष्पाचतैस्तैलं पक्वंसूक्तंचतुर्गुणं । घ्राणादंशूलवा धिर्यं श्रावंकर्णस्यनाशयेत् ४१ अपामार्गक्षारजलेतत्क्षारंकल्पितं क्षिपेत् । तेनपक्वंजयेत्तैलं वाधिर्यंकर्णनादकम् ४२ शंवुकस्यतु मांसेन पचेत्तैलंतुसार्षपं । तस्यपूरणमात्रेण कर्णनाडीप्रशाम्यति ४३ चूर्णपंचकषायाणां कपित्थरसमेवच । कर्णश्रावेप्रशंसंतिपूरणं मधुनासह ४४ तिन्दुकान्यभयालोध्रं समङ्गाचामलक्यपि ।

चिमटीसे पकरि कटोरीमें टपकावै वही गुनगुन तेलकानमें डारे सें कानकी तपक दूर होइ सहत पंचमूल वेलारंड टेटी ग्निवनी पाटल इनकी जड़को कहतेहैं ॥ ३६ ।३७॥ पुन: टेटुतेल टेटुमूलपानी मेंपीसि कल्क करि औ गुने तिल तेल मेलसम जलदेइ जलजलाइ उतारि सहता सहता कानमें डारनेसे त्रिदोषजन्य कर्ण शूलमिटै ३८॥ कर्णनादपर तेल मुरेठी माष असगंध धनियां इन चारों का क्वाथ औ कल्क सूकर की चरवीमें पचाइ चरवीरहिजायतवकान में डारैतौ कर्णनाद को निकारै ।।३९॥कर्णनादपर श्वेतेलसज्जी सूखी मूरी हींग पीपरि सौंफ येपांचौ समभाग चौगुने तिल तेल में समान मध्यखंडोक्त सूक्तमें पचावै जवकेवलतेल कानमें चुवावै तौ कर्णनाद शूल वधिरत्व कानवहव इनरोगनको नशावै ॥४०॥वधि- रत्व पर अपामार्ग क्षारतेल लटजीरे की राख चौगुने पानीमें घोलिघंगोलिनिशिभर धर प्रात निर्मल जललेचौथ्याईतेलदेपचाइ पानी जराय कान में डारै तौ वधिरत्व मिटै सुननेलगे॥ ४१।४२॥ कर्णव्रण शंबुक तेल घोंघेका मांस चौगुने तेलमेंलालकरि पचाइ ले वहतेल कानमें डारैं तौ व्रणदूर करै ॥४३॥ कर्णश्रावपर औषधि पंचकषाय का चूर्ण कैथ रस औ मधुमिलाइ कान में डारेतौ कान बहब बन्दहोय॥४४ ॥ पंचकषायवृक्ष तेंदू हड़ लोधमजीठआंवरा

ज्ञेयःपंचकषायास्तु कर्मण्यस्मिन्भिषग्वरैः ४५ स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तंवीजपूररसंक्षिपेत् । कर्णाश्रावरुजोदाहाःप्रणश्यन्तिनसंशयः४६ आम्रजंवूप्रवालानि मधुकस्यवटस्यच । एभिःसंसाधितंतैलं पूतिकर्णोपशांतिकृत् ४७ पूरणंहरितालेन गवांमूत्रयुतेनच।अथवासार्षपंतैलं कर्णकीटहरंपरं ४८ स्वरसंशिग्रुमूलस्यसर्प्यावर्त्तरसंतथा। त्र्यूषणंचूर्णितंचैवकपिकच्छुरसंतथा । कृत्वैकत्रक्षिपेत्कर्णे कर्णकीटहरेम्परं ४९ इतिश्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेलेपादिकर्णपूरणविधिरेकादशोऽध्यायः॥ ११ ॥

श्रोणितंश्रावयेज्जन्तो रामयंप्रशमीक्ष्यच । प्रस्थंप्रस्थार्द्धकं वापि प्रस्थार्द्धार्द्धमथापिवा १ शरत्कालेस्वभावेन कुर्याद्रक्तस्त्रुतिं नरः । त्वग्दोषग्रंथिशोथाद्याः नस्युरक्तश्रुतेर्यतः २ मधुरंवर्णतो रक्त सशीतोष्णंतथागुरु । शोणितंस्निग्धविस्त्रंस्याद्विदाहश्चास्य पित्तवत् ३ विस्त्रताद्रवतारोग श्चलंचविलयस्तथा । भूम्यादि

हड़ आंवरा फल वाकोछाल ॥ ४५ ॥ कर्णश्राव पर पुनः सज्जी विजौरा रस में घोटि कान में डारे कान बहना बंद होइ ॥ ४६ ॥ पुनः आंब जामुन मऊआ बरगद चारोंके कोंपलकी लुगदी चौगुने तिलतैलमें जराइ तेल कानमें डारने से पीव बहना बंद होइ॥ ४७॥ कर्ण कीटपर तेज हरिताल पीसि गोमूत्र वा कटुतैलमें मिलाइ तौ कर्णजंतुदूरहोइ॥ ४८ ॥ पुनःसहिंजन मूलका रस सूर्यमुखीका रस सोंठि मिर्च पीपरि पीसि बन किमाचकी जड़का रस ये सब मिलाइ फेंटि कान में छोड़ै तौ कर्ण कीट मरै॥ ४९ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ रुधिरमोचणप्रयत्न ॥ मनुष्य के शरीर में रक्तजन्यविकार से कुष्टादि रोग जानि रुधिर निकारवाने का प्रमाणकहतेहैं प्रस्थ भर वा अर्द्ध प्रस्थ वा चौथ्याई प्रस्थ कहे कुड़व भर ॥ १ ॥ रुधिर मोक्षण काल देहसे रुधिर निकसाने से त्वचापर के रोग फोड़ा फुंसी शोथादिक रोग दूरहोतेहैं इस कारण शरद कालमें मनुष्य को रुधिर निकसाना उचित है ॥ २ ॥ रुधिरगुण ॥ रुधिर मधुरहै लाल औ कुछ गरमपरस्य गरुआ चिकना विसायंध गंधी पित्त

पंचभूतानां मेतेरक्तगुणाःस्मृताः ४ रक्तेदुष्टेवेदनास्यात्पाकोदाह श्चजायते । रक्तमंडलताकंडूः शोथश्चपिटिकोद्गमः ५ वृद्धेरक्तां गनेत्रत्वं शिराणांपूरणंतथा । गात्राणांगौरवंनिद्रा मदोदाहश्च जायते ६ क्षीणेऽस्लमनुवाकांक्षी मूर्च्छाचत्वचिरूक्षता । शैथिल्यं चशिरायांस्याद्वातादुन्मार्गगामिनः ७ अरुणंफेनिलंरूक्षं परुषंतनु शीघ्रगं । अस्कंदिसूचिनिस्तोदं रक्तंस्याद्वातदूषितं ८ पित्तेन पीतंहरितं नीलंकृष्णंचविस्रकं । अस्कंदुष्णंमक्षिकाणां पिप्पलीनामनिष्टकं ९ शीतंचबहलंस्निग्धंगैरिकोदकसंनिभं । मांसपेशीप्र भंस्कंदिमंदगंककफदूषितं १० द्विदोषदुष्टंसंसृष्टं त्रिदुष्टंपूतिगंधकं । सर्वलक्षणसंयुक्तंकांजिकाभंचजायते ११ त्रिदुष्टमवेच्छावंनासि

समान उष्णपन लोहू का रूप गुण है ॥ ३ ॥ औ रक्त पंचतत्वमय है तिसमें पृथ्वी गंध पृथ्वीगुण गीलापन जलगुण उष्णपन अग्निगुण चलना वायुगुण नीला होना औ श्यामता लाना आकाश गुण है ॥ ४ ॥ रुधिर दुष्ट होने के लक्षण रुधिर दुष्ट भये देहमें पीड़ा ब्रण दाह रक्त मंडल खाज शोथ देहपाकसा दर्द ॥ ५ ॥ रक्त बढ़ने का लक्षण रुधिर बढ़ै तौ देह औ नेत्र लालरहैं और नसैं रक्तपूरित हो फूल जाती हैं देह गरू रहतीहै नींद विशेष मद दाह ये उपद्रव होतेहैं ६ ॥ क्षीण रक्त लक्षण जिसके रुधिर शरीर अल्पासे घट जाता है तिसकी रुचिखट्टे औ मीठे पर अधिकरहतीहै औ मूर्च्छा त्वचारूखी शिथिल शरीर बायु ऊर्ध्वगामी ऐसेजानौ ॥ ७ ॥ बायु वरिष्ट रक्त उष्ण लक्षण बायु कुपित रुधिर लालरंग फेन सहित हो रूखा कर्कस हलका शीघ्र गामी पतला देहसे सुई समान कोचै ॥ ८ ॥ पित्तकरि दुष्टरुधिरलक्षण॥ पित्त कुपित रुधिर पीला हरित व नीला व उष्ण पकेआमकी गंधी तथा रुधिर चिंटीमाखी न खाइ ॥ ९ ॥ कफाकरि दुष्टरुधिर लक्षण कफ कुपित रक्तकास्पर्श ठंढा चिकना गेरूकारंग मांस कुटकी मिश्रित गाढ़ा स्थिर होताहै ॥ १० ॥ दुइ वा तीन दोष कुपित रुधिर लक्षण है दोषकरि दूषित लोहूमें दो दोषके लक्षण पायेजातेहैं त्रिदोष दूषितमें पीपकीगंधहोतीहै औ सबलक्षण त्रिदोषके पायेजातेहैं औ कांजीसदृश रूपहोताहै ॥ ११ ॥

कामार्गगंतथा। विश्रकांजिकसंकाशं सर्वदुष्टकरंवहु १२ इंद्रगोप
प्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतं १३ शोथेदाहेंगपाकेचरक्तवर्णौसृतःसृतौ।
वातरक्ते तथाकुष्ठे सपीडेदुर्जयेनिले १४ पाणिरोगेश्लीपदेचविष
दुष्टेचशोणिते। ग्रंथ्यर्वुदापचीक्षुद्ररोगरक्ताधिमंथिषु १५ विदारीय
स्तनरोगेषु गात्राणांगाढगौरवे। रक्ताभिष्पंदतंद्रायांपूतिघ्राणास्य
देहके १६ यकृत्प्लीहविसर्पेषुविद्रधीपिटिकोद्गमे। कर्णौष्ठघ्राण
वक्राणां पाकेदाहेशिरोरुजि १७ उपदंशेरक्तपित्ते रक्तस्रावःप्रशस्य
ते। एषुरोगेषुशृंगैर्वाजुलौकालावुकैरपि १८ अथवापिशिरामो
क्षैःकुर्याद्रक्तस्रुतिनरः।नकुर्वीतशिरामोक्षंकृशस्यातिव्यपायिनः१९
क्लीवस्यभीरोगर्भिण्याःसूतिकापांडुरोगिणां। पंचकर्म्मविशुद्धस्य
पीतस्नेहस्यवार्शसां २० सर्वांगशोथयुक्तानामुदरिश्वासकासिनां।
छर्द्यतीसारयुक्तानामतिश्विन्नतनोरपि २१ ऊनषोडशवर्षस्यग
तसप्ततिकस्यच। अघातात्स्रुतरक्तस्यशिरामोक्षोनशस्यते २२ ए
अतिदुष्ट रक्तलक्षण कालेरंग रक्त ऊपर चढ़िके नाककी राहमीता
है भावकीसो वासहोतीहै कांजी सदृश सब धातुनको बहुत दुष्ट
करताहै ॥१२॥ शुद्धरक्त लक्षण॥शुद्धरक्त वीरबहूटी के रंग औपतला
होताहै स्पर्शमें उष्ण शीघ्रचारी ॥ १३ ॥ रक्तमोक्षण योग्य शोथमें
दाहमें अंगपाकमें रक्तवर्णअंगमें नाकसे बहनेमें वातरक्त कुष्ट कष्ट
साध्यपीड़ा वात संयुक्तमें ॥ १४॥ हाथरोगमें पीलपाव वा विषकरि
गिररक्तमें ग्रंथि अर्वुद गंडमाला क्षुद्ररोग अपची रक्ताधिमंथ॥१५॥
बिदारीकुच रोग देह जकड़नारक्ताभिष्पंद तंद्रा दुर्गंध॥१६॥ यकृत
प्लीह विसर्प विद्रधी पिटिकी मान ओठ नाक मुख कान पकनेमें
माथेपीड़ा ॥ १७ ॥ उपदंश रक्तपित्त इन रोगनमें रुधिर निकरना
उचितहै रक्तमोक्षणप्रकार सींगी जोक तोंबी फस्त इनचारकरिकै
रक्त निकरावै॥१८॥ शिराछेदन अयोग्य दुर्वल विषयी ॥ १९ ॥नपुं
सक भीतगर्भिणी गोदवाली पांडुरोगी वमनादि पंचकर्मकृतीस्ने-
हादि कर्मकृती अर्शरोगी ॥ २० ॥ सर्वांग उदरश्वास कास उवाकी
अतीसार अतिखेदी ॥ २१ ॥ सोरहके भीतर सत्तरके ऊपर अव-
स्थावालेको अकस्मात् नाकसे रक्त गिरतो ऐसे मनुष्य अयोग्यके

पांचात्यपिकेयोगेजलौकाभिस्तुनिर्हरेत् । तथानिर्विषयुक्तानांशि
रामोक्षोपिशस्यते २३ शोणितंशृङ्गजलौकानिस्त्रावयेत्त्रिधा।
वातपित्तकफैर्दुष्टंशोणितंस्त्रावयेत्क्रमात् २४ छिद्रेणास्यांतुसंसृष्टं
त्रिदोषैरपिदूषितं । शोणितंस्त्रावयेद्युक्त्याशिरामोक्षप्रदेस्तथा २५
गृह्णातिशोणितंशृङ्गंदशांगुलमितंवलात् । जलौकाहस्तमात्रंच
तुंबीचद्वादशांगुलं २६ पदमंगुलमात्रस्थंशिरासर्वांगशोधिनी । शी
तेनिरभ्रेमूर्च्छांच तंद्राभीतिमदश्रमैः २७ युतानांतद्वदेवरूक्षानधावि
रामूत्रसंगिनां । अप्रवर्तिनिरक्तेचकुष्टव्योषसैंधवैः २८ मर्दयेद्व्रण
वक्त्रंतेनसम्यक्प्रवर्तते । तस्मान्नशीतेनात्युष्णेनस्विन्नेनातितापि
ते २९ पीत्वायवागूंतस्यशोणितंस्त्रावयेद्बुधः । अतिस्विन्नेस्रोष्ण
कालेतथैवातिशिरावधात् ३० अतिप्रवर्तितेरक्तेतत्रकुर्यात्प्रतिक्रि

कदाचित् फोड़ाफुंसीहो तौ जोंकलगावै ऐसेरोगियोंका विषाद
सयोगसे रक्त अतिदुष्टहो तौ शिरामोक्षणकरै ॥२२।२३॥ दोषा-
दिकमें रक्तनिकारनविधान। वायुदूषितरक्त सिंगीसेलेइ पित्तदूषित
जोंकसेलेइ कफदूषित तोंबीसेलेइ द्वै वा तीन दोष दूषित दुष्ट
रुधिर शिराछेदन करिलेइ ॥ २४ ॥ सिंगीआदिसे रुधिर खिचने
काप्रमाण॥सिंगी जिसठौरलगै तिसकी चारोंओर दशअंगुल ताईं
कारक्त खैंचतीहै जोंक हाथभरताईं तोंबी बारहअंगुलताईं सूक्ष्म
शिरा अंगुल भरका औ मोटीशिरा जो सबनसोंको रक्तदेइ वह
सब शरीरके रुधिरको शुद्ध करतीहै ॥ २५ । २६ ॥ रुधिरमोक्षण
अयोग्य॥शीतकालमें उपासमें तंद्रामें मदमें भयमानको परिश्रम
मेंमलमूत्र निरोधमें ऐसेमनुष्यकेशरीरसेरुधिरनहीं निकलता॥२७॥
शिरारक्तनदेनेकायतन ॥ जोनस छिद्रके रुधिर भली भांति न द्रवै
तौ कूट चोतासैंधव समपीसि उसछेदपर रगरनेसेअच्छेप्रकाररक्त
देइगो ॥२८॥ रक्तमोक्षणकाल न जाड़ाहो न गरमीहो नस्वेदकिये
को नउष्णशरीरीको जो रक्तनिकारै तौप्रथम जवागूदे तृप्तिकर
लोहू निकरावै ॥ २९ ॥ अतिरुधिरस्राव जिसे स्वेदकिये वा उष्मा
से स्थूल नससे रक्त अधिकआवै बंद न हो तिसकेहित यत्न आगे
वालेश्लोकमें कहतेहैं ॥ ३० ॥ रुधिरन थँभनेपर जो शिरामोक्षसे

यां । अतिस्रवत्तरक्तेचलोध्रसर्जरसांजनैः ३१ यवगोधूमचूर्णैर्वाथ
वघन्वनगैरिकैः । सर्पनिर्मोकचूर्णैर्वाभस्मनाक्षौमवस्त्रयः ३२ मु
खंव्रणस्यबध्नाचशीतैश्चोपचरेद्दृढं । विध्येदूर्ध्वंशिरांतांवादहेत्क्षा
रेणवाग्निना ३३ क्षारांकषायसंधत्तेरक्तंस्कंदयतेहिमं । व्रणास्यं
पाचयेत्क्षारोदाहःसंकोचयेच्छिरां ३४ वामांडशोथेदक्षस्यकरस्यां
गुष्ठमूलनां । दहेच्छिरांव्यत्ययेतुवामांगुष्ठशिरांदहेत् ३५ शिरा
दाहप्रभावेणशुष्कशोथःप्रशाम्यति । विषूच्यांपाददाहेनजायतेग्नि
प्रदीपनं ३६ संकुचंतियतस्तेनरसश्लेष्मवहाःशिराः । यदात्वति
र्यक्कृत्स्नीन्हाःशिशोःसंजायतेसृजः ३७ तदांतस्थानदाहेनसंकुचत्य
सृजःशिराः । रक्तेदुष्टेवशिष्टेपितद्याधिर्नैवप्रकुप्यति ३८ अतःस्रा
वंसावशेषंरक्तेनातिक्रमोहितः । आध्मानमाक्षेपकंतृष्णांतिमिरंशिर
सोरुजं ३९ पक्षाघातंश्वासकासोहिक्कादाहंचपांडुतां । कुरुतेवि

रक्त न बंदहोतौ लोध राल रसौत तीनोंकाचूर्ण ॥ ३१ ॥ वा यव गेहूं
काचूर्ण वाधवजवासा गेरूकाचूर्ण वा सर्पकीकेंचुलवारेशमीलत्ताकी
भस्म इनमें कोईकस्तको सुखपर बलकरि दाबदे उसपर चंदनादि
शीतोपचार करै शीतललेपकरै जो इससें बंद नहोयतौ उसकेकुछ
ऊपर बढ़िके फस्तदे वा अग्निसम खार उसके सुंहपर लगावै वा
अग्निसेदागदे तौ बंदहोगा ॥ ३२ । ३३ ॥ इससेक्यों बंदहो सो
कहतेहैं लोधादिसे घाव सुख अमजाताहै शीतललेपसे रक्तथँभता
है खारादिसे जमजाताहै जलानेसे नसकामुख सिकुरताहै ॥ ३४ ॥
दग्धकतरोगशांति ॥ जिसका दहिना अंडकोश फूले उसकेबामेंहाथ
के अंगूठेकी नसदागै ॥ ३५ ॥ जो बाम अंडकोश फूलै तौ दहिनेहाथके
अंगुठाकीमूल दागै जो दग्ध आरंभसेंकरै तौ अवश्यप्रच्छाहोय औ
जिसे शीतरसहो उसकी गोडकेतलवे अत्यंतसेंकैतौ रसवाहिनीऔ
कफवाहिनीके सुख सिकुरजातेहैं अग्निदीप्त होतीहै ॥ ३६ । ३७ ॥
दुष्टरक्त शेष न होनेपर दुष्टरुधिर काढ़नेमें कुछ बाक्की रहिजाय
तौ रोगभी कोपनकरैगा ॥ ३८ ॥ औ अशेष हानेवा ज्यादानिक-
सनेमें उपद्रव उत्पन्न होतेहैं अंधता आक्षेपक वायु तृष्णा तिमिर
आधेसेंपीर ॥ ३९ ॥ पक्षाघात वायु श्वासकास हुचकी जरनपांडुये

सृतंरक्तंमरणंवाकरोतिच ४० देहस्योत्पत्तिरसृजादेहस्तेनैवधार्यते । विनातेनत्रजेज्जीवोरक्षेद्रक्तमतोबुधः ४१ शीतोपचारैःकुपिते क्षतरक्तस्यमारुते । कोष्णेनसर्पिषासोथंमर्वतःपरिषिचयेत् ४२ क्षीणस्यैवशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः । रसःसमुचितःपानेक्षीरंवा षष्टिकाहिता ४३ पीडाशांतिर्लघुत्वंचव्याधेरुद्रेकसंक्षयः । मनःस्वास्थ्यंभवेच्चिन्हंसम्यग्विस्राविते़ऽसृजि ४४ व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्नावप्रवातकान् । एकाशनंदिवानिद्रां क्षाराम्लकटुभोजनं शोकंवादमजीर्णंचत्यजेदावलदर्शनात् ४५ ॥

इतिश्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखंडेरक्तमोक्षणविधिर्नामद्वादशोऽध्यायः १२

रोग होतेहैं औ सबरुधिर निकलजानेसे मरनेकाभी आश्चर्यनहीं ४० ॥ औ रक्तसे शरीरकी उत्पत्तिहै औ देहको आधारहै रक्तरहनेसे जीवतहै इसीकारण बुद्धिमानवैद्य रक्षा रुधिरकी करतेहैं ॥ ४१ ॥ रुधिर मोक्षणपर दोष कोप रुधिर निकरेपर घावपर पित्त कोप दीसै तौ शीतल चंदनादि लेप करै वायु कोप दीसै तौ वा घाव पर सूजन न होइ पीड़ा करै तौ सम्बोष्ण घी लगावै तौ रोग नाश होय ॥ ४२ ॥ रुधिर मोक्षण पर पथ्य ॥ जो रक्त निकासनेपर निर्बल भया हो तौ हरिण खरगोस भेड़ छाग इन का मांस पिलावै वा गोदूध में साठी के चाउर खीर करि खिलावै वा गऊकादुग्ध भातखिलावै येपथ्य हितकारकहैं ॥ ४३ ॥ सम्यक् रक्तमोक्षणलक्षण ॥ पीड़ा मिगत शरीर हलका उभय रोग दवै प्रसन्न मन ऐसे लक्षण हों तौ रक्तमोक्षण अच्छा भया ॥ ४४ ॥ रक्तमोक्षणपरनिषेध ॥ परिश्रम मैथुन क्रोध ठंढे पानीसे न्हाना बाहर जाना दो बार भोजन दिनमें निद्रा यवाखार खटाई कटुक त्यागै शोक बकना अजीर्ण और जिसमें जोर परता देखै सो न करै ॥ ४५ ॥

इतिश्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

———००———

सेकआश्च्योतनंपिंडी विडालन्तर्पणंतथा । पुटपाकोंजनंचैभिःकल्कैर्नेत्रमुपाचरेत् १ सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिःसर्वस्मिन्नयनेहितः। मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुरंगुलात् २ सतापिस्नेहनोमाते रक्तेपित्तेचरोपणः । लेखनश्चकफेकार्यस्तस्यमात्राऽधुनोच्यते ३ षड्वाक्शतैःस्नेहनेषुचतुर्भिश्चैवरोपणे । वाक्शतैश्चत्रिभिःकार्यःसेकोलेखणकर्मभिः ४ कार्यस्तुदिवसेसेकोरात्रौचात्ययिकेगदे ५ एरंडत्वक्पत्रमूलैःसृजमाजंपयोहितं । सुखोष्णंसेचनं नेत्रेवाताभिष्पंदनाशनं ६ परिषेकोहितंनेत्रेपयःकोष्णंससैंधवं। रजनीदारुसिद्धम्वासैंधवेनसमन्वितं ७ वाताभिष्पंदशमनंहितं मारुतपर्यये । शुष्काक्षिपाकेचहितामेदंसेचनकंतथा ८ सौवीरं मधुकंतुल्यंघृतभ्रष्टंसचूर्णितं । छागक्षीरेघृतंसेकात्पित्तरक्ताभिघातजित् ९ त्रिफलालोधूयष्टीभिःशर्करामद्रमुस्तकैः । पिष्टैःशीतां-

अथ नेत्रोपचारप्रकार ॥ नेत्ररोग पर सात प्रकार औषधि कहतेहैं सेक आश्च्योतन पिंडी बिडाल तर्पण पुट पाक अंजनइति १ ॥ सेक विधान दूधवत रस आदिक रोगी की आंखैं मुंदवाइ चार अंगुल ऊपरसे महीन धारदे औषधि गिरावै इसे सेक कहते हैं ॥ २ ॥ सेकभेद ॥ वात दूखित नेत्र रोगमें स्नेह न सेंक देइ रक्त पित्त पर रोपण सेंक पर लेखन सेंक दूध घृतादि स्नेहन द्रव्यहै लोध सुरेठी चिफलादि रोपण द्रव्य है इन्हें दूधमें पीसिलै सोंठि मिरच पीपरि लेखन द्रव्य है आगे इनकी मात्रा कहते हैं ॥ ३ ॥ स्नेह न सेंक की मात्रा छः सै रोपण सेंककी चारिसै लेखन की तीनसै मात्रा ताईं राखै ॥ ४ ॥ सेंकादिकालसेवन ॥ दिन में करै रात्रि को तेज रोगमें करै ॥ ५ ॥ वाताभिष्पंदपरसेंक ॥ रेंड के पत्र छाल मूल क्वाथवकरी का दूध सुखोष्ण करि सेंकै तौ वात अभिष्पंद नेत्र सेदूरहो ॥६॥ पुनः छगरी कादूध सैंधव डारि सुखोष्णकरि सेंकै वा हरदी देवदारु सैंधव डारि छगरी पयतेसेंकै तौ अभिष्पंद वात बिपर्य शुष्काक्षि पाकरोग दूर होइ ॥ ७ ॥ पित्त रक्त पर औ अभिघात पर सेंक लोध सुरेठी दोनों समान घृतमें भूंजि दूध में मिलाइ तप्त करि सेंक करैतौ पित्त रक्त बिकार अभिघात

वुनासेकोरक्ताभिष्पंदनाशनः १० लाक्षामधुकमंजिष्ठालोध्रकाला नुसारिवा। पुंडरीकयुनःसेकोरक्ताभिष्पंदनाशनः ११ श्वेतलोध्र घृतेभ्रष्टंचूर्णितंपटविस्तृतं। उष्णांवुनाविमृदितंसेकाच्छूलघ्नमंवकं १२ अथआश्च्योतनंकार्यंनिशायानकथंचन। उन्मीलितेक्षिणि दृग्मध्येबिंदुभिर्द्व्यंगुलाद्धितं १३ बिंदवोष्टौलेखनेपुस्नेहनेदशबिंदवः। रोपणेद्वादशप्रोक्तास्तेशीतेकोष्णरूपिणः १४ उष्णेचशीत रूपाःस्युःसर्वत्रैवैपनिश्चयः। वातेतिक्तंतथास्निग्धंपित्तेमधुरशीतलं १५ तिक्तोष्णरूक्षंचकफेक्रमादाश्च्योतनंहितं। आश्च्योतनानां सर्वेषांमात्रास्याद्वाक्शतंहितं १६ निमेषोन्मेषणंपुंसामंगुल्याचछोटिकातथा। गुर्वाक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः १७ बिल्वादिपंचमूलेनवृहत्यैरंडशिग्रुभिः। क्वाथआश्च्योतनेकोष्णोवाता

जनित दोष दूर होइ॥ ८। ९॥ रक्ता भिष्पंद परसेंक॥ त्रिफला लोध मुरेठी शक्कर मोथा ये सब समान पीसि ठंढे पानी में सेंक किये रक्त अभिष्पंद दूर होई॥ १० ॥ रक्ता भिष्पंद पर॥ लाख मुरेठी मजीठ लोध कालसा सासेतक मल ये सब पीसि पानी में सेंक करै तौनेत्रनसे रक्ता भिष्पंद दूर हो॥ ११॥ नेत्रशूलपर सपेद लोध घृत में भूनि चूर्ण करि पोटरी में बांधि उष्णजल में बोरि बोरिआंखकी पलकन परफेरैतौ नेत्रशूलदूरहो॥ १२॥ आश्च्योतनविधान॥ आश्च्योतन कहे बिंदु चुवावना आंखि खोलि दूधक्वाथ स्वरसादि द्रव पदार्थ दुइ अंगुली से बोरि आंखि में चुवाय देय इस को आश्च्योतन कहतेहैं सो निशा समय कभी न करै ॥ १३॥ लेखनादि आश्च्योतनमें बिंदुडारनेकाप्रमाण ॥ लिखनकर्ममेंआठबिंदुनेत्रमेंदेइस्नेहनमेंदशरोपणमेंबारहशीतकालमेंसुखोष्णउष्णकालमें शीतल यह निश्चयहै॥ १४ ॥ वातादिमें औ तनयोग्य वात रोगमें तिक्त औ स्निग्ध आश्च्योतन करै पित रोगमें मधुर शीतल करै कफरोग में कटु उष्ण रूक्षकरै ऐसेआश्च्योतन हितकारकहैं १५॥आश्च्योतनमात्राप्रमाण॥मनुष्यआंखिखोलिबंदकरैवाचुटकी बजावै वा गुरु अक्षर उच्चारै इतने कालको वाङ् मात्रा कहतेहैं सो सर्वत्रआश्च्योतनमें हित प्रदहै॥ १६। १७॥ नेत्रवाताभिष्पन्द

भिष्पंदनाशनः १८ अंबुपिष्टैर्निम्बपत्रैस्त्वचंलोध्रस्यलेपयेत् । प्रताप्यवह्निनापिष्ट्वातद्रसोनेत्रपूरणात् १९ वातोत्थंरक्तपित्तोत्थमभिष्पंदंविनाशयेत् । त्रिफलाश्च्योतनंनेत्रेसर्वाभिष्पंदनाशने २० स्त्रीस्तन्याश्च्योतनंनेत्रेरक्तपित्तानिलार्त्तिजित् । क्षीरसर्पिर्घृतंवापिवातरक्तरुजंजयेत् २१ पिंडीकवलिकाप्रोक्तावध्यतेपट्टवस्त्रकैः । नेत्राभिष्पंदयोगात्साव्रणेष्वपिनिवध्यते २२ अभिष्पंदेधिमंथेचसंजातेश्लेष्मसंभवे । स्निग्धास्वेन्येतमागस्य शिरस्तीक्ष्णैर्विरेचयेत् २३ अधिमंथेषुसर्वेषुललाटेवेधयेच्छिरां । अशांते सर्वथामंथेभ्रुवोस्तुपरिदाहयेत् २४ वाताभिष्पंदशांत्यर्थंस्निग्धोष्णापिंडिकाभवेत् । एरंडपत्रमूलत्वग्निर्मितावातनाशिनी २५ पित्ताभिष्पंदनाशायधात्रीपिंडीसुखावहा । महानिंवफलोद्भूता

पर आश्च्योतन विल्वादि पंचमूल भटकटैया रेंड़ी सहिंजनइनकी जड़का क्वाथले नेत्रनमें बूंदचुवावने से अभिष्पन्द दूरहोइ॥ १८॥ बात औरक्त पित्तपर॥नीमकी पत्ती पानीमें पीसि लोधकी छाल पर लेपकरि आगिमें सेंक पीसलेइ उसके रसकी बूंदनेत्रमें चुवावै तौ बातसें रक्तपित्तसे उत्पन्नअभिष्पन्द दूरहो॥१९॥ सर्वाभिष्पन्द पर॥आश्च्योतन त्रिफलाक्वाथ सुखोष्ण नेत्रमें चुवावै तौ सब अभिष्पन्द दूरहोइ॥ २०॥ रक्त पित्ताभिष्पंद पर चात स्त्रीका दूधनेत्रमें चुवावै तौ बात रक्त पित्तजन्य नेत्रपीर दूरहोइ दूध घृत मिलाइ वा अकेला घृतनेत्रमें चुवावै तौबातरक्तजनित नेत्रपीरदूरहोइ॥२१॥ पिंडी विधानं॥ औषधि बांटि पिंडी करि नेत्रनपर धरि पट्टीसे बांधिदेइ यह पिंडी औ कवलिका होतीहैं सो अभिष्पंदपर औ व्रतपर बांधतेहैं॥२२॥नेत्राभिष्पन्दपर शिरोरेचन जिसे कफक्षत अभिष्पंद औ अधिमंथहो सो मस्तकमें तेललगाइ पसीना निकराइ नासलेइ यहमस्तक शुद्धकरनेको नीकहै २३ सर्वाधिमंथपर॥ सब अधिमंथमें शिरकी फस्तले अशमंथमें भौंह दग्ध करै तो आराम होइ॥२४॥अभिष्पन्दादि पर सर्वाभिष्पन्दमें काहो द्रव्यका कल्क नेत्रपर बांधै वाताभिष्पन्द में चिकनी औउष्ण द्रव्यकी पिंडीबांधै २५॥बातऔ पित्त अभिष्पन्द पर रेंडमूल वा छाल वा पत्र पीसि

पिंडीपित्तविनाशिनी २६ शिग्रुपत्रकृतापिंडीश्लेष्माभिष्पंदनाशिनी । निंबपत्रकृतापिंडीश्लेष्मपित्तहराभवेत् २७ त्रिफलापिंडिकाप्रोक्तानाशिनीश्लेष्मपित्तयोः । पिष्टनाकांजिकतोयेन घृतभृष्टाचपिंडिका २८ लोध्रस्यहरतिक्षिप्रमभिष्पंदमसृग्दरं । शुंठीनिंबदलैःपिंडीसुखोष्णास्वल्पसैंधवा २९ धार्याचक्षुषिसंयोगाच्छोथकंडूव्यथापहा । विडालकोवहिर्लेपोनेत्रपक्ष्मविवर्जितः तन्मात्रासापरिज्ञेयामुखलेपविधानवत् ३० यष्टीगैरिकसिंधूत्थदार्वीतार्क्ष्यैःसमांशकैः । जलपिष्टैर्वहिर्लेपःसर्वनेत्रभयापहः ३१ रसांजनेनवालेपःपथ्याविश्वदलैरपि । कुमारिकाग्निपत्रैर्वादाडिमीपल्लवैरपि ३२ वचाहरिद्रानिम्बैर्वातथानागरगैरिकैः । दग्ध्वाग्नौसैंधवंलोध्रंमधूच्छिष्टयुतेघृते ३३ पिष्टमंजनलेपाभ्यांसद्योनेत्र

पिंडीकरि नेत्रपर बांधनेसे वाताभिष्पन्द दूर होइ आंवरेकी पिंडी बांधने से पित्ताभिष्पन्द दूर होइ पुनः पित्ताभिष्पन्दपर बकाइन के फलकी पिंडीबांधेसे पित्ताभिष्पन्द दूर होइ॥२६॥कफाभिष्पन्दपर सहिंजनके पत्रकी पिंडीबांधेसे कफाभिष्पंद दूर होइ कफपित्ताभिष्पन्दपर निंबपत्र वा त्रिफलेकी पिंडी बांधे तौ कफ पित्ताभिष्पन्द दूर होइ ॥ २७ ॥ रक्ता भिष्पन्द पर लोध कांजी में बांटि घृत में भूनि पिंडीकरि बांधेसे रक्ता भिष्पन्द विनाश होय ॥ २८ ॥ नेत्रशोथ औ खाजपर सोंठ नीमपत्र थोड़ासा सेंधौ मिलाइ गुनगुनी पिसडीबांधै तौनेत्रसूजनखजुरी दूर होइ॥२९॥विडालविधान॥ आंखि मूंद तले ऊपर की पलक पर लेपकरै वरुनी बराइदे इसे विडाल कहैं इसकी मात्रा मुखलेप समान जानौ ॥ ३० ॥ सर्वाक्षि रोग पर विडाल मुरैठी गेरू सेंधव दारुहर्दी खपरिया येपांचौ समान पानी में पीसि लेपकरै तौ सब नेत्राभिष्पन्द जाइ ॥ ३१ ॥ पुनः रसौत जलमें पीसि लेपकरै वा हड़सोंठि रक्तकमल पत्र वा बच हर्दी सोंठि वा घीक्वार चीता वा अनारपत्र वा बच हर्दी सोंठि वासोंठिगेरू ये भिन्नभिन्न पानीमें पीसि लेपकियेतेसबनेत्ररोग दूर होइं॥ ३२ ॥ पुनः सैंधव लोध भूनि मोम घीमें रगर अंजन करि लेप भी करै तौ वेगही नेत्र रोग अच्छेहोयं॥ ३३ ॥ पुनः नीबूरस

रुजापहं । लोहस्यपात्रेसंघृष्टोरसोनिंबफलोद्भवः३४ किंचिदघनो दहिर्लेपान्नेत्रबाधांव्यपोहति । संचूर्ण्यमरिचंकेशराजस्वरसमर्द नात् ३५ लेपनादर्मणांनाशंकरोत्येषःप्रयोगराट् । स्विन्नांभित्वा विनिष्पीड्यभिन्नामंजननामिकां ३६ शिलैलानतसिंधूत्थैःसक्षौ द्रैःप्रतिसारयेत् । अथतर्पणकंवच्मिनेत्रतृप्तिकरंपरं ३७ यद्रूक्षंप रिशुष्कंचनेत्रंकुटिलमाविलं । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मील नसंयुतं ३८ तिमिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्पंदाधिमंथकैः । शुक्राक्षि पाकशोथाभ्यांयुक्तंवातविपर्ययैः ३९ तन्नेत्रंतर्पणीयाज्यंनेत्रकर्मवि शारदैः।दुर्दिनात्युष्णशीतेषुचिंतयासंभ्रमेषुच ४० अशांतोपद्रवेचा क्ष्णितर्पणंनप्रशस्यते । वातातपरजोहीनेदेशेचोत्तानशायिनः४१ आधारौमाषचूर्णेनक्लिन्नेनपरिमंडलौ । समौदृढावसंबाधौकर्तव्यौ नेत्रकोशयोः४२पूरयेद्घृतमंडेनविलीनेनसुखोदकैः।अथवाशतधौ

लोहपात्र में रगर गाढा भये लेप कियेते नेत्रबाधा हतहोइ॥३४॥ अर्मेलेप:॥ भंगरेके रसमें मरिच को रगरि लेपकरै तौ अर्म रोग सब नाशकरै यह राजप्रयोग है॥ ३५॥ प्रतिसारणाञ्जन नामि- का पिरिकी पर यह आंखिन की कोर पर होती है इसपिरिकौ पर बफारादै फेरि अंगुरीसे दाबि तिसपर मैनशिल इलायची त- गर सैंधव पीसि सहत में रगर लगावै तौ पिरिकी दूर करै॥३६॥ नेत्रपरतर्पण॥ नेत्रकेउतुष्ट करने को तर्पण कहैं तर्पण योग्य जो नेत्र रूखे रूखे कठोरता गुरुता युक्त हों भरित बरुनी शिरउत्पात कृ- च्छ्रोन्मीलन कहे जलदी पलकौलगैं॥ ३७। ३८ ॥ तिमिर अर्जुन फुल्ली अभिष्यंद अधिमंथ शुक्राक्षिपाक सूजन वातसंबंधी औरव्यथा ये रोग तर्पण योग्यहैं॥ ३९ ॥ तर्पणवर्जित॥ दुर्दिनमें अतिउष्णकाल में अति शीत काल में चिन्ता परिश्रम युक्त को औ नेत्र उपद्रव शांति न हो ये तर्पण लायक नहीं॥ ४०॥ तर्पणविधान॥ जिसस्थान में बयारि गरमी धूरि न जाइइनके बचाउ की ठौररोगी उताना पौढ़ै॥ ४१॥तब उसके नेत्र के चारों ओर जो हड्डी है तिस पर उ- रद की पीठीले मेड़ बांधै जैसे कटोरी दिवली होती है तबआंखि मुंदबाइ उसमें टिघलावी वा औषधिन का मंड करि वा सखोष्ण

तेनसर्पिषाक्षीरजेनवा ४३ निमग्नान्यक्षिपक्ष्माणियावत्स्युस्ता वदेवहि । पूरयेन्मीलितेनेत्रेऽनंतरउन्मीलयेच्छनैः ४४ धारयेत्तत्स्नेहं रोमपुवाङ्मात्राणांशतंबुधः । स्वच्छेकफेसंधिरोगेमात्रापंचशतानिहि ४५ कफेचषट्शतंकृष्णा रोगेसप्तशतंमतं । दृष्टिरोगेष्वष्टशत मधिमंथेसहस्रकं ४६ सहस्रंवातरोगेषु धार्यमेवंहितर्पणे । स्विन्नेनयवपिष्टेन स्नेहंदार्ध्येरितंततः ४७ यथास्वंधूमपानेन कफमस्यविशोधयेत् । एकाहंवात्र्यहंवापि पंचाहंचेष्यतेपरं ४८ तर्पयेत्तत्सलिंगानि नेत्रस्येमानिभावयेत् । सुखस्वप्नावबोधत्वं वैशद्यंवर्णपाटवं ४९ निर्वृत्तिर्व्याधिशांतिश्च क्रियालाघवमेवच । अक्षसाश्रुगुरुस्निग्धं नेत्रंस्यादतितर्पणं ५० रूक्षमस्राविलंरुग्णं नेत्रंस्याद्धीनतर्पणं । रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यां नेत्रयोःस्यात्प्रतिक्रियः ५१ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि पुटपाकस्यसाधनं । द्वौबिल्वमात्रौमांसस्य पिंडौ

जल वा सौबार का धोया घृत वा दूधका फेन ॥ ४२ । ४३ ॥ वा नवनीत इनमें से कोई भरे कुछ नेत्रमें धीरे धीरे पलक मिलमिलावै जिसमें सूक्ष्मसी औषधि भीतर ची जाइ ॥ ४४ ॥ तर्पणमात्रा ॥ जो पलक वा पोटेके रोगपर तर्पण होतो सौवाक्‌मात्रा ताईं औषधि भरीराखै जो कफादिजन्य नेत्रमेंकाई व्याधिहो तो पांचसैमात्रा पर्यंत औषधि स्थिर रहै ॥ ४५ ॥ सुपेदी के रोग में छःसैताईंकाले डेलेके रोग में सातसै ताईं रहै पुतरीरोग में आठसै ताईं अधिमन्थ व बात रोगमें हजार मात्रा ताईं औषधि भरीरहै ॥ ४६ ॥ तर्पणेकफाधिक्येउपाय ॥ जो स्निग्ध तर्पण से कफ उत्पन्न होतो यवपीसि धूम्रपान करावै कफ शोधन करै ॥ ४७ ॥ तर्पणदिनप्रमाणं ॥ तर्पण एकदिन व तीन दिन व पांचदिन करै ॥ ४८ ॥ सम्यक् तर्पणलक्षणं ॥ तर्पण अच्छा होतो सुखसे सोवै जागै नेत्र निर्मल हों कांतिबढ़ै दृष्टि शुद्धहो रोग नाश पलकै हलकी येलक्षणअच्छे तर्पण के हैं ॥ ४९ ॥ अतितर्पणलक्षणं ॥ अति तर्पणसेनेत्र पानीबहावैं भारी रहैं चिपचिपाई ॥ ५० ॥ हीनतर्पणलक्षणं ॥ नेत्र तेज लाल मीड़ीयुक्त व रोग अशान्ति नेत्र सूक्ष्म स्निग्धयत्न औ नेत्र चिकने हों तो रूक्ष उपाय करै रूखे होंतो स्निग्ध उपाय करै ॥ ५१ ॥ पुट

स्निग्धौसुपेषितौ ५२ द्रव्याणांविल्वमात्रन्तु द्रवाणांकुडवोमतः। तदेकस्थंसमालोड्य पत्रैःसुपरिवेष्टितं ५३ पुटपाकेनतत्पक्का गृह्णीयात्तद्रसंबुधः। तर्पणोक्तविधानेन यथावदवधारयेत् ५४ दृष्टिमध्येनिषेव्यः स्यान्नित्यमुत्तानशायिनः। स्नेहनोलेखनश्चैव रोपणश्चेतिसात्रिधा ५५ हितःस्निग्धोतिरूक्षस्य स्निग्धस्यापिहि लेखनः। दृष्टेर्बलार्थमितरः पित्तासृक्व्रणवातनुत् ५६ सर्पिर्मांस वसामज्जा मेदःस्वादौषधैःकृतः। स्नेहनःपुटपाकश्च धार्योद्वेवाक् शतंदृशः ५७ जांगलानांयकृन्मांसै र्लेखनद्रव्यसंयुतैः। कृष्णलोहरजस्ताम्र शंखविद्रुमसिंधुजैः ५८ समुद्रफेनकासीस स्रोतोजलधिवस्तुभिः। लेखनोवाक्शतंधार्य स्तस्यतावद्विधारणं५९ स्तन्य जांगलमध्वाज्य तिक्तकद्रव्यपाचितः। लेखनात्त्रिगुणोधार्यः पुट

पाक की रीति कहतेहैं ॥ हरिणादिमांस दो पल महीन करि एक पल घृतादि स्निग्ध मिलाइ एक पल सूखी औषधि दूध व द्रव पदार्थ कुड़व भर ये सब मिलाय गोला बांधि यथा कार्य पत्रसे वेष्टित करि ॥ ५२ । ५३ ॥ कपरौटी माटी चढ़ाइ पुटपाक करलेय तब गोलानिकारि रसनिचोरि नेत्रपर मेथलाबांधि रसभरै॥५४॥ नेत्रपुटपाकरसधारणविधान ॥ पुटपाक रस व स्नेहन लेखन व रोपण भेद करि ये तीन प्रकार हैं रोगीको उताना सुला नेत्रखोलिके भीतरडारै॥५५॥ स्नेहादिभेद॥पुटपाकक्रिया॥ रूखेनेत्र पर चिकान चिकने पर रूखा पुटपाक करना सबलदृष्टि पर रोपण पुटपाक योग्य है जो नेत्र में दुष्टरोग व रक्त पित्त व्रण व वायु उपद्रव हो तो आने वाले श्लोक में कहीं द्रव्य का वेग वेग पुटपाक करै॥५६॥ स्नेहन पुटपाक घृतमें हरिणादि मांस बसा मज्जा मेदा औ स्वादौषधिका काकोल्यादि गण का चूर्ण सराब एक करि पीसि गोला बांधि पुटपाककरि रसले नेत्रमें देय दोसैमात्रा तक राखै इसे पुटपाक कहैं ॥ ५७ ॥ लेखन पुटपाक यथोचित करि जा मांस लोहचून तांबा शंख मूंगा सैंधव ॥ ५८ ॥ समुद्रफेन कसीस सुरमा बकरी के दहीका पानी पूर्वोक्त रीति पुटपाकरस नेत्रमें सौमात्रा ताईं राखै यह लेखन पुटपाकहै ॥ ५९ ॥ रोपणपुटपाक ॥ स्त्रीको दूध मृग

पाकस्तुरोपणः ६० इतरेतर्पणोक्तांतु क्रियांव्यापतिदर्शने । अथ-संपक्वदोषस्य प्राप्तमंजनमाचरेत् ६१ हेमन्तेशिशिरेचैव मध्याह्नेजनमिष्यते । पूर्वाह्नेवापराह्नेवा ग्रीष्मेशरदिचेष्यते ६२ वर्षास्वनाभ्रे नात्युष्णेवसंतेचसदैवहि । लेखनंरोपणंचैवतथास्यात्स्नेहनांजनं ६३ लेखनंक्षारतीक्ष्णाम्लरसैरंजनमिष्यते । कषायतीक्ष्णरसयुक्सस्नेहंरोपणंमतं ६४ मधुरस्नेहसंपन्नमंजनंचप्रसादनं । गुटिकारसचूर्णानित्रिविधान्यंजनानिच ६५ कुर्याच्छलाकयांगुल्या हीनानिचयथोत्तरं । श्रांतेप्ररुदितेभीतेपीतमद्येनवज्वरे ६६ अजीर्णेवेगघातेचनांजनंसंप्रचक्षते । हरेणुमात्रांकुर्वीतवर्तिंतीक्ष्णांजनेभिषक् ६७ प्रमाणंमध्यमेधार्यंद्विगुणंतुमृदौभवेत् ।

मांस मधुघतकुटकी ये सब मिलाइ पुटपाक करि रसले आंखोंमें देयवह रोपण पुटपाकहै तीनसैमात्रातक राखै जो पुटपाकन्यूनाधिक होय तो नेत्र भारी रहैं औ निस्तेज का दोष उत्पन्न होइ तब कहे हुये सदृश तर्पण क्रिया करै तो पूर्वोक्त होइ ॥ ६० ॥ संपक्व दोषअंजन । जिसकी आंखिदेखभलीभांतिपकचुकाहोतौउसकेनेत्र अंजनलगाना फिर पँचयेदिन लगावै ॥ ६१ ॥ औहरांधारणमें हेमंत शिशिरऋतुमें मध्याह्नमें लगावै ग्रीष्मशरदमें पहरदिनचढ़े औ पहरदिनरहे लगावै ॥ ६२ ॥ वर्षामें बरसता न हो बदरी न हो ऊष्मा अधिक न हो तबलगावै बसंतमें सबसमयअंजनलगाना हित है ॥ ६३ ॥ अंजनभेद ॥ अंजन तीन प्रकारकाहै लेखन रोपण स्नेहन सो तीक्ष्ण खट्टा खारस लेखनअंजन जानना कषाय कटुस्नेहयुक्तदो रस रोपणजानो मधुररस स्नेहयुक्त प्रसादकहैं स्नेहन जानो॥६४॥ अंजनप्रकार ॥ गोलीअंजन रसअंजन चूर्ण अंजन गोलीसे रसांजन श्रेष्ठ रसते चर्णांजनश्रेष्ठ ये एकसे एक उत्तमहैं सो सलाई व अंगुलीसेलगावै ॥ ६५ ॥ अंजनअयोग्य ॥ थकित रोनेवाला भयभीत मद्यपिये नवीनज्वरी अजीर्णी मूत्रादिरोधी इन्हैं अंजन अयोग्य है ॥ ६६ ॥ तीक्ष्णांजनकीवर्ती रेवड़ी बीजसम मोटी बनावै मध्यम में डेढ़बीजसम मृदुमें दोबीजसम ॥ ६७ ॥ गोलीअंजनमें मात्रा तीव्र विडंगसम उत्तमहै द्वै विडंगसम मध्यमहै एकविडंग समान छोटी

रसक्रियात्तूत्तमास्यात्त्रिविडंगमिताहिता ६८ मध्यमाद्विविडंगास्या द्धीनात्वेकविडंगिका वैरेचनिकचूर्णांतुद्विशलाकंविधीयते ६९ मृदौतुत्रिशलाकंस्याच्चतस्त्रःस्नेहकांजनं । मुखयोःकुंठिताश्लक्ष्णा शलाकाष्टांगुलोन्मिता ७० अश्मजालोहजावास्यात्कलयापरिमंडला । ताम्रलोहाश्मसंजाताशलाकालेखनेमता ७१ सुवर्णरजतोद्भूताशलाकास्नेहनेमता । अंगुलीवमृदुत्वेनकथितारोपणेबुधैः ७२ सायंप्रातर्वांजनेस्यात्तत्सदानैवकारयेत् । नातिशीतोष्णवाताभ्रवेलायांसंप्रशस्यते ७३ कृष्णाभागादधःकुर्यादपांगंयावदंजनं । शंखनाभिर्विभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिला ७४ पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकं । छागीक्षीरेणसंपिष्यवर्तिंकुर्याद्यवोन्मितां ७५ हरेणुमात्रांसंघृष्यजलैःकुर्यादथांजनं । तिमिरंमांसवृद्धिञ्चकाचंपटलमर्बुदं ७६ रात्र्यंधंवार्षिकंपुष्पंवर्तिचंद्रोदयांजयेत् ।

मात्रा है ॥ ६८ ॥ शुष्कवैरेचनांजनप्रमाण ॥ वैरेचन अंजन सलाईसे नेत्रमें दोबार देइ मृदुअंजनका चूर्ण तीनबारकरि घृतादियुक्त चूर्ण चारबार देइ वैरेचनकहे जिसकेलग. मैसे नेत्रनसेपानीगिरै ॥ ६९ ॥ शलाकाप्रमाण ॥ पत्थर वा धातुकीसलाई आठ अंगुलकी मुदंगाकारमुख दोनों तिलसमान मचीन अतिचिकनेलेखन शलाका प्रमाणलेखनसलाई तांबे वा लोहेकी बनावै ॥ ७० । ७१ ॥ स्नेहअंजनकी सोने वा चांदीकी बनावै रोपणमृदुता सेअँगुरीबोरि नेत्र में आंजे ॥ ७२ ॥ अंजनसमय॥अंजन संध्या वा प्रभातकाल करै सहज समय न करै न अतिशीत न उष्णकालमें न अतिवायुमें न बद्दरीमें अंजनकरै औ नेत्रके कालेभागके तरेकरै ॥ ७३॥ चंद्रोदयवर्ती ॥पीपरिशंखपेंदी बहेरेकी मींगी हड़ मैनशिल ॥ ७४ ॥ मिर्चकूट बच ये आठों समभागलेबकरीकेदूधमें बहुत घोटि यवसमकरि ७५ ॥ मेवड़ीबीजकेसमान वटीबनाइ पानीमें रगरि नेत्रमें आंजैतौ तिमिरमांसवृद्धि कांचबिंदु पटलरोगअर्बुद रतौंधी बर्षभरकी फुल्ली येसब दूर होइं॥ ७६ ॥ शुक्रादिकपरलेखनवर्ती॥ढाकके फूलका रस.करंजकीमींगी कईबारघोटिघोटि यवसरूपवर्ती बनाइ पानीमेंरगरि नेत्रमेंआंजेतौ फुल्ली मांसवृद्धि रातकी दूरकरतीहै जैसेसूर्य्य शुद्धहो

पलाशपुष्पस्वरसैर्वहुशःपरिभाविता ७७ करंजवीजंवर्तिस्तुशुक्रा-
दीञ्छास्त्रवल्लिखेत् । समुद्रफेनसिंधूत्थशंखखांडवकल्कजैः ७८शि
ग्रुवीजयुतैर्वर्तिःशुक्रादीन्शास्त्रवल्लिखेत् । दंतैर्दंतिवराहोष्ट्र गोह
याजखुरोद्भवैः ७९ शंखमुक्ताचाब्धिफेन युतैःसर्वैर्विचूर्णितैः । दंतव
र्त्तिकृताश्लक्ष्णाशुक्राणांनाशिनीपरा ८० नीलोत्पलंशिग्रुवीजंना
गकेशरकंतथा । एतत्कल्कैःकृतावर्तिरतितंद्रांविनाशयेत् ८१ तिल
पुष्पाण्यशीतिस्युःपष्टिसंख्याकणाभवेत् । जातीकुसुमपंचाशन्म
रिचानिचषोडश८२ सूक्ष्मंपिष्ट्वाजलैर्वर्तिःकृताकुसुमिकाभिधा ।
तिमिरार्जुनशुक्राणांनाशिनीमांसवृद्धिहृत् ८३ एतस्याश्चांजनेमा
त्राप्रोक्तासार्द्धहरेणुका । रसांजनंहरिद्रेद्वेमालतीनिंवपल्लवाः ८४
गोसकृद्रससंयुक्तावर्त्तिर्नक्तांध्यनाशिनी । धात्र्यक्षपथ्यावीजानिए
कद्वित्रिगुणानिच ८५ पिष्ट्वावर्त्तिंजलैःकुर्यादंजनंद्विहरेणुकं ।

जातीहै ॥ ७७ ॥ पुन: समुद्रफेन सैंधव शंख मुरगे के अंडे का छिलका सहिंजन बीज ये पांचौ समान महीनकरि जलमें पीसि गोली बांध सुखाइ पानीमें घिसि अंजन करै तौ शुक्रादिक का कुछकाम नहीं रहता॥७८॥ लेखनीदंतवर्ती ॥ हाथी घोड़ा ऊंट वराह बैलबकराखर इनसातौ दांत शंख मोती समुद्रफेन इन सबका चूर्ण करि जलमें पीसि गोली बांधि सुखाइ पानी में घिसि अंजन करैसे फुल्लीगिरि जाइ ॥ ७९ । ८० ॥ तंद्रानिवारण ॥ लेखनीवर्त्ती नील कमल स-हिंजन बीज नागकेसर ये तीनौ सम अतिमहीन पानी में पीसि गोली करि सुखाय पानी में घिसि आंजै तौतंद्रा दूरहो ॥ ८१ ॥ रोपणीकुसुमवर्त्ती ॥ तिलपुष्प असी पीपरि दाना साठि चमेली पुष्प ५० मिर्च १६ इन्हैं महीन पीसि डेढ़ मेवड़ीबीज तुल्य वटी बनाइये इसे कुसुमिकावर्त्ती कहैं इसे आंजै तिमिर अर्जुन फूली मांस वृद्धि सबदूरहों ॥ ८२ । ८३ ॥ रतौंधो परवर्ती ॥ रसौंत हर्दी दारुहर्दी चमेली पत्र नींब पत्र ये पांचौ समान गोवर के पानी में गोली बनाइ आंजै से रतौंधी नाशहोइ ॥ ८४ ॥ नेत्रस्राव पर स्नेहवर्ती ॥ आंवरा मिंगी २ भाग हड़ मिंगी ३ भाग जलमें म-हीन पीसि दो मेवड़ी बीज सम गोली करि पानीमें घिसि आंजै

नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजंतथा८६ तुल्यमाक्षिकसिंधूत्थसिताशंखमनःशिला । गैरिकोदधिफेनंचमरिचंचेतिचूर्णयेत्८७ संयोज्य मधुनाकुर्यादंजनार्थंरसक्रियां । वर्त्मरोगार्मतिमिर काचशुक्रहरां परां ८८ वटक्षीरेणसंयुक्तोमुख्यकर्पूरजंरजः। क्षिप्रमंजनतोहंति कुसुमंचद्विमासिकं ८९ क्षौद्राश्वलालासंघृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमंजयेत् । अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योदयादिनः ९० जातीपुष्पंप्रवालंच मरिचंकटुकीवचा । सैंधवंवस्तमूत्रेणपिष्टंतंद्राघ्नमंजनं ९१ शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैंधवैः । अंजनंस्यात्प्रबोधायसरसोन शिलावचैः ९२ दार्वीपटोलंमधुकंसनिंबंपद्मकोत्पलं । प्रपौंडरीकं चैतानिपचेत्तोयेचतुर्गुणे ९३ विपाच्यपादशेषंतुसृतंनीत्वापुनःपचेत् । शीतेस्मिन्मधुसितांदद्यात्पादांशिकांनरः ९४ रसक्रियैषादाहाशु रक्तरोगरुजंहरेत् । रसांजनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनः

से पानी बहना औ बातरक्त जन्य पीड़ा मिटै ॥ ८५ । ८६ ॥ रसक्रिया ॥ ततिया सोनामाखी सैंधव मिश्री शंख मैनशिल गेरू समुद्रफेन मिरच ये नव सम भाग सूक्ष्म पीसि सहत मिलाइ गोली बांधि अंजन करसे पलकरोग तिमिर अर्म कांचबिंदु फुल्ली ये रोग दूर होयं ॥ ८७ । ८८ ॥ शुक्रपर रसक्रिया ॥ बट दुग्ध शुद्ध कपूर पीसि अंजन करै दो मास की फुल्ली घरी दूर हो ॥ ८९ ॥ तंद्रापर लेखनीरसक्रिया ॥ सहत औ घोड़ेकी लारसे मरिच घिस कै अंजन कियेते तंद्रा दूर हो ॥ ९० ॥ पुनरंजन ॥ चमेली को पुष्प मूंगा मरिच कुटकी बच सैंधवये सब समानले छाग के मूत्रमें गोली बांधि लगावैतौ तंद्रा निवारण हो ॥ ९१ ॥ सन्निपातपरलेखन रसक्रिया ॥ सिरस बिया पीपरि मरिच सैंधव लहसुन मैनशिल बच सातौ समान ले गोमूत्र में पीसि आंजैतौ सन्निपात शांतिहो ९२ ॥ नेत्रदाहपररस क्रिया॥ दारुहर्दी पटोल मुरैठी नींब पद्माख कमल श्वेत कमल सातौ सम भाग कूटकै चौगुने पानी में क्वाथ करि ॥ ९३ ॥ चौथ्याई रहै तब उतारि छानै फिर औटाव मार्‌डाहोय तब सिराइ तब मधुमिश्री मिलाइ अंजन करै तौ नेत्र जलना बहना रक्त बिकार नेत्ररोग दूर होइं ॥ ९४ ॥

शिला ६५ समुद्रफेनंलवणं गैरिकंमरिचानिच । एतत्समांशं मधुना पिष्ट्वाप्रक्लिन्नवर्त्मनि ६६ अंजनंक्लेदकंडुघ्नं पक्ष्मणांच प्ररोहणं । गुडूचीस्वरसःकर्षं क्षौद्रंस्यान्माषकोन्मितं ६७ सैंधवंक्षौद्रतुल्यंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् । काचंकंडुंलिंगनाशंशुक्लकृष्णागतान्गदान् ६८ हंत्यंजनकंडुंक्षौद्रेण नेत्रस्रावंचसर्पिषा । पुष्पतैलेनतिमिरं कांजिकेननिशांधतां ६६ पुनर्नवाजयेदाशु भास्करस्तिमिरंयथा । बब्बूलदलनिक्वाथो लेहीभूतस्तदंजनात् १०० नेत्रस्रावंजयत्येवःमधुयुक्तोनसंशयः । हिज्जलस्यफलं घृष्ट्वापानीयेनित्यमंजनं १ चक्षुस्रावोपशांत्यर्थंकार्यमेतन्महौषधं । कतकस्यफलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमंजयेत् २ ईषत्कर्पूरसहितंतस्मृतंनेत्रप्रसादनं । सर्पिःक्षौद्रंचांजनंस्यात्छिरोत्पातस्यशांतये ३

बरुनीरोगपर रसक्रिया ॥ रसौत राख बहेली फुल जैनसिल समुद्रफेन सैंधव गेरू मिरच आठौ समभाग सहत देकै अंजन करै तौ पाकरोग वर्म चिपचिपाहट औ खाज ये सब दूरहों औ पलक भरना न भरै फिर जमै ॥ ९५ । ९६ ॥ तिमिररोग पर रोपणी रसक्रिया ॥ गुरुचका नाखका रस कर्षभर मधु सैंधव माषे जाहिसर सब सूक्ष्म पीसि अंजन करै तौ फिल्लार्म तिमिर कांचबिंदु खजुरी लिंगनाश सफेद कृष्ण इतके सब रोग दूरहों ॥ ९७ । ९८ ॥ अंजनांतेअनेपान ॥ जो अंजन करे खाय हो तो गदापूर्न दूध घसि लगावै तौ खजुरी मिटै सहतमें लगाये तो जल बहना दूरहो घृत युक्तसे फूलो दूरहो तिल युक्त लगायेसे तिमिर रोग दूरहो कांजी में लगाये से रतौंधी दूरहा जैसे सूर्योदय से अंधकार दूरहो तैसे गदापुरैना से अविपान कहावसे सब नेत्ररोग दूर होतेहैं ॥ ९९ ॥ नेत्र स्रावपर रोपणी रसक्रिया ॥ बबूर पत्रका क्वाथ अति गाढ़ाभये सहत मिलाय आंजै तौ निश्चय नेत्रसे पानीबहना दूरहो ॥ १०० ॥ पुनर्नेत्रस्राव पर निर्मली फल पानीमें रगरि लगावै तौ नेत्रसेपानी बहना बंद होय ॥ १ ॥ नेत्रशुद्ध होनेकेअर्थ स्नेहनी रसक्रिया ॥ निर्मली सहत में घसि किंचित् कपूर मिलाइ आंजै तौ नेत्ररोग होइं ॥ २ ॥ शिरोत्पातपर रसक्रिया ॥ घृत औ सहत मिलाइ अं-

कृष्णासर्पवसाशंखःकेतकीफलमंजनं । रसंक्रियेयमचिराद्दंधानंद-
र्शनप्रिया ४ दक्षांडत्वक्शिलाकाचैःशंखचंदनगैरिकैः । द्रव्यैरंजन
योगोयंपुष्पार्मादिविलेखने ५ कणाछागयकृन्मध्येपक्त्वातद्रसपे
पिता । अचिराद्धन्तिनक्तांध्यंतद्वत्सक्षौद्रऋषणा ६ शाणार्द्धंमरिचं
द्वौचपिप्पल्यर्णवफेनयोः । शाणार्द्धंसैंधवंशाणानवसौवीरकांज
नात् ७ पिष्टंसुसूक्ष्मंचित्राचूर्णांजनमिदंशुभं । कंडूकाचकफार्तानां
मलानांचविशोधनं ८ शिलायारसकंपिष्टासम्यगाप्लाव्यवारि-
णा । गृह्णीयात्तज्जलंसर्वंत्यजेच्चूर्णमधोगतं ९ शुष्कंचतज्जलंसर्वं
पर्पटीसन्निभंभवेत् । निचूर्णंभावयेत्सम्यक् त्रिवेलंत्रिफलारसैः
१० कर्पूरस्यरजस्तत्रदशमांशेननिक्षिपेत् । अंजयेन्नयनेतेनसर्व
दोषहरंहितत् ११ सर्वरोगहरंचूर्णंचक्षुषोःसुखकारिच । अग्नितप्तं
चसौवीरंनिषिंचेत्त्रिफलारसैः १२ सप्तवेलंतथास्तन्यैःस्त्रीणांसिक्तं

जन करै तौ शिरोत्पातरोग दूरहोयं ॥ ३ ॥ धुंधपर रसक्रिया ॥
सांपकी चरबी शंख निर्मली ये सब खरल करि आंजै तौ अंधियारा
दिखाई देना दूर होइ साफ़ दिखाई देइ ॥ ४ ॥ लेखनचूर्णअंजन ॥
मुर्ग के अंडे का छिलका सपेद कांच शंख चंदन गेरू सैंधव ये द्रव्य
समान अंजन करि आंजने से फुल्ली मांसादि दि नाश होंय॥५॥ र-
तौंधी परचूर्ण॥छाग की कलेजी पीपरि धरिपकाइ पीपरिले उसी
मांस के रस में रगरि आंजै रतौंधी न रहै ॥ ६ ॥ कंडूआदिपर म-
रिच अर्द्धशाण पीपरि समुद्रफेन दोदो शाण सुरमा नव शाण
ये सब द्रव्य चित्रा नक्षत्रमें लेमहीन सुरमा बनाइ नेत्र में आंजे से
आंखि खजुवाना कांचबिंदु कफजन्य पीड़ा मल दूरनसे नेत्र को
शुद्ध करै ॥ ७ । ८ ॥ सर्व नेत्ररोग पर मृदुचूर्णांजन ॥ खपरियाले
अति महीन खरल करि बासन में पानी भरि घोलि घंघोइले
पानी निकारि औ पात्रमें भरि आंचमें जराइकै खुरचिलेइ सो
खरलमें डारित्रिफला क्वाथकी तीनभावना देइ॥९।१०॥ तबउसका
दशवांअंशकपूर मिलाइ फिरघोटै सो नेत्रमें आंजे से सब रोग दूर
हों नेत्र सुख पावैं ॥ ११ ॥ सर्वाक्षिरोगपरसौवीरअंजन ॥ सुरमा
सात बार खरल करि करि तपाइ त्रिफला क्वाथ में बुझाइ॥ १२॥

विचूर्णितं । अंजयेन्नयनेतेनप्रत्यहंचक्षुषोर्हितं १३ सर्वानक्षिवि-
कारांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः । गतदोपमयेताशु संपश्येत्सम्यगा
शुनत् १४ त्रिफलाभृङ्गशुंठीनांरसैस्तद्वन्नसर्पिषा । गोमूत्रमध्व-
जाक्षीरैःसिक्तोनागःप्रतापितः १५ तच्छलाकाभवत्येवसर्वान्नेत्रभ-
वान्गदान् । गतदोपमयेताशुसंपश्यन्सम्यगंभसि १६ प्रक्षाल्या
क्षपयोदोपंकार्यप्रत्यंजनंततः । नवानिर्गतदोषेक्षिणधावनंसंप्रयो
जयेत् १७ प्रत्यंजनंतीक्ष्णतप्तेनेत्रेचूर्णप्रसादनः । शुद्धेनागेद्रुते
तुल्यंशुद्धंसूतंविनिक्षिपेत् १८ कृष्णांजनंतयोस्तुल्यंसर्वमेकत्र
चूर्णयेत् । दशमांशेनकर्पूरंतस्मिंश्चूर्णेप्रदापयेत् १९ एतत्प्रत्यं
जनंनेत्रगदजिन्नयनामृतं । जयपालस्यमज्जानंभावयेन्निंवकद्र
वैः २० एकविंशतिवल्लंतज्जतोवर्तिंप्रकल्पयेत् । मनुष्यलालया
घृष्ट्वाततोनेत्रंतथांजयेत् २१ सर्पदंष्ट्रविषंजित्वासंजीवयतिमान

वैसेही सातबार स्त्रीके दूध में बुझाइ अति महीन पिसाइ नेत्रांजन करैसे सब नेत्ररोग दूर होइं यह नेत्रनको निःसंदेह हितकारक है ॥ १३ । १४ ॥ शीशशलाकाविधान॥ त्रिफलाक्वाथ भंगरारससोंठि क्वाथ इनकी पुट दिया शीशा गलाइगलाइ घी गोमूत्रसहत छग-रीदूध सबनमें सात सात बार बुझाइ शलाई बनाइ नेत्रमें करै से सब रोग दूरहों अतःपर और अंजनादिभी इससे लगाना भला है ॥ १५ ॥ प्रत्यंजनविधि ॥ जब शीश शलाका फेरने सेदोष दूरहोंके नेत्रसे आंसू गिरते हैं तिसके पीछे शीतल बड़े पात्र में जल भरि थिर बोरि उस पानी में आंखि खोलि देखैफिर नेत्रधोइ प्रत्यं-जन लगावै सो आगे कहेंगे ॥ १६ ॥ सदोषनेत्रपरनिषेध॥ जिसनेत्र में दोषकी है तौ नेत्र धुवावै क्योंकि तीक्ष्णअंजन कर नेत्र संतप्त हों तिसे प्रत्यंजन प्रसादन करै सो कहते हैं ॥ १७ ॥प्रत्यंजनचूर्ण ॥ शुद्ध शीशा गलाइ सम भाग शुद्ध पारादे तब दोभाग सुरमादे उतारि लेइ तब खरल करि दशवां अंश कपूरदे फिर घोटै इसेप्रत्यंजनकहैं इससे संपूर्ण नेत्ररोग नाश होते हैं औ वह आंखिको अमृतहै ॥ १८ । १९ ॥ सर्पविषनिवारणअंजन ॥ भीतरका अंकुर दूर किया जमालगोटा नींबूरस में इक्कीस पुट दे घोटि गोली बनाइ सर्प

वं। भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते।जातरोगाविनश्यंति तिमिराणितथैवच २२ शीतांबुपूरितमुखःप्रतिवासरंयःकालत्रये चनयनंद्वितयंजलेन । आसिंचतिध्रुवमसौनकदाचिदक्षिरोगव्यथाविधुरतांभजतेमनुष्यः २३ आयुर्वेदसमुद्रस्यगूढार्थमणिसंचयं। ज्ञात्वाकेश्चिद्बुधैस्तैस्तुकृताविविधसंहिता२४किंचिदर्थंततोनीत्वा कृतेयंसंहितामया।कृपाकटाक्षविक्षेपमस्यांकुर्वंतुसाधवः२५विविधगदार्तिदरिद्रनाशिनीयाहरिरवणीवकरोतियोगरत्नैः । विलसतु शार्ङ्गधरस्यसंहितसाकविहृदयेषुसरोजनिर्मलेषु २६ अल्पायुषामल्पधियामिदानींकुतःसमस्तःश्रुतिपाठशक्तिः। तदत्रयुक्तःप्रतिवीजमात्रमभ्यस्यतामात्महितंप्रयत्नात्२७॥इतित्रयोदशोध्यायः१३॥

इतिशार्ङ्गधरस्यतृतीयखण्डस्समाप्तः ॥

इसेकी आंखिमें आंजै तौ विपर्यात्ह्यो मनुष्य जियै ॥ २०।२१॥ भोजन करके हाथमें घसै और नेत्रों में लगावै तो नेत्रोंके तिमिरादि रोग नाश होवें ॥ २२ ॥ शीतलजलप्रकार ॥ जो मनुष्य नित प्रति तीन वेला शीतल जलसे कुल्ला किया करै औ मुख धोया करै औ नेत्रनको सींचा करै छींटे देवै वा पात्र में भरि नेत्र उन्मीलन किया करै उस मनुष्य को नेत्र बाधा कधी न होय ॥ २३ ॥ अथग्रंथप्रसंशा ॥ आयुर्वेद समुद्र के विषय गूढार्थ रूपी मणि संचित है तिनको अश्विनीकुमार अग्निवेशादिक मुनिन ने सम्यक् प्रकार स्वसंहिता शुद्ध करि राखा ॥ २४ ॥ किंचित् सारांश लै शार्ङ्गधर ने संचय करी इन्हैं साधुजन कृपाकरि देखैं ॥ २५ ॥ ग्रंथपाठफल ॥ जिनवैद्य कविनके निर्मल हृदयकमलमें व्याधादियोगरत्न विलास करैते शार्ङ्गधर संहिता लक्ष्मी इव धारण करैहैंकैसीलक्ष्मी हैं कि रोग ग्रसित दरिद्रिनके दरिद्रकोनाशकरतीहैं२६ ॥इस कलियुग ने मनुष्योंको आयु औ बुद्धि अल्प करदी इसकारण आयुर्वेद पढ़ने की शक्तिनहीं इसमें आत्मरक्षणार्थ इसआयुर्वेदबीजमात्र मेंअभ्यास करें ॥ २७ ॥ इतिशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डे जयपालकृतेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ इतिशार्ङ्गधरस्यतृतीयखण्डस्समाप्तः ॥

समाप्तोयंग्रन्थः ॥

——— ०० ———

नामकिताब

मिश्रितमाहात्म्य

वैद्यकभाषा

निघंटु
अमरविनोद
वैद्यजीवन
औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
अमृतसागर बड़ा
तथा छोटा
वैद्यमनोत्सव.

नाटक

प्रबोधचंद्रोदय
रामाभिषेक
आनन्दरघुनन्दन

वेदान्त

योगवाशिष्ठ
आनन्दाऽमृतवर्षिणी
सांख्यतत्वकौमुदी

काव्य

सूरसागर
कृष्णसागर
विश्रामसागर
प्रेमसागर
ब्रजविलासबड़ा वा छोटा
कृष्णप्रिया
विजयमुक्तावली
अनेकार्थ छन्दोर्णवपिङ्गल
कविकुलकल्पतरु
रसराज
सतसई मूल तथा सटीक
सभाविलास
तुलसीशब्दार्थ
भजनावली

नामकिताब

प्रेमरत्न
युगुलविनाम
चित्रचन्द्रिका
बारहमासाबल्देवप्रसाद
मनोहरलहरी
गंगालहरी
यमुनालहरी
जगद्विनोद
शृङ्गारबत्तीसी
पद्मावत

राग

रागप्रकाश
लावनी

क़िस्सावग़ैरह

नानार्थनौसंग्रहावली
ब्रह्मसार
शिवसिंहसरोज
भक्तमाल
इंद्रसभा
विक्रमविलास
बेतालपच्चीसी
पद्मावतीखण्ड
शुकबहत्तरी
बकावलीसुमन
चहारदरवेश
क़िस्साहातिमताई
अपूर्वकथा
क़िस्सागुलसनोवर
सहस्रजनीचरित्र
सिंहासनबत्तीसी
राविन्सनक्रूसोइतिहास
सीताहरण

नामकिताब

सतीविनाम

मुतफ़र्क़ात

शनिश्चर की कथा
ज्ञानमाला
गोपीचन्दभरतरी
कथाश्रीगंगाजीकी
अवधयात्रा
भरतरीगीत
दानलीला नागलीला
रामलीला द्वारकाप्रसाद कृत
दोहावली रत्नावली
गोकर्णमाहात्म्य
श्रीगोपालसहस्रनाम
कथासत्यनारायण
हनुमानबाहुक
जनकपच्चीसी
हरिहरसगुणनिर्गुणपदावली
बनयात्रा
कायस्थवर्णनिर्णय
विहारवृन्दावन
समरविहारवृन्दावन
कल्पभाष्य

दरसी

अक्षरावली
स्वयम्बोध
ज्ञानचालीसी
दोहावली
बालाबोध
विद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
किताबचंची
गणितकामधेनु
लीलावती

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
पटवारियोंकी पुस्तकें ४ भाग	मुहूर्त्तदीपक	रीडर नम्बर १
ज्योतिषभाषा	बृहज्जातकसटीक	रीडर नम्बर २
जातकचन्द्रिका	जातकालंकार	सीक्रेल
जातकालंकार	जातकाभरण	कालिंजर माहात्म्य
दैवज्ञाभरण	होरामकरन्द	सुधामन्दाकिनी
ज्ञानस्वरोदय	**संस्कृतउर्दू टीका सहित**	रामविनय शतक
रमलसार		नारीबोध
इन्द्रजाल	मनुस्मृति	प्रताप विनोद
संस्कृतकीपुस्तकें	विष्णुहारीत	सतीबिलास
लघुकौमुदी	महिम्नस्तोत्र	मनमौजचरित्र
सिद्धान्तचंद्रिका	व्रतार्क	भविष्योत्तरपुराण
अमरकोषप्रतीनोंकांड सटीक	याज्ञवल्क्यस्मृति	स्कन्दपु०का सेतुबन्धखण्ड
पञ्चमहायज्ञ	लघुचंद्रिका	मनोहर कहानी
निर्णयसिंधु	**संस्कृतभाषाटीका सहित**	भ्रमजालक नाटक
संग्रहशिरोमणि		सीताबनवास
भगवद्गीतासटीक		क़िस्सामर्द औरत
दुर्गापाठमूल	अमरकोष	नवीनसंग्रह
दुर्गापाठ सटीक	याज्ञवल्क्यस्मृति	सुदामाचरित्र
विष्णु भागवत	संध्यापद्धति	ज्ञानतरंग
अपराधभंजनस्तोत्र	व्रतार्क	सप्तशतिका
दुर्गास्तोत्र सटीक	भगवद्गीताटीकाह०बं०	विजयचंद्रिका
कायस्थकुलभास्कर	भगवद् गीताटीकाश्रा० गि०	रामायणबाल्मीकीय
कायस्थधर्मनिरूपण	गीतगोविन्द	भुवनेशभूषण
तथा छोटा	कथा सत्यनारायण	महाभारतभाषा सबलसिंह चौहान कृत
मथुरा सभा	परमार्थसार	
तुलसीतत्त्वभास्कर	पाराशरीसटीक	सुन्दरबिलास
रामबिवाहोत्सव	शीघ्रबोध सटीक	गीतरसिका
ज्योतिष	लघुजातक	कवित्तावलीरामायण सटीक
मुहूर्त्तगणपति	षट्पञ्चाशिका	इलाजुलगुरबा भाषा
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	सामुद्रिक	रसायनप्रकाश
मुहूर्त्तचिन्तामणि सटीक	**नवीनकिताबें**	रामचंद्रिकासटीक
मुहूर्त्तमार्त्तण्डसटीक	सौदागरलीला	बाराह पुराण

हंसराजनिदानम् ॥

कविवरहंसराजप्रणीतम्

माथुरदत्तरामकृतया हंसराजार्थबोधिन्या
टीकया सहितम्

यस्मिन्नाडीपरीक्षापूर्व्वक ज्वर, संग्रहणी, अर्श, भगन्दर
पाण्डुरोग, रक्तपित्त, राजयक्ष्मा, कास, श्वास, छर्दि
तृष्णा, मूर्च्छा, दाहादिरोगाणामतिबाहु-
ल्येनलक्षणकुलम्प्रदर्शितम्

यदिदंपुस्तकम् प्रथमतोमुम्बापुर्य्याम् मोहप्रदनाम्नि
यंत्रालये दत्तरामचतुर्वेदिनः प्रबन्धान्मुद्रितम्

मनुष्याणामनेकरोगलक्षणपरिज्ञानहेतवे

तदेवेदम्पुस्तकम्



लक्ष्मणपुरे

मुंशीनवलकिशोर यंत्रालये मुद्रितम् आश्विन शुक्ल
संवत् १९४० वै० तथा अक्टूबर
सन् १८८३ ई० ॥

विज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् सेप्टेम्बर सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचनेके लियेतैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखीहैं और उनका मोलभी बहुत किफ़ायत से घटक नियतहुआहै परंतु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको ब्योपार की इच्छाहो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	रामायण तुलसीकृत	गरुड़पुराण प्रेतकल्प
महाभारत	रामायण सटीक मय	ब्रह्मोत्तर खण्ड
१ पहिले हिस्सामें	मानसदीपिकाकोषआदि	मिश्रितमाहात्म्य
आदिपर्व, सभापर्व	तथाजिल्दबंधी	**वैद्यकभाषा**
बनपर्व	तथामोटेअक्षरोंकी	निघंटु
२ दूसरे हिस्सामें	मयेतसवीर व चोपक	अमरबिनोद
बिराटपर्व, उद्योगपर्व	रामायण तुलसीकृत	वैद्यजीवन
भीष्मपर्व, द्रोणपर्व	साताकांड	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
३ तीसरे हिस्सामें	१ बालकांड	अमृतसागर बड़ा
कर्णपर्व, शल्यपर्व	२ अयोध्याकांड	तथा छोटा
गदापर्व, सौप्तिकपर्व	३ आरण्यकांड	वैद्यमनोत्सव
ऐषिकपर्व, विशोकपर्व	४ किष्किन्धाकांड	**नाटक**
स्त्रीपर्व, शान्तिपर्वमें	५ सुन्दरकांड	प्रबोधचन्द्रोदय
राजधर्म, आपद्धर्म	६ लंकाकांड	रामाभिषेक
मोक्षधर्म	७ उत्तरकांड	आनन्द रघुनन्दन
४ चौथे हिस्सामें	रामायण शब्दार्थकोष	**वेदान्त**
शान्तिपर्व, दानधर्म	रामायण का इतिहास	योगबाशिष्ठ
अश्वमेध आश्रमबासिक पर्व	रामायणमानसदीपिका	आनन्दाऽमृतवर्षिणी
मौशलपर्वमहाप्रस्थानपर्व	रामायण कबितावली	सांख्यतत्वकौमुदी
स्वर्गारोहणपर्व	रामायणगीतावलीसटीक	पारसभाग
हरिबंशपर्व	बिनयपत्रिका बा० मो०	ज्ञानआभूषण
म०भा०पर्व अलेहदाभी हैं	बिनयपत्रिका बा०शि०	**काव्य**
रामायण रामबिलास	लिङ्गपुराण	सूरसागर
	बिष्णुपुराण	कृष्णसागर

सूचीपत्र

इति

भूमिका ॥

धन्यहै वह परमेश्वरजिस्की कृपासेसारेसंसारमेंकैसेकैसेविचित्रचरित्र होरहेहैं देखिये यह कैसी ईश्वरकी अद्भुत रचनाहै कि सृष्टि में अगणित जीवहैं परन्तु यहनहीं कि एकसे दूसरे की भ्रांति हो--इसी प्रकार से जितने पदार्थ सृष्टिमेंहैं हरएकके गुण दोष पृथक् पृथक् दिये हैं--देखियेबुद्धिमान महात्मा पुरुषोंने जीवोंकी रक्षा और क्लेश निवारण के निमित्त कैसे २ विचार कियेहैं--वैद्यक विद्यामें अनेकों प्रकारकेग्रन्थबनेहैं जिनके द्वारा औषधियों करके कैसाही रोगहो विधिपूर्वक सेवनसे तुरन्तहीलाभ होगा औषधियोंका तो फल प्रत्यक्षहै दृष्टान्तकी आवश्यकता नहीं ॥

प्रथम महात्माओंने जो ग्रन्थवैद्यक विद्याके बनाये वह संस्कृत में हैं जो इस समय विशेषतर उपयोगी नहीं होते इस कारण वर्त्तमानकाल के अनुसार विद्वान् सज्जनोंने उन ग्रन्थोंपर भाषा टीकाबनानेकाआरम्भ किया है और बहुतसे ग्रन्थोंमें भाषा टीका बनभीगईहै ॥

हम अतीव प्रसन्नतापूर्वक इसबातको प्रकट करतेहैं कि एकग्रन्थहंसराजनिदान जो भाषाटीकासहितहै अवलोकन करने योग्य है--एकतोइस कविकी कविता श्लोकबद्ध अति अनूठीहै और श्लोक ऐसे ललितहैं कि जिनके पढ़ने और श्रवणमात्रहीसे चित्तको आनन्द होताहै--दूसरेयहग्रन्थ बहुत बड़ाभी नहीं है कि जिसके पढ़ने के लिये अवस्था का एक भाग आवश्यकहो--और बहुत छोटाभीनहीं है इसीसे बहुधालोगइसकोपसन्द करतेहैं कि केवल इसीके कण्ठाग्र करनेसे छोटे और बड़े सम्पूर्ण अपने अभीष्ट फलको पहुंचतेहैं ॥

इन सब गुणोंके होतेहुये इस ग्रन्थमें हंसराजार्थ बोधिनीटीका भाषा में ऐसी हुईहै किमानोअमृतकुण्ड जो अति कठिन स्थल है उसके लाने लिये रेलगाड़ी बनगई ॥

प्रथमतो यहग्रन्थ केवल संस्कृतजाननेवालोंहीकेलियेफलदायकथाअब भाषा जानने वाले वैद्यलोगभी उसीप्रकारअपना अर्त्थ प्राप्त करसक्ते हैं ॥

श्रीमन्महामहोपाध्याय श्रीवर पण्डित दत्तराम चौबे जीने इस ग्रन्थ की टीका भाषा में ऐसी बनाईहै मानो प्रथम ग्रन्थकार महात्माने अवतार धारणकर संस्कृतका भाषारूप किया ॥

प्रथम यह अपूर्व्व ग्रन्थ बम्बई मोहप्रदयन्त्रालय में श्रीउक्त पण्डित दत्तरामके प्रबन्धसे छपाथा अब मुंशी वंशीधरसाहब मुहतमिममुम्बउल् अलूमकी आज्ञानुसार इस छापेखानेमेंपुष्टाक्षरों में छापागया है जिन सज्जनोंको आवश्यकताहो क़ीमतभेजकर मंगवालेवें—इसछापेखानेकी हरएक दूकानें देहली व कानपूरआदिमेंभीयहग्रन्थमिलेगा ॥

नवलकिशोर



श्री गणेशाय नमः ॥

हंसराजनिदानम् ॥



अथ हंसराज कवि हंसराज गुन्थके कर्त्ता गुन्थके आदि में शिष्टाचार परिपालनके निमित्त और गुन्थकी निर्विघ्न समापृति के निमित्त भले प्रकार उचित अपना इष्टदेव श्रीबालाजी तिनकाध्यानपूर्वक स्रग्धराछन्द करके मंगलाचरण करते हैं ॥

ध्यायेति

ध्यायेवालाम्प्रभातेविकसितवदनाम्फुल्लराजीवनेत्रांमुक्तावैदूर्यगर्भैरुचिरकनकजैर्भूषणैर्भूषितांगीम्॥ विद्युत्कोटिच्छटाभांपरिमलवहुलांदिव्यसिंहासनस्थां गीर्देवीतस्यदासीभवतिसुरवनंनन्दनंकेलिगेहम् १ धत्तेतेचरणांवुजंस्वहृदयेमातर्नरोयोऽनिशंतस्याऽऽस्येपरिनर्त्ततेप्रतिदिनंवाग्गद्यपद्यात्मिका ॥ लक्ष्मीस्तस्यगृहेस्थिताकरतलेमुक्तिःस्थिताःसिद्धयो द्वारेतस्यविभूषिताश्चनिधयस्तिष्ठन्तिनित्यंमुदा २ ॥

हम प्रातसमय श्री बालाका ध्यान करते हैं.कैसीहै बाला कि प्रफुल्लित है मुख फूले कमल के समान नेत्र मोती और वैदूर्य्यमणि करके जटित सुन्दर सुवर्णके भूषण करके भूषितहै देह कोटि बिजलीके समान प्रकाश बहुतसी सुगन्धयुक्त देह श्रेष्ठ सिंहासनपर स्थित ऐसी बालाका जो मनुष्य ध्यान करता है तिसपुरुषकी सरस्वती दासीहो और देवतोंका नन्दनबन क्रीड़ाकास्थान हो १ हेमात। जो मनुष्य तेरे चरणकमलोंका निरन्तर अपने हृदयमें ध्यानकरताहै तिसके मुखमें गद्य पद्य रचना रूपी सरस्वती नित्य नाचती है उसके घरमें लक्ष्मी स्थिररहे मोक्ष उसकेहाथ में स्थिररहे अष्टसिद्धि और नवनिधि तिसके द्वारपर नित्य प्रसन्नतापूर्वक शोभायमान स्थिररहैं इस श्लोकका छन्द शार्दूल विक्रीडित है २ ॥

जगन्मातर्नमस्तेस्तुवरदेमंगलेशिवे॥ ग्रन्थकर्त्तुम्प्रवृत्तस्यसहायंकुरुमेऽनिशम् ३ अहमपिजगदंवेदृश्यतांदिव्यदृष्ट्यानभवतितवहानिःक्वापिदृष्टेःकदाचित्॥ स्वजनहितपरायाःशंकरस्यप्रियायाः अमृतरसहृदिन्याहंसनाथोभवामि ४ भिषक्चक्रचित्तोत्सवंजाड्यनाशंकरिष्याम्यऽहंवालवोधायशास्त्रं॥ नमस्कृत्यधन्वंतरिंवैद्यराज्यंजगद्रोगविध्वंसनंस्वेननाम्ना ५॥

हे जगन्मात। हेवरदे। हेमंगले। हेशिवे। तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै ग्रन्थ करनेको प्रवृत्त मेरी निरन्तर सहायकरो २ हेजगदम्बे। मुझे दिव्य दृष्टिसे देख तेरी दृष्टिकी कभी कहीं हानि नहीं हो कैसी तुमहो कि अपनेभक्त जनके हितमें तत्परहो और श्रीशंकरकी प्यारीहो अमृत रसकी सरोवरी हो मैं तुम्हारी दृष्टीके करने से सनाथ होऊंगा इस श्लोकका मालिनी नाम छन्दहै ४ मै वैद्यन के राजा धन्वन्तरि को नमस्कार करके बालकन के बोधके अर्थ जगत्के रोगन का नाशक वैद्य समुदायके चित्तको उत्सव कारक मूर्खता का नाशक अपने नाम करके अर्थात् हंसराज नाम करके विख्यात ग्रन्थको करताहूं इस श्लोकके छन्दकानाम भुजंगप्रयातहै ५॥

ब्रह्मेशोगरुडध्वजोभृगुसुतोभारद्वाजोगौतमोहारीतश्चरकोत्रिकःसुरगुरुर्धन्वंतरिर्माधवः॥ नासत्योनकुलःपराशरमुनिर्दामोदरो वाग्भटोयेन्येवैद्यविशारदामुनिवरास्तेभ्योपरेभ्योनमः ६ आत्रेयधन्वंतरिशुश्रुतानांनासत्यहारीतकमाधवानां॥ सुषेणदामोदरवाग्भटानां दस्त्रस्वयंभूचरकादिकानाम् ७॥

ब्रह्मा शिव विष्णु शुक्र भरद्वाज गौतम हारीत चरक अत्रि वृहस्पति धन्वंतरि माधव अश्विनीकुमार नकुल पराशरमुनिदामोदर वाग्भट और जे वैद्यनमें चतुर मुनीनमें श्रेष्ठ तिन सबनके अर्थ नमस्कार हैं ६॥ आत्रेय धन्वंतरि शुश्रुत अश्विनीकुमार हारीत माधव सुषेण दामोदर वाग्भट सनत्कुमार चरकादिकन का ७॥

एषांसमालोक्यमतंमुहुर्मुहुर्ग्रंथोमनोज्ञःक्रियतेमयाऽधुना॥ पद्यैरदोषैरचितोल्पमेधसांज्ञानायनूनंभिषजात्ममानिनां ८ दर्शन

स्पर्शनःप्रश्नैरोगीणोरोगनिश्चयं ॥ आदौज्ञात्वाततःकुर्याच्चिकित्सांभिषजांवरः ९ देशंबलंवयःकालं गुर्विणीगदमौषधं ॥ वृद्धवैद्यमतंज्ञात्वा चिकित्सामारभेत्ततः १० ॥

मतवारवार देखकर वैद्य ऐसे अपने आपको माने अल्पबुद्धीवारे न को निश्चय ज्ञानके अर्थ दोषकरकेरहित जे पद तिनकरके रचितमनको प्रसन्न करनेवारा अबमें ग्रन्थरचताहूं ८ देखना स्पर्श करना पूछना इन तीन तरहसे पहिले रोगीके रोगको निश्चय करके वैद्योंमें श्रेष्ठहै सो रोगी की चिकित्सा करै ९ देशबल अवस्था कालगर्भिणी का रोग औषध और वृद्ध वैद्य के मतकोजानके फेर चिकित्सा करै १० ॥

(अथनाडीलक्षणानि) करांगुष्ठमूलोद्भवाप्राणभूतान्नृणांरागिणांसाक्षिणीसौख्यभाजां ॥ जलौकोरगानांगतिंनाडिकायाविधत्ते निरुक्ताचवातात्मिकासा ११ विधत्तेगतिंकाकमंडूकयोर्यामुनीन्द्रैर्निरुक्ताचपित्तात्मिकासा ॥ शिराहंसपारावतानांगतिंयादधाति स्थिराश्लेष्मकोपान्वितासा १२ नाडीचंचलतांकचिच्छिथिलतां शैत्यंकचिदुष्णतांधत्तेमंदगतिंद्विदोषकुपितास्थानच्युतिंक्षीणतां॥ वक्राकारगतिंकचिद्वितनुते प्राप्नोतिकंपंकचिद्वैकल्यंविदधातियातिकुपितामासान्तरेसानिशं १३ ॥

प्रथम नाड़ी परीक्षा लिखै हैं हाथके अँगुठा के निकट रोगी मनुष्य के सुख दुःखकी साक्षी देनवारी सौख्यभाजा नाड़ी जो जोंक वा सर्प कीसी चाल चले तौ बातकी नाड़ी कहिये ११ और जो नाड़ी काक मेड़का की सी चाल चले तोमुनियोंने पित्तकी नाड़ी कहीहै और जो हंस कबूतर कीसी चाल चलै तो कफकोप की नाड़ी कहिये १२ द्विदोष कोप की नाड़ी चञ्चल कभी शिथिल कभी शीतल कभी गरम और मंदविकलताको प्राप्तभई गमन करैहै और स्थानको छोड़देय और बहुत धीरे २ चलै और कभी टेढ़ीचलै कभीकांपै बिकलताको प्राप्त भई ऐसी नाड़ी एक महीनेके भीतर रोगीको मारडारै १३ ॥

त्रिदोषान्वितानाडिकाचंचलोष्णा स्फुरद्वित्रिरूपात्वरायुग्विभिन्ना ॥ गतिंतैत्तरीयांविधत्तेतिकंपंक्षणंक्षीणतांयातिमूर्च्छं

जगन्मातर्नमस्तेऽस्तुवरदेमंगलेशिवे॥ ग्रन्थकर्त्तुम्प्रवृत्तस्यसहायंकुरुमेऽनिशम् ३ अहमपिजगदंबेदृश्यतांदिव्यदृष्ट्यानभवतितवहानिःक्वापिदृष्टेःकदाचित्॥ स्वजनहितपरायाःशंकरस्यप्रियायाः अमृतरसहृदिन्याहंसनाथोभवामि ४ भिषक्चक्रचित्तोत्सवंजाड्यनाशंकरिष्याम्यऽहंबालबोधायशास्त्रं॥ नमस्कृत्यधन्वंतरिंवैद्यराज्यंजगद्रोगविध्वंसनंस्वेननाम्ना ५॥

हे जगन्मात। हे वरदे। हे मंगले। हे शिवे। तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै ग्रन्थ करनेको प्रवृत्त मेरी निरन्तर सहायकरो ३ हे जगदम्बे। मुझे दिव्य दृष्टिसे देख तेरी दृष्टिकी कभी कहीं हानि नहीं हो कैसी तुमहो कि अपनेभक्त जनके हितमें तत्परहो और श्रीशंकरकी प्यारीहो अमृत रसकी सरोवरी हो मैं तुम्हारी दृष्टीके करने से सनाथ होऊंगा इस श्लोकका मालिनी नाम छन्दहै ४ म वैद्यन के राजा धन्वन्तरि को नमस्कार करके बालकन के बोधके अर्थ जगत्के रोगन का नाशक बैद्य समुदायके चित्तको उत्सव कारक मूर्खता का नाशक अपने नाम करके अर्थात् हंसराज नाम करके विख्यात ग्रन्थको करताहूं इस श्लोकके छन्दकानाम भुजंगप्रयातहै ५॥

ब्रह्मेशोगरुडध्वजोभृगुसुतोभारद्वाजोगौतमोहारीतश्चरकोत्रिकःसुरगुरुर्धन्वंतरिर्माधवः॥ नासत्योनकुलःपराशरमुनिर्दामोदरोवाग्भटोयेन्येवैद्यविशारदामुनिवरास्तेभ्योपरेभ्योनमः ६ आत्रेयधन्वंतरिशुश्रुतानांनासत्यहारीतकमाधवानां॥ सुषेणदामोदरवाग्भटानांदस्रस्वयंभूचरकादिकानाम् ७॥

ब्रह्मा शिव बिष्णु शुक्र भरद्वाज गौतम हारीत चरक अत्रि बृहस्पति धन्वंतरि माधव अश्विनीकुमार नकुल पराशरमुनिदामोदर वाग्भट और जे वैद्यनमें चतुर मुनीनमें श्रेष्ठ तिन सबनके अर्थ नमस्कार हैं ६॥ आत्रेय धन्वंतरि शुश्रुत अश्विनीकुमार हारीत माधव सुषेण दामोदर वाग्भट सनत्कुमार चरकादिकन का ७॥

एषांसमालोक्यमतंमुहुर्मुहुर्ग्रंथोमनोज्ञःक्रियतेमयाऽधुना॥ पद्यैरदोषैरचितोल्पमेधसांज्ञानायनूनंभिषजात्ममानिनां ८ दर्शन

स्पर्शनःप्रश्नैरोगिणोरोगनिश्चयं ॥ आदौज्ञात्वाततःकुर्याच्चिकित्सांभिषजांवरः ९ देशंवलंवयःकालं गुर्विणीगदमौषधं॥ वृद्धवैद्यमतंज्ञात्वाचिकित्सामारभेत्ततः १० ॥

मतशारवार देखकर वैद्य ऐसेअपने आपेको माने अल्पबुद्धीवारे न को निश्चय ज्ञानके अर्थ दोयकरकेरहित जे पद्धतिनकरके रचितमनको प्रसन्न करनेवारा अबमैं ग्रन्थरचताहूं ८ देखना स्पर्श करना पूछना इन तीन तरहसे पहिले रोगीके रोगको निश्चय करके वैद्योंमें श्रेष्ठहै सो रोगी की चिकित्सा करै ९ देशबल अवस्था कालगर्भिणी का रोग औषध और वृद्ध वैद्य के मतकोजानके फेर चिकित्सा करै १० ॥

(अथनाडीलक्षणानि) करांगुष्ठमूलोद्भवाप्राणभूतान्नृणांरोगिणांसाक्षिणीसौख्यभाजां ॥ जलौकोरगानांगतिंनाडिकायाविधत्ते निरुक्ताचवातात्मिकासा ११ विधत्तेगतिंकाकमंडूकयोर्यामुनीन्द्रैर्निरुक्ताचपित्तात्मिकासा ॥ शिराहंसपारावतानांगतिंयादधाति स्थिराश्लेष्मकोपान्वितासा १२ नाडीचंचलतांक्कचिच्छिथिलतां शैत्यंक्कचिदुष्णतांधत्तेमंदगतिंद्विदोषकुपितास्थानच्युतिंक्षीणतां॥ वक्राकारगतिंक्कचिद्वितनुते प्राप्नोतिकंपंक्कचिद्वैकल्यंविदधातिया-तिकुपितामासान्तरेसानिशं १३ ॥

प्रथम नाड़ी परीक्षा लिखै हैं हाथके अँगुठा के निकट रोगी मनुष्य के सुख दुःखकी साक्षी देनवारी सौख्यभाजा नाड़ी जो जोंक वा सर्प कीसी चाल चले तौ बातकी नाड़ी कहिये ११ और जो नाड़ी काक मेड़-का की सी चाल चले तोमुनियोंने पित्तकी नाड़ी कहीहै और जो हंस कबूतर कीसी चाल चलै तो कफकोप की नाड़ी कहिये १२ द्विदोष कोप की नाड़ी चञ्चल कभी शिथिल कभी शीतल कभी गरम और मंदविक-लताको प्राप्तभई गमन करैहै और स्थानको छोड़दय और बहुत धीरे २ चलै और कभी टेढ़ीचलै कभीकांपै बिकलताको प्राप्त भई ऐसी नाड़ी एक महीनेके भीतर रोगीको मारडारै १३ ॥

त्रिदोषान्वितानाडिकाचंचलोष्णा स्फुरद्वित्रिरूपात्वरायुग्विभिन्ना ॥ गतिंतैत्तरीयांविधत्तेतिकंपंक्षणंक्षीणतांयातिमूर्च्छे

क्वचित्सा १४ शिरायस्यवातार्दितापित्तदग्धाकफेनातिकोपेन नाडीकृतासा ॥ गदीसोल्पकालेनमृत्योर्विदीर्णेमुखेयास्यतेदंतदंष्ट्राभिर्कीर्णे १५ ॥

संनिपातकी नाड़ी चपल और गरम और दोतीन प्रकारकी चाल चलै वहनाड़ी जल्दी आयुकी काटनेवारी जाननी और तीतरकीसी चाल चलै और बहुतकांपै और मंदचलै और कभी चलने से रहिजाय १४ जिसरोगीकी नाड़ी वात करके दुखित पित्त करके दग्ध और कफके कोप करके खेदितहो वहरोगी थोड़े कालमें मौतके खुलेहुये दंतडाढ़ा करके युक्त ऐसे मुखमें जायगा अर्थात् मरैगा १५ ॥

शिरायस्यसूक्ष्माऽतिशीतान्वितावासरोगीनजीवेत्प्रयत्नैःकदाचित् ॥ चलद्द्वित्रिरूपात्रिदोषान्वितावासरोगीयमस्यालयेशीघ्रगंता १६ नाडीशीघ्रगतिंधत्तेज्वरकोपेनसोष्णताम् ॥ रक्ताधिक्येनसाकोष्णागुर्वीवेगवतीभवेत् १७ सुखिनोमनुजस्यशिरापरितःस्थिरतांसमुपैतिदधातिबलं ॥ क्षुधितस्यभवेच्चपलासततंतृपितस्यशिराव्रजतिस्थिरताम् १८ ॥

जिस रोगीकी नाड़ी अतिमंदचलै और शीतकरके युक्तहो वोरोगीयत्नोंके करनेसे नहीं जीवै औरजिस रोगीकी नाड़ी त्रिदोषयुक्त दो तीन प्रकारकी चलै वोरोगी जल्दी यमराज के घरपहुंचेगा १६ ज्वरके कोपसे नाड़ी गरम और जल्दी चलतीहै और रुधिर के बिगड़नेकी नाड़ी गरम और भारी तथा जल्दी चलती है १७ सुखी मनुष्य की नाड़ी बल युक्त औरस्थिर चलती है औरक्षुधित मनुष्यकी नाड़ी चपल और भोजन करेकीनाड़ी स्थिर चलतीहै इसश्लोकके छन्दका नाम तोटक वृत्तहै १८ ॥

मोहेनकामेनभयेनचिंतयाक्रोधेनलोभेनबहुश्रमेणवा ॥ मंदाग्निनोद्वेगतरेणपीडयास्यान्नाडिकामन्दतरानृणाम्भृशम् १९ इतिहंसराजनिदानेनाडीलक्षणम् ॥

मोहसे कामसे भयसे चिन्तासे क्रोधसे लोभसेबहुतपरिश्रमसेमंदाग्निसे उद्वेगसे पीड़ासे मनुष्यो की नाड़ी निरंतर मंदचलतीहै १९ ॥ इतिश्री हंसराजार्थबोधिन्यांनाड़ीलक्षणम् ॥

दोषैर्विनानरोगाःस्युर्नदोषाःहेतुभिर्विना ॥ हेतवःकर्मसम्भूतास्तान्हेतून्कथयाम्यऽहम् १ (अथवातकोपकारकवस्तु) प्राणापानगतेर्विवातकरणैःक्षुन्मूत्रतृट्रोधनैः व्यायामव्रतशोकशीतसलिलस्नानैःस्त्रियासेवनैः ॥ रूक्षाम्लामिषमिष्टपिष्टकटुकैरत्यंवुपानाशनैःवर्षाशीतशरत्सुचैत्रसमयेवातस्यकोपोभवेत् २ (अथपित्तकोपकारकवस्तु) तीक्ष्णोष्णाम्लविदाहिशाककटुकैःक्षारान्नपित्ताशनैर्व्यायामाध्वपरिश्रमैर्दिनपतेरातापसंसेवनैः॥ क्रोधोष्णोत्प्लवनैःकषायमदिरापानैर्निशाजागरैर्वर्षाग्रीष्मशरत्सुमध्यदिवसेपित्तस्यकोपोभवेत् ३ ॥

बिना दोषों के रोग नहीं होते और बिना हेतुओं के दोष नहीं होते और हेतु कर्मसे पैदा होतेहैं सो उन्हीं हेतुओं को मैं कहताहूं १ प्राण और अपान पवनकी गति बिगड़ने से भूंख प्यास मूत्र इनके रोकने से दण्ड कसरतके करनेसे व्रतके करनेसे शोचसे शीतल जलके नहाने से बहुत स्त्रीके संगसे रूखा खट्टा मीठा पिसा कडुआ ऐसे पदार्थ के भोजन से बहुत जल और भोजन के करनेसे वर्षाऋतु शरदऋतु शीतकाल और चैत्रके महीनेमें बात कुपित होतीहै २ तीक्ष्णमिरच आदि गरम खट्टा दाहका करनेवाला पदार्थ शाक कडुआ खार मिलाअन्न और पित्तकारक ऐसेभोजनके करनेसे दण्डकसरतके करनेसे रास्ताके चलनेसे परिश्रमके करनेसे घाममें रहनेसे क्रोधसे गरमीसे खेलनेकूदनेसे कसैली बस्त मद्य केपीनेसे रात्रिमेंजगनेसे वर्षाऋतु शरदऋतु मध्याह्नमेंपित्तकोपकरताहै३॥

क्षारक्षीरविकारशाकमधुरैः पानाशनातिक्रमैर्मूलस्निग्धगरिष्ठकंदपिसितैःशीताम्लमाषाशनैः॥ नाशानेत्रमुखेषुधूमरजसोपातैर्महाघोषणैः श्लेष्माकोपतरंदधातिशिशिरेहेमंतकेमाधवे ४ ॥

खार दूध का पदार्थ शाक मिष्ट भूख प्यासके समयको उल्लंघन करने से कंद चिकना गरिष्ट मूल पदार्थ पिसा अन्न शीतल खट्टा उर्द इनके खानेसे नाक नेत्र मुख इनमें धुंयें के और रजके गिरनेसे पुकारने से शिशिरऋतु हेमन्तऋतु वैशाख में कफ कोप करताहै ४ ॥

ज्वराणांघोररूपाणां यानिचिन्हानितान्यहं॥वक्ष्येऽज्ञानेनतेनैव

रोगाःसंज्ञायतेवुधैः ५(तस्यप्रागुत्पत्तिमाह) दक्षायमानसंक्रुद्धरुद्र निश्वाससम्भवः॥ ज्वरोऽष्टधाप्टथकूद्वंद्व संघातागन्तुजःस्मृतः १ ॥ (ज्वरस्यसंप्राप्तिमाह) मिथ्याहारविहारस्य दोषाह्यामाशयाश्र याः ॥वहिर्निरस्यकोष्टाग्निंज्वरदास्युरसानुगाः २(ज्वरके पूर्वरूप को कहेंहैं) तापःशरीरेगुरुताऽलसत्वंसर्वांगपीडाविरसत्वमास्ये॥ शीतःश्रमोवीर्यवलस्यहानिः ज्वराग्रचिन्हानिवदंतिसंतः ६ (वात ज्वरकेलक्षण) जृम्भोद्गारतृषाःकषायवदनंनिद्राविनाशोऽरुचिः श्वासोरुक्षवपुर्भ्रमोविकलताशोषोमुखेऽक्षिश्रवः॥ हिक्काध्मानविव र्णतांगचलनंरोमोद्गमोंगव्यथा हल्लासोंत्रविगुंजनंभवतितद्वात ज्वरेलक्षणं ७ ॥

घोर रूप ज्वरोंके चिन्ह हैं तिन्हैं मैं कहता हूं जिन चिन्हअर्थात् लक्षणों करके पंडितोंकरके रोग सब जानेजायँ ५ दक्षके करेहुये तिरस्कार से क्रोधित शिवतिनकी श्वास से उत्पन्न हुआ जो ज्वरसो आठ प्रकार का है १ बातसे२ पित्त से ३ कफसे ४ बात पित्तसे ५ बातकफसे ६ पित्त कफसे ७ बातपित्तकफसे ८ आगंतुजसे १ मनुष्योंके मिथ्या आहार और मिथ्या विहार से आमाशयमें रहते जो बात पित्त कफसो आमाशयको बिगाड़ करके फेररसको बिगाड़ैं और कोठे की जो अग्नि उसकी गरमी कोबाहर निकाल देहकोतत्ता करदेवै उसीको ज्वरकहतेहैं २ ॥इतिमाधवकरः ॥ शरीर मेंतप तथाशरीरका भारीपना आलस्य और सब शरीरमें हड़कलमुखमें स्वाद न रहै शीतका लगना अनायास श्रममालूम हो वीर्य वलकानाश होना ये चिन्हज्वरके पूर्व होते हैं ६ जँभाई डकार तथा प्यास का लगना मुखका कडुआहोना नींदका न आना अरुचि श्वास शरीरकारूखापन भ्रमतथाशरीरमें वेकली मुखसूखै आंखसे आंसूका पड़ना हिचकी आनापेट फूलनाशरीरकाओरहीबर्ण होजाना अंगकाफड़कनारोमांचकाहोना शरीर में व्यथासखी उलटी का आना आंतों का बोलना ये लक्षण बातज्वर में होतेहैं ७॥

(पित्तज्वरकेलक्षण) हृत्कंठोष्ठकरांघ्रिदाहमरतिंस्फोटंतृषासं भ्रमं मूर्च्छानंश्वसनंमुखेकटुकतांमूर्च्छामऽतीसारकं॥ हृत्कंपंनयने

रुग्गोविकलतांशीतेरुचिंशोषणं खेदंदेहगतःकरोतिकुपितःपित्तज्व रोन्तर्व्यथाम् ८ (श्लेष्मज्वरलक्षणं) स्तैमित्यंवमनंजडत्वमलसं निष्ठीवनंगौरवं माधुर्यंवदनेतनौमलिनतांस्वेदंचरोमोद्गमं ॥ कंठे घुर्घुरतांचपीतनयनंनिद्रांत्वचिस्निग्धतां काशंशीर्षरुजंकरोतिविक लंश्लेष्मज्वरोङ्गव्यथाम् ९ (बातपित्तज्वर) भ्रमोरोमहर्षोरुचिः श्वांसकासौतृषांगेषुदाहःशिरोर्तिर्वमित्वं ॥ विनिद्रांगपीडातिशो षोल्पमूर्च्छाज्वरेवातपित्तोद्भवेचिन्हमेतत् १० ॥

हृदय कंठ ओठहाथपांय इनमें दाहहोना इच्छाकानाश हड़कलकाहोना प्यास भ्रमगरमी श्वास कडुआ मुख-मूर्च्छा दस्त हृदयमें कंप नेत्र लाल देहमें बेकली शीतलता का प्यारा लगना मुखसूखे खेदका होना अन्तःकर्ण में दुःख येलक्षण कुपित पित्तज्वर देहमें करता है ८ शरीरगीले कपड़े सेपोंछे सरीखा मालूमहो उलटी का होना शरीरका जकड़जाना आलस्य कफका थूकना देहकाभारीहोना मुखमीठाहो देहमैला पसीनेका आना रोंआं खड़ाहोना कंठमें घरघर शब्दहोना कुछ पीलाईलियेनेत्रहों निद्राका आना त्वचा चिकनाई लिये होय खांसी शिरमें दर्द ये लक्षण कफज्वरके हैं ९ भ्रम रोमका खड़ाहोना अरुचि श्वास खांसी प्यास देहमें दाह शिरमेंदर्द वमन निद्राका न आनादेहमें पीड़ा अत्यंत मखका सूखना मूर्च्छाकाआना ये बात पित्तज्वरके लक्षण हैं १० ॥

(बातकफज्वर) स्तैमित्यंगुरुतारुचिर्विकलतातंद्रापिपासा लसं कासोङ्गस्फुटतावमिःश्वसनताशोथोमुखेलिप्तता । स्वेदःपर्व भिदारतिश्चजडतारोमोद्गमःशीततां वातश्लेष्मसमुद्भवस्यकथितं चिन्हंज्वरस्याऽऽर्षिभिः ११ ॥

शरीर गीले कपड़े से पोंछे समान मालूम पड़े तथा शरीरका भारीपन अरुचि बेकली तंद्रा प्यास आलकस खांसी अंगों का फड़कना रद श्वास सूजन कफसे लिहसामुख पसीना गांठों में दर्द चैन न पड़े जड़पना रो- मांच शीत लगना पुराने ऋषियोंने बात कफ ज्वरके लक्षणकहे हैं ११ ॥

(पित्तकफज्वर) तिक्तास्योरुचिताकफस्यवदनेलेपोमुहुःशीत तातंद्रासंधिषुवेदनाचहृदयेदाहःपिपासाभ्रमः ॥ कासःश्वासतर

स्तनोमलिनतास्वेदोवमिर्मोहता चिन्हंपित्तकफज्वरे मुनिवरैः संकीर्त्तितंपूर्वजैः १२ (तेरहसन्निपातोंकेनाम) संधिकश्चांतकश्चैव रुग्दाहश्चित्तविभ्रमः ॥ शीताङ्गस्तंद्रिकःप्रोक्तः कंठकुब्जश्चकर्णकः ॥ विख्यातोभुग्ननेत्रश्च रक्तष्ठीवीप्रलापकः । जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश ॥ इतिसंगृहीतपाठः (तेषांमर्यादा) संधिकेवासरासप्तश्चांतकेदशवासराः । रुग्दाहेविंशतिर्ज्ञेयावह्न्यष्टौचित्तविभ्रमे॥पक्षमेकंतुशीतांग स्तंद्रिकेपंचविंशतिः । विज्ञेयावासराश्चैव कण्ठकुब्जेत्रयोदशः ॥ कर्णकेचत्रयोमासाः भुग्ननेत्रेदिनाष्टकम् । रक्तष्ठीविदशाहानि चतुर्दशप्रलापके ॥ जिह्वकेषोडशाहानिकथाभिन्याससंज्ञको।परमायुरिदंप्रोक्तंम्रियतेतत्क्षणादपि॥

कड़ुआ मुख अरुचि मुख कफसे लिहसा बार २ जाड़ा गरमी का लगना तन्द्रा संधि में पीड़ा हृदय में दाह प्यास भ्रम खांसी श्वास का जोर देह में मलिनता स्वेद वमन मोह ये लक्षण पहिले मुनीश्वरों ने पित्त कफ ज्वरके कहेहैं १२ ॥ १ संधिक २ अंतक ३ रुग्दाह ४ चित्तविभ्रम ५ शीतांग ६ तन्द्रिक ७ कंठकुब्ज ८ कर्णक ९ भुग्ननेत्र १० रक्तष्ठीवी ११ प्रलापक १२ जिह्वक १३ अभिन्यास ये तेरहसन्निपातहैं (तेरहोंसन्निपातोंकी अवधि) संधिककी ७ दिनकी अन्तक की १० दिन रुग्दाहकी २० दिन चित विभ्रम की २४ दिन शीतांग की १५ दिन तंद्रिक की २५ दिन कंठकुब्जकी १३ दिन कर्णककी ९० दिन भुग्ननेत्र की ८ दिन रक्तष्ठीवी की १० दिन प्रलापक के १४ दिन जिह्वकके १६ दिन अभिन्यासके १६ दिन कहेहैं यह सन्निपातों की परमावधि कहीहै परन्तु तत्काल भी रोगी मरजाता है ये श्लोक संगृहीत हैं ॥

(तेरहसन्निपातमें साध्यासाध्यवि०) संधिकस्तन्द्रिकश्चैव कर्णकःकंठकुब्जकः । जिह्वकश्चित्तविभ्रंशःषट्साध्याःसप्तमारकाः संगृहीतपाठः ॥

संधिक तंद्रिक कर्णक कंठकुब्ज जिह्वक चित्तविभ्रंश ये ६ साध्य हैं बाकी सात असाध्य हैं ॥

(संधिकसंनिपातके लक्षण) त्रिदोषोत्थितेसंधिकेसन्निपाते भवेत्संधिपीडाऽरुग्यशोषोथशूलं ॥ भ्रमोवीर्यनिद्राविनाशोतितंद्रा पिपासौष्टपाकोरुचिर्दाहकासौ १३ (अंतकसन्निपातकेलक्षण) करोत्यंगभंगंभ्रमंवेपथुंयःशिरःकंपनंकंडुरंरोदनंच ॥ प्रलापंसतापं चहिक्कामसाध्यंबुधत्वंविजानीहितंचांतकाख्यं १४ (चित्तविभ्रमसंनिपातकेलक्षण) योमोहाद्रुदतिक्वचिद्विकलतांप्राप्नोतिशोकं क्वचित्फूत्कारंकुरुतेदधातिमदतांगीतंक्वचिद्गायते ॥ संतापंसहते मुदंवितनुतेवाचंभ्रमाद्भाषते तंचित्तभ्रमसन्निपातमनिशंजानीहि दुस्साधनं १५ ॥

तीनों दोषोंसे उत्पन्न हुआ जो संधिक सन्निपात तिसके ये लक्षण हैं सन्धीनमें दर्द मुखकासूखना शूल भ्रमवीर्य और निद्राका नाश तंद्रा प्यास ओठोंका पकना अरुचि दाह और खांसी १३ अंगोंका टूटना भ्रम कम्प और शिरका हिलना खाज तथा रोना वाहियातबकना संताप हिचकीका आना जिसमें ये लक्षण हों उसको हेवैद्य तू असाध्य अंतक सन्निपात जान १४ जो मोहसे रोवै कभी बिकलता को प्राप्त हो कभी शोचकरै कभीफूत्कार करे कभी मस्तपने को प्राप्तहो गीतगावे कभीसंताप हो कभीप्रसन्न होवे कभी भ्रमसे बकने लगे ये लक्षणजिसमेंहों उसे नहीं उपाय जिसका ऐसाचित्तभ्रम सन्निपात जानो १५ ॥

(रुग्दाहसंनिपातकेलक्षण) यःशूलंवितनोतिदारुणभयंहस्तांघ्रिशैत्यंतथाजिह्वांकंटकितांभ्रमंविकलतांमोहंचकंठव्यथां॥श्वासंकासतरंनिरंतरतृषांहृत्कंठयोःशोषणं संतापंभ्रमरोदनंप्रलपनंजानीहिरुग्दाहकम् १६ (शीतांगसन्निपातलक्षणम्) शीतत्वंविदधातियोऽखिलतनौरोमोद्गमंवेपथुं श्वासंकासतमंक्वचिच्छिथिलतां मूर्च्छामतीसारकं ॥ चेष्टांक्षीणतरांक्लमंवमथुतांहिक्कांशिरश्चालनं तंशीतांगमवेहिवैद्यहरिजंमृत्योःसखाऽयंध्रुवं १७ (तंद्रिकसंनिपातकेलक्षण) कंठेकंडुतृषाऽरुचिःक्लमथुता पीडातिकर्णद्वयोः जिह्वाश्यामतराचकंटकयुतातंद्रातिसारोरतिः॥ संतापःकफवेदना

वहुतराश्वासोधिकःकाशता मृत्युस्यात्खलुतंद्रिकोनिगदितश्चिन्हैरमीभिःपरैः १८ ॥

पेटमें शूल हाथपैर ठंढे जीभमें कांटे भ्रम बेकली बेहोसी कंठमेंपीड़ा श्वास खांसी प्यास बहुत लगे हृदय कंठका सूखना संताप श्रम रुदन करना प्रलाप येलक्षण रुद्रगाह सन्निपातके जानना १६ जिसमें ये लक्षण मिलते हों उसको वैष्णव ज्वर मौतका मित्र शीतांग सन्निपात जानना चाहिये जो सब देहको शीतल करदे रोमखड़ेहोजायँ कंप श्वास खांसी अँधेरासुझतीकभी मूर्च्छाऔर दस्तकाहोना जिसकीचेष्टा मंदपड़िजायबिना श्रम करे श्रमहो रद्दहिचकी शिरका कांपना १७ कंठमें खुजलीचले प्यास अरुचि ग्लानि दोनों कानोंमें पीड़ा काली और कांटेयुक्त जीभ तंद्राअतिसार अरति संताप कफसे पीड़ा बहुत श्वासचलै और खांसी इनलक्षणों से रोगी का मारने वाला तंद्रिक सन्निपात जानना १८ ॥

(कंठकुब्जसंनिपातकेलक्षण) कंठग्रहंयःकुरुतेहनुग्रहंमूर्च्छांप्रलापंज्वरकंपवेदनाः ॥ मोहंचदाहंहृदयेशिरोरुजंतंकंठकुब्जंप्रवदंतिसाधवः १६ (कर्णकसंनिपातकेलक्षण) ग्रंथिःकर्णांतदेशेभवति वहुतराकंठदेशेतिपीडा ग्लानिःश्वासः प्रसेकोवचनशिथिलताश्लेष्मणारुद्धकंठः ॥ मूर्च्छाकंपःप्रलापोवपुषिकृशतमावेदनोष्माचकासः ॥ स्वंस्वंरूपंचरोगाविदधतिसततंकर्णकेसन्निपाते २० ॥

जोकंठमें पीड़ाकरै ठोड़ी जकड़ जावे मूर्च्छा तथा बकना ज्वरकंप देह में पीड़ा बेहोसी हृदय में दाह शिर में दर्द ये लक्षण कंठकुब्ज सन्निपात के महात्मा कहते हैं १६ कर्णक सन्निपातके येलक्षणहैं कानके पास गांठ बहुत सी हों कंठमें दर्द ग्लानि श्वास लारकागिरना मंद २ बोलना कफ स कंठका रुकना मूर्च्छा कंपऔर बकना शरीर कृश तथापीड़ा औरगरमी और खांसी तथा अनेकरोग प्रगट हों २० ॥ इतिकर्णक संन्निपातके लक्षण समाप्तहुये ॥

(भुग्ननेत्रसन्निपातकेलक्षण)स्मृतिभ्रंशनंभुग्नदृक्सन्निपातः करोत्यंगपीडांभ्रमंभुग्ननेत्रं ॥ ज्वरंवेपनंशून्यतांश्वासकासौप्रलापं प्रसेकंपिपासामसाध्यः२१(रक्तष्ठीवीसन्निपातकेलक्षण)छर्दिं रक्त

ष्ठीवनंकृष्णजिह्वांकासश्वासंमंडलंदाहमुग्रं॥ संज्ञानाशंतापमध्मानतृष्णांरक्तष्ठीवीप्राणनाशंचकुर्यात् २२ (प्रलापीसन्निपातकेलक्षण) प्रलापीरवेःपुत्रगेहंप्रयातिज्वरोतापपीडांगकंपप्रयासः॥ तृषाशोकसंज्ञाविनाशप्रवादःशिरःकंपमोहांगदाहोविनिद्राः २३ ॥

वेहोसी हो अंगों में दर्द भौंर का आना नेत्रोंका बुरा होना ज्वर तथा काँपना देहमें शून्यता श्वास खांसी बकना लारका बहना प्यास ये लक्षण असाध्य भुग्ननेत्र सन्निपात के हैं २१ रुधिरकी उलटीकरना जीभ काली हो खांसी श्वास चकत्ता पड़जावे घोर दाह हो संज्ञा जाती रहै ताप ज्वर तथा पेट का फूलना तृष्णा प्यास ये लक्षणहों तो प्राणकानाश कर्त्ता रक्तष्ठीवी सन्निपात जानना २२ प्रलापी सन्निपातवाला रोगी यमलोक को जाता है और उसके ये लक्षण होतेहैं ज्वर ताप पीड़ा काँपना विना कारण श्रमहो प्यास शोच संज्ञानाश बकना शिरका हिलाना वेहोसी अंगोंमें दाह नींदका न आना २३॥

(जिह्वकसन्निपातकेलक्षण) जिह्वांकंटकवेष्टितांशिथिलतांश्वासाधिकंमूकतां रात्रौजागरणंतृषांवधिरतांवीर्यक्षयंक्षीणतां हृत्पार्श्वोदरनाशिकाधरगलेशोथंविसंज्ञंज्वरं कायेयःकुरुतेरुजंवहुतरंजानीहितंजिह्वकम् २४ (अभिन्याससन्निपातकेलक्षण) अभिन्यासकोयस्यदेहेस्थितःस्याद्भवेत्तस्यमृत्युर्विनिद्रातितृष्णा ॥ ज्वरःपाददाहोङ्गकंपोतिजाड्यंभ्रमःश्वासताम्काशताक्षीणचेष्टा २५*

(अजीर्णज्वरलक्षण) अजीर्णज्वरोलक्षणैरष्टभिर्वाभिषक्सत्तमैर्ज्ञायतेसप्तभिर्वा ॥ अतीसारउद्गारऊष्मातिनिद्राशिरोर्तिःप्रलापोहिजृम्भोदरेरुक् २६ ॥

जीभ कांटन करके युक्त तथा शिथिल श्वास का ज्यादह चलना गूंगापना रातमें जागना प्यास तथा बेहरापना वीर्य का नाशहोना दुर्बलता

---

*सद्यस्त्रिपंचसप्ताहात्दशाहात्द्वादशादपि॥ एकविंशद्दिनैःशुद्धःसन्निपातीसुजीवती१ (त्रिदोषज्वरस्यमर्य्यादा) सप्तमीद्विगुणायावन्नवम्येकादशीतथा ॥ एषात्रिदोषमर्य्यादा मोक्षायचवधायच २ पित्तकफानिलवृद्धया दशदिवसद्वादशाहसप्ताहात् ॥ हन्तिविमुंचतिपुरुषंत्रिदोषजोधातुमलपाकात् इति ६ ॥

हृदय पसवाड़े पेट नाक ओठ गला इनमें सूजनहो बेहोसीज्वर यलक्षण जिसकी देह में हो उनको जिह्वक सन्निपात जानो २४ जिसकी देह में अभिन्यास सन्निपातहो उसके ये लक्षण हैं नींद आवे नहीं अति प्यास हो ज्वर पैरोंमें दाह अंगोंका कांपना बेहोसीऔर श्वास खांसीचेष्टा मंदये लक्षणवालेकी मौत होय २५ इतित्रयोदशसन्निपाताः॥ * अजीर्णज्वर आठलक्षणों से अथवा सात लक्षणोंसे जानै सो येहैं अतीसार १ डकार२ गरमी ३ अतिनिद्रा ४ शिरमेंदर्द ५ खोटाबोलना ६ जँभाई ७ पेटका दूखना८। २६ ॥

(आमज्वरलक्षण) हल्लासलालाश्रुतिवांत्परोचकैःक्षुन्नाशनिद्रावहुमूत्रतालसैः ॥ वक्रालपवैरस्यवलक्षुतक्षयैरामज्वरोवैद्यवरैर्विलक्ष्यते २७ (रक्तज्वरकेलक्षण) प्रलापोद्भदाहोमुखाद्रक्तपातस्तृषास्फोटनामोहतांगप्रपीडा॥ भ्रमोरक्तनेत्रेथनिद्राविमूर्च्छाभवंतीहरक्तज्वरेलक्षणानि २८ (दृष्टिज्वरलक्षण) मुहुर्मुहुर्जृम्भनमंगदाहंविस्फोटनंसंधिषुशूलमुग्रं ॥ स्तब्धेक्षिणीछर्दिमनाहतांयो दृष्टिज्वरःसंकुरुतेविवर्णं २९ ॥

खाली ओकी आवे लार बहे रद्दहो अरुचि भूख न लगे नींद मूतका ज्यादा उतरना आलस मुख बेरसहो बल और भूख का घटना तथा खई हो इन लक्षणों से वैद्यों में चतुर सो आमज्वर जाने २७ बकना और अंगों में दाह मुख से रुधिर का गिरना प्यास हड़कल बेहोसी अंगों में पीड़ा भौंर लाल नेत्र नींदका आना मूर्च्छा ये रक्त ज्वरके लक्षणहैं २८ बारबार जँभाई का आना शरीर में दाह शरीरका टूटना सन्धि २ में दर्द भयानक नेत्र वमन अनाह शरीरका वर्ण और तरहका होजाय ये दृष्टि ज्वर के लक्षण हैं २९ ॥

(भूतज्वरकेलक्षण) भूतप्रेतपिशाचदैत्यदनुजैर्जातोज्वरोराक्षसैर्यस्तापंहृदिवेपथुंवितनुतेमूर्च्छाप्रलापंमदं ॥ जृम्भामंगविम

---

*(प्रसङ्गात्हारिद्रकसन्निपातस्यलक्षणंग्रन्थान्तरात्) हारिद्रदेहनखनेत्रकरांघ्रिताप निष्ठीवनादिकसनैरुपलक्षितोयः ॥ हारिद्रकस्सकथितःकिलसन्निपातःसाध्योनचैवभिषजा वरमालरूपः १ ॥

दनं विकलतांहास्यंकचिद्रोदनं गीतंरक्तविलोचनंमनुजतंजानीहि भूतज्वरं ३०॥

भूत प्रेत पिशाच दैत्य दानव राक्षस इनसे जो ज्वरहो उसके ये लक्षणहैं शरीरतत्ता हृदयमें कंप मूर्च्छा व्यर्थ बकना मस्तहोना जंभाई का आना शरीरको तोड़ना बेकली हसना कभीरोना कभी गीतगाना लाल २ नेत्र ये लक्षण भूतज्वरके हैं ३० ॥

(मलज्वरलक्षण) प्रलापोद्भूतापोभ्रमोहृद्विदाहस्तृषोद्गार निष्ठीवनेघूर्णदृष्टिः ॥ सकृन्मेहनंकंठजिह्वोष्टशोषःशिरोगौरवंविट् ज्वरेलक्षणानि ३१ (खेदज्वरलक्षण) विष्टंभनंस्फोटनमंगदेशे श्वासःपिपासालसताप्रसेकः ॥ स्वेदोतिनिद्रामदवीर्यनाशोभवंति खेदज्वरलक्षणानि ३२ (शापज्वरकेलक्षण) श्यावास्यतोद्वेग वमीपिपासाविनष्टचेष्टाभ्रमतापमूर्च्छाः ॥ दुर्गंधतांगेहृदिवेपथुत्वं भवंतिशापज्वरलक्षणानि ३३ ॥

खोटा बोलना शरीरतत्ता हृदयमें दाह प्यास डकार बार २ थूके टेढ़ा देखे थोड़ा थोड़ा दस्त उतरै कंठ जीभ ओठ इनका सूखना शिरभारी ये मलज्वरके लक्षणहैं ३१ पेटका फूलना शरीरमें हड़कल श्वास प्यास आलस लारका गिरना पसीना अतिनिद्रा मस्तपना वीर्यकानाश येखेद ज्वरके लक्षणहैं ३२ मुंहकाला उद्वेग रद्द प्यास शरीरकी चेष्टाका नाश होजाना भौंर शरीर तत्ता मूर्च्छा देहमें बासका आना हृदयका कांपना ये सब शापज्वरके लक्षणहैं ३३ ॥

(औषधजनितज्वरकेलक्षण) भवेदौषधीगंधजेचिन्हमेत ज्ज्वरेचित्तविभ्रंशतारक्तनेत्रे॥ शिरोरुग्वमिर्मूर्च्छतागात्रशोषंपिपा साक्लमत्वंचनिद्राविनाशः ३४ (भयज्वरकालक्षण) भयात्कस्य चिदुद्भवेघोररूपेज्वरेचिन्हमेतद्भवेदंगकंपः ॥ मुखेशुष्कताभ्यंत रेत्यंतपीडाप्रलापोथचित्तभ्रमःशोकमूर्च्छा ३५ ॥

बिषैले औषधके सूंघने से जोज्वर पैदा होताहै उसके ये लक्षण होते हैं चित्तका डामाडोलहोना लाल२ नेत्र मथवाय उलटीनका होना मूर्च्छा

शरीरका सूखना प्यास ग्लानि नींदका न आना ये लक्षण औषध जनित ज्वरकेहैं ३४ जिस किसीको भयसे ज्वर पैदा हुआहो उसके येलक्षण हैं अंगोंका कांपना मुखका सूखना शरीरमें बहुत पीड़ा व्यर्थ बकना चित्त चलायमान शोच और मूर्च्छा ३५ ॥

(कोपज्वरकेलक्षण) भवंतीहकोपज्वरेलक्षणानिस्फुरद्गात्रभंगंचलद्रक्तनेत्रं ॥ प्रलापोथहल्लासकंपार्तिमूर्च्छाविवर्णःप्रसेकोमुखस्तालुशोषः ३६ (शस्त्रघातज्वरलक्षण) शस्त्रास्त्रदंडाश्मकशादिघाततोजातेज्वरेघोरतरेहिलक्षणं ॥ तापःपिपासाकफकंठरुद्धताशोथःप्रलापोऽरुचिरार्तिताभवेत् ३७ (अभिचारज्वरकेलक्षण) ज्वरेभिचारसंज्ञकेभवंतिलक्षणानिषट् ॥ प्रलापशूलमोहतास्तृषांगकंपतारुचिः ३८ ॥

ये कोप ज्वरके लक्षण हैं अंगोंका फड़कना शरीर का टूटना चलायमान लाल २ नेत्र वाहियात बकना खाली रद्दका आना कांपना दुःखका होना मूर्च्छा शरीरका वर्ण औरही तरहका होजाना लारका टपकना मुख और तालूका शोष ३६ शस्त्र कहिये तलवार और छुरी आदि और अस्त्रवो दंड कहिये लकड़ी आदि अश्म कहिये पत्थर कशादि कहिये कोरड़ा आदिइनके लगने से जोज्वर पैदाहो उसके ये लक्षण हों ज्वरहो प्यासहो कफसे कंठका रुकना सूजन बड़बड़ाना अरुचि दुःख येलक्षण हैं ३७ अभिचार से तथा मंत्रको उलटा जपने से जो ज्वरहो तथा किसी ने जादू कियाहो इस ज्वरमें मुख्य ६ लक्षण होतेहैं बड़बड़ाना पेटमें शूल बेहोशी प्यास शरीरका कांपना अरुचि ये ३८ ॥

(कामज्वरकेलक्षण) रोमोद्गमःसाहसहर्षजृम्भाभीतिर्विषादोमदशोकरोषाः ॥ एतानिचिन्हानिभवंतियस्यकामज्वरंतंकथयंतिवैद्याः ३९ (अथस्त्रीप्रसंगाज्जनित) स्त्रियोत्यंतसंगाद्भवेच्चिन्हमेतज्ज्वरोग्लानिनिष्ठीवनंश्वासकाशं॥भवेद्वेपथुर्गात्रदेशेम्बुपूरस्तृषानिर्बलत्वंचपीडांचशोथः ४० ॥

रोमांच साहस जँभाई डरका लगना दुःखका होना मोहहो औरतथा शोच क्रोध येलक्षण जिसमें हों उसको वैद्य सब कामज्वर कहतेहैं ३९ जो

मनुष्य बहुत स्त्री से मैथुन करै उससे पैदाज्वरके ये लक्षणहैं ज्वरकाहोना ग्लानि बेरबेरमें थूकना श्वास खांसी कंप शरीरमें पसीना आना प्यास नाताकती पीड़ा सूजनये ४० ॥

(क्षीणधातुमंदाग्निजज्वरलक्षण)धातोःक्षीणतयाथवाग्निशमनाज्जातोज्वरश्चिंतया शैथिल्यंकुरुतेरुचिंवितनुतेधत्तेतनौपांडुतां ॥ सर्वांगंतुदतेददातिकृशतांहर्षपरंनाशते वीर्यत्वंजयतेरुतंनसहते श्वासंभ्रमंविभ्रते ४१ (संततज्वरकेलक्षण) वसतिरुधिरधातौ योज्वरोद्वादशाहंक्वचिदपिचदशाहंसंततंसंततोयं ॥ प्रभवतिखलुनाम्नाश्वासकाशंविधत्तेज्वरयतिनरदेहंयातिनाशंसपश्चात् ४२ (विषमज्वरकेलक्षणं) निरंतरंतिष्ठतिसर्वदेहेसूक्ष्मोज्वरोयोविदधातिशैत्यं ॥ अत्युष्णतांयातिकदाचिदेवतंकष्टसाध्यंविषमंवदन्ति ४३ ॥

धातुके क्षीण होने से तथा मंदाग्नि के होनेसे तथा चिंतासे जो ज्वर पैदाहो उसके ये लक्षण हैं शिथिलता अरुचि शरीर पीलाहो सर्वांग में पीड़ा हो तथा शरीर का कृशहोना हर्ष जातारहै वीर्यकानाश श्वासभौर का होना ४१ जोज्वर रुधिर धातुमें पहुंचजाय वो ज्वर १२ तथा १० दिन बराबर बनारहै उसको संतत ज्वर कहते हैं उसमें श्वास खांसी तथा सब देहका जरना बाद थोड़ेदिनयहज्वर मारडाले है ४२ जोज्वरमंदहोके सब देहमेंबराबर रहे और कभी शीतलगै कभी ज्यादा शरीर गरमहोजाय उसको कष्ट साध्य विषम ज्वरकहै हैं ४३ ॥

(महेंद्रज्वरकेलक्षण) अहोरात्रयोर्वाद्विकालेत्रिकालेचतुष्कालकेवाप्रवृत्तिंनिवृत्तिं ॥ करोतिज्वरोयःस्वतंत्रोतिरौद्रोमहेन्द्रोहिनाम्नानिरुक्तोमुनीन्द्रैः ४४ (वेलाज्वरकेलक्षण) अहोरात्रयोरेकदेशेज्वरोयःसमागत्यदेहेस्वरूपंविधाय ॥ नरंपीडयेन्नित्यशोनिर्दयंतं विजानीहिवेलाज्वरंवैद्यराजः ४५ ॥

जो दिनरातमें दोदफे वा तीन वा चार दफे आवे और उतरजाय उस स्वतंत्र ज्वर घोरका महेन्द्र नाम मुनियों ने कहाहै ४४ जोज्वर दिन रात में एक दफे एक अंगमें आयके फेर सब शरीरमें फैलकर शरीर को बहुत दुःख दे नित्य उसको वैद्य वेला ज्वर जाने ४५ ॥

(एकांतरज्वरकालक्षण) दिनैकांतरेयोविधायोग्ररूपंनराणांश रीरेप्रपीडेन्नितांतं ॥ दिनैकंविमुच्याथधातूश्चशेनेतमेकांतरंत्वंविजा नीहिवैद्यः ४६ (एकान्तरज्वरलक्षण) एकांतरोज्वरोघोरोद्वि विधःपरिकीर्त्तितः ॥ शीतेनैकःसमायातितापेनायातियोपरः ४७ (त्र्याहिकज्वरलक्षण) दिनद्वयंतुविश्राम्यमेदोमज्जास्थिधातुषु॥ यःकुप्यतितृतीयेह्नित्र्याहिकंतंविदुर्बुधाः ४८ ॥

उसको हेवैद्यतू एकान्तर ज्वरजानजोएकदिनमें घोररूपहोके मनुष्योंके शरीर को दुःखदे और एक दिन छोड़ कर आवै और धातून को सुखाय डाले उसको ४६ इकतरा घोरज्वर दोप्रकारकाहैएकशीतलग करआवै और एक गरमीसे आवै ४७ जो ज्वर मेदा मज्जा हड्डीमें पहुंचजाताहै और दो दिनबीच में देकर तीसरे दिनआवै उसको त्र्याहिक अर्थात् तिजारी पण्डित लोग कहतेहैं ४८ ॥

(चातुर्थिकादिज्वरलक्षण) एवंचातुर्थिकोज्ञेयःपाक्षिकोमासि कस्तथा ॥ वार्षिकोमुनिभिःप्रोक्तोवर्षमायातिनाऽन्यथा ४९ (देव कोपजनितज्वरलक्षण) वापीकूपतडागगोपुरमठप्राकारदेविप्रपा देवांगोपवनानिदेवसदनंछिन्दन्तियोमंडपं ॥ साधुब्राह्मणयोगि नांपितृगवांपीडांप्रकुर्वन्तियेतेषांदेववरप्रकोप जनितोघोरज्वरोजा यते ५० (एकांगज्वरलक्षण) प्राणिनामेकमंगंयोज्वरोरुजयति ध्रुवं ॥ तस्यांगस्यचयन्नामतन्नाम्नाज्वरउच्यते ५१ ॥

ऐसेही चातुर्थिक ज्वरजाने तथा पाक्षिक अर्थात् जोपंद्रहें दिनआवे तथा मासिक जो महीना में आवें तथा बार्षिक जो बर्षदिनमें आवे बीच नहीं आवे ये मुनिन ने कह्यो है ४९ जो मनुष्य बावली कुआ तालाब गोपुर मढ़ी प्राकार यज्ञकी वेदी प्याऊ देवप्रतिमा बाग मंदिर मंडप इनको तोड़ डाले तथा साधु ब्राह्मण योगी माता पिता गऊ इनको दुःखदेतेहैं तिन को ईश्वरके कोपसे घोर ज्वर पैदाहोताहै ५० मनुष्योंके कोईसे एक अंगमें ज्वरचढ़ै और उस अंगका जो नामहो वह ज्वर उसी नामकरके कहा जाताहै ५१ ॥

ज्वरस्तुयस्यसंस्पर्शाद्गन्धाद्वादर्शनादपि ॥ ज्वरोभवतितन्ना म्नाइतिरोगविदोविदुः ५२ (अंतकज्वरलक्षण) श्वासोर्मीवह तेगलंकफचयैःसंरुद्धतेयोमुखा त्फेनंसंवमतेशिरांविधमतेकाशंविध तेरतिं ॥ आध्मानंकुरुतेचमोहमरुचिंहिक्कामतीसारकंतंविद्याज्ज्वर मंतकंप्रियसखंमृत्योरसाध्यंभृशं ५३ (शोकज्वरकेलक्षण)अर्थाऽप त्यकलत्रभ्रातृसुहृदांशोकोद्भवोयोज्वरः शैथिल्यंकुरुतेनरंविमनसं श्वासंमुहुर्वेदनां ॥ स्तैमित्यंविकलंभ्रमंबधिरतांमूर्च्छांबलोजक्षयंप्र स्वेदंबहुमोहतामरुचितांनिद्रांतनौपांडुतां५४(रसगतज्वरलक्षण) कुर्यात्त्वचिस्थःपवनज्वरोनिशंरोद्गमंरूक्ष्यत्वगाक्षिमीलनं ॥जृम्भां गमर्दश्रवणाक्षिवेदनांविणमूत्रबंधंमुखमिष्टतारती ५५॥

और जो ज्वर किसीवस्तु के छूनेसे अथवा सूंघने से वा देखने से वह उसी नाम से विख्यात होताहै ऐसे रोगके जानने वाले कहते हैं ५२ श्वासका ज्यादा चलना गला कफके समूह से रुकाहो और जो मुखसे झागगेरे नाड़ीका जोरसे चलना खांसी इच्छा का नाश पेटका फूलना बेहोसी और अरुचि हिचकी दस्त का होना येलक्षण कालज्वर मृत्युका प्यारामित्र जानना ये असाध्यहैं ५३ द्रव्य पुत्रादि स्त्री भैया सुहृद इनके नष्टहोने के शोकसे जो ज्वर होताहै उसके ये लक्षणहैं शरीरमें शिथिलता मनका बिगड़जाना श्वासबेर २ में दुःखका होना शरीर गीलेकपड़ेसे पोंछा साहो बेकली बहिरापना मूर्च्छा तथा बल तेज इनका नाशहोना पसीना बहुतहो बेहोसी अरुचि नींद शरीर पीला ५४ वातज्वर त्वचामें होतो येलक्षण हों रोमांच तथा त्वचाका रूखापनआँखोंका मीचना,जंभाई अंगों का टूटना कान आंखमें दर्द दस्त पेसाब का बंदहोना मुख मीठा तथा अरति ५५ ॥

(त्वग्गतवातज्वरलक्षण) रक्तत्वचंदाहमतीवतृष्णामास्येक टुत्वंपरिदेहशोषं ॥ ऊष्मानमार्तिंबहुशीतलेच्छांपित्तज्वरश्चर्मगतः करोति ५६ (त्वग्गतपित्तज्वरलक्षण) लालामुखेगौरवमाल स्यंनिष्ठीवनंशीतवपुःशिरोर्तिं॥ निद्रांचमूत्राधिकतांप्रलापंश्लेष्म ज्वरश्चर्मगतःकरोति५७ (त्वग्गतकफज्वरलक्षण) ज्वरःशोणित

स्थोभ्रमंदेहदाहंसरत्वंचनिष्ठीवनंताम्रनेत्रं॥ शिरःपीडनंशोषमूष्मा नमार्तिंपिपासामरोचंकरोतीतिमूर्च्छां ५८ (रक्तगतज्वरलक्षण) पिपासाशिरोर्त्तिर्वमिःशूलमुग्रंप्रलापोंगकंपोरुचिर्वैमनस्यं॥ वपुः स्वेदरोमांचितंकंठदाहोरसस्थोज्वरोलक्षणैर्ज्ञायतेज्ञैः ५९॥

लालत्वचादाह अत्यन्तप्यासमुखकडुआ शरीरकासूखना गरमीमालूमहो घबराहट शीतलवस्तुकीइच्छा येलक्षण पित्तज्वरत्वचामें होयतो होतेहैं५६ मुखसे लारकाबहना शरीर भारी आलस कफका थूंकना देह शीतल मथ वाय निद्रा पेशाबका ज्यादा गिरना बड़बड़ाना येलक्षण कफज्वर चर्ममें पहुंचताहै तब होतेहैं ५७ जोज्वर रुधिरमें पहुंचआवे उसके ये लक्षणहैं भौर देहमें दाह रुधिरमिला थूकना तांबेसरीखे नेत्रलाल शिरमेंदर्द शोष गरमी घबराहट प्यास अरुचि और मूर्च्छा ५८ प्यास मथवास बमनदर्द बड़बड़ाना अंगोमें कँपकँपी अरुचि मनका बिगड़ना शरीरमें रोमांच तथा पसीना कंठमेंदाह येलक्षणोंसे जानोकि इसकेरसमें ज्वरपहुंचगयाहै ५९॥

(मांसगतज्वरलक्षण) भवंतिज्वरेमांसगेलक्षणानितमोष्मां गमर्द्दोभ्रमोमूत्रकृच्छ्रः॥ वपुःस्वेदमभ्यंतरेतीव्रदाहस्तृषावेदनाछ र्दिरार्त्तिःप्रलापः ६० (मेदगतज्वरलक्षण) भवंतिज्वरेमेदगेल क्षणानिशरीरेतिदुर्गंधितादंतपीड़ा॥ मुहुर्मूत्रतावह्निनाशःकृश त्वंविषादोल्पसारोरुचिःश्वासकाशौ ६१ (अस्थिगतज्वरलक्षण) ज्वरेस्थिप्रदेशेगतेलक्षणानिभवंत्यस्थिविस्फोटनंपर्वभेदः॥ शरी रस्यविक्षेपनंदेहदाहस्तृषोष्माविलापोभ्रमःस्वेदतापौ ६२॥

मांसमें जबज्वर पहुंच जाताहै उसके ये लक्षण होतेहैं अंधेरा आना गरमीका लगना शरीरका टूटना भौर पेशाबका रुक २ के गिरना शरीर में पसीना हृदयमें ज्यादादाह प्यास बेकली रद्द दुःख बड़बड़ाना ६० मेदामें ज्वर पहुंच जाताहै उसके ये लक्षणहैं शरीरमें बासआना दांतोंमें दर्द बेर २ मूतना जठराग्निका नाश देहकृश दुःख बलका घटना अरुचि श्वास और खांसी ६१ जिसका ज्वर हड्डीमें पहुंच जाताहै उसके येलक्षण हैं हड़फूटनहो संधि २ में पीड़ा देहका इधर उधर पटकना तथा देहमेंदाह प्यास गरमी बिलाप भ्रम पसीना तथाज्वर ६२॥

(मज्जागतज्वरलक्षण) वहिःशीतताभ्यंतरेत्यंतदाहःतमः कंपनंमर्मभेदःप्रलापः ॥ तृषाश्वासहिक्कार्त्तयोमूत्ररोधंभवंतिज्वरे मज्जगेलक्षणानि ६३ (शुक्रगतज्वरलक्षण) ज्वरःशुक्रदेशेस्थितेमृत्युदूतस्तदाज्ञायतेसप्तचिन्हैर्भिषग्भिः ॥ भ्रमोवीर्यनाशःत्वचाहीनशोफोवलोजःक्षयःश्वासकासौक्लमत्वं ६४ (धातुपाकीज्वर लक्षण) निद्रावलोजोरुचिवीर्यनाशोहृद्वेदनागौरवताल्पचेष्टा॥विष्टंभतायस्यकिलारतिःस्यात्सधातुपाकीमुनिभिःप्रदिष्टः ६५ ॥

बाहर से जाड़ालगै भीतर अत्यंत दाहहो अंधेरा आना कांपना मर्मस्थानों में दर्द बड़बड़ाना प्यास श्वास हिचकी बेकली मूतका रुकना ये लक्षण मेदामें ज्वर पहुंचजाताहै तब होतेहैं ६३ जबमौतकादूत ज्वरशुक्र याने वीर्य्यमें पहुंचजाय उसको वैद्य सातलक्षणों से जाने भौंर वीर्य्य कानाश त्वचाका हीनहोना बलतेज इनका नाश श्वास खांसी ग्लानि६४ नींद बल तेज इच्छा वीर्य इनका नाश हृदयमें दुःख शरीरका भारीपना अल्पचेष्टा दस्तकारुकना मनका न लगना येलक्षण जिसमेंहैं। उसको- धातुपाक मुनियोंने कहाहै ६५ ॥

(तथाच) कायेधातुविपाकिनांपरकरस्पर्शोपिवज्रायते रात्रिःकल्पशतायतेल्पतरभोदीपोपिदावायते ॥ शब्दोवाणसमायते मृदुगतिर्वातस्त्रिशूलायते यूकाशूचिकुलायतेतनुतमंवासोपिभारायते ६६ (ज्वरस्यदशोपद्रवाः) ज्वरस्यप्रसिद्धादशोपद्रवाः स्युस्तृषाविद्ग्रहोछर्द्यतीसारहिक्का ॥ शरीरस्यभेदोरुचिःश्वासकासौसमूर्च्छाहिभागद्वयंतेप्रदद्युः ६७॥

धातपाकी मनुष्य के देहमें हाथका स्पर्श वज्रके समान मालूम पड़े अल्परोशनी वालाभी जोदीपक सोभी ज्वालाके समान मालूमहो बोलना बाणके समानलगे मन्दगति चलनेवाला पवन त्रिशूल के समानलगे जुआं खटमल आदिका काटना सूईके समानलगे छोटाभीवस्त्र शरीरपर भारा लगे ६६ ॥ज्वरके उपद्रव दश प्रसिद्धहैं प्यास दस्तका बंदहोना रद्द अतीसार हिचकीअरुचि श्वास खाँसी ६७ ॥

शरीरस्थवाह्येयदाश्लेष्मवातौभवेतांतदाशीतलंवाह्यदेशं ॥ यदाभ्यंतरेऽभ्यंतरेशीतलत्वंभवेद्यत्रपित्तंविदाहोपितत्र ६८ यस्मिन्नंगेवायुर्यातितस्मिन्नंगेपीडांकुर्यात् ॥ पित्तंदाहंश्लेष्माशीतंसर्वान्दोषान्सर्वेंकुर्युः ६९ अंतर्दाहःप्रलापःश्वसनमतितृषानिग्रहोदोषवर्चोस्वेदःसंध्यस्थिशूलंभ्रमविकलतनूसंधिदेशेषुपीडां ॥ अंतरवेगस्यचिन्हंनिगदितमपरैर्वैद्यराजैर्ज्वरस्य दाहादीनांलघुत्वं यदिभवतिवहिर्वेगरोगस्यचिन्हं ७० ॥

यदि बात कफ शरीरकेबाहर होवे तो बाहरका सबभाग शीतरहे और जो बातकफ शरीरके भीतरहो तो भीतरही शीतलतारहै और पित्त जिस जगह होय तो दाहभी उसी जगहजाने ६८ जिस अंगमें वायु यानी बादी हो उसी अंगमें दर्दहो और जिस अंगमें पित्तहो उसी अंगमें दाहहो और जिस अंगमें कफहो उसी अंगमें शीतलता हो और जिस जगहपरजितने दोषहों उतनेही रोगोंको पैदा करैहै दो होंय तो दो और तीन होंय तो तीन और एक होयतो एक ६९ शरीरके भीतर दाह हो वाहियात बकना श्वास अत्यन्त प्यास का रुकना दोषोंका बढ़ना पसीना संधिनमें तथा हड्डीनमें शूलका चलना और ७० ॥

(असाध्यलक्षण) भवेद्यस्यदुर्गंधताश्वासवाहेतथांगप्रदेशेतिकंपोविवर्णः ॥ वहिःशीतताभ्यंतरेत्यंतदाहःसरोगीरवेःपुत्रगेहंप्रयाति ७१ कृशःपिच्छलांगोमहाश्वासवाहोभ्रमोहृष्टरोमारुणाक्षोंगकंपः ॥ तमोरात्रिदाहोदिवाशीततार्त्तिःसरोगीनजीवेत्कदाचित्सुधाभिः ७२ जिह्वाश्यामतराथकंटकयुतारात्रौदिनेजागरम् श्वासोनिर्गतलोचनेशिथिलतानाशामुखेशुष्कता ॥ यस्यांगेपरिमंडलानिवहुशोमूर्च्छाप्रलापस्तमः काशोरुद्धगलोगदीसगदितोसाध्योभिषग्भिःपरैः ७३ ॥

ऐसा रोगी रविकापुत्र जो यमराज ताके घर जाताहै कैसा कि जिसके श्वास निकसने में बास आवे तथा शरीरमें अत्यन्त कँपकँपी शरीर का विवर्ण बाहरसे शीतलता और भीतर अत्यन्त दाह ७१ कृश पिच्छलदेह

बड़ी २ श्वासका चलना भूमहृष्ट रोम लालनेत्र अंगमें कंप अँधेरेका आना रातमें दाहहोना दिनमें जाड़ा लगना तथा दुःख ऐसा रोगी अमृतकरके भी नहीं जीवे ७२ जीभ जिसकी काली और काँटेसेव्याप्त दिनरात जागना श्वासका चलना नेत्रोंमें सुस्ती नाक मुखका सूखना जाके देहमें रुधिरके चकत्ता पड़गये होयँ मूर्च्छा बड़ बड़ाना अँधेरा आना खांसी से गलेका रुकना ऐसा रोगी वैद्योंने असाध्य कहाहै ७३ ॥

भवेद्यस्यनेत्राश्रुपातोंगहीनोमुखान्नाशिकायापतेद्रक्तधारा ॥ मुखंकुंकुमाभंगलेकर्णमूलंसरोगीनजीवेत्कदाचित्प्रयत्नैः ७४ कृश स्थूलतास्थूलतायाःकृशत्वंस्फुटन्नेत्रगोलंस्वभावोऽन्यथास्यात् ॥ शरीरार्द्धशूलंत्वचाहीनसेफोगमिष्येत्सरोगीयमस्यालयंवै ७५ ग दीजिह्वयायोरसंवेत्तिनैवश्रुतिभ्यांनशब्दंननेत्रेणरूपं॥त्वचास्पर्श मुग्रंनशानैवगंधंसरोगीनजीवेत्सहस्रैरुपायैः ७६ ॥

जिसके नेत्रोंसे आंसूका गिरना शून्यदेह मुख नाकसे लोहूका गिरना मुंह जिसका लाल गलेमें कर्णमूल रोगहो वह रोगी कदाचित् यतनों से न जीवे ७४ कृशतो मोटा और मोटा कृश और नेत्रोंके गोल फटेसे मालूमहों स्वभाव पलट जावे आधे शरीर में शूल चलै त्वचाहीन लिंगेन्द्री हो वह रोगी यमराजके घर जायगा ७५ जिस रोगीको जीभसे स्वाद न मालूमहो और कानों से शब्द न सुने और नेत्रोंसेजिसे दीखैनहीं त्वचा में स्पर्श न मालूमहो नाकसे गंध न मालूमहो ऐसा रोगी हजार उपाय करने परभी नहीं बचैगा ७६ ॥

भवेद्यस्यवाह्यांतरेशीतगात्रंनजीवेद्ददीचंडरश्मेसुताभ्यां॥प्रलापंशिरश्चालनंयःकरोति सुषेणादिवैद्यैरसाध्योनिरुक्तः ७७ गतायुर्मनुष्योनपश्येत्स्वजिह्वांध्रुवंनाशिकाग्रंवशिष्टस्यमार्ध्यां ॥ स्वकीयांचछायांविशीर्षांसरंध्रांभृशंयातिनाशंनरोयोनपश्येत् ७८ स्वरो यस्यहीनोगुदायस्यभ्रष्टाशरीरेकृशत्वंवलोजोविहीनः ॥ निमग्नेक्षणीसंभ्रमःश्वासकाशौसरोगीयमस्यालयंयातिशीघ्रम् ७९ ॥

जिसका बाहर भीतर शीतल शरीर हो वह रोगी चंडरश्मि जो सूर्य्य

तिसका पुत्र यमराज तिस करके मरै तथा बड़बड़ाना शिरका इधर उधर पटकना जोरोगी करे वो सुखेणआदि वैद्यों करके असाध्य कहा है ७७ मरनेवाला मनुष्यअपनी जीभध्रुवका तारा नाशिकाका अग्रभाग अरुंधती इनको नहीं देखै तथा अपनी छाया का मस्तकनहीं दीखैतथा अपनी छाया में छेददीखै वो रोगी निश्चयमरै ७८ स्वरजिस रोगीका मंदहो गुदा जिसकी भ्रष्ट शरीर कृश तथा निर्बल और तेजरहित नेत्र जिसके भीतरी घसजाय संभ्रम श्वास खांसी ऐसा रोगीयमपुरको जल्दी जावै ७९ ॥

रुदतिहसतिगीतंगीयतेवापिकालेश्वसतिमुदतिचित्तेभाषतेदुर्वचांसि ॥ प्रलपतिपरिदेवंवादतेनृत्यतेयोवहतिबहुलतापंयास्यते मृत्युवक्रे ८० (अथरोगमुक्तस्यलक्षणं) विमुक्तरोगस्यनरस्यलक्षणंविड्वंधमोक्षौमनसिप्रसन्नता ॥ देहेलघुत्वंरसनातिकोमलास्वल्पातृषेच्छारसभोजनेभवेत् ८१ उरसिशिरसिकंडूरात्रिनिद्रांत्रगुंजाभवतिविशदचेतःस्वल्पतृष्णांगरौक्ष्यं॥ मुखकर्णविपाकःस्वेदयुक्तंशरीरंकृमिमलपरिपूर्णंरोगमुक्तस्यचिन्हं ८२ ॥

रोवै हँसै कभी गीतगावै श्वासले कभी चित्तमें प्रसन्नहो कभी खोट बोलै बड़बड़ावे कभी बेदनाहो कभी ताली बजावै कभी उठकर नाचने लगै और ज्वर बड़े जोरसों हो वो रोगी निश्चय मौतका ग्रासहोवै ८० नीरोगी मनुष्यके येलक्षणहैं दस्त खुलकरहो मन प्रसन्न हलका शरीर जीभकोमल प्यासकम रसभोजन में इच्छाहो ८१ हृदयमें और माथेमें खुजालचलै रातमें अच्छीतरह नींदआवै आंतोंका बोलना चित्तप्रसन्न अल्पप्यासा शरीररूखा मुखऔर कानका पकना पसीने का आना मल कीडोंसेपरिपूर्ण येरोग दूरहुयेके लक्षणहैं ८२ ॥

शीतंगुदंयस्यशुभाचदृष्टिश्चैतन्यकायःकफहीनकंठं ॥स्वल्पांगतापोरसनातिशुद्धाशीर्षेलघुत्वंसरुजाप्रणश्येत् ८३ तारुण्यंविदधातिषट्सुदिवसेष्वाद्येषुघोरज्वर स्तस्मिन्नौषधमुत्कटंगदहरोदद्यान्नकालेक्वचित् ॥दोषोपद्रवसंयुतेतितरुणेदेयंझटित्यौषधंवार्द्धक्यंदिनपंचतेषुपुरुतोजीर्णज्वरोतःपरं ८४ (ज्वराणांस्वरूपाणितेषां) वीभत्सांस्त्रिशिराज्वरोथकपिलोभस्मप्रहारस्त्रिपात्पिंगाक्षोथ

महोदरोथपरतोरौद्रोज्वलद्विग्रहः ॥ शंभोश्वाससमुद्भवाभयकरादक्षक्रतोर्ध्वंसकाःघोरावर्घरनादिनोमुनिवरैःप्रोक्ताज्वरास्तेष्टधाः८५

शीरीतो गुदाहो शुभजिसकी तृष्टी शरीरमें चैतन्यता कफरहित कंठ देहमें मंद गरमी जीभ शुद्ध शिर हलका ये लक्षण गत रोगके हैं ८३ आदिके छः दिनमें तो घोरज्वर तरुण होताहै तिसमें कड़ी रोगहर्त्ता दवाई कभीनदे और कदाचित् तरुणज्वरमें दोषोंका उपद्रवहोतो जल्दी दवाईदेवै तो छः दिनसे परे पांचदिन तक ज्वरको वृद्धा कहते हैं इस उपरांत अर्थात् ग्यारहदिन उपरांत जीर्णज्वर कहाताहै ८४ रुद्रके श्वाससे पैदाहुये भयके देनेहारे दक्षप्रजापतिके यज्ञके बिगाड़नेवाले घोर घर्र घर्र नादके कर्त्ता ज्वर मुनीश्वरोंने आठ तरहके कहेहैं सो लिखतेहैं १ वीभत्स २ त्रिशिरा ३ कपिल ४ भस्मप्रहारी ५ त्रिपात ६ पिंगाक्ष ७ महोदर ८ ज्वलद्विग्रह ये ८५ ॥

(वीभत्सज्वरस्वरूपमाह) वीभत्सोरुधिरारुणांवरवृतोमुण्डास्थिमालाधरोरक्ताक्षःकृमिसंकुलस्त्रिनयनोदुर्गंधिपूर्णोनिशं॥ नग्नोरुद्रसमुद्भवोतिबलवान्कोपीजगत्घातकःकृष्णांगोमलिनो मदान्धदमनःपुष्णोर्द्विजध्वंसकः ८६ (अथत्रिशिराज्वरस्यलक्षणं) अभूद्दक्षविध्वंसकोरुद्रकोपात् त्रिशीर्षस्त्रिपान्नंदनेत्रोतिकायः ॥ चलज्जिह्वयासृक्कर्णीलेलिहंतोबृहत्तालुजंघोरुणाक्षेतिक्रोधी ८७ अभूद्रुद्रकोपाज्ज्वरःकापिलाख्यो मुखांगारपुंजोद्गिरन्तोतिकायः ॥ मदाघूर्णिताक्षःस्फुरत्ताम्रकेशोमहामेघगर्जोमनोहर्षहर्त्ता ८८ ॥

रुधिरसे रँगेहुये वस्त्रोंको पहिरे मुण्ड और हड्डियोंकी मालाका धारण करनेवाला लाल२ नेत्र कृमिसे जिसकी देह व्याप्त तीननेत्र बासजिसकी देहमें सदा आती है नंगा रुद्रसे पैदाहुआ अतिबली कोपवान् जगतका घातक कालेरंगका मलिन मस्तोंको सीधा करनेवाला पुषादेवताके दांतोंका तोड़नेवाला ऐसा वीभत्सज्वरहै ८६ श्रीमहादेवके कोपसे तीनमाथेका त्रिशिरानाम ज्वर दक्षका मारनेवाला हुआ तीन जिसके पांव नवनेत्र अत्यन्तलंबा चलायमान छुरासी जीभसे ओठोंको चाटता बड़े ताल वृक्षके समान जंघा जिसके लाललालनेत्र जिसके अत्यन्तक्रोधी ८७ रुद्रभगवान्

के कोपमें एक कपिलनामक विख्यात ज्वर पैदा हुआ मुखमें अंगारोंकी उलटी करता अतिलंबा मदमें चलायमान नेत्रहैं जिसके प्रकाशमान तांबेके समान बाल हैं जिसके घोर मेघकी सी गर्जना करनेवाला मनके हर्षका दूरकरनेहारा ८८ ॥

(भस्मविक्षेपकज्वरलक्षणं) अभूद्भस्मविक्षेपकोरुद्रकोपात्महाटाट्टहासोमुहुर्जृम्भमानः॥ चलत्सप्तजिह्वःकरालोग्रदंष्ट्रःस्फुरत्तप्तताम्रारुणाश्मश्रुकेशः ८९ त्रिपादुद्रकोपाद्बभूवारुणाक्षोभृगोश्मश्रुविध्वंसकस्तब्धकर्णः ॥ ज्वरोदीर्घकायोमुहुःश्वासकर्त्तारणेनृत्यमानोंगदाहीतृषार्त्तः ९० (त्रिपादज्वरस्यस्वरूपम्) अभूद्वीरभद्रेश्वरादुत्कटाख्योज्वरःपिंगनेत्रोल्पजंघोग्निवर्णः ॥ तृषार्तोद्विजिह्वोनृसिंहद्वितीयश्चलत्तीव्रकेशःकृशःशुष्कमांसः ९१ ॥

श्रीरुद्रके कोपसे एक भस्मविक्षेपकज्वर पैदाहुआ महान् अट्टहासका करनेवाला बेर २ में जंभाईलेता चलायमान सातछुरासी जीभहै जिसके भयानक कीलासी डाढ़वाला प्रकाशमान तपाये तांबेके समानहै डाढ़ी और बाल जिसके ८९ श्रीरुद्रके कोपसे एक त्रिपाद नामक ज्वर पैदाहुआ तीनपैरवाला लालनेत्रवाला औरभृकुटीडाढ़ीका उखाड़नेवाला खड़ेकान जिसके बड़ीदेह जिसकी बारबार श्वासका कर्त्ता संग्राममें नाचनेवाला शरीरमें दाहका तथा प्यासका कर्त्ता ९०बीरभद्र गणमें एक पिंगाक्षनामक ज्वर पैदाभया बेंड़मुख छोटी जांघ वाला अग्निसरीखा वर्ण वाला प्यास मेंदुखी दोजीभकामानों दूसरा नृसिंहहीहै चलायमान तीखेवाला कृश सूखाहुआ शरीरका मांस जिसका ९१ ॥

(महोदरज्वरस्यस्वरूपं) बभूवातिदीर्घोदरोलंबकर्णोज्वलद्वह्निरूपश्चलद्रक्तनेत्रः॥ तृषाश्वासजृम्भान्वितांगप्रमर्दोभटेशोज्वरोरक्तवर्णःप्रमत्तः ९१ (पिंगाक्षकास्वरूप) ज्वलद्वह्निग्रहोमुक्तकेशश्चलद्भूत्रिशूलासिहस्तोभुजंगेशपाशः॥ ज्वरेशोतिवीर्योहरश्वासजातःकृशःशुष्कमांसोवलीभैरवेशः ९२ भिषक्चित्रचित्तो

त्सवेकर्कशानांज्वराणांस्वरूपंमयाकीर्त्तितंतत्॥ सुषेणाश्विनीजात्रिधन्वन्तराणां विलोक्याखिलंशास्त्रमन्यागमंवै ६३ ॥ इतिश्री भिषक्चक्रचित्रोत्सवे हंसराजकृते हंसराजनिदाने वैद्यशास्त्रे ज्वरलक्षणानि ॥

एक ज्वरमहोदर नामक पैदाहुआ जिसका बड़ापेट लम्बेकान जलती अग्निके समान स्वरूप चंचल लाल २ नेत्र प्यासश्वास जँभाई युक्त अंग का तोड़नेवाला बीरों का मालिक लालवर्ण और मतवाला ६२ औहर भगवान् के श्वाससे पैदा हुआ ज्वलद्विग्रहनामकज्वरखुलेभयेहैं बाल और चलायमान भ्रू त्रिशूल तलवार श्याप फासयेहैं हाथमें जिसके ज्वरों का राजा अतिबली कृशसूखे मांसवाला पराक्रमी भैरवेश प्रसिद्ध६३ हंसराज कबि कहतेहैं कि भिषक्चक्रचित्तोत्सव ग्रन्थमें कठोर ज्वरोंके स्वरूप तथा लक्षण मैंने कहे कदाचित् कोईकहै कि तुम्हारे कहनेका क्या प्रमाण है उसी शंकाको दूरकरते हैं सुषेण अश्विनीकुमार अत्रिऋषि धन्वंतरि इनके बनाये हुये ग्रन्थोंको देखकर तथा और जे माधवादि अर्वाचीन आचार्य्योंकामत उसको देखकर यहग्रन्थ मैंने निर्माण किया है इससे यह ग्रन्थपठन योग्यहै ६४ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिनीटीकायांज्वराधिकारस्समाप्तमगमत् ॥

(अतिसारलक्षणानि। वातातिसारकेलक्षण) तृष्णाग्लानिर्नितांतंहृदिजठरगुदेशूलमुग्रंसदाहं स्वल्पंस्वल्पंपुरीषंप्रभवति सततंनैवसर्वंच्युतिःस्यात्॥ अन्तर्दाहश्चश्वासोरुचिविकलतनूवक्त्रनाशातिशोषः वातातीसारचिन्हंनिगदितमृषिभिःपूर्वजैर्वैद्यविद्भिः १ (पित्तातिसारकेलक्षण) नानावर्णंपुरीषंमधुवशसदृशं दुष्टदुर्गंधियुक्तं वारंवारंसतप्तंप्रचलतिगुदतःकंपसंतापयोगः ॥ शूलंदाहोगुदाग्रेहृदिनशिवदनेशोषतृष्णाश्रमत्वम् पित्तातीसारचिन्हंकथितमृषिवरैरत्रिभारद्वजाद्यैः २ (कफातिसारकेलक्षण) सकष्टंगुदातःपुरीषप्रवाहश्चलत्फेनिलोमेदुरोदुष्टगंधिः ॥ हरित्श्वेतकृष्णाकृतिःकष्टसाध्योभवेच्चिन्हमेतत्कफस्यातिसारे ३ ॥

तृषा ग्लानि अत्यन्त हृदयमें पेटमें गुदामें घोरदर्द तथा दाह थोड़ा २

मलनिकसै सबननिकसै भीतरदाहहोश्वासअरुचि देहमेंबेकलीमुख नाक इनका अत्यन्त सूखना ये लक्षण बातातिसारके पहले ऋषितथा बैद्योंने कहेहैं १ दस्तजिस रोगीका चित्त बिचित्ररंगका निकसै तथा सहतके रंग का व बसाके रंगकानिकसै और दुर्गंधयुक्तहो बारबारमेंतत्ताजावे कंप तथा संतापके साथ और शूलदाह ये गुदाके द्वार परहों तथा हृदय में नाकमें मुखइनमेंशोथहो प्यास और अनायासश्रमहो येलक्षण ऋषिनमेंश्रेष्ठ अत्रि आर भरद्वाजादिकोंने पित्तातिसार के कहेहैं २ जिसके दस्तकाप्रबाह गुदा से बड़ेदुःखसे जावे जिसमें झागहो चिकनाहो दुष्टगंधहो हराश्वेत काला वर्णहो वे कष्टसाध्य कफातिसारके लक्षणहैं ३ ॥

(सन्निपातातिसारलक्षणं) अतीसारेसारेकफपवनपित्तप्रज निते गुदेपार्श्वेकुक्षौजठरहृदयेशूलमरुचिः ॥ मुखेकंठेशोषोभवति सततंछर्दिररतिः तृषाकाशःश्वासोवपुषिपरिशोफोद्भुदहनम् ४ (रक्तातिसारकेलक्षण) वारंवारंपुरीषंभवतिसरुधिरंकंठतालो ष्ठशोषो वस्तौपादौप्रपीडाहृदिजठरगुदेपार्श्वदेशेषुशूलं ॥ ग्ला निःकायेकृशत्वंपरिगलिततनुर्निर्वलत्वंशरीरे रक्तातीसारचिन्हंप्र वरमुनिजनैःप्रोक्तमेतन्नितांतम् ५ (आमातिसारकेलक्षण) आमं स्वल्पंपुरीषंशितरुधिरनिभंपीतवर्णंसकष्टं वारंवारंप्रतप्तंप्रचलति गुदतःपूयदुर्गंधियुक्तं ॥ स्निग्धंशूलंगुदाग्रेप्रभवतिपरितः फेनिलं पिच्छलंवा आमातीसारचिन्हंमुनिवरवचनात्कीर्त्तितंहंसराजैः६ ॥

बातपित्त कफसे पैदाहुआ घोरअतिसार उसमें येलक्षण होतेहैं किगुदा पीठ कोख पेट हृदय शूलका चलना अरुचि मुख कंठका सूखना रद्द तथा मनका न लगना प्यास खांसी श्वास शरीर में सूजन शरीरका दहन ४ बारबार दस्तरुधिर मिलाहुआहो कंठ तालू ओठ इनकासूखना मूत्रस्थान तथापैरों में पीड़ा हृदयमें पेटमें गुदामें पीठमें शूल तथा ग्लानि शरीर का कृश तथा गलना तथा निर्बल होना येलक्षण रक्तातिसारके मुनीश्वरों ने निश्चय करके कहे हैं ५ आममिला थोड़ा २ दस्तहो श्वेत तथा रुधिर के समान तथा पीलाबर्ण साथ कष्टके दस्तहो बारबार तत्तागुदासे रांद दुर्गंध युक्त चिकना गुदाग्र में पीड़ा तथा झाग युक्त और गाढ़ा ये लक्षण अतिसारके मनीश्वरों के बचनसे हंसराजने कहाहै ६ ॥

(अतिसारकाअसाध्यलक्षण) अतीसारिणंत्यजेच्छीतगात्रं तृषाशोथशूलान्वितंश्वासयुक्तं ॥ ज्वराध्मानहिक्कान्वितंदाहमूर्च्छा गुदाभ्रष्टशोपार्तिकाशादिजुष्टं ७ (अतिसारकीउत्पत्ति) विरुद्धाशनैःस्निग्धदुग्धान्नदोषैः द्रवस्नेहदुष्टांबुमद्यादिपानैः ॥ गरिष्टाम्लपिष्टैःकृमीणांविकारैरतीसाररोगोभवेन्मानवानाम् ८ (अतिसारेपथ्यम्) अतीसारेत्यजेत्स्नानंसंतापंवह्निसूर्ययोः ॥ तैलाभ्यंगंचव्यायामंगुरुस्निग्धादिभोजनम् ९ ॥ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअतीसारलक्षणम् ॥

ऐसे अतिसारी मनुष्यको वैद्यइलाज न करैं कैसेको कि जिसका शीतल शरीरहो प्यास शूल युक्तहो श्वास ज्वर अफरा हिचकी सूजन इन करके युक्तहो दाहमूर्च्छा तथा कांचका निकरपरना शोकदुःख खांसी युक्तको ७ विरुद्ध भोजन करनेसे चिकनी तथा दूध तथा अन्नइनके दोषसे पतलीतथा तेलकी तथा दुष्टजलके पीनेसे मदिरादिके पीनेसे भारी खट्टा तथा पीसा अन्नके खानेसे और कृमीनके विकारसे मनुष्यके अतिसार रोग पैदाहोयहै ८ अतिसार वाला मनुष्य ये काम न करै नहाना अग्नि और सूर्य इनके तेजका सहना तेलका लगाना तथा कसरत कुस्तीका करना भारी चिकना आदि भोजनका करना ९ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांअतिसारनिदानम् ॥

अथसंग्रहणीनिदानम् ॥

(वातसंग्रहणीलक्षणं) वातोत्थाग्रहणीगदःप्रकुरुतेविड्बंधनंमूर्च्छनं कासंश्वासतरंमुखंचविरसंकंपंशरीरेभृशम् ॥ कुक्षौतालुनिमस्तकेहृदिगलेशोषोगुदेवेदनांकष्टंप्रच्यवतेपुरीषमशकृन्सामंसशब्दंघनम् १ (पित्तसंग्रहणीकेलक्षण) चिन्हंपित्तग्रहण्यांप्रभवतिहृदयेकंठदेशेतिदाहःशूलंमेढ्रेगुदाग्रेरुधिरर तिरतःशुष्कफेनंपुरीषं ॥ तुच्छंतुच्छंसकष्टंक्वचिदपिवहुशोदुष्टगन्धिःप्रयुक्तं पीतंवाकृष्णरूपंवससदृशनिभंरोमहर्षोतितृष्णा २ (कफसंग्रहणीके लक्षण) कफसंग्रहणीकुरुतेहृदयेजड़तामुदरेगुरुतामरुचिं ॥ मनसिभ्रमतांगरुजंशिथिलंश्रितफेनयुतंचपुरीषमरम् ३ ॥

वादीसे उठी संग्रहणी दस्तको बंदकरै है मूर्च्छा खांसी श्वास मुखबेरस शरीरमें कंप कोखतालुआ माथा छाती गला इनका सूखना कष्टसे थोड़ा २ विष्ठाका त्यागहोना आम मिलाहुआ शब्दके साथ गाढ़ा १ पित्तकी संग्रहणीके येलक्षणहैं हृदय में और कण्ठ में दाह लिंगमें शूल गुदाके अग्रभागमें रुधिरका गिरना सूखा तथा झागमिला तथा कष्टसे थोड़ा थोड़ा कभी खट्टा बासको लिये पीला वा काला वा बसाके समान दस्त हो रोमांच तथा प्यास हो २ कफकी संग्रहणी में हृदयका जकड़ना पेट का भारीहोना मनमें अरुचि और देहमें दुःख तथा शिथिलता सपेदझागों का मिला दस्त ये लक्षण कफसंग्रहणी के होतेहैं ३ ॥

(त्रिदोषसंग्रहणीकेलक्षण) ग्रहण्यांत्रिदोषोद्भवायांसकष्टंपुरीषद्रवंशब्दयुक्तंवसाभं ॥ भवेदल्पमल्पंक्वचिद्रक्तवर्णंगरिष्ठोदरंदुष्टदुर्गंधिमिश्रम्४ (सन्निपातकीसंग्रहणी)विष्टंभंग्रहणीगदःप्रकुरुते दोषैस्त्रिभिःशंभवो वैरस्यंशिरसिव्यथांगुरुतमांशूलंगुदापीडनं॥ आलस्यंहृदयेगुरुत्वमरुचिंकाशंतृपासंभ्रमं श्वासाध्मानविवर्णतोदरकृमीन्दाहंकरांध्रोर्वमिं ५ अतीसारेगतेमंदंवन्हीच्छाद्यातिभोजनैः ॥ वर्त्ततेयोभवेत्तस्यग्रहणीदारुणाभशम् ६ ॥

सन्निपातसे पैदाहुई जो संग्रहणी उसमें येलक्षण होते हैं साथ कष्टके और शब्दके दस्तका होना तथा बसा के समान और थोड़ा थोड़ा कभी लालरंगका पेटभारीरहै और बासमिला दस्तहो ४ पेटमें आफरा करती है तथा मुखमें बिरसता शिरमें दर्द औरशूल तथा गुदामें पीड़ा आलकस हृदयका भारीहोना अरुचि खांसी प्यास और श्वास पेटका फूलना शरीर बुरेरंगका पेटमेंकृमी हाथ पावों में दाह और वमन ५ जब अतिसार चलाजाय और जठराग्निकी इच्छा अति भोजनसे बंदकरदे उसके बीर संग्रहणी होतीहै ६ ॥

(संग्रहण्यांपथ्यम्) व्यायाममैथुनंरुक्षंभोजनंवह्नितापनम्॥ तैलाभ्यंगंदिवाश्वापंग्रहणीरोगवान्त्यजेत् ७ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेग्रहणीलक्षणम् ॥

स्त्रीसंग रूखाभोजन आंचसेतापना तेललगाना दिनमें सोना ये संग्रहणी

रोगवाला त्यागदे ७॥ इति दत्तरामकृत हंसराजार्थबोधिनी टीकामें संग्रहणीरोगलक्षण समाप्तहुआ॥

(अथअर्शनिदानम्) गुदाग्रेपुजातानिमांसांकुराणिचतुस्त्रीणि संख्यानिसांगानियानि॥ भवन्तीतिदुर्नामसंज्ञानिनूनंमरुत्श्लेष्मपित्तोद्भवानीहतानि १ (वातकीबवासीरकेलक्षण) शुष्कावातसमुद्भवाश्चिमिचिमास्तब्धागुदास्यांकुराः म्लानाःश्यामतराःखराश्चविकटानीलाश्रिताभाक्वचित्॥ खर्जूराकृतयोंघ्रिहस्तसहिताः शीर्षाननासंयुताः भिन्नाविस्फुटिताननाज्वरकराःपापोत्थित्ता दुःखदा २वातार्शांसिकृशत्वमेववहुलंकुर्वन्तिविड्वंधनं क्षुन्नाशंवलवीर्यकांतिहरणंशूलंगुदापीडनं॥शोषंकंडुरुजंविकारमधिकंशब्दंगुदातोनिशम्॥आध्मानंजठरव्यथांगुरुतमांप्लीहंतनौपांडुताम्३॥

गुदाके अग्रभागमेंहुये तीनवाचारमांसके अंकुर अंगकरकेसहितखोटा नामसंज्ञा जिनकी ऐसेबातपित्त कफसे पैदा होतेहैं १ बादीसे पैदाहुए ये जोगुदाके मस्से उखड़ेहों सूखेहों चिमचिमी लियेहों टेढ़ेहों कुम्हिलायेहुयेहों कालेहों खरदरे बाँके लीले सुपेदहों खजूरफलके सदृशहों हाथ पैर शिर मुंहकेचिन्ह संयुक्तहों अलग २ फटे मुखके ज्वरकरनेवाले पापसे पैदा दुःखके देनेवालेहैं २ बादीकी बवासीर मनुष्यको कृश करै है तथा दस्तकोबंदकरै भूखकोबंदकरै बलवीर्य तेजको दूरकरैहै शूल पेटमें गुदामेंदर्द शरीरकोसुखावे खुजलीचलै दुःखकरै अधिक बिकार तथा गुदासे शब्दके साथ अधोवायु चलै अफरा पेट में भारी व्यथा प्लीह शरीर पीलाकरैहै ३॥

(पित्तकीबवासीरकालक्षण) गुदांकुरास्तुपित्तजाभवंतिपक्वबिंबभाःश्रवंतिरक्तमुल्वणंचमासिमासिमेदुराः॥ अजाविशूकरीशुनीगवांस्तनोपमाहिते॥खराजलौकिकाननाःमहांतदोषसंभवाः४ स्वल्पात्स्वल्पतरंसुरोषमर्रांतंविड्बंधनंकूजनं कष्टंवातसमन्वितंसरुधिरंशूलंगुदागर्जनं॥ प्लीहंवीर्यबलक्षयंशिथिलतांगुल्मांत्रवृद्धिं भ्रमः पित्तार्शांस्यरुचिंतृषांवहुतरांकुर्वंत्यनाहंश्रमं ५ (कफबवासी

रकेलक्षण) कंड्वाढ्यागुदसंभवाखरतरामांसांकुरापिच्छलास्त ब्धाःश्वेतनिभाःमृगीस्तनसमाःस्निग्धाश्चस्पर्शप्रियाः ॥ स्थूला मूलदृढाभवंतिमिलिताःकर्पासबीजोपमाः बंध्यावद्धमुखाव्यथादि जनकाःपापोद्भवादारुणाः ६ ॥

पित्त बवासीरके मस्से पके कंदूरीफलके समान हों जिनसे खूनटपके महीना महीनामें छिपाहुआ बकरी शूकरी कुतिया गौ इनके थनों के सदृश हों खरदरेहों जो कंके मुखके आकारहों ये बहुत दोषसे होतेहैं ४ पित्तकी बवासीर दस्तको बहुत कम निकारै मनकहीं न लगे दस्तका बंद होना गूंजना कष्ट पूर्वक अधोवायु रुधिर के साथनिकसना शूलके साथ गुदा का गर्ज्जना प्लीह वीर्य बलका नाश शिथिलता गोला अन्त्रवृद्धि भ्रम अरुचि प्यास ज्यादा अनाह श्रम ये लक्षण पित्तकी बवासीर करैहैं ५ गुदाके मस्सों में खुजली चले खरदरेहों और गाढ़े टेढ़ेहों सपेदहों मृगीके स्तनों के समानहों चिकने और सिरानाप्रियलगे स्थूल दृढ़ जड़वाले कपास बीजके समानहों रुधिरननिकले बद्धमुखवाले दुःखकेदेनेवाले पापसेउठेदारुण६॥

(कफकीबवासीरकेलक्षण) संकोचंगुदबंधनंचजठरेकुर्वंत्यनाहं दृढं तुच्छंकष्टतरंपुरीषमशकृन्निद्रांतनौपांडुतां ॥ आध्मानंगुरुता भृशंशिथिलतांहर्षक्षयंक्षीणतांश्लेष्मार्शांसिशिरोरुजंबहुतरंजाड्य म्बलौजःक्षयम् ७ (सन्निपातबवासीरकालक्षण) अर्शांस्यसाध्या निगुदोद्भवानित्रिदोषजातानिसमस्तरोगान् ॥ तन्वंतिकार्श्यंरुधि रंश्रवंतिदहंतिवीर्य्यंददतीहदुःखम् ८ (बातकीबवासीरकापथ्य) त्यजेदर्शसासंयुतोवातजेन नरःसर्वदामैथुनंरुक्ष्यभोज्यं ॥ कषायं श्रमंमद्यपानंविदाहि जलस्यावगाहंवहिःश्वापमेतत् ९ ॥

गुदाका बंधन तथा संकोच उदरमें अनाह थोड़ाकष्टके साथमलका त्याग नींद तथा पीलिया अफरा भारीपना शिथिलता हर्षक्षय क्षीणपना मथवाय बलतेजका क्षय ये कफकी बवासीर के लक्षणहैं ७ त्रिदोष में पैदा हुई बवासीर सब असाध्यहैं और सबरोगों को पैदा करैहै कृशताको पैदाकरै रुधिरको ज्यादा निकारै वीर्यको दहन करै दुःख को देय ८ बातकी बवा

सीर वाला मैथुन रूखा भोजन सैकली वस्तु श्रम मद्यपान दाहकर्ताबस्तु जलमें घुसिके स्नानबाहरकासोना ६॥

(पित्तकीबवासीरकापथ्य) पित्तजेनार्शसायुक्तस्त्यजेत्क्षारोष्णभोजनं॥ व्यायामंसूर्यसंतापंकटुवम्ललवणानिच१० (कफकीबवासीरकापथ्य)कफार्शसायुक्तनरःप्रवातंजलावगाहंमधुराम्लशीतं ॥ त्यजेदतिस्निग्धगरिष्टभोज्यंश्वापंदिनेजागरणंरजन्यां ११ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेऽर्शसांलक्षणम् ॥

पित्तकी बवासीरवाला मनुष्य इतनी वस्तु त्यागदेय क्षार मिला अन्न तथा गरमभोजन दंडकसरत सूर्य्यके घाम में डोलना कड़वी खट्टी चरफरी नोनकीवस्तु १० कफकी बवासीरवाला नर हवा जलमें घुसकरन्हाना मीठीवस्तु खीरी तथा खट्टी अति चिकनी भारी वस्तुका भोजन दिनमें सोना रातमें जागना त्यागदे ११ इतिहंसराजार्थबोधिनी टीकामें बवासीर रोगसमाप्त हुआ ॥

(भगंदरलक्षणम्) गुदतःपरितोद्वितीयेंगुलके पिडिकार्तिकरोरतिकृज्ज्वरदः॥ भगदारुणकोरुधिरेणयुतो मुनिभिर्गदितस्तुभगंदररुक् १ (बातकेभगंदरकालक्षण) भगंदरोमरुद्भवोरुजांकरोतिदारुणो ह्यपानवातसंभवोगुदंप्रपीडयेन्निशं॥ करोतिपैडिकाशतंविपाकदाहसंयुतं व्रणौश्चरौघिरैनदीपुरीपमूत्रबंधनं २(पित्तजनितभगंदरकेलक्षण) भगंदरोतिदारुणःकरोतिपित्तजोहितं गुदेचपैडिकारुणाविपाकदुःखभूमिकाः॥ अनेकधामुखाखरास्तुपूयशोणितावहः कटौव्यथामनेकधामपानकोपतोभवा ३ ॥

गुदाके चारों तरफ दूसरे अंगुलमें मरोरी दुःखकी देनेवारी अरतिकी करनेवाली ज्वरकी करनेवाली भगके और गुदा बीचमें भगकी सी तरह भगदारणक रुधिर युक्त होताहै इसीसे मुनियोंने इसका नामभगंदर कहा है १ बादीसे और अपान बायुसे उत्पन्न जो घोर भगंदर वो दारुण पीड़ा करै है और गुदामें अत्यन्त दुःखहो और सैकड़ों मरोरी गुदाके ऊपर करैं और वे पकजावें तथा दाहहो और घावहोजाय रुधिर बहै दस्तपेशाब का बन्द होना ये लक्षण होतेहैं २ पित्तसे पैदा जो अति दारुण भगंदर

उसके ये लक्षणहैं दुःखहो गुदाके ऊपरलाल २ मरोरीहों और वे पकिजा-वें खेदको पैदाकरैं अनेकमुखहो करड़ीहो राधरुधिर जिनसे श्रवै कमरमें दर्द हो यह भी अपान बायु के कोपसे पैदाहोताहै ३ ॥

गुदांतेपीडिकांकुर्याद्भगंदरगदोनिशं॥कंडूशोथंव्यथांपाकेरक्तपूयवहाःकृमीन् ४ (सन्निपातजनितभगंदरलक्षणं) आहुस्तंचभगंदरंकफमरुत्पित्तोद्भवंपंडिताः विस्फोटैर्दहतेगुदंकृमिकुलैरत्यामिषंयोनिशं॥ पक्वेश्छिद्रसमन्वितैःसरुधिरंपूयंश्रवत्यामिषं शोथंकंडुरुजादिकंवितनुतेऽपानेनविड्वंधनम् ५ ॥ इतिश्रीभिषकचक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेभगंदरलक्षणम् ॥

भगंदरकारोग गुदामेंमरोड़ी पैदाकरै औरउनमें खुजलीचलै तथा शोष हो पकनेमें दर्दहो रुधिर तथा राधबहे और कृमि पड़जायँ ४ जिस भगंदर में ये लक्षणहों उसको पंडित सन्निपातका कहतेहैं जिसमें बडे २ फोड़े करके गुदामें दुःखहो और कृमीनके समूहसे निरंतरव्याकुलहो और पक जाय तथा गुदाके वारपार छेद होजाय उनछेदों में राधरुधिर मलमांस निकलै सूजन खुजलीहो अपान पवनसे गुदाद्वारा मलकानहीं उतरना ५ ॥ इतिहंसराजार्थ वोधिनी टीकामें भगंदररोग समाप्तहुआ ॥

(अजीर्णरोगकेलक्षण) भुक्तान्नपाचितंनैववह्निनोदरजेनतत्॥ तस्योपरिपुनर्भुक्तमजीर्णंतंविदुर्बुधाः १ भुक्तान्नंनविपाकमेतिजठरे विण्मूत्रयोस्तंभना द्रात्रौजागरणात्दिवातिशयनादत्यंवुपानान्नृणां ॥ दुर्भक्ष्याद्विषमाशनादतिभयात्क्रोधाद्विरुद्धासनात् मंदाग्नौ वहुभोजनाद्गुरुतरात्प्रद्वेषतश्चिंतया २ वाताधिकेविषमतासमुपैति वह्निःपित्ताधिकेभवतिवह्निरतीवतीक्ष्णः ॥ श्लेष्माधिकेजठरजो हुतभुक्समंदोवाताधिकेषुसमकेषुसमोग्निरस्त्ये ३ ॥

खाया हुआ तो अन्न जठराग्नि करके पचानहीं और तिसके ऊपर फेर खावे उसको पंडित अजीर्ण कहतेहैं १ मलमूत्र के रोकनेसे रातमें जागना दिनमेंसोना बहुत पानीपीना गरिष्ठ भोजनकरना बिषम भोजनसे अतिभय से क्रोधके करनेसे बिरुद्ध भोजनसे मंदअग्निमें ज्यादा भोजनसे द्वेषसे चिन्ताके करने से खायाहुआ अन्न पेटमें पचता नहीं है २ वाताधिकसे

विषमाग्नि पित्ताधिकसे तीक्ष्णाग्निकफाधिकसे मन्दाग्नि और वात पित्त कफके समान होनेसे समाग्नि होतीहैं ये चार प्रकार की अग्नि मनुष्यों के होतीहै ३ ॥

विष्टब्धंविषमोनलःप्रकुरुतेरोगांश्चवातोद्भवान् तीक्ष्णाग्नि र्विदधातिपित्तजनितान्रोगान्विदग्धाशनं ॥ आमंश्लेष्मसमुद्भवान्वितनुतेरोगांश्चमन्दानलो नैरोग्यंहुतभुक्समोहिसततंधत्तेरुचिं मानसीं ४ (वाताजीर्णकेलक्षण) वाताजीर्णेचिन्हमेतत्प्रसिद्धंजृम्भाशूलंक्षुत्पिपासांगमर्दः॥ साम्लोद्गारोधूमयुक्तोतिकष्टःश्वासःशोषोमूत्रघातोथहिक्का ५ (पित्ताजीर्णकेलक्षण) मूर्च्छादाहःसंभ्रमःशूलमुग्रंतृष्णोद्गारोधूमयुक्तोतिसाम्लः ॥ मोहःस्वेदःछर्दनंगन्धिसांद्रंपित्ताजीर्णेलक्षणंसद्भिरुक्तम् ६ ॥

विषमाग्नि अफरा और वातके रोगोंको पैदाकरैहै तीक्ष्णाग्नि पित्त के रोगोंको औरअन्नको दग्ध करदे मन्दाग्नि कफके रोगोंको और आम को पैदा करैहै समाग्नि नैरोग्य और रुचिकोपैदाकरैहै इसीसे यहअग्निश्रेष्ठ है ४ वातके अजीर्णमें ये लक्षण होतेहैं जंभाई शूल प्यास धूमयुक्तखट्टी डकार भूख अंगोंका टूटना अतिकष्ट श्वास शोष मूत्रघात हिचकी ५ मूर्च्छा दाह भ्रम घोर शूल प्यास धूमयुक्त खट्टी डकार बेहोसी पसीना वासके साथ और गाढ़ीरद ये पित्ताजीर्णके लक्षणहैं ६ ॥

(कफाजीर्णकेलक्षण) कफस्याजीर्णेभवतिगुरुताछर्दिरधिका अतीसारःशोथोरुचिरपितृषाक्षुद्विकलता ॥ वमिर्लालावक्त्रादरतिरुदरेभारमधिकं शिरःकंठेनाभौगुदपवनसंचारमधिकं ७ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रेअजीर्णनिदानंसमाप्तम्शुभम् ॥

शरीर भारी बहुत रद्दका होना अतीसार सूजन अरुचि प्यास क्षुधा बेकली वमन मुखसे लारका बहना मनका न लगना पेटभारी शिरकंठ नाभि इनमें अपान वायुका चलना ७ इति हंसराजार्थबोधिनी टीका में अजीर्णनिदान समाप्त हुआ ॥

(अलसविलम्बिकानिदानं) अजीर्णतोविशूचिकाभवेद्विलंविकाथवा विशूचिकोर्ध्वगामिनीक्षणेननाशयेन्नरं ॥ अधोगतिर्विलंविकाविलम्बकारिणीतिसा॥अपानवातप्रेरितामनोजवृत्तिहारिणी १ भुक्तान्नंप्रहरात्पूर्वंद्रवंकृत्वोर्ध्वमानयेत् ॥ यासाविशूचिकाप्रोक्ताधोनयेन्माविलंविका २ (विशूचिकाकेलक्षण) अतीसारमूर्च्छापिपासांगपीडाभ्रमोल्लासहिक्काविमुक्तांगसन्धिः॥ निमग्नेक्षिणीकृष्णदन्तोष्ठजिह्वाविसंज्ञाविशूच्यांभवन्तीहशूलं ३ ॥

अजीर्णसे विशूचिका वा बिलंबिका पैदा होती है जिसमें बमन हो उसे विशूचिका कहतेहैं और जिसमें दस्तहो उसे बिलंबिका कहते हैं विशूचिका क्षणमें मनुष्यको मारडारै और बिलंबिका कुछदेरमेंमारैहै अपान बात करके प्रेरित मनतेजइनकी वृत्तिको दूर करनेवाली है १ ये माधव कहै पहले श्लोकमें जोकहिआये उसेही फेर कहतेहैं खाया हुआ अन्नको पहरभर पहले पतलाकर जो ऊपरकी रास्ता अर्थात् रद्दलावेउसे विशूचिकाकहतेहैं और जोनीचे मार्ग अर्थात् दस्तलावै उसेबिलंबिकाकहतेहैं २ दस्त मूर्च्छा प्यास अंगोंमेंपीड़ा भ्रम उल्लास हिचकी अंगकीसंधिर ढीली होजाय नेत्र बैठजाय दांतजीभओठ काले बेहोशी शूल ये लक्षण विशूचिकाके हैं ३ ॥

विशूच्यामशुद्धिर्वमिर्मूत्रघातोभवेद्वेपथुःकंठवक्त्रोष्ठशोषः॥विसंज्ञारतिर्देहदाहोल्पशब्दस्त्वचाकोचनंक्षुद्विनाशोल्पचेष्टा४ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअजीर्णविशूचिकालक्षणं ॥

अपवित्रता बमन मूत्रघात कंप कंठ मुखओठ इनका सूखना बेहोशी मनडामाडोल शरीरमें दाह मन्द २ बोलना त्वचा का सुकड़ना भूख का नाश चेष्टा रहित येभी विशूचिकाके लक्षण होतेहैं ४ इतिश्रीहंसराजार्थबोधिनी टीकामें विशूचिका रोग तथा बिलंबिकारोग समाप्त हुआ ॥

(अथकृमिनिदानं) जायन्तेकृमयोनरस्यजठरेवाह्येचयूकादयो वाह्याभ्यन्तरभेदतोवहुविधाःसूक्ष्मातिसूक्ष्मास्तथा ॥ दीर्घादीर्घतराःस्रवन्तिमिलिताभिन्नाःपराजन्तवो नानावर्णसमन्विताबहुपदःपादैर्विहीनाःपराः १मूर्च्छार्तिकंडुपिटिकाश्चकोटरान्कुर्वन्त्यतो

सारमनाहसंभ्रमं॥ दाहंविवर्णवमथुंविगन्धितांकार्श्यंशरीरेकृमयो मुहुर्मुहुः२ उदरगतकृमीनांचिन्हमेतन्नराणांभवतिहृदयदाहःसंभ्र मोंगविकारः ॥ अरतिरुधिरकाशंछर्द्यतीसारशूलं सकलविकलका यःष्ठीवनंनिर्बलत्वं ३ ॥

कृमि रोग दो तरहका है एक बाहरी दूसरा भीतरीपेटमें गिडोहेआदि हो सो भीतरी और बाहर जुयें लीख आदि होतेहैं ऐसे बाहर और भीतरके भेदसे तथा छोटेसे छोटे और बड़ेसे बड़ेके भेद करके बहुतभेद हैं नाना वर्णके बहुत पाद तथा पादरहित होतेहैं १ मूर्च्छाआर्त्ति खुजली पिटिका इनका खजाना अतीसार अनाह भौर दाह शरीरका वर्णऔरही तरहका वमन दुर्गंध शरीर कृश कृमि ये लक्षण कृमि रोगमें होतेहैं २ उदरमें कृमि पड़गये हों उसके येचिन्हहैं हृदयमेंदाह भौर शरीरमेंविकार मन न लगे दस्तमें रुधिरका गिरना खांसी वमन दस्त शूलसब शरीरमें बेकली बारबार में थूकना निर्बलता ३ ॥

(कृमिरोगकीउत्पत्ति) भुक्तस्योपरिभोजनेनमधुराम्लाभ्यांमृ दाभक्षणाद्दध्नामाषपयोभिरामिषयुतैःश्लेष्मोद्भवाजन्तवः ॥सन्ता पक्षतशोफशाकमधुभिर्मद्येनरक्तोद्भवाः अन्यैर्वाकृमयोभवन्तिजठरे न्दृणांसदादुःखदाः ४ (कृमिरोगेपथ्यम्) कृमिवान्संत्यजेन्मिष्टं पिष्टंशाकंपयोगुडम् ॥ अव्यायामंमृदञ्चाम्लंमाषंमांसंद्रवंदधि ५ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकृमिलक्षणम् संपूर्णम् ॥

भोजनके ऊपर भोजन करनेसे मीठाखट्टा मट्टी दहीदूध उर्द मांस इन से कफकी कृमि पैदाहोतीहै सन्ताप घावसूजन सागके खानेसे सहत मद्य इनसे रुधिरकी कृमि पैदा होतीहै औरभी प्रकारसे कृमी मनुष्यके पेट में दुःखकी देनेवाली होतीहै ४ कृमि रोगवाला मीठा पिसा अन्न शाक दही दूध गुड़ दंडकसरत का न करना माटीखाना खट्टीवस्तु उर्द मांस पतलीवस्तु इनको त्यागदे ५ इतिहंसराजार्थबोधिनी टीकामें कृमिरोग समाप्त हुआ ॥

(पाण्डुरोगनिदानम्)दोषाःसंकुपितास्त्रयोपिदधतेपाण्डुंशरीरे

रुजं न्तृणांतीक्ष्णातमंद्रवञ्चलवणांरूक्षामिषंसेविनं ॥ मृत्पूगीफल भोजिनांहिसततंरात्रौदिवाशायिनांस्त्रीष्वत्यंतविलासिनांप्रतिदिनंशाकाम्लसंभक्षिणाम् १ (वातकेपीलियाकेलक्षण) पाण्डुर्वातसमुद्भवोनयनयोरुक्षंत्वचःस्फोटनम् तोदानाहकृमीन्करोतिकृशतां गुह्यस्थलेशोफतां ॥ हृत्कंपंश्वसनंतनौमलिनतांपीतद्युतिंक्षीणतां मन्दाग्निंबलवीर्यकान्तिहरणांछर्दिंतृषांदारुणाम् २ (पित्तकेपीलियाकालक्षण) अक्ष्णोर्मूत्रपुरीषयोस्त्वचिनखेष्वन्तेषुपीतप्रभांश्वासंकाससमन्वितंकृशतनुंमूर्च्छामतीसारकं ॥ हृल्लासंहृदिसंभ्रमंविकलतांदाहंतृषासंयुतं पाण्डुःपित्तसमुद्भवोप्रकुरुतेशोषंमुखेशोफताम् ३ ॥

जो मनुष्य तीखी पतली ज्यादा नोन रूखामांस मट्टी सुपारी इनको खावे तथा रातदिन सोवै बहुत मैथुनके करनेसे नित्य साग और खट्टा खानेसे तीनों दोष कुपितहो पीलियाके रोगको पैदा करते हैं १ बात से पैदाहुये पीलियाके ये लक्षणहैं नेत्रों में रूखापन त्वचाका फटना सुई की तरह चुभनेका दर्द अनाह तथा शरीर कृश भूमगुह्य इन्द्रीपरसूजन हृदयमें कंप श्वास शरीर मलिन तथा शरीर पीला मन्दाग्नि बलबीर्य कांति का नाश बमन प्यास मुखका सूखना २ नेत्र पेसाब दस्त शरीर की त्वचा नख इनका पीला होना श्वास खांसी शरीर कृश मूर्च्छादस्तों का होना सूखी उलटी हृदयमें भूमबेकली दाह प्यास मुखका सूखना तथा सूजन ये पित्तसे पैदाहुये पांडुरोगके लक्षणहैं ३ ॥

(कफकेपीलियाकालक्षण) शुक्लाननंशुक्लपुरीषमूत्रंतंद्रालसंस्त्रीष्वरुचिंकृशत्वम् ॥ लालावमित्वंश्वपथुंगुरुत्वंपाण्ड्वामयश्श्लेष्मभवःकरोति ४ (सन्निपातकेपाण्डुरोगलक्षण) त्रिदोषोद्भवे पाण्डुरोगेकृशत्वंभवेत्श्वासकाशंतृषांवेपथुत्वम् ॥ शिरोर्तिप्रसेकोरुचिःसंभ्रमत्वम् बलौजोविनाशःक्रमोछर्दिशूलं ५ त्रिदोषान्वितःपाण्डुरोगीभिषग्भि रसाध्योनिरुक्तोहताक्षोविचेष्टः ॥ ज्वरःश्वासहृल्लासकाशातिसारः तृषासंभ्रमोंगेषुकंपःप्रलापी ६ ॥

सपेदमुख सपेद पेसाब और मल तन्द्रा आलकस स्त्रीसंगकी इच्छा का नाश कृशता लारका पड़ना वमन शरीरका भारीहोना ये लक्षणकफ से पैदा हुआ पांडुरोग करताहै ४ सन्निपातसे उत्पन्नहुआ पांडुरोगउसमें येलक्षण होतेहैं शरीर कृश श्वासखांसी प्यास कंप मथवायपसीनेका आना अरुचि भ्रम बल कांतिकानाश ग्लानिवमन शूल ५ त्रिदोष युक्त पांडुरोगी ऐसा वैद्यों ने असाध्यकहाहै नेत्रसेरहित चेष्टाकरकेहीन ज्वरश्वास सूखी उलटी खांसी अतीसारप्यास और अंगोंमेंकंप वाहियात बकना ६ ॥

यःश्रोतांसिरुणद्धिसोमुनिवरैस्त्याज्योभृशंदूरतः तेजोवीर्यवलौजसांप्रतिदिनंहानिंकरोतिध्रुवं ॥ पाण्डुत्वंत्वचिनेत्रयोःकररुहेअंत्रेषुविण्मूत्रयोर्धत्तेवह्निविनाशकोऽतिवलवान्पाण्डुर्मनुष्यादनः ७ (पाण्डुरोगेपथ्यम्) पाण्डुरोगीत्यज्येदम्लंदिवास्वापञ्चमैथुनं ॥ शाकंमांसाशनंरुक्षंमृद्भक्षमतितीक्ष्णकम् ८ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेपाण्डुरोगलक्षणम् ॥

ऐसा पांडुरोगी वैद्यों करके त्याजहै जो कानोंसे बहरा करदे तेज वीर्य बल कांति इनकी प्रतिदिन हानिकरै त्वचा नेत्र नख आंत मलमूत्र ये पीलेहों जठराग्नि से रहित ऐसा पांडुरोग बली मनुष्य का मारने वाला जानना ७ पीलिया रोगवाला मनुष्य खटाईका खाना दिनमेंसोना तथा स्त्रीसंग करना शाक मांस रूखी वस्तु मट्टीखाना अतितीखी मिरच आदि वस्तुका खाना त्यागकरै ८ ॥ इति हंसराजार्थबोधिनी टीकामें पांडुरोगका निदान समाप्त हुआ ॥

(हलीमककामलाकुंभकामलापानकीरोगनिदान) हृत्पद्मेमलमूत्रयोर्नयनयोर्धत्तेतिपीतद्युतिं दौर्वल्यंवलवीर्ययोरनुदिनंनाशञ्च मंकामलां ॥ अस्थिरस्फोटवतींकरोतिविकलंमांसाशनाद्रक्तपा संतापंकरयोर्मुखेत्वपखयोःशोफंचपादद्वयोः १ (हलीमकरोगनिदानं) करोतिकुम्भकामलानखेषुनेत्रयोर्मुखे पुरीषमूत्रयोर्भृशंसकृष्णतां तृषार्तिकृत् ॥ वलाग्निवीर्यतेजसांविनाशिनीप्रकंपिनीज्वरांगदाहवर्द्धिनीविमोहशूलदायिनी २ षट्चक्रेषुनखेषुमूत्रयुगलेविण्मूत्रयोर्नीलतां संधत्तेचहलीमकंकृशतनुःस्त्रीषुप्रहर्षक्षयम् ॥ संतापंकुरु

तेरुजंवितनुतेपित्तानिलोत्थंगदं तन्द्राअंगविमर्दनंशिथिलतांश्वासं भ्रमंवेपथुं ३ नखेष्वंगदेशेषुमूत्रेपुरीषेद्वयोर्नेत्रयोःपांडुतातृट्प्रसेकः ॥ वहिःशीततात्भ्यन्तरेत्यंतदाहोवदेत्पानकीलक्षणैर्लक्षणज्ञः ४ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे कामलाकुम्भकामलाहलीमकपानकीलक्षणम् ॥

जोमनुष्य मांसखावै तथा रुधिर पियाकरै उसके कामलारोग प्रगटहो और येलक्षणको करैहै छाती मलमूत्र नेत्र येपीलेहों दुर्बलता बलबीर्यका नाश भ्रम हड़फूटन बेकली संताप हाथमुख अंडकोश इनमें सूजन तथा पैरों में सूजनहो १ कुम्भकामला देहमें येलक्षण करैहै नख नेत्र मुखपीला तथा दस्त पेसाब काला प्यास पीड़ा और बल अग्नि वीर्य्य तेजनाशक कम्पज्वरदेहमें दाहमोह शूलकरैहै २ छःचक्रों में नखों में नेत्रों में मलमूत्र में जो नीलापनाकरदे औ शरीर पतला स्त्रीसंगकी इच्छाको दूर करदे बेकलीतंद्रा अंगों का टूटना शिथिलता श्वास भ्रम पीड़ा इनलक्षणों को बात पित्तसे पैदाहुआ हलीमक रोग करताहै ३ नखों में शरीरमें मलमूत्र में नेत्रों में पीलाईहो प्यास पसीना बाहरीजाड़ा भीतरीदाह इनलक्षणों से लक्षणका जाननेवाला पानकी रोगजानें ४ ॥ इतिहंसराजार्थ बोधिन्यां कामलाकुम्भकामलाहलीमकपानकीरोगनिदानम् ॥

अथरक्तपित्तनिदानम् ॥

(रक्तपित्तकीउत्पत्तिलक्षण) व्यायामैरविवह्नितापसहनैस्तीक्ष्णोष्णकट्वामिषैरत्यंतंसुरतैर्दिवातिशयनैः स्निग्धान्नसंभोजनैः॥ एतैःसंकुपितंतुपित्तमधिकंनिर्गत्यवाह्यांतरात् छर्दिर्लोहितमांचनेत्रयुगलेरक्तेतनौमण्डलम् १ निःश्वासेलोहगंधिःप्रभवतिशिरसोरक्तधाराचकोष्णा सन्तापःकोष्ठपीडानयनविकलतारोचकःक्षीवनत्वं॥तृष्णामूर्च्छाप्रसेकोमनसिशिथिलतासंभ्रमोदेहदाहःकाशश्वासोल्पचेष्टाकृशतरहुतभुक्रक्तपित्तस्यकोपात्२ अधोर्ध्वंभवेद्रक्तपित्तप्रवृत्तिःश्रुतिघ्राणवक्त्राक्षिभिश्चोर्ध्वदेशे ॥ गुदायोनिमेढ्रैरधोयातिरक्तंसमस्तैश्चरोमैःशरीरस्यवाह्यैः ३ ॥

दंड कसरतके करनेसे घाममें डोलनेसे अग्निके तापनेसे तीखीगरमी कडुई मांस इनके खानेसे अति स्त्रीसंगसे दिनमें सोनेसे स्निग्ध अन्नके भोजनसे कुपित हुआ जो पित्तसो रुधिरको बिगाड़कर रुधिरकी उलटी करावे तथा नेत्रोंसे रुधिरगिरै और शरीरमें खून बिगड़नेसे चकत्ते हो- जायँ १ रक्त पित्तके कोपसे ये लक्षणहो श्वास लेनेमें लोहकीसी गंधहो शिरसे रुधिरकी गरमधार पड़ै प्यास व्याकुलहो उदरमेंपीड़ा नेत्रोंमेंबेक- ली अरुचि रुधिरका थूकना मूर्च्छा तथा पसीनेका आना मनमें शिथिलता भ्रम देहमेंदाह खांसी श्वासहीन चेष्टा अग्निमंद २ रक्त पित्तकी प्रवृत्ति ऊपर तथा नीचेके रास्तासे निकसै सो लिखतेहैं जो कानोंसे नाकसे मुखसे नेत्रसे रुधिर गिरै उसे ऊर्ध्व प्रवृत्ति जाने और गुदाके द्वारातथा योनिद्वारा लिंगसे रुधिरगिरै उसे अधोप्रवृत्ति जाने और सब रोमोंसेशरीर के बाहर निकसताहै ३ ॥

रुक्षारुणांश्यामतरंचरक्तंवातात्मकंतंप्रवदन्तिवैद्याः ॥ पित्तो त्थितंरक्ततमंकषायंस्निग्धञ्चसांद्रंकफजंसफेनं ४ ऊर्ध्वगंकफजं रक्तमधोगंमारुतोद्भवं ॥ रोमकूपैर्वहिर्यातंतंविद्यात्पित्तसंभवम् ५ अधोर्ध्वगंवातकफप्रकोपात्द्विदोषजंतंजपदानसाध्यं ॥ अधोर्ध्वरो मैर्जनितंत्रिदोषकोपादसाध्यंमुनिभिःप्रदिष्टम् ६ ॥

रूखा लाल काला जो रुधिर निकलै उसे बातका रक्तपित्त वैद्य कहतेहैं और लाल कसेला पित्तका तथा चिकना गाढ़ा झागयुक्त कफका कहतेहैं ४ जोऊपरी मार्गसे रुधिरगिरै उसे कफका जानो और नीचे मार्गोंसे गिरै उसे बातका जानो और जो रोमोंसे गिरै उसे पित्तका जानो ५ बातकफ के कोपसे ऊपर तथानीचे मार्गोंसे रुधिर गिरताहै उसे द्विदोषका जानो वह जपदानके करनेसे अच्छाहो और नीचे तथा ऊपरका तथा रोममार्गोंसे जो रुधिरगिरै उसे सन्निपातका जानै वह मुनियोंने असाध्य कहाहै ६ ॥

रक्तपित्तंसुखंसाध्यंनिरुपद्रवमेवतत् ॥ सोपद्रवंतुदुःसाध्यंजप होमौषधादिभिः ७ उद्गारेलोहितंयस्यक्षुधेनिष्ठीवनेतथा ॥ भवे न्मूत्रेपुरीषेवारक्तपित्तीम्रियेन्नरः ८ (रक्तपित्तरोगेपथ्यम्) व्याया मंघर्मसंतापंतीक्ष्णोष्णाकटुकानिच ॥ दिवास्वापमतिस्निग्धंरक्त

पित्तीनरस्त्यजेत् ६ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेरक्तपित्तलक्षणम् ॥

जो उपद्रव रहित रक्त पित्तहो वोसुख साध्यहै और जो उपद्रवके साथ हो वो असाध्यहै सो जपके करानेसे होम और औषधि करनेसे भी नहीं अच्छाहो ७ जिस मनुष्यके डकार लेनेमें लोहे की वासमारे तथा छींकनेमें थूकनेमें मूत्रमें मलमेंरुधिरगिरे वो रक्तपित्ती मनुष्यमरै ८ दंडकसरतका करना धूपमें डोलना खेद तीखी गरम कटु वस्तुका भोजनदिनमें सोना अत्यंत चिकनी वस्तु रक्तपित्तवाला त्याग करदेवै ६ ॥ इतिहंसराजार्थ बोधिनी टीकामेंरक्तपित्तरोगनिदानसमाप्तहुआ ॥

(यक्ष्मणोत्पत्तिः) योभारंवहतेनरोगुरुतरंसंपीड्यतेयक्ष्मणा शस्त्रास्त्रैःपरिघातितोदृढधनुःप्राकर्षतःपीडितः ॥ उच्चैर्वापतितोमहाद्रुमतरुभिःसंदीपितोमर्दितो दंडैर्मुष्टिकसादिभिःपरिहतःसंधर्षितःशापितः १ (अथनिदानम्) देहस्थोराजयक्ष्माहृदिकफनिचयंवर्द्धतेशोषतेंगं नाडीमार्गैरुणद्धिज्वरयतिमनुजंक्षीयतेधातुसंघान् ॥ वीर्यौजःकांतितेजोऽनलवलपिशितंहंतिपांडुंविधत्ते ऊर्ध्वंश्वासंतनोतिप्रसरतिहृदयेक्षीणशब्दंकरोति २ यक्ष्मारुक्कुरुतेरुचिंकृशतनुं सूक्ष्मंज्वरंगौरवं देहंजर्ज्जरितंक्षतंचगलकेकाशाधिकंशोषणम् ॥ संतापंहृदिवेपथुंसरुधिरंनिष्ठीवनंपूयभं मोहच्छर्दरतिभ्रमंशिथिलतांशूलंक्वचिद्दारुणम् ३ ॥

जोमनुष्य भारी बोझको उठावै तथा शस्त्र अस्त्रसे घायलहो दृढ़ धनुषके खींचनेसे कोई कारणकर पीड़ित होनेसे उच्चपर्वत वावृक्षके गिरनेसे जलनेसे और मीड़नेसेतथा दंड कोरड़ाघूंसे आदिके पिटने से डरपनेसेमहात्माओंके शापसे क्षयीरोग पैदा होताहै १ देहमें क्षयीरोग स्थितये लक्षणोंको करैहै हृदयमें कफको बढ़ावै शरीरको सुखदेवै नाड़ीके मार्गोंको रोकदे ज्वरवान् करदे धातुके समूहको सुखायदे वीर्य बलतेज ताकतकांति जठराग्नि के बलको तथा मांसको क्षीण करदे पीलियाको करै उर्ध्वश्वासकोकरै तथा क्षीण शब्दको करैहै २ अरुचितथा कृशदेह मंदज्वर शरीरभारी जर्जरशरीर गलेमेंघाव खांसी शोष खेद हृदयमें कंप रुधिर राधमिला थूकना बेहोशी रुकाना मनका डामाडोलहोना भ्रमशिथिलता कभी

महाशूल होजाय अथवा शूलजोरसे चलना ये लक्षण क्षयीरोग केहैं ३ ॥

विवर्णशरीरंशकृद्रक्तमूत्रं करोत्यंगपीडांमहाराजयक्ष्मा॥ ततो शून्यतांबुद्धिनाशंप्रलापं गलेघर्घरत्वंयुवत्याप्रहर्षं ४ (वातकीक्षईकालक्षण) मन्दाग्निर्बलवीर्ययोरनुदिनंहानिःकृशत्वंवपुः कासःशुष्कतरोरुतंकृशतरंश्वासोरुचिःशोपता ॥ रुक्षोमंदतमोज्वरःक्लमथुतानिष्ठीवनंपूयनं छर्दिर्वायदिवेपथुर्भवतितत् वातक्षयेलक्षणम् ५ (पित्तकीक्षयीकेलक्षण) पीडाकुक्षिशिरोगलेषुहृदयेरक्तंचनिष्ठीवनं शीतेम्लेधिकतारुचिर्ज्वलनताकंठेविगन्धिर्मुखे॥ कासःश्वाससमन्वितः कृशतनुर्भिन्नस्वरोल्पज्वरस्तत्पित्तक्षयलक्षणानि गदितंवैद्यैःसुषेणादिभिः ६ ॥

शरीरका वर्ण औरही प्रकारको होजाय वारवार लाल पेशाब उतरे शरीरमें पीड़ाहो सुन्न शरीर पड़जाय तथा बुद्धिका नाश वरीना गलेमें घर घरशब्दहो स्त्री के साथ रमणकी इच्छाहो येलक्षण महाराजयक्ष्मा करता है ४ वातकी क्षयीके ये लक्षणहैं मंदाग्नि बल वीर्य्यकी हानि शरीर कृश श्वास मंदशब्द और खांसी अरुचि शोष शरीर रूखा मंदज्वर ग्लानि राध का थूकना तथा उलटी करना हृदयमें कंप ५ कांख मस्तक गला हृदय इनमें दर्दहो रुधिर मिला थूकना सीतकी तथा खटाईकी इच्छाहो अरुचि तथा कंठमें जलन मुखमें बास आवे खांसी श्वासहो कृशदेहहो बुरीआवाजहोमंदज्वर येलक्षण सुषेणादि वैद्यों नेपित्तकी क्षयीके लक्षण कहेहैं ६॥

(कफकीक्षयीकेलक्षण) शोफःकासरुजाग्निमंदजड़ताश्वासोरुचिर्वेपथुः शैथिल्यंस्वरभंगतांगकृशतावक्त्रम्विगन्धान्वितं ॥ तंद्राकुक्षिरुजःकफंबहुतरंनिष्ठीवनंपूयनं स्यात्श्लेप्मक्षयलक्षणंचहृदयेकंठंद्वंश्लेष्मणः ७ (असाध्यक्षयीकेलक्षण) सहस्त्रदिनपर्यंतंनजीवेदितिमानवः ॥ अहेणयक्ष्मणाग्रस्तोऽसाध्येनातिबलीयसा ८ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे वैद्यशास्त्रेहंसराजकृतेयक्ष्मणोलक्षणं समाप्तम् ॥

सूजन खांसी अग्निमंद जड़ता श्वास अरुचि कंप शिथिलता [illegible] का बैठजाना शरीर पतला मुखमें [illegible]

तथा पीनका थकना कंठका कफसे रुकना ये कफकी क्षयीके लक्षण हैं ७ जिस मनुष्यको क्षयी रूप असाध्यग्रह बलवान्ने ग्रसलिया हो वो मनुष्य हजार दिनतक बड़ी कठिनता से जीसके ८ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिन्यां राजयक्ष्मारोगनिदानम्समाप्तम् ॥

(अथकासरोगलक्षणं) वक्राक्षिनाशासुरजोभिपाता धूमोपरु द्धात्गुरुभारवाहात् ॥ रूक्षादनाद्दंडकशादिघातात् कासोतिघो षादुपजायतेवै १ (खांसीकेलक्षण) प्राणःकंठगतोत्युदानपवनो हृत्स्थोतिपीडाकरः शब्दःकांस्यविभिन्नघोषसदृशो निष्ठीवनंपूयभं॥ कंठेघुरघुरशब्दताकृशतनुस्त्वक्पीतवर्णारुचिः विद्वद्भिःपरिकीर्त्ति तंहिसकलंकासस्यचिह्नंमहत् २ (वातकीखांसीकेलक्षण) उर सिशिरसिकुक्षौवेदनाकंठदेशे भवतिबलविनाशःष्ठीवनं तुच्छतु- च्छं॥ गलमुखपरिशोषःशुष्ककासोंगमर्दः क्षवथुररतिरुग्रावातका सस्यचिह्नं ३ ॥

मुखमें नेत्रमें नाकमें धूलिके पड़ने से तथा धुआंके जानेसे भारीबोझके उठाने से रूखा खानेसे दंड कोरड़ा आदिके पिटनेसे अत्यन्त पुकारने से खांसी पैदाहोतीहै १ हृदयकी रहनेवाली जो प्राणवायु सो कंठमें प्राप्तहो और कंठकी रहनेवाली जो उदानवायु सो हृदयमें आतीहै तब इसरोगी को बहुत दुःख देतीहै और इसमनुष्यका शब्द जैसा कांसेका फूटा बरतन बोलताहै इस तरहकी आवाजहो और कफमिला थूकै कंठमें घरघर शब्द हो शरीर लटजावै त्वचा पीली होजाय अरुचि ये लक्षण पंडितो ने खां- सीके कहेहैं २ हृदय में मस्तकमें कांखमें कंठमें दर्द हो बल का नाश थोड़ा थोड़ा थकना गले का तथा मुख का सूखना सूखी खांसीका उठना शरीर का टूटना छींक का आना मनका न लगना ये बादी की खांसीके लक्षण हैं ३ ॥

(पित्तकीखांसीकेलक्षण) भवेद्दीर्घहानिर्ज्वरोवक्त्रशोषः सर क्तंचनिष्ठीवनंशूलमुग्रं ॥ तृषासंभ्रमंतिक्तमास्यंविदाहोनिरुक्तंपरैः पित्तकासस्यचिह्नं ४ (कफकीखांसीकेलक्षण) निष्ठीवनंसांद्रक फेनयुक्तं कासेनकुर्दिर्बलवीर्यनाशः ॥ शीर्षप्रपीडाजडतांगगौरवं

प्रोक्तंभिषग्भिःकफकासचिन्हम् ५ (त्रिदोषकीखांसीकेलक्षण)
भवेद्यस्यनिष्ठीवनंपूयवर्णंमुखान्नाशिकायाविगंधिविवर्णं ॥ महा
श्वासवाहोंगतेजोल्पवीर्यः सकासीनजीवेत्कदाचित्सुधाभिः ६ ॥

वीर्य्यका नाश ज्वर मुखका सूखना रुधिरमिला थूकना उपशूल प्यास और कडुवा मुख दाह ये लक्षण पित्तकी खांसीके पूर्वाचार्य्योंने कहे हैं ४ गाढ़ा कफका थूकना रहहो बल वीर्य्यका नाश शिरमें दर्द जड़ता देहका भारीहोना येलक्षण वैद्योंने कफकी खांसीके कहेहैं ५ राधके वर्णके समान थूकना मुख नाक में वासआवै तथा विवर्ण महा श्वास का चलना देह तेज वीर्य्य इन का घटना ऐसा खांसी वाला अमृत सेभी नहीं जीवै ६ ॥

(असाध्यखांसीकेलक्षण) मुखेयस्यशोथोरुचिर्वेपथुत्वंसरक्तं चनिष्ठीवनंफेनिलंवा ॥ तृषाशूलमुग्रंभवेद्दुष्टगंधिसकासीनजीवेत्स हस्त्रैर्भिषग्भिः ७ वृद्धक्षीणतमःकासी साध्योदानजपादिभिः ॥ तरुणोवलवान्साध्यः पथ्यैरौषधिभिर्वुधैः ८ ॥ इतिश्रीभिषक्चक्र चित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकासलक्षणं ॥

मुखपर जिसके सूजनहो अरुचि कंप रुधिर मिला तथा झाग मिला थूकना प्यास शूल दुर्गंधि का मुखमें आना ऐसे लक्षणवाला रोगी हजार वैद्योंसे भी नहीं जीवै ७ बूढ़ा तथा जोक्षीण पड़गयाहो वोरोगी दानजपादिकोंसे साध्यहै औरजो रोगी तरुणहो तथा वलवान्हो वो पथ्यओर औषधियोंसे पंडितोंने खांसीवाला साध्य कहाहै ८ ॥ इतिहंसराजार्थ वोधिन्यांकासरोगलक्षणम्समाप्तम्शुभम् ॥

अथहिक्कालक्षणम् ॥

(हिक्कारोगकीउत्पत्ति) रजोधूम्रपानान्मुखेनाशिकायां गरि ष्टान्नपानाज्जलस्यावगाहात् ॥ श्रमादध्ववेगात्तृषार्तैररुच्याःभवेयु र्नृणांपंचधारौद्रहिक्का १ प्राणोदानसमानकोपजनिताहिक्कांत्र वृद्धिप्रदा कष्टंहंतिकरोतिजन्मसमयेवालस्यवृद्धिंसुखं ॥ तेजोयो वलवीर्यवृद्धिमधिकांहर्षंरुचिंवर्द्धते रक्तास्यंतनुकंपनंनयनयोर्वि स्फारमार्द्रंगलम् २ तारुण्येवयसिस्थितेकफमरुज्जातान्हिक्काहि

ता वैरस्यंवदनेगलेसरसतांकुक्षौप्रपीडारुतं ॥ आटोपंहृदयेरुणद्धि पवनेमर्माणिसंतोदते छर्दिंसाकुरुतेररतिंवितनुते हल्लासमुल्लासते ३ ॥

धूलि धुआं इनका मुख और नाकमें जानेसे गरिष्ठ अन्नके भोजन से जलमें बहुतदेरके रहनेसे श्रमसे रस्तेके चलने से चौदह वेगोंके रोकने से प्याससे अरुचिसे मनुष्योंके पांच प्रकारकी घोर हिचकीका रोग पैदा होता है १ प्राण उदान समान पवनोंके कोप करनेसे हिचकी आंतोंको बढ़ावे कष्टकरै तथा रोगीको मारती है औ बालकके जन्म समय बालकको बढ़ावै तथा सुखदे और तेज बलवीर्य्य की बढ़वारको करै तथा हर्ष रुचिको बढ़ावै मुखको लालकरदे शरीरको कँपावै नेत्रोंको फटे से करदे कंठको गीलाकरदे २ तरुण अवस्थामें जो वातकफ से पैदा हुई हिचकी सो अहितहै मुखको बिरस करदे गलेमें सरसता करदे कांखमें पीड़ाकरे छातीको घेरले श्वासको रोकदे मर्ममर्ममें पीड़ाकरै वमन तथा मनका न लगना खांसी सूखी रद्द ये लक्षण करै ३ ॥

वार्द्धिक्येवयसिस्थितेसतिमहाहिक्कायदाजायते पित्तश्लेष्ममरुद्भवाप्रकरुतेपीडांगलेमस्तके ॥ शूलाध्मानतृषारुचिंवितनुतेहल्लासहृत्पीडनम् पंचत्वंवितनोतिरोगमखिलंप्राणान्निहंतिद्रुतम् ४ उदानवायुकोपेन पंचहिक्काभवंतिताः ॥ कुर्वंतिविविधान्रोगान् तासांनामानिकथ्यते ५ गम्भीरामहतीतथाचयमलाक्षुद्रान्नजा पंचवा गम्भीरोदरगर्जनीज्वरकरीमर्माणिसंतोदते ॥ सर्वोपद्रवकारिणीवलहरीनाभेःप्रवृत्ताहिसा अन्यायामहतीकरोतिचतनौकंपंशिरःपीडनं ६ ॥

वृद्ध अवस्था में जो हिचकी हो वो वातपित्त कफ तीनों दोषों से पैदा होतीहै वो घोर हिचकी कंठमें तथा शिरमें दर्दको करेहै शूलअफराप्यास अरुचि खाली रद्द हृदयमें दर्द और सबरोग ये लक्षणहों तोमनुष्य जल्दी मरजावै ४ उदान पवनके कोपसे पांच तरहकी हिचकी पैदाहोतीहै और अनेक तरहके रोगोंको पैदा करतीहै उन पांचोंके नाम कहते हैं ५ १ गंभीरा २ महती ३ यमला ४ क्षुद्रा ५ अन्नजा प्रथम गंभीरा के लक्षण कहतेहैं गंभीरा पेटमें गुड़गुड़ाहटकरै ज्वरको करै मर्ममर्म में पीड़ाकरै

औरसबउपद्रवोंको करै वलका नाशकरै यह हिचकी नाभी से उठती है अब दूसरी महती का लक्षण कहते हैं शरीर कांपै शिरमें दर्दहो ६ ॥

वातश्लेष्मभवाकरोतियमलाहिक्कांत्रपीड़ारुजं ग्रीवातालुविभेदिनीवलहरीग्रीवाशिरःकंपनं ॥ क्षुद्रानाभितलोद्भवारसचयंचोर्ध्वं नयेत्कष्टदा वैरस्यंवदनेऽन्नजावितनुतेगात्रेगुरुत्वंतथा ७॥ इतिश्री भिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतवैद्यशास्त्रेहिक्कालक्षणंसमाप्तम्॥

तीसरीबात कफसे पैदाहुई जो यमलानाम हिचकी सो आंतोंकोपीड़ा दे कंठतालुमें दर्दकरै वलका नाशकरै नाड़शिर इनको कँपावै चौथी जो क्षुद्रानामकर प्रसिद्धजो हिचकी सो नाभीके नीचे उठतीहै वो रसको ऊपर लेजातीहै अर्थात् उलटी करावै और कष्टको पैदाकरै मुखको विरस करती है पांचवीं जो अन्नसे पैदाहुई हिचकी सो शरीर को भारी करती है ७॥ इतिहंसराजबोधिनीमेंहिक्कालक्षणसमाप्तहुआ ॥

(श्वासरोगनिदानम्) प्राणोदानसमानकोपजनितःश्वासोरुपावर्द्धते क्रुद्धोर्ध्वंव्रजतेमुहुर्मुहुरथोदोधूयमानंनरं ॥ निद्रांहंतिमहातृषांवितनुतेशीतज्वरंकंपनं प्रस्वेदंकुरुतेतनौविकलतांदाहंभ्रमंविधत्ते१ शुष्कास्यंकुरुतेरुणद्धिपरतःश्रोतांसिरक्ताननं हृत्कंठोष्ठमुखेषुशोषमरतिंश्वासोरुचिंनाशते॥ आध्मानंतनुतेशिरांविधमतेन्द्रशांतनुंकंपते शूलंवेदनयायुतंविकलतांशब्दंपरंरुंधते २ श्वासःस्वाभाविकोमंदोघ्यतिश्वासोरुजाकरः ॥ मृतिप्रदोमहाश्वासस्त्रिविधं श्वासलक्षणम् ३ ॥

प्राणउदान समान इनतीनों पवनोंके कोप करनेसे क्रोधकर बढ़ती और ऊपरनीचे विचरती है कभी ऊपर चढ़े कभी नीचे उतरै नींदकानाश तथा घोर प्यासको पैदाकरै शीतज्वर कंप पसीना इनको पैदाकरै शरीर में बेकली दाह भौंर येलक्षण श्वासरोग करताहै १ श्वास मुखको सुखावै नाड़ियों के मार्गको रोंकदे चेहरेको लाल करताहै हृदय कंठ ओठमुख इनमें शोषहो मनका न लगना अरुचिअफड़ा नाड़ीनकोधमावै शरीरकँपावै वेदनायुक्त शूल तथा बेकली और आवाजको निहायत कम करती है २ श्वासजोहै सो स्वभावसेही मंदहोतीहै परंतु अतिश्वासरोग करतीहै और महाश्वास मौतकी देनेवाली है ये तीनप्रकारके लक्षणहैं ३ ॥

(स्वाभाविकश्वासकेलक्षण) श्वासःसंकुरुतेबलंमृदुतनुंस्वाभाविकःसौख्यदो धैर्यंशौर्य्यमदोत्सवंसुभगतांशक्तिंपवित्रंनरं ॥ ऊर्ध्वाधोगतिरुत्तमः पवनयोर्दुर्गंधिनीनाशकः सौगंधिंसुकुमारतांवितनुतेहर्षंपरंवर्द्धते ४ (अतिश्वासकेलक्षण) अतिश्वासःकासंवितरतिभृशंशूलमरतिं बलंवीर्यंतेजोहरतिकुरुतेछर्दिमरुचिं ॥ मुखंघ्राणंकंठंतुदतिवहतेश्लेष्ममधिकं तृषाध्मानंहिक्कांतनुषुगुरुतांस्वेदमधिकं ५ (महाश्वासकेलक्षण) संज्ञांनाशयतेरुणाद्धिसततंश्रोतांसिविष्टम्भनंवाग्बंधंकुरुतेगलेकफचयंमर्माणिसंतोदते ॥ उद्वृत्तंनयनंतृषांचहृदयेदाहंमुखशोषणं नाडीस्त्रोटयतेभ्रमंवितनुतेश्वासोमहान्प्राणहा ६ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेश्वासलक्षणंसमाप्तम् ॥

स्वाभाविक श्वास बलको करै तथा देहको कोमल रक्खे सुखको दे धैर्य तथा पराक्रम मदमंगल सुंदरता शक्ति पवित्रता को दे और पवन का ऊपर नीचेका आना जाना श्रेष्ठहै औरदुर्गन्धको नाश करतीहै और सुगंध को दे तथा सुकुमारपना और हर्षइनको बढ़ावै ४ अति श्वास से खांसी शूल मनका न लगना हो बलवीर्य्य तेजको घटावै वमन अरुचि मुखनाक कंठमें पीड़ाहो कफ अधिक गिरै प्यास अफरा हिचकी शरीर भारी पसीना इनको अधिककरै ५ प्राणों की नाशक महाश्वासये लक्षणकरती है संज्ञाका नाश और नसोंके मार्गको रोकदे मलका न उतरना जबानका बन्दहोना कंठ में कफका जोर मर्म मर्म में पीड़ा फटे फटे से नेत्र प्यास हृदयमें दाहहो मुखका सूखना नसोंका टूटना भौरका आना ६ ॥ इतिहंसराजबोधिन्यांश्वासलक्षणंसमाप्तम् ॥

(स्वरभेदलक्षणम्) अत्युच्चभाषाध्ययनाभिघातैस्तैलादिभक्षैरतिदुष्टपानैः ॥ संकोपितःपित्तकफानिलास्ते कुर्वन्तिभिन्नस्वरमेवन्हणाम् १ संभिन्नकांसस्वरतुल्यशब्दाःकेचित्तथागर्दभतुल्यघोषाः ॥ अजाविछुंछुंदरिकाकशब्दंमुखेनेत्रयोः श्यामतामूत्रवर्चाः २ क्वचिद्दीर्घशब्दंखरोष्ट्राश्वतुल्यं ॥ वचःप्रस्थलंवातलंकंठपीडां ३ ॥

उच्चस्वरके पढ़नेसे चोटके लगनेसे तेल खटाई आदिके खानेसे दुष्ट जलके पीनेसे कोपको प्राप्तभये जो वात पित्त कफ सो मनुष्योंके स्वरभंग रोग पैदा करतेहैं १ जैसे फूटेहुये कांसेकीसी आवाजहो तथा गधे कीसी आवाजहो अथवा बकरीके शब्दकीसी आवाजहो छछूंदरकीसी आवाजहो तथा कौवेकीसी आवाजहो मुखनेत्र कालेहों पेशाब ज्यादाउतरे २ कभी बड़ा शब्दकरै गधेकी ऊटकी घोड़ेकी आवाजके समान कंठमें दर्द ये वात के स्वरभंगरोगके लक्षण हैं ३ ॥

(पित्तकेस्वरभंगकलक्षण) स्वरःपित्तभिद्भिन्नकांसप्रघोषःकरोत्यं गदाहंमुखेत्यंतशोषं ॥ तनौनेत्रयोःपीततांमूत्रकृच्छ्रंतृषांकंठपीडां रुजंक्षीणगात्रं ४ (कफकेस्वरभंगकालक्षण) प्रभिन्नःस्वरःश्लेष्म णाक्षीणघोषोगलंश्लेष्मरुद्धंगुरुत्वंशरीरे ॥ गलेंघर्घरत्वंरुतंशुभ्रने त्रंमुहुःष्ठीवनंकासमुग्रंकरोति ५ (असाध्यस्वरभंगकालक्षण) अंत र्गतःस्वरोयस्यवहिर्नायातिकर्हिचित् ॥ वातपित्तकफैर्भिन्नःसरोगी नैवजीवति ६ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे स्वरभेदलक्षणम् ॥

पित्तका स्वरभंग फूटे कांसे कीसी आवाज करै देहमें दाह मुख का सूखना शरीरतथा नेत्रपीले मूत्रकृच्छ्र प्यास कंठमें दर्द शरीरका लटना ये लक्षण करताहै ४ कफका स्वरभंग आवाजको मंदकरै कंठको कफ से रोकदे शरीरभारी गलेमें घर्घर शब्दहो पीड़ाहो सपेदनेत्र हों बार बार थूकना घोरखांसीको करे ५ जिस स्वरभंगवाले रोगीका स्वर भीतरीही रहे और बाहर न निकले और त्रिदोषसे हुआहो वह रोगी नहीं जीवै ६ ॥ इतिहंसराजार्थ बोधिन्यां स्वरभेदलक्षणम् संपूर्णम् ॥

(अरोचकरोगकीउत्पत्तिलक्षण) अरोचकःपित्तमरुत्कफैर्भवेद्भ येनशोकेनरुषांगपीडया॥रुजातिबीभत्सविलोकनेनवाअहृद्यदुष्टा शनपानपूर्त्तिभिः १ (वातअरोचकरोगकालक्षण) अरोचकेवा तसमुद्भवेहितेभवंतिचिन्हानिमुखेकषायता ॥ वपुस्तुरुक्षंकृशतांग गौरवंज्वरोम्लताशूलमथांगपीडनं २ (पित्तकेअरोचककालक्षण) अरोचकःपित्तभवःकरोतिदाहंप्रसेकंकटुकत्वमास्ये ॥ शरीरबाह्यं

तरयोश्चशोथंपानेषुभक्ष्येष्वरुचिंकृशत्वं ३ (कफकेअरुचिरोगका लक्षण) अरोचकःश्लेष्मभवोविधत्तेगुरुत्वमंगेषुजडत्वमार्ति ॥क्षार त्वमास्येरुचिमोहशैत्यंगलेकफंपांडुरुजंशरीरे ४ (वातकीअरुचिमें पथ्य) अरोचकीमरुद्भवस्त्यजेत्प्रवातसेवनं॥ श्रमंजलावगाहनंक- षायमम्लमामिषम्५ (पित्तकीअरुचिमेंपथ्य)पित्तात्मकेत्यजेत्तीक्ष्णं विदाहिलवणाधिकं ॥ व्यायामंवह्निसंतापंविरसंकटुकंरसं ६ ॥

भयसे शोकसे क्रोधसे शरीरकी पीड़ासे बुरीबस्तुके देखनेसे मन को बुरालगे ऐसे भोजनसे तथा दुष्टबस्तु के पीनेसे अरोचक रोग बात पित्त कफके कोपसे पैदाहोताहै १ बादीसे पैदाहुआ अरोचकरोग उसकेयेलक्षण हैं मुख कड़ुवा शरीररूखा तथा कृश तथा भारी औरज्वर तथा खट्टा मुख शूल शरीरमें पीड़ा २ पित्तसे पैदाहुआ अरुचिरोग उसके ये लक्षणहैं दाह हो लारका बहना कड़वा मुख शरीरका बाहर भीतरसे सूजना खानेमें तथा पीनेमें अरुचि शरीर कृश ३ कफसे पैदाहुये अरुचि रोगके ये लक्षणहैं शरीर भारी तथा जड़ और दुःखहो मुख खाराहो तथा श्वास अरुचि बेहोसी शीतका लगना कंठमें कफ तथा शरीरमें पीलिया ४ बादी की अरुचिवाला हवाका खाना श्रमका करना जलसे स्नानआदि और क- सेली तथा खट्टी बस्तु और मांस का खाना त्यागदे ५ पित्तकी अरुचि वाला मनुष्य चरफरी दाह करनेवाली ज्यादा नोनका खाना दंडकसरतका करना अग्निसे तापना बिरस तथा कड़ुई बस्तुका खाना त्यागदे ६ ॥

(कफकीअरुचिमेंपथ्य)त्यजेदरोचकीपिष्टंतैल्यशैत्यंकफात्मकः ॥ गुरुत्वंदधिमिष्टान्नंवृन्ताकंस्निग्धभोजनं ७ ॥ इतिश्रीभिषक्चक्र चित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअरोचकलक्षणंसंपूर्णं ॥

कफकी अरुचिवाला पिसाअन्न तेल का पदार्थ तथा शीतल बस्तु कफ के करनेवाली बस्तु भारीबस्तु दही मीठा अन्नबैंगन चिकना भोजन ये त्यागदे ७ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यांअरोचकरोगलक्षणम्समाप्तम् ॥

(छर्दिरोगलक्षणम्)दोषैर्व्यस्तैःसमस्तैर्वावातपित्तकफात्मकैः॥ भवंतिछर्दयःपंचवीभत्सानांविलोकनात् १ स्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरति द्रवैर्लतादिभिक्ष्यैरतिभोजनैरुषा ॥ अत्यंबुपानैर्भयनिंद्यदर्शनैर्छर्दि

र्भवेद्ध्वपरिश्रमैःपरैः २ (बातकीछर्दिकेलक्षण) छर्दिर्वातभवाक रोतिविविधानूरोगानलंभोजनी कृष्णाभाहरितारुचिःशिथिलतां हृत्पार्श्वपीडांभ्रमं॥उद्गारंस्वरभेदनंचमहतींजृम्भांगलेपीडनं शूलं रुक्षवपुस्तृपांचशमनंवह्नेस्तनौशोपणं ३ ॥

वातपित्त कफसे तथासन्निपातसेतथाबुरीवस्तुके देखनेसेउलटीकारोग पांचप्रकारकाहोताहै१ चिकनीसूगलीनोनको पतला तथालताआदिके खाने बहुतभोजनसे क्रोधसेबहुत जलके पीनेसे डरके लगनेसे सूगली वस्तुके देखनेसेबहुत रास्ताके चलनेसे अपर कहिये कृमिके पड़नेसे स्त्रीके गर्भ रहनेसेछर्दिनाम रद्दकारोग पैदा होताहै २ जो मनुष्य बहुत भोजनकरै उसकेवातकी छर्दी अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करतीहै तथा कालेरंगकी तथाहरेरंगकीहो और शिथिलताकोकरै हृदयमें पसवाड़ोंमें पीड़ाकरै भ्रम कोकरैं डकारबुरीकाआना स्वरभंग घोरजंभाईकंठमेंपीड़ा शूलशरीरमेंरूखा- पन प्यासका अवरोध शरीरमें आगसी जलै और शोषकों करै ३ ॥

(पित्तकीछर्दिकेलक्षण) छर्दिःपित्तसमुद्भवारुणनिभापीतानि भासाक्वचित् कोष्णादाहयुतांगपीडनपरा तृट्शूलमूर्च्छान्विता ॥ हृत्कंठोष्ठमुखेषुतालुरसनाशीर्षेषुपीडाप्रदा संतापभ्रमकारिणीरुचि हरीश्लेष्मांशकासाभवेत् ४ (कफकीछर्दिकेलक्षण) छर्दिःश्लेष्म समुद्भवाशितनिभाफेनान्वितामेदुरा क्षारास्यंकुरुतेरुचिंवितनुतेतं- द्रांप्रसेकंवमिं ॥ आलस्यंजड़तांवपुर्गुरुतरंलालांचनिष्ठीवनं रोमां चंहृदिवेपथुंमुखमलंकासंतनौशीतता ५ (संनिपातकीछर्दिके लक्षण) छर्दिःपित्तमरुत्कफैःप्रजनितानानानिभाकष्टदा श्वासं कासयुतंतनोतिकृशतांदाहंतृषाकंपनं॥ हल्लासंतमकंवपुर्विकलतां मूर्च्छामतीसारकं शूलंमूत्रविरोधनंज्वरतमंहिक्कांविवर्णांवमिं ६॥

पित्तकीछर्दिरोगके येलक्षणहैं लालरंग तथा पीला रंगकी तथा गरमहो दाहयुतशरीरमें पीड़ाप्यास शूल मूर्च्छा हृदय कंठ ओठ मुखतालू जवान शिरइनमें पीड़ाहो खेद भ्रम रुचिको नाशकरै कफ को नाशक हो ४ पित्तकी छर्दि रोगके ये लक्षणहैं सपेदरंगहो झागसेआच्छादितहो चिकनी खारामुख अरुचि तन्द्रा पसीनेका आना रद्द सख्ती जड़पना देहभारी

लारका गिरना वारवार थूकना रोमांच हृदयमें कंप मुखमलीन खांसी शरीरको शीतलगे ५ त्रिदोषसे पैदाहुई जोछर्दि उसका चित्रविचित्र रंग हो कष्टको पैदाकरै श्वास खांसी तथा शरीरमें कृशता दाह प्यास कंप खालीउलटी तमक देहमें वेकली मूर्च्छा अतीसार शूल मूत्रका रुकना ज्वर अंधेरेकाआनाहिचकी वर्ण औरही तरहका और वमन येलक्षणहोंइ६॥

(छर्दिरोगकेउपद्रव) कासोहिक्कातृषाश्वासो हृद्रोगस्तमको ज्वरः ॥ मूर्च्छावैचित्र्यमित्येतेज्ञेयाछर्देरुपद्रवाः ७ (छर्दिरोगका साध्यासाध्यलक्षण) छर्दिःसोपद्रवाऽसाध्यारक्तपूयवहातथा ॥ नोपद्रवाभवेत्साध्याज्ञात्वाभैषज्यमाचरेत् ८ इतिश्रीभिषक्चक्र चित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेछर्दिलक्षणंसंपूर्णं ॥

खांसी हिचकी प्यास श्वास हृदयमें पीड़ा तमक ज्वर मूर्च्छा बेहोसी ये छर्दिरोगके उपद्रवहैं ७ उपद्रव सहित छर्दिरोग असाध्यहै और जिसमें रुधिर और राधगिरती हो वोभी असाध्यहै और जिसमें उपद्रवनहो वोसाध्यहै ऐसेसाध्य असाध्य परीक्षाकरपीछेदवादे ८ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांछर्दिरो निदानंसमाप्तम् ॥

(अथतृष्णालक्षणं) कफोद्भवापित्तभवामरुद्भवात्रिदोषजामुक्त भवाक्षतोद्भवा॥ भयश्रमाभ्यांजनिताक्षयोद्भवाभवंतितृष्णाष्टविधा श्चदुःसहाः १ (तृष्णारोगकीउत्पत्ति) वाताशनाध्वश्रमतापरक्तैः स्रोतस्त्वपांवाहिषुशुष्कनेषु॥ हृत्कंठतालूनिदहंतिदोषास्तृषातदा संजनितानराणां २ (बातकीतृष्णारोगकालक्षण) तृष्णावात समुत्थिताचकुरुतेश्रोतोनिरोधंश्रमं शोषंशंखशिरोगलेषुविरसंवक्त्रं निरुत्साहसं॥ संकोचंरतिस्तनौप्रलपनंचित्तभ्रमंरुक्षतांशीतोदैः परिवर्द्धितावितनुतेहिक्कामजीर्णज्वरम् ३ ॥

तृष्णा अर्थात् प्यासकारोग आठतरहकाहै ऐसे वैद्य कहतेहैं १ कफसे २ पित्तसे ३ बादीसे ४ सन्निपातसे ५ भोजनके करनेसे ६ घावसे ७ भय और श्रमसे ८ खईरोगके होनेसे १ बातसे भोजनके करनेसे मार्गके चलनेसे श्रमके करनेसे गरमीसे रुधिरके बिगड़नेसे कुपितहुये जोबात पित्त कफ सोजलके बहनेवाली नाड़ीनको सखाकर हृदय कंठ तालूमें

दाहको पैदाकरै तब मनुष्योंके तृषारोग पैदा होताहै २ वातकी तृषा ये लक्षण पैदाकरतीहै वहिरापना परिश्रम कनपटी मस्तक गला इनमेंशोष मुखमें विरसता तथा साहसहीन देहमें संकोच बकना चित्तमें भ्रम तथा देहरूखा शीतजलके पीनेसे जोतृषा पैदाहो वो हिचकी और अजीर्णज्वर को बढ़ावै ३ ॥

(पित्तकीतृषारोगकालक्षण) आधिव्याधिसमन्विताभयकरी पित्तात्मिकाशोषणी तृष्णादाहविवर्द्धिनीसुखहरीकार्यस्यविध्वंसनी ॥ उष्णत्वेविदधातिदोषमखिलंशीतेसुखंविभ्रते रक्तास्यंकुरुतेमुखेविरसतांमूर्च्छांप्रलापंभ्रमं ४ (कफकीतृष्णाकेलक्षण)मूत्रावरोधंजठराग्निनाशंनिद्रांविधत्तेगुरुतांशरीरे ॥ हृत्कंठपीडांवितनोतिकासंश्लेष्मात्मिकाच्छर्दिकरीचतृष्णा ५ (त्रिदोषजनिततृषाकेलक्षण) त्रिदोषजनितातृष्णातेजोवीर्यबलौजसां ॥ नाशिनीरुक्करीघोरामनोक्षप्राणहारिणी ६ ॥

आधिकहिये मानसिकरोग व्याधिकहिये ज्वरादिरोग तथाभय पैदाकरै शोष दाहको बढ़ावै सुखको दूरकरै देहको विध्वंस करै गरमीसे सकल रोगपैदाकरै और शरदीके होनेसे सुख मालूमहो लाल और रसरहित मुखहो मूर्च्छा प्रलाप भ्रम येलक्षण पित्तकी तृष्णाकेहैं ४ मूत्रका रुकना तथा मंदाग्नि नींदकाआना शरीरभारी हृदयमें कंठमें पीड़ा खांसी रद्द येलक्षण कफकी प्यास रोगकेहैं ५ सन्निपातकीतृषा तेज वीर्यबल ताकत कानाश करनेवालीहै घोररोग पैदाकरै मन प्राणकी हरनेवालीहै ६ ॥

(तृषारोगमेंसाध्यासाध्यविचार)अल्पदोषकरीतृष्णाश्रमघाताध्वभोजनैः ॥ जाताशीतोदयानेननाशमेतिगरीयसी ७ (अथ तृषारोगेपथ्यम्) गुर्वन्नभोजनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णंलवणामिषं ॥ व्यायामंसूर्यसंतापंतृष्णावान्परितस्त्यजेत् ८ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेतृष्णालक्षणम् ।

जोश्रमसे चोटसेरास्ताकेचलनेसे भोजनसेजोतृषाअर्थात् प्यासलगैवो साध्यहै औरजोठंढेपानीकेपीनेसे प्यासलगै सोप्राणकीनाशकरनेवालीजान

नी चाहिये७ भारीअन्नकाभोजन चिकनीवस्तु तीखीगरमनोनकीमांसदंड कसरतका करना सूर्य्यका तेज ये तृषारोग वाला त्यागदे ८ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांतृष्णारोगनिदानम् सम्पूर्णम्शुभम् ॥

(मूर्च्छारोगकीउत्पत्ति) क्षीणस्यगतसत्वस्यविरुद्धाहारसेविनः॥ धाविनःसक्षतस्यापिवीभत्सस्यविलोकिनः १ तस्यनाडीषु सर्वासुदोषाःसर्वेप्रकोपिताः ॥ रुषाविशंतिकुर्वंतिमूर्च्छांवैचित्य कारिणीं २ वातपित्तकफैर्मद्यैः शोणितेनविषेणच॥ मूर्च्छाभवन्ती साकुर्यान्नरंकाष्ठमिवानिशम् ३ ॥

अथमूर्च्छारोगनिदानम् ॥ जो मनुष्य क्षीणहो ताकत रहितहो बिरुद्ध आहारका खानेवालाहो दौड़नेवालाहो और जिसके शरीरमें घावहो घिनायदी वस्तुदेखीहो १ ऐसे पुरुषके कोपको प्राप्तहुये जो तीनों दोषसो सर्व नाड़ियों में क्रोधसे धसकर वेहोसी करनेवाला मूर्च्छारोग पैदाकरतेहैं २ सोमूर्च्छारोग बात पित्तकफ और सन्निपातसे और मद्यके पीनेसे रुधिरसे बिषभक्षण करनेसे सातप्रकारकाहोताहै वो मूर्च्छामनुष्यको काष्ठकी तरह पृथ्वीपर बारबार गेरदेतीहै ३॥

(बातकीमूर्च्छाकालक्षण) दृष्ट्वाकाशंश्यामनीलावभासंपश्चाद्दुर्य्यावातजामेतिमूर्च्छां॥ योमर्त्यस्तंपीडयंतीतिरोगा जृम्भाकंपश्वासतृष्णाप्रसेकाः ४ (पित्तकीमूर्च्छाकालक्षण) पीतारुणांनभःपश्य न्तमःपश्यन्ततंपरं॥ नरोयःपततेभूम्यां तांमूर्च्छांपित्तजां बदेत् ५ जंतौप्रबुद्धेतमसिप्रनष्टे मूर्च्छातुपित्तप्रभवाकरोति॥ प्रस्वेदतृष्णापरिवेपथुत्वं दाहंचतापंमुखशोषमारतिम् ६ ॥

जोमनुष्य आकाशको काला नीला देखे फेर धरती में गिरपड़े और जिसको जँभाई कंपश्वास प्यास पसीनेहों उसको बातकी मूर्च्छा कहते हैं ४ प्रथम पीला लाल आकाशको देखेफेर अंधकार मालूमहो और तिस पीछे धरतीमें गिरपड़े उसको पित्तकी मूर्च्छा कहतेहैं ५ और जब मनुष्य को होस होजाय आंखों के आगे से अंधकार हट जावे तब पसीना आवे प्यास लगे कंपहो दाहहो ज्वरहो मुख शोषहो पीड़ा हो उस मूर्च्छा को पित्तकी कहतेहैं ६ ॥

(कफकीमूर्च्छाकालक्षण) शुभ्रन्नभोनरःपश्यन्मूर्च्छयोर्व्यां पतेद्यथा॥निश्चेष्टोदंडवन्नूनं तांविद्याच्चकफात्मिकां ७ प्रबुद्ध मनुजे कुर्यान्मूर्च्छानिद्रांकफात्मिका॥ शैथिल्यंगौरवंतंद्रां हल्लासंकासतृड्ज्वरं ८ (संनिपातकीमूर्च्छाकेलक्षण) त्रिदोपजनितामूर्च्छा सर्वरोगवहानरं॥ पातयत्याशुमोहाब्धौ विनाविभत्सदर्शनं ६॥

जो मनुष्य आकाशको धवलादेखै फिरगिरपड़े चेष्टारहित लकड़ी कीसी तरह उस मूर्च्छाको कफकी कहतेहैं ७जबमनुष्यसावधान होजाय तबनींद आवे तथा शिथिलता होय देहभारीहो तंद्राहो सूखी रद्द आवे खांसी हो तथा प्यासहो ये कफकी मूर्च्छाके लक्षणहैं ८ त्रिदोप अर्थात् संनिपात से पैदाहुई मूर्च्छा सर्वरोग प्रकट करै और मनुष्यकोमोहरूपी समुद्रमेंगेरदेवे विनासूगलीवस्तुकेदेखे जोपैदाहो उसको सन्निपातकी मूर्च्छाकहतेहैं ६॥

(रुधिरकीमूर्च्छाकालक्षण) घ्राणेनरक्तस्यचदर्शनेन मूर्च्छंति कौस्त्रीजनभीरुबालाः॥ बुद्धेषुचिन्हानिभवंतितेषांमोहोंगकंपोतिभयोजडत्वं१०मद्यकीमूर्च्छाकालक्षण)मद्येनमूर्च्छाजडतांकरोतिनेत्रेरुणत्वंशिथिलंशरीरं॥हर्षप्रलापंपरिबुद्धिनाशंनिद्रांवमित्वंभ्रमतांप्रसेकं११(विपकीमूर्च्छाकेलक्षण) नाशाकर्णमुखपुशोपमधिकंमूर्च्छाविपात्संभवादाहंतीव्रतरंदधातिहृदयेकंठेतिपीडारतिः॥ दृष्टिंनाशयतेकरोतिविकलंदेहस्यविक्षेपनं तेजोवीर्यबलौजसांप्रतिपलंविध्वंसिनीशोषणी १२॥

नाकसे रुधिरकेगिरनेसे स्त्रीजन तथा डरपोकना तथाबालक ये देखकर मूर्च्छाको प्राप्तहोतेहैं होसहोनेपर ये लक्षण होतेहैं मोह शरीरका कांपना डरका लगना तथा जड़त्व १० बहुत व दुष्टमद्य के पीनेसे जो मूर्च्छा हुई उसके येलक्षण हैं जड़त्व और नेत्रलाल शरीर शिथिल हर्ष बकना बुद्धिका नाश निद्रा वमन भ्रम मुखसे लारका गिरना ये ११ बिषके खानेसे व सूंघनेसे जोमूर्च्छाहो उसके येलक्षणहैं नाक कान मुख इनका सूखना तीब्रदाह हृदयमें कंठमें दर्द मनका न लगना नेत्रोंसे कम देखना बेकली देहका पटकना तेजबीर्य बलताकत इनकानित्यघटना औरशोषहो १२॥

(क्रमकेलक्षण) व्यायामेनविनाकायेश्रमःस्यात्श्वासवर्जितः॥ इंद्रियाणांहिवृत्तिघ्नःक्रमःसैवोच्यतेबुधैः १३(इतिश्रीभिषक्चक्रचित्रोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमूर्च्छालक्षणंसमाप्तं ॥

जिस मनुष्यके दंडकसरतके बिनाही श्वासरहित श्रमहो और इंद्रियोंका जो स्वभाव तिसको पलटदे उसको पंडितक्रमरोग कहतेहैं १३ इतिहंसराजार्थबोधिन्यां मूर्च्छारोगनिदानम् संपूर्णम्शुभम् ॥

(दाहरोगनिदानम्)देहेशोणितमुच्छ्रितंप्रकुरुतेदाहंमहादारुणं अंगंयंव्रजतेतमेवदहतेवाह्योत्वचंचांतरैः॥मांसंशोणितनाडिकास्थिनिचयान्श्लेष्मंवसंमज्जिकां सर्वांगेषुगतंदहत्यवयवंसर्वंरुषाहर्निशम् १ (धातुक्षीणदाहकालक्षण)क्षीणेधातावुत्थितोघोरदाहो मूर्च्छांकुर्यान्मर्मघातंज्वरार्त्तिं॥तृष्णाशोषंक्षीणशब्दंकृशत्वंवैद्यैरुक्तो सौनरःकष्टसाध्यः २ मर्यादादधिकंरक्तंदेहसंस्थितमामयं ॥ लोहगंधंदहत्यंगंपित्तवातस्यभेषजं ३ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतवैद्यशास्त्रेदाहलक्षणंसंपूर्णम् ॥

जिस मनुष्यके देहमेंरुधिर बढ़ताहै उसके महादाहका रोग पैदाकरता है जिसअंगमें रुधिर प्राप्तहो उसअंगको दहनकरे और भीतर दाहके होने से बाहरकी त्वचामें दाहहो और मांस रुधिर नाड़ी हड्डी इनके समूहको तथा कफ और बसाको मज्जाको दहनकरे सर्वांगमें प्राप्तदाह सब अंगके अवयवों को क्रोधकरके निरंतर दहनकरे १ जिसमनुष्यकी धातु क्षीणहो उसकेघोरदाह रोग पैदाहोउसके ये लक्षणहैं मूर्च्छाहो मर्म मर्ममें पीड़ाहो ज्वरहो प्यास शोष मंदशब्दहो और कृशदेहहो वो रोगीवैद्योंने कष्टसाध्य कहाहै २ मर्य्यादासे अधिक रक्त देहमें बढ़ताहै तबदाहरोग होताहै और जब रुधिर निकले तब लोहकीसी बासआवे सबदेहमें दाहहो उसमें बातपित्तकी दवाई करना चाहिये ३ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांदाहरोगलक्षणंसमाप्तम् ॥

मदात्ययरोगकालक्षण)दोषाविपर्य्ययेसर्वेसुधायाश्चापियेगुणाः॥तेमद्येपरितिष्ठंतियुक्त्यायुक्त्यापिवेन्नरः १ अयुक्त्यायोपि

न्मद्यन्तस्यरोगोभवेद्भृशम् ॥ तस्माद्युक्त्यापिबेन्मद्यंसौख्यायामृतवन्मुहुः२(अयुक्तिमद्यपानेदूषणं)सूर्याग्नितप्तेनबुभुक्षितेनरोगान्वितेनापिपिपासितेन ॥ श्रमान्वितेनाध्वपरिश्रमेणवेगावरोधेनभयान्वितेन ३ ॥

बिषके सर्वदोष और अमृत के सर्वगुणमद्यमें रहतेहैं युक्तिसे औअयुक्तिसे पीवे तो गुण और अवगुण करताहै १ उसीको दिखाते हैं जो मनुष्य बेतरकीबसे दारूपीताहै उसके बराबर रोगपैदाहोता है इसीमें मद्यपान विधिपूर्वक करना चाहिये क्योंकि विधिपूर्वक पियाहुआमद्य अमृतकेगुणों को करता है २ सूर्य्यके घामसे वा अग्निसे तचाहुआ भूखसे व्याकुल रोगी प्यासा श्रमसेथका रास्तेके चलनेसे चौदहवेगोंके रोकनेसे व्याकुल भययुक्त ३ ॥

क्षीणेनशोकाभिभयेनचैवकोपाभिभूतेनचनिर्बलेन॥ अत्यम्लभक्ष्येणचसेवितंबहुकरोतिमद्यम्विविधान्विकारान् ४ लज्जाबुद्धिविनाशनंविकलतांकार्दंगुरुत्वंतनौ पांडुत्वंकृशतांमुखेविरसतांनिद्रांविमूर्च्छांतृषां ॥ हल्लासंतमकंवमिंशिथिलतांगुह्यप्रकाशंतमःकार्य्याकार्यविमूढतांप्रकुरुतेमद्यन्त्वदोषाकरं ५ (मद्य संत्यमृतोपमागुणगणायुक्ताप्रपीतेनिशं क्षुद्बोधःस्मृतिपुष्टितुष्टिरुचयोनीरोगताकांतयः॥आनंदांकुरकोटयोमधुरतास्त्रीपुप्रहर्षोत्सवा वीर्यौजोबलधैर्यशौर्यमतयःसौजन्यसौख्यादयः ६ ॥

क्षीणमनुष्य शोकयुक्त कोपयुक्त निर्बलता अत्यंतखटाई खाईहो और बहुत मद्यपियाहो ऐसे मनुष्यों के मद्यअनेक विकार करता है ४ लज्जा बुद्धिको दूरकरता है बेकलीरद देहभारी पीलिया शरीरकृश मुखमें सवाद नहो निद्रामूर्च्छा प्याससूखी उलटी तमकश्वमन शिथिलता छिपीबातको कहना अंधेराआना कार्य अकार्यको न जानना दोषोंकी खानि ऐसी अयुक्तिसे पियाहुआ मद्य करता है ५ अथमद्यपानगुणम् ॥ युक्तिसे मद्यपानकरा अमृतके समानगुण करताहै क्षुधाको बढ़ावै स्मृतिपुष्टता तुष्टता रुचिनीरोगता कांतिआनंदके अनेकअंकुरपैदाकरै मधुरतास्त्रियोंमें रुचि उत्सववीर्य ओजबल धीर्यताशूरतामतिसुजनता सुखादिइत्यादिकोंकोपैदाकरताहै ६ ॥

मद्येनबुद्धिःप्रथमेनमोदःस्त्रीपुप्रहर्षोवहुभोजनेच्छा ॥ वादित्रगीतेपुरुचिःसुखंचनिद्रारतिःस्यान्मनसोत्सवंच ७ मद्येद्वितीयेपुरुषः प्रमत्तःस्यान्नष्टबुद्धिर्विगतात्मचेष्टः ॥ घूर्णाननोहर्षयुतोतिनिद्रोदुर्वाक्यशीलोवहुलीलयायुक् ८ तृतीयेमदेनष्टदृष्टिर्मनुष्योवदेत्सर्वंगुह्यानिगच्छेदगम्याम् गुरुंनैवपश्येदभक्षेत्समंतान्निलज्जोस्वतंत्रो भवेद्भग्नशीलः ९ ॥

प्रथम पियाहुआ मद्य बुद्धिको बढ़ावे मोदको स्त्रीगमन में रुचि पैदा करै बहुत भोजनकी इच्छा बाजे और गीत सुनने में इच्छा सुखनींद मनका एकाग्रलगना मनमें उत्साह ये गुणकरता है ७ दूसरी दफ़े मद्य पियाहुआ आदमीको मस्तकरदेताहै बुद्धिनष्टकरदे चेष्टारहित करदे तिरछी दृष्टि हर्षयुक्त अतिनिद्रा खोटावोलै अनेक लीलाकरै ८ तीसरीदफ़े पिया मद्य मदसे नष्टदृष्टी करदे और सब छिपीबात को कहै और मा बहिन वटी गुरूकी स्त्रीसे भी खोटाकाम करने की इच्छाहो गुरुकोभी न देखे अभक्ष्य भोजनकरै लज्जात्यागदे अपनी इच्छाकाकाम करै मारधाड़करै९॥

चतुर्थेमदेमृत्युतुल्योमनुष्योभवेद्ज्ञानहीनःस्वकार्येविकार्ये ॥ क्रियाचारशौचादिहीनोविमूढः परंस्वंनजानातिमत्तोविलज्जः १० ॥ (पित्तकेमदात्ययकेलक्षण) पार्श्वशूलशिरःकंपश्वासहिक्काप्रजागरैः ॥ मुखशोषेणपित्तस्यतमवेहिमदात्ययं ११ ॥ (कफकेमदात्ययकेलक्षण)तंद्राहल्लासस्तैमित्यछर्द्यरोचकगौरवैः॥शीतलांगस्यतं विद्यात्कफप्रायंमदात्ययं १२ ॥

चौथीबार पियाहुआमद्य मुरदेके समानकरदे ज्ञानरहित करदे अपने पराये कामको न समझे क्रिया आचार शौच इनकरके रहित करदे मूढ़ करद अपना परायानजाने और मस्तलज्जारहित होजावे १० पसवाड़ोंमें शूलहो शिरकांपे श्वासहिचकी जागना मुखकासूखना ये पित्तके मदात्ययके लक्षणहैं ११ तंद्रा सूखीरद गीलेकपड़े से पोंछासादेह बमन अरुचि देहभारी और शीतल अंगहो उसको कफका मदात्ययकहते हैं १२ ॥

अंगमर्दतृषाशूलरुक्ष्यगात्रविवर्णता॥ हिक्काभ्रमैश्चतंविद्यात्

वातप्रायंमदात्ययं १३ (त्रिदोषकेमदात्ययकालक्षण) सोपद्रवैः सर्वलिंगैस्त्रिदोषोत्थैर्मदात्ययं ॥ त्रिदोषजनितोज्ञेयःसाध्योयंचभिषग्वरैः १४ चिन्हंचतत्परमदस्यवदंतिवैद्याःछिक्कातृषांगगुरुता बहुपर्वभेदः ॥ विण्मूत्रशक्तिररुचिर्विरसास्यताचश्लेष्मोज्वरस्तुकृशतारुजताकपाले १५ ॥

अंगोंका टूटना प्यास शूल रूखाशरीर तथा विवर्णदेहका हिचकी भ्रम येलक्षण बातके मदात्ययकेहैं १३ जोउपद्रवके साथहो और तीनों दोषों के लक्षणमिलतेहों उसको सन्निपातका मदात्यय जानना १४ और भी सन्निपात मदात्ययके चिन्ह कहतेहैं जिसमें छींक प्यास शरीरभारी संधिमेंपीड़ा बिष्टा मूत्रका निकलजाना अरुचि मुखसे सवाद जातारहै कफ और ज्वर तथा मस्तकमें पीड़ाहो १५ ॥

(मद्यपानोत्थअजीर्णकेलक्षण) अजीर्णंमद्यपानोत्थंकुर्याद्दाहमचेतसं ॥ तृष्णामाध्मानमुद्गारंसंधिभेदःशिरोरुजं १६ (मद्यपानोत्थभ्रमकेलक्षण) भ्रमोमद्यपानोत्थितःकंठधूमं कफंदाहमुग्रंज्वरं श्यामजिह्वं ॥ प्रशोषंपिपासांवमिंपार्श्वशूलंगरिष्टोदरंर्नीलमोष्ठं प्रकुर्य्यात् १७ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे मदात्ययपरमदअजीर्णविभ्रमाणांलक्षणानि ॥

मद्यपीनेसे हुआ अजीर्ण वोयेलक्षण करताहै होशनरहै ऐसा दाहकोकरै प्यासऔर पेटकाफूलना तथा डकारकाआना संधिसंधिमें पीड़ा मस्तकमें दर्द १६ मद्यके पीनेसे हुआजो भ्रम वो ये लक्षणको करै कंठसे धुंयेंका निकलना कफनिकलना दाहहो ज्वर जीभकालीपड़जाय मुखशोष प्यास बमन पसवाड़ोंमें दर्द या शूल उदरमें भारीपना ओठनीले १७ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांमदात्ययरोगःसमाप्तः ॥

(अथोन्मादलक्षणानि) विक्षिप्ततामनोवृत्तिर्दोषैर्वातादिभिर्भवेत् ॥ समस्तैर्वासमस्तैर्वासोन्मादःकथितोबुधैः१ वार्त्तायाविस्मृतिर्येनगानेगीतस्यविस्मृतिः॥ शौचाशौचमजानातिसोन्मादःकथितोबुधैः२ (उन्मादरोगकेलक्षण) उन्मादहेतुर्द्विजदेवतानांसंन्यासिनां

साधुपतिव्रतानां ॥ आथर्वणंकुत्सितमंत्रसाधनं दुष्टाशुचीनामशनं चपानं ३

उसको पण्डितोंने उन्मादरोग कहाहै जिसमें समस्त वा न्यून वातादि दोषोंकरके मनकी वृत्तिमें विक्षिप्तता अर्थात् बावलापना पायाजाय १ बात करनेकी विस्मृति और गानेमें गीतकी बिस्मृति जिस करके हो और शौच भ्रष्टताको जो न जाने उसको पंडितोंने उन्मादरोग कहाहै २ ये उन्मादरोग होनेके कारणहैं ब्राह्मण देवता संन्यासी साधु पतिव्रतास्त्री इनको दुःखदेनेसे और खोटे मन्त्रके साधनसे अपबित्र और दुष्टपदार्थके भोजनसे वा पीनेसे ३ ॥

(वातोन्मादकेलक्षण) वातोन्मादगृहीतःक्वचिदपिहसतेरोदते क्वापिकालेरुक्षांगःशून्यचित्तःपरिवदतिवचोनिष्ठुरंह्यर्थहीनं॥ शीघ्रोत्साहंविधत्तेस्मितचलनयनोगीतनृत्यंकरोति स्वांगानांक्षेपणंवाविकलकृशतनुःक्षीणधातुर्मनुष्यः४(पित्तउन्मादकेलक्षण)पित्तोन्मादेनयुक्तः सततजलरुचिर्भोजनेदत्तदृष्टिःरक्ताक्षस्तव्यनेत्रोभ्रमविकलतनुःशुष्ककंठोष्ठतालुः॥ शीतेच्छामर्मदाहःपरिवदतिवचोरौत्यमर्षंविधत्तेभक्ष्याभक्ष्यंपरपांपरिहरतिहठात्वाग्विवादंकरोति५ (कफउन्मादकेलक्षण) कफोन्मादेचिन्हंभवतिकृशताछर्द्यरुचयःकफोद्रेकःकंठेमनसिजडतांगेविकलता॥ गतोजोमूकत्वंश्रुतिबधिरतादेहगुरुतावमिर्निद्रालालोरसिकृमिशतंवाक्शिथिलता ६ ॥

वातउन्मादयुक्त मनुष्य के येलक्षण होतेहैं कभीहँसे कभीरोवे रूखा शरीरहोजाय शून्यचित्त दुष्टवचन बोले व्यर्थबोले कभी उत्साह युक्तहो कभीस्मितयुक्त चंचलनेत्र कभी गीतगावे कभी नाचनेलगे कभी अंगोंको चलानेलगे विकलहो शरीरकृश क्षीणधातु ४ जलपीने और भोजनकी इच्छाहो लालतिरछे नेत्रहों भ्रम और देहमें बेकलीहो कंठ तालु ओठ इनका सूखना शीतल वस्तुकीइच्छा मर्म मर्म में दाह बुराबोलै रोवै क्रोधयुक्तहो पराया भोजन भक्ष्य अभक्ष्यको हठसेलूटले वादकरने लगे येलक्षणपित्तोन्माद युक्त केहैं ५ देह कृश व मन अरुचि कफकाबढ़ना कंठ में मनमें जड़ता देह बिकलगति और ताकत इनका बंदहोना गूंगापना

वहिगपना देहभारी रहहोनानिद्रा और लारका गिरना पेटमें कृमि पड़ जायँ बाणी शिथिल ये कफकेउन्मादके लक्षणहैं ६ ॥

(संनिपातकेउन्मादकेलक्षण) उन्मादेनत्रिभिर्दोषैर्जातेनग्रसितोनरः॥ सोपद्रवैरसाध्योयंकथितोभिषजांवरैः ७ (औरभीकारण लिखतेहैं) चौरैर्नृपेन्द्रैररिभिस्तथान्यैःसंत्रासितःक्षीणधनोभिघातः॥शोकाभितप्तोमुनिभिःप्रशप्तःसंजायतेतस्यमनोविकारः८(इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेउन्मादलक्षणम् ॥

त्रिदोष उन्माद करके ग्रसागया जोमनुष्य और उपद्रवयुक्तहो वोरोगी असाध्यहै ऐसे श्रेष्ठ वैद्योंने कहाहै ७ चोरोंने राजाने वैरियोंने और किसीने इस मनुष्यको त्रास दिखायाहो और जिसका धन नष्टहोगयाहो चोट लगीहो शोकयुक्तहो ऋषिमुनि करके शापदिया गयाहो ऐसेमनुष्यके मन विकार अर्थात् उन्माद रोग होताहै ८ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांउन्मादरोगस्समाप्तिमगमत् ॥

(अथभूतोन्मादलक्षण) ब्रह्मण्योगुरुदेवपूजनरतोदाताप्रव्यक्ताक्षरःसंतुष्टोमितभुक्सुगंधिवनिताप्रीतिर्विनिद्रोऽनिशं॥तेजस्वी बलवान्शुचिर्नयपरोभिज्ञोतिहर्षान्वितो देवोन्मादयुतोनरःसभवतिब्रह्मात्मकोब्रह्मवित् १ (दैत्यलगेहुयेमनुष्यकेलक्षण)देवब्राह्मणसाधुवैष्णवगवांस्त्रीणांचसंन्यासिनां विद्वेषीभयदोतिनिष्ठुरवचोतुष्टोन्नपानादिषु ॥ दुष्टात्मापरमर्मभिद्गतभयःक्रोधीचमानीनरःस्तब्धोगर्वसमन्वितोदनुजयुक्क्रूरोसहिष्णुर्बली २ (गंधर्वलगाहोउसकेलक्षण)संचारीविपिनेनदीपुलिनयोरम्यस्थलेपर्वते हृष्टात्मारुणकंजचारुनयनोवादित्रगीतप्रियः ॥ तुष्टोनीतिपरायणोतिचतुरोवाग्मीसुगंधान्वितोगंधर्वग्रहपीडितःसुवचनःस्वाचारभुग्मानवः३॥

जो ब्राह्मण गुरुदेव इनका पूजन कराकरे दाताहो शुद्धबोले संतुष्टहो थोड़ाखानेवाला सुगन्धी और स्त्रीमें प्रीतिहो रातदिन निद्रा न आवे तेजस्वीहो बलवानहो पवित्रहो नीतिका जाननेवालाहो सर्व बातोंको जाने हर्षयुक्तहो ब्रह्मका जाननेवाला ब्रह्मात्मक ऐसामनुष्य देवताका उ-

न्मादवाला जानना १ जोमनुष्य देवब्राह्मण साधुवैष्णव गो स्त्री संन्यासी इनसे वैरकरै इनको भयदे तथा खोटाबोलै अन्नजलसे जो तुष्टनहो दुष्ट हो पराये मर्मका छेदनेवालाहो निडरहो क्रोधीहो मानीहो स्तब्धहो गर्व-युक्तहो क्रूरहो सहनशील तथाबलीहो ऐसेमनुष्य को दैत्यकी बाधाजाने २ जो मनुष्य वन नदी पुलिन रमणीकस्थल पर्वत इनमें विचरने वाला हो प्रसन्नचित्त लाल कमल केसेनेत्रहों बाजा और गीत जिसको प्यारा लगे तुष्टहो नीतियुक्तहो अतिचतुरहो शुभ बोलनेवालाहो सुगंधयुक्तदेहहो वाग्मी अपने वित्तमाफिक भोजनकरे ऐसेमनुष्यको गंधर्वकी बाधाजाननी ३॥

(यक्षग्रस्तकेलक्षण) गंभीरास्यवचोऽरुणांवरधरोधीरोतिशूरो महान् भोमर्त्याःप्रवदंतुमेझटितिकिंदास्यामिकस्मैवरं ॥ योयक्ष ग्रहपीडितोवदतिनानान्योरुणाक्षोनिशं तेजस्वीबलवान्वरोद्रुत गतिर्वाग्मीसहिष्णुर्भृशम् ४ (महासर्पआदियुक्तउन्मादकेलक्षण)क्रोधात्माभुजगग्रहेणपरितोग्रस्तोहियोमानवो रक्ताक्षोरुधिर प्रियोतिबलवान्प्रेप्सुःपयःपायसे ॥ शौचाचारवहिर्मुखोविलि हितोऽसृक्सृक्कणीजिव्हया शून्यागाररतःक्वचित्प्रसरतसर्प्पैवहिं साप्रियः५(पित्रीश्वरोंकेदोषकालक्षण) दध्योदनेपायसशर्करासु मध्वाज्यमांसेषुचरक्तवस्त्रे ॥ सुगंधपुष्पेष्वतिशीतलोदेपितृग्रहग्र स्तनरोभिलाषी ६ ॥

जोमनुष्य गंभीर और अल्पवाणीका बोलनेवालाहो लालकपड़े पहि-ने धीर अति शूरहो और जोकहे किहे मनुष्यो मुझसे वरमांगो क्यादूं और लाल नेत्रहों तेजस्वीहो बलवान्हो जल्दी चलनेवालाहो श्रेष्ठ बोलने वाला सहनशील ऐसामनुष्य यक्षकी बाधा युक्तजानना ४ क्रोधीहो और रुधिर प्यारालगे बलीहो दूध और खीरके भोजनकी इच्छाहो शौच और आचार रहितहो बिले सरीखा घर प्यारालगे लालनेत्रहों जीभ से ओठोंके रुधिर लगेको चाटे शून्यघरमें रहाकरै कभी पसरजाय सांप कीसीतरहहिंसा करनाप्यारालगै ऐसे मनुष्यको भुजंग अर्थात् महासर्पक बाधा समझनी चाहिये ५ दही भातखीर बरा शहद घी मांस लालवस्त्र सुगंध पुष्प शीतलजल ये पदार्थ जिसकोप्यारेहों उसमनष्यको पित्रीश्वरों को बाधाजाननी ६ ॥

(राक्षसलगेहुयेमनुष्यकेलक्षण) सुरामांसरक्तेषुलिप्सुर्विलज्जोमहाक्रोधयुक्तोतिशूरोसहिष्णुः॥ बलीनिष्ठुरःक्रूरकर्माविरूपो ग्रहीतोनिशाचारिभिर्योमनुष्यः ७ (प्रेतग्रस्तकेलक्षण) भ्रमति रुदितिनित्यंगह्वरारण्यसेवी विलपतिकिलमूर्च्छामेतिकंपंविधत्ते॥ हसतिलिखतिभूमिंभक्ष्यपानैरतृप्तो वदतिविकलवाणींप्रेतग्रस्तो मनुष्यः ८ बालभीरुस्त्रियादेहेप्रविशंतिसुरादयः॥ शीतादयोयथा कायेमन्यंतेप्रतिविंववत् ९॥

मद्य मांस रुधिर इनकी इच्छाहो लज्जा रहित महाक्रोधी शूरसहिष्णुबली निठुर क्रूरकर्मका करनेवाला विरूप ऐसा मनुष्य राक्षस ग्रस्त जानना ७ डोलाकरै नित्यरोयाकरै पर्वत बनमें रहाकरै बिलापकरै कभी मूर्च्छासे गिरपड़ कांपै हँसै धरतीको लिखे भोजन औरपीनेसे तृप्तनहो बिकलबाणीबोले ऐसा मनुष्यप्रेतग्रस्त जानना ८ बालक डरपोंके स्त्री इन के देहमें देवताआदि प्रवेश करतेहैं जैसे शीतघाम देहमें लगे तिसी तरह प्रतिबिंब उनका मालूम होताहै ९॥

विशंतिदेहेमनुजस्यसर्वतोग्रहादयःकैरपिदृश्यतेनते॥ कुर्वंति पीडांमहतींसुदुस्सहांगच्छंतिशांत्यावलिमंत्रकादिभिः १० विशंतिनरदेहेषुपूर्णमास्यामरग्रहाः॥ संधयोर्दानवादैत्यागंधर्वाचाष्टमीद्वयोः ११ पितरःकृष्णपक्षेचयक्षायेपतिप्रत्तिथौ॥ पंचाम्यामुरगारात्रौगंधर्वाराक्षसादयः १२ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेभूतोन्मादलक्षणंसंपूर्णम्शुभमस्तु॥

ग्रहादि संपूर्ण मनुष्यके देहमें प्रवेशकरते किसीको नहीं दीखे औरदुस्सहतथा भारी पीड़ाको करतेहैं वो सर्वशांति और बलिदान तथा मंत्रजाप से शांति होतेहैं १० देवताग्रह मनुष्यके देहमें पूर्णमासीको प्रवेश करतेहैं और असुर दानव पूर्णमासी और अमावास्या इनकी संधिमें प्रवेश करतेहैं और गंधर्व दोनो शुक्ल व कृष्ण पक्षकी अष्टमीमें प्रवेश करते हैं ११ पितर कृष्ण पक्षमें और यक्ष पड़वामें सूर्य पंचमीमें रात्रिमें राक्षसादिक चतुर्दशीमें पिशाच ये प्रवेश करतेहैं १२॥ इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यांभूतोन्मादलक्षणम्सम्पूर्णम्॥

(वातअपस्माररोगकेलक्षण.) मासेपक्षेदशाहेप्रकुपितमरुतासंभवोघोररूपो रोगोपस्मारसंज्ञःसपदिसकुरुतेपातयित्वानरांगं ॥ श्वासंकासंचमूर्च्छांकरचरणशिरःक्षेपणंशून्यदेहं दोषोद्रेकंविसंज्ञां कफवयवमनंस्वेदशोषांगपीडाः १ (पित्तकीमृगीरोगकेलक्षण) पित्तापस्माररोगीपततिभुविनभःपीतरक्तंचदृष्ट्वा फेनंपीतंकफस्य प्रवमतिमुखतःपीतनेत्रास्यकायः ॥ उत्तप्ताक्षोविसंज्ञःक्षिपतिकरपदःकंपतेसप्रसेकः संरंभश्वासमूर्च्छाभ्रमतिवहुतरंशुष्कहृत्कंठतालुः २ (कफकीमृगीरोगकेलक्षण) श्लेष्मापस्माररोगीवितरतिवहुशोहस्तपादप्रकंपं संरंभाद्दर्शयित्वासपदिशितनभःपातयित्वामनुष्यं ॥ शीतांगंशुक्लनेत्रंशितकफनिचयं वक्त्रदेशोद्गिरंतंरोमांचश्वासशीतंजडतरहृदयंगौरवांगंस्फुरंतम् ३ ॥

मासमें पक्षमें दशदिनमें कुपितहुआ जोवात सो अपस्मारनाममिरगीरोग को पैदाकर ये लक्षणों को करताहै मनुष्य को पृथ्वी पर गेरदेताहै और श्वास खांसी मूर्च्छा तथा हाथपैरों को इधर उधर पटकना तथा शिरको पटकना शून्यदेह दोषों को बढ़ावै बेहोशी कफकी उलटी करै पसीनेशोष अङ्गों में पीड़ा १ पित्त की मृगीवाला रोगी धरतीमें गिरपड़े और आकाश को लाल पीला देखै और मुखसे पीलेझाग कफ के गेरे पीलेनेत्र पीलाहीदेह होजाय नेत्र तप्त होजायँ बेहोशी हो हाथ पैर पटके कांपे पसीने हो श्वासका बढ़ना मूर्च्छा बहुतडोलै तालू कण्ठ हृदय सूखे ये पित्तकी मृगी रोगवाला करै २ कफकी मृगी रोगवाला मनुष्य येलक्षणों को करै हाथ पैर को कँपावै जल्दी से श्वेत आकाश को देख पृथ्वीपर गिर पड़े देह शीतलहोजावे नेत्र सफेद श्वेत कफ को मुखसे गेरे रोमांचहोश्वास हो सरदीलगे हृदय जकड़जावे शरीरभारी तथा देहफड़के ३ ॥

(सन्निपातकीमृगीरोगलक्षण) वातपितकफैर्युक्तश्चिन्हैःसर्वैःसमन्वितः ॥ अपस्मारःप्रकुरुतेपंचत्वंरोगिणोनिशं ४ इतिश्रीमिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअपस्मारलक्षणम् ॥

बादी कफ पित्त तीनोंदोषोंके चिन्होंकरकेयुक्त जो मृगीरोगवाला सोमर जावे ४ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांअपस्माररोगनिदानंसमाप्तम् ॥

(वातव्याधिरोगलक्षण) व्यायामेनक्षुधातृषातिकटुकक्षाराम्ल रुक्षाशनैःशोकव्याधिविकर्षणातिगमनैरत्यंवुपानादिकैः ॥ धातोः संक्षयघात्तपातवनितात्यंतप्रसंगादिभिः वातःसंकुपितःकरोतिविविधान्रोगान्महादारुणान् १ श्रोतांसिसर्वाणिशरीरजानिरिक्तानिधातुप्रवहानितानि॥ प्रपूरयित्वातिरुषाशरीरेममणिसंतोदति चंडवातः २ हृत्पार्श्वोदरवस्तिहस्तचरणग्रीवाशिरःकूजनं नाशाकर्णमुखाक्षिदंतरसनागुल्मांत्रसंपीडनं॥ कुब्जत्वंबधिरंकृशत्वमरतिं खांज्यंशिरःकंपनंअर्द्धांगेजडतांकरोतिकुपितोवातोमहादारुणः ३॥

दण्ड कसरत के करनेसे क्षुधा तृषा के रोकनेसे अतिकडुआ खारा खट्टा रूखा ऐसेपदार्थ के खानेसे सोचसे देहमें रोगके होनेसे बहुतचलनेसे बहुत जलपीनेसे धातुकेक्षयहोनेसे घातसे गिरपड़नेसे स्त्रीके बहुतसङ्गकरनेसे बातकुपितहो मनुष्योंको महादारुण अनेकबात के रोग पैदाकरे १.जितनी शरीरमें धातुकी बहनेवाली नाड़ी तिनको बात शुष्ककरदे औ रोषको प्राप्तहुई जो बात सो सर्वनसोंमें प्रवेशकर प्रचण्डवात मर्म मर्म में पीड़ा करतीहै २ हृदय पसवाड़ा पेट बस्ती हाथ पैर नाड़ शिर इनका गूंजना नाक कान मुख नेत्र दांत जीभ टकना आंत इनमें पीड़ाहो कुबड़ा होजाय वहिरा तथा लटजावे मनका न लगना खंजापना शिरका हिलना अर्द्धाङ्गवायुहोजायतथाबादीसेजकड़जाययेलक्षणकुपितमहाबातकरतीहै३॥

सर्वांगेषुगतोमरुद्रुतरंशूलंकरोतिद्रुतं भेदंसंधिषुकंपनंकरपदामरुथ्नांचसंस्फोटनं॥ सर्वांगस्फुरणंविनिद्रमनिशंशोफंशरीरेभ्रमं आध्मानंकटिपीडनंहृदिरुजंविण्मूत्रयोस्स्तंभनं४ वातःकुर्यात्कोपितोदंतबंधंजिह्वास्तंभंकर्णयोर्गुंजशब्दं ॥ नाडीस्तब्धंरक्तवीर्यादिशोषंअस्थिस्फोटंदेहसंकोचवृद्धिः ५ जृम्भोद्गारंचहिक्कांवितरति पवनःपीतवर्णंशरीरं हल्लासंश्वासकासंमनसिविकलतांकुर्वतीसारगुल्मं॥ अंतर्दाहंविसंज्ञांकृशतनुमरतिंकामलांपांडुरोगंउद्वेगं संधिभदंव्यथयतिसततंसर्वकायेमनुष्यं ६ ॥

सर्वअङ्गों में प्राप्तहुई जोबातसो येलक्षणोंकोप्रगटकरैप्रबलशूल संधीन

मेंपीड़ाहाथपैरों का कांपना हड्डी हड्डीका फूटना सबशरीरका फड़कना नींदका न आना सूजन तथा भ्रम पेटकाफूलना कमरमेंपीड़ा हृदयमें दुःख विष्ठामूत्रका रुकजाना ४ कुपित बात दन्तबन्ध जीभकास्तम्भन कानोंमें गुआरशब्द नाड़ियोंका स्तम रुधिर और वीर्य का सूखना हड्डीहड्डीमेंपीड़ा देहका घटनाबढ़ना येलक्षण करतीहै ५ जम्भाई डकार हिचकी पीलिया सूखीरद श्वास खांसी मनमें बेकली उलटी अतीसार गोला भीतरी दाह बेहोशी शरीरकृश मनकानलगना कामला शरीरका रंग पीला उद्वेग सन्धिनमेंपीड़ा सबशरीरमें व्यथा ये लक्षण सर्वांगकी पवनकरतीहै ६ ॥

करोतिकोपितोनिलोहलीमकंचगृध्रसीं ॥ विशूचिकांविलंविकां प्रलापमंगपीडनम् ७ (त्वचामेंप्राप्तबातकालक्षण) त्वग्गतःपवनःकुर्याद्रुक्षत्वंत्वचिकृष्णतां ॥ कार्कश्यंशून्यतांकाश्यंवैवर्ण्यंस्फुटितारुजं ८ (रुधिरमेंप्राप्तवातकालक्षण) वातोरक्तगतःकुर्यात्कार्श्यंरुधिरशोषणं ॥ तीव्रतापंव्रणांगुल्मंखर्ज्जुंदद्रु विचर्चिकाम् ९ ॥

कुपितहुई जो बात सो मनुष्यकी देहमें हलीमक गृध्रसी बिशूचिका बिलंबिका प्रलाप अङ्गों में पीड़ाकरतीहै ७ त्वचामें प्राप्त पवन शरीररूखा तथा कालावर्ण को करे कर्कशस्वभाव तथा देह में शून्यता और कृशपना बिवर्ण तथा देह को फटना ये लक्षणकरतीहै ८ रुधिरसे प्राप्त बादी शरीर कृशकरे रुधिरमात्र को सुखाय देय तीव्रज्वरकरे फोड़ा और गोलान को पैदाकरै खुजली दाद खाज को करतीहै ९ ॥

(मांसमेदागतवायुकेलक्षण) मांसमेदगतोवातोगुर्वंगंकुरुतेश्रमं ॥ स्तब्धांगमरुचिंतापमरतिंरक्तशोषणम् १० (मज्जास्थीगतवातकेलक्षण) वातोमज्जास्थिगःकुर्याद्भेदःपर्वास्थिसंधिषु ॥ बलमांसक्षयंशूलंविनिद्रंवीर्यनाशनं ११ (शुक्रगतवातकेलक्षण) शुक्रस्थःपवनःकुर्यादरुचिंत्रिषुपीडनं ॥ वीर्यशोषंमनस्तापंबलकांतिसुखक्षयं ॥१२॥

मांसमेदामें प्राप्त बात देह को भारीकरै अनायास श्रम को करै शरीर जकड़जाय अरुचि ताप मनका न लगना रुधिरका सूखना १० मज्जा और हड्डीमें प्राप्तहुई जो बात सो गांठोंमें पीड़ा हड्डी और संधिनमें पीड़

मांसऔर बलकाक्षयहोना शूल और नींदनाश तथा वीर्यका नाश येलक्षणोंको करै ११ शुक्रमेंप्राप्तहुई वात सो अरुचि मन वाणी देह इनमेंपीड़ा वीर्यका शोष मनमें ताप बल कांति सुखकोनाश येलक्षणोंको करै १२ ॥

(नाड़ीगतवातकेलक्षण) वातःशिरागतःकुर्यात्कुब्जंखांज्यंमहारुजं ॥ शिरासंकोचस्तब्धत्वंबधिरंवमनंकृशं १३ (कोष्ठगतवातकेलक्षण) कोष्ठस्थानगतोवातःकुरुतेमूत्रबंधनं ॥ शूलाध्मानमुदावर्त्तगुल्मार्शांसिभगंदरम् १४ (सर्वांगगतवातकेलक्षण) सर्वांगस्थोपिकुपितः पवनोविविधान्रुजान् ॥ कुरुतेवर्द्धतेस्सर्वान् वाह्याभ्यंतरपीडकान् १५ ॥

नाड़ीगत बातरोग येलक्षणोंको करै कुबड़ापना खंजापना नाड़ीनका सुकड़ना तथा जड़ता वहिरापना बौनापना और कृश १३ कोष्ठमें प्राप्त भई जो बात सो मूत्रबन्ध को करै शूलऔर अफराको करै उदावर्त गोला बवासीर भगंदर इनको करतीहै १४ सर्वांगमें प्राप्तभई पवन सोतरहतरहके रोगोंको पैदाकरतीहैऔर सब कुपित बाहरके रोगोंको तथा भीतरके रोगोंको बढ़ातीहै १५ ॥

संन्धिनमेंस्थितबातकेलक्षण) संधिस्थःपवनःकुर्यात्शोफंशूलंचदारुणं ॥ संधीन्विस्फोटयेत्सद्यःसचकर्षतिबर्द्धति १६ धातवः पंचदेहस्थाहेतवःसुखदुःखयोः ॥ स्वस्थानेसुखदाःसर्वेपरस्थानेषु दुःखदाः १७ (पंचबातकेअलगअलगलक्षण) प्राणोवायुर्बसति हृदयेऽपानसंज्ञोगुदांते नाभेश्चक्रेभ्रमतिपरितोजीवभूतःसमानः ॥ कण्ठस्थानेचलतिपवनोयोहनिरात्राबुदानः सर्वांगेषुप्रसरतिमरुद्व्यानसंज्ञोनितांतम् १८ ॥

संधियोंमें प्राप्तबात सूजन और दारुणशूल संधिनमें पीड़ा और सुखावै तथा बढ़ावै १६ पांच बातदेहमें सुखदुःखकी देनेवाली रहतीहैं यदिवो अपनेस्थानपर रहेतो सुखदायक और दूसरेके स्थान पर जानेसे दुःखदायकहोतीहैं १७ १प्राणबातहृदयमें रहतीहै २ अपानवायु गुदामें रहतीहै जीवभूतसमानवायु नाभीचक्रमें रहतीहै और ४ रातदिनकी बहनेवाली

उदानवायुकंठमेंरहतीहै और ५ सब देहमें रहनेवाली व्यानवायुहै १८ ॥

(पित्तान्वितप्राणवातकेलक्षण) प्राणःपित्तान्वितःकुर्याद्दूष्माणंचित्तविभ्रमं ॥ तृष्णांशूलंचहल्लासंहिक्कांछर्दिंचदुस्सहां १६ ॥ (कफान्वितप्राणवातकेलक्षण) प्राणःकफावृतःकुर्याद्दौर्बल्यालस्यसादनं ॥ वैरस्यमरुचिंतंद्रामुतूक्लेदंदोषसंचयं २० (पित्तकफयुक्त उदानवातकेलक्षण) उदानःपित्तयुक्कुर्य्यात्मूर्च्छांदाहंभ्रमंक्लमं॥कफान्वितोतिमंदाग्निं शीतंहर्षंचकंपनं २१ ॥

पित्तसंयुक्त प्राणपवन देहमें गरमीकोकरै तथा चित्तभ्रम प्यास शूल सूखी रद्दहिचकी बमन येलक्षणोंको करै १६ कफसंयुक्त प्राण वात येलक्षण करतीहै दुर्बलता आलस्यका स्थान विरसता अरुचि तंद्रा उकलाट दोषके समूहको बढ़ातीहै २० पित्तकेसाथ मिलीजो उदानवायु सोयेलक्षण करै मूर्च्छादाह भ्रमग्लानि औ उदानवायु कफके साथ मिलीहो तोमंदाग्नि शीत हर्ष तथा कंपको करतीहै २१ ॥

(पित्तकफयुक्तसमानबातकेलक्षण) समानपित्तयुक्तृष्णांमूर्च्छांमूष्माणमेवच ॥ कुर्य्यात्कफान्वितोहर्षं विरमूत्रंरोमहर्षणम् २२ (पित्तयुक्तअपानवातकेलक्षण) अपानःपित्तयुक्कुर्य्यात् रक्तातीसारमुल्वणं ॥ ऊष्माणमरतिंदाहमर्शांसिचभगंदरम् २३ (कफयुक्तअपानवातकेलक्षण) कफयुक्तोयदापानोगुदांतेकृमिसंचयं ॥ कुरुतेगुरुतांमूत्र मालस्यंबलनाशनम् २४ ॥

समानवायु पित्तके साथ मिलीहुई तृष्णा मूर्च्छा गरमीको करतीहै इसीतरह कफयुक्त समानवायु हर्षविष्टा मूत्रकारुकना रोमांचको करतीहै २२ अपानवायु पित्तके संयुक्त येलक्षण करतीहै रक्तातीसार गरमी मनका कहींनलगना दाह बवासीर भगंदर २३ कफयुक्त अपानवायु गुदामें कृमि रोग करै शरीरभारी बहुत मूत्रकाहोना आलस्य बलकानाश येलक्षणों को करै २४ ॥

(पित्तकफयुतव्यानवातकेलक्षण)व्यानःपित्तान्वितःकुर्य्यादंगविक्षेपणक्लमं॥ दंदकंस्तम्भनंदाहंशोफंशूलंकफान्वितः२५ नाडींय

दासमभ्येत्यकुपितःपवनोवली ॥ देहविक्षेपणंकुर्य्यात्शिरःकं-
पंकरोतिच २६ यदासंकुपितोवातो नानाहेतुभिरूर्ध्वगः ॥ तदासं
कुरुतेदोषं हच्छिरःशंखपीडनम् २७ ॥

व्यानवायु पित्तके साथ मिलीहुई अंगोंका पटकना ग्लानिको करतीहै
उपताप स्तंभ दाह सूजन शूल ये व्यानवायु कफसंयुक्त करतीहै २५ वली
पवन कुपितनाड़ीनमें प्राप्तहो शरीरका इधर उधर पटकना करतीहै और
शिर कंपको करतीहै २६ जववादी नाना हेतुनसे कुपित उपजतीहै तव
हृदयमेंमस्तकमें कनपटीमें पीड़ाकरतीहै और अनेकदोषोंकोकरतीहै२७॥

गत्वोर्ध्वंस्वगृहात्करोतिपवनोदेहंचकोदंडवत् कंठांकूजतिको
किलेवसततंगात्रंमुहुःक्षेपणं॥स्तब्धत्वंनयनद्वयोर्वितनुतेशोषंमुखे
वक्रिमां श्वासंकाससमन्वितंचजठरेशूलंतृषांसंभ्रमं २८ (पित्त
युक्तवातकेलक्षण) दाहंपित्तान्वितःकुर्य्यात्तृष्णांछर्दिंशिरोव्यथां ॥
हृल्लासंहृदयग्रंथिंहिक्कांकंठहनुग्रहं २९ (कफयुक्तवातकेलक्षण)
कफान्वितोवमिंकुर्य्यात्तंद्रांनिद्रांगगौरवं ॥ जाड्यंशैत्यंसरोमांचंक्ष
वंशोफंचवेपथुं ३० ॥

अपने स्थानसे ऊपरको चढ़ीहुई वात मनुष्यके देहको धनुषकी तरह
बांकाकरदे और कंठकोकिलाकी वतौर वोले तथा शरीरको इधर उधर
पटके दोनोंनेत्रोंका स्तब्धत्वहो मुखका सूखना तथा मुखटेढ़ा होजाय
श्वास खांसीके साथ पेटमें दर्दहो और प्यास तथा भ्रमहो २८ पित्तयुक्त
बात दाहकरै प्यास और बमनकोकरै शिरमेंदर्द सूखीरद्द हृदयमें गांठ
हिचकीकंठमें हनुग्रह इन रोगोंकोकरै२९ कफयुक्तबात वमन तन्द्रानिद्रा
देहभारी जड़ता शीतलगना रोमांच छींकसूजन कंपयेरोगकरतीहै ३० ॥

(कफपित्तयुक्तबातकेलक्षण)कफपित्तान्वितोवायुःपक्षाघातंकटि
ग्रहं॥कुब्जंखंजंशिरःकंपमंगभंगंप्रपीडनम् ३१ (अधोभागमेंप्राप्त
वातकेलक्षण) गत्वाधःकुपितःकरोति मरुतोरुस्तंभनंकुंडलं शूला
ध्मानविलंविकागुदरवंगुल्मोपदंशंभृशं ॥ शूकार्शांसिभगंदरंकटि
रुजंविण्मूत्रयोस्स्तम्भनं ॥ जंघोरूगुदशिश्नयोनिवृषणानांपीड

नंदयडकं ३२ हेतुभिःकुपितोवातोह्यतिकोपोन्यदोपयुक् ॥महाको पोत्रिदोपाभ्यांसवैभवतिरोगदः ३३ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेवातव्याधिलक्षणं ॥

कफ पित्त मिलीहुई बात पक्षाघात कमरमेंदर्द कुबड़ापना खंजत्व शिरकाहिलना अंगभङ्ग और पीड़ा करतीहै ३१ नीचेके भागमें प्राप्तहुई जोपवन सो उरुस्तंभ कुंडलरोग शूलअफरा बिलंबिका गुदामेंशब्द पेटमें गोला उपदंश शूकरोगबवासीर भगन्दर कमरमें दर्द दस्तपेशावकारुंकजाना जंवाउरू लिंगेन्द्री योनि अंडकोश इनमेंदर्द तथा दंडकरोग इनको करती है ३२ हेतुनसे कुपित बातरोग करतीहै और दोषके मिलनेसे अति कोप को प्राप्त होतीहै और त्रिदोषसे महाकोपको प्राप्त होतीहै तब बराबर रोगकरतीहै३३इतिहंसराजार्थबोधिन्याम्बातव्याधिरोगनिदानम्सम्पूर्णम्॥

अथवातरक्तरोगनिदानम् ॥

(तत्रादौवातरक्तरोगोत्पत्तिः) रुक्षोष्णाम्लकपायतीक्ष्णकटुकस्निग्धाशनैर्भूयसःनिष्पामांसकुलत्थशाकमधुरक्षारान्नपित्ताशनैः॥ तक्राम्लासववारुणीदधिपयःपानैर्निशाजागरैःप्रायःकुप्यतिवातरक्तमपरैर्व्यायामशोकादिभिः १ विरुद्धदुष्टाशुचिपानभोजनैर्जलावगाहैर्वनितातिसंगमैः॥ रात्रौदिवाजागरणैःप्रघर्षितोरक्तप्रकोपं कुरुतेमरुत्तदा२ श्रोतांसिरक्तप्रवहानिरुध्वाकरोतिवातोरुधिरंचकृष्णं॥ रोषात्तथाशोणितमुच्छ्लंतिसमस्तरोगान्वितनोतनूनम्३ ॥

रूखा गरम खट्टा कसेला तीखा कडुआ चिकना भोजनकरनेसेनिष्पाव तथा मांस कुलथी शाकमीठा खार मिलाअन्न पित्तकी करनेवाली बस्तुके खानेसे छांछ अम्र आसव मद्यदही दूधके पीनेसे रातमें जागनेसे दंड कसरतके करनेसे शोचसे बातरक्त कोपको प्राप्तहोताहै १ बिरुद्धदुष्ट अपवित्र बस्तुके पीनेसे तथा खानेसे स्नानसे बहुत स्त्रीसंगसे रातदिनके जागनेसे और डरनेसे बातरक्तरोग पैदा होताहै २ रुधिरकी बहनेवाली नाड़ीनके मार्गको रोककर बातरुधिरको कालारंगकाकरदेवै फिर क्रोधकी पासहुआ जोरुधिर सो देहके बाहर तथाभीतर अनकरोगोंको पैदाकर ३॥

करोत्यालसंमंडलंवातरक्तंशरीरंविवर्णरुजंरुक्षगात्रं॥ भ्रमंमूत्रकृच्छ्रं क्लमंमर्मतोदंज्वरंवेपथुत्वंशिरःपीडनंतत् ४ (पित्तान्वितवातरक्तकेलक्षण)करोत्येवपित्तान्वितंवातरक्तंनुदंदाहसम्मोहतृष्णांगशोषं॥ भ्रमोष्मारतिश्छर्दिस्वेदांगतोदंकटुत्वंमुखेशोफमूर्छांविनिद्रं ५ (कफयुक्तवातरक्तलक्षण) कफेनान्वितंवातरक्तंगुरुत्वंकरोत्यालसंमंडलंरक्तपीतं॥वमिंमंदचेष्टेंद्रियेपुप्रलापंशरीरेतिपामाकृशत्वंक्षवत्वं ६॥

आलकस कालेकाले देहमें चकत्ता तथाशरीरका विवर्ण रूखादे हकरदे पीड़ाहो भ्रम मूत्रकृच्छ्र ग्लानि मर्ममर्ममें पीड़ा ज्वरकंप शिरमें पीड़ा ४ पित्तान्वितजो वातरक्तसो मस्तपनादाह मोहप्यास अंगशोष भ्रमगरमी मनकाडमाडोलपना वमन पसीनेकाआना अंगोंमेंपीड़ा मुखकडुआ सूजन मूर्च्छा निद्राकानाश येलक्षणोंको करताहै ५ कफ युक्त वातरक्त देहभारी करै आलकस देहमें लालपीले चकत्ते करे वमन इंद्रियोंकी मंदचेष्टाहोना बकना देहमेंखाज तथादेहकृश और छींकका आना येलक्षणको करै ६॥

पांगुल्यंचविसर्पिकारुचि मदौमूर्च्छांगुलीवक्रता हिक्कादाहप्रवेपिकाभ्रमतृषाश्वासक्लमःस्फोटता॥ कासोमोहशरीरशोषमधिकंमर्मग्रहश्चार्वुदःसंप्रोक्तास्समुपद्रवामुनिवरैस्तेवातरक्तेऽहिताः ७ सोपद्रवंत्याज्यतमंभिषग्भिर्द्विदोषजंकष्टतरेणसाध्यं॥ जपेनदानेनशिवार्चनेनयत्नौषधीभिर्ननुवातरक्तं ८इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेवातरक्तलक्षणम्॥

पांगुरा बिसर्परोग अरुचिमदमूर्च्छा उंगलीटेढ़होजाय हिचकीदाहकंप भ्रम प्यास श्वास ग्लानि शरीरका फटना खांसी मोह देहमें शोष सर्मस्थानोंमें पीड़ा अर्बुदरोग ये बातरक्त रोगके उपद्रव मुनीश्वरों ने असाध्य कहेहैं ७ बैद्यों करके उपद्रवकेसाथ जोबातरक्त सोत्याज्यहै और दो दोषसे पैदाहुआ जोबातरक्त सो कष्टसाध्यहै वो जपदान शिवपूजन और इलाज औषधीकरके अच्छाहो ८ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांबातरक्तनिदानम् सम्पूर्णम् शुभम्॥

अथउरुस्तम्भनिदानं) नीत्वाधःकुपितोवातःसञ्चयंश्लेष्ममेदयोः॥ जंघोरुशक्थिगुल्फेषुपूर्यित्वास्तम्भयेद्गतिम् १ (जङ्घावौश्लेष्ममेदाभ्यांसम्पूर्णौभवतौबलौ ॥ ऊरूस्तम्भःसविज्ञेयोभिषग्भिःप्राकृतैभृशम् २ (उरुस्तम्भलक्षणम्) ऊरूस्तम्भेतिपीडाभवति चरणयोःरोमहर्षोजडत्वं शीतंसर्वाङ्गकम्पोवयसिशिथिलताछर्दिनिद्राकृशत्वं ॥ कृच्छ्रोन्न्यासम्पदानामरुचिरतिवमिर्मन्दवह्निर्गुरुत्वंचिन्हान्येतानिनूनं मुनिगणवचनात्कीर्तिताहंसराजैः ३ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे उरुस्तम्भलक्षणम् ॥

अथउरुस्तम्भलक्षणं ॥ कोपको प्राप्तहुई जोबात सोकफ और मेदाको समूहको नीचेलेजायकर जांघऊरू जानू टकना इनमें व्याप्तकरके चलनेकी शक्ति को स्तंभन करदे उसे उरुस्तंभरोग कहतेहैं१ जांघउरू जबकफ और चर्बीसे परिपूर्णहोजायं औरचला न जावे उसको वैद्योंने उरूस्तंभ रोग कहाहै २ उरूस्तंभ रोग में ये लक्षण होतेहैं दोनोंपैरोंमें पीड़ा रोमांच जड़त्वशीतका लगना सर्व देहमें कंप अंगोंमें शिथिलता रदनिद्रा कृशता पैरोंका कठिनतासे उठना अरुचिमनका न लगना वमन मन्दाग्निदेहभारी येये उरूस्तंभरोगके लक्षण मुनीश्वरोंकेवचनकेअनुसार हंसराजकविने कहेहैं३ इति हंसराजार्थबोधिन्यांउरूस्तंभरोगनिदानम्सम्पूर्णम् ॥

(अथामवातलक्षणं) व्यायाममन्दाग्निविरुद्धभोजनैःस्निग्धाशनेनातिविहारचेष्टया॥ रात्रौदिवाजागरणेनकोपितःश्लेष्मस्थलेह्यामचयंनयेन्मरुत् १ आमान्नस्यरसोपक्वोमरुताक्रियतेपुनः॥ दूषितःकफपित्ताभ्यांनाडीभिःपीयतेनिशम् २ आमसंज्ञःसरावायंयोजीर्णजनितोरसः॥ रोगाणामाश्रयोघोरःश्रोतांसितुदतेभृशम् ३ ॥

तीनश्लोककरिके प्रथमआमरोगकीउत्पत्तिलिखतेहैं दंडकसरतकेकरने से विरुद्ध भोजनसे चिकने पदार्थखानेसे अत्यन्त स्त्रीआदिसेवन करनेसे रातदिन जागनेसे कोपको प्राप्तहुई जोबात सोकफके स्थानमें आमके समूहको प्राप्त करतीहै १ अन्नका जोरस बिनापका उसको बात दूषित करै तथा पित्त कफकर दूषित भयाहो उसको नाड़ीपीतीहै २ उसीअजीर्ण

से पैदाहुये रसको आमरोग घोररोगोंका आश्रयकरतेहैं औरनाड़ीके मार्गों को रोकदेतीहै ३॥

आमोरुक्विदधातिशोफमधिकंसंकोपितोवायुना जङ्घोरूकरसन्धिपादवृषणस्कन्धास्यनेत्रेपुच॥ मांसास्थित्रिककुञ्चनञ्चहृदयेकम्पंज्वरंशोषणं स्तब्धांगम्वितनोतिदारुणभयम्पाकंतृषांशून्यतां ४ (पित्तसेकुपित्तआमलक्षण) आमःसंकुरुतेरुषाङ्गमरुणंपित्तेनसंकोपितः शीर्षेसन्धिषुपीडनंकटिरुजंसर्वाङ्गदाहंज्वरं मूर्च्छांसंभ्रमशोषणंचहृदयेशूलंमहादारुणं बन्धंमूत्रपुरीषयोर्नयनयोःपीतत्वमार्तिं तृषाम् ५ (कफसेकुपित्तआमवातकेलक्षण)आमःश्लेष्मयुतःकरोतिजड़तांनिद्रांगुरुत्वन्तनौ आलस्यंबहुमूत्रताञ्चगलकेसंकूजनंशीततां॥ दौर्बल्यंमुखपादहस्तवृषणेशोफङ्गतेस्तम्भनमूर्त्रीर्योजोरुचितेजसांबलधियांनाशंप्रसेकंक्लमम् ६॥

बादीसे कुपित आमरोग जांघउरू हाथ तथा देहकी संधी पैर अंडकोश कंधेनमें मुखतथा नेत्रोंमें सूजनकरदे मांसहड्डी त्रिककहिये मकड़ इनका घटना हृदयमें कंपज्वर शोष देहका जिकड़ जाना घोर भय तथा देह का पकना और प्यास और देहमें शून्यता येलक्षण करतीहै ४ पित्तसे कुपित जो आमरोग सो देहको लालकरदे मस्तक तथा संधीनमें दर्द सब देहमें दाह तथा ज्वरमूर्च्छा भ्रमशोष हृदयमें महा दारुण शूल मूत्रपुरीष का रुकना नेत्रपीले प्यास औरखेद येलक्षण करताहै ५ कफयुक्त आमरोगके येलक्षणहैं शरीर जकड़जाय निद्रादेहभारीआलकस पेशाबज्यादा उतरै गलेका गूंजना जाड़ालगे दुर्बलपना मुख हाथ पैर अंडकोश इनमेंसूजन गतिका रुकना बीर्यताकत रुचितेज बल बुद्धि इनकानाश लारका गिरना ग्लानी ६॥

आमस्त्रिदोषजोऽसाध्यःकष्टसाध्योद्विदोषजः॥ दोषैकसंयुतःसाध्यःसुखेनैवभिषग्वरैः ७त्रिदोषजनितैःसर्वैर्लक्षणैर्लक्षितोहियः॥ सन्निपातःसविज्ञेयोद्विदोषोहिद्विदोषजैः ८ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेआमवातलक्षणम्॥

त्रिदोषसे पैदाहुआ आमरोग असाध्यहै और दो दोषसे जो हुआ सो कष्टसाध्यहै और एकदोषयुक्तसाध्यहै ऐसे सुखेणादिवैद्योंनेकहाहै ७ जिस में त्रिदोषके सबलक्षण मिलतेहैं उसकोसन्निपातका आमवातरोग कहते हैं और जिसमें दोदोषके चिन्हहों उसे द्विदोषज कहतेहैं८ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांआमवातलक्षणम्सम्पूर्णम्शुभम् ॥

अथपरिणामनिदाम् ॥

(अथपरिणामशूललक्षणम्) विण्मूत्ररोधाद्विषमासनस्थात्शीतांबुपानात्पवनस्यरोधात् ॥ अत्युच्चभाषादतिभक्ष्यपानाद्रूक्ष्याशनात्कुत्सितयानरूढ़ात् १ अपक्कपिष्टान्नविरुद्धभक्षणात्कषायतिक्ताशुचिदुष्टभोजनात् ॥ दिवानिशाजागरणाद्विलंघनात्करोति शूलंपवनोरुषान्वितः २नाभिमूलेगुदेवस्तौयोनौपार्श्वेत्रिकेस्थिषु॥ शूलंवातकृतंज्ञेयंभिषग्भिर्नात्रसंशयः ३ ॥

बिष्टामूत्रके रोकनेसे खोटी सवारीपर बैठनेसे शीतल जलपोनेसेपवनके बेगरोकनेसे ऊंचेबोलनेसे अत्यंतभोजनऔर पानसेतथारूखेपदार्थकेभोजनसे यहरोगहोताहै १ बिनापकापिसाहुआ ऐसे अन्नकेखानेसेबिरुद्ध भोजनसे कसेला तीखा अपवित्र दुष्टभोजनसे दिनरात के जागनेसे लङ्घनकरनेसे रोषको प्राप्तहुई जो पवन सो शूलरोग को पैदाकरतीहै २ नाभीमूलमें गुदामें मूत्रस्थानमें योनीमें पसवाड़ोंमें त्रिकस्थानमें हाड़ोंमें बादीकाशूल बैद्य जाने इसमें सन्देह नहीं ३ ॥

(वादीकेशूलकालक्षण)शूलंवातोद्भवंकुर्यात्प्रभातेंगविमर्दनम् विण्मूत्रबंधनंहिक्कामाध्मानोद्गारस्तब्धताः४(पित्तकेशूलकेलक्षण) तीक्ष्णोष्णपिण्याकविदाहिपूगैस्तैलाम्लनिष्पाकटुसूर्यतापैः ॥ व्यायामसौबीरसुराविकारैःप्रवृद्धपित्तंकुरुतेहिशूलं ५ पित्तोद्भवंशूलमतीवरौद्रंमध्यंदिनेकुप्यतिचार्द्ध रात्रौ॥करोतिमूर्च्छांभ्रमदाहंमोहतृट्स्वेदमार्त्तिज्वरमुग्रशीतं ६ ॥

प्रातःकाल शरीरका टूटना दस्त और पेशाबकाबन्दहोना हिचकी पेट काफूलना डकारका आना जड़ता ये बात शूलके लक्षणहैं ४ तीक्ष्ण

गरम पिण्याक दाहकरनेवाली वस्तु सुपारी तेल खट्टा निष्पाकटु सूर्य्य कीघाममें डोलनेसे दंडकसरतके करनेसे कांजीके पीनेसे मद्यकेविकार से कोपकोप्राप्त हुआ जो पित्त सो शूलरोगको करताहै ५ पित्तसे पैदाहुआ घोरशूल सोमध्याह्न और अर्द्ध रात्रमें कोपकरताहै औरमूर्च्छा भौर दाह वेहोशी प्यास पसीने खेद घोरज्वर और शीत येकरैहै ६ ॥

कुक्षौसजठरेपार्श्वेशूलंपित्तसमुद्भवम् ॥ सोष्मागांदारुणांज्ञेयंबै द्यैराधुनिकैर्ध्रुवम् ७ (कफकेशूलकालक्षण) मध्वाज्यमांसैर्मधुराम्लतक्रैर्वृन्ताकशीतोदकदुग्धपानैः॥ माषेक्षुमज्जातिलतैलशीतैः श्लेष्माप्रवृद्धःकुरुतेहिशूलं ८ बक्षस्थलभवंशूलंकफान्तस्यसमुद्भवं॥ वमनेनशमंयातिसंध्ययोर्बलवत्तरं ९ ॥

कूख पेट पसवाडोंमें पित्तकाशूल होताहै और दारुण गरमी ये लक्षण अबकेवैद्योंने कहेहैं ७ सहत घी मांस मीठा खट्टा छांछ बैंगन शीतलजल दूध इनकेसेवनसे उड़द ईख चरबी तिलतेल शरदीसेकुपितहुआ जोकफ सो शूलरोग पैदा करताहै ८ कफसे पैदाहुआ जो शूल वक्षस्थल तथा सन्धीनमें सो बमनके करानेसे आरामहो ९ ॥

शूलंकफात्म्यंकुरुतेप्रसेकंतंद्रालसंगौरवतांप्रकंपं ॥ हल्लासकासारुचिछर्द्दिदाहंकंठेतिपीडातिमितांगशीतं १० (वातकफशूलके लक्षण) पार्श्वेपुवस्तौहृदयेचशूलंवदंतिवैद्याःकफवातजातं ॥ पित्तानिलाभ्यांजनितंसदाहंकुक्षिद्वयेतद्धृदयेप्रपीड़येत् ११ (शूलरोगकीउत्पत्ति)चंडीशशस्त्रंकफपित्तसम्भवंजानीहितंत्वंहृदयोदरस्थं रूपाणिस्वंस्वंकुरुतेस्वकाले दोषैःसमस्तैःप्रभवंत्यजेत्तं १२ ॥

कफसेपैदा हुआ जोशूल सो पसीना तंद्राआलकस देहभारी कंपसूखरहखांसी अरुचि वमन दाहकंठमें पीड़ा मंद जाड़ा लगे येलक्षणकरै १० जिसमें येलक्षणहों उसको बातकफका शूल बैद्यकहतेहैं पसवाड़ोंमें मूत्रस्थानमें हृदयमें शूलहो वातपित्तजनितशूललक्षण ॥ औरजिसमें दाहहो कूखमें और हृदयमेंपीड़ाहोउसे बात पित्तका शूल रोग जानै ११ श्रीमहादेवके शूलसे तथा कफपित्तसे पैदा हुआ शूलसो हृदयमें पेटमें अपना तरह तरहका रूप धारणकरैऔर सब दोषों से पैदाहो ऐसाशूल वानरोगी वैद्यत्यागदे १२ ॥

(शूलकाअसाध्यलक्षण) वायुःसंनिहितश्चपित्तकफयोस्स्थानं समावर्त्तयेत्यःशूलंकुरुतेतदेवमपरंमुक्तेतिशांतिंव्रजेत्॥तच्छूलंपरिणामजंमुनिवरैःप्रोक्तंत्रिदोषान्वितं ज्ञेयंप्राक्कथितैर्नरैःकफमरुत्पित्तोद्भवैर्लक्षणैः १३ सोपद्रवंत्रिदोषोत्थमसाध्यंकथितंबुधैः॥ कष्टसाध्यंद्विदोषोत्थंसुखेननिरुपद्रवं १४ (शूलकेदशउपद्रवकेभेद)तंद्रा मूर्च्छाज्वरोदाहःश्वासःकासोतिवेदना॥हिक्काङ्गगौरवश्छर्दिः शूलस्योपद्रवादश १५ इतिश्रीभिषक्कविचित्तोत्सवेहंसराजकृतवैद्यशास्त्रेपरिणामशूललक्षणम्सम्पूर्णम्शुभम् ॥

जिसमें ये लक्षणहों उसे परिणामशूल जानना जोवादीसेयुक्त और पित्त कफके स्थानमें प्राप्तहोकर पीड़ादर्दकोकरै और दूसरास्थानसे शांतिहो और त्रिदोषयुक्तहो उसेअसाध्य मुनीश्वरोंने तथा प्राचीन वैद्योंने कहाहै १३ जोउपद्रवके साथहो और सन्निपातसे पैदाहुआहो वो शूलरोगअसाध्यहै ऐसावैद्योंने कहाहै औरजो दोदोषसे पैदाहुआहो वोशूल कष्टसाध्य है औरजो उपद्रव रहित हो वो सुखसाध्यहै १४॥१ तंद्रा २ मूर्च्छा ३ ज्वर ४ दाह ५ श्वास ६ खांसी ७ अतिदुःख ८ हिचकी ९ देहभारी और १० वमन येशूलरोगके दशउपद्रवहैं १५ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांशूलरोग निदानंसमाप्तम्शुभम् ॥

(अथअनाहउदावर्तरोगनिदानम्तस्योत्पत्तिः)पुरीषमूत्रानिलवेगरोधादनाहरोगःकिलमर्मभेत्ता ॥ संजायतेसौकुरुतेविकारान्वातामयान्वैद्यवरावदन्ति १अपानवातसंरोधादूर्ध्ववातगतिर्भवेत्॥ अनाहोसौपरैःप्रोक्तोमुनिभिस्तत्ववादिभिः २ हिक्काश्वासवम्युद्गारक्षुत्तृष्णायाऽवरोधनात्॥उदावर्त्तोभवेद्रोगोवातवृद्धिप्रवर्त्तकः ३ ॥

दस्त पेशाब अधोवायु इनके रोकनेसे मर्ममर्म में पीड़ाका करनेवाला अनाह रोग होताहै और बादीके बिकारको करताहै ऐसे बैद्यकहते हैं १ अधोवायुके रोकनेसे उपलेमार्ग होकर वायुकी गति होतीहै इसीको अनाहरोग तत्ववादी ऋषियोंने कहाहै २ हिचकी श्वास बमन डकारभूख प्यास इनके रोकनेसे बातको बढ़ानेवाला उदावर्त्त रोग पैदा होताहै ३ ॥

(अधोवातरोकनेसेपैदा०) अपानवातसंरोधाद्वातविण्मूत्रसं-

गमः॥शूलंक्कमोरुजाध्मानःपीडाटोपोमरुद्भ्रमी ४ (विष्टाकेवेगरोकनेकेलक्षण) विड्वेगेनिहतेपुंसोवातशूलंगुदेरुजं॥जठरेवातजाग्रन्थिःपीडावस्तौभवेद्भृशं ५ (मूत्रकेरोकनेसेहुयेउदावर्त्तलक्षण)मूत्रस्यरोधनात्पुंसोमूत्रकृच्छ्रशिरोव्यथा ॥ वस्तिमेहनयोःशूलमनाहोयमितिस्मृतः ६ ॥

अधोवायु रोकनेसे विष्टामूत्र आपसमें मिलकर शूलग्लानि खेद अफराढुःखका आटोप याने समूह पवनका मंदचलना और येरोग होतेहैं ४ बिष्टाके वेग रोकनेसे मनुष्यके वादीसे दर्दहो गुदामें पीड़ाहोपेटमेंवादीसे गोलाहो और मूत्रस्थानमेंपीड़ाहो५ पेशावके रोकनेसे पुरुषो केमूत्रकृच्छ्र शिरमें पीड़ा मूत्र स्थानमेहनइनस्थानमें शूलहो इसीकोअनाहकहतेहैं ६॥

(जँभाईरोकनेसेहुयेउदावर्त्तलक्षण) जृम्भास्तम्भागलस्तम्भो मन्यास्तम्भःशिरोव्यथा॥कर्णास्यनेत्रनाशासुरोगस्तीव्रोभवेद्भृशं ७ (आंसूकेरोकनेकेउपद्रव)शोकानंदभवस्यास्त्रोप्राप्तोदंनैवमुंचति॥सरुक्शिरोगुरुत्वंस्यान्नेत्ररोगस्तुपीनसः८ (छींककेरोकनेकेउपद्रव) क्षवथोर्द्धारणात्शूलंमन्यास्तम्भःशिरोर्द्धरुक्॥इन्द्रियाणांचदौर्बल्यं भवेत्पीडास्यचक्षुषु ९ ॥

जंभाई रोकनेसे गला बैठजाय गलेके पिछली नसका जकड़ना शिरमें पीड़ा कान नेत्र नाक मुख इनमें पीड़ाहो ७ जो पुरुष आनंद से अथवा शोकसे पैदाहुआ आंसूरोकै उसके शिरमेंदर्द तथा शिरमेंभारीपना नेत्ररोग और पीनसरोग होय ८ छींक रोकनेसे शूल गलेकी पिछलीनस का जकड़ना आधेशिरमें दर्द इन्द्रीनमें दुर्बलता नेत्रों में और मुखमें पीड़ा होवै ९ ॥

(डकाररोकनेकेउपद्रव)उद्गारेभिहतेतोदःपूर्णत्वंवक्षकंठयोः॥पवनस्याप्रवृत्तित्वंकूजत्वंहृदयेभवेत् १० छर्देर्निग्रहणाद्भवंतिविविधारोगामहादारुणा हृल्लासारतिशोफकष्टऽरुचयोहिका।विसर्पज्वराः॥कोष्ठाशुद्धिविवर्णदाहकृमयोवातप्रसूतारुजः कंडूमोहविजृम्भणानिवहुशःपांडुवङ्गमर्दभ्रमाः११(भूखरोकनेकेउपद्रव)क्षुधाभिघा

ताद्बलवीर्यहानिःस्यान्मन्ददृष्टिःकृशताशरीरे (प्यासरोकनेकेउपद्रव)तृष्णाभिघाताद्बहुरोगवाधात्तृत्कंठशोपभ्रमदाहमूर्च्छाः १२ ॥

डकार आईहुईको रोकनेसे मुख और कंठमें पीड़ाहो और डकारका न आना हृदयमें गुंजान शब्दहो १० ॥ अथवमनोपद्रव ॥ आईहुई रद्दको रोकनेसे दारुण अनेक तरहके रोगहों सूखी उलटीहो अरतिसूजन कोढ़ अरुचि हिचकी विसर्परोग ज्वर कोठेमें अशुद्धता बिवर्ण दाह कृमिरोग वातव्याधि खुजली बेहोशी बहुतजंभाईका आना पीलिया अंगोंका टूटना औरयेरोग होतेहैं ११ भूख रोकनेसे बलबीर्यका नाशहो तथा मंददृष्टी हो शरीरमें कृशताहो प्यासरोकनेसे बहुतरोग सतावै प्याससे कंठसूखै औ:दाह मूर्च्छा येरोग होतेहैं १२ ॥

(श्वासरोकनेकेउपद्रव) श्वासस्यनिग्रहाद्गुल्मोहृद्रोगोविरतिर्भवेत्॥मोहोवातकृतोरोगोह्याटोपोविद्रधिस्तथा १३ (निद्रारोकनेकेउपद्रव)निद्राघाताद्भवेज्जृम्भातंद्रालस्यांगगौरवं॥ अक्ष्णोःघूर्णत्वरक्तत्वद्रवत्वंजडतारुचिः १४ कपायाम्लद्रवैःरुक्षैर्विरुद्धकटुभोजनैः॥वातःसंकुधितःकुर्यादुदावर्त्तंहिलक्षणम् १५ ॥

श्वासरोकनेसे पेटमेंगोला हृदयकारोग मनका न लगनामोह औरबात के रोग पेटमें गुड़गुड़ाहट विद्रधिरोग येहोतेहैं १३ निद्रारोकनेसे जंभाई तन्द्रा आलकस देहकाभारीहोना नेत्रटेढ़े तथालालअश्रुपात युक्त जड़ता और अरुचि येरोग होतेहैं १४ कसैली खट्टी पतली रूखी बिरुद्ध तथा कटुवस्तुके खानेसे कुपितहुईजोबात सोदारुण उदावर्त्त रोगकोकरैहै१५॥

स्रोतांस्युदावर्त्तयतेनिलोयमपानविण्मूत्रकफादिकानां॥वहानिहृत्पार्श्वगुदोदरेषुह्याटोपशूलंकुरुतेशिरोर्तिं १६ उदावर्तवातःकरोत्यंगमर्दंमरुद्ग्रन्थिमार्त्तिंपुरीषंसकष्टं॥ तृषोद्गारहिक्काभ्रमश्वासकासंवमिंशून्यतांरुक्षतांगंप्रकम्पम् १७(इतिश्रीभिषक्कचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअनाहोदावर्तलक्षणम्सम्पूर्णम्शुभम् ॥

बिष्ठा मूत्र कफ आदिकी बहनेवाली जो अपान बायु सो नाड़ीन के मार्गको रोककर हृदय पसवाड़ा गुदा पेट इनका फूलना और शूल तथा शिरमें दर्दको करैहै १६ बातका उदावर्त्त रोग हड़कल पेटमें पवनकीगांठ

तथा खेदहो कष्टसे दस्तका होना प्यास डकार हिचकी भ्रमश्वास खांसी वमन देहमें शून्यता शरीररूखा तथाकंप येलक्षण करताहै १७ इतिहंस राजार्थबोधिन्यांउदावर्त्त निदानंसमाप्तम् ॥

(अथगुल्मरोगनिदानम्) गुल्मंवातोद्भवंपैत्त्यंकफजंद्वंद्वसम्भवं॥ संनिपातोत्थितंरौद्रंरक्तजंकीर्त्तितंबुधैः १ हृन्नाभ्योरंतरेवस्तौग्रन्थिरूपंचलाऽचलं॥ चतुरंगुलपर्यंतंगुल्मन्तत्परिकीर्त्तितं २ (वातगुल्मकेलक्षण) निंबूदुंवरयोःफलस्यसदृशंगुल्मंमरुत्सम्भवम् उद्गारंचमुहुर्मुहुर्वितनुतेविण्मूत्रयोर्बंधनं ॥ जृम्भाध्मानशरीरशोषकृशताः शूलंतृषांहृदुजं पीडामंत्रविकूजनंरुचिहरंमुंक्तेमृदुत्वंव्रजेत् ३ ॥

बातसे पित्तसे कफसे द्वंद्वज सन्निपातसे तथारुधिरसे आठ प्रकारका गोलेकारोग वैद्यो ने कहाहै १ हृदय नाभिके बीचमें मूत्रस्थानमें गांठके आकार गोलाहो एकतो चलायमान दूसराअचल चारअंगुलके बीचमेंउस कोगुल्म अर्थात् गोलेकारोग कहतेहैं २ जोनींबू गूलर फलके समानहो उसे बादीका गोलाजाने जिसमें डकार बेरबेरमें आवे दस्तपेशावका बन्द होना जंभाई पेटकाफूलना शरीरमें शोष तथा कृशपना और शूल प्यास हृदयरोग पीड़ा आंतोंका बोलना अरुचि और भोजन करनेसे नरम होजाय येबादीके गोलाके लक्षणहैं ३ ॥

(पित्तगुल्मकेलक्षण) गुल्मंकुक्षिगतंकपित्थसदृशंपीतंपुरोपिंभवेत् उष्माहृद्गलकेरतिर्निशिमुखेशोषाऽपिपासाऽधिका॥ प्रस्वेदज्वरशूलदाहमधिकंस्पर्शासहःसंभ्रमः चिन्हंपीतसमुद्भवस्यकथितंगुल्मस्यवैद्योत्तमैः ४ (कफगुल्मकेलक्षण) स्तैमित्यंकठिनोदरंशिथिलतालस्यंगुरुत्वंतनौ वान्होशीतलतांतरेज्वलनतानिद्राव्यथामस्तके ॥ स्यात्कंडूत्वचिगुल्ममाम्रसदृशंकासोरुचिपांडुता गुल्मश्लेष्मसमुत्थितस्यभणितंचिन्हंसुषेणादिभिः ५ (रक्तगुल्मकेलक्षण) गुल्मंरक्तसमुद्भवंदृढतरंजंबीरनिम्बसमं हृन्नाभ्यंतरभूमिकासुजनितं पुंसस्त्रियोयोनिषु॥हृत्कंठास्यविशोषणंचकुरुतेदाहंमहादारुणम्प्रस्वेदंज्वरशूलमुग्रमधिकातृष्णारतीसंक्रमम् ६ ॥

जौकेथाके फलसमान हो कांखमें हो पीला दस्तउतरै हृदय और गल में गरमीहो मनका न लगना नाक मुखमें शोष प्यास अधिकपसीनाज्वर शूल दाहअधिक स्पर्श न सहाजावे और ये लक्षण वैद्योंनेपित्तके गोलाके कहेहैं ४ देहगीला पेट करी शिथिलताआलकस देहभारी बाहर शीतलता भीतर ज्वालासी मालूमहो निद्रा मस्तक में पीड़ा देहमें खाज आमूफल केसमान गोला खांसी अरुचि पीलिया ये लक्षण सुषेणादि वैद्योंने कफ से पैदागोला के कहेहैं ५ जोगोला जंभीरी नींबूके समानहो पुरुषकेहृदयनाभी के बीचमें पैदा हुआहो स्त्रियोंकी योनि के समीपहो हृदयकण्ठ मुखका सूखना दारुण दाह पसीना ज्वर शूल अतिप्यास अरति ग्लानि ये लक्षण रुधिरसेपैदा हुये गोलाके हैं ६ ॥

(असाध्यगुल्मकेलक्षण) अतीसारहिक्कारतिश्छर्दिशूलैःपिपासाकृशत्वार्तिहल्लासदाहैः ॥ ज्वरश्वासकासांगशोफैर्युतोयःसगुल्मोनजीवेत्सुषेणादिवैद्यैः ७ (संनिपातगुल्मकेलक्षण) त्रिदोषसंभवैःसर्वैर्लक्षणैर्लक्षितंहियत् ॥ तद्गुल्मंसंनिपाताख्यंद्विदोषोत्थंद्विदोषजैः ८ (साध्यजाप्यअसाध्यकेलक्षण) एकदोषोद्भवंसाध्यंद्विदोषंजाप्यमुच्यते ॥ असाध्यंयत्त्रिदोषोत्थंगुल्मंसोपद्रवंत्यजेत् ९ ॥

अतीसार हिचकी अरति रद्द शूल प्यास कृशता खेद सूखीउलटी दाह ज्वर श्वास खांसी देहमें सूजन ये लक्षण युक्त जो गुल्मरोगवाला वोसुषेणादिवैद्योंसे अच्छा नहीं हो अर्थात् असाध्यहै ७ जिसमें तीनों दोषोंके चिन्ह मिलतेहों उसे सन्निपातका गोलाजानै और जिसमें दो दोषोंकेचिन्ह मिलतेहों वो द्विदोषज गुल्मजाने ८ जो एक दोषसे पैदा हुआहो वो साध्यहै दो दोषयुक्त जाप्यहै त्रिदोषोत्थ असाध्यहै और उपद्रवयुक्तगुल्मी को वैद्य त्यागदे ९ ॥

(गुल्मकेदशउपद्रव) शोफस्तंद्रारुचिश्छर्दिर्हल्लासःकृशतातृषा॥शूलंस्वेदोऽङ्गदाहश्चगुल्मस्योपद्रवादश १० इतिहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेगुल्मलक्षणम् ॥

१ सूजन २ तन्द्रा ३ अरुचि ४ वमन ५ हल्लास ६ कृशता ७ प्यास

८ शूल ९ पसीना १० दाह ये गुल्मरोग के दश उपद्रवहैं १० इतिहंसराजार्थबोधिन्यांगुल्मरोगनिदानम् ॥

अथहृद्रोगनिदानम्) शस्त्राभिघातात्पवनस्यरोधनादत्युष्णतिक्ताम्लकषायभोजनात्॥ अत्युच्चपाताद्वमनादतिश्रमात्हृदामयः स्याद्गुरुभारधारणात् १ (बादीकेहृद्रोगकालक्षण) हृद्बाधांकुरुतेमरुत्प्रकुपितःसद्दूषयित्वारसं हृत्स्थोगुंजतिपीडयत्यनुदिनं मर्माणिसंतोदते॥ पार्श्वास्थीनिविदारयन्त्यविरतं शोषंमुखेहृद्गले आध्मानंचमुहुर्मुहुर्वितनुतेश्वासंसकासंज्वरं २ (पित्तकेहृद्रोगकालक्षण) पित्तःकोपसमन्वितोहृदिगतःसंशोषयित्वारसंहृत्पीडामधिकांनिरंतरतृषांदाहंशिरःपीडनम्॥ उष्माणंहृदयोदरेनशिमुखेशूलं महादारुणम्मूर्च्छास्वेदविपाकमोहमरतिंजानीहितंहृद्रुजम् ३॥

शस्त्रकेलगनेसे पवनके वेगों को रोकनेसे अतिगरमतथा कडआखट्टा कसेला भारी ऐसेभोजनसे उच्चस्थानके गिरनेसे वमनसे अतिश्रमसे भारीबोझ उठानेसे हृदयमें रोगहोताहै १ कुपित वात हृदय में स्थित रसको बिगाड़कर हृदय रोगकोकरे तथागुंजे नित्य हृदयमें पीड़ाहो मर्म स्थानोंमें पीड़ाहो पसवाड़ोंकी हड्डीनमें पीड़ा हो मुखहृदय गलेमें शोष अफरा वारवारमेंहो श्वास खांसी ज्वर येवात के हृदयरोगके लक्षणहैं २ कुपित हुआजो पित्त सोहृदयमें प्राप्तहोकर रसको बिगाड़ हृदयमें पीड़ा प्यासदाह शिरमें दर्द गरमी हृदय में पेट में नसों में मुख में शूलहो मूर्च्छा पसीना पाकहोणो अरति येलक्षण पित्तके हृद्रोगकेहैं ३॥

(कफकेहृद्रोगकालक्षण)श्लेष्मासंकुपितःकरोतिहृदयेपीडांसकण्ठेरुचिं माधुर्यंवदनेऽनलस्यकृशतांतंद्रांगुरुत्वंतनौ॥ संश्रावंकफसंचयस्यवमनंहृल्लासशूलंज्वरम् हृद्रोगोभिषगुत्तमैर्निगदितश्चिन्हैरमीभिर्भृशं ४ (सन्निपातकेहृद्रोगलक्षण) तद्वृद्रोगंत्रिदोषोत्थं विद्याच्चिन्हैस्त्रिदोषजैः॥ युक्तंसोपद्रवंवैद्य स्त्यजेन्नूनंविदूरतः ५ (कृमीकेहृद्रोगकालक्षण) शोफश्चेतसिसंभ्रमोनयनयोः कार्ष्ण्यं तमोगौरवं उत्क्लेदोविकृतिस्तृषाभवतितन्निष्ठीवनंमेहनं॥ हृल्लासो

रुचिरंतरेकृशवपुः शूलंसकंडूस्तथा हृद्रोगेकृमिसंभवेनिगदितंचि न्हंसुषेणादिभिः ६ शोषःक्लमोभ्रमःस्वेदो हृद्रुजःस्यु रुपद्रवाः॥ चत्वारोघोररूपास्ते मुनिभिःपरिकीर्त्तिताः ७ इतिश्रीभिषक्चक्र चित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेहृद्रोगलक्षणम् ॥

कुपित हुआ जो कफ सो हृदयमें कंठमें पीड़ाकरे अरुचि मुखमीठा अग्निमंद तन्द्रा देहभारी कफका गिरना वमन हृल्लास शूलज्वर येलक्षणों सेकफका हृदय रोग कहाहै ४ त्रिदोषयुक्तचिन्होंसे सन्निपातकाहृद्रोगजाने और उपद्रव युक्तहो उसे वैद्य असाध्य जानकर त्यागदे ५ सूजन चित्त में भ्रम नेत्रकाले अँधेरा आवे देहभारी उकलाहट देहकी बिकृति प्यास बारबारथकना मोहन हृल्लास अरुचि देहकृश शूल खुजली व्यथा इन लक्षणोंसेसुषेणादि बैद्योंने कृमीका हृदय रोग कहा है ६ । १ शोक २ ग्लानि ३ भ्रम ४ पसीना येचारहृदयके घोर उपद्रव मुनीश्वरोंने कहे हैं ७ इतिहंसराजार्थबोधिन्यां हृद्रोगनिदानम् ॥

(अथमूत्रकृच्छ्रलक्षणम्) अनूपमांसाशनमद्यसेवनैः कषाय तीक्ष्णोष्णविदाहिभोजनैः व्यायामघर्माध्यशनाध्वजागरैः स्यान्मू त्रकृच्छ्रं बहुकष्टदंनृणाम् १ प्रपीडयत्यधोगत्वा मार्गंरुध्वाकफा दयः॥मूत्रंमुहुर्मुहुःस्वल्पंसकृच्छ्रं कारयंतिते २ (बातकेमूत्रकृच्छ्रका लक्षण) मुहुर्मुहुःकष्टतरेणतुच्छंमूत्रंभवेत्पीतनिभंसशूलं ॥ मेढ्रे चवस्तौमहतीप्रपीडा तन्मूत्रकृच्छ्रं पवनात्प्रसूतम् ३ ॥

अनूप मांसके खानेसे मद्य पीनेसे कसेलीतीखी गरम दाहकरनेवाली ऐसी बस्तुके खानेसे दंड कसरतके करनेसे घाम अध्यशन अर्थात् भोजन के ऊपर भोजनसे रास्ताके चलनेसे रातमें जागनेसे मनुष्योंके बहुत कष्ट का देनेवाला आठ प्रकारका मूत्र कृच्छ्र रोग होताहै १ कफादिक दोष नीचेजायकर मूत्रके मार्गको रोककर और पीड़ाकरैं तब मनुष्यके कठिन से बारबार थोड़ाथोड़ा पेशाब उतरै उसे मूत्रकृच्छ्ररोग कहतेहैं २ जोमनुष्य बारबारमें थोड़ाथोड़ा मूतै पीला शूलयुक्त अंडकोश तथा मूत्रस्थान में पीड़ाहो उसेबातका मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ३ ॥

(पित्तकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण) मूत्रंभवेद्दाहयुतंमुहुर्मुहुः पीतारु-

णाभंरुधिरेणासंकुतं ॥ तप्तंसकष्टंगुदमेढ्रयोर्व्यथा तन्मूत्रकृच्छ्रंकिल पित्तजंवदेत् ४ (कफकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण)मूत्रंसिताभंपरिवुद्बुदान्वितं सपिच्छलंमेदुरमार्त्तिदंगुदे ॥ लिंगेचयोनौवहुशोफगौरवं तन्मूत्रकृच्छ्रंकफसंभवंत्यजेत् ५ (कष्टसाध्यअसाध्यलक्षण) द्विदोषोद्भवंमूत्रकृच्छ्रं सदाहं भवेत्कष्टसाध्यंप्रयत्नोषधीभिः ॥ त्रिदोषोत्थितंदारुणंप्राणनाशं निरुक्तंमुनींद्रैरसाध्यंनितांतम् ६ ॥

जिसरोगीका पेशाब दाहकेसाथ उतरै बारबार और पीलाहो लाल हो रुधिर मिलाहो तप्त और कष्टसे उतरै गुदा और अण्डकोश में दर्दहो उसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र कहतेहैं ४ जिसका मूत्रसपेद और बबूले संयुक्त गाढ़ा और चिकनाहो गुदामेंदर्दहो लिंग और योनीमें सूजनहो देहभारी ये लक्षण कफके मूत्रकृच्छ्रकेहैं ५दोदोषसेहुआ जोमूत्रकृच्छ्रदाहयुक्त सो मंत्र औषधीनसे कष्टसाध्य कहाहै औरत्रिदोषसेहुआ सो प्राणकानाशक मुनीश्वरोंने असाध्य कहाहै ६ ॥

मूत्रकृच्छ्रम्भवेत्घातात्संरोधान्मूत्रशुक्रयोः ॥ शल्यात्पातात्क्षतात्कष्टाद्बस्तिमेहनशूलकृत् ७ इतिश्रीभिषक्कचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमूत्रकृच्छ्रलक्षणम्समाप्तम् ॥

मूत्र और वीर्यके रोकनेसे घात शल्यसेपड़नेसे घावसेकष्टसे मूत्रस्थान मेहनमें दर्दका करनेवाला मूत्रकृच्छ्ररोग पैदाहोताहै ७ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांमूत्रकृच्छ्रनिदानम् ॥

मूत्राघातकीउत्पत्ति) नाभेरधोधःप्रगतास्त्रिदोषा भवन्तितेकुंडलिकासमानाः ॥ स्वहेतुभिःसंकुपिताभ्रमंति कुर्वन्तिपश्चाद्बहुमूत्रघातान् १ नाभेरधोयदावायुःकुंडलाकारसंस्थितः ॥ आध्मापयन्गुदांवस्तिम्मूत्राघातोभवेत्तदा २मूत्रस्यवेगंविदधातितीव्रमपानवायुःकुपितस्तुतेन ॥ नाभेरधोर्ध्वंमहतींप्रपीडांकरोतियस्तस्यनरस्य नूनम् ३ ॥

दोषनाभीके नीचेजाय कुंडलीके समान होकर और अपने हेतुन से कुपितहो भ्रमणकरै पश्चात् मूत्राघात रोग को प्रगट करतेहैं १ जबपवन

आभीकेनीचे कुंडलाकारहो गुदा मूत्रस्थानमें भरजावै तबमनुष्य के मूत्राघात रोगहोताहै २ जो पुरुष मूत्रके वेगको रोकै तब उसके अपान वायु कुपितहो नाभीके ऊपरनीचे भारी पीड़ाकरै उसेमूत्रकृच्छ्र कहतेहैं ३ ॥

(वातकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण)वातोधःप्रगतारुणद्धिपुरुतोमूत्रंपुरीषान्वितं मेढ्रं वस्तिगुदेदधातिमहतींपीडांचशोफान्वितां॥ आध्मानंकुरुतेमुहुर्मुहुरतोमूत्रंसकृत्कष्टदं ॥ कृष्णाभंपवनोद्भवंनिगदितंतन्मूत्रघातंपरैः ४ (पित्तकेमूत्राघातकेलक्षण) मेढ्रं वस्तिंगुदाग्रंदहतिवहुतरंमूत्रमार्गंरुणद्धिस्वल्पंस्वल्पंसकृच्छ्रंम्वहुरुधिरयुतंकारयत्येवमूत्रं॥ धत्तेधोगत्यकोपंवितरतिबलयाकाररूपंचपित्तं तत्पैत्त्यंमूत्रघातंनिगदितमृषिभिर्मानसैःसद्भिषग्भिः ५ (कफकेमूत्राघातकालक्षण) श्लेष्माधोगत्यशोफंवितरतिगुरुतांमूत्रमार्गंरुणद्धि मेढ्रं वस्तौगुदाग्रेप्रबहतिसरुजंकारयत्येवमूत्रम् ॥ तुच्छंतुच्छंसकष्टंक्वचिदपिवहुशोमेदुरंश्वेतवर्णं सांद्रंशीतंसफेनंकथितमृषिवरैर्मूत्रघातंकफस्य ६ ॥

वातनीचे जायकर दस्त पेशाब को रोक अंडकोश और मूत्रस्थान में सूजनकेसाथ में भारीपीड़ा करै अफरा और बारबार कष्टसे थोड़ापेशाब कालेरंगका उतरे उसे बातका मूत्राघात कहतेहैं ४ कुपित हुआजो पित्तसो नीचेजायकर कंकणके आकारहो अंडकोश और मूत्रस्थानमें तथा गुदाग्रमें पीड़ाकरै मूत्रके मार्ग को रोकदे थोड़ाथोड़ा कठिनतासे बहुत रुधिरमिला मूतै उसे ऋषि और बैद्योंने पित्तका मूत्राघात रोग कहाहै ५ कफनीचे प्राप्तहो सूजन को करै देहभारी मूत्र के मार्गोंको रोकदे मेढ्रवस्ति गुदा इनमेंपीड़ा करै थोड़ाथोड़ा कठिनता से कभी बहुतसा चिकना सपेदरङ्ग का गाढ़ा शीतल झागमिला ऐसा पेशाब उतरै उसे कफका मूत्राघातरोग ऋषियोंने कहाहै ६ ॥

मूत्राघातंद्विदोषोत्थंत्रिदोषोत्थंभिषग्वरैः ॥ ज्ञायतेलक्षणैःस्वैर्वातपित्तकफोद्भवैः ७ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रेमूत्राघातलक्षणम् ॥

दो दोषोंके लक्षणोंसे द्विदोष का मूत्राघात रोग जानना त्रिदोषसेसन्नि-

पात का मूत्रावात वैद्य करके जानना ७ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांमूत्राघातनिदानम् ॥

(अथाश्मरीरोगनिदानम्) स्त्रीणांयोनिरंध्रेशिशूनांचमेढ्रे भवत्यश्मरीमूत्रवेगस्यरोधात् ॥ मरुत्श्लेष्मपित्तैर्भवाशुक्रजान्या महादुःखदाप्राणहंत्रीप्रसिद्धा १ (बातकीअश्मरीकालक्षण) रुक्षावातभवाश्मरीगुरुतराभल्लातमज्जासमा शिश्नांछिद्रगतारुणद्धिपरितो मूत्रंविगंधान्वितं ॥ पीडांमूत्रपुरीषयोर्वितनुते मेढ्रे गुदे बस्तिषु आध्मानंकुरुतेरुचिंकृशतनुंग्लानिंज्वरंविभ्रते २ (पित्तकी पथरीकेलक्षण) सूक्ष्मापित्तसमुद्भवामणिनिभा खर्जूरतुल्यारुणा तप्ताकंटकसंयुताथचिपिटाशिश्नागतायाश्मरी ॥ छिद्रंमूत्रपुरीषयोर्दहतियायोनौरुजंवर्द्धते मूत्रंकृच्छ्रतमंसदाहमनिशं तृष्णाद्भुरोतिद्रुतम् ३ ॥

मूत्रके बेग रोकनेसे स्त्रियोंकी योनिमें और बालकों के अंडकोशमें पथरीका रोगहोताहै १ बादीसे २ पित्तसे ३ कफसे ४ शुक्रसे चार तरहकी है महा दुःखकी देनेवाली प्राणकी नाशक प्रसिद्ध १ बातकी पथरीरूखी भारी भिलावेकी मज्जाके समानहो इंद्रीमें प्राप्तहो इन्द्रीके छिद्रको रोक दे मूत्रमें बासआवै पेशाव और दस्त के समय गुदा मूत्रस्थान और पोतों में दर्द हो अफरा अरुचि कृशदेह ग्लानि ज्वर ये लक्षण बातकी पथरी केहैं २ छोटीहो मणिके समानहो खजूरके फलके तुल्य लालहो गरमतथा कांटे और चपटी लिंगमेंहो मूत्र दस्तके छिद्रको दहन करै योनिमें दर्दहो कठिनतासे दाहयुक्त पेशाव उतरै प्यासहो ये लक्षण पित्तकी पथरीकेहैं३॥

शूलंमेढ्रगुदेभगेप्रलपनंकार्श्यंज्वरंकंपनं उष्माणंविदधातिबस्तिगुदयोर्मूत्रस्यधारारुणं ॥ वैक्षिणयंपरितोरुणद्धिसहसापार्श्वोदरेपीडनंघोरापित्तभवाश्मरीनिगदितावैद्योत्तमैःप्राणहा ४ (कफकीपथरीकालक्षण) स्निग्धाम्रमज्जासदृशाकफोद्भवा श्वेताश्मरीकंटकवेष्टितादृढा ॥ शीतातिमध्येगुदशिश्नयोर्भवास्मंजायतेमूत्रनिरोधनाच्छिशोः ५ शैथिल्यंकुरुतेश्मरीकफभवाशिश्नान्तरेतोदनं

धैर्यंनाशयतेरुचिंवितनुतेह्यङ्गंमुहुःकंपते ॥ मूत्रंश्वेतनिभंरुणद्धिगुरुतांकायेशिरःपीडनंधत्तेपांडुरुजंतनौकृशवपुर्निद्रालसंविभ्रते ६॥

अंडकोश गुदा भग इनमें शूलहो प्रलाप कृशता ज्वरकम्प गुदा और मूत्रस्थान गरमी तथा मूत्रकीधारा लालहो क्षीणता पेशाब का रुकना पसवाड़ोंमें तथा पेटमें दर्द ऐसे लक्षणों से वैद्योंने प्राणकी नाशक पित्तकी पथरी कहीहै ४ चिकनी आमकी गुठली के समान हो सपेद और कांटेयुक्त दृढ़ शीतल तथा गुदा और लिङ्गेंद्रिय के मध्य हुई हो ये बालकके मूत्र बाधा रोकनेसे पैदा होतीहै ये लक्षण कफकी पथरी के हैं ५ शिथिलता इन्द्रीमें पीड़ा धैर्यका नाश अरुचि अंगोंमें कम्प सपेद पेशाबहो औररुक रुक कर उतरै देहभारी शिरमें दर्द पाण्डु और कृशता देहमें निद्रा आलस्य ये लक्षण कफकी पथरी के हैं ६ ॥

(वीर्य्यरोधकीपथरीकालक्षण) यूनांवीर्यस्यरोधात्भवतिच महतीशुक्रजाताश्मरीया शिश्नंवस्तिंगुदांवैरुजयतिवृषणांमूत्रमार्गंरुणद्धि॥ दौर्बल्यंकुक्षिरोगंवितरतिसहसाशुक्रनाशंकरोति तुच्छंतुच्छंसकष्टंक्वचिदपिवहुशः कारयत्येवमूत्रम् ७ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअश्मरीलक्षणम् ॥

जवानपुरुषों के वीर्य के रोकनेसे जो पथरी रोगहो उसके ये लक्षण हैं लिंग मूत्रस्थान गुदामें पीड़ाहो तथा अंडकोशों में दर्दहो मूत्रके मार्ग को रोकदे दुर्बलता कूखमें दर्द शुक्रका नाश कष्टसे कभीथोड़ा कभीबहुत पेशाबउतरै ७ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांअश्मरीलक्षणम् ॥

(अथप्रमेहलक्षणम्) दधिमधुघृतदुग्धंमद्यपानंनवान्नं फलरसमतिमिष्टंतक्रमिक्षोर्विकारं॥रविकृतपरितापःसुन्दरीस्त्रीकटाक्षैर्भवतिविषमचेतोमेहहेतुर्नितांतम्१ (वातकीप्रमेहकालक्षण) मूत्राग्रेवाथपश्चात्प्रपततिसततं शुक्रमिक्षोरसाभं यामेयामेद्वयेवा क्वचिदपिसमयेपातमाप्नोतिदोषैः॥ निर्गंधंतक्ररूपंलवणजलनिभं दुग्धतुल्यंसुराभम् ॥ रुक्षंवातप्रमेहंप्रवदतिचरकःकृष्णवर्णंच नीलं २ मेहोवातसमुद्भवःप्रकुरुतेशूलंमहादारुणं हृद्रोगंपिटिका

मुखेमधुरतांश्वासंशरीरंकृशम्॥ आध्मानंतनुपीडनंविकलतांशोषं चकासान्वितम्उन्निद्राम्बलनाशनञ्चपलतांरुक्षांत्वचंसाहसम्३॥

दही सहत घी दूध मद्यके पीनेसे नवीन अन्न फलरस अतिमीठा छांछ ईखकेविकारसे सूर्यकेघामसे सुंदरस्त्रीके कटाक्षसे चित्तमें प्रमेहका हेतु होताहै १ पेशाब करनेके पहिले वा पीछे ईखकासारंग ऐसाशुक्र गिरनेसे पहर पहर में या दोपहरमें दोषोंके होनेसे दुर्गंधयुक्तछांछके समानवानोन के पानीसरीखा दूधकेसमान मद्यकेसमानरूखाहो येलक्षण वातकी प्रमेह के चरक ऋषिने कहेहैं २ वातका प्रमेह दारुणशूल हृदयरोग मरोड़ी मुखमें मिठास श्वास देहकृश अफरा देहमें पीड़ा बेकली शोष खांसी निद्राबलका नाश चपलता त्वचामें रुखास साहस येलक्षण करताहै ३॥

(पित्तकीप्रमेहकालक्षण) घनंपावकाभंहरिद्रानिभंवारुणंरक्त तुल्यंचसिंदूरवर्णं॥ प्रमेहंचपित्तोद्भवंवैद्यराजविजानीहिमंजिष्ठका वर्णातुल्यम् ४ कषायञ्चमूत्रंकरोतिप्रमेहो रतिंपित्ततःकष्टसाध्यो तिकृच्छ्रम्॥ ज्वरंवस्तिशूलंकृशांगंपिपासां क्लमंमेढ्रदाहंभ्रमंशोषमं गे५(कफकेप्रमेहकालक्षण) घृतदधिवसरूपंदुष्टदुर्गंधयुक्तं घन मधुसदृशंवापिच्छलंमेहवर्णं॥ सितलवणनिभंवामेदुरंतंतुमिश्रं बुधजनकिलमेहंविद्धिसाध्यंकफात्म्यं ६॥

गाढ़ा अग्निके समान वर्ण तथा पीला वालालअथवा जलकेसदृश वा मंजीठका वा सिंदूरके रंगकासा पेशाब उतरे उसे हेवैद्यराज पित्तका प्रमेहजान ४ कसैले रंगका रुधिरकेरंगका ज्वरके मूत्रस्थानमें पीड़ाकृश देहप्यास ग्लानि अंडकोशोंमें दाह भ्रम शरीरमेंशोष अरति येपित्तकी प्रमेहके लक्षणहैं ये कष्टसाध्यहैं ५ दही घृत चरबीके समान मूते दुर्गंध युक्त गाढ़ा सहतके समान तथा सपेद मिश्रीऔर नोनके रङ्गसा और चिकना पेशाब उतरे तन्तु युक्तहो उसको पंडित कफका प्रमेह कहतेहैं ६॥

मेहःश्लेष्मसमुद्भवोबलहरःशुक्रस्यविध्वंसको आलस्यंकुरुते रुचिर्वृषणयोः शोथंतनौपांडुतां॥शैथिल्यंगुरुतांवमिंनयनयोःशोक्लं त्वचिस्फोटनंतंद्रारात्रिदिनेनिशंमलचयंदंतेग्रहस्तष्वलं७ (प्रमे

हरहितकेलक्षण) यदाप्रमेहिनोमूत्रंकटुतिक्तमपिच्छलं ॥शुद्धरूक्षं शुभ्रधारंतदारोग्यंवदेद्भिषक् ८ (साध्यअसाध्यकष्टसाध्यविचार) मेहःकफोत्थितःसाध्यः साध्यःकष्टेनपित्तजः ॥ वातजोऋषिभिःपूर्वैरसाध्यःपरिकीर्त्तितः ६ ॥ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेप्रमेहलक्षणम् ॥

कफका प्रमेह बलहरता शुक्रका नाशकरता आलकस अरुचि पोतों पर सूजन शरीर पीला और शिथिल तथा भारी वमन नेत्र सपेद त्वचाका फटना रात दिन तन्द्राका होना दांतजीभ हाथपैरोमें मैलका संग्रह होना ये लक्षण करताहै ७ जिस प्रमेहवालेका पेशाब कडुआ तीखा पतला शुद्ध रूखा सपेद धारका उतरे उसका प्रमेह दूरभया जानिये ८ कफका प्रमेह साध्यहै पित्तकाकष्टसाध्यहै बातका प्रमेह पूर्व ऋषियोंने असाध्यकहाहै ६ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांप्रमेहनिदानम् ॥

(अथपिटिकारोगनिदानम्) तिक्ताम्लोष्मविदाहिरुक्षकटुकक्षारातपाध्याशनैर्मद्यस्निग्धविरुद्धभोजनरसैर्दुष्टैर्नवान्नद्रवैः ॥ दोषंपित्तमरुत्कफाद्विदधतेसंदूष्यरक्तामिषं त्वक्संभेद्यवहिर्गताश्च पिटिका रूपेणाकुर्व्यन्तिते १ दुष्टग्रहप्रकोपेन दोषामर्मप्रभेदिनः ॥ जनयंतिशरीरेषु पिटिकाबहुधामताः २ ज्वरोछर्दिरतीसारो रक्तांगोतीव्रवेदना ॥ स्वेदोतृषारुचिःश्वासो वैवर्ण्योविकलोरतिः ३ ॥

तिक्तखट्टा गरम दाहकरनेवाले कटुरूखी खारी घाममें डोलनेसे भोजन परभोजन करनेसे मद्यचिकनी बिरुद्धभोजन और पानसे दुष्ट नवान्न और पतली बस्तुसे कुपितहुये जोबातपित्त कफ सोरुधिर औरमांसको बिगाड़ कर त्वचाको फाड़कर फुंसीरूप पिटिका रोगकोप करताहै १ दुष्ट ग्रहके कोपसे तीनोंदोष मर्मस्थानको भेदकर देहमें अनेक प्रकारके पिटिकारोग पैदाकरतेहैं २ ज्वर रद्द अतीसार देहलाल तीव्रदुःख पसीनाप्यास अरुचि श्वास विवर्ण बेकली अरति ३ ॥

(पिटिकाकापूर्वरूप)अस्थिरस्फोटोद्भवदाहश्चशोषःकंडूवरुचिर्भ्रमः॥ पिटिकानांपूर्वरूपंमुनिभिःपरिकीर्त्तितं ४ (वातकीपिटिकाकेलक्षण) कृष्णापावकसां... ाश्चपिटिकावातोद्भवास्त्वभ्राताः

सूक्ष्मामुद्गसमामसूरसदृशाःसप्ताह्निपाकारुजाः ॥ सूक्ष्माभाश्चि पिटाघनाश्चपरितः कुर्वंतिपीडाभयं दाहानाहतृपाक्षवार्तिवमथुः श्वासातितापाकराः ५ (पित्तकीपिटिकाकालक्षण) अस्थिस्फोटः पर्वभेदोङ्गदाहःश्वासःशोषोविड्ग्रहोमूत्रकृच्छ्रः ॥ रौद्रास्स्फोटारक्तजारक्तवर्णा वैद्यैरुक्तंपित्तकोपस्यचिन्हं ६ ॥

हड़फूटन देहमें दाह शोष खुजली अरुचि भ्रम ये मुनीश्वरोंने पिटिका रोगका पूर्वरूप कहाहै ४ काली अग्निके रङ्गकीत्वचामें फुंसीहों छोटी और मूंगके समान तथा मसूरके समान सात दिनमें पकें कमदीखे चपटीऔर कठोरहों और पीड़ाभयको देनेवाली दाह अनाह प्यास छींक मथवाय श्वास अत्यंत तापकी करनेवाली बातकी पिटिका जाने ५ हड़ फूटन गांठोंमें दर्द अंगोंमें दाह श्वास शोष दस्तका रुकना मूत्रकृच्छ्र रौद्र फोड़े रक्तसे पैदा लालरंगके हों तो वैद्यपित्तकी पिटिका जाने ६ ॥

(कफकीपिटिकाकेलक्षण) पिटिकाकफकोपभवाःकठिनाःस्फटिकद्युतयोवहुधाकृतयः॥ चिरपाकरुजास्तनुशोफकरावदरीफलपक्वसमारुचयः ७ श्लेष्माकोपेनकुर्यात्त्वचिपिटकशतंवुद्बुदाकारतुल्यं शोफप्रांतंकठोरंवदरफलसमंमांसत्वग्भेदजातं ॥ निद्रांतन्द्रांपिपासांभ्रममरुचिवमिंकासमंगेषुपीडां श्वासंकंडूप्रसेकंह्यवयवशिथिलं शीर्षरोगंज्वरार्त्तिम्८वातपित्तभवानीलामध्येनिम्नाज्वरान्विताः॥ भवंतिपिटिकाःक्षुद्राःशोषदाहतृषायुताः ६ ॥

कफ कोपकी पिटिका कठिन स्फटिक मणिके समान तरह तरहकी देर में पके देहमेंसूजनहो बेरपके के समान कान्तिहो ७कफ कोपकी पिटिका त्वचामें सेकरौं फुंसीको बबूलेके आकार उसकेचारों ओर सूजन तथा कठिन बेरफलके समान मांसत्वचाको फाड़कर प्रगटहो निद्रातंद्रा प्यास भ्रम अरुचि वमन खांसी अंगोंमेंपीड़ा श्वासखुजलीलारका गिरना शरीर केअवयव शिथिल शिरमेंदर्द ज्वर तथाखेद येकफकी पिटिकाके लक्षणहैं ८ बात पित्तकी पिटिका नीलेरंगकी बीचमें बैठीसीहो ज्वरहो और क्षुद्रा पिटिका दाह शोष प्यास युक्त होतीहै ६॥

स्थूलाःश्वेताःप्रोन्नतादुश्चिकित्स्याः पूयश्रावाःस्फोटकाःकष्टपा

का:॥ स्निग्धाःकंडूशोफतंद्रापिपासाकासश्वासारोचकातापयुक्ताः १०संभूताःकफवाताभ्यांविज्ञेयाःपंडितैर्नरैः॥ अतःपरंतुज्ञातव्या विस्फोटाःकफपित्तजाः ११ रोगिणःपिटिकाघनाबुधजनैर्ज्ञेयाश्च निम्नोन्नताः पित्तश्लेष्मभवाविवृत्तवदनास्स्थूलाःशिरोर्तिप्रदाः॥ वक्रेभ्योरुधिरश्रवाश्चिमिचिमामूर्च्छापिपासान्विता निद्राकंडुविवर्णताशिथिलताकंठांगपीडाकराः १२ ॥

मोटी सफेद ऊंची जिनका कठिन उपाय राधबहे कष्टसे पके चिकनी और खुजली सूजन तंद्रा प्यास खांसी श्वास अरुचि ज्वर ऐसी पिटिका बातकफकी जाननी १० इस श्लोकका अन्वय दूसरे अगाड़ीके श्लोक में लगता है॥ अबइसकेआगे पित्तकफकी पिटिकाके लक्षणजानो ११ रोगी की फुन्सी कठिन नीची और ऊंची मोटी खुले मुखकीशिरमें दर्दकी करने वाली रुधिर चुचावे चिमचिमी युक्त मूर्च्छा प्यासनिद्रा खुजली बिवर्णता शिथिलता कंठ अङ्गों में पीड़ाहो यलक्षण पित्तकफकी पिटिका केहैं १२ ॥

(संनिपातकीपिटिकालक्षण) असाध्याःपिटिकाज्ञेयावातपित्तकफोद्भवाः ॥ उद्यन्तेविलीयंतेशरीरेरोगिणांपुनः १३ पित्तश्लेष्ममरुद्भवाश्चपिटिकाः पूयश्रवारक्तदा आध्मानंतनुगौरवंविकलतां कुर्वंत्यसाध्यारुजाः॥ दाहंशोफतरंतृषांवहुमुखाः पाकेचदुःखप्रदाः अस्थिस्फोटमहर्निशंवहुतरंश्वासंविवृत्ताननाः१४रक्तश्रावंनाशिका कर्णनेत्रास्येभ्योमूर्च्छामंडलंमांसकोचं॥हिक्काकासंमूत्रकृच्छ्रांगभेदं कृष्णास्फोटामृत्युदादुश्चिकित्स्याः १५ ॥

बात पित्त कफकी पिटिका रोगीके देहमें पैदाहो और नाशहो वो असाध्य है १३ सन्निपात की पिटिकों में रुधिर औरराध चुचाय अफरा देहभारी बेकली दाह सूजन प्यास बहुतसे मुखहो पकनेके समय दुःखहो हड़कल हो श्वास तिरछे नेत्र ये असाध्य पिटिकाके लक्षणहैं १४ नाक काननेत्र मुख इनसे रुधिर चुचाय मूर्च्छाहो मंडल खूनकेहो मासका संकोचहोना हिचकी खांसी मूत्र कृच्छ्र अङ्गों में पीड़ा कालेरङ्गके फोड़ा ये लक्षण मृत्यु के करनेवाले चिकित्सा रहित जानने १५ ॥

(त्वचामेंगतपिटिकाकालक्षण) त्वग्गताःपिटिकाज्ञेयाजलबुद्बुदसंनिभाः॥ स्वल्पदोषजलश्रावाः सुखसाध्याभिषग्वरैः१६ (रक्तमेंप्राप्तपीडिकाकालक्षण) रक्तस्थारक्तवर्णाःसाध्याश्शीघ्रपाकास्तनुत्वचः ॥ रक्तश्रवाविदीर्णास्या विज्ञेयापिटिकाःपरैः १७ (मांसमेंप्राप्तपीडिकाकालक्षण) मांसस्थाःपिटिकाःस्निग्धाःकठिनाःकठिनत्वचः॥चिरपाकाज्वरश्वासकंडूदाहतृषान्विताः १८ (मेदमेंप्राप्तपीडिकालक्षण)मेदजाःपिटिकाःस्निग्धाःस्थूलाज्वरसमन्विताः॥मृदवोमंडलाकाराः पीताभाःकिंचिदुन्नताः १६ (मज्जामेंप्राप्तपीडिकालक्षण) रूक्षामुद्गसमाःक्षुद्राश्चिरपाकसमन्विताः॥ मज्जास्थाश्चपिटाज्ञेयाःसव्यथाःकिंचिदुन्नताः २० ॥

जलके बबूलेके समानहो थोड़े दोष युक्त जल चुचावे और त्वचामेंहो वो बैद्योंने सुख साध्य कहीहै १६॥ जो फुनसी लालरङ्गकीहो जल्दीपके मर्मत्वचाहो रुधिर चुचाय खुले मुखकी वो रक्त गत पिडिका जाननी येभी साध्यहै १७ मांसमें प्राप्तपीडिका कठिन चिकनी करड़ीत्वचा वाली देरमें पके ज्वरश्वास खुजलीदाह प्यास युक्तहोतीहै १८ चरबी में प्राप्तपीडिका चिकनीमोटी ज्वरयुक्तगरम गोलमंडलके आकार पीली कुछ ऊंचीहोती है १६ रूखीमूंगके समान छोटी देरमें पकनेवाली चपटीदर्द युक्तकुछऊंची मज्जागत पीडिका जाननी २० ॥

(हाडमेंप्राप्तपीडिकालक्षण) अस्थिस्थाःपिटिकाःकुर्य्युर्भ्रमंदाहंतृषांज्वरं ॥ छिंदंतिमर्मधामानिप्राणानाशुहरंतिच २१ (शुक्रमेंप्राप्तपीडिकालक्षण) शुक्रस्थाःपिटिकाःकुर्य्युःस्तंमित्यंवहुवेदनां ॥ प्राणनाशंशिरःकंपंश्वासंकासंज्वरान्वितं २२ (असाध्यशीतलाकालक्षण) मसूराभिभूतस्यकर्णाक्षिनाशामुखेभ्यः श्रवेदस्य रक्तंनितांतं ॥ विवर्णार्तिहिक्कातृषापीडितस्यसरोगीयमस्यालये यातिनूनं २३ ॥

अस्थिमें प्राप्तपीडिका ये लक्षण करतीहै भ्रमदाह प्यासज्वर मर्ममर्म में पीड़ा और जल्दीप्राणोंका नाशकरे २१ शुक्रमें प्राप्तपीडिका देहगीला

बहुतदुःख प्राणोंकानाश शिरमें कंपखांसी श्वासज्वर ये लक्षणकरती है २२ शीतलावाले रोगीके काननाक मुखनेत्रसे रुधिरगिरै विवर्ण तथा दर्दहिचकी प्यासये लक्षण होनेसे असाध्यजानना २३ ॥

दोषैकेनोत्थिताःसाध्याःकष्टसाध्याद्विदोषजाः ॥ पिटिकाःसंनिपातोत्थामृत्युदाःकीर्त्तिताःपरैः२४इतिभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमसूरिकानिदानम् ॥

एकदोष से उठीसाध्य द्विदोषउठी कष्टसाध्य त्रिदोष से उठी वो फुंसी मौतकी देनेवालीकहीहै२४इतिहंसराजार्थबोधिन्यांपीडिकारोगनिदानम्॥

(अथपिटिकारोगनिदानम्) सराविकाकच्छपिकाथजालिनी मसूरिकासर्षपिकाचपुत्रिणी ॥ विदारिकाविद्रधिकातुपिंडिकातथांजलीज्ञैःपिटिकादशस्मृताः १ (प्रमेहसेउत्पन्नपिटिका) मेहोत्थाःपिटिकाभवंतिदशधाबाल्येक्कचिद्यौवने कायस्यांतरवाह्ययोःप्रजनितान्नृणांस्त्रियांभूयशः ॥ताःकुर्वंतिमहज्ज्वरंनयनयोर्मुद्रांशिरःपीडनं हृल्लासांतरगुंजनंविकलतांनिद्रांगविक्षेपणं २ अस्थिस्फोटनमंगदाहमरतिंश्वासंचकासंरुजं दौर्गंध्यंपरितोक्कुवंविलपनंशोषंशरीरेनिशं ॥ मूकत्वंवधिरंकृशत्वमरुचिंसंधिग्रहंसंभ्रमंवैवर्ण्यंशिथिलंनरंगतवलंकुर्वंतिवीर्यक्षयम् ३ ॥

१ सराविका २ कच्छपिका ३ जालिनी ४ मसूरिका ५ सर्षपिका ६ पुत्रिणी ७ बिदारिका ८ बिद्रधिका ९ पिण्डिका १० अंजली ये वैद्यों ने दश प्रकारकी पिटिका कहीहैं १ प्रमेहसे उठी पिटिका दशतरहकी बालक कभीजवानपनेमें होतीहै देहके बाहरभीतर स्त्रीपुरुषों के बहुतसी वे ज्वर नेत्रका मुंदजाना शिरमें दर्दसूखी रहअांतोंका बोलना बेकली निद्रा अंगोंका पटकना ये लक्षणों को करतीहै २ हड़कल अंगोंमें जलनअरुचि श्वास खांसी दुर्गंध स्रावबिलाप शोष बहिरापना तथा गूंगापना कृशता अरुचि संधीनमें पीड़ाभ्रमबिवर्णता शिथिलता बलहीन वीर्यका क्षयपना ये लक्षण पिटिका रोगकेहैं ३ ॥

पिटिकाःकर्वुरानीलामलिनांतर्गताःशिताः ॥ मृत्युप्रदारक्तव

र्णाःपाटलाःकष्टदाःस्मृताः ४ किंचित्कष्टप्रदाःपीताःपिशंगाःपिंगलास्तथा ॥ स्वभ्राःस्फटिकसंकाशाःस्निग्धाःसुखकराःस्मृताः ५ मर्मस्थलेषुमांसेषुजायंतेसंधिपून्नताः॥ पिटिकाःश्वेतरक्ताभामध्यगर्त्ताःसराविकाः ६ ॥

धूसरे रंगकी नीलेरंगकी मलिनभीतर सपेदहो वो मृत्युकी देनेवाली पिटिकाजाननी और लाल वा गुलाबीरंगकी कष्टदेनेवाली होतीहै ४पीले रंगकी पिशंगरंगकी पिटिका कुछकष्टदेतीहै स्वच्छस्फटिक मणिके रंगकी चिकनी सुखकरनेवाली होती है ५ मर्म में और मांसमें तथा संधीनमें उठीहुई सफेदलाल रङ्गकीबीचमें गड़हाहो उसको सराविका कहतेहैं६॥

कूर्मरूपामहापुष्टा वर्त्तुलाज्वरदाहदाः ॥ जायंतेपिटिकाःसर्वाः कच्छप्यस्तारुदाहृताः ७ तीव्रदाहप्रदामांसे सक्लेदावर्द्धतरुजं ॥ जालवद्वेष्टयत्यंतं प्रोक्तासाजालिनीबुधैः ८ मसूरदेहवत्सूक्ष्मा रक्ताभासामसूरिका॥ गौरसर्षपभास्निग्धातत्प्रमाणाचसर्षपा ९ ॥

कछुये कासा स्वरूपहो ज्यादामोटीहो बत्तीकी तरहहो ज्वर जलन ये लक्षण कच्छपिका केहैं७ तीव्र जलन मांसमेंहो क्लेदयुक्त पीड़ाको बढ़ावै और जालकी तरह चिपटे उसे पंडित जालिनी कहतेहैं ८ मसूरकी दाल की समानछोटी औरलाल हो उसेमसूरिका कहतेहैं औरसपेद सरसोंके समानहो और चिकनीहो उसे सर्षपिका कहतेहैं ९ ॥

पिटिकासुप्रजायंतेपिटिकाघोरदर्शनाः ॥ पुत्रिण्यस्त्वार्तिदानीलाः प्रोक्तावैद्यैर्विशारदैः १० अतिदीर्घासशोफाया परस्परयुतारुणा ॥ विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ताप्रोक्ताविद्रधिकाबुधैः ११ विदारकंदवद्दीर्घा कठिनादुःखकारिणी ॥ ज्वरार्तिदाक्षुधाहारी विज्ञेयासा विदारिका १२ ॥

जो फुंसीमें दूसरीफूंसी घोरपैदाहो और पीड़ायुक्तहो और नीलेरंगकी हो उसे पुत्रिणी कहतेहैं१० बहुत बड़ीसूजन युक्त और परस्परमिलीहुईहो लालरंगहो और विद्रधिके लक्षण मिलतेहों उसे वैद्योंने विद्रधिका कहीहै ११ विदारीकंदके समानमोटीहो कड़ी दुःखकारक ज्वरखेद भूखकोनाश करनेवाली उसको विदारिका कहतेहैं १२ ॥

पिंडीवत्पिंडिकाज्ञेयादेहशोफकरीशिता ॥ व्यक्तांजुल्याकृतिर्ज्ञेयावैद्यैःसाविततांजुला: १३ पिटिकार्तविनाशायशीतलांपूजयेत्सुधीः ॥ पुष्पैधूपाक्षतैर्दीपैर्नैवेद्यैर्मंगलैस्तथा १४ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमसूरिकापिटिकालक्षणम् ॥

जोपिंडीके आकारहो उसे पिंडिका जाननी वो देहमें सूजनको करतीहै व्यक्तांजुलीके जो आकारमेंहो उसे वैद्य विततांजुली कहतेहैं १३ पिटिका और शीतला एकहीहै इसीवास्ते पिटिकाके दुःखके नाशनार्थ शीतलाका पूजन धूपदीप चावल पुष्पनैवेद्य और मंगलाचरणके साथकरै १४ इति हंसराजार्थबोधिन्यांपिटिकामसूरिकारोगनिदानम्समाप्तम् ॥

अथमेदरोगनिदानम् ॥

(मेदोत्पत्तिः)अव्यायामैर्दिवास्वप्नैर्मांसमिष्टान्नभोजनैः ॥ अतिस्निग्धाशनैर्देहेमेदोवृद्धिःप्रजायते १ जठरेमेदसोवृद्धिःकरोतिवलसंक्षयम् ॥ निद्रांदौर्गंध्यमंगेष्वशक्तिंसर्वेषुकर्मसु २ स्थूलोदरमनुत्साहंगौरवंतनुशीतलम् ॥ जठराग्नेःक्षयंजाड्यं श्वासंकंपनसादनम् ३ ॥

दंड कसरतके न करनेसे दिनमें सोनेसे मांसमिष्टान्न के खानेसे अति चिकनी वस्तुके खानेसे देहमें मेदबढ़ताहै १ पेटमें मेदके बढ़नेसे बल का नाशहोताहै और निद्रा तथा दुर्गंधदेहमें और सर्वकर्ममें अश्रद्धा २ पेट को बढ़ावे उत्साह रहित तथा देहभारी तथा शीतल जठराग्निका नाश और जड़ता श्वास कंपसादन व ३ ॥

कायंस्थूलतरंमेदसस्वेदंस्वल्पमैथुनं ॥ धातुक्षयंत्वचंपीतांवहुमूत्रांशितेक्षिणी ४ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमेदसोवृद्धिलक्षणम् ॥

जिसकी देहमोटी मेदसे और पसीने युक्त मैथुन थोड़ा कराजाय और धातु गिराकरै पीली त्वचा होजाय मूत्र बहुत उतरे सपेद नेत्रहो ये मेद रोगके लक्षणहैं ४ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांमेदरोगलक्षणम् ॥

(गंडमालारोगनिदानम्) विस्फोटमालागलकेशशोफमंदो द्भवातोदयुतातिरक्ता ॥ कर्कंधुजंब्वामलकप्रमाणातांगंडमालांप्रव दंतिवैद्याः १ (वातकीगंडमालाकेलक्षण) वातोद्भवायागलगंड माला कृष्णारुणाभाकुरुतेतितोदं ॥ स्तब्धाशिरातालुगलेप्रशोपं भिन्नस्वरंरुक्षतमंशरीरम् २ वैरस्यमास्येविदधातिकष्टं संश्राव येद्रक्तनिभंचपूयं ॥ भिन्नस्वरंकष्टतरेणपाकं करोतिवातात्मकगंड माला ३ ॥

फोड़ेमालाकी तरहसूजनयुक्त गलेमेंहो और लालहो तथाबेर जामुन आमलेके प्रमाणहो मेदसे पैदाहुआहो उसेवैद्य गंडमाला रोग कहतेहैं १ वातकी गंडमालाके ये लक्षणहैं काली लालहो अतिपीड़ाकरै नाड़िनको स्तंभन करदे तालू गलेमें शोपहो बरावर शरीररूखा २ मुखमें स्वाद न रहै कष्टको बढ़ावै तथा राधरुधिरवहै बुरास्वर होजाय कष्ट से पकै येभी वातकी गंडमालाके लक्षणहैं ३ ॥

(पित्तकीगंडमालाकालक्षण) ज्वरंशोफशूलंकरोत्युग्रदाहं क टुत्वंमुखेकंठतालोष्ठशोषं ॥ महत्पित्तकोपोद्भवारक्तवर्णा गलेमुष्क पंक्त्याकृतिर्गण्डमाला ४ (कफकीगंडमालाकालक्षण) जम्बू कर्कंधुपूगीफलकलितरुभापक्वनारंगपिंगा काठिन्याग्रंथिपंक्तिर्वित रतिपरतः कंठदेशेषुशोफं ॥ कंडूपीडांविधत्तेप्रतिदिनमरुचिंगौरवा ढ्यंचकासं पूयंरक्तंसगंधंश्रवतिभवतिसाश्लेष्मजागंडमाला ५ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेगंडमालालक्षण म्समाप्तम् ॥

ज्वर सूजन शूल दाह मुख कडुआ कंठ तालूओठ इनका सूखनालाल वर्ण गलेमें अंडकोष की पंक्तिके आकारहो उसे पित्तकी गंडमालाकहतेहैं ४ जामुन कर्कंधु सुपारी पहेड़ा पके नारङ्गीके समान पीलीहो कठिन गांठकी पंक्तीभीहो और कंठमें सूजनहो खुजली पीड़ाको बढ़ावै अरुचि देहभारी खांसी राधरुधिर बासके साथ निकलै उसे कफकी गंडमाला कहतेहैं ५ इतिहंसराजार्थ बोधिन्यां गंडमालारोग निदानम् ॥

(अथश्लीहपदरोगनिदानम्) शोफोनृणांपादगतोतिरौद्रोव ल्मीकतुल्योंतरमांसवर्ती॥ मेदाश्रयःकंटकवेष्टितांगोवैद्योत्तमैःश्लीहपदोनिरुक्तः १ (वातकीश्लीहपदकालक्षण)निमित्तशून्यंवहुशोफपादं कृष्णांचरुक्षंस्फुटतीव्रतोदनम् ॥ वातोद्भवंश्लीहपदंज्वरार्त्तिं निरूपितं वैद्यवरैर्नितांतम् २ (पित्तकीश्लीहपदकालक्षण) शोफाधिकंरक्तज्वरार्त्तिदाहं संश्रावयुक्तंवहुरक्तवर्णं ॥ पित्तात्मकं श्लीहपदंगुरुत्वंज्ञेयंभिषग्भिःकिलकष्टसाध्यम् ३ ॥

मनुष्योंके पैरमें सूजनहो और क्रमसे बढ़के सर्पकी बांबीके समान लम्बी पेंडूजंघा मांसमें प्राप्तहो और मेदके आश्रयहो कांटेयुक्त देहहो उसे वैद्य श्लीपदरोग कहतेहैं १ विनाकारण बहुत सूजन हो काले रूखे फटे तीव्र वेदनायुक्त ज्वरखेदहो उसेवैद्य वातका श्लीहपदरोग कहतेहैं२ जिसमें सूजन ज्यादा हो लालरंगहो ज्वरखेद दाह रुधिरगिरे भारीहो वो वैद्यों ने कष्टसाध्य पित्तका श्लीहपद कहाहै ३ ॥

(कफकेश्लीहपदकालक्षण) स्निग्धंश्लीहपदंगुरुत्वमनिशंशोकाधिकंसज्वरं श्वेताभंवहुकंटकैः परिवृतवल्मीकतुल्यंदृढं ॥ मेदोमांसपराश्रयंचरणगंस्थूलंचशीतान्वितम् भोभोवैद्यविशारदाःकफभवंजानीहितत्पांडुरम् ४॥ इतिश्रीभिषक्चित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रेश्लीहपदलक्षणम् ॥

चिकना भारी सूजन विशेष ज्वर सपेदरंग बहुत कांटे युक्त बामीके तुल्यहो और दृढ़हो मेदमांसके आश्रयहो पैरोंमेंहो मोटी और शीतल हो उसे हे वैद्य तू कफकी श्लीहपद रोग जान ४ इतिहंसराजार्थवोधिन्यां श्लीहपदरोगनिदानम् ॥

(अथविद्रधिरोगनिदानम्)त्वग्रक्तामिषमेदांसिदूष्यदोषास्थिगाःपुनः ॥ नाभेरधोमहच्छोफंज्वरंकुर्वंतितेशनैः १ सविद्रधीरुक् परितोविचार्य्यप्रोक्तैर्भिषग्भिःकिलशास्त्रपारगैः॥ महार्त्तिकृद्दाहविवर्द्धनोसौशोफान्वितोहज्जठरेचशूलं २ विद्रधिःषड्विधःप्रोक्तोमुनिभिस्तत्वदर्शिभिः॥ दोषैर्व्यस्तैःसमस्तैश्चरक्तजःसप्तमःस्मृतः ३ ॥

वात कफ पित्त त्वचा रुधिर मांस मेदा इनको बिगाड़कर हड्डीमें प्राप्त हो नाभीके नीचेनीचेभागो सूजन और ज्वर को पैदा करताहै १ बहुतखेद और दाह और सूजनको बढ़ावै तथा हृदय पेटमें दर्दहो उसे वैद्योंने विचारकर विद्रधि रोग कहाहै २ विद्रधिरोग छः तरहकाहै १ वात २ पित्त ३ कफसे ४ वातपित्तसे ५ वातकफसे ६ पित्तकफसे औरसातवां ७ रुधिरसे ३॥

(वातविद्रधिकालक्षण) रक्तश्यामोतिविषमोवेदनाबहुभिर्युतः॥ शीर्षपाकोविचित्राभोवातजोविद्रधिःस्मृतः ४ (पित्तकीविद्रधिकेलक्षण) पक्वनिंबूफलाकारोरक्ताभोज्वरदाहकृत्॥ शीर्षपाकोमहत्यार्त्तिर्विद्रधिःपित्तजोभवेत् ५ (कफकीविद्रधिकेलक्षण) स्निग्धःशीतश्चिरोत्थोयंचिरपाकोल्पवेदनः॥ श्लेष्मजोविद्रधिःपांडुःशरावसदृशोभवेत् ६ ॥

लाल और काली तथा विषम बहुतपीड़ायुक्त जल्दीपके और विचित्र स्वरूप हो ये वातकी विद्रधि के लक्षण हैं ४ पकेनिंबू के समान सूजन हो लालरंग ज्वर दाहके करनेवाली शीर्षपाक हो अत्यंतपीड़ायुक्त ये पित्तकी विद्रधि के लक्षण हैं ५ चिकनी शीतल बहुत दिनकीउठी और बहुत काल में पकै मंदपीड़ा हो पीलेरंगकी शराव के समान हो ये कफ की विद्रधि के लक्षण हैं ६ ॥

(सन्निपातकेविद्रधिकेलक्षण) नानावर्णोदाहशूलोज्वरार्त्तिः कोष्ठोत्थानंकष्टपाकोतिरौद्रः॥ आधिश्रावोवस्तिहृत्कुक्षिशोथोवैद्यैःप्रोक्तोविद्रधिःसन्निपातः ७ (रुधिरकीविद्रधिकेलक्षण)दीर्घोष्णापरिपक्वचूतसदृशोविस्फोटकोमांसलः॥ कृष्णाभोबहुदाहकृज्ज्वरकरस्तृष्णान्वितःक्षुद्धरः कुक्षौवस्तिगुदोदरेषुहृदयेपीडाकरोहर्निशम् प्रोक्तोरक्तभवोभिषग्वरगणैःपित्तात्मकोविद्रधिः ८ विद्रधिं रक्तजंविद्यात्कुक्षौलग्नमचञ्चलं॥ मांसशोणितयोग्रंथिंवस्तिहन्नाभिसंभवम् ९ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतवैद्यशास्त्रे विद्रधिलक्षणम्॥

विचित्र रंग हो दाह शूल ज्वर पीड़ा कोष्ठमें पैदाहुई कष्टसे पके अति

रौद्र आधिस्राव मूत्रस्थान हृदय कूख इनस्थानोंमें सूजन हो इसे वैद्योंने संनिपात का विद्रधि रोग कहाहै ७ दीर्घगम्म पक्केआमके समान फोड़ा हो तथा मोटा हो कालेरंग के समान बहुत दाह ज्वर भूखका नाशकरै प्यास बढ़ावै कूख मूत्रस्थान गुदा पेट हृदय इनमें रात दिन पीडाकरैऐसी विद्रधि को वैद्यगणोंने पित्तात्मक रुधिरकी कहीहै ८ औरनाभी मूत्रस्थान हृदय में मांसकी गांठ हो उसे रुधिर की विद्रधि कहते हैं तथा कांख में स्थिर जो हो ९ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांविद्रधिरोगनिदानम् ॥

(अथोपदंशलक्षणम्) हस्तस्यघातात्करजस्यपाताद्दंतस्यदंशातृणाकाष्ठलग्नात्॥दुष्टस्त्रियोयोनिविकारसेवनात्पञ्चोपदंशाःप्रभवंतिशिश्ने १ (वातकेउपदंशकेलक्षण)वातोपदंशीवहुवेदनान्वितो विस्फोटसूक्ष्मैःस्फुरणैस्तुकृष्णाभैः ॥ युक्तःसतोदैःकिलजायतेनृणां शिश्नस्यवाह्योपरितोन्तरेनिशम्म २ (पित्तकेउपदंशकेलक्षण) पित्तोपदंशंतमवेहिनूनंतीव्रार्तिदाहंपिशितावभासं॥ विशीर्णमांसंपिटिकाभिषिक्तंशिश्नांतरेगर्तमतीवरौद्रं ३ ॥

हाथकी चोटसे तथा नखकेलगनेसे किसी तरह से दांतके लगनेसे तिनका लकड़ीके लगने से गरमीवाली औरत के संगकरनेसे लिंगमेंपांच प्रकार का उपदंश रोग पैदा होताहै १ बातका उपदंश वाला पुरुष बहुत वेदनायुक्त हो प्रकाशमान छोटी छोटी मरोड़ी हों कालेरंग की पीडा युक्त लिंगके बाहर भीतर मनुष्यों के होती हैं २ उसे पित्त का उपदंश जान जिसमें ये लक्षणहों तीव्रदाह मांस के रंग सरीखा तथा बिखरा हुआ मांसहो पिटिका युक्त लिंग के भीतरी भारी गढ़ाहो ३ ॥

(कफकेउपदंशकालक्षण) वैद्योपदंशंकफसंभवंहितंजानीहिकंडूपिटिकाभिराश्रितं॥शोफाधिकंपांडुरवर्णशीतलंस्निग्धंगरिष्टंपिशितांकुरान्वितं४(सन्निपातकेउपदंशकालक्षण)आमुष्कशोफंकृमिजंतुजग्धंविशीर्णमांसंवहुगर्तशोफं ॥ त्रिदोषजंविद्ध्युपदंशमेतमसाध्यमार्तिज्वरशूलदाहं ५ जातमात्रेमहारोगेचिकित्सांनैवकारयेत् ॥ वद्धमूलेनरोगेणरोगीयातियमालयम् ६ ॥

हेवैद्य उसेतू कफका उपदंशजान जिसमें खुजलीहो पिटिकाहो अधिक सूजनहो पीलारंगहो शीतल औरचिकना भारी मांसांकुर युक्तहो ४ लिंग से अंडकोशों पर्यंत सूजनहो कृमिपड़गयेहों मांस विखर गयाहो बड़ा गड्ढाहो सूजनहो ज्वरशूलदाह युक्तऐसे लक्षणोंसे असाध्य त्रिदोषकाउपदंशजानना ५ जोमनुष्य उपदंश रोगको पैदाहोतेही इलाज नहीं करै और रोगबद्ध मूलहोजाय तोवहरोगी यमराजके घरजाताहै ६ ॥

महाक्षतोभवेद्यस्यशिश्नेस्फोटानिशीर्य्यते ॥ शिरःपीडाज्वरोदेहे निर्लोमोमुखमंडले ७ गुह्यदेशेमहाशोफोनेत्रयोर्वहुरक्तता ॥ पतेच्छिश्नःसमुष्काभ्यांसरोगीनैवजीवति ८ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेउपदंशलक्षणम् ॥

जिसके लिंगमें वड़ा घावहो औरघाव फटजावे तथा शिरमेंदर्द और ज्वर मुखपर वालनरहे ७ गुह्यइन्द्रीमें महासूजनहो औरनेत्र लालहों औरजिसकाअंडकोशके साथलिंग गिरपड़ेवहरोगी नहीं जीवै ८ इतिहंसराजार्थवोधिन्यांउपदंशरोगनिदानम् ॥

(अथशूकदोषलक्षणम्) योलिंगवृद्धिंमनुजोभिवांछति शूकोद्भवास्तस्यभवंतिव्याधयः ॥ अष्टादशाख्याःकफवातपित्तजाद्वंद्वोद्भवारक्तभवास्त्रिदोषजाः १ (सर्षपिकाकालक्षण) सर्षपिकासासर्षपरूपालिंगसमीपेदारुणशूका ॥ वातकफाभ्यांसंजनितारुक् स्यात्पिटिकेयंपुंस्त्वहरीति २ (कुम्भिकाकालक्षण) रक्तपित्तोत्थिताकुम्भीपिटिकारक्तपूरिता॥शिश्नोपरिगताशूकदोषजातीव्रवेदना३ ॥

जोमनुष्य लिंगबढ़नेकी इच्छाकरै औरमूढ़वैद्यके कहनेसे लेप वा पट्टी वांधेउसकेअठारह तरहका वात पित्त कफ३ दो दोषके२ और त्रिदोषका १ शूकसेपैदा व्याधिहोतीहै १ सर्षपिका सरसोंके समान छोटीफुंसी लिंग परहोतीहै और वात कफसे पैदा तथा पुरुषपनेको दूरकरतीहै २ रक्तपित्त से पैदा कुंभिकाफुंसी रुधिरसे पूरित औरलिंगपर शूकदोषसे पैदाहुई तीव्र पीड़ायुक्त ३ ॥

(मूढ़पिटिकाकालक्षण) पाणिभ्यांमृदितंशिश्नंपीडितंवातको

पतः॥तस्मिन्वातसमुद्भूतासमूढपिटिकाभवेत् ४ (दीर्घकापिटिकालक्षण)दीर्यतेमध्यतावद्धाःपिटिकारोमहर्षदाः॥ संधिमध्यगताःशुभ्राःकफजादीर्घकाःस्मृताः५ (पुष्करिकापिटिकाकालक्षण)पित्ताद्भवापुष्करकर्णिकासमा सिंदूरवर्णा निविडाऽतिदुःखदा॥ दाहादिपीडांमहतींकरोतियासोक्तापरैःपुष्करिकामुनीन्द्रैः ६ ॥

हाथके मीड़नेसे वातके कोपसे पैदाहुई लिंगपरफुंसी उसेमूढ़ पिटिका कहतेहैं४ रोमांचकोकरै औरबीचमेसेफटजाय औरस्नन्धीनकेबीचमें सपेद रंगकीहो वोकफसे पैदाहुई दीर्घकानामपिटिका जाननी ५ पित्तसे पैदाकमलकी कर्णिकाके समानहो तथालाल रंगहो चिपटी अतिदुःख देनेहारी दाह पीड़ा बहुतकरै उसेमुनीश्वरोंने पुष्करिका पीडिका कहीहै ६ ॥

स्पर्शनोत्सहतेज्वरंवितनुतेपीडांकरोतिद्रुतं यःशूकंपिटिकाशतंवहुरुजंलिंगेविधत्तेचिरं॥ कृष्णारक्तनिभंविपाककठिनंपाकार्तिकृत्सद्भवंविंद्यात्पित्तमरुद्भवंतमनिशंमुद्गादलाभंरुजम्७(कफपित्तकेशूककालक्षण)कफपित्तभवाविविधाकृतयःपिटिकावहुशोफयुताःकठिनाः॥ ज्वरदाहविलापरुजादधतेकृमिशोणितपूयवहाविषमाः ८ ॥ (त्रिदोषजनितशूककेलक्षण) मांसपाकंवहुछिद्रंलिंगभंगंत्रिदोपजः॥ कुर्याच्छूकाज्वरंदाहंशोथंचपिटिकान्वितं ९ ॥

स्पर्श न सहाजाय ज्वर पीड़ा और सैकरों फुन्सी लिंग के ऊपर कालीलाल हो कठिनसे पकें दुःखकी देनेवाली और चुचावें उसे वातपित्तसे पैदाहुई पीडिका मूंगके पत्ते केसमान जाननी ७ कफ पित्त से पैदा हुआ जो शूक रोग उसके अनेक तरहकी फुंसीकी आकृतिहो और सूजन हो कठिनज्वर के करनेवाली रुदनकरै कृमी और रुधिर तथा राधवहे और विषम हो ८ मांसका पाक तथा बहुत से छिद्र होजायँ और लिंग गिरपड़ै तथा ज्वर दाह सूजन और अनेक मरोड़ीहों ये सन्निपातके शूक रोगके लक्षणहैं ९ ॥

मांसशोणितयोर्ग्रन्थिमर्वुदंतंविदुर्वुधाः॥ विद्रधेर्विद्रधिंविंद्यात्संनिपातसमुद्भवां १० इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेशूकदोषलक्षणम् ॥

मांस और रुधिरकी गांठ उसे पण्डित अर्बुद कहते हैं और विद्रधिके आकार हो उसे सन्निपात से पैदा विद्रधि कहतेहैं १० ॥ इतिश्री हंसराजार्थबोधिन्यांशूकरोगनिदानम् ॥

अथकुष्ठरोगलक्षण ॥

(अथकुष्टरोगोत्पत्तिः) महापापतःकुष्ठिनोदेहदाहा त्तथात्यंत संसर्गतोमांसभक्षात् ॥ भवेत्कुष्टरोगोगुडक्षीरपाना दजीर्णाशना द्रक्तपित्तस्यकोपात् १ विरुद्धान्नपानात्स्त्रियोत्यंतसंगा द्दिवास्वाप तोरौद्रघर्मादितापात् ॥ गुरुस्निग्धरुक्षाशनान्मूत्रबंधात् भवेद्रौद्र कुष्ठोजलस्यावगाहात् २ मांसचर्मविकारोत्थाः कुष्टाष्टादशसंज्ञकाः ॥ वातपित्तकफोद्भूता द्वंद्वोत्थाःसन्निपातजाः ३ ॥

ब्रह्महत्या आदि महापापके करने से कुष्टीको दाह देनेसे कोढ़ीकेपास रहने से मांसके खानेसे भारी तथा दुग्ध आदि पदार्थ के सेवन करनेसे अजीर्ण में खानेसे रक्त पित्तके होनेसे कुष्ट रोग पैदा होताहै १ तथा विरुद्ध अन्न और जलके सेवन करने से अत्यन्त स्त्रीके संगकरने से दिनमें सोनेसे धूप आदि गरमीके खानेसे भारी चिकना रूखे आदिके खाने से मूत्रबन्ध होनेसे बहुत जलमें रहनेसे घोर कुष्टरोग पैदा होताहै २ मांस औरचर्मके बिकारसे पैदा कोढ़रोग अठारह प्रकारकाहै वात से पित्त से कफसे द्वन्द्वज और सन्निपातसे ३ ॥

(उदुंवरकुष्टकेलक्षण) यद्रुक्षंपरुषंकपालसदृशंतोदंकपाले धिकं तत्कुष्टंविषमंवदंतिसुधियःकृष्णारुणाभंभृशं ॥ यत्कुष्टंस्फुटितंउदुंवरसमंरुग्दाहकंडूवृतम् शुष्कंरक्तनिभंपरैर्निगदितंतत्कुष्टमौदुंवरं ४ (मूकजिह्वनामकुष्टके) वृषजिह्वोपमाजिह्वा रोमहर्षोन्तरव्यथा ॥ जायतेयेनकुष्टेनमूकजिह्वन्तदुच्यते ५ (मंडलकुष्टकेलक्षण) श्वेतरक्तनिभंस्निग्धंस्थिरंकृच्छ्रसमुन्नतं ॥ परस्परसमालग्नंकुष्टंमंडलसंज्ञकं ६ ॥

जो रूखा कठोर खोपड़ीके समान कपाल में पीड़ा करे तथा काला लाल उसे संज्ञक कुष्ट कहते हैं और जो फटगयाहो गूलरके समानपीड़ा

दाह खुजली तथा सूखा हुआ रुधिरके समान उसे वैद्य उदुम्बर नाम कुष्ठ कहते हैं ४ बैलकी जीभके समान जीभहो रोमांच तथा भीतरपीड़ा हो उसे मूकजिह्व कुष्ठ कहते हैं ५ सपेद लाल चिकना स्थिर करड़ा ऊंचा और आपसमें मिला हुआ हो उसे मण्डल कुष्ठ कहते हैं ६ ॥

(करवालकुष्टकेलक्षण) वर्द्धतेहर्निशंस्थूलंकृष्णंकंडूभिरावृतं॥ रूक्षंवहुतरंकुष्टंकरवालंतदुच्यते ७ (किणिकुष्टकालक्षण) तत्कुष्टंकिणिसंज्ञंस्यात्किणंशोथसमन्वितं ॥ श्यामवर्णंखरस्पर्शंपरुषंवहुवेदनम् ८ (दादनामकोढ़केलक्षण) कृष्णाभंमंडलाकारंकंडुभिर्वहुभिर्युतं॥ अतापेदुष्करंरूक्षं तत्कुष्टंदद्रुसंज्ञकम् ९ ॥

जो नित्य बढ़ता जावे और मोटाहो काला और खुजली युक्त रूखा और बहुतहो उसे करबाल कुष्ट कहतेहैं ७ वो कोढ़ किणि संज्ञकहै जिसमें डंक सूजनके साथ हो कालावर्ण खरदरा स्पर्श कठोर बहुत खेदयुक्त हो ८ काला गोल चकत्ते खुजली होतीहो गरमीमें दुःख बहुतहो रूखा उसको दादनाम कोढ़ कहते हैं ९ ॥

(चर्मदलकोढ़केलक्षण) कंडुमद्रक्तवर्णंच विस्फोटकसमन्वितम् ॥ सार्द्रस्पर्शासहंशूलंकुष्टंचर्मदलंभवेत् १० (गजचर्मकोढ़केलक्षण) गजचर्मसमाकारं स्थूलंवहुतरंदृढं ॥ कंडूमत्श्यामवर्णंयत् कुष्टंतच्चर्मसंज्ञकम् ११ (पामाकुष्टकेलक्षण) स्फोटाभिर्वहुभिर्युक्ता सूक्ष्माभिःपाटलादिभिः ॥ कंडूदाहार्तिभिर्युक्तापामासाकीर्तितावुधैः १२ ॥

जिसमें खुजली हो और लालवर्ण तथा फोड़ाहो गीला स्पर्श न सहा जाय शूलयुक्त उसे चर्मदल नाम कुष्ट कहते हैं १० जो हाथी के चर्म के आकार हो और मोटाहो तथा विशेष और दृढ़ हो खुजलीयुक्त कालारंग हो उसे चर्मदल कुष्ट कहते हैं ११ जिसमें फोड़ा छोटे और सपेद लाल रंगके बहुत हों और खुजली दाह पीड़ा युक्तहो उसे पामा अर्थात् खाज कहतेहैं १२ ॥

(विचर्चिकाऔरचित्रकुष्ट) सैवनूनंवहुश्रावा कथितासाविचर्चिका ॥ यत्पुष्पसदृशंवर्णंचित्रकुष्टंतदुच्यते १३ (वातकेकुष्टका

लक्षण) श्यामारुणंखरस्पर्शं रूक्षंवेदनयान्वितं ॥ विवर्णंवातजं कुष्टंकथितंतद्भिषग्वरैः १४ (पित्तकेकुष्टकेलक्षण) श्यामारुणा निभंश्रावंकंडुरोगार्तिदाहदं ॥ तीक्ष्णपित्तोद्भवंकुष्टं कीर्त्तितंवैद्य सत्तमैः १५ ॥

और पामा बहुत श्रवै तो उसेही विचर्चिका कहतेहैं और जिसकापुष्प के वर्णके समान रंगहो उसे चित्रकुष्ट कहते हैं १३ जिसका कालालाल और खरदरा स्पर्श हो रूखा तथा पीड़ा युक्त विवर्ण उसे वात का कुष्ट कहतेहैं १४ जिसका काला लालरंगहो और श्रवै तथा खुजली दाहपीड़ा हो उसे तीखा पित्तका कुष्ट वैद्यो'ने कहाहै १५ ॥

(कफकेकुष्टकेलक्षण) कुष्टंकफोद्भवंविंद्यात्स्निग्धंकंडुयुतंघनं॥ गौरवंशीतलंक्ले दिशोथश्रावसमन्वितं १६ चिन्हैर्द्विदोषजैर्युक्तं द्विदोषोत्थंविदुर्बुधाः॥ त्रिभिर्दोषैर्विमिश्रंयत्कुष्टंकष्टतरंभवेत् १७ (त्वचामेंस्थितकुष्टकेलक्षण) वहूपद्रवसंयुक्तमसाध्यंतत्प्रकीर्त्तितं॥ त्वक्स्थेकुष्टेशरीरेषुवैवर्ण्यंरूक्षताभवेत् १८ ॥

जो चिकना और खुजली युक्त घनभारी शीतल क्लेदी सूजन युक्त तथा श्रवै उसे कफका कुष्ट कहते हैं १६ जिसमें द्विदोष के लक्षण मिलते हों उसे पण्डित द्विदोष का कुष्ट कहते हैं और त्रिदोषके लक्षण मिले हों उसे कष्टतर जान वैद्य त्यागदे १७ और बहुत उपद्रव युक्तहो उसे वैद्यों ने असाध्य कहाहै त्वचामें स्थित कुष्ट शरीर को विवर्ण करदे और रूखा कर देताहै १८ ॥

(रक्तगतकुष्टकेलक्षण) कुष्टेरक्तगतेनेत्रेक्लमोहर्षोरुचिर्भवेत् ॥ प्रस्वेदःकंठशोषश्च विसर्पोरक्तमंडलम् १९ (मांसगतकुष्टकेल क्षण) हस्तांघ्रिषुन्नणांशोफं विस्फोटंतोदगौरवं ॥ कुष्टेमांसगते तस्यविरेकोवमनंभवेत् २० (मेदगतकुष्टकेलक्षण) गात्रभग्नोंग दुर्गंधंक्षतेपूयंचजंतवः॥गतिक्षयोग्निमंदत्वंकुष्टेमेदगतेभवेत् २१ ॥

नेत्रोंमें क्लम तथा हर्षका नाश अरुचि पसीना कण्ठ का सूखना और विसर्प रुधिरके मण्डल ये रक्तगत कुष्टके लक्षणहैं १९ हाथ पैरोंमें सूजन

तथा फोड़ा पीड़ा शरीर भारी रद्द दस्त ये मांसगत कुष्टके लक्षण हैं २० शरीरका टूटना देहमें दुर्गन्ध बृण पीव कृमिहों गतिका नाश मन्दाग्नि ये मेदगत कुष्टके लक्षणहैं २१ ॥

(अस्थिमज्जागतकुष्टकेलक्षण) नाशाभंगोक्षिणीरक्तेक्षतेषु कृमिसंभवः ॥ स्वरघातोव्रणेदाहः कुष्टेमज्जास्थिसंस्थिते २२दंपत्योःकुष्ठिनोर्वीर्यशोणिताभ्यांचसंभवः ॥ यदपत्यविकाराभ्यां ज्ञेयं तदपिकुष्ठितम् २३ (कुष्टकेसाध्यलक्षण) त्वग्रक्तमांसगंकुष्टंसाध्यंयंत्रौपधादिभिः ॥मेदोजंचद्विदोपोत्थं दानस्नानजपादिभिः२४॥

नाकका भंग नेत्र लाल घावोंमें कीड़ा पड़जायँ मन्दस्वर बृणों में दाह ये हड्डी और मज्जागत कुष्टके लक्षण हैं २२ माता और पिता के कोढ़ी होनेसे उन्होंकेवीर्य्य और रजसे पैदाजो सन्तान वोभी कोढ़ी होतीहैं २३ त्वचारुधिर मांसमें जो स्थित कुष्टसो यंत्रमंत्र औषधीन से साध्यहै और जो मेदा मज्जा में प्राप्तहो और द्विदोषसे उठाहो वो स्नान दान जपादि से शांतिहो २४ ॥

(कुष्टकेअसाध्यलक्षण) नरंकुष्ठिनंहंतिकुष्टंप्रवृद्धं त्रिदोषोद्भवं संधिमज्जास्थिसंस्थं ॥ प्रभिन्नस्वरंश्वासवाहंसदाहं कृमीणांक्षतेसृक्श्रवंरक्तनेत्रम् २५ अंगानियेनशीर्यंतेक्षतेषुकृमिसंभवः ॥ भ्रूनाशाक्षिस्वराभग्नाः कुष्टंतंपरितस्त्यजेत् २६ ॥ इतिश्रीभिषक्चित्तोत्सवे हंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकुष्टलक्षणम् ॥

संधि मज्जा अस्थिगत त्रिदोषसे पैदाहुआ जो कुष्ट और बढ़ाहुआ वो कोढ़ी मनुष्यको मारडाले तथा भृष्टस्वर श्वासवान् दाह और कृमियुक्त घाव रुधिरश्रवे लालनेत्र २५ जिससेअंग फटजाय और घावों में कृमिपड़ जायँ तथा भृकुटी नाक नेत्र जातेरहैं स्वरबैठजाय उसकोढ़ी को वैद्यत्यागदे २६ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांकुष्टरोगनिदानम् ॥

(शीतपित्तोदर्दलक्षणं) शीतवातस्यसंस्पर्शाद्दुष्टपित्तकफाश्रयः ॥ त्वग्रक्तमांसंसंदूष्यविसर्पंतोंतरेबहिः १ (उदर्दकेलक्षण) वरटीदष्टवच्छोथोजायतेत्वचिसर्वतः ॥ दाहकंडूशिरस्तोदःस्या

दुदर्दस्यलक्षणम् २ मंडलानिविचित्राणि रागवंतिबहूनिच ॥ सकंडूनिसतोदानिस्थूलानिपरितस्त्वचि ३ ॥

शीतल पवनके स्पर्शसे बातकफ पित्ततीनों रुधिरमांस त्वचा बिगाड़ कर भीतर और बाहर शीत पित्तरोगको पैदाकरै हैं १ जैसे वरटी मोहार कीमक्खीके काटने से सूजन होतीहै इसीतरह सब त्वचामेंहो और दाह खुजली शिरमें दर्दहो उसेशीत पित्तवायु जिसे लोकमें पित्ती दर्दरोग कहते हैं२ और जिसमें चित्रविचित्र चकत्ते रागवान हों और बहुतसेहों उनमें खुजली और पीड़ाहो तथामोटी त्वचाहो ३ ॥

भवंतिसर्वतोदेहेशीतवातोद्भवानिच ॥ कफात्मकानिचिन्हानि उदर्दस्यविदुर्बुधाः ४ पित्ताधिकंभवेत्कोठमुदर्दंतुकफाधिकं॥वाताधिकंशीतपित्तंसन्निपातंत्रिदोषजम् ५ (उदर्दरोगकापूर्व्वरूप) पूर्वरूपमुदर्दस्यनेत्रयोरक्ततारुचिः ॥ हृल्लासतृट्ज्वरोदाहो देहसादोंगगौरवम् ६ ॥

सबदेहमें शीतल पवनसे और कफाधिक्यसे जो चकत्ते हों उसेपंडित उदर्द रोगकहतेहैं ४ पित्ताधिकसे कुष्टहोताहै कफाधिकसेउदर्द होता है बाताधिक से शीतपित्त सन्निपात से त्रिदोषज उक्तरोगहोते हैं ५ नेत्र लालहों अरुचि खालीरद्द प्यासज्वर दाहदेह में पीड़ातथा भारीपना ये उदर्दके पूर्व्वरूपहैं ६ ॥

(कोढ़उत्कोढ़कालक्षण) त्वक्संदूष्यवहिर्गतोरुक्महाकाये मरुच्छीततो देहमंडलमंडितंवितनुतेशोफंसरोगान्वितं ॥ कंडूनिस्त्वचिसर्वतोवमितरांतोदंचविड्बन्धनं शैथिल्यंबलनाशनंप्रकुरुतेरोमोद्गमंगौरवं ७ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे उदर्दकुष्ठलक्षणम् ॥

शरदीसे पवन त्वचाको बिगाड़ शरीरकेवाहर महादारुण रोगको प्रगट करै देहमें रुधिरके चकत्ते सूजनयुक्तहों उनमें खुजलीचले त्वचा न रहै बमन और पीड़ातथा दस्तका बंदहोना शिथिलता बलनाश रोमांच और देहभारी ७ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांशीतपित्तउदर्दकोढ़उत्कोढ़निदानम् ॥

(अम्लपित्तकीउत्पत्ति) स्निग्धाम्लैर्बहुभोजनैरपचितैर्वैश्वानरैर्मंदरै रात्रौजागरणानवासरसुखस्वापेनतापेनवा ॥ संक्षोभ्योपचिनाम्लपित्तमुदरेहृत्कंठयोर्मस्तके नाभौवस्तिगुदांतरेषुविविधंधत्तेरुजंदारुणां १ आध्मानंकुरुतेम्लपित्तमनिशंशोषंतनौकृष्णतामुद्गारंवितनोतिधूमसहितंसाम्लंमुहुर्दुःखदं ॥ हृल्लासंभ्रममोहकंपमरुचिंदाहंचहृत्कंठयोः कंडूमंडलमंडितंसपिटिकंदेहंविधत्तेरतिं २ अम्लत्वंमतिभुक्तान्नमपक्वंयातिवह्निना ॥ शिरोतिशूलहृच्छोषमम्लपित्तस्यलक्षणम् ३ ॥

चिकना खट्टा बहुत भोजन करनेसे मंदाग्निसे रातमें जागनेसे दिनमें सोनेसे गर्मीमेंडोलनेसे कुपितहुआ अम्लपित्तसो पेटमें हृदयमें कंठऔर मस्तकमें तथानाभी और मूत्रस्थानमेंगुदामेंनानाप्रकारका रोगपैदा होताहै१ अफरा शोष शरीर काला धूमसहित खट्टी डकार बारबार में आवे खाली रहहो भौंर मोह कम्पअरुचि हृदय कण्ठमें दाहखुजली देहमेंचकत्ते और फुंसी तथा अरति को करै २ खायाहुआअन्न मंदाग्नि के कारणसे अपक्क हुआ खट्टेपनेको प्राप्त होताहै शिरमें दर्द शूल हृदय में शोष ये अम्लपित्त के लक्षण हैं ३ ॥

(वातकेअम्लपित्तकेलक्षण) वाताम्लपित्तंप्रकरोतिपीडांशूलंभ्रमंहृत्कमलेतिशोषं॥मूर्च्छांप्रकंपंपिटिकानिदेहेकृष्णानिसूक्ष्माणिचमंडलानि ४ (पित्ताम्लपित्तकेलक्षण)पित्ताम्लंशीतजन्यंरुजयतिमनुजं पित्तकोपाधिकारंरक्तांगंमण्डलाभंत्वचिगतमनिशं छर्दिमूर्च्छाविपाकं ॥ कंडूरूपंसशोफंपिटिकशतचितं मोहशोकादिकारिअंतर्बाह्येतिदाहंहृदिजठरगुदेशूलकृच्चर्महारि ५ (कफाम्लपित्तकेलक्षण) पित्ताम्लंकफजंकरोतिपिटिकांदेहेसशोफान्विता मालस्यंमलबंधनंवितनुतेकंडूरुजंदारुणां॥ निद्राभंगविमर्दनंचजड़तामुद्गारमम्लान्विताहृत्पीडामरुचिंतमःकफचयंकायेगुरुत्वंवमिं ६ ॥ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतवैद्यशास्त्रेअम्लपित्तलक्षणम् ।

वातकाअम्लपित्त पीड़ाशूल भ्रम हृदयमें शोषमूर्च्छा कंप फुंसी काले

ले और छोटे चकत्ते करताहै ४ पित्तका अम्ल पित्त शीतसे पैदाहुआ मनुष्य कोरोगीकरै देहमें लाल चकत्ते हों रद्द मूर्च्छा पाक खुजली सूजन अनेक फुंसी मोह शोक भीतर बाहर दाह हृदयमें पेटगुदा इनमें शूल घर्म को दूरकरैहै ५ कफका अम्लपित्त फुंसी सूजन आलकस मलबंध खुजली जड़तादारुणपीड़ा निद्राकानाश अंगोंकाटूटनाखट्टीडकार हृदयमें पीडा अरुचि अंधेरा कफगिरे भारीपना औररद्द येलक्षण करैहै ६ इतिहंसराजार्थ बोधिन्यांअम्लपित्तरोगनिदानम् ॥

(विसर्परोगलक्षणं) लवणकटुरसानांसेवनाद्घर्मतापात् प्रभवतिकिलरोगोदोषकोपाद्विसर्पः ॥ वपुषिचलनशीलोदग्धविस्फोटरूपोवदरफलसमानःश्वेतपीतारुणाभः १ (वातकेविसर्परोगका लक्षण) संदूष्यामिषमेदचर्मरुधिरंजातोविसर्पोवहि र्वातात्माविदधातिविद्रुमनिभान्विस्फोटकान्चञ्चलान्॥ दीप्तांगारसमानदाहजनकान्पीडाकरान्कंडुरान् कासाध्मानमहाज्वरश्रमतथाशीर्षार्तिमोहाकरान् २ (पित्तकेविसर्परोगकालक्षण) मूर्च्छांकुर्याद्विसर्पःप्रसरतिवहुशःपैत्तिकोघोररूपस्तप्ताग्न्यंगारदाहंपिटिकचयश्च तंनीलपीतारुणाभं ॥ निद्रानाशंशरीरंज्वरयतिसततंरक्तमांसावशोषंकासंश्वासंविचेष्टांभ्रममरुचितृषास्फोटमंगेषुमोहम् ३ ॥

नोनका खट्टाआदि पदार्थ खानेसे धूपमें रहनेसे कुपितहुये जोवात पित्त कफ सो विसर्परोग फैलनेवाला दग्धफोडारूप बेरके समान सफेद पीला लालरंगके पैदाकरतेहैं१ वातका विसर्परोग मांसमेदाको बिगाड़कर बाहर मूंगेके समान चंचल फुंसीको पैदाकरै जैसा प्रज्वलित अंगार दाह को करनेवाले तथा पीडा युक्तकारक खुजली खांसी अफरा महाज्वर श्रम प्यास शिरमेंदर्द मोहको करनेवाले करताहै २ पित्तकाविसर्प देहमें फैल जावे मूर्च्छाहो अंगारके समान दाह नीली पीली लालरंगकी फुंसी निद्राकानाश ज्वर रुधिर मांसका शोष खांसी श्वास चेष्टाहीन भ्रम अरुचि प्यास अंगोंका फटना औरमोहको करैहै ३ ॥

(कफकेविसर्परोगकेलक्षण)पिटिकाश्चविसर्पकृतारुचिराःस्फटिकद्युतयोबलवीर्यहराः॥कफजामिलिताबहुदुःखयुताज्वरकासतृषा

लसशोफकराः४ आग्नेयाख्योविसर्प्पःस्याद्वातपित्तसमुद्भवः ॥ कफवातोद्भवोग्रंथिःकर्द्दमःकफपित्तजः ५ ससांनिपातिकोज्ञेयःसर्वलक्षणसंयुतः॥विसर्प्पोद्वंद्वजःसाध्योऽसाध्यःस्याद्यस्त्रिदोषजः ६ (विसर्प रोगकेउपद्रव) विसर्पोपद्रवाज्ञेयामांसशोथोज्वरोमदः ॥ मर्मरोधस्तृषाश्वासोहिक्कादाहोभ्रमोरुचिः ७ इतिश्रीभिषक्कचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेविसर्पलक्षणं ॥

कफका विसर्प रोग रुधिर स्वरूपवाली स्फटिक मणि के समान बल बीर्य की नाशक बहुत दुःख की देनेवाली ज्वर खांसी प्यास आलकस सूजन को करै है ४ बात पित्तसे आग्नेय बिसर्प रोग होताहै कफबातसे ग्रन्थिनाम रोग होताहै और कफपित्तसे कर्दमनाम बिसर्प रोग पैदाहोता है ५ और जिसमें सब लक्षण मिलतेहों उसे संनिपात का बिसर्प रोग जानना द्विदोषसे पैदा बिसर्प रोग साध्यहै, और त्रिदोषका असाध्य कहाहै ६ ये बिसर्परोग के उपद्रव जानने मांसमें सूजन ज्वर मस्ती मर्मों का रुकना प्यास श्वास हिचकी दाह भ्रम अरुचि ७ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांविसर्परोगनिदानम् ॥

क्षुद्ररोगलक्षणम् ॥

(अजगल्लिकालक्षण)मुद्गासमाना पिटिकासवर्णा स्निग्धामरुत्श्लेष्मविकारजाता ॥ देहेशिशूनांग्रथिताचनीरुजांतामाजगल्लींप्रवदंतिसंतः १ (यवप्रख्याकालक्षण)अरुणाभा पिटिकाबहुवेदनाकफमरुज्जनिताग्रथितामिषे ॥ यवसमाकठिनाभिषजांवरैर्निगदिताज्वरकृत्किलसाथवा २ (अंजनीनामफुंसीकेलक्षण) उन्नतामंडलाकारा विततांजलिसंनिभा ॥ घनावक्राद्विदोषोत्था तांजानीहिवुधांजलीम् ३ ॥

जोफुंसी मूंग के समान देह के बर्ण सरीखी हो और चिकनी हो वो बातकफसे पैदाहुई अजगल्लिका कहतेहैं ये बालक की देहमें पीडारहितहोतीहै १ जो फुंसी लाल रंगकी और पीड़ा युक्त मांसमें रहतीहो यव

केआकारहो करड़ोहो वो बालकफसे पैदा ज्वरकर्त्ता यवपुच्छा कहतेहैं २ जो फुंसीऊंचीहो मंडलके आकारहो विताताजली सदृशहो भारीहो टेढ़ी हो उसे द्विदोषसे पैदा पंडित अंजलीनाम कहतेहैं ३ ॥

(विवृतानामफुंसीकेलक्षण) पक्कोदुंवरिसदृशा विवृतास्यामंडलाकारा ॥ पिटिकावहुदाहयुता विज्ञेया विवृताख्या ४ (कच्छपिकाकेलक्षण) पिटिका कच्छपाकारा कफवातसमुद्भवा॥ ग्रन्थियुक्तोन्नतापोराज्ञेयासाकच्छपीवुधैः ५ (वाल्मीकफुंसीकेलक्षण) ग्रीवासंध्यंसकक्षोदरहृदयकटीहस्तपादेषुघोरोरोगोवाल्मीकसंज्ञःप्रभवतिवहुशोवर्द्धतेसंक्रमेण ॥ कायात्कायान्तरेषुप्रसरतिवहुधाश्लेष्मपित्तानिलोत्थःपूयंवक्त्रैरनेकैर्वमतिचरुधिरंवीर्यसौख्यापकारी ६ ॥

पके गूलरके समान फटे मुखकी मंडलके आकार और जिसमें दाह ज्यादाहो उसे विवृता फुंसी कहतेहैं ४ जो फुंसी कछुवेके समान ऊंची हो गांठहो वात कफसे पैदाहो उसे घोरकच्छपिका कहते हैं ५ ग्रीवासन्धिकंधे कांखपेटहृदय कमर हाथ पैर इनमेंवाल्मीक नामका घोर रोगपैदा होताहै और बांबीकी तरहहो और क्रमसे देहमें फैले और अनेक मुखहों उनसे राधनिकले रुधिर गिरे वो वीर्यसुखको दूर करनेवाला तीनोंदोषोंसे पैदा होताहै ६ ॥

(इन्द्रवृद्धिकेलक्षण*) शोफान्वितापद्मककर्णिकावद्दाहार्तितृष्णारतिमोहदात्री॥ पित्तानिलोत्थापिटिका चिताया तामिन्द्रवृद्धिं कुर्ययंतिवैद्याः ७ (गर्दभिकाकेलक्षण) उन्नतामंडलाकारा शोफयुक्पिटिकान्विता ॥ वातपित्तभवारक्तातांविद्याद्गर्दभींवुधः ८ (पाषाणगर्दभिकाकेलक्षण) हनुसंधिगतःशोथोमंदरुक्कफवातजः ॥ स्थिरःस्निग्धोवुधैर्ज्ञेयः सैवपाषाणगर्दभः ९ ॥

सूजनहो तथा कमलकी कर्णिकाके समान हो दाहपीड़ा तृष्णा अरतिमोह युक्त फुंसीहो वो वातपित्तसे पैदा इन्द्रवृद्धि नाम कहतेहैं ७ जो

*एतन्नस्त्रीणांनभवतिविदेहवचनमव्याख्यानयन्ति यदुक्तम् अत्यन्तसुकुमारांगारजो दुष्टं भवंतिच ॥ अव्यायामवतायस्मात्तस्मान्नखलितिस्त्रिय इति ८ ॥

फुंसी मंडलकेआकार गोलहो ऊंचीहो सूजनकोलिये लालहो उसेवातपित्त से पैदा गर्दभिका कहतेहैं ८ जो फुंसी ठोड़ीकी संधीमें सूजन मंदपीड़ा को लियेहो स्थिरचिकनी वोकफवातसे पैदा पाषाणगर्द भिकाकहतेहैं ६॥

(पनसिकाकेलक्षण) पिटिकाकफवातविकारभवावहुवेदनकृच्छ्रवणोन्तरजा ॥ ज्वरदाहतृषारतिमोहकरापनसामुनिभिर्गदिताकिलसा १० (जलगर्द भिकाकेलक्षण) विसर्प्पवत्सर्पतियोहिशोफोरुजाकरःपित्तविकारजातः॥ ज्वरार्त्तिदाहारतिमोहपूयकृत्परैर्निरुक्तोजलगर्दभोयं ११ (इरिवेल्लिकाकेलक्षण) पिटिकां सर्वदोषोत्थां सर्वचिन्हशिरोगतां॥ वर्तुलांतांविजानीहिवुधत्वंइरिवेल्लिकां १२ ॥

जोफुंसी वात कफके विकारसे पैदा हो और पीड़ायुक्त कानके भीतर हो ज्वर दाह प्यास अरतिमोह लियेहोउसेमुनीश्वर पनसिका कहतेहैं१० जोसूजन पहले थोड़ीहो फिर बिसर्प रोगकीतरह फैलजाय पीड़ाकारकज्वर दाह अरति मोह राधयुहै उसे जलगर्दभिका कहतेहैं वो पित्तके बिकारसे होतीहै ११ जो मस्तकमें फुंसी त्रिदोषसेहो गोलहो और त्रिदोष लक्षण मिलतेहों उसे इरिवेल्लिका कहते हैं १२ ॥

(कखलाईकेलक्षण) कृष्णास्फोटापार्श्व कक्षांसवाहौसंस्थानूनंवेदनादाहयुक्ता॥ कक्षासञ्ज्ञांपित्तकोपाभिजातांजानीहित्वंवैद्यराजोरुजाताम् १३ (गंधमालाकेलक्षण) कक्षाकुक्षिभवामेकां पिटिकाम्पित्तकोपजां॥ त्वग्गतांदाहकृत्कृष्णांगंधमालांचताम्वदेत् १४ (अग्निरोहिणीकेलक्षण) कक्षायांपिटिकोद्भवाज्वरकरादीप्ताग्निदाहप्रदा मांसंभेद्यविनिर्गताःकफमरुत्पित्तोच्छ्रितादारुणाः॥ सप्ताहेदशमेद्दिनेचमनुजंहंतीहनूनंहठात् दस्राद्यैर्भिषजाम्वरैर्निगदिताज्वालामुखीरोहिणी १५ ॥

पसवाड़ोंमें व भुजाके एकदेशमें व कंधाके एक देशमें काला फोड़ाहो और पीड़ा दाहयुक्तहो उसे हे बैद्यराज तू कखलाई जान येपित्तके कोप से होतीहै १३ कांखमें अथवा पसवाड़ोंमें काले रंगका फोड़ाहो त्वचा

में हो दाहयुक्त उसे गंधमाला कहतेहैं येभी पित्तके कोपसे होतीहै १४ कांखमें मांसको विदीर्णकरदीप्त अग्निके समान जो फोड़ाहो ज्वरदाहका करनेवाला उसे अश्विनीकुमारको आदिले वैद्यों ने ज्वालामुखी रोहिणी नाम कहाहै ये रोग मनुष्यको सात या दशदिनमें मारडाले येसन्निपात से पैदाहोतीहै १५ ॥

(विदारिकाकेलक्षण) कक्षायांसंधिदेशेषु विस्फोटोजायते नृणां ॥ विदारीकंदवद्वृत्तः सर्वलक्षणलक्षितः १६ बहुशीर्षाविदी र्णास्या वातपित्तकफोद्भवा ॥ चिरपाकारुणाभेयंप्रोक्तावैद्यैर्विदा रिका १७ (शर्कराऽर्वुदकेलक्षण) मेदःस्नायुशिरामांसं दूष्यवा युर्वहिर्गतः ॥ ग्रंथिंशोष्यामिषंकुर्यात्तंविद्याच्छर्करार्वुदम् १८॥

कांखमें यासंधीनमें फोड़ा विदारी कंदके समान गोलहो और सब ल-क्षण मिलतेहों १६ बहुतसे शिरहों और खुलेमुखकी देरमें पके लालरंग की इसे वैद्योंने विदारिकानाम कहीहै येभी सन्निपातसे होतीहै १७ वात मेदा मांस नस इनमें प्राप्तहो और इनको बिगाड़कर बाहर प्राप्तहो फेर गांठको पैदाकरे और शोषको करै उसे शर्करार्व्वुद कहतेहैं १८॥

शर्करार्वुदरुक्कुर्यात् शर्करासदृशामिषं ॥ शिरास्रावंचदुर्गंधं क्लिन्नगात्रंनिरामिषं १६ (कंदरफुंसीकेलक्षण) कंटकैःशर्करैःपादे संक्षतेग्रन्थिरुद्भवा ॥ कीलवद्वद्ध तेनित्यं तंविद्यात्कंदरंवुधैः २० (विवांईकेलक्षण) अतिक्रमणशीलस्यपादयोरुक्षयोर्महत् ॥ दा रीचकुरुतेकोपात् तंविद्यात्तलसंश्रितं २१॥

शर्करार्वुद रोग मांसको शर्कराके समान करदे और नस चुचावे तथा दुर्गंध युक्तहो शरीरस्वेदित और मांसरहित करदेवहै १६ कांटे व कंकरीके पैरमें लगनेसे जो गांठ पैदाहो और कीलकी तरह बढ़े उसे कन्दर नाम कहतेहैं२० जो मनुष्य बहुत डोलाकरै उसके पैरोंमें रुखापनहो औरपैर कीयेंड़ी फटजाय उसे तलसंश्रित कहतेहैं २१ ॥

(खारूराकेलक्षण) दुष्टकर्दमसंस्पर्शात् पादांगुल्यांतरेवहुः ॥ कंडूसुखासिदाहार्तिशोथयुक्तोऽलसंविदुः२२ (इन्द्रलुप्तकेलक्षण)

रोमाणांकूपमध्येषुवातपित्तौविनिर्गतौ॥मूर्च्छितौतत्ररोमाणांतौप्रा
च्यावयतेहठात्२३श्लेष्मासृग्रोमकूपांस्तुरुणद्धिपरितोभृशं॥ व
ध्नात्युत्पत्तिमन्येषामिंद्रलुप्तन्तमादिशेत् २४ ॥

दुष्टकीच पैरकी उंगलियोंमें लगनेसे सूजनहो और खुजानेसे सुखहो दाह और पीड़ाहो उसे अलसनाम अर्थात् खारुश कहते हैं २२ रोमकूपसे वात पित्त निकल कर बालों को मूर्च्छित कर हठसे दूरकरदेवै २३ फेर कफ और रुधिर बाल जमनेके स्थानको रोंकदे बाल उगने नहीं दे उसे इन्द्रलुप्त कहते हैं २४ ॥

इन्द्रलुप्तस्यनामानिप्रोक्तानिभिषजाम्वरैः ॥ खालित्यमपरारु
ह्याप्राहुश्चार्चेतिचापरे २५(अरुंषिकाकोलक्षण) अतिरुक्षतमेशी
र्षे वहुकडुसमन्विते ॥ जांयतेदारुणोरोगः कफमारुतरोगतः २६
अत्यंतश्रमकोपाभ्यांजातंपित्तंचमूर्द्धनि ॥ तेनपक्काःकृताःकेशाज्ञेया
निपलितानिच २७ ॥

इन्द्रलुप्तके ये नाम और भी वैद्य कहते हैं खालित्य और रुह्या तथा चांदली ये रोग स्त्रीके नहीं होता २५ केश पैदा होने की भूमिमें खुजली चलै और वह जगह रूखी होजाय उसके वात कफसे अरुंषिका दारुण रोगहो २६ अति श्रम औरक्रोधसे पित्तशिरमें प्राप्तहोकर बालोंको सपेद करदेताहै २७ ॥

(मुखदूषिकाकेलक्षण) कफानिलाभ्यांसहशोणिताभ्यां यू
नांशरीरेपिटिकाभिजाता॥ दाहार्तिकृत्कंटकतीव्रवेधीबुधैर्निरुक्ता
मुखदूषिकासा २८ (तिलकेलक्षण) तिलप्रमाणानिचनीरुजा
नि स्थिराणिगात्रेषुसमुद्भवानि ॥ कृष्णानिपित्तानिलकोपजानि
तिलानितानिप्रवदंतिसंतः २९ (मस्सेकालक्षण) दृढोन्नतंपित्त
कफानिलोत्थंमाषप्रमाणंपलग्रन्थिरूपं ॥ कृष्णांस्थिरंनीरुजव
द्विपाकंतंमाषसंज्ञङ्कथयन्तिवैद्याः ३० ॥

वात कफ और रुधिरके कोप से जवान पुरुषों के जोफुंसी मुखपरहो दाह और पीड़ा तथासेमलके कांटेकेसमान उसेमुखदूषिका अर्थात् मुहां-

सेकहतेहैं २८ तिलके समान पीडारहित स्थिर देहमें जोकाला दागहो उसे वात पित्तसे पैदातिलनाम कहतेहैं २९ दृढ़ औरऊंचा तथा उड़द के समान मांसकी गांठकाली औरपीड़ा तथा पाकरहितहो उसे वैद्य मस्सा कहतेहैं ३० ॥

(न्यच्छकोलक्षण) गात्रोत्थंमंडलंकृष्णंशितम्वामहदल्पकं ॥ नीरुजंकफजंविद्यात्तंरुजंन्यच्छसंज्ञकं३१ (व्यंगअर्थात्झांईकेलक्षण) कोपश्रमाभ्यांकुपितोऽनिलोनिशमाश्रित्यंवक्त्रम्वितनोतिमंडलम् ॥ कृष्णंमुखोत्थंतनुनीरुजंभृशंव्यंगंरुजंतंप्रवदंतिसाधवः ३२ (नीलिकाकेलक्षण) उष्मणासहितोवायुर्वहिरागत्यकोपतः ॥ विदधातिमुखेछायांनीलिकांतांविदुर्बुधाः ३३ ॥

शरीरमेंकाला वा सपेद मंडल छोटा वा बड़ाहो औरपीड़ा रहितहो उसे लहसन संज्ञककहतेहैं ३१ कोपऔरश्रमसे कुपितहुये वात पित्त सो मुखमेंप्राप्तहो मंडलको करैहैं और वोकालाहो पीड़ा रहित उसे महात्मा व्यंगरोग कहतेहैं ३२ गर्मीके साथ पवन कोपहो बाहर निकल मुखपर जो छाया करदे उसेपंडित नीलिका कहतेहैं ३३ ॥

(कर्णिकाकेलक्षण) संमर्दनात्पीडनतोभिघातान्मेढ्रस्यचर्मानुगतोहिवातः ॥ मणेरधस्तात्प्रकरोतिकोशंग्रंथिंचविंद्यात्किलकर्णिकांतां ३४ (अवपाटिकाकेलक्षण) नखाभिघाताद्युवतीप्रसंगादुद्वर्तनाद्वीर्यगतेःप्ररोधात् ॥ संपीडनाद्यस्यचचर्मपाट्यतेबुधैर्निरुक्ताकिलपाटिकासा ३५ (निरुद्धप्रकाशरोगलक्षण) श्रोतांसिमूत्रस्यरुणद्धिवातोमणिस्थितोवीर्यगतेर्निरोधात् ॥ मूत्रंप्रवर्त्ततमणिंविदीर्यविंद्यान्निरुद्धप्रकशंहिवैद्यैः ३६ ॥

मसलनेसे वा पीड़ासे अथवा चोटलगनेसे अंडकोशकी चर्ममें प्राप्तभई बात सो कुपितहो सुपारीके नीचे गांठको पैदाकरै उसे कर्णिका कहतेहैं ३४ नखके लगनेसे अथवा जिसस्त्रीकी योनि छोटीहो उससे संगकरनेसे उबटनेसे वीर्यकी गतिरोकनेसे लिंगेन्द्रीके मीचनेसे लिंगकी चाम उतर जाय उसे पंडित अवपाटिका कहतेहैं ३५ वीर्य्यकी गति रोकनेसे लिंग

की सुपारी बीचस्थित जोबात सो मूत्रके मार्गको रोकदे फेर मूत्र सुपारी को खेदकरता उतरै उसे बैद्य निरुद्धप्रकाशरोग कहतेहैं ३६ ॥

(सन्निरुद्धगुदकेलक्षण) अपानवातस्यगतेर्विघातात्प्रकुप्यवातोविहितोगुदस्थः ॥ रुणद्धिमार्गंकुरुतेतिसूक्ष्मंद्वारंचविंद्यात्किल दुस्तरंतत् ३७ (गुदभ्रंशरोगकालक्षण) निर्गच्छन्तिवहिर्गुदाःकृशतनोरुक्षाशिनोरागिणो तीसारेणयुतस्यतंमुनिगणाः प्राहुर्गुद-भ्रंशकं ॥ (शूकरदंष्ट्ररोगकालक्षण) त्वक्पाकोवहिर्निर्गतःकिल गुदः कंडूधरोदाहकृद्रोगः शूकरदंष्ट्रकोमुनिवरैः प्रोक्तोज्वरार्त्तिप्रदः ३८ (वृषणकच्छुरोगकेलक्षण) वृषणस्थंमलंस्वेदात्कंडूस्फोटंवितन्वते ॥ संश्रावंकफपित्तोत्थंविंद्याद्वृषणकच्छुरं ३९ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रे क्षुद्ररोगाणांनाना प्रकाराणांलक्षणम् ॥

अपान बातकी गति रोकनेसे कुपितहुई गुदाकी पवन सो गुदाके मार्ग को छोटा करदे उसे दुस्तर रोग कहतेहैं ३७ कृशदेहवाले पुरुषकी तथा रूखा खानेवालेकी तथा अतीसारवाले पुरुषकी गुदा बाहर निकल आवे उसे गुदभ्रंश रोग कहतेहैं जिसकी गुदा बाहरनिकसि आवै और त्वचा पकजाय उसजगह खुजली चलै तथा ज्वर पीड़ा दाहहो उसे मुनीश्वरों ने शूकर दंष्ट्र रोग कहाहै ३८ अंडकोशों के नहीं धोनेसे मैल जमजावे तब उस जगहपसीना आवे और खुजली चलै और खुजानेसे फोड़ा होजावे और वो श्रवै उसे वृषणकच्छु रोग कहते हैं ये रोग कफ पित्तसे होताहै ३९ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांक्षुद्ररोगनिदानम् ॥

(अथमुखरोगलक्षणं) ओष्ठौमारुतकोपतोतिपरुषौस्तब्धौमहावेदनौभिद्येतेदलसंयुतौमुनिवरैःप्रोक्तौच वातात्मकौ ॥ रक्तौष्ठौखरदाहपाकपिटिकायुक्तौचतौपित्तलौ ॥ कृष्णौपिच्छिलशोफशीतपिटिकापीडान्वितौश्लेष्मलौ १ (सन्निपातजनितओष्ठलक्षण) नानावर्णधरावोष्ठौनानारोगसमन्वितौ ॥ पिटिकाभिर्युतौस्थूलौविज्ञेयौ सान्निपातिकौ २ (दंतरोगनिदानम्) आवृत्यदंतान्परितोपिरक्तंप्रव

त्तेतेदन्तपलंविशीर्यंते ॥ सक्लेदद्दुर्गंधयुतंचकृष्णांशीतोदसंज्ञःकफ रक्तजोयम् ३ ॥

प्रथमओठकेरोगकहतेहैं ॥ बादीसे ओठ कठोर और टेढ़े तथा पीड़ायुक्त और फटजाय ऐसे मुनीश्वरोंने कहाहै और लाल करड़ेदाह युक्त और पकजावें पोड़िकायुक्त हों उनको पित्त के कोपसे जानना और काले तथा गाढ़े सूजन युक्त शीतल पिड़िका युक्त तथा पीड़ायुक्त ऐसे लक्षणोंसे कफ का ओठमें रोग जानना १ जिनका अनेक प्रकारका वर्ण हो और अनेक रोगयुक्त हों पीड़िका और मोटेहोंऐसाओठोंकारोग सन्निपात का जानना२ दांतों में प्राप्त हो और रुधिर निकाले और दांतोंमें जो मांस उसको दांतोंमें छुड़ाय दे तथा क्लेद और दुर्गंध युक्त हो तथा काला हो वो कफ रुधिरसे पैदा शीतोद संज्ञक दांतरोग जानना ३ ॥

(दंतपुप्पुटरोगकेलक्षण)मध्येपुत्रिषुदंतेपुनीरुक्शोफःप्रजायते॥ दंतपुप्पुटकोरोगोगदितोभिषजांवरैः ४ (दंतवेशरोगकेलक्षण)रच यतिबहुशोफंदंतमुत्पाटनायपचयतिकिलमांसंदंतसंलग्नजातं ॥ व्यथयतिमुखदेशंश्रावयत्याशुरक्तं कफपवनविकारात्सम्भवोदंतवेशः ५ (सौषिरनामदंतरोगलक्षण) लालाश्रावीमहातापीदंतमूलेषुशोफवान् ॥ सौषिराख्योहिविज्ञेयोरोगोरक्तसमुद्भवः ६ ॥

जो मध्य के तीन दांतोंमें पीड़ा रहित सूजन हो उसे दंत पुप्पुटरोग कहतेहैं ४ जो दांतों के उखाड़ने के लिये सूजन को प्रगट करै औरदांत के संलग्न मांस को पृथक् करै और मुखमें पीड़ाकरै रुधिर श्रवै उसे बात कफसे पैदा दंत वेश नाम रोग कहतेहैं ५ लार टपका करै महा तापहोय दांतोंकी जड़में सूजन हो वो रुधिर से पैदा सौषिर नामक दंत रोगहै६ ॥

(महासौषिरदंतरोगलक्षण) दंतानावेष्टयस्तालुंदारयेच्चविसर्प्पवत् ॥ नानाव्याधिकरंविद्यात्तंमहासौषिरंरुजं ७ दंतसंलग्नमांसानिविदारयतिशोणितं ॥ निष्ठीवयतियःपित्तादसृक्परिपरोहिसः ८ (शोफकशदंतरोगकेलक्षण) दंतानापीड्ययोरोगश्चालयेत मुहुर्मुहुः ॥ पित्तरक्तकफोद्भूतोज्ञेयःशोफकशोबुधैः ९ ॥

जो दांतों को टक कर और विसर्प रोग कीसी तरह तालुये को विदीर्णकरै और नानाप्रकार के रोग युक्त हो उसे महासौषिर दंतरोग कहते हैं ७ जो दांतसे लगे मांस को विदीर्ण करै और रुधिर मुखसे गिरै वो पित्तसे पैदा असृक् परिदर दंतरोग जानना ८ जो दांतोंको पीड़ाकरै और बारबार चलाय मान करदे पित्त कफ और रुधिर से पैदा सो शोफकरोग जानना ६ ॥

(वैदर्भरोगकेलक्षण) वैदर्भरोगः कथितोभिघातजःसरक्तपित्तानिलकोपसंभवः॥संपीड्यदंतान्परिचालयत्यलंक्कचित्क्कचिच्छ्रावयतीवशोणितं १०(करालनामदंतरोगलक्षण)वायुर्दंतांतरे दंतान्कुरुतेतीव्रवेदना॥ वर्द्धतेविकटान्रुक्षान्सकरालोविधीयते११(अधिकमांसरोगकेलक्षण) हनुगतदशनेकिलपश्चिमेधिकतरार्त्तिकरेवहुशोफवान् ॥ कफकृतःपवनेनयुतोनिशं मुनिवरैर्गदितोधिकमांसकः १२ ॥

वैदर्भ रोग चोटके लगने से रुधिर से वात और पित्त के कोपसे दांतों में पीड़ाकरै और चलाय मान करदे और कभी कभी रुधिर भी मुखसे गिरै १० बादी दांतोंके अन्दर दांत को पैदा करै और उनमें दर्द हो तथा वे टेढ़े हों रूखे हों और बड़े वो कराल नाम दंतरोग कहाहै ११ ठोड़ी के पश्चिम देशमें दांत पैदा हो और उसमें पीड़ा अधिक हो और सूजन हो वो वात कफसे पैदा मुनीश्वरोंने अधिक मांसरोग कहाहै १२ ॥

(कीटदंतरोगकेलक्षण) दंतेदंतेकृष्णाछिद्रंकरोतिलालाश्रावीचंचलोदुष्टगंधिः॥ पीडायुक्तःशोफसंरंभकारीप्रोक्तोवैद्यैःकीटदंतःसरोगः१३ (भंजनकदंतरोगकेलक्षण) योदंतभंगंकुरुतेहिवक्त्रे पापात्मनांभोजनदुःखितानाम्॥ वातेनजातःकफमिश्रितेनजानीहितंभंजनकंहिवैद्य १४ (दंतविद्रधिरोगकेलक्षण) दंतसंलग्नजंमांसंमलाढ्यम्वहुशोफयुक्॥ रक्तपूयाश्रयंक्लिन्नंतंविद्याद्दंतविद्रधिं १५ ॥

दांतदांतमें काले छिद्र करदे लारटपके चंचल और दुष्ट गन्धआवे पीड़ा और सूजन को बढ़ावे वो वैद्योंने कीट दंतरोग कहाहै १३ पापी मनुष्यों

के मुखसे दांतों को उखाड़डाले इसीसे भोजन करनेमें दुःखित हो वो बादीसे और कफसे प्रगट ऐसा भंजनक नाम दंतरोग जानना १४ दांतोंसे मिलाहुआ जोमांस उसमेंमैल बहुतहो और सूजनहो तथारुधिर राधस्रवै वोदतविद्रधि रोग जानना १५ ॥

(दंतहर्षरोगकेलक्षण) शीतवाताम्लसंस्पर्शाद्दंतपीडासहोग दः॥दंतहर्षःसविज्ञेयोवातपित्तसमुद्भवः१६ (दंतशर्करारोगकेलक्षण मलोदंतगतःस्थूलःशर्करेवचिरस्थितः॥कफाद्भूतावुधैर्ज्ञेयःसारुजा दंतशर्करा १७ (दंतश्यावरोगकेलक्षण) दंडादीनांविघाताद्वाको पाच्छोणितपित्तयोः॥ प्राप्नोतिकृष्णतांदंतोदंतश्यावोरुगुच्यते१८ इतिश्रीभिषचक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेओष्ठदंतरोगलक्षणम् ॥

शीतल बात खट्टी ऐसीवस्तुके स्पर्श से जोदांतोंमें पीड़ाहो वोबातपित्त से प्र..तदंत हर्ष रोग जानना १६ दांतोंमें मैलबहुत शर्कराकीसी तरहरहै वो पण्डितोंने शर्करारोग कहाहै १७ दंड आदि चोट लगनेसे और रुधिर पित्तके कोपसे जोकालेदांत पड़जायँ उसे दन्तश्यावरोगकहतेहैं १८ इति माथुरदत्तरामकृतेहंसराजार्थबोधिनीभाषाविवर्णेओष्ठदन्तरोगलक्षणम् ॥

(अथजिह्वारोगनिदानम्) वातेनस्फुटिताकठोररसनारुक्षा प्रसुप्तार्त्तिदा पित्तेनोष्णतरार्त्तिदाहसहितादीर्घारुणैःकंटकैः॥ संयुक्ताचकफेनसागुरुतरामांसोत्थितैरंकुरैः श्वेतैःशाल्मलिकंटकाकृतिधरैर्युक्तातिशोफान्विता १ (उल्लासनामजिह्वारोगलक्षण) जिह्वातलेमहाशोथोगुरुग्रंथियुतोदृढः॥ पूयशोणितयुक्पाकःसोल्लासःकथितोबुधैः २ जिह्वाग्रमानम्यकरोतिशोथंलालान्वितंतीव्रविपाकमुग्रं ॥ कंडूयुतंरक्तकफाधिशूलंरुक्शोफजिह्वाकथिता भिषग्भिः ३ ॥

बादीसे जीभ कठोर और फटी तथारूखीप्रसुप्त पीड़ायुक्त होतीहै पित्त से गरम दाहयुक्त बड़े औरलालकांटेन युक्त जाननी कफसे भारी सफेद सेमरके कांटे सरीखे कांटे और सूजन युक्त होतीहै १ जीभके नीचे सू-

जन बहुत हो तथा भारी और कठिन गांठहो रुधिर औरराध युक्त हो वो पक जाय उसे उल्लासनाम जीभका रोगकहतेहैं २ जीभके अगभागमें सूजन हो और लारगिरै बहुत पके तथा खुजलीचलै और रुधिर कफसे मूल ज्यादह हो वो शोफ जिह्वानाम रोग कहाहै ३ ॥

तालुमूलोत्थितःशोथःकासश्वासतृषान्वितः ॥सव्यथःकफरक्तात्माकंठतुंडःसकथ्यते ४ तालुकोशगतःशोथश्चिरपाकीज्वरान्वितः॥दाहार्तिकाशकृत्स्त्रावीतुंडकेशीसउच्यते५ (कच्छपरोगकेलक्षण) कूर्माकारःप्रोन्नतस्तालुदेशेशोथःसोक्तःकच्छपोवैद्यराजैः ॥ रक्ताज्जातोरक्तवर्णोज्वराढ्यःस्तब्धःशोफःकोलमात्रःकफात्मा ६ ॥

औरजो तालुयेके मूलमें सूजन खांसी श्वास युक्त तथा प्यासके संयुक्त हो और दर्द होताहो वोकफ पित्तसे पूगट तुंडनाम रोग कहाहै ४ जोतालु के कोशमें सूजनहो और देरमें पके ज्वर युक्त और उसमें खांसी दाहपीड़ा हो स्रवै उसे तुंडकेशी रोग कहतेहैं ५ तालुयेमें कछुयेके आकार ऊंची सूजनहो उसको वैद्योंने कच्छप नाम रोग कहाहै रक्तसे पैदा भया और लाल वर्ण तथा ज्वरयुक्त टेढ़ा और सूजनहो बेरके पूमाणवो कफसे पैदा जानना ६ ॥

(तालुपाकतालुशोषलक्षण) पित्ताज्जातंशोथमुग्रंसदाहंतृष्णायुक्तंतालुपाकंवदेद्ज्ञः ॥ वाताद्भूतःश्वासकासार्तिशोषै र्युक्तःशोथस्तालुशोषोभवेत्सः ७ इतिश्रीभिषकक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेजिह्वातालूनांलक्षणानि ॥

सूजन औरदाह तथाप्यासहो उसे पण्डित तालुपाक रोग कहतेहैंयेपित्तसे पैदा होताहै और जिसमें श्वास खांसी शोष और सूजनहो वोवातसे पैदा तालु शोष रोगहै ७ इति माथुरदत्तरामपाठकपूणीतायांहंसराजार्थबोधिनीटीकायांजिह्वातालुरोगनिदानम्समाप्तम् ॥

(गलरोगस्यनिदानम्) पित्तश्लेष्मशरीरिणांगलगताःसंदूष्य रक्तामिषं तेतत्रैवविमूर्च्छिताःप्रकुपिताःकुर्वंतिनानागदान् ॥ मांसोत्थैःकठिनांकुरैश्चपरितोरुंधंतिकंठानिलं प्राणानाशुविकर्षयंति

मुनिभिःसारोहिणीप्रोच्यते १ (वातरोहिणीकेलक्षण) चिन्हानि वातरोहिण्यागलेमांसभवांकुरा ॥ ज्वरार्त्तिकारिणीतीव्राशोषिणी कंठरोधिनी २ (पित्तरोहिणीकेलक्षण) मांसांकुरागलोत्पन्ना दाहिनस्तीव्रवेदनाः ॥ सूक्ष्मत्वचस्त्वरापाकाश्चिन्हैःस्यात्पित्त रोहिणी ३ ॥

मनुष्योंके वात पित्त कफ गलेमें प्राप्त हो रुधिर और मांस को बिगाड़फेर आप दुष्ट हो नानाप्रकारके गलेमें रोग करतेहैं और मांस से प्रगट भये जो कठिनअंकुर उनसे कंठको रोक तथा श्वास को रोकदे औरप्राण को निकाल दे उसे रोहणी नाम कंठ रोग कहते हैं १ वातरोहिणी के येलक्षणहैं गलेमें मांस के अंकुर हों सो ज्वर और पीडा शोष तथा कंठको रोकदे २ मांसके अंकुर जोहों उनमेंदाह और तीव्रपीडा छोटे जल्दीपके ये पित्त रोहिणी के लक्षणहैं ३ ॥

(कफरोहिणीकेलक्षण) मांसांकुरैःस्थूलतरैरपाकैःकंठांतरोत्थैः कठिनैरवेदनैः ॥ दीर्घैःस्थिरैःकंडुरशोथवद्भिर्ज्ञेयाभिषग्भिःकफरोहिणीसा ४ (रुधिरकीरोहिणीकलक्षण) कंठांतरोत्थैःपिटिकैरुजान्वितैःसूक्ष्मैःसशोथैर्गलरोगकारकैः॥ श्वासार्त्तिकासज्वरदाहमोहैः ज्ञेयाबुधैरक्तभवाचरोहिणी ५ (कंठशालूकरोगकेलक्षण) कंठे जातंग्रन्थिरूपंकफोत्थं साध्यंशास्त्रैःकोलमज्जासमानं॥ स्थैर्यंकंडूशोफयुक्तङ्कठोरंविज्ञेयंतंकंठशालूकरोगम् ६ ॥

मांस के अंकुर गलेमें मोटेहों पकेंनही तथा कठिन पीडारहित लंबेहों स्थिरहों खुजली सूजन रहित वो बैद्योंने कफरोहिणी कहीहै ४ कंठमें अंकुर छोटेहों और उनमें पीड़ा हो और सूजन तथा गलेके रोगों कोप्रगट करनेवाले श्वास पीड़ा खांसी ज्वर दाह मोहयुक्तहो उसेरुधिरकी रोहिणी रोग कहते हैं ५ कोलकी मज्जा अर्थात् बेरकी गुठली के समान कंठमें गांठ पैदा हो वो कफसे प्रगट साध्य है स्थिर वो खुजली सूजन कठोर ये कंठशालूक रोगके लक्षण कहे हैं ६ ॥

(अधिजिह्वारोगकेलक्षण) शोथोजिह्वाग्रभागस्थःपाकरक्त

कफोद्भवः जिह्वाग्रं शोमहोग्रार्त्तिरधिजिह्वोविधीयते ७(बलासाक्षरोगकेलक्षण) श्लेष्मानिलौगलेशोथंकुरुतःश्वाससंभवं ॥ मर्मच्छिद्रं गुरुस्थूलंवलासाक्षंविदुर्बुधाः ८ (नाशाशतघ्नीरोगकेलक्षण) वर्त्तिर्गलस्थावहुवेदनान्विताः मांसांकुरस्थापरिकंठरोधिनी ॥ दोषैर्युताप्राणहरीसकंटकानाशाशतघ्नीपरिकीर्त्तितावुधैः ९ ॥

जिह्वा के अग्रभाग में सूजन हो पके जीभ को स्तम्भन करदे बहुत पीड़ा हो उसे रुधिर कफसे प्रगट अधिजिह्व रोग कहाहै ७ कफ और बात गलेमें सजन करे तथा श्वास और मर्मस्थानमें छिद्र तथा मोटा औरभारी हो उसेबलासाक्ष रोगकहाहै ८ उसे पंडितोंने नाशाशतघ्नीरोगकहा है जिसमें पीड़ायुक्त गलेमें बत्तीसी हो तथा मांसके अंकुरनसे कंठ रुकाहो दोषों से परिपूर्ण हो प्राण के हरनेवाली कांटे युक्त हो ९ ॥

(गलार्बुदरोगकेलक्षण) ग्रंथिर्गलस्थोवदरप्रमाणोनीरुक्स्थिरोऽसाध्यतमःकफात्मा ॥ प्रोक्तोगलायुर्मुनिभिःकदाचित्तुरोगंसपक्षंपरितोनपश्येत् १०(बलविद्रधिरोगकेलक्षण) शोथःसर्वंगलंव्याप्य वर्द्धतेवहुरोगवान् ॥ त्रिदोषोत्थोमहान्वैद्यैःसज्ञेयोबलविद्रधिः ११ (गलौघरोगकेलक्षण) शोथोगलस्थोवहुरूपधारीकंठावरोधीगलदाहकारी ॥ श्लेष्मासृगुत्थोबलवीर्यहारी प्रोक्तोगलौघोमुनिभिर्विकारी १२ ॥

गलेमें गांठ बेर के समान हो पीड़ारहित स्थिर हो तो असाध्य कहा है ये कफसे प्रगट होताहै पक्षउपरांत नहीं रहै १० जो सूजन सबगलेमें व्याप्तहो फिर बढ़ै और बहुतसे रोगयुक्तहो उसे सन्निपातसे प्रगट बलविद्रधि रोगकहाहै ११ अनेक प्रकारकी सूजन गलेमेंहो और कंठको रोकनेवाली तथा गलेमें दाहके करनेवाली और बल वीर्यका नाशक कफ रुधिरसे पैदा गलौघनाम रोग मुनीश्वरोंने कहाहै १२ ॥

अतिसूक्ष्मतरावदनांतरगाःपरितःखचितामुखतोदकराः ॥ पवनस्यविकारभवावहुधापरिपाकयुतासितभाज्वरदा ॥ १३ अरुणाद्युतयोमुखमध्यभवास्तनुरूपधराबलवीर्यहराः ॥ वदनार्त्ति तृषाज्वर

दाहकराःपिडिकाःकिलपित्तभवाभणिताः १४ चिरपाकयुताविरुजाकठिनाःकफकोपविकारभवामुखजाः॥ गुरवोल्पमसूरदलाकृतयःखरकंडुरदामुखपाककराः १५ ॥

बहुत छोटीफुंसी मुखके भीतर पैदाहोयँ और मुखमें पीड़ाकरें तथा सपेद और ज्वरके करनेवाली और पकनेवाली येवातके बिकारसे पैदा होतीहैं १३ लालरंगकी फुंसी मुखमेंहों छोटी तथा बलवीर्यकी नाशक मुखमें पीड़ाकरें तथा प्यास ज्वर दाहको करें वो पित्तके बिकारसे पैदा होतीहैं १४ जोफुंसी देरमेंपकें पीड़ाहो यानहीं कठिन और मसूरकेदाल कीसमानहों तीखी खुजलीचलै और बड़ीहों तथा मुखके पाककरनेवाली ये कफके बिकारसे होतीहैं १५ ॥

पित्तशोणितकोपेनमुखपाकोभिजायते॥ उष्मारतिव्यथादाहज्वरशोषतृषार्त्तिकृत् १६ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेगलमुखरोगाणांलक्षणानि॥

पित्त और रुधिरके कोपसे मुखपाक होताहै वो गरमी तथा अरतिपीड़ा दाह ज्वरशोष प्यास इनका करनेवाला होताहै १६ इतिमाथुरदत्तरामपाठकप्रणीतहंसराजार्थबोधिनीटीकायांगलमुखरोगनिदानसमाप्तम् ॥

(अथकर्णरोगनिदानम्)वातःप्रचंडःस्वगतिंनिरुध्यश्लेष्मान्वितोवक्रगतिंविधाय॥ कर्णांतरेपीडयतीवकोपात्तत्कर्णशूलंकथितंभिषग्भिः १ (कर्णनादकेलक्षण) कर्णःश्रोतांसिसंवेष्ट्यसंभ्रमन्मारुतोबली॥ करोतिविविधान्शब्दान्कर्णनादःसकथ्यते २ श्रोतांसिकर्णयोर्यस्यवहंतिश्लेष्ममारुतौ॥ समनुष्योल्पकालेनबधिरस्त्वप्रजायते ३॥

प्रचंड जोबात सो अपनी गतिको रोक और कफके संगहो टेढ़ीगतिसे चलै और कानमें पीड़ाकरै उसे बैद्य कर्णशूल कहतेहैं १ प्रबल जोबात सो भ्रमणकर्त्ताभया कानोंके छिद्रों को बंदकर और अनेक प्रकारके शब्द करै उसे कर्णनाद कहतेहैं २ जिसके कानमें बात और कफ प्राप्तहो वो मनुष्य थोड़ेही कालमें बहिराहो ३॥

(शब्दक्ष्वेडकेलक्षण)पित्तश्लेष्मान्वितोवायुःकर्णरन्ध्रेषुसंस्थितः ॥ करोतिगुंजवत्शब्दंसशब्दःक्ष्वेडउच्यते ४ (श्रावगदरोगकेलक्षण) जलस्यपातात्श्रुतिरन्ध्रमध्येशस्त्रादिकैर्वाशिरसोभिघातात् ॥ वातार्दितोयःश्रवणःसरक्तंपूयंश्रवेत्श्रावगदोनिरुक्तः ५ (कर्णगूथरोगकेलक्षण) वातेरितःकफःकुर्यात्कंडूश्रवणयोर्द्वयोः ॥ श्लेष्मापित्तोष्मणाशुष्कःकर्णगूथःसजायते ६ ॥

पित्त कफयुक्त जोवात सो कानोंके छिद्रमें स्थित होय तब मनुष्यके कानोंमें गुंजार शब्दहो उसे शब्द क्ष्वेडरोग कहतेहैं ४ कान में जलके पड़नेसे तथा शस्त्रआदिके लगनेसे अथवा शिरमें चोटके लगनेसे बातसे पीड़ित कानमेंसे जोरुधिर और राधनिकले उसे श्रावगद रोगकहतेहैं ५ बातकरके प्रेरित जोकफ सोदोनों कानमें खुजली पैदाकरै और पित्तकी गर्मीसे कफशुष्क होजाय तब कर्णगूथ रोग पैदाहो ६ ॥

(प्रतीनाहकेलक्षण) सकर्णगूथोद्रवतांयदानयेत्पुनश्चतत्रैव विलीयतेनिशं॥ मुखंचनाशांसपुनःप्रपद्यतेबुधैःप्रतीनाहमिहोच्यतेतत् ७ (कृमिकर्णरोगकेलक्षण)श्लेष्मामूर्च्छांगतःकर्णेजंतूंश्चसृजतेबहून्॥ शिरोर्द्धंकुरुतेपीडांकृमिकर्णोबुधैःस्मृतः ८ श्रवणेश्लेष्मणापूर्णेसंप्रविश्येवमक्षिका ॥ जंतूंश्चश्रवतेशीघ्रं कृमिकर्णोविधीयते ९ ॥

वोही कर्णगूथ रोग पतलाहोकर फेर जातारहै फेरमुख और नाकमें पैदाहो उसे बैद्योंने प्रतीनाह रोगकहाहै ७ कफकानमें मूर्च्छितहो बहुत कृमि पैदाकरै और आधे मस्तकमें पीड़ाहो उसे कृमिकर्ण रोग कहाहै ८ कफसे परिपूर्ण कानमें मक्खी प्रवेशकर कीड़नको पैदाकरै उसकोभी कृमिकर्णरोग कहतेहैं ९ ॥

पतंगोवाथवाकीटःप्रविश्यश्रवणांतरे॥ नराणांकुरुतेपीडांव्याकुलंक्षतसंचयं १० कीटःप्रविश्यकर्णांतेकिल्लीस्फोटयतेनिशं ॥ विद्रधिंकुरुतेशीघ्रम्बधिरत्वंप्रकल्पयेत् ११ (कर्णपाकरोगकेलक्षण) कर्णस्यमध्येपिटिकाब्जकर्णिकाकाराकृतिस्तोदतृषाज्वरानि

ता॥शोपोल्पपाकःपवनात्मकोयंप्रोक्तोभिषग्भिःकिलकर्णपाकः १२

पतंग अथवा कीड़ा कानमें प्रवेशकर मनुष्यको पीड़ितकरै तथा कान मेंघावकरदे १० कीड़ाकानमें धसकर किल्लीमारै वो विद्रधि और वहिरापना करदे ११ कानमें फुंसी कमल कर्णिकाके आकार पैदाहो तथा पीड़ा तृषा ज्वर शोषथोड़ा पाकयुक्तहो वोबातसेपैदा वैद्योंनेकर्णपाकरोगकहाहै १२ ॥

(पित्तकर्णपाककेलक्षण) कर्णांतरेकोशविदीर्णकारीदाहार्त्ति क्लेदस्यविकारधारी ॥ वैकल्यकृद्वीर्यबलोपहारीपित्तात्मकोयंकिल कर्णपाकः १३ (कफकर्णपाककेलक्षण) स्थूलत्वक्कर्णविस्फोटकं डूशोषार्त्तिपाकवान् ॥ पूयश्रावीमहाक्लेदीकर्णपाकःकफात्मकः १४ क्षतोत्पाटनात्कर्णपाकेंवुपूर्णात्भवेद्विद्रधिःकर्णविध्वंसकारी ॥ महारुक्करोर्तिप्रदोदीर्घशोफंमुहुःश्रावदुर्गंधकृत्कष्टपाकी १५ ॥

जोफुंसी कानकेभीतरी झिल्लीकोफोड़कर दाहपीड़ा क्लेदयुक्त वेकली करै तथा बीर्यबलका नाशकरै उसे वैद्योंने पित्तका कर्णपाक कहाहै १३ स्थूल त्वचा और कानमें फूटन खुजली शोष पीड़ा पाकयुक्तहो राधनिकले महाक्लेदयुक्त उसेवैद्य कफका कर्णपाक रोग कहतेहैं १४ कानमें घावहो-गयाहो उसपरसे खुंड उखाड़नेसे तथा कर्णपाकमें पानीकेपड़नेसे कान में विद्रधि रोग कानका बिध्वंस करनेवाला पैदाहोताहै उसमेंपीड़ा और सूजन तथा श्राव और दुर्गंध और कष्टसेपकै येलक्षण होतेहैं १५ ॥

(वातपूतिकर्णरोगकेलक्षण) पूयंश्रवेद्यःश्रवणोथपूर्तिविस्फोटपीडारतिगुंजघोषः ॥ शोषार्वुदैर्युक्ज्वरशूलयुक्तःवातात्मकोयंखलुपूतिकर्णः १६ (पित्तपूतिकर्णकेलक्षण) अत्यंतदाहोवहुतीव्रवेदनानित्यंश्रवेद्यःश्रवणोतिपूतिः ॥ पूयंचपीतंपरिपित्तजोयंप्रोक्तोभिषग्भिःकिलपूतिकर्णः १७ (कफपूतिकर्णकेलक्षण) कर्णश्रवंपूयमुग्रंसपूर्तिंशोथःस्निग्धःक्लेदवैश्रुत्यकंडूः ॥ शुक्रस्थैर्यंश्लेष्मजंदीर्घपाकंविंद्याद्रोगंपूतिकर्णंनितांतम् १८ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकर्णरोगलक्षणानि ॥

जिसमेंसे राधबहै कानमें पूति तथा फूटन पीड़ा अरति गुंजारहोनां शोष अर्बुद ज्वर शूल इनकरके युक्तहो वो बातको कर्णपूत रोग कहाहै १६ जिसमें दाहतीव्र दुःखनित्यहो कानमें राधश्रवै तथा राधपीली निकसै उसेवैद्योंने पित्तकाकर्णपूति रोगकहाहै १७ कानमेंसे पीब बासकेसाथ निकले तथा चिकनी सूजन क्लेदयुक्तहो तथा कानमें खुजली चलतीहो सपेदहो देरमें पके वोकफका कर्णपूति रोग जानना १८ इतिश्रीमाथुरदत्त रामपाठकनिर्मितायांहंसराजार्थबोधिनीटीकायांकर्णरोगास्समाप्ताः ॥

(नाशारोगलक्षणम्) आनह्यतेयेनगदेननाशिकाविशुष्यतेपूप्यतितुद्यतेक्वचित् ॥ नगंध्यतेक्लिद्यतिखिद्यतेथवासपीनसोरुक्कथितोभिषग्वरैः १ (क्षवथुरोगकेलक्षण) यदाघ्राणमर्मस्थलेसंविकारेकफेनावलिष्ठोमरुन्नाशिकायाः ॥ तदायातिवाह्यांतशच्छब्दयुक्तःनिरुक्तोभिषग्भिर्वरिष्ठःक्षवोयं २ (पूतिनश्यरोगकेलक्षण) पक्वदोषैर्यदावातस्तात्वादौमूर्च्छितोभवेत् ॥ नाशौनिस्सरतेपूतिः पूतिनश्यंचतद्वदेत् ३ ॥

जिसमें कफ से नाकबंधजावे और पीबबहै तथा क्लेदहो और जिसमें सुगन्ध दुर्गन्धका ज्ञाननहो तथा पीड़ाहो उसे वैद्योंने पीनसका रोग कहाहै १ जिसकी नाकमें पवन दुष्टहोकर नाकके मर्मस्थानोंको दुःखित करै फिर वही नाककी पवन कफसे मिलकर शब्दयुक्त भीतरसे बाहर निकसै उसे वैद्योंने क्षवथु अर्थात् छींकका रोग कहाहै २ जिसके गलू तालूके मूलकी पवन दोषोंको बिगाड़कर आपगलेमें मूर्च्छित हो नाकसे दुर्गंध युक्त निकसै उसेपूतिनश्य कहतेहैं ३ ॥

(नाशापाककेलक्षण) नाशिकायांस्थितंपित्तंपरुषीकुरुतेनिशं ॥ नाशिकापाकमित्याहुर्दाहक्लेदव्यथान्वितं ४ (पूयरक्तकालक्षण) दोषेषुपक्वेषुललाटमध्येपूयंसरक्तंमुखनाशयुक्तं ॥ दुर्गंधियुक्तंवहुशः श्रवेत्तत्प्रोक्तम्भिषग्भिःकिलपूयरक्तं ५ (प्रदीप्तरोगकेरक्षण) दाहान्वितायाःपरिनाशिकायाःसंनिःसरेद्धूमधनंजयाभ्यां॥ सार्द्दंशतोदीपत्रनप्रचंडोरोगम्प्रदीप्तंप्रवदन्तिवैद्याः ६ ॥

नाकमें पित्तदुखितहो फुंसीको पैदाकर और वो पकजाय तथा दाहराध व्यथायुक्तहो उसे नाशिकापाकरोग कहते हैं ४ ललाटमें दोषोंके पकने से रुधिरराध और दुर्गंध युक्त मुखनाक बहुतस्रवै उसे पूयरक्तरोग कहते हैं ५ जिसकी नाकसे दाहयुक्त प्रचंड पवननिकलै तथा धुंआंनिकले और पीड़ाहो उसे प्रदीप्तरोग कहते हैं ६ ॥

(प्रतीनाहरोगकेलक्षण) रुंध्यान्मार्ग्गंनशोवायुःश्लेष्मणास हितोबली ॥ प्रतीनाहंचतंरोगंविद्यादाधुनिकोभिषक् ७ (नाशाशो षकेलक्षण) घ्राणोत्थाश्लेष्मसंघातःपक्वपित्तोष्मणानिशं ॥ वाते नशोषितःसोयंशोषःप्रोक्तोभिषग्वरैः ८ (पक्वपीनसकेलक्षण) श्ले ष्मातिसांद्रःपरिगंधहीनःशिरोलघुत्वंस्वरवर्णशुद्धिः ॥ नाशावका शंपवनप्रवृत्तिश्चिन्हानिपक्वस्यहिपीनसस्य ९ ॥

नाककी पवनकफसे मिलकर श्वासको रोकदे उसे प्रतीनाहरोग अब के वैद्यकहते हैं ७ नाकमें उठाजो कफकासमूह वो पित्तकी गर्मीसे पक जाय फिरबात उसको सुखायदेय तब मनुष्य श्वास कठिनसे ले उसे नाशाशोष कहते हैं ८ जब जुखाम पकजाताहै तबये लक्षणहोतेहैं गंधर- हित गाढ़ाकफ निकलै शिरहलकाहो स्वरका वर्णशुद्धहो नाकशुद्ध पवन अच्छीतरह निकले ये पक्कीपीनसके लक्षणहैं ९ ॥

(पीनसरोगकीउत्पत्ति) घ्राणांतरेसूक्ष्मरजोनिपातातुद्धाष णान्मैथुनतोर्कतापात् ॥ शीर्षावघाताद्बहुशीतसेवनाद्वातःप्रतिश्या यगदंप्रकुर्यात् १० (पीनसरोगकापूर्वरूप) शिरोगुरुत्वंचप्रहृ ष्टरोमशरीरमार्द्रंक्षवथुप्रवृत्तिः ॥ निद्रालसत्वंनयनाश्रुपातोभवे त्प्रतिश्यायपुरोहिचिन्हं ११ (बातकीपीनसकेलक्षण) स्वरोपघा तोगलतालुजिह्वाशोषोथनाशापिहिताक्वचित्स्यात् ॥ श्रावोति सूक्ष्मःपरिशंखपीडामरुत्प्रतिश्यायरुजोपचिन्हं १२ ॥

नाकमें धूलिके जानेसे उद्भाषणसे मैथुनकेकरनेसे सूर्यके घाममें रहने से शिरमें चोटलगनेसे बहुतशीतके सेवनकरनेसे कुपितजो बात सोपीनस रोगको पैदाकरै १० शिरभारीरोमांचशरीरकाटूटना बारबार छींकका आना

नींद और आलकस तथा नेत्रों से अश्रुपात हो ये पीनसके पूर्वमें होते हैं ११ स्वर बैठजाय गला तालू जीभ इनका सूखना नाकका मार्ग रुकजाय थोड़ा पतला गरम पानी गिरा करै कनपटी दूखैं ये बातकी पीनसके लक्षण हैं १२ ॥

(पित्तकीपीनसकेलक्षण) नाशाश्रावोमहातप्तपीनसोवह्निधूमवान् ॥ सदाहःपैत्तिकोज्ञेयःश्लेष्मजःकथितोवुधैः १३ (कफकीपीनसकेलक्षण) शुक्लाभोनाशिकाश्रावःगलोष्ठतालुकंडुवान् ॥ शिरस्तोदःप्रतिश्यायःश्लेष्मजःकथितोवुधैः १४ (रुधिरकीपीनसकेलक्षण) रक्तश्रावःशिरःपीडादाहःशंखद्वयेऽनिशं ॥ रक्तत्वंनेत्रयोर्ज्ञेयःप्रतिश्यायःसरक्तजः १५ ॥

जिसकी नाकमें गरम गरम पानी गिरे और अग्निके समान धुंआं निकले तथा दाह हो वो पित्तकी पीनस कही है १३ नाकसे पानी सपेद और गला तालू ओठ इनमें खुजली चलै मस्तक भारी रहै उसे कफकी पीनस कहते हैं १४ जिसकी नाकसे रुधिर गिरै मस्तकमें और दोनों कनपटीनमें दर्द नेत्र लाल इन लक्षणों से रुधिरकी सरेकमां अर्थात् पीनस जाननी १५ ॥

(सन्निपातकीपीनसकेलक्षण) श्वासपूतिवहोनाहःक्लेदोजंतुषुनिर्द्दितः ॥ चिन्हैरेतैरसाध्योयंप्रतिश्यायस्त्रिदोषजः १६ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेनाशारोगलक्षणानि ॥

जिसकी नाकसे बास युक्त पवन निकले अनाहरोग हो क्लेदयुक्त तथा कृमि पड़िजायँ ऐसे लक्षणों से सन्निपातकी पीनस कही है १६ इतिमाथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायांहंसराजार्थबोधिनीटीकायांनाशारोगलक्षणानि ॥

अथनेत्ररोगनिदानम् ॥

(नेत्ररोगोत्पत्तिः) शीर्षोपघाताद्विषतीक्ष्णसेवनान्नेत्रांतरेधूमरजोतिपातात् ॥ सूर्येक्षणात्सूक्ष्मनिरीक्षणान्मुहुर्दोषारुजंसंजनयंतिनेत्रयोः १ शुक्रावरोधाद्युवतीप्रसंगाद्धातोर्विकाराज्ज्वलनस्यतापात् ॥ नाड्यादिमोक्षाद्बहुमैथुनाच्च नेत्रेरुजंसंजनयंतिदोषाः २ (वातकेनेत्ररोगकेलक्षण) विशुष्कतास्पंदनतातिरुक्षताप्रतोदता

कर्कशताद्यशुद्धताः ॥ प्रघर्षतास्तंभनताश्रुपातात्नृणांचनेत्रेपवनात्मकोभवेत् ३ ॥

शिरमें चोटलगनेसे विषअथवा तीखीवस्तुके सेवनसे नेत्रोंमें धुंआं और धूलिके पड़नेसे सूर्य्यके सामने देखनेसे छोटी वस्तुके देखने से कुपितहुये जो बातपित्त कफ सोनेत्र रोगको पैदा करतेहैं १ वीर्यकेरोकने से बहुत स्त्रीके संगसे धातुके बिकारसे अग्निके तापसे फस्तछुड़ाने से बहुत मैथुनसे नेत्रमें तीनों दोष नेत्र रोग करतेहैं २ नेत्रोंका सूखना तथा फड़कना रूखापन पीड़ा कर्कशता अशुद्धता प्रघर्षता स्तंबनता अश्रुपातका गिरना ये लक्षण बातके नेत्ररोगमें होतेहैं ३ ॥

(पित्तकेनेत्ररोगकेलक्षण) उष्णोष्णवाष्पोरविणातितापःशूलारतिःपांडुरताशिरोर्त्तिः॥ दाहोल्पपाकोमहतीचपीडानेत्रेभवेत्पित्तमयेनराणां४ (कफकेनेत्ररोगकेलक्षण) तंद्रातिशोफोगुरुताशिरोर्त्तिर्दाहोल्पपाकोमहतीचपीडा॥ उष्माविशेषोग्निसमानदाहःश्रावोरतिःशूलमतीवपीडा५ (नेत्रमंथकेलक्षण) विवर्णताशोणितमाविपाकोरक्तश्रवःस्यान्नयनेनराणां॥ निर्मथ्यनेत्रन्दधिमंथलक्षणैर्वायुस्ततोगच्छतिमूर्ध्निविक्रमं ६ ॥

सूर्य्यके घामसे गरमीहो तथा गरमगरमपानीनिकले शूल और अरति पीलियाहो शिरमेंदर्दहो दाहहो थोड़ापके पीड़ा ज्यादाहो येलक्षण पित्तके नेत्ररोगके हैं ४ तंद्रासूजन मस्तक भारी दाह थोड़ा पके पीड़ा बहुत हो गरमीबहुतहो अग्निके समान दाहहो अश्रुपात हो अरति शूल ये कफके नेत्ररोगके लक्षण हैं ५ जिसके नेत्रबुरेहों पकजावँ रुधिरगिरै और दधिमंथलक्षणोंसे नेत्रोंको मथनकर पवनमस्तकमें प्राप्तहो ६ ॥

निपीड्यशीर्षंपुनराक्रतोततोजानीहितंपंडितनेत्रमंथनं॥ आयातियातिप्रकरोतिवेदनांवातःप्रचंडोनयनांतरेभ्रुवोः ७ (वातभ्रमणरोगकेलक्षण) शीर्षास्थिशंखन्त्वथरक्तनेत्रेजानीहिवातभ्रमणंगदंतं ॥ अवेदनार्कंडुविशुष्कतास्याल्लघुत्वमक्ष्णोश्चप्रसन्नमार्गः ८ मलप्रवृत्तिर्बहुधानिशान्तेविपक्वदोषंप्रवदंतिसंतः ॥ पक्वो

दुंवरवत्स्निग्धोगरिष्ठःकंडुशोफवान् ॥ जलश्रावोल्पसंतोदोनेत्र पाकःकफोद्भवः ६ ॥

और मस्तकमें पीड़ाकर फेर लौटकर नेत्रमें प्राप्तहो ऐसेही आवै और जाय और नेत्रमें तथा भृकुटीमें पीड़ाकरै उसे पंडितोंने नेत्रमंथ रोग कहाहै ७ मस्तककी हड्डीमें कनपटीमेंमांसमें तथानेत्र लालहों उसे बात भ्रमणरोग कहाहै नेत्रपाककेलक्षण पीड़ारहित तथा खुजली न चलै तथा अश्रुपात रहितहो और नेत्रोंमें हलकापनहो नेत्रोंका मार्ग स्वच्छहो ८ विशेष कीचड़काआना रात्रीके अंतमेंहो तबजानना कि दोषपाकहुआपके गूलरके समान तथा चिकने और भारी तथा खुजली और सूजनयुक्तजल बहे थोड़ीपीड़ाहो इसको कफसे प्रगट नेत्रपाकजानना ६ ॥

(शिरपाकनेत्रकेलक्षण) नेत्रेसमर्त्थेपरिवीक्षितुंदिशः स्फोटोललाटेवहुवेदनान्वितः ॥ शूलश्चदाहोग्निसमोभ्रमोभवेत्रोगोभिषग्भिःशिरपाकईरितः १० आछाद्यदृष्टिंनयनेविनिर्गतं शुक्रंशिताभंपरिवर्द्धतेनिशं ॥ शूच्याप्रविद्धंखलुनाशमेति नोचेद्बुधाःशुक्रव्रणं वदन्ति ११ नेत्रांतरकज्जलिमासमीपेशुक्रद्वयंसूक्ष्मतरंचिरोत्थं॥ मुक्तावभासंगततोदपाकंतत्कष्टसाध्यंमुनयोवदन्ति १२ ॥

नेत्रचारों ओर देखने को समर्थहों बहुतपीड़ा और शूलयुक्त ललाट में फटनहो अग्निके समान दाहहो भ्रमहो उसे बैद्योंने शिरपाक रोग कहाहै १० जिसके नेत्रमें शुक्रकी बूंद आयजावे उससे कुछनदीखे और वो दिन दिनमें बढ़े उसेशुक्रव्रण कहते हैं और सुईकेसेचभकालछे ११ जिसके नेत्रकी काली जगे पर छोटीछोटी दोबूंदमोती के समानबहुत कालकी प्रगटभई हो और उनमें पीड़ा न होतीहो और न पके उसे मोतियाबिंद कष्टसाध्य मुनी कहते हैं १२ ॥

(असाध्यमोतियाविंदलक्षण) शुक्रद्वयंवात्रितयंचतुष्टयंनिर्वेदनंनेत्रगतंविपाकं ॥ विहायसीचाभ्रदलावभासंस्यादप्यसाध्यंनिविडंचिरोत्थं १३ दोषत्रयोत्थंनयनांतरस्थंनीलावभासंनिविडंविसर्प्पं ॥ स्निग्धंदृढंदृष्टिपथावरोधंस्पंदात्मकंशुक्रमसाध्यमाहुः१४

नेत्रांतरस्थंरुधिरावभासं मांसोत्थितंस्थूलदलंविशालं॥ विच्छिन्न मध्यंपरिचंचलंचशुक्रंभिषग्भिस्तदसाध्यमुक्तं १५ ॥

जिसके नेत्रमें दो वा तीन वा चारबूंद नेत्रके बीचहो उनमें पीड़ाहो और पकजावे और बोदलवा आकाशके रंगकी बूंदहो मिलीभईतथाबहुत दिनकी ये असाध्यहै १३ जो तीनों दोषोंसे उठी होय और नीलेरंगकी मिलीहुई किञ्चित् चलायमान चिकनी और दृष्टिको रोकदे ऐसीशुक्रकी बूंदभी असाध्यहै १४ नेत्रमें रुधिरके रंगकी शुक्रकी बूंदहो और वोमोटी तथा लंबीहो विच्छिन्न मध्यहो और चंचलहोऐसा रोगी वैद्योंने असाध्य कहाहै १५ ॥

एकंद्वयंवात्रितयंचतुष्टयंसंछाद्यनेत्रंपरिवर्द्धतेनिशं॥ शोफोष्ण वाष्पोरविपाकसाधनंशुक्रंविदग्धंतदसाध्यमादिशेत् १६(इतिनेत्र शुक्रलक्षणानि) (नेत्रकेप्रथमपटलकेलक्षण) आवृत्यनेत्रेपटले व्यवस्थितेव्यक्तानिरूपाणिनरःप्रपश्येत् ॥ (नेत्रद्वितीयपटलके लक्षण) एवंद्वितीयेपटलेक्षिसंस्थेशूचीमुखंदृष्टिगतंनपश्यति१७ (नेत्रतृतीयपटलकेलक्षण) नेत्रांतरस्थेपटलेतृतीयेदृष्टिर्भृशंविह्वलतांसमेति ॥ आभासमात्रंखलुपश्यतीहसाध्यं शिशुत्वेखलुनान्यवस्थां १८ ॥

एक दो तीन चारबूंद नेत्रमेंहो और नेत्रकी दृष्टीको ढकदेवे और नित्य बढ़े तथा सूजन गर्मी अश्रुपातका पड़ना येशुक्र विदग्धके लक्षणहैं येभी असाध्यहैं १६ इतनेरोग नेत्रके शुक्लभागमें होते हैं नेत्रके प्रथम पटल में दोषोंके पहुंचनेसे मनुष्यको यथार्थ नदीखे ऐसेही नेत्रके दूसरे पटल में दोष पहुंचनेसे सुईका तथा मक्खी मच्छर बालकाभी समूह नहीं दीखे १७ नेत्रके तीसरे पटल में दोष पहुंचने से दृष्टी बिह्वल होजाय कुछ कुछ झांई मालूमहो येबालअवस्थामें साध्यहै और में नहीं १८ ॥

(नेत्रचतुर्थपटलकेलक्षण)यस्यावरुद्धेपटलेननेत्रेदृष्ट्यानपश्येत्स नरोर्कबिम्बम् ॥ विद्युल्लतांचन्द्रसमंसतारंतत्काचसंज्ञंपटलंचतुर्थं१९(वातकीदृष्टिरोगकेलक्षण) दृष्ट्यामहत्यापटलेनरुद्धयासमो

रणोत्थेनविकारकारिणा ॥ रूपाणिसर्व्वाणयरुणानिमानवाःपश्यं तिपीतप्रभयाविदग्धया २० (पित्तकीदृष्टिरोगकेलक्षण) पटले नावृतादृष्टिःपित्तकोपोत्थितेनसा ॥ नीलानिसर्ववर्णानि परिपश्यं तिसम्भ्रमं २१ ॥

नेत्रके चतुर्थ पटलमें दोष पहुंचनेसे मनुष्यको सूर्य्य चंद्रऔर बिजली और तारागण येनदीखें वो कांचसंज्ञक और इसीको लिंगनाशक और नजला तथा मोतियाबिंदभी कहतेहैं १९जिसकी दृष्टी वादीके बिकारसे आच्छादितहो उसे लालरंग पीलादीखे २०जिसकी दृष्टी पित्तके कोपसे ढकीहो उसेभ्रूमसे सबरंग नीलेदीखें २१ ॥

(कफकीदृष्टिरोगकेलक्षण)आच्छादितायापटलैःकफोत्थैः दृष्टिः सिताभैरिवसूर्यमभ्रैः ॥ नेत्रांतरस्थैःपरितोविपश्येत्सर्वाणिरूपाणिसितप्रभानि २२ दृष्टेरूर्ध्वस्थितेदोषेनपश्येदूर्ध्वसंस्थितान् ॥ दृष्टेरधःस्थितेदोषेनरोधस्थान्नपश्यति२३ दृष्टेःपार्श्वेस्थितेदोषेपार्श्वस्थान्नैवपश्यति ॥ दृष्टेर्मध्यगतेदोषे यदेकंमन्यतेद्विधा २४ ॥

कफके बिकारसे पटल जिसकी दृष्टिरोकदे उसको सूर्य्य और आकाश तथा सबरंग सपेददीखै २२ दृष्टीके ऊर्ध्वभागमें दोष स्थितहोय तोऊपर की वस्तु न दीखै और नीचेके भागमें दोषहो तो नीचेकी कोई बस्तु नदीखे २३ और दृष्टीके पृष्ठभागमें दोषहोतो पृष्ठस्थितकोनहीं देखे तथा दृष्टीके मध्यमें दोषहोय तो एक वस्तुकी दोदीखैं २४ ॥

रक्तविन्दुर्भवेन्नेत्रेचंचलःपरुषोनिलात् ॥ पित्तात्पीतंतथानीलं स्निग्धःपांडुःसितःकफात् २५ यःसर्वधूम्राणिनरोविपश्येत्सधूम्रदर्शीमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ यश्चित्ररूपाणिदिवाप्रपश्येत सर्वैमनुष्योनकुलांधसंज्ञः२६संकुच्याभ्यंतरेयाति दृष्टिर्मुहुकपर्दिका ॥ वाह्यमायातिसंवृत्यगम्भीरंतम्विदुर्बुधाः २७॥

बादीसे मनुष्यके नेत्र चञ्चल औरलाल बिन्दू युक्तहों और पित्तसेपीले तथानीले और कफसे चिकने और सपेद तथा पांडुरंगके होतेहैं २५ जिस मनुष्यको सब बस्तुधुंयेंके रंगकीदीखैं उसेधूम्रदर्शीमुनियोंने कहाहै और

रातमें जिसकोचित्रविचित्र रंगकीदीखैउसे नकुलांधअर्थात् रतोंधकारोग कहाहै २६ जिस मनुष्यकी दृष्टी दर्पणकी संकोचकी प्राप्तहो जबदर्पणहट जावेतबयथार्थ होजावे उसेगंभीररोग बैद्य कहतेहैं २७ ॥

नेत्रसंधौस्थितःशोफःपक्वंपूयंश्रवेत्तुयः ॥ पूतिसांद्रंसरक्तम्वा पूयलाख्यंविदुर्बुधाः २८ संधौवृहद्ग्रन्थिमहारपाकीनीरुजोदृढः ॥ उपनाहःसविज्ञेयोगदज्ञैःकंडुरोगदः २९ नेत्रसंधौसमुत्पन्ना पिडिकाशोणितोद्भवा॥ रक्तमुष्णंश्रवेन्नित्यमसाध्यारुक्प्रकीर्त्तिता३०॥

जिसमनुष्यकेनेत्रकीसंधीमें सूजनहो और वोपकजावेतथाश्रवैओरबास युक्त तथारुधिरश्रवै उसे पूयलाख्य रोग बैद्यकहतेहैं २८ जिसमनुष्य के संधीमेंबड़ीगांठहो औरवहपकेनहो न पीड़ाकरैदृढ़हो खुजली चले उसे बैद्योंने उपनाह रोग कहाहै २९ नेत्रकी संधी में रुधिरसे फुंसी पैदा हो उनसे रुधिरश्रवै वो असाध्य कहिये ३० ॥

उद्धृत्यवर्त्मरोगाणिजायंतेभ्यंतरेमुहुः॥रुन्धंतिगोलकेनेत्रेपरिवाराणितानिवै ३१ संधौपक्ष्माणिमांसाभा कंडूशोफसमन्विता ॥ चिमुचिमांवुयुतावैद्यैर्ब्राह्मणीसानिगद्यते ३२ अक्ष्णोर्वर्त्मनिसम्भवाश्चपिडिकाःसूक्ष्माघनाःसम्न्नताः पीताभावहुवेदनांखरतराज्ञेयाश्चवातोद्भवाः ॥ पित्तोत्थाःपिटिकाखरानयनयोरभ्यन्तरेसंस्थिताःदुःस्पर्शावहुदाहशूलसहिताःश्रावान्विताःकण्डुराः३३ ॥

जिस मनुष्यके कोयेके बाल उखड़कर भीतर चलेजायँ और नेत्रके गोलको रोकदें उसे परवाल कहतेहैं ३१ संधीके पलकोमें मांसके आकार फुंसीहो उसमें खुजली और सूजन तथा चिमचिमी युक्तहो जलश्रवै उसे ब्राह्मणी रोग कहतेहैं ३२ नेत्रके मार्गमें जो फुंसीहो वह छोटीकरड़ी गोल पीली पीड़ायुक्त खरदरीहो सोबातकी जाननी और खरदरी तथा नेत्रके भीतरहो स्पर्श सहाजाय दाहशूल और श्रवै तथा खुजली चलै वो पित्त की फुंसी जाननी ३३ ॥

अक्ष्णोर्वर्त्मनिजायन्तेपिटिकाःकफसम्भवाः॥स्थूलामांसांकुराः क्लिन्नाःकंडूशोफार्त्तिपाकिनः ३४ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेनेत्ररोगलक्षणानि ॥

तथा मोटी मांसके अंकुरयुक्त गोली खुजलीयुत सूजन पीड़ा और पक जावे वो कफकी मरोड़ी जाननी ३४ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांनेत्ररोगलक्षण समाप्तम् ॥

(अथमस्तकरोगनिदानम्) अत्यम्लसेवाच्छिरशोभिघाताद्भूमौशयानाज्जलमध्यपातात् ॥ रात्रौदिवाजागरणाच्चशीता द्वाताद्दिदोषाःप्रभवन्तिशीर्षे ३५ (वातपित्तकमस्तकरोगलक्षण) शीतेनशीर्षेनिशिवातपीडाक्कचिद्दिवापिप्रभवेत्सशूला ॥ तापेनपित्तप्रभवातितीव्राज्वालान्विताशूलवतीसशोषा ३६ (कफकेमस्तकरोगकेलक्षण) शीर्षेगुरुत्वञ्चकफेनपीडास्यादालसत्वंमुहुरश्रुपातः॥ निद्रावमित्वंमुखनाशिकाभ्यांश्रावोविपाकःसशिरोभिघातः ३७॥

अत्यन्त खटाई खानेसे शिरमें चोट लगनेसे पृथ्वीपर सोनेसे जलमें गिरनेसे रातदिन जागने सरदीसे कुपितहुये जो बात पित्त कफसो मस्तकरोग पैदा करतेहैं ३५ बादीसे मस्तकमें रातको दर्दहो कभीदिनमें भी शूल चले पित्तसे पित्तजनितही अत्यन्त तीव्रज्वाला और शोषयुक्त पीड़ा हो ३६ शिरभारी आलस्य अश्रुपातका पड़ना निद्रा वमन मुखनाक का श्राव तथा पाक और पीड़ा येकफके दोषमें होताहै ३७ ॥

(रुधिरकेमस्तकरोगकेलक्षण) शीर्षेतिदाहोमहतीचपीडानाशामुखाभ्यांवहुरक्तपातः ॥ भवेद्भ्रमोधूमवतीचनाशारक्तप्रकोपेन शिरोभिघातः३८ दोषेषुसर्वेषुशिरोगतेषु लिंगानिसर्वाणिभवन्ति शीर्षे ॥ कासप्रवृत्तिश्चिरकालपाकः प्रोक्तोभिषग्भिःशिरसोभिघातः ३९ (कृमिकेमस्तकरोगकेलक्षण) निर्भिद्यतेजंतुभिरुग्रतुंडैः संतुद्यतेयस्यशिरोनितान्तं ॥ घ्राणाच्चस्रवेच्छोणितमुग्रवेदनाशिरोभिघातःकृमिभिर्भवेत्सः ४० ॥

शिरमें दाह घोर पीड़ा नाक और मुखसे रुधिर गिरै भ्रम तथा नाकसे धूम निकलै ये रुधिरसे मस्तक रोगजानना ३८ सन्निपातके मस्तकरोगमें त्रिदोषके चिन्ह मिलतेहों तथा खांसी और देरमेंपके वोबैद्योंने सन्निपात का कहाहै ३९ जिसके शिरमें कृमि पड़जावें उसके शिरमें घोर पीड़ाहो नाकसे रुधिर पड़े वोकृमिका मस्तकरोग कहाहै ४० ॥

(आधाशीशीकालक्षण) भानूदयेद्देशिरसिप्रपीडासम्वर्द्धतेचांशुमतासहैव ॥ निवर्त्ततेशीतकरोदयेयासूर्य्यात्प्रवृत्तंतमवेहिवैद्य ४१ कफयुक्पवनःशीर्षे करोतिविविधान्गदान् ॥ शिरोभ्रूशंखकर्णाक्षिललाटेतीव्रवेदनां ४२ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेशीर्षरोगलक्षणम् ॥

जिसका सूर्य्योदयसे आधामस्तक क्रमसे दूखने लगै जब सूर्य्यास्तहो और चन्द्रमा उदयहो तब दर्दभीबंद होजाय उसेआधाशीशी कहतेहैं ४१ कफयुक्त पवन शिरमें अनेक रोगपैदा करै और शिर कनपटी भृकुटीकान नेत्र ललाट इनमें घोरपीड़ा होय ४२ इतिमाथुरदत्तरामकृतहंसराजार्थबोधिनीटीकायांशीर्षरोगनिदानंसमाप्तमगमत् ॥

अथस्त्रीरोगलक्षणम् ॥

(प्रदररोगकीउत्पत्ति) आयासतःकुत्सितयानरोहाच्छोकाद्विरुद्धाशनतःप्रपातात् ॥ अत्यंतभारोद्वहनादजीर्णात्स्याद्गर्भपातात्प्रदरोतिमैथुनात् १ योनिंविदीर्य्यसंजातं शोणितंसर्व्वदास्त्रियाः ॥ प्रदरन्तंविजानीहिवातपित्तकफोद्भवं २ प्रवृत्तेप्रदरेनित्यं पाण्डुत्वंजायतेस्त्रियाः ॥ मूर्च्छाभ्रमस्तृषादाहःप्रलापःकृशतारुचिः३ ॥

परिश्रमसे खोटी सवारी में बैठनेसे शोकसे खोटे भोजनसे गिरपड़नेसे भारी बोझउठानेसे अजीर्णसे गर्भके पड़ने से अतिमैथुनसे प्रदरनाम स्त्रियों के रोग होताहै १ योनि को विदीर्ण कर जोरुधिर सदापड़े उसे वातका पित्तका कफका प्रदर रोगजानो २ प्रदर रोग पैदाहोनेसे स्त्रीका वर्ण पीलाहोजाय और मूर्च्छा भ्रम प्यास दाह बड़बड़ाना कृशता अरुचि येरोग होतेहैं ३ ॥

(वातपित्तकेप्रदररोगकेलक्षण) योनिःश्रवेच्छोणितमल्पमल्पंश्यावंसकष्टंपवनात्मकंतत् ॥ पित्तोत्थितंसामिषरक्तमुष्णंदाहार्त्तिशूलभ्रमकम्पकारी ४ (कफकेप्रदररोगकेलक्षण) योनिक्षतोत्थंरुधिरञ्चफेनिलंपीतारुणंस्निग्धतरञ्चपिच्छिलं ॥ शैथिल्यकंडूकृमि

शोथशीतकृज्जानीहि तंचप्रदरं कफोद्भवं ५ (सन्निपातकेप्रदरका लक्षण) दोषत्रयोत्थेप्रदरेसुवत्याःसर्व्वाणिलिंगानिभवन्तिकाये॥ उत्श्वासशूलारतिपूतियुक्तेतस्मिन्नकुर्व्वीतभिषक्चिकित्सां ६ ॥ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रप्रदरलक्षणम् ॥

जिसस्त्रीकीयोनिसे कालेरंगकारुधिर कष्टसेथोड़ाथोड़ानिकले उसेवादी का जानो और मांसयुक्त गरम और दाहयुक्त रुधिर निकले तथा शूलभ्रम कंपसे पित्तका जानना ४ योनिमेंसे रुधिर झाग मिला चिकना पीला गाढ़ा लाल निकले और खुजली कमी शिथिलता सूजन शीतलता युक्तहो उसे कफका प्रदर रोग जानना ५ संनिपात के प्रदरमें त्रिदोषके चिन्ह होतेहैं तथा श्वास शूल अरति दुर्गंध युक्त ऐसे प्रदर की वैद्य चिकित्सा न करै ६ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांप्रदररोगस्समाप्तः ॥

(अथयोनिकन्दलक्षणम्) उच्चैःप्रपातान्नखदन्तघातादध्वश्र मात्कुत्सितवीर्य्ययोगात् ॥ कुयानरोहादतिमैथुनाद्वायोनौभवेत्कंद कसंज्ञकोरुक् ७ योनौसंजायतेकन्दं लकुचाकृतिपूययुक् ॥ विवर्णं स्फुटितंरुक्षंवातकन्दंविदुर्बुधाः ८ (पित्तकेयोनिकंदकेलक्षण) रक्ता क्तंयोनिसम्भूतंचिञ्चिणीबीजसन्निभं ॥ ज्वरदाहान्वितंपैत्तंयोनिकं दंतमादिशेत् ९ ॥

ऊंचेस्थान के गिरने से नख दांत के घात से रास्ता चलने से खोटा वीर्य्य होनेसे खोटी सवारी में बैठने से अति मैथुन से योनि में कंदसं- ज्ञक रोग होता है ७ योनि में बड़हल के समान कंद हो उसमें से राध निकले और विवर्ण तथा फटा रूखा हो उसे बातका योनि कंद कहते हैं ८ जिसमें से रुधिर निकले और वह इमली के बीज के समान हो तथा ज्वर दाह युक्त हो उसको पित्त का योनि कंद कहते हैं ९ ॥

(कफकेयोनिकन्दकेलक्षण) तिलपुष्पसमंस्निग्धंयोनिकन्दो द्भवंदढं॥कंडूशोफान्वितंक्लिन्नंयोनिकंदंकफात्मकम् १० (सन्निपात केयोनिकंदकेलक्षण) सन्निपातोत्थितंरौद्रं सर्व्वलिंगसमन्वितं ॥ योनिकंदंभिषक्तस्यचिकित्सांनैवकारयेत् ११ ॥ इतिश्रीभिषक्च क्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेयोनिकंदलक्षणंसमाप्तम् ॥

जो तिल के फूल के समान चिकना और दृढ़ कंद हो तथा खुजली और सूजन शीला हो उसे कफका योनि कंद कहते हैं १० जिसमें सन्निपातके सब लक्षण मिलते हों उसे घोर सन्निपात का जानकर वैद्य इलाज न करे ११ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांयोनिकंदलक्षणम्समाप्तम् ॥

(अथयोनिकेद्वादशरोगकेलक्षण) योनौद्वादशदोषाःस्युःप्रोक्तावैद्यैःपृथक्पृथक्॥केचिन्नैसर्गिकाःकेचिद्दोषजावीर्यदोषजाः १ अच्छिद्रायाभवेद्योनिःपंढाख्यासाविधीयते॥ सूक्ष्मछिद्रातुयाशूचीमुखासाकथ्यतेबुधैः २ विवृताख्यामहास्थूलामहायोनिःप्रकीर्त्तिता॥ रजोवातहतंयस्याअसौख्यासोच्यतेबुधैः ३ ॥

योनि में बारह दोष पृथक् पृथक् वैद्योंने कहे हैं कोई तो नैसर्गिक कोई दोषोंसे और कोई वीर्य के दोष से १ जिसकी योनि में छिद्र न हो उसे पंढाख्य योनि कहतेहैं और जिसमें छोटा छिद्र हो उसे शूचीमुख योनि कहते हैं २ जो गोल मुख की और मोटी हो उसे महायोनि कहते हैं और जिसका रजोदर्श बातसे बलागया हो उसे असौख्य योनि कहते हैं ३ ॥

(बालकीयोनिकेलक्षण) ह्रस्वातिरुक्षाकृशताल्पपुष्पाश्यामाविवर्णास्फटिताविशुष्का ॥ वक्रात्पलरोमापरुषासरोगायोनिर्बुधैर्वातवतीनिरुक्ता ४ (पित्तकीयोनिकेलक्षण) ऊष्मान्विताकामवतीविशालाश्लाक्षास्सभापरिपूर्णमांसा॥नीरोगतागर्भवतीविशुद्धायोनिर्बुधैःपित्तवतीनिरुक्ता ५ (कफकीयोनिकेलक्षण) स्थूलासदार्द्रावहुकंडुरासाकामान्विताद्दीर्घमुखीमनोज्ञा॥ रोमाधिकास्निग्धतरातिशीतायोनिर्निरुक्ताकफयुक्भिषग्भिः ६ ॥

जो योनि छोटी और रूखी कृश अल्प पुष्पकी काली श्याम वर्ण की फटी हुई शुष्कसूख कर थोडे बाल हों कठोर रोम युक्त ये बातकी योनि के लक्षण हैं ४ गरमी युक्त कामवती बडी लाख के रंगकीसीपूर्णमांस युक्त निरोग गर्भवान शुद्ध हो ये पित्तकी योनि के लक्षण हैं ५ मोटी सदागीली रहै बहुत कंडुरा युक्त कामयुक दीर्घमुख की सुंदर बहुत रोम युक्तचिकनी शीतल ये कफकी योनि के लक्षण हैं ६ ॥

वातेनयस्यानिहतंचपुष्पंतस्याःफलंनैवभवेत्कदाचित्॥ योन्यंतरस्थेनमहाबलेनहृन्नाभिकट्यांतरदुःखवेदनां ७ पित्तेनदग्धंकुसुमंविशुद्धंशुक्रेणमिश्रंन्वहिरुद्गिरेद्या ॥ नात्यूष्मणाधारयितुंसमर्थाप्रस्रंसिनीयोनिरुदाहृतासा ८(विप्लुताकेलक्षण)रतिक्रीडारुचिर्यस्याः परितायाप्लुताभवेत्॥नित्यंवेदनयायुक्ता विप्लुतासाप्रकीर्त्तिता ९ ॥

योनि में वलवान वात पुष्प को नाश करदे तब सन्तान नहीं हो और हृदय नाभी कमर इनमें पीड़ा हो ७ जिसका पुष्प पित्तदग्ध करदे और शुक्रयुक्त रजको बाहर निकालदे और पित्तकी गर्मी से गर्भ न रहै उसे प्रस्रंसिनी योनि कहीहै ८ रति क्रीड़ाके आनंदसे जिसकी योनि आर्द्र रहै और नित्य पीड़ाहो उसे विप्लुता योनिकहतेहैं ९ ॥

(पूतिगंधयोनिकेलक्षण) संनिपातान्वितायोनिर्दुर्गंधंन्वहतेनिशं ॥ शूलदाहार्त्तियुक्तासापूतिगंधिर्विधीयते १० (वंध्यायोनिकेलक्षण) पित्तानिलाभ्यांपरिकोपिताभ्यांसंपीडिताकृच्छ्रतरेणयोनिः॥कृष्णंरजोमुंचतिफेनिलंयावंध्यामुनींद्रैःपरिकीर्त्तितासा ११ (खंडितायोनिकेलक्षण) योनेरभ्यंतरंबाह्येखरस्पर्शोतुमैथुने ॥ न गृह्णातिसदावीर्यंखंडिनीसाविधीयते १२ ॥

संनिपातसे योनिमें दुर्गंध आवे तथा शूल दाह भीहो उसे पूति गंध योनिकहतेहैं १० जिसकी योनि बात पित्तके कोपसे परि पीड़ितहो और जिसकी योनिसे काला औरझाग युक्त रुधिरनिकले उसेऋषि वंध्यायोनि कहतेहैं ११ योनिके बाहर और भीतर मैथुनकेसमयखर्दरास्पर्श मालूम पड़े और वीर्यका जोग्रहण न करै उसे खंडिता योनि कहतेहैं १२ ॥

पिडिकाचितसर्वांगीमणिनांतरवाह्ययोः॥ सायोनिरुपदंशेनमूत्रपेनरुजार्दिता १३ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतवैद्यशास्त्रेयोनिरोगलक्षणम्समाप्तम् ॥

योनिके बाहर भीतर फुंसीहों वो योनि उपदंशरोगकरके व्याप्त जाननी १३ इतिहंसराजार्थवोधिन्यांयोनिरोगलक्षणम्समाप्तम् ॥

(अथप्रसूतिकारोगकालक्षण) उच्चैःप्रपातात्दृढमैथुनाद्वातीक्ष्णोष्णदुष्टौषधिसेवनाद्वा ॥ दंडाभिघाताद्बहुवेदनाद्वागर्भच्युतिःस्याद्भयतःश्रमाद्वा १४ आवोमासाच्चतुर्थात्प्राक्पातःपंचमषष्ठयोः॥मासयोर्भवतिस्त्रीणांप्रसूतिस्तदनंतरं १५ प्रसूतिसमयेवायुःस्त्रियाःकुक्षिगतोयदि॥ निरुध्यशोणितश्रावंकरोतिवहुवेदनां१६॥

उच्चस्थानके गिरनेसे दृढ़मैथुनसे तीखी गरम दुष्ट औषधके खानेसे दंडआदिकी चोट लगनेसे बहुत पीड़ासे भयसे श्रमसे गर्भपात होताहै १४ चार महीनासे पूर्व गर्भ गिरे उसे श्राव कहते हैं और पांचवें छठे महीनामें पात कहाता इसके अनंतर अर्थात् सातवें महीनासे उपरान्त प्रसूति कहतेहैं १५ प्रसूति समयमें पवन स्त्रीकीकूखमें प्राप्तहो रुकजावै वह रुधिरको निकाले तथा पीड़ाकरै १६ ॥

वालेपृथिव्यांपतितेतदानिशंसंरक्षणीयामरुतःप्रसूता॥यस्याःशरीरेपवनेप्रविष्टेनूनंभवेद्रोगवतीसदासा १७ हृत्कुक्षिशूलंगुरुताशरीरेकंपःपिपासाकटिवस्तिपीडा ॥ दाहोंगमर्दोल्परुचिःप्रलापःशोथःकृशत्वंप्रदरोतिसारः १८ निद्रालसत्वंवहुपांडुतांगेशीतांशिरार्त्तिर्भ्रमताविशुद्धिः ॥ तापोप्यनाहोबलतातिकासःस्यात्सूतिकायाःपरिरोगचिन्हं १९ ॥

जिस समय बालक पृथ्वीमें गिरै उसी समय प्रसूता स्त्रीकी पवनसे रक्षा करनी कदाचित् पवन स्त्रीके लगजाय तो निश्चय प्रसूति का रोग पैदाहोय १७ जिसस्त्रीके प्रसूतिरोगहो उसके ये रोगहों हृदय कूख इनमें शूलहो शरीर भारी कंप प्यास कमर और मूत्रस्थानमें पीड़ा दाह अंगों का टूटना अल्परुचि प्रलाप सूजन कृशता प्रदर अतीसार १८ निद्रा आलकस पीलिया सरदी मस्तकमें दर्द भ्रम भ्रष्टताज्वर अनाह दुर्बलता खांसी इतनेरोग प्रसूतिसेहोतेहैं १९ ॥

(प्रसूतिरोगके उपद्रव) अतीसारोज्वरःशूलंबलहानिःशिरोव्यथा ॥ शोफोनाहोतिदाहोश्चसूतिकायामुपद्रवाः २० इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेप्रसूतिकारोगलक्षणानि ॥

१ अतीसार २ ज्वर ३ शूल ४ बलहानि ५ मस्तकमें दर्द ६ शोथ ७ अनाह ८ दाह ये प्रसूतके आठ उपद्रव हैं २० इतिमाथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायांहंसराजार्थबोधिनीटीकायांसूतिकारोगाःसमाप्ताः ॥

अथ बालरोगलक्षणं ॥

(वातलदुग्धकेगुण) स्तन्यंदुग्धंवातलंतोयतुल्यंरुक्षंगौरंतुच्छसारंकषायं ॥ बालोनित्यंतंपिवेत्तुस्यात्कृशांगःशब्दक्षामोबद्धविण्मूत्रवातः १ (पित्तयुक्तदुग्धकेगुण) सक्षारमुष्णंकटुपित्तदूषितंबालोल्पसारंकुचजंपयःपिबन् ॥ तृष्णालुरुक्षावयवोसपैत्तिकःखिन्नोभवेद्भिन्नमलःसकामलः २ (कफदूषितदुग्धकेगुण) दुग्धंश्लेष्मविदूषितंकुचभवं स्निग्धंघनंपिच्छिलं योबालःप्रतिवासरंपरिपिबन्स्थूलोदरोजायते॥लालाढ्यःकफरोगवान्बलयुतोनिद्राघृतःछर्दिमान् शून्यान्तःकरणोल्पघूर्णनयनःकंड्वादिरोगान्वितः ३ ॥

स्तनका दूध जलके समान हो रूखा तथा भारी बलरहित हो कसैला हो वो वातदूषित दुग्ध है उसे बालक जो पीवे तो कृशांगहो मन्द शब्द तथा मल मूत्र कमउतरे १ जो खारा गरम तथा कडुआ हो पित्त दूषित दुग्ध है उसे जो बालक पीवे तो बलहीन हो तृष्णालू रूखा देह पित्तप्रकृति वाला दस्त बहुतहो पीलि युक्त हो तथा खिन्नहो २ जो कुचका दूध कफसे दूषित हो वो चिकना गाढ़ा मलाईदार होता है जो बालक ऐसे दूध को पावे उसका बड़ा पेट हो जाय लार बहै कफ रोगसे ग्रसित रहै बल युक्त नींद बहुत आवै उलटी करै शून्य अंतःकरण कुछ टेढ़े नेत्र खुजली आदिरोग करके युक्त रहै ३ ॥

(दोषरहितदुग्धकीपरीक्षा) जलेस्तन्यंपरिक्षिप्तमेकीभूतंचपांडुरं ॥ मधुरंस्वादुतद्दुग्धंनिर्दोषंतंविदुर्बुधाः ४ निर्दोषजंपयःपीत्वा नीरोगोबालकोभवेत् ॥ बलवीर्यान्वितोधीरोबहुशक्तिसमन्वितः ५ शिशोरंगपीडाचतीव्रामतीव्रांवुधोरोदनाल्लक्षयेदंगदेशे ॥ तनोःस्पर्शनाच्छ्रोतसांदर्शनाद्वाविदित्वारुजंकारयेद्वैचिकित्साम् ६ ॥

जो दूध जलमें मिलाने से पीला होजावै तथा मीठा स्वाद युक्त हो उसे निर्दोष दूध जानना ४ जो बालक दोष हीन दूध पीताहै वह बल वीर्य धोरता पुष्टिमान होताहै ५ वैद्य बालककी अंग पीड़ा होनेसे तथा शरीर के स्पर्शसे वानेत्रों के देखनेसे जानकर फेर इलाज करै ६ ॥

मातुस्तन्यविकारेणबालानांनेत्रवर्त्मनि ॥ जायतेकुकुणंतेननेत्रयोःकंडुरंभवेत् ७ कुक्कुणेनरुजातेन सूर्याभांपरिवीक्षितुं ॥ नसमर्थोभवेद्बालोनेत्रोन्मीलितुमक्षमः ८ (पारिगर्भिककेलक्षण) भवेद्बालकोगुर्विणीदुग्धपानाद्भ्रमःश्वासनिद्राग्नितोवह्निसादः ॥ कृशांगोतिकासोरुचिर्दंतपातस्तमाहुर्बुधागर्भिकंकोष्टबंधम् ९ ॥

माताके स्तनविकार से बालकके नेत्रोंमें कुकुण रोगहोउससे नेत्रोंमें खुजली चलताहै ७ जब बालकके कुकुण रोग होजाताहै वो सूर्यको देखने को समर्थ नहीं हो और नेत्रखिले भी नहीं ८ गर्भिणीमाताके दुग्धपान से बालकको भ्रम श्वास निद्रा अग्निमंद कृशांग अतिखांसीअरुचिदंतपात येहोतेहैं इसे वैद्य गर्भिक कोष्टबंध वा पारिगर्भिक कहतेहैं ९ ॥

(तालुकंठरोगकेलक्षण) शिशोस्तालुमांसेश्लेष्मवातयुक्तालुकंटकं ॥ कुरुतेनरुजामूर्ध्निभवेत्तालुनिनिम्नता १० तालुपाकस्त्रिदोषात्स्यःसर्वांगेषुविसर्पति ॥ असाध्योयंबुधैरुक्तोयंत्रमंत्रैश्च साधयेत् ११ क्षुद्ररोगचकथितेअजगल्यहिपतनं॥ज्वराद्याव्याधयः सर्वेमहतांयेपुरोगताः ॥ बालदेहेपितेतद्वद्विज्ञेयाकुशलोभिषक्॥ (सामान्यग्रहयुक्तबालकलक्षण) ग्रहैर्गृहीतोल्पशिशुःप्रवेपतेमुहुर्मुहुस्त्र्यस्यतिरौतिजृम्भते ॥ परंनखेलुंध्वतिखंसमीक्षतेक्वचित् क्वचित्कूजतिहन्तिरोदति १२ ॥

बालकके तालूके मांसमें वात युक्त कफ प्राप्त होकर तालू कंटक रोग पैदाकरै उसे तालू नीचे लटक आवै १० त्रिदोषका तालुपाक सब अंगमें फैल जावैहै सो असाध्यहै वो यंत्रमंत्र आदिसे अच्छाहो ११ जोक्षुद्ररोगों में अजगल्लो अहिपतना रोग कहे हैं वो और ज्वरादि सबरोग जो बड़ मनष्योंके होतेहैं वो सब बालककी देहमें होतेहैं ऐसे कुशल वैद्यजानै॥

इति माधवः ॥ जोबालक ग्रहों करके गृहीत हो वो कभी कांपै त्रासखाय रोवे जंभाईले नखोंसे अपनी देह नोचै आकाश को देखे कभी २ गूंजे और पीड़ा हो तथा रोवे १२ ॥

(स्कंदग्रहकेलक्षण) स्कंदग्रहेणैवशिशुर्गृहीतःफेनंवमेद्रोदति साश्रुपातः ॥ भिन्नस्वरोभिन्नमलोरुणाक्षोजागर्त्तिरात्रौपरितोल्प संज्ञः १३ (शकुनीग्रहकेलक्षण) वालोगृहीतःपरितःशकुन्यास्फोटैश्चितांगोवहुभिःश्रवद्भिः ॥ दाहान्वितैःशोणितपूयगंधिभिर्भीत्यार्त्तिभिःसंचकितोभवेत्सः १४ (रेवतीग्रहकेलक्षण) स्फोटैःश्रवद्भिर्वहुभिर्युतांगोभिन्नस्वरोहीनबलोविवर्चाः ॥ तृष्णातिसारज्वरदाहयुक्तःस्याद्रेवतीग्रस्ततनुश्चवालः १५ ॥

जो बालक स्कन्दग्रह करके ग्रसा गया हो वो मुखसे झाग पटके रोवे भिन्न स्वरहो दस्तहो लालनेत्र रात्रि में जागे होश न रहे १३ जो बालक शकुनी ग्रहने ग्रसाहो वो जिले राधबहै ऐसे फोड़ा करके व्याप्त हो दाह युक्त रुधिर निकलै दुर्गन्धआवे डरपै १४ जिस बालककी देह फोड़ानसे व्याप्त हो और वे श्रवैं भिन्नस्वर हो बलरहित तथा तेजरहित तृष्णा अतीसार ज्वर दाहवान हो उसे रेवती ग्रहग्रस्त जानना १५ ॥

(पूतनाग्रहकेलक्षण) वसागंधियुक्पूतनाक्रांतदेहःशिशुर्लक्षणोर्जायतेपंचषड्भिः ॥ पिपासांगविस्फोटकंपार्त्तिदाहैर्ज्वरश्वासकासातिसारांगकंपैः १६ (मंडिताग्रहकेलक्षण) प्रसन्नवक्त्रोवहुभुक्शिशुःस्यात्ग्रहेणयोमंडितयागृहीतः ॥ विशुद्धगात्रोमलमूत्रगंधिर्वृतःशिराभिस्तुविनिर्गताभिः १७ (नैगमेयग्रहकेलक्षण) वहेत्पूतिगंधंमुखान्नाशिकाया रुदैर्मातरंसंदशेत्स्वस्विपश्येत् ॥ भवेद्यस्यकंठोष्ठवक्त्रेषुशोषोगृहीतःशिशुर्नैगमेयग्रहेण १८ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेशिशुरोगनिदानम् ॥

जिसकी देह में चर्बीकीसी बास मारै तथा प्यास और अंगोंकाटूटना पीड़ा दाह ज्वर श्वास खांसी अतीसार कंप इन लक्षणोंसे बालक पूतना ग्रह ग्रस्त जानना १६ जिस बालकका मख प्रसन्नहो बहुत भोजन करै

गुद्द देह हो मल मूत्रकी दुर्गंध आवै नाडीनसे व्याप्त हो इन लक्षणों से बालक मखिडतागृह गृस्त जानना १७ जिसकीदेहमें शासआवै माताको दाँतोंसे काटै आकाशकी ओरदेखे कंठ ओठ मुख सूखै उसे नैगमेय गृह गृस्त जानना १८ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांबालरोगनिदानम्समाप्तम् ॥

(अथविषरोगनिदानं) विषंस्थावरंमूलजंदुग्धजम्वाभवेत्पत्रजंपुष्पजंत्वग्भवंवा ॥ फलात्संभवंवीर्यनिर्यासजंवा द्वयोर्योगजंभूमिजंकृत्रिमम्वा १ (अथस्थावरविषकेअपगुण) मूर्च्छांश्वासंज्वरं हिक्कांफेनंछर्दिंगलग्रहं ॥ दृष्टिनाशंभ्रमंमत्तंकुरुतेस्थावरंविषं २ (जंगमविषकेअपगुण) जीवांगजंजंगममुग्रवीर्यंहालाहलंदाहमतीवनिद्रां॥शोथंविसंज्ञांतमकंक्लमत्वंरोमांचितांगंकुरुतेऽतिनिद्राम् ३ ॥

बिष दोपूकारका है एकस्थावर दूसरा जंगम स्थावर बिषमूल आदि और जंगम सर्पादिक का बिषाद उत्पन्न करै इसीसे इसको बिषकहतेहैं स्थावर बिष मूल दल फल त्वचा दूध फूल बीर्य्य गोंद भूमि से पैदा हीरा आदि और कृत्रिम अर्थात् बनाभया १ मूर्च्छा श्वास ज्वर हिचकी झाग रद गलगृह दृष्टिनाशभ्रम मस्तपना इतने अवगुण स्थावर बिष करती है २ प्राणी से पैदा जो बिष वो जंगम बिष है वह इतने अवगुण करै दाह घोर निद्रा सूजन बेहोशी अंधकार ग्लानि रोमांच अतिनिद्रा ३ ॥

(विषदेनेवालेमनुष्यकीपरीक्षा) पृष्टोविषादोनददातिचोत्तरंग्रस्तोग्रहैर्यौवमुहुर्निरीक्षते ॥ नानाविचेष्टांकुरुतेविकंपतेकंडूयतेक्रुंरुदतेविशंकते४ (मूलजविषकेलक्षण) मूलजंभक्षितंकुर्याद्विषंमोहंविजृम्भणं ॥प्रलापंवेपनंश्वासंमोहंदाहंविचेष्टनं ५ (पत्रविषकेलक्षण) पत्रोद्भवंविषंकुर्यान्मुखशोथंचशोषणं ॥ (फलकेविषकेलक्षण) फलोत्थंदाहमन्नाहंवैकल्यंदृष्टिनाशनं ६ ॥

जो पूंछनेसे उत्तर न दे मानों किसीगृहने गृस लिया बारबार देखने लगे नाना पूकार की चेष्टाकरै कांपै कभी खजानेलगै कभी रोवै तथा शंकाकरै उसको जानले कि इसीने बिष दीन्हाहै ४ जो मनुष्य मूलज कहिये जड़ कंद आदि जैसे सिंगी मोहरा ऐसे बिष खानेसे मोह जंभाई पूलाप कंप श्वास मोह दाह चेष्टा हीन होताहै ५ मुखशोष देहशोष ये

अपगुण पत्र का बिष भक्षण करै है दाह अनाह बेकली दृष्टिनाश ये फूल बिषके अवगुण हैं ६ ॥

(फूलगोंदत्वचाकेविष)पुष्पोत्थंछर्दिराध्मानंमोहंचकुरुतेविषं॥ त्वक्निर्यासोद्भवंश्रावंपूतिकंपंशिरोरुजं ७ (दुग्धबिषकेलक्षण) विषंक्षीरसमुद्भूतंआध्मानंकंठशोषणम् ॥ विड्बंधमूत्रसंरोधंदृढांगं कुरुतेभ्रमं ८ (धातुहरतालआदिलक्षण) धातूत्थंयद्विषंकुर्यान्मूर्च्छांदाहंचतालुनि॥विषाणिप्राणघातीनिसर्वाणिकथितानिच ९ ॥

फूल का बिष रद्द अफरा मोह को करै तथा गोंद और त्वचा का बिष श्राव दुर्गंध कंप शिरमें दर्द ७ दूधका बिष अफरा कंठ शोष दस्त मूत्रका रुकना दृढांग और भ्रम करै ८ हीरा हरताल आदि धातुका बिष मूर्च्छा दाह तालुयेमें सर्ब बिष प्राण के हर्ता जानने ९ ॥

(सर्पकाटेकेलक्षण) भुजंगेनदष्टस्यनाशामुखाभ्यांपतेद्रक्तधारां गदेशेषुशोकः॥ भवेन्मंडलैर्मंडितांगोविवर्णोविशीर्णोगमांसोथनिःशोणितांगः १० विषादोंगकंपोभयोरोमहर्षःशरीरेगुरुत्वभ्रमोदृष्टिनाशः॥ तृषाध्मानमानीलतागात्रदेशेह्यनाहोरतिर्जृम्भणंमूर्च्छतास्यात् ११ (देशविशेषऔरकालविशेषमेंजोसर्पकाटेउसकेलक्षण)अश्वत्थमूलेपिचुमंदमूलेचतुष्पथेदेवगृहश्मशाने ॥वाल्मीकदेशे दिनसंध्ययोर्वासर्प्पेणदष्टःसुधयानजीवेत् १२ ॥

जिसे सर्प्पकाटे उसकी नाक और मुखसे रुधिर की धार गिरै सबदेह में सूजन हो रुधिर के देहमें चकत्ता हों तथा बिवर्ण हो देहका मांस बिखर जाय तथा देहमें रुधिर न रहै १० खेद अंगकंप भय रोमांच देह भारी भ्रम नेत्रों से न दीखै प्यास अफरा शरीर नीला अनाह अरति मूर्च्छा जंभाई ये लक्षण सर्प्प काटेके हैं ११ पीपल के वृक्षके नीचे तथा नीम के वृक्ष के नीचे चौराहे में मन्दिरमें श्मशानमें बांबी के पास संध्या के समय भरणी आर्द्रा श्लेषा मघा मूल कृत्तिका इननक्षत्रों में जो सर्प्प काटे तो मनुष्य मरजावै १२ ॥

(मूषकविषलक्षण) मूषकस्यविषंकुर्याच्छर्दिंशोफंविवर्णताम्॥मू

र्च्छामंदश्रुतिंश्वासंलालाश्रावंशिरोरुजं १३ (कीटआदिविषके लक्षण) दष्टस्यकीटैर्विषदिग्धतुंडैःकृष्णाभमंगंबहुवेदनास्यात्॥शो फोतिदाहःपरिभिन्नवर्च्चोमोहप्रलापोधिकरोमहर्षः १४ (कालेबि च्छूकेकाटेकालक्षण) दष्टोमनुष्योऽसितवृश्चिकेननानाविचेष्टांकुरु तेविषार्त्तः ॥ भीतोविषण्णोग्निसमानदाहःपीडार्द्दितोरौतिविला पमुच्चैः १५ ॥

बिषैल मूषेका बिष रहै सूजन विवर्ण मूर्च्छा मंद सुने श्वास लार टपके शिर पीड़ा ये लक्षण हों १३ कीट अथवा जिसे विषैल डाढ़वाला जानवर काटे उसके लक्षण देह काला तथा पीड़ायुक्त सूजन दाह तेज- रहित मोह पूलाप रोमांच ये हों १४ काले बिच्छू काटेके ये लक्षण हैं नाना पूकारकी चेष्टा करै डरपै शून्यता अग्निके समान दाह घोर पीड़ा पुकार कर रोवै १५ ॥

विषंवृश्चिकंदुःसहंप्राणहारिमहामोहदंसौख्यविध्वंसकारि ॥ बलज्ञानविज्ञानतेजोपहारिव्यथाशोफवैकल्यदाहार्त्तिकारि १६ (वहींसर्पकाटेकेलक्षण) ज्वरोघोरतरंशूलंछर्दिशोफोविसर्प्पति ॥ वर्णनाशोभवेत्पीडावहिदष्टस्यलक्षणम् १७ प्राणीदंशनसंदष्टो हृष्टरोमोक्षतार्त्तिमान् ॥ स्तब्धलिंगोभवेच्छोफोविनिद्रश्चकितो निशं १८ ॥

बिच्छूका बिष नहीं सहाजाय पाणहर्ता महामोह करै सुख को दूर करै बल ज्ञान तेज इनको दूर करै व्यथा सूजन बेकली दाह और पीड़ा करै १६ घोरज्वर शूल रहै सूजन बढ़ै बर्णका नाश और पीड़ा होय ये वहीं नाम सर्पकाटेके लक्षणहैं १७ प्राणीके बिषसे डसेहुये के ये लक्षणहैं रोमांच घावसे पीड़ित टेढ़ा लिंग सूजन निद्राहीन और चकित १८ ॥

(मेंडकमछलीकेविषलक्षण) शोफोछर्दिस्तृषानिद्रामंडूकविषल क्षणं ॥ मत्स्योत्थितंविषंकुर्याद्दाहंशोफंतृषांव्यथां १९ (जोंकके विषकालक्षण) मूर्च्छांशोफज्वरंकंडूंतृषांकुर्युर्जलौकसः॥(छिपकली केविषकालक्षण) दाहंस्वेदंव्यथांशोथंकुर्याच्चगृहगोधिका २०

(शतपदीखानखजूराकेविषकेलक्षण) शतपद्याविषंकुर्यात्स्वेदंदाहं रुजंवहु ॥ (मच्छरकेविषकालक्षण)मसकानांविषंकुर्याच्छोफाल्पंतु चक्रुवेदनां २१ ॥

मेडकका बिष सूजन रह प्यास निद्राकरैहै और मछलीका बिष दाह सूजन प्यास और व्यथाकोकरै १९ बिषेल जोंककाटेतो मूर्च्छासूजन ज्वर खुजलीप्यासहो दाह पसीना पीड़ा सूजन येछिपकली काटेसे होतेहैं २० कातरके काटनेसे पसीना दाह पीड़ाहो मच्छरका बिष थोडी सूजन और थोड़ीहीपीड़ा करैहै २१ ॥ ॥

(लूताविषकेलक्षण) लूताविषंमहाघोरंपिंडिकांवहुवेदनां ॥ कुरुतेवंचलांतीव्रांपाकदाहज्वरान्वितां २२ (मक्खीकेविषकेलक्षण) मक्षिकानांविषंतुच्छंशोफतोदसमन्वितं ॥ (नखदंतकेविषकेलक्षण) नखदंतविषंरौद्रंदाहश्रावव्यथाकरं२३ (सर्पादिककाटेकाअसाध्य लक्षण) दृष्टिर्गतायस्यपतंतिकेशानाशामुखाभ्यांरुधिरस्यपातः ॥ वक्रंमुखंयस्यविवर्णमंगंविषाभिभूतंपरिवर्जयेत्तं २४ ॥

लूताविषमहाघोर ये लक्षण करैहै पीड़िका पीड़ा पाक दाह ज्वर २२ विषैल मक्खीकाटे उसकी थोड़ी सूजन औरपीड़ा युक्त हो जिसके सिंह आदिका नखलगाहो मगर आदिकी डाढ़ा लगीहो उसके लक्षण दाहहो श्रावहो व्यथाहो २३ जिस पुरुषकी दृष्टी मारीजाय और शिरके बाल गिरपड़ें नाक मुखसे रुधिर गिरै टेढ़ामुख होजाय तथाविवर्ण ऐसेरोगी को वैद्यत्यागदे २४ ॥

(तथा) हीनस्वरंयस्यपतंतिदंष्ट्रासर्वांगशीतंरसनातिकृष्णा॥ वैकल्यमंगेवदनंकरालंविषार्दितंदूरतरंत्यजेत्तं २५ (दूषीविषके लक्षण) जलस्यपानाद्विषदूषितस्यदिग्देशकालांतरसंभवस्य॥नरस्यदेहेविषलक्षणास्यदूषीविषंचोच्छलतेकृशस्य २६ दूषीविषंसं कुरुतेनरस्यहस्तांघ्रिशोथंमुखकंठशोषं॥ मूर्च्छाज्वरंमंडलचचिंतां गंकुष्टंरुजत्वंजठरस्यवृद्धिं २७ ॥

हीनस्वर होजाय दांत डाढ़ गिरपड़ै सर्वांगमें शीतलगे काली जीभ

होजाय देहमें बेकली कराल मुखहो ऐसे विषार्दित मनुष्यको वैद्य त्याग करदे २५ दिशा देश कालमें प्रगट ऐसे विषदूषित जलपीने से विषके वा विष मिले पदार्थ के खानेसे कृश मनुष्य की देहमें नाना प्रकार के रोग करैहै २६ दूषी बिष ये लक्षण करैहै हाथ पैर में सूजन मुख कण्ठका सूखना मूर्च्छा ज्वर रुधिर के चकत्ते कोटपेट का बढ़जाना २७॥

मांसक्षयंपांडुरचर्चितांगं निद्रांविजृम्भांबलवीर्य्यनाशं ॥ छर्दिंपिपासांविकलंविवर्णंदूषीविषंसंकुरुतेविकारं २८ दूषीविषं त्रिदोषोत्थंयन्त्रमंत्रौषधादिभिः ॥ असाध्यंमुनिभिःप्रोक्तंतस्यजाप्यंहितंभवेत् २९ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे विषलक्षणनिदानंसंपूर्णम् ॥

पीलिया मांसकाक्षय निद्रा जंभाई बल बीर्य्य का नाश रद्दप्यास बेकली देह का बिबर्णये दूषीबिष बिकार करै है २८ त्रिदोष से उठा दूषी बिष असाध्यहै वो मंत्रऔषधीनसे जाप्य और हित होय २९ इति माथुरदत्तरामपाठककृतहंसराजार्थबोधिन्यांबिषरोगनिदानम् ॥

(अथमूत्रपरीक्षा) सुपात्रेसमादायमूत्रंगदीनां प्रभातेभिषक्चिंतयेत्तैलविंदुम् ॥ विनिक्षिप्यतस्मिन्विकाशंसमेति तदासाध्यमवं वदेद्रोगिणांतं १ यदाविंदुरूपस्थितंमूत्रमध्ये तलेसंश्रितंवातदासाध्यमेवं ॥ त्रिकोणस्थितंतैलविंदुर्यदिस्यात् तदाचैवदोषंवदेन्मानवानां २ क्षुरादंडकोदंडतूणीरखड्गंगदाचक्रवाणासिरूपंविधत्ते॥यदातैलविंदुस्त्रिशूलाकृतिर्वातदारोगिणोयास्यतेमृत्युवक्त्रे ३॥

बैद्य रोगी के मूत्र को प्रातःकाल कांसे के पात्र में वा कांच के पात्र में तेलकी बूंद डालकर परीक्षा करै यदि मूत्रमें तेलकी बूंद प्रकाशमान देखै तो रोगी को साध्य कहै १ और जो तेलकी बूंद मूत्र में डूबजाय तो असाध्य कहै और जो मूत्रकी बूंद त्रिकोण के आकार होजाय तो दोष युक्त मनुष्य जाने २ कदाचित् तेल की बूंद छुरा के वा दण्ड के वा गदा के वा तलवार के वा बाण के वा खड्ग के वा धनुष के वा फरसा के आकार होजाय अथवा त्रिशूल के आकार होजाय वो रोगी मौत के मुखमें जाय ३ ॥

ज्वरार्त्तस्य मूत्रे यदा तैलबिन्दुर्विधत्ते भुजङ्गाकृतिं मध्यरंध्रं॥ विरूपं कृतान्ताकृतिं वृश्चिकाभं सरोगी यमस्यालयं शीघ्रगंता ४ ज्वरार्त्तस्य पुंसो यदा मूत्रमध्ये समादाय तैलं तृणेन प्रभाते ॥ विनिक्षिप्य सिंहासनाभं विधत्ते तडागाकृतिं दीर्घमायुर्वदंति ५ भेरीदुंदुभिशंखगोमुखतुरीतुल्यं मृदंगाकृतिं वीणातोरणहंसकम्बुसुरभीछत्राश्वयानासमं॥ ढक्काकुम्भकिरीटहारसदृशं केयूररत्नद्युतिं सन्धत्ते तिलतैलबिंदुरनिशं मूत्रे महारोगिणः ६ ॥

ज्वरवान् पुरुषके मूत्रमें तेलकी बूंद सर्पके आकार और बीचमें छिद्र हो तथा बुरी और मौतके आकारहो तथा बिच्छूके आकारहो वो रोगी जल्दी यमराजके घरजाय ४ और जिस ज्वरवाले पुरुषकेमूत्रमें तेलकी बूंदडारनेसे सिंहासनके आकार अथवा तालावकेआकार होजाय उसरोगी को दीर्घआयु जानना ५ भेरीदुंदुभी शंख गोमुख तुरही मृदङ्ग तमूरा तोरण हंस कमल गौ छत्र घोड़ा सवारी ढका घट किरीटहार केयूर रत्न इनकीसी आकृतिके सदृश तलकी बूंदहोय वो महारोगी जानना ६ ॥

प्रसरति यदि मूत्रे रोगिणस्तैलबिन्दुर्दिशि विदिशि समंतान्नीरुजं तं हि विद्यात् ॥ व्रजति दिशि मघोनः पश्चिमायां दिशायां पवनककुभि रोगी रोगमुक्तं नितान्तम् ७ (वातपित्तकफकमूत्रकीपरीक्षा) श्यामं स्निग्धं तारकाभिर्युतं तत् विद्यान्मूत्रं रोगिणो वातभूतं॥ पीतं रक्तं पित्तजम्बुद्बुदोक्तं श्लेष्माद्भूतं पल्वलम्वारितुल्यम् ८ (द्विदोषऔर त्रिदोषमूत्रकीपरीक्षा) रोगीमूत्रं द्विदोषोत्थं सर्षपस्तैलसन्निभं ॥ संनिपातोत्थितं कृष्णं विद्याद्बुद्बुदसंयुतं ९ ॥

जिसरोगी के मूत्रमें तेलकी बूंद दिशा औरविदिशा में फैल जाय उसे नैरोग्य जानना चाहिये और तेलकी बूंद पूर्व दिशामें वा पश्चिमदिशामें तथा वायव्य और उत्तरदिशामें फैलजाय तोभी रोगी रोगमुक्त जानना ७ वातसे मूत्रनीला और चिकना उतरताहै पित्तसे लाल और पीला तथा बबूले युक्त उतरै है कफसे गाढ़ा और चिकना तथा तलैयाके जल समान उतरै ८ द्विदोष वाले पुरुषका मूत्र सरसों के तेलकेसमान उतरै और सन्निपात वाले पुरुषका मूत्र काला और बबूलेयुक्त उतरता है ९ ॥

अजीर्णसंभवंमूत्रमजामूत्रसमंभवेत् ॥ ज्वरोत्थंकुंकुमाकारं सुखिनोजलसन्निभम् १० भिषक्चक्रचित्तोत्सवंवैद्यशास्त्रं कृतंहंस राजेनपद्यैर्मनोज्ञैः ॥ सुहृद्यैरदोपैरुजोध्वांतनाशं हरेरंघ्रिसंसेव नानंदमूर्त्तेः ११ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे रोगमूत्रलक्षणानिसमाप्तानि ॥

अजीर्णसे मूत्र बकरीके मूत्रके समानउतरै ज्वरसे कुंकुमकेरङ्ग सरीखा उतरै है सुखी पुरुष का मूत्र जलके समान उतरै १० भिषक्चक्र चित्तोत्सव वैद्यशास्त्र हंसराज कविने मनको प्रसन्नकारक पदोंसे तथा हृदयके हरणकारक दोष रहित पदोंसे रोगका हरण करनेवाला श्रीकुंज- बिहारी के चरणारबिन्द सेवकनेबनायाहै ११ इतिमाथुरदत्तरामपाठकप्रणी तायांहंसराजार्थसुबोधिनीटीकायांरोगमूत्रलक्षणानिसमाप्तानि ॥

नपुंसकलक्षणानिसुश्रुतालिख्यन्ते ॥

(आसेक्यनपुंसककेलक्षण) पित्रोरत्यल्पवीर्यत्वादासेक्यः पुरुषोभवेत् ॥ सशुक्रंप्राश्यलभतेध्वजोच्छ्रायमसंशयम् १ (सौ गंधिकनपुंसककेलक्षण) यःपूतियोनौजायेतससौगंधिकसंज्ञितः॥ सयोनिशेफसोर्गंधमाघ्रायलभतेबलम् २ (कुंभिकनपुंसककेल- क्षण) स्वेगुदेब्रह्मचर्याद्यःस्त्रीषुपुंवत्प्रवर्त्तते॥ कुंभिकासतुविज्ञेयः ईर्ष्यकंशृणुचापरम् ३ ॥

माता पिता के अति अल्पबीर्य्य से जो गर्भ रहता है वो पुरुष आसे- क्य नाम नपुंसक होता है वो दूसरे के मैथुन के करनेसे पैदाशुक्र खाय जावे तब उसको चैतन्यता पैदा हो तब विषय करने को प्रवृत्त हो इस का दूसरा नाम मुखयोनिहै १ जो पुरुष दुष्टयोनिसे पैदाहुआ हो वो योनि वा लिंग को सूंघले तब चैतन्यता प्राप्त हो उसे सौगंधिक कहते हैं और दूसरा नाम नासायोनि कहते हैं २ जो पुरुष पहले दूसरे पुरुष से अपनी गुदाभंजनकरावे तब उसको चैतन्य प्राप्त हो तब स्त्रीके विषै पुरुषताको प्राप्त हो उसे कुम्भिक नपुंसक कहते हैं ३ ॥

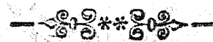
(ईर्ष्यककेलक्षण) दृष्ट्वाऽन्यावायमन्येषां व्यवायेप्रवर्त्तते ॥

ईर्ष्यकःसतुविज्ञेयः दृग्योनिरयमीर्ष्यकः ४ (महाखंडकेलक्षण)यो भार्य्यायामृतौमोहादंगनेवप्रवर्त्तते ॥ तत्रस्त्रीचेष्टिताकारोजायते खंडसंज्ञितः ५ (नारीखंडकेलक्षण) ऋतौपुरुषवद्वापिप्रवर्त्ततां गनायदि ॥ तत्रकन्यायदिभवेत्साभवेन्नरचेष्टिता ६ ॥ इतिश्रीभिषक्कचित्तोसवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेनपुंसकलक्षणानिसमाप्तानि ॥

जो पुरुष दूसरे को मैथुन करतादेख आपमैथुन करनेको प्रवृत्त हो उसे ईर्ष्यक नपुंसक कहते हैं दूसरा नाम दृक्‌योनि है ४ जो पुरुष ऋतु के समय स्त्रीके प्रमाणप्रवृत्त हो अर्थात् बिपरीत रतिकरै उसके वीर्य्यसे पैदा जो बालक वो स्त्रीकीसी चेष्टावान् हो और स्त्रीके आकार युक्त हो उसे महाखण्ड कहते हैं ५ ऋतुकालके समय जो स्त्री पुरुष के प्रमाण प्रवृत्त हो अर्थात् पुरुष को नीचे सुलाय आपऊपर चढ़ मैथुन करै उसमें जो कन्या पैदाहो वह पुरुषकेआकारहो और पुरुषकीसी चेष्टावालीहो ६॥

इतिश्रीमाथुरवंशोत्पन्नप्रशंसनीयगुणगणालंकृतकन्हैयालालपाठकतनयदत्तरामप्रणीतहंसराजार्थसुबोधिनीटीकासमाप्तिमगात् ॥

इतिहंसराजनिदानम्सम्पूर्णम् ॥



नामकिताब

विश्रामसागर
प्रेमसागर
व्रजविलासबड़ा व छोटा
कृष्णाप्रिया
विनयमुक्तावली
अनेकार्थछन्दोर्णवपिङ्गल
कविकुलकल्पतरू
रसराज
सतसईमूल तथासटीक
सभाविलास
तुलसीशब्दार्थ
भजनावली
प्रेमरत्न
युगुलविलास
चित्रचन्द्रिका
बारहमासा बलदेवप्रसाद
मनोहरलहरी
गंगालहरी
यमुनालहरी
जगद्विनोद
शृङ्गारबत्तीसी
पदमावत

राग

रागप्रकाश
लावनी

किस्सावगैरह

नानार्थनोसंग्रहावली
ब्रह्मसार
शिवसिंहसरोज
भक्तमाल
इन्द्रसभा
विक्रमविलास
बैतालपच्चीसी
द्वीप रवतीखण्ड

नामकिताब

शुकबहत्तरी
बकावलीसुमन
चहारदरवेश
क़िस्साहातिमताई
अपूर्वकथा
क़िस्सागुलसनोबर
सहस्ररजनीचरित्र
सिंहासनबत्तीसी
राबिन्सन्क्रूइतिहास
सीताहरण
सतीबिलास

मुतफकात

शनिश्चर की कथा
ज्ञानमाला
गोपीचन्दभरतरी
कथाश्रीगंगाजीकी
अवधयात्रा
भरतरीगीत
दानलीला
नागलीला
रासलीला द्वा० प्र०कृत
दोहावली रत्नावली
गोकर्णमाहात्म्य
श्रीगोपालसहस्रनाम
कथासत्यनारायण
हनुमान बाहुक
जनकपच्चीसी
हरिहरसगुणनि०
बनयात्रा
कायस्थवर्णनिर्णय
बिहारवृन्दाबन
समरबिहारवृन्दाबन
कल्पभाष्य

नामकिताब

दरसी

अक्षरावली
स्वयम्बोध
ज्ञानचालीसी
दोहावली
बालाबोध
विद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
किताबचंची
गणितकामधेनु
लीलावती
पटवारीकीपुस्तकें४ भाग

ज्योतिषभाषा

जातकचन्द्रिका
जातकालंकार
दैवज्ञाभरण
ज्ञानस्वरोदय
रमलसार
इन्द्रजाल

संस्कृतकीपुस्तकें

लघुकौमुदी
सिद्धान्तचंद्रिका
अमरकोषतीनोंकांडस०
पञ्चमहायज्ञ
निर्णयसिंधु
संग्रहशिरोमणि
भगवद्गीतासटीक
दुर्गापाठमूल
दुर्गापाठसटीक
विष्णुभागवत
अपराधभंजनस्तोत्र
दुर्गास्तोत्रसटीक
कायस्थकुलभास्कर